# अवधी ग्रन्थावली

## खण्ड - पाँच

सम्पादक

जगदीश पीयूष

अवधी लोक-साहित्य के समग्र सर्वेक्षण के सन्दर्भ में अवधी लोककथाओं का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। लोककथाओं के सम्यक् अध्ययन के बिना लोक-साहित्य का सर्वांग सर्वेक्षण अधूरा है। क्योंकि लोककथाएँ लोकमानस की मर्मस्पर्शी अभिव्यक्तियाँ हैं। लोककथाएँ लोक मानव के जीवन के प्रत्येक क्षेत्र का संस्पर्श करती हुई उसके जीवनानुभवों की सम्यक् व्याख्या करती हैं। लोकमानस के आचार-विचार खान-पान रीति-रिवाज रहन-सहन, धार्मिक विश्वास, आशा-निराशा, सुख-दुख आदि का स्पष्ट प्रतिबिम्ब लोक कथाओं में प्रतिबिम्बित होता है। लोककथाएँ क्या हैं? कहाँ से आयीं इस प्रश्न का उत्तर अत्यन्त जटिल है। इसकी परिभाषा के रूप में हम कह सकते हैं कि ये कथाएँ मानव के भोले-भाले सरल उद्गार हैं, इनमें लोक-जीवन का व्यापक चित्र उद्घाटित होता है।

अवधी लोक कथाओं के अतिरिक्त गद्य लेखन के क्षेत्र में अवधी का व्यापक विस्तार हो रहा है। डॉ. मधुकर उपाध्याय का अवधी उपन्यास किस्सा सूबेदार सीता राम पांडे इसका खास उदाहरण है। अवधी में रेडियो नाटक, कहानियाँ, निबन्ध भी खूब लिखा जा रहा है। अवधी ग्रन्थावली का कथा खण्ड अवधी गद्य का खास दस्तावेज है।

# अवधी ग्रन्थावली

## खण्ड-5

## (लोक-कथा/गद्य खण्ड)

सम्पादक

जगदीश पीयूष

वाणी प्रकाशन

# अवधी ग्रन्थावली

## भाग-5

## (लोक-कथा/गद्य-खण्ड)

●

रवीन्द्र कालिया
अध्यक्ष : सम्पादक मण्डल

●

डॉ. सुशील सिद्धार्थ
संयोजक : संपादक मण्डल

●

*सम्पादक मण्डल*

- प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित
- डॉ. जितेन्द्र नाथ पाण्डेय
- डॉ. माधव प्रसाद पाण्डेय
- डॉ. रमेश चन्द्र शर्मा
- डॉ. जयवीर सिंह
- डॉ. रमेशचन्द्र त्रिपाठी
- डॉ. रश्मि शील
- डॉ. सुधा मिश्रा
- डॉ. वीरेन्द्र
- दीपक रूहानी

*सम्पादक*

**जगदीश पीयूष**

प्रसाद उन्मत्त, रूपनारायण त्रिपाठी आदि को सम्मानित किया गया। अवधी कवि सम्मेलन और श्रावस्ती में विचार गोष्ठी हुयी, जिसमें अनेक प्रस्ताव पारित किये गये। मात्र दो वर्षों की उत्सवधर्मिता ने अवधी प्रेमियों को सोते से जगाया, उसके बाद तो अवधी साहित्य को आगे लाने में अनेक विद्वान सक्रिय हुए। प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित ने तो सर्वाधिक ठोस कार्य किया और लखनऊ विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में अवधी को जोड़ा, डॉ. रामशंकर त्रिपाठी, डॉ. राधिका प्रसाद त्रिपाठी, डॉ. जनार्दन उपाध्याय आदि के प्रयत्न से अवध विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में अवधी को स्थान मिला, कानपुर विश्वविद्यालय में भी अवधी आयी। अनेकों शोध कार्य हुए।

आज अवधी अध्ययन के लिए सर्वाधिक आधारभूत कार्य डॉ. बाबूराम सक्सेना का शोध ग्रन्थ **अवधी का विकास** है, सक्सेना जी ने जमीनी स्तर अवधी के विकास क्रम को रेखांकित किया। डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी का शोध ग्रन्थ प्रारम्भिक अवधी पर है। त्रिपाठी जी ने काफी प्राचीन अवधी पाण्डुलिपियों पुस्तकों को खोज निकाला। बाबा पुरुषोत्तम दास के जैमिनी अश्व मेघ भाषा पर सर्वप्रथम उन्होंने ही लिखा। अवधी लोकगीतों पर डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय का पहले से सामने था। डॉ. त्रिलोकीनाथ दीक्षित, डॉ. त्रिलोकीनाथ सिंह डॉ. शंकरलाल यादव काफी अरसे से अवधी के लिए कार्य कर रहे थे।

इसी बीच अवधी से सम्बन्धित कई संस्थाएं और कई लोग आगे आये, लखनऊ में अवधी अध्ययन केन्द्र के बहाने प्रकाशित **'बिरवा'** पत्रिका ने आधुनिक अवधी साहित्य पर कई अंक निकाले, फैजाबाद में राजबहादुर द्विवेदी ने नये प्रकाशनों/सम्मेलनों द्वारा एक दशक तक अवधी का डंका पीटा, सीतापुर में डॉ. श्यामसुन्दर मिश्र मधुप ने अकेले ही कई ग्रन्थों का सम्पादन किया। लखीमपुर में महाकवि पं. वशीधर शुक्ल के सुपुत्र डॉ. सत्यधर शुक्ल प्रति वर्ष सम्मेलन आयोजित करने लगे, एक अच्छा सम्मेलन सुल्तानपुर में डॉ. जयसिंह व्यथित ने कराया, उ.प्र. हिन्दी संस्थान ने जायसी मेला की तर्ज पर जायस में संगोष्ठी करायी और अवधी अकादमी के साथ सुलतानपुर में जायसी पंचशती का आयोजन हुआ। कादीपुर में डॉ. आद्याप्रसाद सिंह प्रदीप ने कई अवधी प्रेमी साहित्यकार पैदा किये और हैदरगढ़ में डॉ. रामबहादुर मिश्र की अनवरत सक्रियता से अवधी कार्यकर्ता एक मंच पर जुटने लगे, उनकी **'अवध ज्योति'** एक मशाल की तरह निरन्तर जल रही है। उन्होंने अवधी त्रिधारा का सम्पादन करके आज की अवधी की नयी त्रयी स्थापित की और गीत गजल तथा विभिन्न विधाओं पर कार्य शुरू किये। श्री सुरेन्द्रनाथ अवस्थी की प्रेरणा से **'यह माटी अवधरानी है'** नामक ग्रन्थ का प्रकाशन हुआ। अवधी अकादमी ने कभी जायसी, कभी अमेठी, कभी सुल्तानपुर में परिचर्चायें कीं, परन्तु एक बड़ा कार्य हुआ बोली-बानी पत्रिका का प्रकाशन। बोली-बानी ने अवधी पर 12 अंक निकाले जिसमें आधुनिक अवधी के लगभग दो सौ कवियों की रचनाएं सामने आयीं, जौनपुर प्रतापगढ़, फैजाबाद की अवधी पर विशेष अंक आये। लोकगीतों, लोक कथाओं पर अंक निकाले और **अवधी ग्रन्थावली** की भूमिका बनी तथा बड़े पैमाने पर अवधी कार्यकर्ता एक मंच पर आये।

हम साफ तौर पर बताना चाहते हैं कि न तो हम लोक विशेषज्ञ हैं, न ही किसी विश्वविद्यालय के प्रोफेसर, न शोध छात्र और न ही पं. रामनरेश त्रिपाठी जैसे धुन के पक्के लोकसम्पदा के गुनगायक। लोक साहित्य के अनेक विद्वानों ने अपनी बोलियों के लिए बड़ा कार्य किया है, श्री विजय दान देथा इसके उदाहरण हैं। डॉ. श्याम परमार, देवेन्द्र सत्यार्थी, झवेरी जी, डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय, डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल, पं. बनारसीदास चतुर्वेदी आदि ने भिन्न भिन्न क्षेत्रों में बड़े कार्य किये, परन्तु अवधी में इसके शोध छात्रों ने ही ज्यादा कार्य किया। डॉ. बाबूराम सक्सेना, डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी, डॉ. महेश प्रताप अवस्थी, डॉ. इन्दु प्रकाश पाण्डेय, डॉ. विद्याबिन्दु सिंह को अपने मानक शोध कार्य के कारण अधिक

ख्याति मिली। प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित ने चुन-चुन कर ऐसे विषय स्वीकृत किये कि अवधी के हर अंग पर कुछ कार्य हो जाय, परन्तु मैं इन सब की पंक्ति में बैठने की भी योग्यता नहीं रखता। हां इन सज्जनों ने हमें प्रोत्साहित किया, अपने द्वारा खोजी गई कहानियों, लोकगीतों, कहावतों, लोकोक्तियों को न केवल निस्पृह भाव से प्रकाशित करने को दिया बल्कि 'और लै जाव' की रट लगाये रहे। प्रो. दीक्षित, डॉ. विद्या बिन्दु सिंह, महेश प्रताप अवस्थी, आद्या प्रसाद प्रदीप और भाई रामबहादुर मिश्र ने ऐसा कई बार किया, तभी तो लगभग चार हजार पृष्ठों का अवधी का यह विपुल वैभव आपके सामने है। हम तो अवधी साहित्य माँगते-मँगाते रहे। किसी पत्रिका/अखबार में छपा देखा, झट से सहेज लिया, पुस्तकों में संग्रहीत देखा तो लेखक, सम्पादक से पूछ लिया। इसीलिये अवधी ग्रन्थावली के प्रकाशन का श्रेय उन्हीं मनीषियों को है जो हमें प्रोत्साहन और सहयोग दे रहे हैं। हमने कभी भी किसी सरकार या संस्था से एक पैसा अनुदान नहीं माँगा, ताकि अवधी का वैरागी स्वभाव दीनता न अनुभव करे, जबकि इस सामग्री को कम्प्यूटर में कैद करने में ही काफी खर्च आया, लेकिन सन्तों/सूफी सन्तों की कृपा से अचानक इस ग्रन्थावली को प्रकाशित करने का **'वाणी प्रकाशन'** ने प्रस्ताव किया तो मन को बहुत ही सुख मिला।

# अवधी ग्रन्थावली खण्ड-5

अवधी ग्रन्थावली का पाँचवा खण्ड अवधी के गद्य साहित्य पर केन्द्रित है, इसमें प्राचीन लोक कथाओं का काफी समावेश है जो हमें प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित, डॉ. प्रवीण जी, डॉ. विद्या बिन्दु सिंह, श्री कृष्णकान्त पाण्डेय आदि से प्राप्त हुये हैं जैसे पण्डित जी की कथाएँ काफी लम्बी-लम्बी हैं। और उनकी भाषा खिचड़ी है परन्तु उसकी सब संस्कृति अवधी होने के कारण उसे हम यहाँ दे रहे हैं।

इस खण्ड के संयोजक खण्ड के अध्यक्ष है प्रख्यात कथाकार श्री रविन्द्र कालिया जी। कालिया जी अवधी अकादेमी की गतिविधियों से प्रारम्भ से ही जुड़े हैं। उनका मानना है कि आज के कथा साहित्य के मूल में ये लोक कथाएँ की है। इसे खण्ड किया है डॉ. सुशील सिद्धार्थ ने जिनसे अवधी साहित्य संसार परी तरह परिचित है हम इस खण्ड के सम्पादकों सहभोगियों के प्रति आभारी हैं।

—जगदीश पीयूष

# अनुक्रम

**लोक कथाएँ**

# भूमिका

**जगदीश पीयूष**

---

अवधी लोकसाहित्य के समग्र सर्वेक्षण के सन्दर्भ में अवधी लोककथाओं का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है।

लोककथाओं के सम्यक अध्ययन के बिना लोक-साहित्य का सर्वाग सर्वेक्षण अधूरा है, क्योंकि लोककथाएँ लोकमानस की मर्मस्पर्शी अभिव्यक्तियाँ हैं। लोककथाएँ लोक-मानव के जीवन के प्रत्येक क्षेत्र का संस्पर्श करती हुई उसके जीवनानुभवों की सम्यक् व्याख्या करती है। लोकमानस के आचार-विचार, खान-पान, रीतिरिवाज, रहन-सहन, धार्मिक विश्वास, आशा-निराशा, सुख-दुख आदि का स्पष्ट प्रतिबिम्ब लोक कथाओं में स्पष्ट रूप से प्रतिबिम्बित होता है। लोककथाएँ क्या हैं? कहां से आई? इस प्रश्न का उत्तर अत्यन्त जटिल है। इसकी परिभाषा के रूप में हम कह सकते हैं कि ये कथाएँ मानव के भोले-भाले सरल उद्गार हैं. इनमें लोक जीवन का व्यापक चित्र उद्घाटित होता है।

लोककथाओं की परम्परा और उद्‌गम अत्यन्त प्राचीन है। ऋग्वेद में ऐसे अनेक सूक्त प्राप्त होते है। जिनमें दो या तीन पात्रें में कथोपकथन पाया जाता है। ऋग्वेद में ऋषि शुनः शेप का प्रसिद्ध आख्यान उपलब्ध होता है। अपाला अत्रेयी के आदर्श नारी चरित्र का चित्रण सर्वप्रथम ऋग्वेद में ही प्राप्त होता है। च्यवन भार्गव और सुकन्या मानवी की कथा भी बड़े सुन्दर ढंग से ऋग्वेद में वर्णित है। ब्राह्मण ग्रन्थों मे भी अनेक कथाएँ उपलब्ध होती हैं। शतपथ ब्राह्मण में पुरुरवा और उर्वशी की कथा अत्यन्त प्रसिद्ध है। तांड्‌यब्राह्मण में च्यवन भार्गव और सुकन्या मानवी की कथा उपलब्ध होती है। ऐतरेय ब्राह्मण में शुनः शेप का आख्यान अत्यन्त प्रसिद्ध है। शाट्‌यायन ब्राह्मण में महर्षि वृश नामक पुरोहित के वैदिक कालीन महत्व का प्रतिपादन किया गया है।

ब्राह्मण-ग्रंथों के पश्चात उपनिषदों में भी अनेक कथाओं का उल्लेख पाया जाता है। नचिकेता की सुप्रसिद्ध कथा कठोपनिषद का प्रधान वर्ण्य विषय है। अग्नि और पक्ष की कथा केनोपनिषद में वर्णित है। लोक कथाओं का सबसे प्राचीन संग्रह 'वृहद् कथा' है। जिसके लेखक गुणाढ्‌य थे। वृहद्‌कथा संस्कृत नाटककारों के लिए प्रारम्भ से ही उपजीव्य ग्रन्थ रहा है। महाकवि भास, शूद्रक और हर्ष ने अपने नाटकों की कथावस्तु वृहत्‌कथा से ही प्राप्त किया है। वृहत्‌कथा के तीन अनुवाद संस्कृत में उपलब्ध हैं - वृहत्‌कथा श्लोक संग्रह के रचयिता कुध स्वामी, वृहत्‌कथा मञ्जरी के रचयिता आचार्य क्षेमेन्द्र तथा कथा साहित्यसागर के रचियता सोमदेव हैं। इसी सन्दर्भ में संस्कृत में पंचतंत्र का स्थान भी सर्वोपरि है। इसका अनुवाद यूरोप की अनेक भाषाओं में हो चुका हैं। पंचतंत्र भारतीय कहानियों का सबसे मौलिक और प्राचीन ग्रन्थ माना जाता है। इसमें पांच भाग या तन्त्र हैं, इसी से इसका नाम पंचतंत्र हैं। नीति सम्बन्धी कथाओं में पंचतंत्र के बाद हितोपदेश का नाम आता है। यह बड़ा ही लोकप्रिय ग्रन्थ है, इसकी अधिकांश कथाएँ पंचतंत्र से ली गई हैं।

'वैताल पंचविंशतिका' पच्चीस रोचक कहानियों का संस्कृत का रोचक संग्रह है। प्रत्येक कथा में

राजा की व्यावहारिक बुद्धि का पर्याप्त परिचय मिलता है। 'संस्कृत कथा संग्रह' सिंहासन द्वात्रिंशिका' का हिन्दी में अनुवाद सिंहासन बत्तीसी के नाम से प्रसिद्ध है, ये कथाएँ नितान्त मनोरंजनात्मक हैं। इसके अतिरिक्त इसी क्रम में 'शुक सप्तति' सत्तर कहानियों का संग्रह भी अत्यन्त उपादेय है। ईसा की 14वीं शताब्दी में इसका अनुवाद तूतीनामा नाम से हो चुका है। जातक ग्रन्थों में भी कहानियों का अपूर्व संग्रह प्राप्त होता है, जिनका सम्बन्ध बुद्ध के पूर्वजन्मों से है। जातकों की कुल संख्या 550 है ये पालि भाषा में लिखे गये हैं। भाषा शास्त्र, समाज शास्त्र और पुराणशास्त्र की दृष्टि से इन जातक कथाओं का विशेष महत्व है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि संस्कृत साहित्य में कथाओं की अविछिन्न परम्परा विद्यमान है, अवधी लोककथाओं की परम्परा का श्रीगणेश भी इन्हीं संस्कृत कथाओं से माना जाता है।

लोककथाओं में लोकमानस का तत्व सन्निहित होता है, उसी के साथ एक सतत परम्परा भी अविछिन्न रूप से जुड़ी होती है। इन्हीं लोककथाओं के द्वारा लोकमानस भावी जीवन के लिए प्रेरणा तथा उपदेश ग्रहण करता हुआ जीवन के प्रशस्त पथ पर अग्रसर होता है। उसे एक स्फूर्ति मिलती है। चेतना प्राप्त होती है, और जीवन की रसात्मकता का अनुभव भी प्राप्त होता है। किसी व्यक्ति को यदि कोई अनुभव समझा बुझाकर या डाट डपट कर बताया जाय तो शायद जल्दी वह उसे मानने को तैयार नहीं होगा, परन्तु यदि वहीं बात किसी कथा का उदाहरण देकर कहीं जाय तो वह शीघ्रता से समझ लेगा, मानने को तैयार हो जायेगा। बच्चों पर भी कथाओं का प्रभाव कुछ अधिक ही पड़ता है। इस तरह कथायें लोकमानव के लिए बहुत उपादेय है। अपनी इसी उपादेयता के कारण ही कथाएँ मानव जीवन का अभिन्न अंग सतत काल से बनी हुई हैं, और आगे भी बनी रहेंगी।

## लोककथाओं का वर्गीकरण

लोकमानस को आह्लादित और रसाप्लावित करने में लोककथाओं का महत्वपूर्ण स्थान है। ये कथाएँ चिरन्तनकाल से मानव मन को बहलाती-फुसलाती हुई उनके जीवन का अभिन्न अंग बनी हुई है। अवधी में लोककथाओं की परम्परा संस्कृत, प्राकृत, पाली तथा उपभ्रंश से प्राप्त है। वैदिक काल से लेकर पुराणों, महाभारत, रामायण, बौद्ध और जैन साहित्य से आगे बढ़ती हुई हिन्दी तथा उसकी बिभिन्न बोलियों में आज भी अक्षुण्ण रूप से विद्यमान हैं। इन लोकुकथाओं का वर्गीकरण दो दृष्टियों से किया जा सकता है।

### (क) प्राचीन वर्गीकरण

आचार्यों ने कथा को दो भागों में विभक्त किया है। 1. कथा 2. आख्यायिका। कथा उस कहानी को कहते हैं जो कि कल्पना से प्रसूत होती है, जैसे वाणभट्ट की कादम्बरी और दण्डी का दशकुमार चरित। परन्तु आख्यायिका का आधार ऐतिहासिक इतिवृत्त होता है। वह किसी इतिहास सम्बन्धी घटना को लेकर लिखी जाती है। जैसे बाण का 'हर्ष-चरित्र' आदर्श आख्यायिका का उदाहरण है।

आनन्दवर्द्धनाचार्य ने कथा क़े तीन भेदों का उल्लेख किया है। 1. परिकथा 2. सकल कथा 3. खण्ड कथा। परिकथा वह है जिसमें केवल इतिवृत्त मात्र हो, सकल कथा में बीज से फल पर्यन्त समस्त कथा का सन्निवेश उपलब्ध होता है तथा खण्ड कथा एक देश प्रधान होती है।

### (ख) नवीन वर्गीकरण

इसी प्रकार हरिभद्राचार्य ने कथाओं का एक नया वर्गीकरण प्रस्तुत किया है। उनके अनुसार कथाओं के अधोलिखित चार भेद हैं - 1. अर्थकथा 2. काम कथा 3. धर्म कथा 4. संकीर्ण कथा।

अर्थकथा का विषय अर्थ की प्राप्ति है, काम कथा में प्रेम का वर्णन, धर्म कथा में धार्मिक आख्यानों का वर्णन होता है, तथा दोनों लोकों की इच्छा रखने वाले संकीर्ण कथा के अन्तर्गत आते हैं।

कतिपय अन्य विद्वानों ने भी इन परम्परागत कथाओं का विभाजन किया है। मिस वर्न ने 'हैण्बुक आफ फोकलोर' में कथाओं का विभाजन तीन प्रकार से किया है:

1. रहस्यमूलक कथा 2. आनुश्रुतिक कथा 3. मनोरंजनात्मक कथा।

विश्वविख्यात विद्वान इंडियाना विश्वविद्यालय अमेरिका के लोकवार्ता विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर एम. थामसन ने कथाओं का वर्गीकरण अधोलिखित प्रकार से किया है।

1. **काल्पनिक लोक की चर्चा** - इन कथाओं का नाम अज्ञात देश का अज्ञात नाम का राजकुमार होता है, वह विरोधियों पर विजय प्राप्त कर राजकुमारी से विवाह करता है।

2. अदभुत कथाएँ

3. वीरों की कथाएँ

4. गाथा, अनुश्रुतियाँ तथा ऐसी कथाएँ जिनकी ऐतिहासिकता संदिग्ध व अतिमानवों की चर्चा रहती है।

5. पहाड़, नदी, पौधों, पशु पक्षी की उत्पत्ति सम्बन्धी।

6. पशु सम्बन्धी तथा पंचतंत्र की कथाएँ।

7. पौराणिक कथायें।

8. चुटकुले और हास्य-विनोद सम्बन्धी।

डॉ. दिनेश चन्द्र सेन ने कथाओं का वर्गीकरण अधोलिखित ढंग से किया है:

1. रूप कथा, 2. हास्य कथा, 3. व्रत कथा, 4. गीत कथा।

लोक साहित्य के ख्याति लब्ध विद्वान डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय ने कथाओं का वर्गीकरण निम्नलिखित प्रकार से किया है।

1. उपदेश कथा 2. व्रत कथा 3. प्रेम कथा
4. मनोरंजन कथा 5. सामाजिक कथा 6. पौराणिक कथा।

अवध क्षेत्र में भी उक्त वर्गीकरण से मिलती हुई अनेक कथाएँ प्रचलित हैं। जैसे मां की ममता, ननद भौजाई की प्रेम तथा ईर्ष्या से सम्बन्धित कथाएँ, करवा चौथ, हरछठ, तीज, सन्तान अष्टमी, ऋषि पंचमी, बरगदाई, पूर्णिमा, सत्यनारायण, भैया दूज आदि व्रत कथाएँ, पौराणिक कथाओं में शिव, दधीचि, सत्य हरिश्चन्द्र, नल दमयन्ती, गोपी चन्द्र, राजा भरथरी सरवन (श्रवण कुमार) आदि।

अवधी लोककथाओं की विषय व्यापकता को देखते हुए उनके अनेक प्रकार हो सकते हैं। ये कथाएँ कुछ विशेषतः स्त्री पुरुषों के लिए होती है और कुछ बालकों के लिए। डॉ. सत्यव्रत अवस्थी ने अवधी लोककथाओं को दो भागों में विभाजित किया है -

1. वे कथाएँ जो किसी अवसर विशेष पर ही कही जाती हैं, जैसे व्रत सम्बन्धी

2. इसके अन्तर्गत शेष सभी प्रकार की कथाएँ आती हैं। जैसे - 1. सृष्टि की कथाएँ 2. देवी देवताओं, अतिमानवों, भूतो चुड़ैलों की। 3. साहस की 4. चमत्कार की, 5. ठगी और धोखे की, 6. जाति विषयक, 7. पशुपक्षियों और पेड़-पौधों की, 8. हाजिर जवाबी एवं चालाकी की, 9. लोकोक्तियों से सम्बद्ध, 10. ऐतिहासिक अनुश्रुतियां, 11. पहेली और यौन सम्बन्धी कथाएँ।

उपर्युक्त वर्गीकरण पर सम्यक दृष्टिगत करने पर पता चलता है कि उक्त वर्गीकरण पूर्णतः तर्क सम्मत नहीं है। लोककथाओं के व्यापक प्रचार-प्रसार को देखते हुए उनके इस विभाजन को और तर्कसंगत तथा वैज्ञानिक किया जा सकता है। इस दृष्टिकोण से अवधी का लोकसाहित्य पुस्तक में डॉ. सरोजनी रोहतगी ने अधिक शुद्ध और परिमार्जित वर्गीकरण प्रस्तुत किया है जो मेरी दृष्टि से भी अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है।

1. प्रकृति सम्बन्धी कथाएँ
2. पशुपक्षी सम्बन्धी कथाएँ
3. पौराणिक कथाएँ
4. ऐतिहासिक कथाएँ
5. सामाजिक कथाएँ
6. काम अथवा रति सम्बन्धी कथाएँ
7. उपदेशात्मक (नीति सम्बन्धी) कथाएँ।
8. घरेलू संस्कार, व्रतउपवास, देवी-देवता की कथाएँ।
9. भूत-प्रेत, डायन-वायन, दानव, जादू टोन, पुरी आदि की कथाएँ।
10. पराक्रम और साहस सम्बन्धी कथाएँ।
11. ठगी और धोखे से सम्बन्धित कथाएँ।
12. हंसी, मसखरापन, व्यंग्य कथाएँ।
13. चुटकुले उक्ति कथन समबन्धी कथाएँ।
14. गद्य पक्ष मिश्रित कथाएँ
15. लघु कथाएँ।

## अवधी लोककथाओं की मौलिकता

अवधी लोककथाएँ अत्यन्त रोचक और पूर्णतः कौतूहलवर्धक होती हैं। उनमें क्षेत्रीय संस्कृति, राजनीति, समाजनीति आर्थिक दशा और जनमानस की धार्मिक अनुष्ठान सम्बन्धी गतिविधियों का श्रृंखलाबद्ध लेखा-जोखा अत्यन्त सहजता और सरलता के साथ प्राप्त होता है। कथाओं के माध्यम से हम लोकमानव के दैनिन्दिन जीवन की झांकी, महत्वपूर्ण विशेषताओं एवं मनोदशाओं का विस्तृत विवरण प्राप्त कर सकते हैं। इन लोककथाओं का विस्तृत विवरण प्राप्त कर सकते हैं। इन लोककथाओं के माध्यम से हम मानव जाति के इतिहास की विश्रृंखलित कड़ियों को जोड़कर वास्तविक इतिहास की परख पर कर सकते हैं। इनका लोक साहित्य एवं लोक के इतिहास की श्रीवृद्धि में महत्वपूर्ण स्थान है। अवधी की प्रारम्भिक लोकथाएँ पद्यात्मक थीं। क्योंकि पहले गद्य का विकास नहीं हुआ था। प्रेममार्गी सूफी कवियों, जायसी, कुतुबन मंझन, उसमान और नूर मुहम्मद ने अवध के हिन्दू घरानों की कथाओं को लेकर प्रेमाख्यान साहित्य का अनुपम भण्डार उपास्थित करके यह स्पष्ट कर दिया है कि जन जन के मानस में सर्वथा एक ही भावधारा प्रवाहित हो रही है। अवधी लोककथाओं की यह व्यक्तिगत विशेषता है कि उनकी सर्जना व्यापक भाव को लेकर अग्रसर होती है। इन कथाओं में विविधता में एकता के सर्वत्र दर्शन होते हैं। नल दमयन्ती, लैला मजनूं आदि की कहानियां एक दूसरे के घरों में प्रविष्ट होकर एकत्व भाव की परिपुष्टि करती है।

अवधी लोक कथाओं में जहां एक ओर लोकजीवन की झांकी का विम्ब प्रतिबिम्ब होता है। वहीं दूसरी ओर पौराणिक आख्यानों के विविध रूप भी देखने को मिलते हैं। ये लोककथाएँ धार्मिक अनुष्ठानों

और लोकजीवन के तत्वों से ओतप्रोत हैं। लोकथाएँ जीवन में रसात्मकता तो लाती हैं साथ ही ये जीवन को अनुभवशील भी बनाती हैं। इनमें कुछ न होते हुए भी सब कुछ विद्यमान हैं। इनके सम्यक् अनुशीलन से विपुल धूल धूसरित कीड़ों को खोजा जा सकता है, और उनका मूल्यांकन किया जा सकता है।

लोकमानव इन्हीं कथाओं के द्वारा आपबीती कहता है और परबीती सुनता है। ये कथाएँ मानव के भावी जीवन के लिए प्रशस्त पथ का प्रदर्शन करती हैं, तथा आने वाली कठिनाइयों से सावधान करती हैं। इन कथाओं में निश्चय ही मानव जीवन के यथार्थ रूप की झलक तथा समग्र समाज का प्रतिबिम्ब प्राप्त होता है। हमारा भूतकाल इन्हीं कथाओं मं सुरक्षित है और वर्तमान इन्हीं से प्रेरणा ग्रहण कर अग्रसर होता रहता है।

अवधी लोककथाओं में कुछ रूढ़ियों तथा अभिप्रायों का भी विशेष स्थान दृष्टिगत होता है। ये रूढ़ियां ही कथा की आत्मा होती हैं। सत्यव्रत अवस्थी का मानना है कि कथाओं में रूढ़ियों का श्रेष्ठ स्थान है। वैज्ञानिक शब्दावली में इन रूढ़ियों को ही हम अभिप्राय कह सकते हैं। लोककथाओं के ये ही तत्व युग-युगान्तर तक बोलते रहेंगे, और कथाओं को प्रभावशाली बनाते रहेंगे। कथा का नाम बदल जाता है, स्थान बदल जाता है, पर अभिप्राय यदि बने रहे तो लोककथा सुरक्षित है।

डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने भी इन कथा रूढ़ियों की चर्चा की है। कथा और गाथा में ऐतिहासिक चरित का लेखक सम्भावनाओं पर अधिक जोर देता है। उसका परिणाम यह होता है कि देश के साहित्य में कथानक को गति और घुमाव देने के लिए कुछ ऐसे अभिप्राय बहुत दीर्घ काल से व्यवहृत होते आये हैं, जो थोड़ी दूर तक यथार्थ होते हैं और आगे जाकर कथानाक रूढ़ियों में बदल जाते हैं। यथा—

1. कहानी कहने वाला सुग्गा।
2. क. स्वप्न में प्रियदर्शन पाकर आसक्त होना।
   ख. चित्र में देखकर किसी पर मोहित होना।
   ग. भिक्षुओं या बन्दियों के मुख से कीर्ति का वर्णन सुनकर प्रेमासक्त होना।
3. मुनि का शाप तथा वरदान।
4. रूप परिवर्तन
5. आकाशवाणी
6. षडऋतु या बारहमासा के माध्यम से विरह वेदना
7. हंस, कपोत, तोते आदि से संदेश भेजना।

स्टिथ टामसन के अनुसार कथा रूढ़ियां वह अंश हैं, जिनमें लोककथा के किसी भाग का विश्लेषण किया जा सके। लोककथा में डिजाइन के भी अभिप्राय होते हैं। लोकगीतों में भी यह अभिप्राय प्रचलित हैं, जैसे- दारुनिया सास, निर्दयी माता या विमाता आदि अभिप्राय हो सकते हैं। परन्तु कथाओं के क्षेत्र में अभिप्रायों का प्रयोग कहीं अधिक हुआ है। जैसे-गधा मूर्ख और भारवाही पशु के रूप में, सियार चालाक, धूर्त काइयां जानवर के रूप में, पक्षियों का मनुष्य की बोली में बोलना व संदेशों की देश-देशान्तर तक ले जाना, जिनमें कौआ, हंस और तोता आदि सदा से प्रसिद्ध हैं। अवधी लोककथाओं में इन अभिप्रायों का प्रयोग सर्वत्र हुआ है। अवधी लोककथाओं में कतिपय अभिप्राय या रूढ़ियां अधिकांशतः प्रयुक्त हुए हैं। जैसे-

1. फल खाने से पुत्र की उत्पत्ति।
2. मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए मनुष्य पशु या अन्य किसी की बलि की चढ़ाया जाना।

3. लोककथाओं में उड़न खटोला का नाम प्रायः मिलता है।
4. पशु-पक्षियों में डायन के प्राणों की भावना का चित्रण ।
5. निर्जीव वस्तुओं जैसे हंडिया में मनुष्य या पक्षी के प्राणों की भावना भी लोककथाओं में सुनी जाती हैं।
6. निर्जीव वस्तुएं मनुष्य के समान कोई चीज निगल जाती हैं।
7. मुंह से सांप तथा नागिन निगलने की बात का वर्णन।
8. अवधी लोककथाओं में पुनर्जन्म या आवागमन की भावना पर विश्वास।
9. मुंहमांगी वस्तुएं देने वाला कटोरा, पुतला या थैली।
10. मंत्राभिसिक्त रस्सी या डंडा, जो मात्र आदेश देने पर बांध, मार सकता है।
11. मनुष्य का गरम कढ़ाह में पकना और पुनः जीवित होना।
12. पशु-पक्षियों में ममता की भावना, शेरनी और गाय का साथ रहना।
13. मृतात्माएं पुत्र या पुत्री के दुख दर्द पर विभिन्न भेष धारण कर रक्षा करती हैं।
14. मृतात्माओं का संकट के समय सफेद वस्त्र पहन कर रक्षार्थ आना।
15. फल काटने के बाद अन्दर के अशर्फी या सोना निकलना।
16. जादू की छड़ी से जिन्दा या मुरदा करना।
17. किसी राजा के पुत्र का विवाह, नागिन, परी या पक्षी से होना, बाद में रात्रि में चोला बदल कर राजकुमारी हो जाना, दिन में पुनः उसी रूप में।
18. खाली पड़े महल में आकाश वाणी होना।
19. विपत्ति पड़ने पर देवी-देवताओं द्वारा मनुष्य की सहायता करना।
20. उंगली काट कर रक्त से मुर्दे को जीवित करना।
21. दूध का रक्त में बदलना।
22. सौत की पुत्री का विवाह सांप से करना।
23. जादू के द्वारा मनुष्य से पशु और पशु से मनुष्य बनाना।

अवधी कथाओं में प्रायः सर्वत्र लोकमानव की धार्मिक आस्था तथा गहन विश्वास की भावना दृष्टिगत होती है। अलौकिकता के प्रति प्रायः अधिकाधिक आग्रहपूर्ण उत्साह पाया जाता है, जिसका उद्देश्य है मानवता का कल्याण। इसी कल्याण भावना के भीतर सबसे वड़ी विशेषता यह है कि जन जीवन का निरन्तर अनुरंजन होता रहता है। हमारी संस्कृति दानवी प्रवृत्तियों की ओर घृणा और दैवी प्रवृतितयों की ओर एक समादर का भाव रखती है। अवधी कथाओं में लोक जीवन की व्यंजना प्रतीकों के माध्यम से भी हुई है। जैसे विन्दी या सिन्दूर सौभाग्यवती महिला के लिए, महावर, रोली, विशेष अनुष्ठान के प्रतीक, हल्दी का टीका, नारियल विशेष भाव-व्यंजना के प्रतीक, तथा नौलखा हार, सोने चांदी के बरतन आदि ऐश्वर्य प्रतीकों के रूप में स्वीकार किये गये हैं।

संक्षिप्ततः अवधी कथा साहित्य समस्त विशिष्ट गुणों से सम्पन्न होकर लौकमानस का अक्षुण्ण पाथेय है। अवधी कथा साहित्यमें व्याप्त भावनाओं की विशेषता और उसकी मौलिकता का सूक्ष्म विवेचन करें तो निम्नलिखित तथ्य स्पष्ट रूप से प्राप्त होते है -

1. आत्माभिव्यंजना की प्रवृत्ति।
2. व्रत व पूजन के प्रति आग्रह।
3. मानव कल्याण की भावना।
4. प्रेम का अभिन्न, विशुद्ध और सात्विक स्वरूप।

5. अश्लील श्रृंगार का अभाव।
6. देवी देवताओं का महात्म्य।
7. अलौकिकता की भावना।
8. उपदेशात्मक प्रवृत्ति।
9. मनोरंजन की विशेषता।
10. उत्सुकता की भावना।
11. दानवों और राक्षसों का आतंक।
12. लोकविश्वास एवं लोक संस्कृति का स्वरूप।
13. डाकू चोर और लुटेरों का चित्रण ।
14. भय एवं विस्मय की व्याप्ति।
15. मंगल कामना की भावना।
16. सुख एवं संयोग में कथाओं का अन्त।
17. वर्णन की स्वाभाविकता।

अवधी लोक-कथाओं की शैली बड़ी सरल तथ सीधी सादी होती है। वाक्य अत्यन्त छोटे-छोटे पर रहस्यपूर्ण एवं साधारण होते हैं। संयुक्त या मिश्रित वाक्यों का प्रायः अभाव पाया जाता है। लोक कथाओं की भाषा में प्रायः आडम्बर का अभाव होता है। कथाकार के सम्मुख अनायास जो शब्द उपस्थित हो जाते हैं उन्हीं से वह अपना काम चला लेता हैं। अनमेल, बेजोड़ या भोड़े शब्दों का प्रयोग इनमें नहीं मिलता है। इनकी कथावस्तु अत्यन्त स्वाभाविक और भाषा अत्यन्त अकृत्रिम होती है। अवधी लोक कथाएँ अबाध गति से प्रवहमान सरिताओं की भांति हैं, जिनमें अवगाहन कर जनमानस स्वाभाविक आनन्द की अनुभूति करता है। जिनका जल निर्मल तथाशीतल होने के कारण पान करने वाले को संजीवनी शक्ति का आभास देता है।

अवधी लोककथाएँ प्रधानतः गद्य में पाई जाती हैं, परन्तु बीच बीच में पद्यों का भी प्रयोग पाया जाता है। संस्कृत के आचार्यों ने इसे गद्य पद्य मय या चम्पू की संज्ञा से अभिहित किया है। इस प्रकार इन कथाओं में चम्पू शैली का प्रयोग अधिकतर पाया जाता है। सम्भवतः श्रोताओं पर स्थायी प्रभाव जमाने के लिए एक कथा के बीच-बीच में पद्य के अवतारणा अवश्य की जाती है। कुछ कहानियों में तो पद्यों की बहुतायत भी होती है। गद्य-पद्य की इस गंगा-जमुनी विशेषता ने कथाओं के महत्त्व तथा उनकी प्रभावोत्पादकता को बहुत अधिक बढ़ा दिया है। श्रोता और वक्ता दोनों रात-रात भर जागकर कथा का अनुश्रवण तथा रसास्वादन करते रहते हैं। निश्चय ही अवधी लोककथाएँ अवधी लोक साहित्य की अमूल्य धरोहर हैं, इनका संरक्षण तथा अभिमंथन मानवता के इतिहास को अक्षुण्ण रखने के लिए अत्यावश्यक है।

## अवधी लोकनाट्य

नाट्य पुरुषवाचक संस्कृत का शब्द है। यह नृत्य, नाटकादि का अभिनय, नृत्य कला, अभिनय कला अभिनेता की वेषभूषा तथा अभिनेता के अर्थ का द्योतक है।

किसी भी स्थिति विशेष का अनुकरण नाट्य या अभिनय कहलाता है। दशरूपककार धनंजय ने लिखा है—'अवस्थानुकृर्तिनाट्यं'। अभिनयशील या दृश्य काव्य का संस्कृत में नाम रूपक है और पाश्चात्य साहित्य में 'ड्रामा' है। अरिस्टाटिल, सिसरों तथा विक्टर हयुगो आदि पश्चात्य आचार्यों के विचार से नाटक जीवन की अनुकृति है।

लोकनाट्य से तात्पर्य उन नाटकों से है. जिनके अभिनय के लिए रंगमँच और प्रसाधन की तैयारी नहीं करनी पड़ती। जन सामान्य की कृति जब नाट्य रुप में अपनी अभिनेयता को संजोए हुए कथोपकथनों के माध्यम से किसी कथावृत्त को उपस्थित करे-उसे लोकनाट्य की संज्ञा से अभिहित किया जाता है। लोकनाट्यों की विशेषताओं के सम्बन्ध में विभिन्न विद्वानों के विचार उल्लेखनीय हैं।

"लोकनाटक सामूहिक आवश्यकताओं और प्रेरणओं के कारण निर्मित होने से लोक-कथानकों, लोक-विश्वासों और लोकतत्वों को समेटे चलता है और जीवन का प्रतिनिधत्व करता है।"

लोकधर्मी रूढ़ियों का अनुकरणात्मक अभिव्यक्तियों का वह नाट्य रूप जो अपने-अपने सोच के लोकमानस को आह्लादित, उल्लासित तथा अनुप्राणित करता है लोकनाट्य कहलाता है।

डॉ. श्याम परमार ने लोकनाट्यों की परिभाषित करते हुए लिखा है-'लोकनाट्य से तात्पर्य नाटक के उस रूप से है, जिसका सम्बन्ध विशिष्ट शिक्षित समाज से भिन्न सर्वसाधारण के जीवन से हो और जो परम्परा से अपने अपने क्षेत्र के जनसमुदाय के मनोरंजन का साधन रहा हो।''

डॉ. श्यामपरमार लोकनाट्य की विशेषता बतलाते हुए पुनः लिखते हैं-

''लोकनाट्य लोकरंजन का आडम्बरहीन साधन है जो नागरिकों के मंच से अपेक्षाकृत निम्न स्तर का पर विशाल जन के उल्लास से सम्बन्धित है। ग्रामीण जनता में इसकी परम्परा युगों से चली आ रही है। चूँकि लोक में ग्रामीण एवं नागरिक जन दोनों सम्मिलित हैं, अतः लोकनाट्य एक मिले-जुले जन समाज का मंच हैं। परिस्कृत रूचि के लोक के लिए जिन नाट्कों का विधान है, उसकी आधार-भूमि यही लोकनाट्य है।

डॉ. कृण्णदेव उपाध्याय ने लोकनाट्य की विशेषता बताते हुए लिखा है-''लोकनाट्य की विशेषता उसके लोकधर्मी स्वरूप में निहित है। लोकजीवन से इसका घनिष्ठ सम्बन्ध है। यही कारण है कि लोक से सम्बन्धित उत्सकों, अवसरों तथा मांगलिक कार्यो के समय इनका अभिनय किया जाता है।''

अवधी लोक रंगमंच आज अपनी कुछ विशेषताओं के कारण ही लोकजीवन में प्रचलित है। इन विशेषतओं में सर्वाधिक प्रमुख हैं उसके सामजिक पात्र, जैसे-सौंत, झगड़ालू सास, ईर्ष्यालु भौजाई, कुटनी ननदी, पत्नी का गुलाम पति, खुशामदी दरबारी, बूढा-दूल्हा, पुलिस कर्मचारी, घूंसखोर थानेदार तथा लुटेरा पटवारी इत्यादि। ऐसे पात्रों के मंचन से मंच सजीव हो उठता है। सामाजिक पात्रों के माध्यम से ऐसा करारा व्यंग्य प्रस्तुत हो जाता हैं कि दर्शक हतप्रभ रह जाता है।

लोकनाट्य लोकजीवन की समस्त इच्छाओं और आकांक्षाओं का सांकेतिक प्रकटीकरण है। उसका पट बड़ा ही विशाल, वस्तुतः समस्त चराचर जगत ही इन नाटकों का क्षेत्र है। जनजीवन की असंख्य भावचेष्टाओं को अभिव्यक्ति प्रदान करने का यह सशक्त साधन है। इनमें लोकपरम्पराओं और लोकरूढ़ियों का खुलकर प्रस्तुतीकरण होता है। लोकनाट्यों में कथा-प्रवाह एवं घटनाएँ नृत्यगीत के सहयोग से वेग से अग्रसर होती हैं। लोकनाट्यों का मंच तो सम्पूर्ण जीवन का खुला क्षेत्र ही होता है, क्योंकि जीवन की प्रतिच्छंवि अंकित करना ही इनका मूल उद्देश्य है। जिस प्रकार लोकजीवन कभी व्यवस्थित और कभी अव्यवस्थित ढंग से चलता है उसी प्रकार लोकनाट्यों में भी कभी व्यवस्था और कभी अव्यवस्था दृष्टिगत होती रहती है। कृत्रिम प्रसाधन और साज-सज्जा के अभाव में भी इनकी रोचकता में कोई कभी नहीं आती। वस्तुतः अकृत्रिमता ही इनका वैशिष्ट्य है। अपने अकृत्रिम रूप के कारण ही ये जनजीवन का प्रतिनिधित्व करते चले आ रहे है। पूर्णतः सादगीपूर्ण तथा औपचारिकता से रहित होने के कारण ये जनजीवन के कण्ठहार बने हुए हैं।

ध्यातव्य यह है कि शास्त्रीय नाटकों का विकास कला, दर्शन और काव्यतत्वों से समन्वय से हुआ है, जबकि लोकनाट्यों में जीवन और आनन्द की उन्मुक्त अभिव्यक्ति होती है। भाषा और अभिनय की दृष्टि से इनमें सहज स्वाभाविकता के ही दर्शन होते है। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वेसन्तुनिरामयाः....' ही लोकनाट्यों का मूलमंच है, प्रमुख उद्देश्य है।

## लोकनाट्यों के प्रकार

अवधी लोकनाट्य कला का विकास मन्थर गति से हुआ है। लोकजीवन में अनुकरण की प्रवृत्ति शनैः शनैः विकसित और परिमार्जित हुई। जन्मोत्सव, विवाह तथा अन्य संस्कारोत्सवों के समय अनेक जातियों

में नाना प्रकार के स्वांग प्रहसन तथा नृत्य नाटकादि दिखाने तथा करने की प्रथा अत्यन्त प्राचीन काल से चली आ रही है। अवधी-प्रदेश में प्रायः ऋतुपरिवर्तन तथा विविध सामाजिक एवं सांस्कृतिक अवसरों पर नृत्य और नाटकों के द्वारा खुशी का प्रदर्शन तथा मनोरंजन करने का प्रचलन प्राचनीकाल से चला आ रहा है। फसलों के बढ़ने तथा कटने के समय जो प्रसन्नता किसान के हृदय में होती है उसका प्रदर्शन वह लोकनाट्यों के द्वारा किया करता है। इन लोकनाट्यों में प्रायः श्रृंगार करुण, वीर और हास्य रस के भावों की ही प्रधानता होती है, परन्तु कभी-कभी जीवन के कटु अनुभवों की व्यंग्यात्मक स्वर लहरी भी सुनने को मिलती है। नाट्यों और प्रहसनों में अश्लीलता, भद्दापन, एवं गंवारूपन भी दृष्टिगत होता है, परन्तु इनकी लोकप्रियता में किसी प्रकार की कमी नहीं आने पाती। लोकनाट्यों का स्वरूप अधिकांशतः धार्मिक और पौराणिक ही होता है। सामाजिक ऐतिहासिक राजनैतिक तथा लौकिक और अलौकिक नाट्यों की भी कमी नहीं है। प्रायः गद्य-पद्य मिश्रित नाट्यों का प्रचलन अधिक दृष्टिगत होता है, परन्तु पद्य-भाग की अधिकता विशेष रूप से दृष्टिगत होती है।

अवधी लोकनाट्य विविध प्रकार के हैं। विभिन्न विद्वानों ने विभिन्न श्रेणियों में इनका विभाजन प्रस्तुत किया है। डॉ. सरोजनी रोहतगी ने अवधी लोकनाट्यों का वर्गीकरण अधोलिखित प्रकार से किया है–

## अवधी के लोकनाट्य

डॉ. रोहतगी का वर्गीकरण तर्कसंगत नहीं है, क्योंकि उसमें वर्गीकरण का कोई क्रम नहीं होता है।

अपना विचार प्रस्तुत करते हुए डॉ. श्यामपरमार ने लोकनाट्यों को मात्र दो भागों में ही विभक्त किया है।

1. सामाजिक लघु प्रहसन।

2. मध्यरात्रि से आरम्भ होकर प्रातःकाल तक अभिनेय गीति नाट्य। दूसरे वर्ग के नाटकों के विषय में डॉ. श्यामपरमार का विचार है कि इनकी कथावस्तु धार्मिक, ऐतिहासिक और लौकिक होती है। रामचरितमानस, श्रीमद्भागवत और महाभारत की कथाओं में धार्मिक नाट्यों का ताना-बाना बुना है। ऐतिहासिक कथाएँ प्रायः मध्यकाल की हैं, और लौकिक कथाएँ समग्ररूप से पारम्परिक और लोकप्रचलित कथानकों पर आधृत हैं।

इसी प्रकार डॉ. सत्येन्द्र ने लोकनाट्यों का अधोलिखित चार भागों में वर्गीकृत किया है।

1. नृत्य प्रधान। 2.नाट्य-हास्य प्रधान।
3. संगीत प्रधान कथाबद्ध 4. नाट्य वार्ता प्रधान।

डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय ने लोकनाट्यों के वर्गीकरण के विषय में अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखा है। लोकनाट्य को हम दो भागों में विभक्त कर सकते हैं–

1. प्रहसनात्मक 2. नृत्यनाट्यात्मक (डांस ड्रामा)

प्रथम में जनमन के अनुरंजन के लिए ऐसी घटना को अभिनय का विषय बनाया जाता है, जिसे सुन तथा देखकर दर्शक हँसते-हँसते लोटपोट हो जाय। लखनऊ तथा बनारस के भांड़ ऐसे प्रहसनों के अभिनय में अत्यन्त प्रवीण समझे जाते है। इसमें नृत्य का अभाव रहता है। नट अपनी वाणी तथा अभिनय की मुद्रा से जनता के हृदय में हास्य रस का संचार करते है। दूसरे प्रकार के लोकनाट्य वे हैं जो किसी सामाजिक और पौराणिक घटना को लेकर अभिनीत किए जाते है। इनमें संगीत, नृत्य तथा अभिनय की त्रिवेणी प्रवाहित होती रहती है......... इस नाटक को खेलने वाले अभिनय के साथ-साथ नृत्य भी करते जाते हैं। सम्भाषण के बींच-बींच में गीत भी गाते जाते हैं। इस प्रकार गीत, नृत्य तथा अभिनय सब मिलकर एक अजीब समां

बाँध देते हैं। दर्शकगण नाट्य को रातभर देखते हैं, फिर भी अपने मन की तृप्ति नहीं होती।"

इसी प्रकार डॉ. कृष्णदेव शर्मा ने विषय वस्तु की दृष्टि से लोकनाट्यों को निम्नलिखित पाँच भागों में विभक्त किया है।

1. धार्मिक, ऐतिहासिक तथा किम्बदन्तियों पर आधारित लोकनाट्य जैसे- रामलीला, सत्यवादी हरिश्चन्द्र आदि।

2. नृत्य प्रधान—जैसे-रासलीला आदि।

3. संगीत प्रधान—जैसे-भगत, मांच, नौटंकी आदि।

4. हास्य-प्रधान—जैसे-भांड, भड़ैती आदि।

5. नाट्यवार्ता प्रधान

इस प्रकार विभिन्न विद्वानों के वर्गीकरणों को ध्यान में रखते हुए लोकनाट्यों का समन्वयात्मक तथा प्रवृत्यात्मक वर्गीकरण अधोलिखित रूप में किया जाना अधिक समीचीन प्रतीत होता है—

1. धार्मिक तथा पौराणिक लोकनाट्य।

2. सामाजिक लोकनाट्य।

3. ऐतिहासिक लोकनाट्य।

4. प्रेमकथात्मक लोकनाट्य।

5. विविध लोकनाट्य।

**1. धार्मिक तथा पौराणिक लोकनाट्य-** धार्मिक तथा पौराणिक लोकनाट्य वे लोकनाट्य हैं, जिनका कथानक पुराणों से उद्धृत है तथा जो हिन्दू धर्मशास्त्र की परम्परा के अनुरूप लोकमानस को परिपोषित तथा अनुप्राणित करते हैं। संस्कृत भाषा में निबद्ध धर्मशाला तथा पुराण आदि विशालकाय ग्रन्थ जो कार्य नहीं कर सके, लोकनाट्यों द्वारा वह सब सुलभ हो गया। कारण यह कि संस्कृत बोलने, पढ़ने, लिखने तथा समझने वालों की संख्या जनमानस की अपेक्षा नगण्य थी, तथा जनभाषा का प्रयोग करने वाले बोलने समझने वाले अधिसंख्य थे। परिणाम यह हुआ कि कथानक, पांत्र, नायक तथा नायिका का चयन तो पुराण-प्रसिद्ध कथाओं से किया गया, तथा जनभाषा के माध्यम से जनमानस तक सफलता पूर्वक उसका प्रचार-प्रसार लोकनाट्यों द्वारा हुआ। धर्मप्राण जनजीवन ने ऐसे लोकनाट्यों को ह्रदय से स्वीकार भी किया। इन लोकनाट्यों में रामलीला, रासलीला, सत्यहरिश्चन्द्र, दानबीर कर्ण, भक्त-प्रहलाद, सती अनुसुइया तथा रामबन-गमन आदि के प्रसंग प्रमुख हैं।

**2. सामाजिक लोकनाट्य-** ये वे लोकनाट्य हैं जिनकी कथावस्तु या कथानक की आधार भूमि स्वंय समाज होता है। इन लोकनाट्यों में सामाजिक रीतियों, नीतियों, प्रथाओं, रूढ़ियों, परम्पराओं, तथा वाहय आडम्बरों आदि को विषय बनाकर हास्यों एवं तीक्ष्ण व्यंग्यों के माध्यम से जनता के सामने परोसा जाता है। तात्पर्य यह कि इनमें समाज का कच्च-चिट्ठा एवं दैनन्दिन लेखा-जोखा प्रस्तुत किया जाता है। ये लोकनाट्य समाजिक अनुभूतियों भावनाओं एवं प्रवृत्तियों की सफलतम् अभिव्यंजना रोचक शैली में प्रस्तुत कर जन-मन का अनुरंजन करते है। इनमें प्रमुख हैं-सौंत, झगड़ालू सास, ईर्ष्यालु भौजाई, कुटनी ननदी, जोरू का गुलाम, खुशामँदी दरबारी, बूढ़-दूल्हा तथा बाल-दूल्हा आदि है।

**3. ऐतिहासिक लोकनाट्य-** इतिहास प्रसिद्ध घटनाओं का आधार ग्रहण कर जो लोकनाट्य मंचित किये जाते हैं, उन्हें ऐतिहासिक लोकनाट्यों की श्रेणी में परिगणित किया जाता है। ऐतिहासिक महापुरूषों की याददास्त को युग-युगान्तर तक बनाये रखने के लिए लोकजीवन लोकनाट्यों के माध्यम से अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करता है। इन लोकनाट्यों में ऊदल का व्याह, इदन्ल हरण, माड़वगढ़ की लड़ाई, वेलवा का विवाह, राजा भरथरी अमरसिंह राठौर, रानी लक्ष्मीबाई, टीपूसुल्तान, भगत सिंह, अकबर-बीरबल

तथा आजाद चन्द्रशेखर आदि प्रमुख हैं। ऐतिहासिक नाट्यों का नायक प्रायः वही व्यक्ति होता है जो किसी न किसी रूप मे सबके दिल में समाया होता है। वह धार्मिक व्यक्ति हो सकता है, अनोखा प्रेमी, वीर, महात्मा अथवा चमत्कारी पुरूष भी हो सकता है।

**4. प्रेमकथात्मक लोकनाट्य-** ऐसे लोकनाट्य जिनमें प्रेम-सम्बन्धी कथाओं की ही प्रधानता होती है, उन्हें प्रेमकथात्मक लोकनाट्यो की कोटि में रखा जाता है। अनोखा प्रेमी अथवा प्रेमिका ही इसके नायक और नायिका होते हैं। प्रेम-भावना पर ही जीना-मरना इन प्रेमी-युगल का चरम-लक्ष्य होता है। प्रेम की बलिवेदी पर न्यौछावर हो जाना ही इन लोकनाट्यों की विशेषता होती है। इनमें लैला-मंजनू, रानी पद्मिनी, हीर-रांझा, राजारत्लसेन, तथा विदेशिया इत्यादि लोकनाट्य इस कोटि में आते हैं। ये लोकनाट्य इतने कारूणिक और लोकहर्षक होते है कि सामने बैठा दर्शक अश्रुधारा प्रवाहित करता हुआ पूरी रात नाट्य का आनन्द ग्रहण करता रहता है।

**5.विविध लोकनाट्य-** कुछ ऐसे भी लोकनाट्य हैं जो उपर्युक्त किसी भी कोटि में नहीं ग्रहण किये जा सकते है, उन्हें विविध लोकनाट्यों की श्रेणी में रखा जा सकता है। फसल बढ़ने और कटने के समय जनमानस आह्लादित होकर लोकनाट्यों के माध्यम से अपनी प्रसन्नता प्रदर्शित करता हुआ लोकनाट्यों का मंचन करता है। इसमें स्त्री-पुरुष दोनो भाग लेते हैं, तथा अश्लीलता, भद्दापन और गंवारूपन इनकी प्रमुख विशेषता होती है। इनमें-स्वांग, कठपुतली, बहुरूपिया, रहस, भांग, भड़ैती, ख्याल, नकटौरा, कहरवा, धोबिया, चमरूउवा, अहिरउवा, इत्यादि लोकनाट्य इसी श्रेणी में रखे जाते है। इन नाट्यों में सामान्य जन-जीवन की स्पष्ट झांकी परिलक्षित होती है। ये अवध के प्रमुख लोकनाट्यों की श्रेणी मे परिभाषित किए जाते है।

इसके अतिरिक्त अवधी-प्रदेश में लोकनाट्यों की तरह ही जन-जीवन अपने मनोरंजन के लिए कतिपय नृत्यों का भी सम्पादन करता हुआ अपना मनोरंजन करता रहता है। इन नृत्यों में कतिपय निम्नलिखित हैं—

1. धार्मिक नृत्य।
2. सामाजिक नृत्य।
3. पेशेवरों के नृत्य।
4. कंहरा नृत्य।
5. पंवरिया नृत्य।
6. पतुरिया नृत्य।
7. हिजड़ा नृत्य।
8. लिल्ली घोड़ी नृत्य।
9. देवी नृत्य।
10. कोरी नृत्य।
11. धोबिया नृत्य।
12. खटिका नृत्य।
13. बारी नृत्य।
14. अहीर नृत्य।
15. नट नृत्य।
16. कत्थक नृत्य।
17. बन्दर तथा भालू नृत्य।
18. विविध नृत्य इत्यादि।

लोकनृत्य लोकमानस की महत्वपूर्ण और प्रकृत व्यंजना है। यूनानी इतिहासकार एरियन जो सिकन्दर के साथ भारत के आक्रमण के साथ भारत आया था, लिखा है कि- 'कोई राष्ट्र गाने तथा नृत्य का इतना उपासक नहीं जितना कि भारत। भारतवर्ष में जो नाना प्रकार के लोकनृत्य आज भी प्रचलित है वे इस बात को प्रमाणित करते है कि आदिवासी समय-समय पर नृत्य करते हैं। पूर्ण चाँदनी रात में विवाह के समय या खेत में अच्छी फसल के समय बहुधा नृत्य होते रहते हैं। नृत्य बहुत जोशीले, रंगीले तथा प्रोत्साहन देने वाले होते हैं।......उनके लिए वह उतना ही आवश्यक है, जैसे भोजन आदि।

# अवध और अवधी : एक परिचय

डॉ. अरुण त्रिवेदी

रामकथा, सहस्त्राब्दियों तक लोककण्ठ में ही विराजती रही है। पर चौथी सदी ई.पू. में इसका वर्तमान रूप बनकर तैयार हो गया था, जिसे आज हम रामायण नाम से जानते हैं। वह रामकथा कोसल जनपद के राजा राम की कथा है। बालमीकि ने इसे कौसल जनपद की सुविस्तृत और महान कथा कहा है। इतिहास भी इसे कोसल नाम के महाजनपद की पुष्टि करता है।

जिस समय महात्मा गौतमबुद्ध उत्तर भारत में अपने धर्म का प्रचार कर रहे थे, उस समय प्रसेनजित कोसल के राजा थे। वे मगध में बिम्बसार और कौशाम्बी के राजा उदयन के समकालीन थे। इतिहास अयोध्या नाम के एक गणराज्य की भी पुष्टि करता है, जो ईसा के दूसरी सदी तक विद्यमान रहा है। विद्वानों का मत है कि इसी कोसल जनपद की भाषा उत्तर भारत में दूर-दूर तक प्रचलित थी। यद्यपि साहित्य की रचना संस्कृत, प्राकृत और पालि में ही होती थी, पर बोलचाल में यही भाषा प्रचलित थी, जो सम्पर्क भाषा का काम भी कर रही थी। यही कारण है कि सुदूर प्रान्तों की बंगला, उड़िया, मराठी, गुजराती तथा राजधानी आदि की भाषाओं और बोलियों में कोसल की भाषा के शब्द पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होते हैं।

कालान्तर में कोसल का एक नाम अवध भी प्रचलित हुआ और तदनुसार इस क्षेत्र की भाषा को कोसली या अवधी कहा गया। कोसल की भाषा को भारबा कहा जाता था, यद्यपि अन्य जनपदीय बोलियों के लिये भी यह शब्द प्रयुक्त हुआ, पर अवधी के लिए यह संज्ञा विशेष व्यवहार में रही है।

अवधी आज उत्तर प्रदेश के एक विस्तृत क्षेत्र की बोली तो है ही, यह मध्य प्रदेश के बघेलखण्ड में बघेली और छत्तीसगढ़ में छत्तीसगढ़ी के नाम से बोली जाती है। यदि इन बोलियों को अलग करके देखना अनिवार्य लगे, तो इनका अवधी से सम्बन्ध जुड़वा बहनों जैसा है। अवधी के पूर्व में भोजपुरी तथा पश्चिम में कन्नौजिया बोली जाती है। उत्तर में नेवारी तथा अन्य नेपाली बोलियां हैं, तो दक्षिण में बुन्देली और बघेली का क्षेत्र है। कन्नौजी और बुन्देली बोलियां ब्रज से प्रभावित हुई हैं, पर उनका मूल ढांचा अवधी का ही है।

विद्वानों ने भाषा के तीन रूप माने हैं—भाषा, विभाषा और बोली। अवधी यद्यपि एक लम्बे समय तक बोली रही है, पर अपने उत्कृष्ट साहित्य के कारण वह काव्य भाषा के रूप में सदियों से प्रतिष्ठित है। ज्ञातव्य है कि इसमें गद्य का अपेक्षित विस्तार नहीं हुआ, इसलिए इसे एक विभाषा मानना ही उचित होगा।

यद्यपि अवधी अवध क्षेत्र की विभाषा है, पर इसका प्रसार हम अवध के बाहर भी पाते हैं तथा अवध के कतिपय क्षेत्रों में हमें अन्य बोलियों के भी दर्शन होते हैं। हरदाई अवध का क्षेत्र है, पर उसकी सण्डीला तहसील को छोड़कर सर्वत्र कन्नौजी बोली जाती है। इसी प्रकार फैजाबाद और जौनपुर की क्रमशः टाण्डा

और केराकत तहसीलें अवधी भाषा की नहीं मानी जाती हैं। अवध के बाहर फतेहपुर, इलाहाबाद, जौनपुर में तो अवधी का प्रसार है ही, कानपुर के पूर्वी, मिर्जापुर के पश्चिमी तथा बुन्देलखण्ड के बांदा जिले तक अवधी का प्रसार देखने को मिलता है।

इसके अतिरिक्त मध्य प्रदेश की बघेली और छत्तीसगढ़ी भी अवधी विभाषा की उपबोलियां कही गई हैं। इस प्रकार पूर्व में मिर्जापुर से लेकर, पश्चिम में सीतापुर और लखीमपुर खीरी तक तथा उत्तर में नेपाल की तराई से दक्षिण में बांदा तक अवधी का क्षेत्र है। विद्वानों ने अवधी की पांच उपबोलियां कही हैं, जो पूर्वी, पश्चिमी, बैसवाड़ी, गांजरी, और बांगरी कही जाती हैं। कतिपय विद्वानों ने मध्यवर्ती अवधी की कल्पना की है, पर मूलतः अवधी के दो ही भेद किये जा सकते हैं—एक पूर्वी और दूसरा पश्चिमी।

ईसा से लगभग एक हजार वर्ष पूर्व कोसल जनपद की जो भाषा भारतीय साहित्य का गौरव ग्रन्थ है, इसी युग में सन्त मीता दास का जन्म हुआ जो न केवल कबीर से प्रभावित थे, वरन् स्वयं को कबीर का अवतार भी मानते थे। अवधी में रामकाव्य लिखने वालों में लालदास, राम प्रियाशरण, जानकी रसिकशरण, रामचरन, मधुसूदन, कृपानिवास, जानकीचरण प्राणचन्द्र चौहान, शिवप्रसाद, रीवां नरेश, विश्वनाथ सिंह, ललकदास, सहजराम तथा नवल सिंह प्रधान आदि के नाम लिये जा सकते हैं। अवधी में कृष्णकाव्य भी उपलब्ध है, जिसमें लालकदास, माधव कवि, कवि सिंह, मुन्शीगणेश प्रसाद, कायस्थ रामजी शरण, विंध्याचल प्रसाद और सरजू प्रसाद कायस्थ आदि प्रमुख हैं। इन कवियों से इतर दुलनदास, धौकल सिंह, पहलवान दास, शिवनाथ सिंह, बालदास आदि। कवियों ने भी अवधी काव्य परम्परा को आगे बढ़ाया है।

अवधी कविता का आधुनिक काल संवत् 1850 से प्रारम्भ होता है। इस युग में भी अवधी काव्यधारा बराबर आगे बढ़ती रही है। इस युग के प्रारम्भ में हमें ब्रजमिश्रित अवधी काव्य के दर्शन होते हैं। इन ब्रजावधी कवियों में कविवर बेनी, भिखारी दास और भूपति आदि की कवितायें दृष्टव्य हैं। इसी संदर्भ में यह भी उल्लेखनीय है कि आधुनिक युग के प्रारम्भ में कुछ लोक कवियों का साहित्य भी दृष्टिगोचर होता है जो लोककण्ठों में विराजमान है। अवधी में हम घाघ भड्डरी आदि का साहित्य अत्यन्त लोकप्रिय पाते हैं। इसी परम्परा में कुछ अल्पज्ञात कवि भी हमें दिखाई देते हैं, जिनमें खगनिया, पण्डित सहाय, परमात्मादीन पाण्डेय आदि प्रमुख हैं। खगनिया बैसवारी की एक लोक कवयित्री हैं, जिन्होंने अमीर खुसरो की शैली में पहेलियां लिखी हैं। परमात्मादीन ने आतमदीन के नाम से मिफला लिखे हैं, जो नीतिकाव्य के अन्तर्गत आते हैं। इनके उदाहरण द्रष्टव्य हैं :

*चारि पाँव बांधे ते मोहि, अपने दल मा सबते छोटि।*
*सुखी दुखी सबके घर रहै, बासू केरि खगनिया कहै।।* (चोली)

*काठी, गांठी, लाठी तीनि। पोढ़ि के बांधौ आतमदीन।।*

आधुनिक युग में एक बड़ी संख्या में अवधी के कवि हमारे सामने आते हैं। इनमें कुछ कवि तो ऐसे हैं, जिन्होंने ब्रज अथवा खड़ी बोली में साहित्य रचना की है। इनमें प्रताप नारायण मिश्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी, जगदम्बाप्रसाद मिश्र 'हितैषी', ब्रजनन्दन पाण्डेय, तोरन देवी 'लली', सुमित्रा कुमारी सिन्हा तथा शिवसिंह सरोज आदि के नाम लिये जा सकते हैं। इन कवियों ने भी अवधी की जो सेवा की है, वह उपेक्षणीय नहीं है। पर कुछ कवि शुद्ध अवधी के कवि हैं और उन्होंने पूरी तरह से अवधी को अपनाया, यद्यपि इन कवियों में भी अधिकांश ने खड़ी बोली में भी काव्य रचना की है, पर ये मूलतः अवधी के कवि हैं।

आधुनिक युग के प्रमुख उल्लेखनीय कवि इस प्रकार है : हरिदास गिरधारी, विंध्याप्रसाद ब्रह्मभट्ट, बैजनाथ दीक्षित, लालता प्रसाद मिश्र, हरपाल सिंह, शिवमंगल दीक्षित, डॉ. चन्द्रभानु सिंह, कालिका प्रसाद, डा. भगवान बक्श सिंह, अवधी बिहारी त्रिपाठी 'अवधेश', रामस्वरूप मिश्र 'विशारद', शिवराम मिश्र, मस्तराम, सोनेलाल द्विवेदी, ललनेश, बलभद्र दीक्षित 'पढ़ीस', बंशीधर शुक्ल, चन्द्रभूषण त्रिवेदी 'रमई काका', मृगेश, दयाशंकर देहाती, शिवदुलारे त्रिपाठी नूतन, अब्दुल रसीद खां, पं. द्वारिका प्रसाद बाजपेई कौतुक, पं. देवीरत्न अवस्थी करील, महावीर, प्रभाकर लिखीस, दीपनारायण शुक्ल दीप, ललिता प्रसाद पाण्डेय, द्वारिका प्रसाद पाण्डेय, चन्द्रभूषण शुक्ल रामायणी, सूर्यबली मिश्र द्विजराज, रमाकान्त श्रीवास्तव, धर्मदत्त द्विवेदी, भागवत प्रसाद मिश्र वागीश, कृपाशंकर निर्द्वन्द्व, परसादी किसान, काका बैसवारी, पं. चतुर्भुज शर्मा, निशंक बाजपेयी, पारस भ्रमर, डॉ. अरुण त्रिवेदी, लक्ष्मण प्रसाद, शिवरत्न शुक्ल सिरस, तुरन्तनाथ दीक्षित, डॉ. देवकीनन्दन श्रीवास्तव नन्दन, जुमई खां आजाद, डॉ. मधुप, रफीक सादानी, विकल गोण्डवी, लवकुश दीक्षित, हरिश्चन्द्र पाण्डेय सरल, फारूक सरल तथा रमेश रंजन मिश्र आदि।

वैसे तो अवधी कवियों की सूची में और भी बहुत से नाम जोड़े जा सकते हैं। यहां कुछ विशिष्ट कवियों के योगदान की चर्चा आवश्यक है। पं. द्वारिका प्रसाद मिश्र अपने कृष्णायन नामक महाकाव्य के लिये और गुरुप्रसाद सिंह मृगेश अपने पारिजात शीर्षक प्रबन्धकाव्य के लिए अवधी साहित्य में विशेष रूप से चर्चित हैं। यह पढ़ीस, बंशीधर और रमई काका आधुनिक अवधी अवधी की वृहत्रयी का निर्माण करते हैं। इन तीनों कवियों के काव्य में आधुनिक अवधी कविता की चरम परिणति दिखाई देती है। इन कवियों के काव्य में आया आधुनिकता बोध विशेष रूप से श्लाघनीय है।

पढ़ीस जी अवधी के उन कवियों में से हैं जिन्होंने सर्वप्रथम अवधी में कृषक जीवन का चित्रण किया तथा उसकी कठिनाइयों की ओर संकेत किया। बंशीधर जी स्वतन्त्रता संग्राम से जुड़े रहे, पुनः स्वतन्त्र भारत की सक्रिय राजनीति में भी रहे। अतः उनकी कविता स्वतन्त्रता आन्दोलन की प्रेरणा तो रही ही है, ग्राम जीवन के मनोहारी चित्रों को भी उकेरती रही है। मूलतः विप्लव विद्रोह के कवि थे। श्री रमई काका आधुनिक अवधी के सर्वाधिक लोकप्रिय कवि हैं। अपनी सहज भाषा शैली और मार्दवपूर्ण ग्राम्य प्रकृति और जीवन के चित्रण द्वारा उन्होंने नये मानदण्ड स्थापित किये। उनकी व्यंग्य कविताएं सम्पूर्ण हिन्दी क्षेत्रों में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं।

आधुनिक अवधी कविता अपने प्रगतिशील विचारों, जीवन और प्रकृति-चित्रण तथा व्यंग्य-मूलक अभिव्यक्तियों की विशिष्टता के कारण वृहत्तर हिन्दी कविता में महत्वपूर्ण स्थान की अधिकारिणी है। अवधी कविता का छह सौ वर्षो का इतिहास हमारे समक्ष है, इस अवधी और दीर्घ परम्परा ने हिन्दी के साहित्य को कई महत्वपूर्ण ग्रंथ और अनेक समर्थ कवि दिये हैं।

अवध की भाषा और कविता ही महत्वपूर्ण नहीं है, वरन् यह धरती एक महत्वपूर्ण संस्कृति की जन्मदात्री है। अवध भारतीय संस्कृति का कई स्तरों पर अत्यन्त उदार और संयोजक भूमिका रही है। भारत में पांच मूल नस्लों के मानवों के साथ-साथ अनुमानतः ग्यारह जातियों का आगमन हुआ। इन सबके मिश्रण से ही भारतीय मानव का जन्म हुआ और इन सबके समन्वय में अवध की भूमिका आधारभूत रही है।

कालान्तर में रामकथा ने अवध के लोकविश्वासों को सर्वाधिक प्रभावित किया। इसीलिये पौरुष, पराक्रम, मर्यादा और आदर्श अवधी संस्कृति में आधारभूत हुए। अवध का यदि कोई प्रतीक पुरुष है तो राम, कोई देवता है तो बसन्त, त्योहार है तो दीपावली, लोकनाट्य है तो रामलीला, रस है तो वीर, लोकगायन है तो आल्हा, फल है तो आम और फसल है तो सुरस-रसीली ईख।

राम का उदात्त व्यक्तित्व, सीता की फलदायी भक्ति, आशुतोष शंकर का शिवत्व और गंगा के चिरन्तन मातृत्व से जुड़ा अवध, अवध का अखण्ड पुत्रत्व अवध संस्कृति के मूलाधार हैं। धर्मनिष्ठा और

उत्सवप्रियता अवध के स्वभाव में है। रामनवमी और शिवरात्रि अवध के प्रमुख उत्सव हैं, तो प्रयाग का कुम्भ, देवीपाटन, देवाशरीफ, तकिया, नैमिषारण्य तथा मिश्रिख आदि प्रमुख मेलास्थल हैं। आम और ईख की फसलों ने अमराई और कोल्हू संस्कृत को जन्म दिया है। अवध का सूती कपड़ा और मिट्टी के बर्तन पुराकाल से प्रसिद्ध औद देश-विदेश में चर्चित रहे हैं। सूती कपड़े पर होने वाला चिकन की कढ़ाई का काम तो आज भी बहुत पसन्द किया जाता है।

अवध का लोकसाहित्य और लोकमंच भी पर्याप्त समृद्ध रहा है। सरिया, सोहर, ब्याह, सोहाग, भीखी, गारी, बनरा, नकटा, लोहकौरी आदि के रूप में प्रचुर संस्कार गीत उपलब्ध हैं तथा आल्हा, सावन, कजरी, झूला, बारहमासा, होरी, पंचम, धमार, लेज आदि रितु-गीतों का साहित्य भी पर्याप्त समृद्ध है। इससे इतर तीज-त्योहारों और पूजा-अर्चना के गीतों का प्रचुर भण्डार अवधी में विद्यमान है। सोहर और आल्हा का साहित्य विशिष्ट और समृद्ध है।

अवध का लोकमंच यद्यपि आज बहुत क्षीण हो चुका है, पर वह सदियों से जन-जीवन का मनोरंजन करता रहा है। रामलीला और इसका ही एक अंश धनुर्भंग लीला अवध में आज भी पर्याप्त लोकप्रिय है। इसके अतिरिक्त नौटंकी और सफेड़ा भी जनजीवन का पर्याप्त मनोरंजन करते रहे। कुछ जातीय लोक नृत्य भी हैं, जो अवध के लोकजीवन में प्रचलित रहे हैं। इनमें कहरा, हुडुक, डहंकी, धोबिया आदि का प्रचलन आज भी विद्यमान है।

इन रूपों के अतिरिक्त अवध के लोक-विश्वासों का एक रूप और भी है, जहां तंत्र-मंत्र और जादू-टोने का प्रचलन है। यहां पं. काशीराम और लोना-चमारिन की दुहाई चलती है। इस संदर्भ में रचे गये अवधी मंत्रों में संस्कृति ध्वनियों का अनुकरण किया गया है। इन अवसरों पर पचरा जैसे कुछ आवाहन गीत भी प्रचलित हैं, जो प्राय ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत स्वरों में गाये जाते हैं।

अवध के सांस्कृतिक जीवन का एक बड़ा भाग विलुप्त भी हो चुका है, शेष बचे हुए पर भी विलोप की छाया विद्यमान है। जोगी, भरथरी तथा पण्डोनी जैसे गीत अब प्रचलन में नहीं रह गये हैं। पहले इसत तरह के कलात्मक, लम्बे तथा गाथा-गीत अवध में लोकप्रिय रहे हैं। इन्हीं गीतों से प्रभावित होकर सूफी कवियों ने लोकप्रिय प्रेमकथाओं का चयन किया था। इस विवरण से यह भलीभांति परिलक्षित होता है कि भारतीय संस्कृति में अपनी महत्वपूर्ण संयोजक भूमिका का निर्वाह करते हुए अवध की धरती ने एक सशक्त काव्य भाषा तथा प्रचुर और उत्कृष्ट साहित्य को भी जन्म दिया।

# अवधी साहित्य एवं संस्कृति : दशा एवं दिशा

डॉ. गणेशदत्त सारस्वत

अवधी हिन्दी की एक अत्यन्त समृद्ध बोली है। अपनी साहित्यिक सम्पदा, धार्मिक श्रेष्ठता तथा भौगोलिक विस्तार के कारण ही वह विभाषा अथवा उपभाषा के पद की अधिकारिणी है। विभाषा बोली का ही एक विकसित रूप है। मुड़िया तथा कैथी नाम की स्वतंत्र लिपियों, बरवै, दोहा, चौपाई आदि छन्दों, अनेक काव्य-परम्पराओं, कहावतों एवं प्रवृत्तियों द्वारा इसने हिन्दी वाङ्मय की उल्लेखनीय श्रीवृद्धि की है। अवधी भाषा मे लगभग पचास हजार देशज शब्द है। इसमें लोकसाहित्य का अक्षुण्ण कोष है। अवधी की तीन उपबोलियाँ हैं। पश्चिमी अवधी, जिसके अन्तर्गत पश्चिमोत्तरी अथवा गाँजरी और बैसवाड़ी अवधी आती है। पूर्वी या पूर्वोत्तरी अवधी तथा दक्षिणी या बघेली अवधी। अवधी का आदर्श रूप पूर्वी या पूर्वोत्तरी अवधी है। अवधी के इन तीनों रूपों में प्रचुर साहित्य उपलब्ध है। पश्चिमोत्तरी अवधी का प्रतिनिधित्व पं. बलभद्र प्रसाद दीक्षित पढ़ीस, पं. वंशीधर शुक्ल तथा पं. उमादत्त सारस्वत दत्त, सुशील सिद्धार्थ आदि करते हैं, बैसवाड़ी अवधी का प्रतिनिधित्व पं. चन्द्रभूषण त्रिवेदी रमई काका, काका बैसवारी, पं. रामस्वरूप मिश्र विशारद आदि करते हैं, पूर्वी अवधी के कवियों में शालिग्राम, श्याम तिवारी, भवानी भिक्षु, आद्याप्रसाद उन्मत्त, जुमई खाँ आजाद, विश्वनाथ पाठक, पासर भ्रमर, जगदीश पीयूष आदि उल्लेखनीय हैं तथा दक्षिणी अवधी के कवियों में वागीश शास्त्री तथा बैजनाथ प्रसाद आदि के नाम सुप्रसिद्ध हैं।

अवधी काव्य-परम्परा अत्यन्त प्राचीन, पुष्ट तथा प्रामाणिक है। उसका प्रारम्भ मुल्लादाउद की रचना चन्दायन से हुआ, जिसका रचनाकाल सं. 1436 वि. है। यद्यपि उनसे पूर्व अमीर खुसरो की कुछ अवधी कविताएँ भी उपलब्ध हैं, किन्तु संख्या में नगण्य होने के कारण विद्वान उन्हें अवधी का प्रथम कवि मानने में संकोच करते हैं। यह परम्परा अद्यावधि अक्षुण्ण है।

हिन्दी साहित्य की प्रमुख धाराओं में उल्लेखनीय हैं- प्रेमाख्यान काव्य, सन्तकाव्य, रामकाव्य, कृष्णकाव्य तथा रीतिकाव्य। इनमें से प्रथम तीन का इतिहास तो अवधी का ही इतिहास है। इनके द्वारा अवधी काव्य को जो परिपुष्टता प्राप्त हुई है, वह अनुपमेय है। कृष्णकाव्य तथा रीतिकाव्य भी अवधी में लिखा गया है। यद्यपि उसकी मात्रा अपेक्षाकृत कम है। लालदास का हरिचरित्र, माधवकवि का विनोदसागर, चरनदास का ब्रजचरित, ब्रजवासीदास का ब्रजविलास, आदि ग्रन्थ जहाँ अवधी की कृष्ण काव्यधारा का प्रतिनिधित्व करते हैं, वहीं रहीम, यशोदानन्दन, नरहरि, बैताल, घाघ तथा गिरिधर कविराय आदि की रचनाएँ रीतिकालीन प्रवृत्तियों को, विशेष रूप में श्रृंगार तथा नीति को आत्मसात् किए हुए हैं। इनके द्वारा इन मुक्तककारों ने समसामयिक संघर्ष से किंकर्तव्यविमूढ़ तथा उद्भ्रान्त मानव के लिए लोकाचार का मार्ग प्रशस्त किया है।

अवधी मे प्रबन्धकाव्य भी पर्याप्त मात्रा में लिखे गए हैं। पद्मावत तथा रामचरितमानस जैसे अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के महाकाव्य जहाँ भक्तिकाल की गौरवपूर्ण निधि हैं, वहीं जानकी प्रसाद कृत रामनिवास रामायण तथा विहारी कृत रामरसायन आदि रीतिकाल के उल्लेखनीय प्रबन्ध काव्य हैं जिनमें रामकथा का मोहक विस्तार है। कृष्णकथा को लेकर लिखे गए प्रबन्धकाव्यों में उल्लेखनीय हैं- लालचदास का भागवत दशमस्कन्ध, मंचित का कृष्णायन तथा कविसिंह का बहुला-व्याघ्र-संवाद आदि। आधुनिक युग में तो अवधी के प्रबन्धकाव्यों की एक लम्बी श्रृंखला है। पं. द्वारिकाप्रसाद मिश्र का कृष्णायन, विद्यापति महाजन का श्रीगाँधीचरितमानस, गुरूप्रसाद सिंह मृगेश का पारिजात, सत्यधर शुक्ल का ध्रुव आदि प्रबन्धकाव्य इस श्रृंखला के सुमेरु हैं । मृगेश जी का पारिजात उत्कृष्ट लोकमहाकाव्य है जिसमें परम्परा से हटकर लोकभाषा बाराबंकी के आस-पास जो प्रयोग होती है तथा आल्हा, कहरा, रसिया, बिदेसिया, सवैया तथ घनाक्षरी आदि लोकशैली के छन्दों का प्रथमवार अत्यन्त सफल प्रयोग हुआ है।

अवधी के मुक्तक काव्यकारों की संख्या तो शताधिक है। यदि यह कहा जाए कि अवधी क्षेत्र के प्रत्येक ग्राम में दो-एक अवधी रचनाकार ऐसे अवश्य हैं जो, न केवल साहित्य की विपुलता की दृष्टि से वरन् स्तरीयता की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण हैं, तो अतिशयोक्ति न होगी। आवश्यकता है उन सबको खोज निकालने की तथा एक ऐसा मंच देने की जो उन्हें समुचित मान्यता दे सके। इस अनुष्ठान के अभाव में अवधी साहित्य का इतिहास अपूर्ण ही रहेगा।

अवधी के परवर्ती काव्य में आधुनिक हिन्दी काव्य की प्रायः समस्त प्रवृत्तियाँ विधमान हैं। उसमें छायावादी वाग्वैभव भी है, प्रगतिवादी स्वरों की अनुगूँज भी है। प्रयोग की नवीनता भी है तथा कुण्ठा एवं संत्रास की प्रतीक नयी कविता की अभिव्यंजना भी है। चिन्तन के अधुनातन जितने भी आयाम हो सकते हैं, जैसे राष्ट्रीयता, सामाजिक जड़ता, आर्थिक विषमता, राजनीतिक विद्रूपता, विश्वबन्धुता तथा जीवन-मूल्यों की उदात्तता आदि न्यूनाधिक रूप में इन सबका समावेश आधुनिक अवधी काव्य में है।

काव्य-शैलियों की दृष्टि से अवधी जितनी समृद्ध है, सम्भवतः उतनी समृद्ध अन्य कोई विभाषा अथवा बोली नहीं है। अनेक अर्थों में तो वह स्वतंत्र कही जाने वाली कई भाषाओं से भी अधिक समृद्ध है उसमे मात्रिक छन्द की दोहा, चौपाई, सोरठा, बरवै, रोला, उल्लाला, छप्पय, सार, कुण्डलिया, आल्हा तथा चौपइया शैली भी है, वर्णिक छन्द की कवित्त-सवैया शैली भी है, लोकगीत शैली भी है, गीतिकाव्य शैली भी है, उर्दू की गजल तथा रूबाई शैली भी है। मुक्त छन्द वाली रचनाएँ भी उसमें उपलब्ध हैं।

विषय-वैविध्य की दृष्टि से भी यह अत्यन्त समृद्ध है। उसमें प्रकृति-चित्रण की प्रायः सभी विधाएं अपने निखरे हुए रूप मे विद्यमान हैं। ग्राम्य-जीवन का चित्रण तो उसका प्राण ही है। इस चित्रण में जो सहजता है, सरसता है, स्वाभाविकता तथा यथार्थता है, वह मनमुग्ध किए बिना नहीं रहती। यह चित्रण वर्ण्य-विषय को तो चाक्षुश करा ही देता है। डॉ. विन्ध्येश्वरी प्रसाद श्रीवास्तव की देबियापुर का मेला शीर्षक रचना की इन पंक्तियों में क्षेत्रीय मेले का कितना सजीव चित्रण है, देखें। इस रचना का प्रारम्भ कथोपकथन से हुआ है जिससे रचना में नाटकीयता का समावेश हो गया है। कवि सकटू भाई को अकेले बैठे देखता है। वह उनके निकट जाकर प्रश्न करता है- काहे गयौ न दद्वा देबियापुर के मेलै? उत्तर में सकटू बोले-तुम का जानौ, अबहीं आइत, छिनु भर बइठै के गुनहीं हम, यहै ठौरु यहि साइत। और फिर उन्होनें मेले का जो वर्णन किया, कवि ने उसे ही शब्दबद्ध किया है। यह वर्णन बहुरंगी है, साथ ही वस्तुपरक भी। नाम-परिगणनात्मक शैली का पूरी रचना में प्रयोग हुआ है। मेले में आई हुई स्त्रियों का वर्णन देखिए, कितना सूक्ष्म तथा मनोविश्लेषणात्मक है। उनकी साज-सज्जा तो देखते ही बनती है। भारतीय संस्कृति इन पंक्तियों में जैसे मूर्तिमान है-

*चिकनी चुपरी पटिया काढ़े, करिखा आँखिन राँजे।*
*सेंदुर टिकली चमकै-दमकैं, दाँत मिसी के माँजे।*
*गूँथु-गूँथु पर गहना गुरिया, लेहँगा घूम घुमौवा।*
*चकली गोट की वढ़नी जी पर काढ़े चिरई कौवा।*
*लरिका बिटिया साथै लाईं, नकभेसरा नकभेसरी।*
*दहिने बायें उइ अस लोढ़कैं जइसे मोगरा-मोगरी।*
*धक्का लागे छैल छबीली, दहिने बायें ताकैं।*
*बीरा दाबे छतुरी तानें, ठकुरौ आँखी स्याँकैं।*
*भ्याटँ लागैं मेहरीं देखैं जो कोई नौरे वर का।*
*मैया बाबा की सुधि पूछँ दुखड़ा सास-ससुर का।*
*फेंट पकरिकै उनते अभिरैं, जी जानैं पहिचानैं।*
*गरे ढोलकिया हिजरा डारे, माँगति फिरैं दुकानैं।*

देहाती पैपुज्जी शीर्षक रचना की निम्नलिखित पंक्तियाँ भी इसी सन्दर्भ में उल्लेख्य हैं। श्री लक्ष्मण प्रसाद मित्र की इस रचना में वातावरण की स्वभाविकता का चित्रण अत्यन्त कुशलता के साथ हुआ है-

*मैकू महतौं के दरवज्जे तुड़धुत्तू तुड़ुही बाजि रही।*
*कटिया, झमेल, झुमका झमके, सब साजु घरैतिन साजि रही।*
*कुल की देउपुज्जिनि, देउ पितर पूजिसि, सब ब्याहु बिधान किहिसि।*
*छेई रतजगा तेल मायन, भल्लो माई का गानु किहिसि।*
*मदनापुर के म्वलहे आये, ढोढ़े आये ढबख्यरवा के।*
*आये कुसाल कुसियापुर के, तिरलोकी काका त्यरवा के।*
*मँझिलो, सँझिलों, चुनियाँ, मुनियाँ, सब रकम रकम की न्योतिहिनी।*
*कोई बनवासिनि सकुन्तला, कोई सुपन्याखा की बहिनी।*
*जैसे सिउसंकर की बरात, महतो घर आइ इकट्ठा भै।*
*गाई-गोरू-खेती-पाती की बात मसखरी ठट्ठा भै।*
*मड़ये तर आये पंडित जी, चन्दन चुपरे, सुरती फाँके।*
*हरदी अच्छत गौरजा कलस भे तन्त मुन्दरा दुनियाँ कं।*

अवधी का अधिकांश साहित्य ग्राम-जीवन से ही सम्बन्धित है। उसमें ग्रामीणों के हास-उल्लास, हर्ष-विषाद तथा आशा-निराशा के अगणित मोहक चित्र हैं। ये चित्र एक ओर जहाँ भारतीय संस्कृति को व्याख्यायित करते हैं, वहीं अवधी भाषा तथा साहित्य की समृद्धता को भी वाणी प्रदान करते हैं। अवधी के आधुनिक काव्य में हास्य एवं व्यंग्य के प्रायः सभी भेद-स्मित अथवा विशुद्ध हास्य वाग्वैदग्ध्य, व्यंग्य, भड़ौआ तथा पैरोडी आदि प्रचुर मात्रा में विद्यमान हैं। यह हास्य केवल विविधता लिए हुए ही नहीं है, वरन् उसमें उच्चकोटि की सुन्दरता भी है। सोद्देश्यता तो आद्यन्त विद्यमान है। अन्य भाषाओं के हास्य-व्यंग्य की तुलना में यह निस्सन्देह अत्यन्त उत्कृष्ट है। कुछ उदाहरण इस सन्दर्भ में प्रस्तुत हैं, इनसे हमारे कथन की पुष्टि हो जायेगी। अनमेल विवाह पर पं. उमादत्त सारस्वत 'दत्त' का यह व्यंग्य कितना मुखर है, देखें। इसमें कल्पना का जो चमत्कार है, उक्ति का जो वैचित्र्य है। वह मनमुग्ध किए बिना नहीं रहता। वर तथा वधू के लिए दी गई उपमाएँ हृदय को गुदगुदाने वाली हैं। साथ ही, दम्पति के विरोधाभाषी व्यक्तित्व को विम्बित करने में भी सर्वथा सफल है। जुगुल जोड़ी शीर्षक रचना की

एतद्विषयक पंक्तियाँ इस प्रकार हैं-

*चिरजीवै जोड़ी जुगुल, जब लगि गंग-प्रवाह।*
*उइ कॉलिज की ललमुँही, तुम क्वैला अस स्याह।*
*तुम क्वैला अस स्याह, कहाँ उइ उजली खरिया।*
*उइ पूनो की राति, सनीचर अस तुम करिया।*
*मस्तराम कह घुडुकि, बहिनि हैं उटनी की वै।*
*तुम भैंसा के बन्धु जुगुल जोड़ी चिरजीवै।*

पं. वंशीधर शुक्ल की शंकर बन्दना शीर्षक रचना में आज के माहौल पर कितना कटाक्षपूर्ण व्यंग्य है, देखें अँग्रेजी शिक्षा के अभाव में भगवान शंकर जी आज सर्वथा नगण्य हैं। वर्तमान नेताओं के समक्ष उनका अस्तित्व ही क्या-

*सेतिउ कोई समाज, ऋषी की पदवी पौतिउ।*
*होतिउ सिखा बिहीन, अली आलिम कहवौतिउ।*
*गोरा होति सरूप लाटि की गद्‌दी देतेन।*
*होतिउ डिगरीदार चट्‌ट बापू कहि देतेन।*
*सब गुन ह्वै फैसन तजे, घूमि रहेउ फटहा बने।*
*को मानै नेता तुम्हैं नेहरू जी के सामने।*

इसी सन्दर्भ मे एक पैरोडी भी। पं. उमादत्त सारस्वत दत्त की यह घूस-बन्दना महाकवि तुलसी की जय जय गिरिवरराज किसोरी का सफल अनुकरण है-

*जय जय जय रिसवति खोरी। जय क्लर्कन मुख-चन्द-चकोरी।*
*जय खाउबीरन की माता। भक्त-जननि चाँदी-द्युति-गाता।*
*नहिं तव आदि-मध्य-अवसाना। महिमा अमित पुलिस नहिं जाना।*
*रंकहि पल मँह धनपति-कारिनि। दफ्तर-सोभा बिस्व-बिहारिनि।*

*कफन खसोटिन पै सदा, करतीं दया विसेष।*
*पाइनि पार न घूस कै सहस सारदा सेष।*

अवधी काव्य का अनुभूति पक्ष जितना समृद्ध है, अभिव्यक्ति पक्ष उतना ही पुष्ट तथा प्रकृष्ट है। नौ रस मण्डित होने के साथ ही उसमें अलंकारों की अनुपम छटा है। काव्यगुणों तथा रीतियों से तो वह गरिमा-मण्डित है ही। लोकजीवन से गृहीत असंख्य मुहावरों तथा लोकोक्तियों को आत्मसात् किए हुए अवधी भाषाा अपनी व्यंजकता तथा चित्रात्मकता में अनुपमेय है।

सांस्कृतिक दृष्टि से भी अवधी काव्य अत्यन्त समृद्ध है। भारतीय संस्कृति के सर्वमान्य तत्व हैं। सार्वजनीनता, सर्वांगीणता, देवपरायणता, धर्मपरता, आश्रम-व्यवस्था, आध्यात्मिकता, नियतिवादिता, निःसीमता, सनातनता तथा ग्राम की प्रधानता एवं कर्मफल तथा पुनर्जन्म में अखण्ड विश्वास आदि इन सभी विषयों को अवधी रचनाकारों ने अपनी वाणी का विषय बनाकर अपनी संस्कार-सम्पन्नता का सुन्दर परिचय दिया है। पं. वंशीधर शुक्ल की गाँव की दुनियाँ शीर्षक रचना की इन पंक्तियों में भारतीय संस्कृति अपने पूर्ण वैभव के साथ विद्यमान है-

*घास-बाँस के बने घरौंदा, लागे थोंभा थुनियाँ।*
*तिन माँ छिपे अन्न के दाता, वहै गाँव की दुनियाँ।*

*धरती खोदे नाजु मिलै, औ चूहा खोदे पानी।*
*बिरवा फोरे दूधु मिलै दुइ दिन का मिलै जवानी।*
*लकड़ी पेरे सकर मिठाई, दाना पेरे तेलु।*
*मिट्टी पेरे नमक मिलै, उरकिन ते इतर फुलेलु।*
*हियाँ रूपु चिथरन माँ बाँधा, प्रान बँधे वाचा पर।*
*साखिन ते पलि रहा धरमु बाँधा कच्चे धागा पर।*
*एक तार माँ कुटुम बँधा, संसार बँधा खपड़ी पर।*
*हियाँ पतिव्रत धर्म निबाहैं विधवा, जुवा, किसुनियाँ।*
*हियाँ सूख छपरन पर फूलै, लौकी, सेम, तौरैया।*
*दुनियाँ भर के रोग हियाँ पर खर पतवार दवाई।*
*थोरा कसहड़ डीहु पुराना, यहै हियाँ प्रभुताई।*
*हियाँ साँप का दुधु मिलै और बँदरन का गुरधनियाँ।*
*हियाँ होय तुलसी की पूजा, यह किसान की दुनियाँ।*
*हियाँ न हलो न हाथ मिलौवरि, हाथ छुवे निर्बाह।*
*स्वार्थ भरा व्यौहार न धोखा, बोलि न पावै चाह।*

एक किसान का यह सन्तोष भारतीय संस्कृति की सर्वोत्कृष्ट निधि है-

*गरमी के दिनवाँ मँ निमियाँ के छहियाँ ई हमका बा नैनीताल।*
*सात पोह के बाँसे के लाठी हमका इहै बा ढाल।*
*बचवा कै माई घरैतिनि, पुरखिनि औ कुलवन्तिनि नारि।*
*हमरे लेखे इन्द्र कै परी, उ लच्छिमी हमारि।*
*बरद कमासु, हर काँठे का हमार ये ई परान।*
*इहै गाँव हमका अमरावति, ई बैकुण्ठ समान।*
*भैंसी क माठा, गाइ का नैनू औ छेरी का दूध।*
*धन्वन्तरि के पाकौ से बढ़िकै हमका ई सूझ।*

- शालिग्राम शर्मा

पाश्चात्य संस्कृति को हावी हाते देख इन रचनाकारों को जो पीड़ा हुई है, उसकी सघन व्यंजना उनकी शताधिक रचनाओं में है। भारतेन्दु से लेकर आज तक के प्रायः सभी कवियों ने अपसंस्कृति के समूलोच्छेदन के लिए अपनी वाणी का उत्तमोत्तम विधान किया है। यह विधान अपनी प्रभावात्मकता में सर्वथा प्रशंसनीय है। फैशनपरस्ती पर श्री यदुचन्द्र की यह रचना निश्चय ही तिलमिला देने वाली है-

*म्वाछे मुड़वाय डार्‌यौ काहे जदुचन्द तुम*
*तुमते कहिसि को तुम्हार बाप मरिगे।*

नगर के फैशन पर श्री चन्द्रभूषण त्रिवेदी रमई काका का यह व्यंग्य भी काफी तीखा है-

*सूपनखा केर जइसे नख रहैं बड़े-बड़े*
*सहरम तैसे भलेमंसिनी रखौती हैं।*

आधुनिक शिक्षा-पद्धति पर करारा व्यंग्य पं. उमादत्त सारस्वत दत्त की बी.ए. पास शीर्षक रचना में है। वर्तमान स्नातकों का विषयगत ज्ञान कितना खोखला है, इस रचना में देखते ही बनता है। भूगोल

के सम्बन्ध में उनका यह ज्ञान देखें-

*भैया, पढि-पढ़ि राति-दिन, चाटि गयेउ भूगोल।*
*टुण्ड्रा माँ गरमी कहौ, फिरौ बजावति ढोल।*
*फिरौ बाजवति ढोल, भवा मुंह पढि-पढ़ि पुनियाँ।*
*तबहूँ जानेउ यहै नदी है कुस्तुन्तुनियाँ।*
*मस्तराम कह घुडुकि, बड़े तुम पूत पढ़ैया।*
*मरू माँ गोहँ होय, बड़े काबिल हौ भैया।*

ये अधकचरे स्नातक गाँव में रहने में हीनता का अनुभव करते है। नगरों की चकाचौंध ने इन्हें इतना आकृष्ट कर लिया है कि ये उसके उपासक बन बैठे हैं। सहज ग्राम-जीवन अब इन्हें रुचिकर नहीं है। कमला चौधरी की प्रस्तुत पंक्तियाँ इसी सन्दर्भ को व्याख्यायित करती हैं-

*हमका गाँव नहीं अब भावै।*
*टेबिल टेनिस कैसे खेली, कैसे देखीं सरकस थ्येटर।*
*लीला हमका नित लै जावै अपने साथ दिखइबे पिक्चर।*
*बातैं बाकी अइस सुहावैं, जानौ देवे लवली लेक्चर।*
*हमहूँ कही प्रेम मां भरकें, हल्लों लीला मेरी सहचर।*
*छूटा नाता हमैं सतावै, हमका गाँव नहीं अब भावै।*

अवधी रचनाकारों में राष्ट्रीय तथा राजनीतिक चेतना भी प्रचुर मात्रा है। चीनी आक्रमण के सन्दर्भ में श्री रामसिंह शील की ये पंक्तियां निश्चय ही अत्यन्त प्रेरक हैं-

*सिंहद्वार पै सिंह खड़े सब, गरजैं औ हुंकारैं।*
*देखउ तौ उपर अकास ते पुरिखा सब ललकारैं।*
*मारौ मारौ चीनी दानौ, बाजी रन भेरिया।*

पं. चतुर्भुज शर्मा के निम्नलिखित छन्द में भारतीय सैनिकों की वीरता का यह हास्यपरक वर्णन देखते ही बनता है। पाकिस्तानी आक्रमणकारियों कों इन सैनिकों ने छठीं का दूध याद दिला दिया-

*अस मार पड़ी सब भूलि गै रहा, न सूझि परै चकचौंधे परे।*
*दिसि पूरब पस्चिम के सब देस, जवानन पाँयन रौंदे परे।*
*चकचूर मिराज जहाज परे, बिथुरे जस घूर-घिरौंदे पर।*
*भुटुवा गवा भागि न जानी कहाँ, यहिया खटिया तर औंधे परे।*

राजनीतिक चेतना की दृष्टि से दत्त जी की चुनाव-चर्चा शीर्षक रचना उल्लेखनीय है।शोषक वर्ग के एक वोटार्थी से एक अपढ़ किसान का यह कथन उसके प्रबुद्ध होने का पुष्ट प्रमाण है-

*आये हौ का समुझि कै, भैया माँगे ओट।*
*यादि करौ उइ दिनन की, देति रहौ जब चोट।*
*देति रहौ जब चोट, न बोलौ मुंह ते सीधे।*
*बंस अनल तुम ऐस, गाँउ माँ भयेउ उबीधे।*
*मस्तराम कह घुडुकि न दौरौ अब मुंह बाये।*
*अब का दहू होति, भगत बगुला बनि आये।।*

आर्थिक वैषम्य, महँगाई, भ्रष्टाचार, जाति-वर्ण-भेद रूढ़िवाद तथा सामाजिक जड़ता आदि विषयों पर

तो अवधी रचनाकारों की संख्या सहस्राधिक है। कलेवर-वृद्धि के भय से इन सबका सोदाहरण स्वतंत्र उल्लेख यहां सम्भव नहीं है, मात्र इतना कथन ही पर्याप्त है कि इन रचनाकारों की दृष्टि से समसामयिक कोई भी विषय ओझल नहीं होने पाया है। इनकी प्रौढ़ लेखनी ने प्रायः सभी वर्तमान समस्याओं को वाणी प्रदान की है।

अवधी-साहित्य केवल काव्य तक ही सीमित नहीं है, उसमें लोकगीतों, लोककथाओं, लोकगाथाओं लोकनाट्यों, प्रहेलिकाओं, लोकोक्तियों, मुहावरों तथा सूक्तियों का भी प्रचुर मात्रा में समावेश है। लोकगीत सामान्य लोकजीवन की पार्श्वभूमि में अचिन्त्य रूप में फूट पड़ने वाली लयात्मक अभिव्यक्ति है। मालवी लोकगीतः एक विवेचनात्मक अध्ययन डॉ. चिन्तामणि उपाध्याय, वह लोगों के उस जीवन की निरन्तर प्रवासात्मक अभिव्यंजना है जो सुसभ्य प्रभावों से दूर अधिक या न्यूनतम रूप में आदि अवस्था में है। ऐ स्टडी ऑफ ओरिसन फोकलोर, श्री कुंजबिहारी दास, देश का सच्चा इतिहास, उसका नैतिक सामाजिक तथा राजनीतिक आदर्श इन गीतों में सर्वथा सुरक्षित है। ये गीत सामाजिक चेतना, वाह्य-विकार, अन्धविश्वास, असंगतियों तथा संघर्षशील परिस्थितियों के जीते-जागते चित्र हैं। संस्कार, रसानुभूति, ऋतु पर्व, जाति तथा श्रम आदि की दृष्टि से अवधी लोकगीतों के अनेक भेद हैं। इनका महत्व उनके काव्य और सौन्दर्य तक ही सीमित नहीं है। डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में इनका एक बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य है। एक विशाल सभ्यता का उद्घाटन, जो अब तक या तो विस्मृति के गर्भ में डूबी हुई है या गलत समझ ली गई है।

अवधी लोकगीत का एक उदाहरण पर्याप्त होगा। स्वांग में प्रचलित एक कहरवा की प्रस्तुत पंक्तियों में नारी-हठ पर करारा व्यंग्य है-

*करब बिकि जाय लटकन मोहि लइ देव।*
*करब बिकि जइहै तौ बैल का खइहैं,*
*बैल बिकि जाय लटकन मोहि लइ देव।*
*बैल बिकि जइहैं तो खेती का होइहैं,*
*कि खेत जरि जाइ लटकन मोहि लइ देव।*
*खेत जरि जइहैं तो लारिका का खइहैं,*
*कि लरिका मरि जायँ लटकन मोहि लइ देव।*
*लरिका मरि जइहैं तौ घर का का होइहै,*
*कि घर बिकि जाय लटकन मोहि लइ देव।*
*जो घर बिकि जइहैं तो हम कहाँ रहिबै,*
*कि तुमहूँ भगि जाव लटकन मोहि लइ देव।*

लोककथाएँ वे कथाएँ हैं जिन्हें स्त्रियाँ तीज-त्यौहार, जैसे सकट चौथ, करवा चौथ आदि के अवसर पर उपस्थित स्त्री समुदाय को लोकभाषा में कहकर सुनाती हैं। धार्मिक अनुष्ठान से सम्बद्ध होने के कारण ही इन्हें कथा कहते है। बच्चों के मनोरंजन के लिए सुनाई जाने वाली राजा-रानी तथा पशु पक्षी आदि से सम्बन्धित कहानियाँ भी इसी के अन्तर्गत आ जाती हैं।

अवधी में अनेक लोककथाएँ प्रचलित हैं। ये अब मात्र तीज त्यौहारों तक ही सीमित नहीं है। इनमें आज की औद्योगिक सभ्यता के चित्र भी आने लगे हैं। किसान और मजदूरों के परिश्रम के चित्र तो बराबर मिलते हैं।

अवधी लोक कथाओं के कई भेद हैं। ये भेद विषय तथा कथ्य पर आधारित हैं। परी-कथाएं, देव-विषयक कथाएं चमत्कारपूर्ण कहानियाँ, कौशलपूर्ण कहानियाँ, जीवन की जोखिम भरी कहानियाँ, बुझौवल कहानियाँ, नीति एवं उपदेश प्रधान कहानियाँ तथा लघुछन्द कहानियाँ आदि सभी का समाहार इन कथाओं में है। एक कथा पर्याप्त होगी। बुझौवल कहानी का यह एक उदाहरण है। पण्डित देउतादीन शीर्षक यह लोककथा सुरियामउ लखनऊ जनपद के श्री शिवनारायण द्वारा प्राप्त हुई है, जो डॉ. शंकरदयाल यादव द्वारा सम्पादित अवधी लोककथा में संकलित है। कहानी इस प्रकार है-

याकै रहैं पंडित देउतादीन। उइ बहुत गरीब रहैं। उनके राजा का नाम रहै समसेर बहादुर सिंह। याक दिन पंडिताइन पंडित से कहिन कि पंडित तुम कुछ कथा-वथा नाहीं कहति हौ, कहूँ जाय कै कुछ लै आवा करौ। पंडित दोसरे दिन राजा से मिलै खातिन चल दिहिन। राजा लोगन की बातै खरीद लीन करति रहैं। पंडित जी का रास्ता मा याक लोखरी मिली जउनि बिलु खोदति रहै। पंडित जी उहिका देखि कै चिल्लाय उठे खोद भसाभस। आगे चलिकै पंडित जी एकु बाँदरू देखिन जउन बइठ रहै। पंडित जी फिर चिल्लानि बइठ मोटरमल। तिसरी बार पंडित जी देखिन कि एकु साँप जमीन मा ल्वाटति रहै उइ कहिनि परा धरनि अस। जब पंडित जी फिर वढ़े तो देखिन कि एकु हिरन भागति चला जाति रहै। पंडित जी जोर से चिल्लाय उठै भागि चले कत।

यही तिना राजा के पास जायकै पंडित जी याक-याक कइकै बातै सुनाय दिहिन, मुला राजा उनका अरथु न समुझि पाइन और थोरे से रुपइया दइकै पंडित जी का बिदा कै दिहिन। राति का राजा आपनि रानी का यहै कहानी सुनावै लाग औ वही समै राजा के हुवाँ च्वार सेंधि काटति रहैं। राजा कहिनि कि रानी सुनौ जउन पंडित कहिन है वहै सुनाउब। अत्ता कहिकै राजा सुनावै लागि। सबसे पहिले राजा कहिन खोद भसाभस। च्वार का पहिले कै बात मालुम नाहीं रहैं, उइ समुझिन कि राजा जानिगै है औ बैठिगे। तब राजा कहिन परा धरनि अस। अत्ता सुनतै च्वार भागि। तब राजा कहिन कि भागि चल कत। अब च्वार का संका होइगै। दोसरे दिन सबेरेन च्वार राजा के पास हाजिर भे अउर एकु एकु कइकै माफी माँगै लागि। तब राजा बड़े परसन्न भे अउर पंडित जी का बोलाय कै खुब धन दैकै बिदा किहिन।

लोकगाथा प्रबन्ध अथवा आख्यानक गीत है। इनमें कथानक मुख्य होता है तथा वीरता, साहस एवं रोमांच का सम्मिश्रण रहता है। इनके अनेक स्वरूप दृष्टिगत होते है। पौराणिक, ऐतिहासिक तथा ग्रामप्रसिद्ध विशिष्ट वृत्तों के अतिरिक्त भावनामूलक कल्पित कथानक भी इन गाथाओं में आबद्ध मिलते हैं। लोकगीतों की तुलना में इनका आकार काफी बड़ा होता है। इनके लिए सर्वाधिक उपयुक्त छन्द आल्हा, ढोला मारू तथा लोरिक आदि है। प्रबन्धात्मकता इनकी सबसे बड़ी विशेषता है। एक उदाहरण प्रस्तुत है। इस पौराणिक आख्यान में श्रवण कुमार का प्रसंग लेकर मातृ-पितृ-भक्ति का सुन्दर वर्णन किया गया है। आख्यान काफी लम्बा है इसलिए इसका अन्तिम अंश ही उदाहरण-स्वरूप प्रस्तुत किया जा रहा है। करूण रस का सुन्दर परिपाक इन पंक्तियों में हैं। श्रवण कुमार माँ का यह आदेश पाकर कि 'दउरौ पुतवा पानी लाव, अब पानी बिन जाति परान' जैसे ही दशरथ-ताल के निकट पहुँचे वैसे ही-

*मटकी बाजी रपटा पाउँ, भनक परी दसरथ के कान।*
*दसुरथ मारा बानु चढाय, छूटे बानु कम्मर पर लागु।*
*राम-राम कहि गिरे उतान, को आहिउ करिया नवधान।*
*को आहिउ दसरथु के ताल। हम आहिन सरवन के लाल।*
*मिरगा के धोखे दीन्हौं मारि। कहौ तौ भइने देई जियाय।*
*कहौ तौ भइने डारी मारि। अब का मामा देहौ जियाय।*

*अब का मामा डरिहौ मारि। हमरे अँधरी क पानी पियावा।*
*चुप्पे ते ताँबी दिहेउ पकराय, दूरि ते अँधरी परिचय लीन।*
*को आहिउ तुम कूर मकर, को आहिउ पापी चण्डाल।*
*हम आहिन दसरथ के बान, मिरगा के धोखे दीन्हा मारि।*
*लेउ अँधरी तुम पानी पियौ। पापी के हाथे पानी न पियब।*
*हमरी कँवरि गंगे पहुँचाव। जस जस काँवरि लपकत जाय,*
*तस तस गंगा भागत ताय। दूरि ते गंगा दिहिनि जवाबु,*
*पापी के हाथे कँवरि ना ल्याब। हमरी कँवरि धरउ मरघट तीर,*
*तीन लहरि मां गंगा लीन। तुम तौ अँधरी जातिउ बही,*
*हमहूँ का कछु देउ जवाबु ।हम तौ मरिति पूत के स्वाँच,*
*तइसे दसरथ मरि जाउ।*

उपर्युक्त लोकगाथा मे श्रवण की मातृ-पितृ-भक्ति का निरूपण तो है ही, साथ ही नारी-मनोविज्ञान तथा पुत्र-वत्सलता का भी सहज निदर्शन है। इस प्रकार के आख्यानक गीतों में पौराणिक व्यक्तियों का लोक-विश्रुत चरित्र ग्राम-जीवन की रंगीनियों में रंग गया है।

इसी सन्दर्भ में आल्हा का एक अंश यह भी, जिसकी प्रारम्भिक चार पंक्तियाँ इस प्रकार हैं-

*सुमिरन करिके अजैपाल को, लै कै रामचन्द्र को नाम।*
*खींचि सिरोही लाखनि राना, समुहे गोल गये समुहाय।*
*जैसे भेड़हा भेड़न पैठे, जैसे सिंह बिडारै गाय।*
*तैसे लाखनि दल माँ पैठें, रन माँ कठिन करैं तरवारि।*

पं. रामनरेश त्रिपाठी ने कविता कौमुदी के छठे भाग में इस आल्हा का उल्लेख किया है। साधारण जनता का मनोरंजन करने के लिए लोकनाट्यों की प्रमुख विशेषताएँ है। स्थानीय भाषा ऐतिहासिक, पौराणिक या सामाजिक कथानक, पुरूष पात्रों की ही स्त्री-पात्रों के रूप में प्रस्तुति छोटे तथा सरल संवाद, काजल, कोयला तथा खड़िया आदि के द्वारा वेष-विन्यास तथा एक पर्दे वाले खुले रंगमंच। अवधी के प्रचलित लोकनाट्य हैं रामलीला, नौटंकी, स्वाँग कठपुतली तथा कत्थक नृत्य। देवरिया, गोरखपुर तथा रायबरेली आदि की कई नाटक मण्डलियाँ इनकी प्रस्तुति में अपने समय में काफी प्रसिद्व रही हैं। अवधी लोकनाट्य के ये रूप भोजपुरी, वघेली तथा बुन्देली क्षेत्रों में भी कहीं-कहीं प्रचलित हैं।

प्रहेलिका प्रश्न करने की एक विद्या है। अवधी में इसे बुझौवल भी कहते हैं। गोपनीयता की प्रवृत्ति, बुद्धि-परीक्षा तथा चित्तानुरंजन-इन प्रहेलिकाओं की उत्पत्ति के कारण है। इनके दो रूप उपलब्ध है- बहिर्लापिका तथा अन्तर्लापिका। बहिर्लापिका में प्रश्नोत्तर रहता है, किन्तु उनके समाधान के संकेत नहीं रहते। अन्तर्लापिका में प्रश्न के साथ ही उसका समाधान भी सन्निहित रहता है। अवधी क्षेत्र में प्रचलित वहिर्लापिका का एक उदाहउण प्रस्तुत है-

*अगिन गंग कुण्ड ते निकरी जल कुडै जाय।*
*सोने अइसी सुन्दर गंग नहाय बिलाय।।* अथवा,
*अड़ल्ल बड़ल्ल मुड़ल्ल नही, दौरे सरपट गोड़ल्ल नहीं।*

अन्तर्लापिका का भी एक उदाहरण-

*बीसन का सिर काटि लिया, ना मारा ना खून किया।* अथवा,

*एक पुरुष धाखन मां छोटा बड़ा लड़ैया बीर।*
*दूर दूर ते सब भागत है, कोई न आवै तीर।*

श्री सबल सिंह भावसिंह सुलतानपुर, तथा खगिनिया आदि वर्तमान समय के प्रसिद्ध पहेली रचनाकार हैं। श्री वृजमोहन, गजानन्द तथा पंडित बिगहपुर की पहेलियाँ भी काफी प्रचलित रही है। लोकोक्तियॉं नीति-साहित्य का प्रमुख अंग है। इनमें गागर में सागर भरने की प्रवृत्ति होती है। यदि इन्हें लोकजीवन का सूत्रबद्ध कोष कहा जाय तो अतिशयोक्ति न होगी। अनुभव, अनुभूति तथा विचारपरक जनता की उक्तियाँ ही लोकोक्तियॉं हैं। इन्हें कहावत या कहनई भी कहते हैं।

व्यापकता की दृष्टि से इनके दो प्रकार हैं- प्रथम, सार्वदेशीय हैं। स्थानीय वे हैं जिनका सम्बन्ध क्षेत्र विशेष से है। सार्वदेशीय कहावत का एक उदाहरण दृष्टव्य है-

*जान लिहौ पक्का ठगु आय।*
*औषधि व्यॉचै सॉपु देखाय। लिल्लामी मॉ खुब चिल्लाय।*
*पैसा मॉगै भेपु बनाय। जानि लिहौ पक्का ठगु आय।*

स्थानीय कहावत के इस उदाहरण में लखनऊ के बॉके छैला की बात कही गयी है-

*यहै आय लखनउवा बॉका।*
*ज्वान कसरती हट्टा कट्टा। अपने सीस रखाये पट्टा।*
*बारन तेलु परा चुचुहाय। तहमत बॉधे झूमत जाय।*
*बनियाइन है जालीदार। चिकनी क कुरता बूटेदार।*
*तहि पर गजरा करै बहार। खोंसे कान फुरहरू चारि।*
*दूसर गजरा लीन्हें हाथ। चेला चापर धूमैं साथ।*
*पूर मोहल्ला मानै साका। यहे आय लखउवा बॉका।*

उपर्युक्त दोनों ही उदाहरणों के लेखक पं. चन्द्रभूषण त्रिवेदी रमई काका है।

विषय की दृष्टि से लोकोक्तियों को प्रवृत्ति सम्बन्धी, कृषि सम्बन्धी, स्वास्थ्य सम्बन्धी, परिवार सम्बन्धी तथा खान-पान सम्बन्धी वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। इनके प्रयोग का उद्देश्य उपदेश देना, व्यंग्य-विनोद के द्वारा समाज-सुधार एवं मनोरंजन करना, अनुभव-सिद्ध कथनों के द्वारा लोक-जीवन का मार्गदर्शन करना तथा समय-समय पर अपने तर्क की पुष्टि करना है।

मुहावरा उस सुगठित पद-समूह का नाम है, जो अपना साधारण अर्थ नहीं अपितु एक विशेष अर्थ प्रकट करता है। दूसरे शब्दों में हिन्दी एवं उर्दू में लक्षणा अथवा व्यंजना द्वारा सिद्ध वाक्य को ही मुहावरा कहते हैं। इनके समुचित प्रयोग से शैली में परिष्कार आता है तथा माधुर्य एवं मनोहारिता का समावेश हो जाता है। इन्हें कई वर्गो में विभाजित किया जा सकता है। ये वर्ग है-संस्कार, अन्धविश्वास, व्रत और शकुन सम्बन्धी, पौराणिक, भाग्य सम्बन्धी, नीति सम्बन्धी, जातिगत, राजनीतिक, ऐतिहासिक, सामाजिक तथा विविध।

सच तो यह है कि मुहावरों का कोई सम्यक् वर्गीकरण सम्भव नहीं है। क्योकि हमारी बोलचाल में मुहावरे इतने घुलमिल गए हैं कि हमारी भाषा ही मुहावरामय हो गई है। हिन्दी में जितने भी विलक्षण या रूढ़ प्रयोग है, वे सब मुहावरे ही हैं। अवधी में मुहावरों की प्रचुरता है। जीवन की संक्षिप्त अभिव्यक्ति होने के कारण इनका क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत है। इनमें जनजीवन का समग्र रूप में चित्र बिम्बित रहता है। उदाहरण स्वरूप निम्नलिखित मुहावरे प्रस्तुत किए जा सकते हैं-

*नाक कटब– इज्जत चली जाना*
*दूधन नहाउ पूतन फरौ–फलो फूलो*
*बीरबल की खिचरी– अत्यधिक बिलम्ब, आदि।*

सूक्तियाँ सुन्दर शिक्षाप्रद कथन है। ये वे उत्तियां है, जिनमें ग्राह्य-तत्व की प्रधानता होती है। और ये जन-साधारण को दूसरी उक्तियों की अपेक्षा अधिक प्रभावित करती है। महापुरूषों ने जनजीवन को समुन्नत बनाने के लिए सूत्र रूप में गद्य अथवा पद्य में जो कुछ भी कहा है, वही सूक्तियाँ हैं। इन्हें यदि अमरवाणी की संज्ञा दी जाय तो अत्युक्ति न होगी। सूक्तियों के पीछे किसी न किसी बहुत बड़े समाज सुधारक, महात्मा अथवा विद्वान के अनुभव-पूर्ण व्यक्तित्व की छाप रहती है, जो इन सूक्तियों के साथ उसका भी स्मरण दिलाती है।

सूक्तियों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इनकी भाषा अत्यन्त सरल और हृदयग्राही होती है। इनकी सामग्री दैनिक-जीवन से सम्बद्ध तथ्यों पर आधारित होती है तथा इनमें उपदेशात्मक तत्व की प्रधानता रहती है। जो भाषा अथवा बोली अर्थ-सौष्ठव, भाव-गाम्भीर्य एवं समाहार-शक्ति की दृष्टि से जितनी अधिक सम्पन्न है, उसमें उतनी ही अधिक सूक्तियाँ पाई जाती हैं।

अवधी सूक्तियों से अत्यन्त समृद्ध है, उसमें पद्यात्मक सूक्तियों का प्राचुर्य है। कुछ उदाहरण अप्रासंगिक न होंगे-

1. कोउ नृप होय हमैं का हानी। चेरी छाँड़ि न होउब रानी।।–तुलसी दास
2. सुर नर मुनि सबकै यह रीती। स्वारथ लागि करहिं सब प्रीती।।– तुलसीदास
3. बाढै पूत पिता के धरमा। खेती उपजै अपने करमा।
4. रहै निरोगी जो कम खाय। बिगरै काम न जो गम खाय।
5. सकल पदारथ है जग माहीं। करमहीन नर पावत नाहीं।।–तुलसीदास

इस प्रकार अवधी शिष्ट साहित्य तथा लोकसाहित्य-दोनों ही दृष्टियों से अत्यन्त समृद्ध है। आज आवश्यकता है, अवधी के काव्येतर लोकसाहित्य के वैज्ञानिक विश्लेषण तथा शोधपरक अध्ययन की। उन संस्थाओं को इस दिशा में आगे आना चाहिए, जो अवधी के प्रचार-प्रसार तथा विकास के लिए समर्पित हैं। वर्तमान समय में अवधी में लिखा जाने वाला साहित्य अपनी गुणवत्ता में तो प्रशंसनीय है ही, परिमाण में भी उल्लेखनीय है। यह तथ्य उसके उज्ज्वलतर भविष्य का पुष्ट प्रमाण है।

# अवधी साहित्य की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

डॉ. राधिकाप्रसाद त्रिपाठी

अवधी और ब्रजभाषा-साहित्य से पृथक् मध्ययुगीन हिन्दी कविता की पहचान प्रायः असम्भव है। इन भाषाओं के साहित्य को मध्यकाल की हिन्दी कविता में से ऋण करने पर जो कुछ शेष बचता है, वह मात्रा और गुणवत्ता दोनों ही दृष्टियों से स्वल्प और नगण्य है, गंभीरता से विचार करने के योग्य भी नहीं है। फिर भी, हिन्दी साहित्येतिहास में अवधी साहित्य का यथोचित महत्त्व-रेखांकन अभी तक सम्भव नहीं हुआ है। सूफियों और रामभक्त कवियों की अद्यावधि प्रकाशित रचनाएँ यद्यपि कम महत्त्व की नहीं हैं तथापि अज्ञानता और साम्प्रदायिक दुराग्रह के कारण अवधी-साहित्य का बहुलांश पाण्डुलिपि-रूप में अनुसंधित्सुओं के साहसिक अभियान की प्रतीक्षा कर रहा है। अस बीच अवधी की साहित्यिक प्रवृत्तियों को उद्घाटित करने वाली प्रचुर सामग्री प्रकाश में आयी है। उसके आधार पर कोई भी कह सकता है कि अवधी-साहित्य की मूल्य-चेतना अत्यन्त प्रबल है। उसमें ब्रजभाषा-साहित्य की भाँति न तो दरबारी किस्म की शृङ्गारिकता का अंकन हुआ और न ही आश्रयदाताओं का झूठा प्रशस्ति गायन किया गया। यह बात भी सामान्यतः आश्चर्य में डालने वाली है कि सम्पूर्ण अवधी-क्षेत्र में जो राजे-महाराजे हुए उनके यहाँ नायक-नायिकाओं की शृंङ्गारिक चेष्टाओं के बहुविध चित्र उरेहने और कलावादी काव्य-सर्जना के लिए ब्रजभाषा को ही अपनाया गया; इस कार्य के लिए अवधी का प्रयोग कहीं नहीं हुआ। इस बात के विरुद्ध यदि कहीं कोई तथ्य उपलब्ध होता है तो उसे अपवाद समझना चाहिए। अस्तु, अवधी साहित्य की प्रेरक परिस्थितियों की सम्यक् विवेचना आवश्यक है।

इस सम्बन्ध में हमारा ध्यान सर्वप्रथम अवध-क्षेत्र की मानसिकता और सांस्कृतिक परम्परा की ओर जाता है, क्योंकि किसी क्षेत्र विशेष की मानसिकता और सांम्कृतिक निष्ठा वहाँ के रचनाकारों की अनुभूतियों में प्रतिबिम्बित होने के साथ उनकी भाषिक संरचना में रच-बस जाती है। भाषा और संस्कृति के इस सम्बन्ध पर यद्यपि विद्वानों की दृष्टि यथोचित रूप से नहीं गयी है, तथापि यह बात सर्वमान्य है कि जिस भाषा में मनुष्य अपने भावों और विचारों का आदान-प्रदान करता है, यहाँ तक कि सोचता और महसूसता भी है, उस पर उसकी आस्थाओं एवं मान्यताओं की छाप अवश्यंभावी है। यही प्रभाव कालांतर में उस भाषा की पहचान बनकर उभर आता है।

## अवध का सांस्कृतिक रिक्थ

यह बात अपने में बड़ी ही महत्त्वपूर्ण है कि भारतीय संस्कृति का जो कुछ श्रेष्ठ और उदात्त है, बल्कि यों कहूं कि जिसके नाते भारत का वैशिष्ट्य है, उसका अधिकांश अवध ने ही दिया है। अवध क्षेत्र की राजधानी अयोध्या को विश्व का प्रथम राज्य-केन्द्र होने का गौरव प्राप्त है। आदि पुरुष मनु, जिसके नाम पर हम मानव कहे जाते हैं, ने स्वयं अयोध्या नगरी बसायी थी। मानवमात्र की आँचार-संहिता 'मनुस्मृति'

का प्रणयन यहीं हुआ था। यहीं से महाराज पृथु ने समस्त भूमण्डल पर शासन किया, जिसके कारण धरती को 'पृथ्वी' की संज्ञा मिली। सत्यनिष्ठा के प्रतीक-पुरुष हरिश्चन्द्र, दानवीरता के आदर्श रघु और दधीचि, गङ्गा का अवतरण कराने वाले लोक-कल्याण के महादायोजक भगीरथ, गो-रक्षार्थ अपना शरीरार्पण करने वाले दिलीप तथा रावण जैसे लोक-पीड़क का निपात कर दैहिक, दैविक, भौतिक तापों से मुक्त राम-राज्य की स्थापना करने वाले मर्यादा-पुरुष राम ने इसी भूमि पर जन्म लिया था, इसी मिट्‌टी में खेलकूद कर बड़े हुए थे।

आज जिस समन्वयात्मक संस्कृति को हम अपना वैशिष्ट्य बताने में गौरव का अनुभव करते हैं, उसकी प्रथम व्यवहार-भूमि अवध ही है। नैमिषारण्य की वह धर्म-सभा कभी भुलायी नहीं जा सकती, जिसमें यज्ञ-यागादि कर्मकाण्ड और आत्मविद्या के समन्वय से ब्राह्मण और श्रमण संस्कृतियों को एकमेक कर बिखरती हुई राष्ट्रीय चेतना को सूत्रबद्ध करने का महनीय प्रयास सम्भव हुआ था। करुणा की मूर्ति भगवान बुद्ध और जैन तीर्थंकर ऋषभदेव सहित अनेक तीर्थंकरों, रामोपासक सन्त-महात्माओं एवं सूफी फकीरों की साधना-भूमि के रूप में भी अवध लोक विख्यात है। ऐसी स्थिति में उदात्त मानवीय मूल्यों के प्रति सहज अनुरक्ति यहाँ की मिट्‌टी की पहचान बन गयी है। देश में जब भी मानवीय संकट का अंधकार घनीभूत हुआ, यहाँ से कोई न कोई ज्योति अवश्य फूटी। कदाचित् इसीलिए अवधी भाषा-साहित्य की प्रकृति में श्रेष्ठ मानवीय मूल्य पुष्प-गंध न्यास से समाविष्ट हो गये हैं।

## ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

मध्यकालीन हिन्दी काव्य की प्रेरक परिस्थितियों की विवेचना विभिन्न दृष्टिकोणों से की जा चुकी है। फिर भी, अवधी-साहित्य के सन्दर्भ में नये सिर से पर्यवलोकन करने की आवश्यकता है। प्रश्न यह है कि जब ईसा की 14वीं शती तक सम्पूर्ण उत्तरी भारत मुस्लिम शासन-संस्कृति के प्रभाव में आ चुका था, तब उसकी प्रतिक्रिया यहाँ के समस्त साहित्य में समानरूप से होनी चाहिए थी, किन्तु ऐसा हुआ नहीं। तत्कालीन अवधी-क्षेत्र की काव्य-संवेदना देश के अन्य भागों की अपेक्षा भिन्न प्रकार की है। सच यह है कि अवध-क्षेत्र की अपनी परम्परा और परिस्थिति के कारण यहाँ के लोगों पर उसकी प्रतिक्रिया भिन्न प्रकार से हुई।

अवध का क्षेत्र मुहम्मद गौरी के समय में ही मुस्लिम प्रभुत्व में आ गया था। उसके पश्चात् सन् 1206 ई. में ईसा की 16वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तक यहाँ गुलाम एवं लोदी वंश तथा मुगल वंश की दो पीढ़ियों ने शासन किया और यह क्षेत्र विभिन्न सूबेदारों के नियन्त्रण में रहा। इस कालावधि में दिल्ली से लेकर अयोध्या सहित गंगा-यमुना के दोआब का समस्त भूभाग राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक दृष्टि से अस्तव्यस्त-सा रहा। सर्वत्र डाकुओं, ठगों और बटमारों का बोलबाला था। बीच में जौनपुर के शर्की बादशाओं तथा शेरशाह सूरी के शासनकाल में कुछ समय तक शांति-व्यवस्था की दृष्टि से अनुकूलता रही। इसी कालखण्ड में हिन्दुओं के आस्था-केन्द्र अयोध्या पर कई आक्रमण हुए। जनता को सिकन्दर लोदी की धार्मिक नृशंसता भी इसी अवध में झेलनी पड़ी। ऐसे ही समय में ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती (अजमेर) की शिष्य-परम्परा के सूफियों ने अवध क्षेत्र को केन्द्र मानकर धर्म-प्रचार आरम्भ किया। स्मरणीय है कि ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती ने जब पूर्वी भाषा में खुदाई आदेश प्राप्त होने की बात कही तब उनके हृदय में अवधी के माध्यम से अवध में धर्म-प्रचार करने की आकांक्षा बलवती रही होगी। इसीलिए कालान्तर में उनकी शिष्य-शाखा के सूफी-साधकों ने इस क्षेत्र में अपने केन्द्र स्थापित किये। शेख जैनुद्दीन की शिष्य-परम्परा का विकास डलमऊ (रायबरेली) में हुआ। मोहम्मद इस्माइल की परम्परा मानिकपुर (प्रतापगढ़) में चली। ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती (सन् 1235 ई.) की सातवीं पीढ़ी में सैयद अशरफ जहाँगीर

समनानी (सन् 1412 ई.) ने किछौछा (फैजाबाद) को अपना धार्मिक केन्द्र बनाया। मलिक मुहम्मद जायसी इसी परम्परा में शेख मुबारक बोदले के शिष्य थे। शेख मुबारक के दूसरे शिष्य निजामुद्दीन ने अमेठी (सुलतानपुर) को अपनी साधना-भूमि बनाया। बहराइच में भी सूफी साधकों का केन्द्र स्थापित हुआ। इस प्रकार सूफियों ने हिन्दुओं के बीच धर्म-प्रचार करते हुए अयोध्या के चतुर्दिश अपना प्रभाव-क्षेत्र बना लिया था। फैजाबाद जिले की टाण्डा तहसील के पूर्वी अंचल में सम्पूर्ण जहाँगीरगंज-क्षेत्र सूफियों से अत्यधिक प्रभावित था। आज भी उस क्षेत्र में जहाँगीरगंज के अतिरिक्त आदमपुर, नसीरपुर, अलाउद्दीनपुर, मखदूमपुर आदि ग्राम सूफी-प्रभाव की कहानी कहते हैं। स्मरणीय है कि उक्त ग्रामों का नामकरण सूफी फकीरों के नाम पर हुआ है।

ये सूफी धर्म-प्रचारक अवध में अपना धर्मकेन्द्र मात्र स्थापित कर संतुष्ट नहीं हुए। वे अपने को इस क्षेत्र का निवासी बताने में गौरव का अनुभव करते थे। सैयद नसीरुद्दीन, शेख दरवेश मुहम्मद, शेख फतहमुहम्मद, हजरत कासिम आदि अपने नाम के साथ आस्पद-रूप में 'अवधी' लिखा करते थे। सूफियों ने अवधी को ही अपनी काव्य-भाषा बनाया। वाद में अवधी ही हिन्दी के सम्पूर्ण सूफी-साहित्य का एकमात्र अभिव्यक्ति-माध्यम बन गयी। अवधी-क्षेत्र के बाहर रहने वाले सूफियों ने भी अवधी में काव्य-रचना की। अद्यावधि सूफियों की जो आख्यानक रचनाएँ उपलब्ध हैं, उनके अतिरिक्त शेख हुसामुद्दीन (मानिकपुर), शेख बुरहानुद्दीन कृत 'फिकरानामा' और अरिल्ल तथा शेख अब्दुस्समद की रचनाएँ भी अवधी भाषा में प्राप्त हुई हैं। वास्तव में अध्यात्म के इन पथिकों ने अवधी को अपना अभिव्यक्ति-माध्यम बनाकर और अपने नाम के साथ 'अवधी' लिखकर क्षेत्रीय जनता से आत्मिक सम्बन्ध बनाने का प्रभावशाली प्रयत्न किया और अपने धर्म प्रचार के लिए अनुकूलता उत्पन्न की। उनके द्वारा अवध से इतना अधिक नैकट्य स्थापित करने का एकमात्र कारण रामभक्ति के केन्द्र अयोध्या को अपने स्थायी प्रभाव में लाना था। परवर्ती रामभक्त सूरकिशोर ने जब कलियुग के दुष्प्रभाव का वर्णन करते हुए 'जहँ तीरथ तहँ जमन बास' जैसा कथन किया तब उनका मंतव्य उपर्युक्त तथ्य की ओर संकेत करने से ही था।

राम की जन्मभूमि और रामभक्ति-केन्द्र अवध में अवधी रामकाव्य का प्रणयन बहुत विलम्ब से हुआ। उपलब्ध सामग्री के आधार पर कहा जा सकता है कि मुल्ला दाऊद के 'चंदायन' (सन् 1370 ई. ) की रचना के उपरान्त लगभग दो सौ वर्षों तक अबाध गति से अवधी में सूफी-साहित्य-सर्जना का क्रम चलता रहा, किन्तु रामभक्ति विषयक कोई भी ग्रन्थ ईसा की 16वीं शताब्दी से पूर्व अवधी में नहीं आया। गोस्वामी तुलसी से पहले केवल सूरदास कृत 'रामजन्म' और ईश्वरदास कृत 'भरतमिलाप' शीर्षक दो रचनाएँ उपलब्ध होती हैं, जिन्हें लोकप्रियता और महत्त्व की दृष्टि से विचारणीय भी नहीं कहा जा सकता। इतिहास के मौन को दृष्टि में रखते हुए केवल यही कहते बनता है कि उस कालखण्ड में अवध का सम्पूर्ण भूभाग आध्यात्मिक एवं राजनीतिक चेतना से विहीन और निस्तेज हो गया था; अन्यथा जब जनता के बीच अपना प्रभाव बढ़ाने के उद्देश्य से सूफी फकीर अवधी में अपना संदेश प्रचारित कर रहे थे, तब यहाँ के रामभक्तों की भी जनभषा के माध्यम से अपना संदेश लेकर सम्मुख आना चाहिए था। मेरी आशंका को निर्मूल सिद्ध करते हुए कोई यह कह सकता है कि रामभक्ति का केन्द्र होने के बावजूद अधिकांश रामभक्ति-साहित्य अवध के बाहर ही रचा गया। इसलिए मात्र साहित्य-रचना की प्रवृत्ति के अभाव में अयोध्या को दुर्बल कहना समीचीन नहीं है। जो भी हो, इतना इतिहास सिद्ध है कि गुप्त-वंश के पश्चात् अयोध्या नगरी न तो शासन का केन्द्र रही और न ही उसका धार्मिक महत्त्व अक्षुण्ण रह सका। मौखरी-वंश के शासनकाल और हर्षवर्द्धन के समय में तो फिर भी अयोध्या की गणना भारत के प्रमुख स्थानों में होती रही, किन्तु हर्ष की मृत्यु (647 ई.) के पश्चात् यह क्षेत्र राजनीतितक एवं सामाजिक दृष्टि

से अत्यन्त अस्थिर और दुर्बल हो गया। ईसा की 8वीं शताब्दी से लेकर ग्यारहवीं शताब्दी के अन्तिम समय तक यह भूभाग गुर्जर-प्रतीहारों के साम्राज्य का अंग रहा, जिसका केन्द्र कन्नौज था। गुर्जर-प्रतीहारों के बाद कन्नौज पर गहड़वालों का अधिकार हो गया, जिसका अन्तिम शासक जयचन्द (1170-1193) मुहम्मद गोरी से पराजित हुआ। इसके अनन्तर यह क्षेत्र लम्बे समय तक मुस्लिम शासन का अंग बनकर सूबेदारी व्यवस्था झेलने को बाध्य हुआ। पराभव का यह कालखण्ड अवध के लिए तो था ही, न्यूनाधिक हेरफेर के साथ सम्पूर्ण देश के लिये था।

## सांस्कृतिक पुनर्जागरण का आह्वान

भारतीय समाज जब यवन शासकों के सम्मुख भू-लुण्ठित हो रहा था, तब वैष्णवाचार्य स्वामी रामानन्द ने आविर्भूत होकर यवन-शक्ति के आतंक से ग्रस्त समाज को नयी शक्ति दी, तीर्थपुरियों को पुनर्गठित कर बलपूर्वक मुसलमान बनाये गये हिन्दुओं को रामतारक मन्त्र की दीक्षा देकर उन्हें हिन्दू धर्मान्तर्गत परावर्तित किया। स्वामी रामानन्द के तेजोमय व्यक्तित्व का प्रभाव अयोध्या पर भी पड़ा। यहाँ के मन्दिरों और धार्मिक पीठों में नया तेज जागा। इस दृष्टि से 'भविष्य पुराण' की निम्नांकित पंक्तियाँ ध्यान देने योग्य हैं, जिनके अनुसार अयोध्या से 'संयोगी' नाम से विख्यात म्लेच्छ स्वामी रामानन्द के प्रभाव से वैष्णव बन गये और उनके गले में तुलसी-माला, जिह्वा पर राम-नाम तथा मस्तक पर श्वेत और लाल रंग का त्रिपुण्ड-चिह्न शोभित होने लगा—

*म्लेच्छास्ते वैष्णवाश्चासन् रामानन्द प्रभावतः।*
*संयोगिनश्च ते ज्ञेया अयोध्यायां वभूविरे।।*
*कंठे च तुलसी माला जिह्वा राममयी कृता।*
*भाले त्रिपुण्ड चिह्नं च श्वेतरक्तं तदाभवत्।।*

स्वामी रामानन्द की वैष्णव-परम्परा में ही गोस्वामी तुलसीदास का प्रादुर्भाव हुआ। गोस्वामी जी ने ठीक सूफियों की ही भाषा-शैली में, स्वामी रामानन्द का संदेश जन-जन तक पहुँचाते हुए लोक-मानस में मर्यादा-पुरुष राम के प्रति भक्ति-भाव जगाया, समाज की विलुप्त मर्यादाओं की पुनर्प्रतिष्ठा की। गोस्वामी जी के कृतित्व का सहारा पाकर सुकृति की हारती हुई सेना मानो पुनः जीत गयी। भारतीय मनीषा का पुनराख्यान करने वाला इतना बड़ा कवि-चिन्तक भारत में इसके पूर्व और इसके पश्चात् अबतक कोई दूसरा नहीं हुआ। तुलसी ने अपनी रचनात्मक प्रतिभा से अवधी का शृङ्गार किया, माँ भारती का वन्दन-अभिनन्दन किया। उन्होंने अपने समकालीन जीवन की समस्याओं का जो समाधान प्रस्तुत किया, वह कभी भी बासी पड़ने वाला नहीं है। गोस्वामी जी ने हिन्दू समाज की आन्तरिक विकृतियों और बाहर की चुनौतियों का एक साथ प्रतिरोध किया।

जिस समय स्वामी रामानन्द द्वारा प्रवर्तित रामावत सम्प्रदाय की शाखाएँ अयोध्या में जड़ जमा रही थीं, लगभग उसी काल में गलता (राजस्थान) में स्वामी अग्रदास ने रसिकोपासना का प्रवर्तन किया। अयोध्या में भी उसका द्रुतगति से विकास हुआ। एक समय था जब गोस्वामी तुलसीदास ने भगवान् के विग्रह के सम्मुख धनुषबाण धारण करने की शर्त पर मस्तक नवाने की बात कही थी, किन्तु रसिकोपासक रामभक्त कृष्णोपासकों की माधुर्य-भावना की स्पर्धा में उद्दाम शृङ्गार का चित्रण करने लगे, भोगैश्वर्य में राम को श्रीकृष्ण से श्रेष्ठतर अंकित करने लगे। कहना न होगा, आगमिक परम्परा की रसोपासना का प्रवाह यद्यपि बहुत पहले से चला आ रहा था, तथापि अग्रदास ने (16वीं शती) उसे साम्प्रदायिक स्तर पर विधिवत् प्रतिष्ठित किया।

मर्यादावासी रामभक्ति-धारा के स्थान पर रसिकोपासना का विधान करने के अनेक कारण थे। एक

यह कि मुस्लिम शासन की जिस धार्मिक नीति के विरुद्ध अस्तित्व-रक्षा एवं समाज-संगठन के उद्देश्य से स्वामी रामानन्द और गोस्वामी तुलसीदास प्रभृति भक्तों ने राम के मर्यादा पुरुषोत्तम-रूप का आख्यान किया था, वह अकबर के शासनकाल तक आते-आते बहुत कुछ परिवर्तित हो गयी। मुसलमान शासक यह अनुभव करने लगे कि इतने बड़े देश में एकदम परायेपन के साथ बहुत समय तक शासन करना सम्भव नहीं है। हिन्दुओं ने भी इस्लाम को जीवन का यथार्थ मानकर उनके साथ सह-अस्तित्व की भावना से रहने की मनोभूमि बनायी। इधर देशी रजवाड़े मुसलमान बादशाहों से सम्बन्ध सुधार कर राजसी तामझाम के साथ रहने लगे थे। नवाबी शासन में हिन्दू-मुस्लिम सद्भाव की दृष्टि से और भी अनुकूलता आयी। रामभक्तों को मठ-मन्दिर-निर्माण की सुविधा प्राप्त हुई। मन्दिरों में शंख और घड़ियाल की ध्वनि सुनाई पड़ने लगी। ऐसे में रामभक्तों का मर्यादा-पुरुष राम के स्थान पर रसिक शिरोमणि राम के प्रति अनुरक्त होना स्वाभाविक जान पड़ता है। रामभक्ति के इस एकांतिक स्वरूप ने जीवन के मारक यथार्थ से दूर अध्यात्म के रम्य लोक में ले जाकर हिन्दू समाज को कुंठित होने से बचाया। यही नहीं, भोग के जिस रोग से भारत विगत कई शताब्दियों से पीड़ित था, उसी में पुनः लिप्त होते देखकर रसिकोपासक रामभक्तों ने समस्त भोग एवं ऐश्वर्य को भगवदर्पित कर मानवीय राग का संकट निवाकरण करने का प्रयत्न किया। यह बात अलग है कि रसिकोपासना सम्बन्धी राम-साहित्य पर तत्कालीन सामंतीय भोगैश्वर्य और आत्मरति की भावना का प्रभाव भी दिखाई पड़ता है।

अतः अयोध्या में रसिक रामभक्ति के पीठ स्थापित हुए और अवधी भाषा में रामभक्ति विषयक विपुल साहित्य-सर्जना हुई। किन्तु, रसिम भक्त अपने सामाजिक दायित्व के प्रति भी सचेत रहे हैं। उन्होंने समकालीन जीवन की समस्याओं के प्रति उदासीनता नहीं बरती। रसिक राम भक्ति-साहित्य में कहीं साधु-समाज की पतितावस्था पर इंगित किया गया, और कहीं ईसाई धर्म-प्रचार की समस्या की ओर ध्यान आकृष्ट किया गया। सन् 1857 के स्वतंत्रता-संग्राम की ओर भी इन संतों की दृष्टि गयी। इस प्रकार जन के लिए जनभाषा में बात कहने की जिस काव्य-परम्परा का सूत्रपात सूफी संतों ने किया, उसे गोस्वामी जी जैसे शास्त्रविद् आचार्य ने उसी शैली में ग्रहण किया और उसकी परम्परा परवर्ती रामभक्ति-काव्य में भी चलती रही।

अवधी के निर्गुण-काव्य की पृष्ठभूमि भी अत्यन्त विशद और पुष्ट है। सामान्यतः संतमत का उदय जीवन के अनेकविध अतिवादों के बीच 'मध्यम मार्ग' का प्रस्ताव लेकर हुआ था। हिन्दी-प्रदेश में संतमत का प्रवर्तन कबीर ने किया। वे अपनी बोली को 'पूवी' (अवधी) कहने का आग्रह करते हैं। उनकी 'साखियों और सबदियों' में भले ही खड़ी बोली और ब्रजी की प्रधानता हो, किन्तु रमैनियों में अवधी का प्रामुख्य है। अवध-क्षेत्र से सम्बद्ध परवर्ती संतों की वाणी तो अवधी भाषा में है ही, भोजपुरी भाषी होने के बावजूद गुलालपन्थी और शिवनारायणी सम्प्रदाय के सन्त अवधी का प्रयोग सफाई के साथ करते हैं। इनकी वाणी की सांस्कृतिक चेतना के स्रोत अलग-अलग हैं। बावरी साहिबा की साधना में सूफी तत्व अत्यधिक मुखर है। किन्तु, अयोध्या के प्रभाव से उनकी शिष्य-परम्परा के संत गुलाल और उनके अनुवर्ती भीखा साहब, गोविन्द साहब और पलटू साहब में वैष्णव तत्व विशेष रूप से उभरा। पलटू साहब के अखाड़े में रामपंचायतन की प्रतिष्ठा भी हुई। सतनामी सम्प्रदाय (कोटवा-बाराबंकी) के संत सम्पूर्ण निर्गुण धारा और सगुण भक्ति आन्दोलन के बीच सेतु का काम कर रहे थे। उन्होंने मूर्ति पूजा को छोड़कर सगुणोपासना को सर्वतोभावेन ग्रहण किया। सतनामी संत जगजीवन साहब ने शैव संन्यासी विश्वेश्वरपुरी को दीक्षा-गुरु बनाकर तथा राम-कृष्ण हुनमान की उपासना करते हुए निर्गुणोपासना के क्षेत्र में सामंजस्य का एक नया आदर्श प्रस्तुत किया। साँईदाता सम्प्रदाय के सन्तों में सूफी साधना के तत्व एक बार फिर मुखर हो उठे हैं। सच यह है कि अवधी के निर्गुण साहित्य में वैष्णव रामभक्ति और सूफी-साधना का

द्वन्द्व बहुत ही प्रच्छन्न रूप से अभिव्यक्त हुआ है। जिन सम्प्रदायों में समाज के पिछड़े वर्ग का प्रतिनिधित्व है, उनमें वर्ग चेतना का भाव भी दिखाई पड़ता है।

आधुनिक युग में सम्पूर्ण देश के साथ अवध के सांस्कृतिक जीवन में भी परिवर्तन आया। जनता ने अपने अस्तित्व को पहचाना। लोगों में दासता की बेड़ियों को तोड़ने की भावना बलवती हुई। पाश्चात्य जीवन-पद्धति का अंधानुकरण जनमानस को अखरने लगा। जनता आर्थिक और सामाजिक जीवन की विकृतियों से मुक्त होकर संगठित जीवन व्यतीत करने के लिए छटपटाने लगी। अपनी माटी की सोंधी गंध, फिर हवा के झोंके के साथ जन-मन को बाँधने लगी। आजादी मिलने का उल्लास और बहुविध समस्याओं से घिरे होने का एहसास एक ही सिक्के के दो पहलुओं की भाँति सामने आया। देश के विकास पर निहित स्वार्थ का कुंडली मारकर बैठना संवेदनशील व्यक्तियों के लिए मर्माहत करने वाला सिद्ध हुआ। अस्तु, आधुनिक अवधी कविता अपने दायित्व के प्रति जागरूक दिखाई पड़ती है। **बलभद्र दीक्षित 'पढ़ीस', बंशीधर शुक्ल, रमई काका, केदारनाथ त्रिवेदी 'नवीन', युक्तिभद्र दीक्षित, सूर्यप्रसाद द्विवेदी 'सूरज', लक्ष्मीशंकर मिश्र 'निशंक', मृगेश जी, जुमईखाँ आजाद, विकल गोण्डवी, लवकुश दीक्षित, पारस भ्रमर, अदम गोण्डवी, रामअकबाल त्रिपाठी 'अनजान', हरिश्चन्द्र पाण्डेय 'सरल'** आदि की रचनाओं में उपर्युक्त सन्दर्भों के सशक्त चित्र देखे जा सकते हैं। इनकी कविता अवध के गाँवों की आशा-आकांक्षा की वाणी देने के साथ ही जीवन की विसंगतियों पर गहरी चोट करती है। उसमें जिन्दगी के कटु यथार्थ से आहत आदमी के घाव को भरने की शक्ति है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि अवधी भाषा अपनी शैशवावस्थ से ही नैतिक और श्रेप्ठ आध्यात्मिक, मानवीय मूल्यों की अभिव्यक्ति करती रही है। और मूल्य-निष्ठा उसकी प्रकृति का अंग बनकर बहुविध-रंगों में अभिव्यक्ति हो रही है।

# अवधी-लोकनाट्य

डॉ. कमलाप्रसाद मिश्र

( 1 )

भारतीय नाट्य का इतिहास प्राचीन है। ईसा से तीन सौ वर्ष पूर्व ही भरत मुनि ने 'नाट्यशास्त्र' का प्रणयन करके नाटक का शास्त्रीय विवेचन किया था। धनञ्जय कृत 'दशरूपक', कविराज विश्वनाथकृत 'साहित्यदर्पण' आदि ग्रन्थों में नाट्य सम्बन्धी मूल्यवान् सामग्री संगृहीत है। विद्वानों ने नाटक का मूल उत्स वेदों को स्वीकार किया है। ऋग्वेद की संवादात्मक ऋचाएँ नाट्य संवादों का मूल हैं। ऋग्वेद काल में प्रचलित गीत नृत्य एवं अभिनय की त्रिवेणी से प्राचीन नाट्यों ने जन्म लिया। संस्कृत साहित्य में नाटकों की अविच्छिन्न विकासमान परम्परा उपलब्ध है।

भारत में यवन शासन की प्रतिष्ठा ने भारतवर्ष में राजनीतिक-सांस्कृतिक विप्लव ला दिया। संगीत तथा अभिनय के प्रति यवन शासकों ने उपेक्षा प्रकट की। राजाश्रय के अभाव ने पारम्परिक संस्कृत नाट्यों का मूलोच्छेदन कर दिया। कालांतर में भक्ति-आन्दोलन की लहर ने उत्तर भारत के मुरझाये हिन्दुओं को हरा-भरा कर दिया और आचार्य वल्लभ की सत्प्रेरणा से कृष्ण लीला का प्रचलन हुआ, जिसे 'रासलीला' अभिधान प्राप्त हुआ। कविकुल चूड़ामणि गोस्वामिप्रवर ने वाराणसी में 'रामलीला' का अभिनय प्रारम्भ किया। भक्ति-आन्दोलन के व्यापक प्रभाव से उत्तर भारत में लोकधर्मी नाट्यों का शुभारम्भ हुआ। लोकनाट्य लोकधर्मी होते हैं। लोक जीवन से सम्बन्धित उत्सवों पर, लोक-जीवन की मांगलिक बेला में उनका अभिनय होता है।

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी लोकनाट्यों को शास्त्रीय नाटकों से प्राचीनतर मानते हैं। भरतमुनि के नाट्यशास्त्र में 'समवकार' रूपक का उल्लेख है, जो तीन अंकों का होता था और लगभग सात घण्टे तक अभिनीत होता रहता था। यह लोकधर्मी नाट्य था। डॉ. दशरथ ओझा ने कहा है, "हिन्दी नाटकों की परम्परा का मूल स्रोत यह जननाट्य ही है, जो स्वाँग आदि नाम से अपने प्राचीनतम रूप में अब तक विद्यमान है।"

लोकनाट्य लोकजीवन में मंगलमय अवसरों पर अभिनीत होते हैं। अवधी क्षेत्र में विवाह के अवसर पर अनेक जातियों में स्त्रियाँ बारात विदा हो जानेपर स्वाँग करती हैं। ये स्वाँग प्रहसनात्मक तथा नृत्यनाट्यात्मक—दो प्रकार के होते हैं। प्रथम में जनमनरंजन के लिए कोई घटना अभिनीत की जाती है और उसे देखकर दर्शक हँसते हैं। इसमें नृत्य का अभाव होता है। भाँड़ों के प्रहसन इसी कोटि में आते हैं। दूसरी कोटि में नृत्यप्रधान नाट्य आते हैं। भोजपुरी का 'विदेसिया' इसी प्रकार का नाट्य है, जो विरह-प्रधान होता है।

लोकनाट्यों का वैशिष्ट्य-विश्लेषण करते समय उसके अधोलिखित तत्त्वों पर विचार करना वाञ्छित

होगा—

**भाषा :** लोकनाट्यों की भाषा सादी तथा आडम्बर विहीन होती है। अपढ़ व्यक्ति भी इन्हें बिना प्रयास के ही हृदयंगम कर लेते हैं। अवधी भाषी प्रदेश के नट अवधी बोली का प्रयोग करते हैं। इससे जन-जन के लिए अभिनय बोधगम्य हो जाता है।

**संवाद :** लोकनाट्यों में संवाद लघु एवं सरल होते हैं। लम्बे कथोपकथन का इनमें अभाव होता है। ग्राम्य जन प्रायः सुदीर्घ संवाद सुनने के अभ्यस्त भी नहीं होते। लोकनाट्यों के संवाद बेधक एवं चुटीले होते हैं।

**कथानक :** लोकनाट्यों का कथानक इतिहास, पुराण अथवा समाज से आनीत होता है। अनेक लोकनाट्य धार्मिक कथा के आधार पर अभिनीत होते हैं। रामलीला तथा रासलीला इसी प्रकार के लोकनाट्य हैं।

**चरित्र-सृष्टि :** लोकनाट्यों में प्रायः पुरुष ही विभिन्न पात्रों की भूमिका में अभिनय करते हैं। नारी पात्रों का अभिनय भी पुरुष पात्र करते हैं। ये पात्र वेशभूषा से कम आकर्षक होते हैं, परन्तु अपने अभिनय के माध्यम से ये जनता को आकृष्ट करते हैं।

लोकनाट्यों के पात्र समाज के परिचित होते हैं। उनका चरित्र स्वाभाविक होता है। वे अपने हाव-भाव से अति आकर्षक बन जाते हैं। काजल, चूना, खरिया मिट्टी आदि प्रसाधनों से सजकर लोकनाट्य के अभिनेता खुले मंच पर अभिनय करके जन-मन को आह्लादित करते हैं। पात्र पेड़ की आड़ में या खुले में ही अपना प्रसाधन करके मंच पर आते हैं। दर्शक उन्मुक्त आकाश तले बैठकर लोकनाट्य का आनन्द लेते हैं।

( 2 )

अवधी लोकनाट्यों का क्रमबद्ध इतिहास उपलब्ध नहीं है। अवध क्षेत्र में प्रचलित कतिपय लोकनाट्यों—वानर और भालु के नृत्य, मदारी और नटों के खेल तथा कठपुतलियों के नृत्य आदि से अनुमान लगाया जा सकता है कि आदिम मानव ने इस क्षेत्र में प्रथमतः पशु-पक्षियों को अपने नाट्य-अभिनय में सहयोगी बनाया होगा। बन्दर-भालु प्रधान नाटकों में कथानक का अभाव था। मात्र अनुकरण ही तत्कालीन नाट्य था। आज भी अवध क्षेत्र में मदारी बन्दर नचाता है और उसके अभिनय की (सूत्रधार, निर्देशक आदि रूप में) व्याख्या भी करता जाता है।

अवध क्षेत्र में यत्र-तत्र कठपुतलियों का नृत्य-अभिनय भी प्रचलित है। इनमें मुगल दरबारों का चित्रण होता है। यह लोकनाट्य शनैः-शनैः लुप्तप्राय होता जा रहा है। वर्तमान समय में अवधी के प्रचलित लोकनाट्यों के अधोलिखित भेद हैं—

**रामलीला :** अवधी रामलीला गोस्वामी तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' के आधार पर विनिर्मित हुई है। अवध क्षेत्र धर्मप्रधान है। रामलीला धार्मिक लीला है, अतः इसका इस क्षेत्र में व्यापक प्रचार-प्रसार है। रामलीला का मंच उन्मुक्त आकाश के नीचे बनाया जाता है। पात्रों के लिए उनके अनुरूप अनेक स्थानों का निर्माण किया जाता है। मध्यभाग में रामायण मंडली आसीन होती है। वह मानस का सस्वर वाचन करती है और कथानक को अग्रेषित करती है। पात्रों का संवाद भी बीच-बीच में चलता रहता है। सुविधानुसार अभिनेता दर्शकों से भी वार्तालाप कर लेता है।

रामलीला का विशिष्ट आयोजन अवध के गाँवों में किया जाता है। क्वार मास की शुक्ल दशमी तक रावण का पुतला अग्निदेव को अर्पित करा दिया जाता है। भरत-मिलाप एवं राजगद्दी महोत्सवोपरान्त रामलीला का समापन घोषित हो जाता है।

रामलीला लोकनाट्य में शास्त्रीय नाटकत्व का अभाव है। यवनिका, विष्कम्भक, प्रवेशक, नान्दीपाठ आदि पर ध्यान नहीं दिया जाता है। रामलीला मंडली रामचरित का यथेच्छित चित्रण एवं प्रस्तुति करके अपने कर्तव्य की इतिश्री मान लेती है। रासलीला की प्रस्तुति के समय अभिनेताओं को दर्शकों की श्रद्धा मिलती है, उनसे सम्मान-आदर मिलता है।

**रासलीला :** रासलीला मूलतः व्रज-प्रदेश का लोकनाट्य है, परन्तु व्रजप्रदेश के प्रभाव से अवध-प्रदेश में भी यह व्यापक रूप में अभिनीत होती है। रासलीला का मूलाधार श्रीमद्भागवत में वर्णित कृष्ण कथा है, कृष्ण लीलाएँ हैं। इस लीला के मूल में आचार्य वल्लभ जी की प्रेरणा है। भाषा की दृष्टि से इसे अवधी का लोकनाट्य नहीं कहा जा सकता, किन्तु प्रचार की दृष्टि से अवध प्रान्त में इसका प्रचलन है, व्यापक प्रचलन है। लोकभावना एवं लोकानुरंजन की दृष्टि से भी रासलीला लोकनाट्य का अवध क्षेत्र में प्रसार है, महत्व एवं महिमा है।

**स्वाँग :** स्वाँग अवधी क्षेत्र की जनता का रंगमंच है। डॉ. सत्येन्द्र कहते हैं—"स्वाँग या भगत के रंगमंच पर जनअभिनय-कौशल, संगीत-कौशल, नृत्य-कौशल आदि सभी प्रदर्शित हो जाते हैं। यह बड़ा शक्तिशाली रंगमंच है। गाँवों में लाखों मनुष्य इसे देखने को एकत्र हो जाते हैं।" संस्कृत नाट्यशास्त्र में जिस प्रकार रूपक प्रहसन की कोटि में आते हैं, वैसे ही स्वाँग भी। आज स्वाँग प्रहसन का रूप धारण कर चुका है।

डॉ. कीथ प्रहसन की उत्पत्ति लौकिक स्वीकारते हैं। वे इसे किसी प्रचलित लोकरीति का साहित्य-गृहीत रूप कहते हैं। फ्रान्सीसी इतिहासकार गासाँ दि तासी स्वागँ को लौकिक मनोरंजन के साथ-साथ भारतवासियों के निन्दा और व्यंग्य का साधन और माध्यम मानते हैं।

स्वाँग अवध प्रान्त में अब भी व्यापक रूप से प्रसृत है। यहाँ निवास करने वाली अनेक जातियों—विशेषतः चमार, कँहार, धोबी आदि में विवाह आदि के अवसर पर स्वाँग की व्यापक परम्परा है। यह अति ठेठ ग्रामीण अभिनय है। इसमें यत्र-तत्र अश्लीलता भी प्राप्त होती है। इसमें आंगिक एवं वाचिक अभिनय की प्रधानता होती है।

अवधी भाषी क्षेत्र में नट या नटुआ नामधारी जाति इतस्ततः बिखरी पड़ी है। इस जाति के जीविकोपार्जन का प्रमुख साधन गाँवों में घूम-घूम कर पहलवानी, बाजीगरी एवं मदारी के खेल प्रदर्शित करना है। नट जाति के लोग अपना तमाशा प्रदर्शित करते समय ढोल बजाते हैं तथा मजाकिया अभिनय करते हैं।

अवधी लोकजीवन तथा साहित्य का तुलनात्मक विवेचन करने वाले अनुसंधित्सु को इस जातिवाचक शब्द 'नट' एवं उनके अभिनय में नाटक विषयक कुतूहलपूर्ण एवं मनोरंजक सामग्री मिल सकती है।

**नौटंकी :** नौटंकी सामाजिक प्रवृत्तियों का प्रतिनिधित्व करने वाला लोकनाट्य है। इसका प्रचलन अवध क्षेत्र में प्राचीन समय से है। वस्तुतः नौटंकी प्रेम-कथाप्रधान नाट्य रचना है। इसे गीतिनाट्य विधा के अति समीप माना जा सकता है। नौटंकी के सम्बन्ध में जिज्ञासा करने पर ज्ञात हुआ कि नौटंकी नामधारिणी कोई सुकुमारी राजकुमारी थी, वैसी ही विश्रुत सुन्दरी एवं रूपसी जैसी सिंघलदीप की पद्मिनी। फूलसिंह नामक युवा ने अपनी भाभी की व्यंग्योक्तियों से आहत होकर नौटंकी से परिणय का निश्चय किया। दो खुरजियों में स्वर्णरत्न ग्रथित माला नौटंकी की सेवा में पहुँचाई। नारी वेश में नौटंकी के शयन कक्ष में गया और फिर नौटंकी से क्वाँरी रहने का कारण पूछा। नौटंकी ने कहा कि सखी यदि हममें से कोई पुरुष होता तो कितना अच्छा होता। कालांतर में राजा को खबर लगी। पहले फूलसिंह त्रासित हुआ, प्रताड़ित तथा दंडित हुआ। फिर नौटंकी के आग्रह पर दोनों का परिणय-संस्कार सम्पन्न हुआ। उक्त

लोककथा पुराकाल में जनप्रचलित रही होगी। सहजता के कारण नौटंकी जैसी प्रचलित अन्य प्रेम कथाएँ भी नौटंकी बन गयीं।

नौटंकी का मंच तख्तों एवं बाँसों से बना होता है। हारमोनियम, नगाड़ा आदि वाद्य मंच के एक शिरे से बजाये जाते हैं। परदे की व्यवस्था होती है। अभिनय के नाम पर साधारण नाटकीय मुद्राएँ होती हैं। कथानक पद्यात्मक शैली में बद्ध रहता है, अभिनेता उसे गाकर प्रस्तुत करते हैं।

वर्तमान समय में नौटंकी अवध क्षेत्र का सर्वाधिक प्रचलित लोकनाट्य है। इस नाट्य विधा से अवध क्षेत्र का जनमानस परम आह्लाद का अनुभव करता है। नौटंकी रात्रि के द्वितीय प्रहर में प्रारम्भ होकर पूरी रात दर्शकों का मनोरंजन करती है। स्त्री पात्रों का अभिनय कम आयु के लड़के करते हैं। वे नृत्य भी करते हैं, कभी-कभी अच्छा और मनोहारी भी। हर्ष का विषय है कि चलचित्रों का व्यापक प्रचलन अवधी नौटंकी को निर्मूल नहीं कर सका वरन् नौटंकी में अनेक फिल्मी गीत प्रस्तुत होने लगे, उनका अभिनय होने लगा।

अवधी का लोकनाट्यमंच विराट् है, रामलीला एवं रासलीला के संदर्भ में पौराणिक एवं ऐतिहासिक भी। नौटंकी एवं स्वाँग के माध्यम से लोकरंजन में उसका व्यापक अवदान है, इसलिए वह वरेण्य है, सम्मान्य है।

# अवधी का गद्य साहित्य

डॉ. राधिकाप्रसाद त्रिपाठी

---

हिन्दी साहित्य के मध्यकाल की कई शताब्दियों में अवधी भाषा कदाचित् अध्यात्म और धार्मिक नैतिकता की एकांतिक अभिव्यक्ति करने के कारण आधुनिक चिन्तन और जीवन-यथार्थ के साथ कदम मिलाकर चलने में असमर्थ हो गयी। ब्रज भाषा तो फिर भी सम्पूर्ण रीतिकाल में सामंतीय शक्ति-छाया के तले नीति-चर्चा, साहित्य-चिन्तना और टीका-व्याख्या के निमित्त से गद्य-लेखन का माध्यम बनी। जो भी हो, राष्ट्रीय नवजागरण काल में खड़ी बोली को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने के महाभियान में ब्रजी और अवधी दोनों ही गद्य के क्षेत्र से सर्वथा अलग-थलग हो गयीं। बीच-बीच में क्षेत्रीय प्रतिभाओं की सक्रियता से जो साहित्य सर्जना हुई, वह सम्भव है आज के परिष्कृत भावबोध-सम्पन्न पाठकों को मात्रा और गुणवत्ता में नगण्य-सी लगे, किन्तु वह अवधी गद्य की भावी विकास-यात्रा में महत्वपूर्ण पीठिका बनेगी, इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है। अस्तु, हम अवधी गद्य साहित्य की विविध विधाओं का संक्षिप्त स्वरूप-विवेचन करना चाहेंगे।

**निबंध** : निबंध-साहित्य में अवधी के शब्द-प्रयोग तो प्रारम्भ के अनेक निबंधकारों ने किये, किन्तु सच्चे अर्थों में अवधी का प्रथम निबंधकार होने का गौरव **पं. प्रतापनारायण मिश्र** को ही प्राप्त हुआ। शुद्ध अवधी में रचित मिश्रजी का एकमात्र हास्य प्रधान निबंध 'तिल' शीर्षक से 'ब्राह्मण' (खण्ड 6, स० 6) में प्रकाशित हुआ था। भाषा की सहजता और तद्‌गत लालित्य के उदाहरण-रूप में कुछ पंक्तियाँ उद्‌धृत करना सम्प्रति असीमीचीन न होगा–

**"वाह रे तिल, जेहि के बिना पितर पानी नाहीं पावत, देवतन का होम नाहीं होत, तेहि कै बड़ाई मनई कैसे कर सकत है? ई दूयाखई मा छूवाट होत है, पै गुन बड़े-बड़े भरे हैं। भ्यनहीं के पहर उठि कै पैसा ध्याला भरि चबाय लीन करै कितौ नैनू के साथ खाय लीन करै तौ कौनौ रोगु दोखु नेरे न आवै। तेलु एहिका अस दूसर होतै नाहीं ना। सब फुलेल एही से बनत हैं जिनके बिना बड़े-बड़े रसिया औ बड़ी-बड़ी सुन्दरिन का चिकनपट नाहीं होत। फुरी पूछौ, तेल फुलेल में अक्याल सिंगारुइ नाहीं होत। आँखिन कै जोतिउ बाढ़ति है माथे मां जुड़वनिया होति है और घांह भरि निरदोखिल है जाति है।"**

**बलभद्रप्रसाद दीक्षित 'पढ़ीस** ने आकाशवाणी लखनऊ के देहाती कार्यक्रम में काम करते हुए अवधी गद्य की बड़ी सेवा की थी। उनके निबंधों में कथ्य की ऋजुता, भाषा की सरलता और व्यंग्य की बेधकता एक साथ मिलती है। **चन्द्रभूषण त्रिवेदी 'रमई काका'** ने भी अनेक वर्षों तक आकाशवाणी के पंचायतघर प्रोग्राम के संचालक-पद पर कार्य करते हुए अवधी के विकास में अपूर्व योगदान किया। उनके निबंधों की भाषा लोक-जीवन की मिठास से युक्त होने के साथ ही सामाजिक विसंगतियों पर चोट करती है। 'स्वतंत्र भारत' के 'बहरे बाबा' स्तम्भ में उन्होंने धारावाहिक रूप से व्यंग्यात्मक निबंध लिखे थे।

**हरिप्रसाद मिश्र** (फैज़ाबाद) के निबंधों में आत्म-व्यंजकता के साथ संस्मरण, कहानी और गोष्ठी-रपट

प्रभृति गद्य-विधाओं का सम्मिश्रण हो जाने से एक नवीन रचनात्मक विधा का निदर्शन हुआ है। 'गोसाई जी कै अध्यात्म-चिन्तन' उनका इसी कोटि में आने वाला निबंध है। भाषा-शैली के उदाहरण-रूप में कुछ पंक्तियाँ नीचे दी जाती हैं–

**"मिसिर जी आगे कुछ कहवैया रहेन तौधर रामचन्दर चौबे पूछि परेन–'का भइया तब साकार उपासना नाय होति रही?'**

**होत काहे नाय रही! यही नाते कही थे कि कुछ साहित्यिकी विषय पढ़ा करा तब ई कुलि बात समझ में आई। वहि समय साकार उपासना कइयौ अधार लइकै चलति रही। विशिष्टाद्वैत, शुद्धाद्वैत, द्वैताद्वैत, द्वैत ये सब बरसन रहे, साकार उपासना जौने आधारन पै चलति रही।"**

**नाटक** : अवधी का नाट्य साहित्य अपेक्षाकृत अधिक समृद्ध है। बलभद्रप्रसाद दीक्षित 'पढ़ीस', वंशीधर शुक्ल और चन्द्रभूषण त्रिवेदी 'रमई काका' अवधी के प्रमुख नाट्य लेखकों के नाम हैं। **वंशीधर शुक्ल** ने आकाशवाणी के कलाकार-रूप में अनेक रेडियो नाटकों की रचना की। उनकी प्रमुख नाट्यकृतियों के नाम हैं–'स्वतंत्रता संग्राम', 'मजदूर', 'दहेज' और 'श्रीकृष्णचरित'।

**'रमई काका'** की नाट्य प्रतिभा बाल्यकाल से ही अपना परिचय देने लगी थी। उन्होंने प्रारम्भ से ही अपने गाँव में एक नाटक-मंडली बना ली थी। आकाशवाणी में आने पर उनकी नाट्य कला का और भी विकास हुआ। 'रतौंधी' इनका प्रमुख नाटक-संग्रह है। इन्होंने कुछ अच्छे प्रहसन भी लिखे हैं। गाँव की जिन्दगी की पकड़ 'रमई काका' में भी वंशीधर शुक्ल जैसी है।

**अमृतलाल नागर** के रेडियो नाटकों में अनेक स्थलों पर अवधी भाषा का प्रयोग हुआ है। 'महिपाल' शीर्षक नाटक के संवाद इस कथन की पुष्टि में उद्‌धृत किये जा सकते हैं। अवधी भाषा की प्रकृति की जैसी पहचान नागर जी को है, वैसी किसी अन्य साहित्यकार में नहीं दिखाई पड़ती। दिनेश मिश्र (अयोध्या) की सामाजिक नाट्यकृति 'संगीत तेगा' के भी अधिकांश दृश्य अवधी में हैं।

मार्क्सवादी समाजसेवी **राजबली यादव** के वर्ग-चेतना पर आधारित अवधी नाटकों का भी आम आदमी के बीच बड़ा स्वागत हुआ है। चूँकि यादव जी स्वयं भी एक सफल रंगकर्मी हैं, इसलिए उनके नाटक टेकनीक की दृष्टि से अत्यन्त सफल सिद्ध हुए हैं।

**डॉ. चन्द्रिकाप्रसाद शर्मा** की नाट्य रचना 'भूतलीला' सूचना विभाग उन्नाव की पत्रिका–'पंच ज्योति' (1953) के दो अंकों में प्रकाशित हुई। शिल्प की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण न होने के बावजूद यथार्थवादी शैली में रचित यह नाट्यकृति भूत उतारने वालों को बहुत ही निर्ममता के साथ बेनकाब करती है। उदाहरण के लिए दो सवांद उद्‌धृत किये जा सकते हैं।

**"चेला–महाराज! यहि के तौ जिन्दु है जिन्दु। बतावत है कि बरगद पर के हन। यहु तलाय गा रहे तउनु यहि पर असवारी कइ लीन्हेसि। महाराज यह बरगदिहा बाबा क्यार जिन्दु हवै। यहि का तौ ग्यारा मंगर आवै क परी। हम खर्चु पानी सब बताय दीन हवै। अब जइस इन पंचन क्यार मनु होय तइस करैं। यहि का हटावै माँ दाँतन के चना चबाय क परिहैं। द्याखौ तौ कइस घबुआय रहा है।**

**गुरु–काहे हो, तुम पंचै का चाहत हउ? जो यहि का नीक करावा चाहौ तौ जउन-जउन कहा ग है तउन-तउन लै कै ग्यरहौ मंगरन क आवौ। तब यहु चंगा होइ जाई। नाहीं तौ तुम जानौ तुमार कामु जानै।"**

**हरिश्चन्द्र पाण्डेय 'सरल'** का एकांकी 'चोर' बंधुआ मजदूर की समस्या पर चोट करता है। एक सौ रुपये पर तीन पीढ़ियों को क्रीत दास बनाकर रखना और फिर भी कर्ज का बढ़कर एक सौ से पाँच सौ का हो जाना, एक ऐसा प्रश्न है जो किसी भी संवेदनशील व्यक्ति को मर्माहत करता है। संवाद की भाषा बड़ी ही सहज और नाटकीय है। नाटक का नायक रामू अपनी पत्नी रधिया से कहता है–

**"बस रे एक लोटा (पानी) हम पी लेई थै, एक तै पीले। पेट भरि जाई। फिर धरती तौ आपनि होय, चल सोवा जाय। ई पानी औ धरती तौ राम कै दीन है। ई तौ केहू से करजा नाहीं माँगे का है।"**

प्रेमचन्द की कहानी 'कफन' का अवधी नाट्य रूपांतर **डॉ. जनार्दन उपाध्याय** की महत्वपूर्ण प्रस्तुति है। इसके सफल मंचन (1983 ई.) की फैजाबाद में बड़ी चर्चा रही। डॉ. उपाध्याय को इस बात के लिए बधाई दी जानी चाहिए कि उन्होंने घीसू और माधव के मुँह में जैसे पहली बार उनकी अपना भाषा डाल दी। उदाहरण के लिए माधव और घीसू के संवाद की कुछ पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं—

**"माधव : हमरे देखे से का होए दादा। तोहरे कुछ दयादरेग है, तुहीं देखि आवौ।**

**घीसू : देखि तौ अउबै करित माथौ, मुला ऊ हमार औरत ना आय, बहुरिया आय। पता नहीं देहीं का कपड़ा लत्ता कौनी दसा मा है। तोहरी पैदाइस के समय जब तोहरी महतारी के पीरा उठी रही तौ हम सारी रात वोकरे लगे से हटेन नाहीं।"**

**कथा साहित्य :** अवधी कथा साहित्य का शुभारम्भ **बलभद्रप्रसाद दीक्षित 'पढ़ीस'** से हुआ। उनकी कहानियों की सीधी-सरल भाषा में गाँव की जिन्दगी अपने सहज रूप में स्पंदित हुई है। अमृतलाल नागर ने इन्हें यथार्थवादी शैली का अग्रणी कथाकार माना है। नागर जी स्वयं यद्यपि अवधी के कथाकार नहीं हैं तथापि उनके उपन्यासों और कहानियों पर अवधी का गहरा प्रभाव है। उनके बहुत से पात्र बोली-बानी के रूप में अवधी का प्रयोग करते हैं। 'बूँद और समुद्र' में महिपाल की पत्नी कल्याणी सदैव अवधी का प्रयोग करती है। घरेलू बातचीत में महिपाल भी अवधी बोलता है। 'शतरंज के मोहरे', 'मानस का हंस', 'खंजननयन' और 'अग्निगर्भा' के अनेक पात्रों की भाषा अवधी है। 'गदर के फूल' में कहीं-कहीं एकाध योजक वाक्यों को छोड़कर अवधी का ही प्रयोग हुआ है। यथा—

**"श्री भगवानदीन ने उनसे कहा— 'साहेब कहति हैं अकि हियाँ नैपोलियन ते लड़ाई भै रही? हमका तौ मालुम नाहीं, तुम सुने हो तौ बताओ।'**

**श्री बराती जी बोले— "भाई नैपोलियन ते तौ हम नाहीं सुना, मौलवी ते औ अंगरेजन ते भई रहै यू जरूर सुना है। हिंया ते डेढ़ दुई मील पर तेली का तालु है। नाँउ तौ वहिका फतेअली क ताल रहै, बाकी बोलत चालत उहु तेली क ताल होइगा। हुवैं ते अँगरेजन की फते भई। मौलुवी भागिगे। हियाँ सब पँवार-बँवार रहे तौ कोई मदत नाहीं दिहिस। तबहे मौलुवी भागिगे।"**

पढ़ीस जी के सुपुत्र **बुद्धिभद्र दीक्षित 'मतई काका'** ने बच्चों की अनेक सुन्दर कहानियाँ लिखी हैं। **त्रिलोचन शास्त्री** ने भी प्रेमचन्द की यथार्थवादी शैली पर कुछ श्रेष्ठ कहानियाँ लिखी हैं जिनमें अवधी गद्य का साहित्यिक रूप बताया जाता है। **शीतलाशंकर 'शीतलेश'** (तौरा, उन्नाव) की कहानियों में गँवई-गाँव के यथार्थ का अंकन है। 'पुरवा कै बजार' शीतलेश जी की अच्छी कहानी है। भाषा-शैली के उदाहरण-रूप में कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं—

**"गाँव तेने थोरी दूरि पुरवा केरि बजार लागति हवै। हुवाँ हरि एतवारै बुद्धै धनई औ उनकेरि मेहरिया झउआ ब्याचै जात हवैं। हुवैं जोधा काछिव तरकारी ब्याचै आवत हवैं। धनई औ जोधा दूनौ पक्के गँजेड़ी हवैं। धनई यहु न जानि पायनि कि जोधवा कै नेति खराब हुवै। उई वहि पर बिसास कइ लीन्हेनि।"**

लोक साहित्य के अध्येताओं ने अवधी लोक कथाओं के जो संकलन किये हैं, उनसे भी अवधी गद्य साहित्य की श्रीवृद्धि हुई है। यहाँ 'कादम्बिनी' के लोककथा विशेषांक (मार्च, 1985) में 'एक था कंजूस" शीर्षकान्तर्गत डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन' द्वारा प्रस्तुत खड़ी बोली-रूपांतर के साथ प्रकाशित एक लोककथा की कुछ पंक्तियाँ उद्धृत करना युक्तियुक्त होगा—

**"अब पंडित अँचवै उठे त उठय न पावैं, हुँवइ ढेर होइगे। तब बनिया बहुत घबराइन। पंडिताइन**

**से कहिसि कि पंडित तौ उठतेहे नाहीं। पंडिताइन आई तौ बोली कि—खये मैं जहर दै दिहा। खाब जौन बचा होय तौ हम कुकुरे का डारब और देखब। त खाब बचै न रहा एकौ रत्ती। त पंडिताइन कहिन कि हम लहास न लै जाब, हियैं हमहूँ आपन परान दै देब औ तुहैं दुइ-दुइ हत्या लगिहैं। त बनिया-बनियाइन सलाह किहिन, पंडिताइन कौं समुझाइन कि अब तौ पंडित मरिहीगे, अब तौ लौटि हैं न। तूँ काहें जिउ दूव्यू? हम तुहै जौन माँगा तौन देब। त उइ पाँच हजार रुपया माँगिन। बनियऊ कौं आपन करेजा काटि कै देही का परा। पंडिताइन रुपया औ पंडित कै लहास उठाय कै घरै आई। पंडित घरमाँ अउतै उठि बइठे।''**

कनक मिश्र के निर्देशन की प्रथम अवधी फिल्म 'सरजू तीरे' की पटकथा ने अवधी कथा साहित्य में एक नया अध्याय जोड़ दिया है।

**पत्र-साहित्य :** मानवीय सम्बन्धों में आत्मीयता की वास्तविक गहराई का परिज्ञान कराने वाला एक सशक्त माध्यम पत्र भी है। इसीलिए आजकल इसकी प्रतिष्ठा एक साहित्यिक विधा के रूप में हो चली है। अवधी में वैसे तो पत्र-साहित्य अपनी स्वल्पता के कारण एक प्रकार से नगण्य-सा है पर निराला जी ने पं. महावीरप्रसाद द्विवेदी को अवधी में दो पत्र लिखे थे। निस्संदेह वे दोनों ही पत्र स्वक्षेत्रीयता और आत्मीयता के संयुक्त आधार पर लिखे गये हैं। बाबा जैसा सम्बोधन स्वयं ही उक्त तथ्य-सत्य की पुष्टि के लिए पर्याप्त है। सम्प्रति निराला जी का एक पत्र यहाँ अविकल रूप में उद्धृत करना अप्रासंगिक न होगा—

**श्री 108 कमल चरणन माँ**

**विजया को असंख्य भूमिष्ठ प्रणाम**

**बाबा,**

**लिखा रहै, कर्तो जाब। मुलो जाब नहीं भा। हियैं रहि गयन। कलकत्ते की पूजा दीख। 8 मी के दिन बाबू मैथिलीशरण से भेंट भै, रायकृष्णदास के साथ आय रहैं। 3/4 दिन कउनव माड़वारी की कोठी मै (मं) रहे रहैं। स्वभाव के तौ बड़े अच्छे हैं। एक एक 'अनामिका' दूनो जने क दीन। दुसरे दिन हियाँ प्रेस मँ(मं) मैथिलीशरण आये औ छन्द का नाव (नाँव) पूछेन। तब पढ़ि कै सुनावा। प्रसन्न खूब भे। कहेन पहिलेहे रचना बड़ी अच्छी जानि परी, मुलो छन्द समुझ मं (मँ) नहीं आवा। हम कहा हमरी समझ मं (मँ) यहि छन्द ते तुम्हरे वीराङ्गना के अनुवाद के छन्द मं (मँ) बहुत थ्वारै फर्क है; वह बेतुका कवित्त छन्द है और यहिमाँ कर्तो कवित्व छन्द की 3/4, कर्तो 1/2 कर्तो 1/3 लाइन आवति है। महादेव बाबू हमरे परिचय मं (मँ) तुम्हार सम्बन्ध जोरेन तो मैथिलीशरण कहेन कि हमका तौ वई बनायन हैं। यही तना की बहुतेरी बातैं होती रहीं। हमारि इच्छा है, अनामिका एक दई तुमका पढ़ि कै सुनाई।**

**'मतवाला' की कविता औ आलोचना पढ़ि के लिख्यो। भूल कर्तो होति होई तौ सुधारब। निराला की कविता मं (मँ) कहाँ का करैक चाही लिख्यो। यह सम्मति हमरेहे लगे रही।**

**आशा है, अच्छे हौ औ घर माँ अच्छी भलाई है। चि. कमलकिशोर कस हैं? कानपुर कब तक जइहौ, घर वालेन क मलेरिया ज्वर छूट कि नहीं, सब लिख्यो।**

**दास**

**सूर्यकान्त त्रिपाठी**

प्रतापगढ़-निवासी **श्री महेन्द्रप्रताप सिंह** केन्द्रीय इंटेलीजेंस ब्यूरो की दिल्ली शाखा में उच्च अधिकारी होने के बावजूद अपनी बोली-बानी की पहचान बनाये हुए हैं। उन्होंने अवधी में अनेक सुन्दर पत्र लिखे हैं। डॉ. ललित शुक्ल (दिल्ली) की पुत्री के विवाहोत्सव के अवसर पर मंगल-कामना व्यक्त करते हुए वे लिखते हैं—

**''जिन्दगी की किताब माँ विवाह कै अध्याय तौ महत्वपूर्ण होबै करत है पर लड़के के बरे वोहके**

**एक और महत्व होत है। वहू से ज्यादा ऊ अध्याय महत्वपूर्ण होत है जेहमाँ लड़की के महतारी-बाप के बरे आयन उत्तरदायित्व निभावै माँ एक बड़ी परीक्षा देइ का परत है। यहि परीक्षा माँ सफलता पाइके केतना सुख औ संतोस मिलत है वहकै ठीक-ठीक बरन शायद केऊ ना कै पावै। औ यही बरे हमहूँ सब आपकी सफलता कै बरनन माँ अपुना सब का असमर्थ पावत अही। हाँ, यहि अवसर पै परिवार के सब जने अतिसै प्रिय गायत्री औ ओम का स्नेहिल असीस औ आप सबकाँ हार्दिक बधाई लिखत की उमा औ हम अपुना का धन्य समुझत अही। भगवान से विनती अहै कि अपनी तपस्या से बनी नये संगम कै धारा हमसे हरी भरी रहै, जेहका देखिकै सदैव सुख मिलै।''**

**डॉ. छोटेलाल द्विवेदी** (प्रतापगढ़) के व्यक्तिगत पत्र अत्यन्त साहित्यिक हैं। लोकसंस्कृति एवं अवधी साहित्य संस्थान सीतापुर और अवधी साहित्य संस्थान अयोध्या के निमंत्रण पत्र भी महत्व हैं। जनमोर्चा (फैजाबाद) दैनिक में सन् 1962 से 67. 68 तक 'गँवई की बात' शीर्षक से गाँव की चिट्ठियाँ प्रकाशित होती रही हैं। ये पत्र गाँव की विसंगतिपूर्ण जिन्दगी के जीते-जागते दस्तावेज हैं। 'नये-लोग' (फैजाबाद) दैनिक ने भी गाँव की समस्याओं को केन्द्र में रखकर कुछ चिट्ठियाँ प्रकाशित की हैं।

**टीका साहित्य :** हिन्दी गद्य का प्रारम्भ सामान्यतः टीका-साहित्य से माना जा सकता है। काव्य के मर्म को समझने-समझाने के क्रम में ही टीकाएँ लिखी गयीं। वैसे तो प्रथम चरण में टीकाएँ भी कविता में लिखी गयीं, किन्तु धीरे-धीरे उनका स्थान गद्य ने ले लिया। अवधी गद्य का प्रारम्भिक रूप रीतिकाल में ही उमड़ कर सामने आ गया था। **भानु मिश्र** कृत पद्य गद्यात्मक रचना 'रस विनोद' (1973), **नित्यनाथ** कृत जंत्र मंत्र विषयक ग्रंथ 'उड्डीस' (1799), इसी काल की खड़ी बोली और ब्रजमिश्रित अवधी रचनाएँ हैं। आगे चलकर **गौतम ऋषि** कृत 'सगुनावती' (1922), **प्रियादास** कृत 'व्यवहारपाद' (1843 ई.) तथा मानस की टीकाओं के माध्यम से अवधी गद्य की विपुल सामग्री सामने आयी। मानस टीका 'आनन्द लहरी' (रामचरणदास), 'रामायण परिचर्या' (काष्ठजिह्वा स्वामी), 'रामायण परिचार्य परिशिष्ठ' (ईश्वरप्रसाद नारायण सिंह), 'मानस प्रचारिका' (बाबा जानकीदास), 'मानस की टीका' (महादेव दत्त), 'मानस भूषण' (वैजनाथ जी) प्रभृति ग्रंथों में भी खड़ी बोली और ब्रजभाषा मिश्रित अवधी गद्य का स्वरूप दर्शनीय है। 'रामायण परिचर्या परिशिष्ट' की कुछ पंक्तियाँ ध्यान देने योग्य हैं–

**''अब अच्युत यहि नाम का प्रथम अक्षर अकार भगवान दिहेन तब गनेस नाम प्रसिद्ध भा। ककार जैसे सब अक्षरन माँ प्रथम है वैसे गनेस जी सब सुभ करमन माँ प्रथम पूज्य भये। अस अर्थ कोई कहत है।''**

**ज्ञान-साहित्य :** ज्ञानात्मक साहित्य की दृष्टि से अवधी में मात्र धार्मिक और चिकित्साविज्ञान सम्बन्धी ग्रंथों की रचना हुई। इसके पीछे यद्यपि कोई बड़ी प्रेरणा कार्यरत नहीं थी, तथापि धर्म और चिकित्साशास्त्र के निगूढ़ ज्ञान को लोकव्यापी बनाने के उद्देश्य से ही इन ग्रंथों का प्रणयन हुआ।

उपलब्ध सामग्री के आधार पर यद्यपि अवधी गद्य में लिखित साहित्य में आरम्भिक नाम मानस की टीकाओं का है तथापि शुद्ध कोसली (अवधी) गद्य का नमूना सर्वप्रथम ब्रिटिश एण्ड फारेन बाइबिल सोसाइटी द्वारा धर्म-प्रचारार्थ श्री रामपुर से प्रकाशित 'न्यू टेस्टामेंट' के अनूदित संस्करण (1824 ई.) में दिखाई पड़ता है। यथा–

**''वा कहेसि कि स्वरग कर राज एक दाना सरसौ की नाँई हैं, कि जे केउ मनई लिहेसि वा अपने खेत महँ बोएसि कि जे सब बीजन से नान्ह साँचु पै जब ऊ बाढ़ा तब ऊ सब गागन के मध महँ बड़ा अहै। बा अस पेड़ौ होइ जात अहै कि आकास के चिरई आवत अहैं, वा ओह की डारन पर रहत अहैं।''**

साँईदाता सम्प्रदाय के **संत अहमकशाह** ने (ईसा की उन्नीसवीं शती) अपनी 'पद विचार' नामक गद्य-कृति में जीव, जगत्, माया, ब्रह्म, गुरु, संत, असंत, पद, कुपद आदि का अवधी भाषा में बड़ा ही

तात्विक विवेचन किया है। अहमद शाह की भाषा में अनेक क्रिया-पद खड़ीबोली के अवश्य हैं किन्तु शेष व्याकरणिक रचना अवधी की है। यथा—

**"बेबिचार मानुस तन दुरलभ होइ गय। चारों युग पंथ-ग्रंथ में भूलि गय। ......सारी सिष्टि एक सतगुरु को जानै सो मानुख तन फिर पावै और चौरासी लाख जोनि न जावै। जो सतगुरु का सरूप और आपन सरूप एक भाउ कर देवै सो आवागमन, जलम न पावै, अपने पद में मिलै।"**

अवध के पुराने आयुर्वेदशास्त्रियों ने अनुभूत औषधियों की लोक को जानकारी कराने की दृष्टि से अवधी गद्य में ग्रंथ-प्रणयन किये हैं। पांडु-पुत्र नकुल कृत 'शालिहोत्र' अश्व चिकित्सा विषयक अत्यन्त सिद्ध कृति है। सम्भवतः इसी कृति का किसी अज्ञात व्यक्ति ने लोक हितार्थ अवधी गद्य में अनुवाद कर दिया है। घोड़े को नारा निकलने की बीमारी का लक्षण बताते हुए वह लिखता है—

**"पेसाब बार बार करै। क्षलकै बार बार। नारा माँ पपटा परै। नारा निकला रहै। तेहिका मुतरा रोग कही। माथ चुरत रहै। टप मारा करै। देह कांपत रहै। दिन दिन सूखत जाइ। पाछै कै रग मोटि परि जाइ।"**

**पतितदास** (गिरधरपुर-बैसवाड़ा) कृत 'वैद्यक कल्प' और 'सर्व ग्रंथोक्ति' भी अवधी गद्य में लिखित आयुर्वेद विषयक ग्रंथ हैं। 'सर्व ग्रंथोक्ति' के प्रारम्भिक नुस्खों की भाषा का नमूना ध्यान देने योग्य है—

**"रसवत मासा 1, अमिलतास-गूदी 1, अफीम 2, गेरू 1, सब पीस मकोय के रॉंग में मिलाय-घुराय जब बुजा उठै तब सीत-गरम लेप कै एकांत में औ जब सूखि जाय तब फेरि लगावै, अैसे अस तीन दफे लगावै एकै रोज में, औ जब ले नीक न होय तब लै लगावा करै।"**

अवधी की शब्द-सम्पत्ति का ज्ञान कराने की दृष्टि से **रामाज्ञा द्विवेदी 'समीर'** ने अवधी शब्दकोश का सम्पादन किया है। **वंशीधर शुक्ल** ने अवधी लोकोक्तियों का संग्रह किया।

इस प्रकार अवधी का गद्य साहित्य अभी तक शैशवावस्था में ही हैं। आवश्यकता है कि क्षेत्रीय प्रतिभाएँ इसका सर्वांगीण विकास करते हुए इसे राष्ट्रभाषा हिन्दी की गौरव वृद्धि में नियोजित करें। हर्ष का विषय है कि नयी पीढ़ी इस दृष्टि से सचेष्ट है।

# अवधी लोक-कथायें : प्रारम्भिक परिचय

गणेश मिश्र

भारतीय कथा साहित्य बहुत प्राचीन है और भारतीय लोक-कथाओं की परम्परा वेदों से प्रारम्भ हुई है। सबसे प्रथम ग्रंथ ऋग्वेद में स्तुतियों के रूप में कथाओं के मूल तत्व पाये जाते हैं। अवधी की लोक कथायें परिमाण और स्तर, दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण हैं। लोक-कथायें पद्यात्मक थीं, क्योंकि उस काल में गद्य का विकास नहीं हो पाया था।

वस्तुतः लोक-कथा वह है जिसमें लोक-मानस का तत्व निहित होता है और साथ ही एक परम्परा जुड़ी रहती है। लोक-कथाओं का विषय अपनी सांस्कृतिक परम्परा को लिए हुए रहता है। इनमें अधिकतर किसी न किसी रूप में देवी-देवताओं की पूजा और पीर की भावना से सन्निहित रहती है।

रोचक और कुतूहलता अवधी कथाओं की महत्वपूर्ण विशेषता है, जो सरसता का संचार करते हुए कथा को आगे बढ़ाते हैं। अवध क्षेत्र के सर्वेक्षण द्वारा लोक-कथा शैली में गणमान्य मुझे लगभग 270 लोक कथायें प्राप्त हुई हैं। इनमें प्रकाशित लोक-कथाओं का विवरण इस प्रकार है :

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | अवधी का लोकसाहित्य | डॉ. सरोजनी रोहतगी | संकलित कथायें-35 |
| 2. | अवधी व्रत कथायें | डॉ. इन्दुप्रकाश पाण्डेय | संकलित कथायें-18 |
| 3. | अवधी कथालोक | डॉ. शंकरलाल यादव | संकलित कथायें-32 |
| 4. | अवधी का विकास | डो. बाबूराम सक्सेना | संकलित कथायें-13 |

उपर्युक्त प्रकाशित कथा-संकलनों के अतिरिक्त अप्रकाशित संकलनों से प्राप्त कथाओं का विवरण इस प्रकार है :

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | बैसवारा का लोकसाहित्य | डॉ. सूर्यप्रसाद दीक्षित | संकलित कथायें-99 |
| 2. | अवधी लोकसाहित्य में ग्रामदेवता | डॉ. शिवप्रसाद मिश्र | संकलित कथायें-26 |

ये सभी कथायें अविकल रूप में उसी शब्दावली और लहजे के साथ प्रस्तुत की गयी हैं, जिस तरह ग्राम्य जीवन में प्रचलित हैं।

## लोककथाओं का वस्तुगत वर्गीकरण :

अवधी लोक कथाओं को विषय और विविधता के अनुसार वर्गीकृत करने का प्रयास कई विद्वानों द्वारा किया गया है। वर्गीकरण का प्रथम प्रयास श्री हरिभद्राचार्य द्वारा कथाओं को अर्थकथा, कामकथा, धर्मकथा तथा संकीर्ण कथाओं के रूप में किया गया। कथाओं के वर्गीकरण का प्रयास प्रोफेसर एस. थामसन द्वारा भी प्रस्तुत किया गया। इन्होंने लोक-कथाओं का वर्गीकरण करते हुए उनके चार समूह प्रतिपादित किए।

लोकसाहित्य के विद्वान डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय ने कथाओं का वर्गीकरण सात भागों में किया। जबकि सत्यव्रत अवस्थी ने कथाओं को दो वर्गों में विभाजित किया। इन्होंने एक समूह में व्रत सम्बन्धी कथायें तथा दूसरे समूह में शेष कथाओं को स्थान देते हुए पुनः उन्हें 8 भागों में विभाजित किया। अवधी लोक कथाओं के वर्गीकरण का अन्य प्रयास डॉ. सरोजनी रोहतगी द्वारा प्रस्तुत किया गया। डॉ. रोहतगी ने कथाओं का वर्गीकरण करते हुए उन्हें 15 श्रेणियों में विभक्त किया है।

उपर्युक्त सभी वर्गीकरण अवधी की प्राप्य कुल लोककथाओं को ध्यान में रखते हुए सुसंगत नहीं कहे जा सकते। मेरे मतानुसार अवधी लोक-कथाओं का विषयानुसार, व्यावहारिक और सुसंगत वर्गीकरण निम्न प्रकार से किया जाना समीचीन होगा :

1. व्रत कथायें
2. रहस्य रोमांचपरक कथायें
3. प्रेम कथायें
4. पौराणिक/ऐतिहासिक अनुश्रुतियों से संबंधित कथायें
5. हास्य-व्यंग्यपरक कथायें
6. परी कथायें
7. स्फुट कथायें

उपर्युक्त लोक-कथायें प्रायः आख्यायिका शैली में लिखी गई हैं। कहीं-कहीं बुझौवल शैली का भ्र प्रयोग किया गया है। इनमें से कुछ लघु कथायें हैं और कुछ लम्बी-लम्बी भी। सर्वप्रथम इनकी विषय वस्तु अवलोकनीय है।

# अवधी नाटक साहित्य

**गणेश मिश्र**

अवधी गद्य में प्रकाशित अथवा प्रसारित नाटक परिमाण की दृष्टि से तो महत्वपूर्ण हैं। ही स्तर की दृष्टि से भी उल्लेखनीय हैं। सर्वेक्षण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि अब तक इस विधा मे लगभग 400 नाटक अथवा एकांकी प्रसारित/प्रकाशित किए गए हैं। प्रमुख नाटककारों मे पं. चन्द्रभूषण त्रिवेदी 'रमई काका', पं. गंगा प्रसाद मित्र, श्री लक्ष्मण प्रसाद मित्र, पं. इन्दरचन्द्र तिवारी 'बौड़म', श्रीमती सुमित्रा कुमारी सिन्हा 'बतासा बुआ' आदि महत्वपूर्ण हैं। इतिहास और विकास की दृष्टि से यह कहा जा सकता है कि पहला अवधी नाटक श्री लक्ष्मण प्रसाद 'मित्र' द्वारा सन् 1942 में लिखा गया था। तदनन्तर कालक्रमाधुसार जो अवधी नाटक विरचित हुए हैं, उनका विवरण निम्नवत् हैं :

**1- अनोखे इनाम का अनोखा बँटवारा :** यह ऐतिहासिक नाटक श्री लक्ष्मण प्रसाद 'मित्र' द्वारा लिखा गया है। इसमें विभिन्न पात्रों के माध्यम से हास्य-व्यंग्य का कुशल सम्मिश्रण करते हुए मनोरंजन प्रस्तुत किया गया है। हस्तलिखित 16 पृष्ठों का यह नाटक अनेक स्थानों पर मंचित तथा प्रशंसित हुआ है। यह नाटक अब तक अप्रकाशित है। इसमें सोलहवीं शती के नवाबी शासन व्यवस्था का चित्र अंकित किया गया है।

**2. नेवासा :** हस्तलिखित 6 पृष्ठों का यह नाटक पं. गंगाप्रसाद मिश्र द्वारा लिखा गया है। आकाशवाणी लखनऊ से प्रसारित यह नाटक सन् 1943 को लिखा गया था। विभिन्न पात्रों के माध्यम से नाटककार ने नवासे की सम्पत्ति तथा एतद्जन्य विभिन्न समस्याओं का चित्रण इस नाटक में किया है।

**3. हलधर :** आकाशवाणी लखनऊ से सन् 1944 में प्रसारित यह नाटक पं. गंगाप्रसाद मिश्र द्वारा लिखा गया। यह नाटक मिश्रजी का प्रारम्भिक नाटक है। इस नाटक में नाटककार ने विभिन्न पात्रों के माध्यम से हलधर-किसान के महत्व को रेखांकित किया है।

**4. नानक :** पं. गंगा प्रसाद मिश्र द्वारा रचित यह नाटक सन् 1944 को लखनऊ आकाशवाणी से प्रसारित हुआ था। सन्त नानक के सन्देशों की पृष्ठभूमि पर आधारित यह नाटक हस्तलिखित 4 पृष्ठों का है।

**5. धरती का धन :** पाँच पृष्ठों के इस नाटक की रचना पं. गंगा प्रसाद मिश्र द्वारा की गई है। आकाशवाणी लखनऊ से इस नाटक का प्रसारण सन् 1944 ई. को हुआ था। नाटक हस्तलिखित 4 पृष्ठों का है।

**6. सौदागर :** सन् 1944 को आकाशवाणी लखनऊ से प्रसारित इस नाटक के रचयिता पं. गंगा प्रसाद मिश्र है। हस्तलिखित 9 पृष्ठों के इस नाटक में तत्कालीन सामाजिक समस्याओं को चित्रित किया गया है। विभिन्न पात्रों के माध्यम से नाटककार ने यातायात की समस्या का चित्रांकन इस नाटक में किया है।

**7. नया जीवन :** 6 पृष्ठों के इस नाटक में नाटककार पं. गंगा प्रसाद मिश्र ने शहरों की चकाचौंध

से प्रभावित ग्रामीण जनों द्वारा गाँव से पलायन तथा शहरी परिवेश की बदली हुई स्थिति में अपने को न खपा पाने वाले लोगों की समस्याओं का चित्रण इस नाटक में किया है। सन् 1944 को आकाशवाणी लखनऊ से प्रसारित इस नाटक में नाटककार ने विभिन्न पात्रों के माध्यम से मद्यनिषेध तथा आपसी सद्भाव का सन्देश दिया है।

**8. जेह की लाठी ओह की भैंस :** सन् 1944 को आकाशवाणी लखनऊ से प्रसारित इस नाटक के रचयिता पं. गंगा प्रसाद मिश्र है। नाटककार ने इस 4 पृष्ठों के नाटक में ग्रामीण झगड़ों तथा कृषि संबंधी समस्याओं का चित्रण करते हुए विभिन्न पात्रों के माध्यम से यह स्थापित किया है कि ग्रामीण श्रोताओं हेतु पंच तथा पंचायत का महत्व भी स्पष्ट किया है।

**9. पाहुन :** पं. गंगा प्रसाद मिश्र द्वारा विरचित इस नाटक को लखनऊ आकाशवाणी से सन् 1945 को प्रसारित किया गया। इस नाटक में मेहमानों के आगमन से उत्पन्न समस्याओं का चित्रण किया है। नाटककार ने विभिन्न पात्रों के माध्यम से यह स्थापित किया है कि मेहमान के रूप में मेजबान को परेषान नहीं करना चाहिए।

**10. ससुराल की सैर :** इस नाटक के रचयिता पं. गंगा प्रसाद मिश्र है। इस नाटक में मेहमानों के साथ-साथ ससुराल की यात्रा का मनोरंजन वर्णन किया गया है। आकाशवाणी के लखनऊ केन्द्र से प्रसारित यह नाटक हास्य-व्यंग्यपरक मनोरंजन प्रधान नाटक है।

**11. बीज बोआई :** कृषि संबंधी जानकरी देने वाले इस नाटककार पं. गंगा प्रसाद मिश्र है। इस नाटक को आकाशवाणी द्वारा सन् 1945 में प्रसारित किया गया। नाटक नाटककार ने कृषकों को बुआई के समय के समय तथा बीजों के किस्मों की जानकारी दी है।

**12. जाड़े की रात :** गंगा प्रसाद मिश्र द्वारा लिखा गया यह नाटक लखनऊ आकाशवाणी से प्रसारित किया गया। सन् 1945 में प्रसारित इस नाटक मे किसानों की समस्याओं का चित्रण किया गया है। नाटककार ने यह स्थापित किया है कि हर मौसम में उसे श्रम करते हुए कितनी समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

**13. बँटवारा :** इस नाटक के रचयिता पं. गंगा प्रसाद मिश्र जी है। आकाशवाणी के लखनऊ केन्द्र से सन् 1945 को प्रसारित यह नाटक परिवार की सम्पत्ति के बँटवारे की पृष्ठभूमि पर आधारित है। नाटककार ने विभिन्न पात्रों के माध्यम से यह स्थापित किया है कि सम्पत्ति के बँटवारे में आपसी संबंधों को विस्तृत नहीं करना चाहिए।

**14. अशोक वाटिका :** गंगा प्रसाद मिश्र द्वारा रचित यह नाटक आकाशवाणी के लखनऊ कन्द्र से सन् 1945 को प्रसारित किया गया। इस नाटक को नाटककार ने ऐतिहासिक क्रम से जोड़ते हुए आधुनिक परिवेश में प्रस्तुत किया है। विभिन्न पात्रों के माध्यम से नाटककार ने यह स्थापित किया है। कि हमें अपने इतिहास तथा संस्कृति से प्रेरणा लेनी चाहिए।

**15. मुंशी बकलम :** यह नाटक आकाशवाणी के लखनऊ केन्द्र से प्रसारण हेतु पं. चन्द्रभूषण त्रिवेदी ''रमई काका'' द्वारा लिखा गया है। आकाशवाणी द्वारा 10. 8. 1952 को प्रसारित यह नाटक हास्यपरक नाटक है।

**16. फइसला :** 8. 2.1953 को दैनिक ''स्वतंत्र भारत'' के साप्ताहिक परिशिष्ट में प्रकाशित इस नाटक की रचना जगन्नाथ प्रसाद द्वारा की गई है। ग्रामीण झगड़ों की समस्या पर आधारित यह मनोरेजनप्रधान नाटक है। विभिन्न पात्रों के माध्यम से नाटककार ने पंचायत तथा उसके अधिकारों और कर्तव्यों की जानकारी पाठकों को दी है।

**17. अनोखी भेंट :** हास्य व्यंग्य परक यह नाटक ''रमई काका'' द्वारा लिखा गया है। जिसे

आकाशवाणी के लखनऊ केन्द्र से 3 सितम्बर, 1956 को प्रसारित किया गया।

**18. भुलई की करतूत :** इस नाटक के रचयिता पं0 चन्द्रभूषण त्रिवेदी रमई काका" है हास्य-परक घटनाओं का वर्णन किया है।

**19. अनोखी भेंट : अनपढ़ ज्योतिषी :** इस नाटक के रचयिता पं0 चन्द्रभूषण त्रिवेदी रमई काका हैं। यह नाटक5.12.1956 को आकाशवाणी के लखनऊ केन्द्र से प्रसारित किया गया।

**20. बहरे बाबा :** यह नाटक पं. चन्द्रभूषण त्रिवेदी द्वारा विरचित है। इस नाटक का पहला भाग एपीसोड़ 31.8. 1956 को आकाशवाणी लखनऊ केन्द्र से प्रसारित किया गया था। 13.3.1982 तक इस नाटक के कुल 121 एपीसाड़ प्रसारित हुए है। हास्य व्यंग्य परक इस नाटक के माध्यम से काका ने गाँव के जीवन का चित्रण किया है। इसमें विभिन्न प्रकार की ग्रामीण समस्याओं को उभारा गया है। जैसेः- मद्यनिषेध, छुआछुत, प्रचलित कुरीतियों कृषि संबंधी समस्याओ जैसी सामाजिक बुराइयों के बारें में भी अनेक एपीसोड में जानकारी दी गई है। साथ ही ग्रामीण विकास के लिए सरकारी नीतियों ष्वेत क्रांति हरित क्रान्ति साक्षरता कुटीर उद्योग लघु उद्योग पषुपालन की जानकारी दी गई है। गाँव में जिस समय गन्ने की पेराई आरम्भ होती है अनेक लोग रस-प्राप्ति की लालसा में कोल्हू के आस-पास चक्कर काटने लगते हैं। इसी पृष्ठभूमि का मनोरंजन वर्णन काका के इस नाटक में अनेक एपीसोड में प्राप्त होता है।

**21. चपल चंदू :** यह नाटक पं0 चन्द्रभूषण त्रिवेदी रमई काका द्वारा लिखा गया था जिसे आकाशवाणी के लखनऊ केन्द्र से 8. 4.1958 को प्रसारित किया गया।

**22. कोइरे पर की कचौंधनि :** हस्तलिखित 9 पृष्ठों के इस अप्रकाषित नाटक के प्रणेता श्री लक्ष्मण प्रसाद "मित्र" हैं। सन् 1956 के चुनावों की पृष्ठभूमि पर लिखे गये इस नाटक में निाटककार ने ग्रामीण जनसमाज को चुनाव के अवसर पर योग्य उम्मीवार के चयन हेतु मार्गर्दषन प्रदान किया हैं। विभिन्न पात्रों के माध्यम से नाटककार ने विभिन्न पार्टियों तथा उनकी उपलब्धियों, कायों तथा क्षमताओं का परिचय दिया है।

**23. मगन मिस्त्री परिवार :** इस नाटक के रचयिता पं. चन्द्रभूषण त्रिवेदी रमई काका है। इसमें गायन सीखने में आने वाली दिक्कतों का चित्रण किया गया है। ग्रामीण पात्रों द्वारा काका ने इस नाटक में संगीत की तकनीकी जानकारी प्रस्तुत की है। इस नाटक के 43 एपीसोड़ प्रसारित हुए है। इसके माध्यम से नाटककार ने अषिक्षा बाल विवाह नषाखोरी आदि समस्याओं और उनसे होने वाली दिक्कतों की जानकारी दी है। प्रौढ़ षिक्षा डाकघर की बचत योजनाओं से संबंधित जानकारी भी अनेक एपीसोड में दी गई है।

**24. जगराना फूफू :** इस नाटक के रचयिता "रमई काका" है। 8. 12.1958 को आकाशवाणी लखनऊ से प्रसारित इस नाटक में नाटककार नें गाँव की स्त्रियों को अन्धविष्वास और जंत्र-तंत्र के चक्करों से बचने का सुझाव दिया है। विभिन्न पात्रों के माध्यम से रामचरित मानस में वर्णित सूक्तियों द्वारा जनजीवन को प्रेरणा प्राप्त करने की षिक्षा दी गयी है।

**25. बतासा बुआ की झलक :** यह नाटक श्रीमती सुमित्रा कुमारी सिन्हा द्वारा रचित है। आकाशवाणी लखनऊ द्वारा 15.9. 1958 को प्रसारित यह नाटक हरतालिका तीज व्रत की पृष्ठभूमि पर आधारित है। बतासा बुआ के माध्यम से नाटककार श्रीमती सिन्हा ने नाटक में नाटक का अयोजन किया है। श्रोताओ को इस व्रत के माध्यम से आराध्य भगवान षंकर तथा पार्वती के व्रत पूजा विधान से परिचित कराया गया है। खड़ी बोली मिश्रित इस नाटक की मूल भाषा अवधी है।

**26. चपल चन्दू :** इस नाटक के रचयिता "रमई काका" है। 10. 6.1958 को प्रसारित इस बाल नाटक में नाटककार ने बालसुलभ चंचलता तथा उससे उत्पन्न समस्याओं का चित्रण किया है। प्रचलित मुहावरों का व्यंजित अर्थ न समझकर उलझन महसूस करते बालकों की कुतुहलता का सजीव चित्रण

इस नाटक में किया गया है। इस नाटक के द्वारा नाटककार ने स्थापित किया है। कि बालसुलभ समस्याओं का निराकरण किस प्रकार करना चाहिए।

**27. छोटई लोटई :** इस नाटक के रचयिता पं0 चन्द्रभूषण त्रिवेदी "रमई काका" है। आकाशवाणी लखनऊ द्वारा 14.8. 1958 को प्रसारित, हस्तलिखित 13 पृष्ठों नाटक में समाज के बेईमान व्यापारियों से संबंधित समस्याओं का चित्रण किया गया है। नाटककार ने बेईमान व्यापारियों से सतर्क रहने, उनकी षिकायतें करने के लिए गाँववालों को प्ररित किया है। नाटक में ईमानदारी से रहने की सलाह दी गई है। यह नाटक 7 एपीसोड़ में प्रसारित हुआ है। इन नाटकों में ग्रामीण जनों को सलाह दी गई है कि वे छोटी-छोटी समस्याओं में उलझकर न तो मुकदमेंबाजी में फसें न ही व्यर्थ के विवाद में। आमसी विवादों का निपटारा बातचीत के माध्यम से करके अपना समय बचाएँ और इस बचे हुए समय को उत्पादक कार्यों में लगाएँ।

**28. नटखट नन्दू :** 26.8. 1958 को आकाशवाणी से प्रसारित इस नाटक का प्रणयन पं0 चन्द्रभूशण त्रिवेदी 'रमई काका' द्वारा किया गया है। इस नाटक में काका ने सीधे तथा भोलेपन के फलस्वरूप ग्रामीण जनों के ठगे जाने आदि की समस्या का चित्रण किया है। गाँव के जल्से में मदारी दिखाये जा रहे तमासों से चमत्कृत गाँववालों को मदारी की चालाकी से, नाटक का प्रधान प्रधान पात्र नन्दू अपनी नटखट हरकतों से कैसे परिचित कराता है, यह इस नाटक में प्रभावी ढ़ंग से चित्रित किया गया है।

**29. बात का बतंगड़ :** इसके रचयिता रमई काका हैं। इस नाटक में प्रधान पात्र खोखे के विचित्र व्यक्तित्व का चित्रण किया है। आकाशवाणी लखनऊ से 5.9. 1958 को प्रसारित, हस्तलिखित 6 पृष्ठों के इस नाटक के चिड़चिड़े स्वभाव वाले इस पात्र द्वारा मनोरंजन प्रस्तुत किया गया है।

**30. बुद्धू :** पं. चन्द्रभूषण त्रिवेदी "रमई काका" द्वारा लिखित यह नाटक आकाशवाणी के लखनऊ केन्द्र से 20-10. 1958 को प्रसारित किया गया। इस नाटक में विवाह की समस्या का चित्रण किया गया है। नाटककार ने विभिन्न पात्रों के माध्यम से यह स्थापित किया है कि ग्रामोत्थान हेतु साक्षरता आवस्यक है। यह नाटक हस्तलिखित 6 पृष्ठों का है।

**31. खोखे पण्डित :** इस नाटक के रचयिता पं0 चन्द्रभूषण त्रिवेदी रमई काका है। 21.11.1959 को आकाशवाणी लखनऊ से प्रसारित टंकित 4 पृष्ठों के इस नाटक में केन्द्रीय पात्र खोखे द्वारा अपने वाक् कौषल द्वारा भोलेभाले ग्रामीणों को बरगलाने तथा उसकी स्त्री द्वारा इस सबका विराध प्रस्तुत किया गया है। ग्रामीणों को षिक्षा हेतु प्रेरित किया गया है। इस नाटक के 20 एपीसोड़ प्रसारित हुए है। जिसमें मनोरंजन के माध्यम से ग्रमीण परिवेष के धूर्मजनों की चालाकियों का पर्दाफाष किया है, अन्धविष्वास, कृषि समस्याओं का चित्रण, धर्मभीरू जनता को धूर्तजनों द्वारा बरगालाने जैसी समस्याओं का चित्रण किया गया है।

**32. बहिरे बाबा से भेंट :** "बहिरे बाबा" बोधन नामक पुस्तक में संकलित इस नाटक के रचयिता पं0 चन्द्रभूषण त्रिवेदी रमई काका है। दिल्ली के सांग एण्ड ड्रामा डिवीजन द्वारा आयोजित ड्रामा फेस्टिबल, तालकटोरा ग्राउण्ड के रंगमंच पर 15.4.1960 को खेला गया यह नाटक रमई काका के बहुप्रषंसित तथा बहुप्रचारित नाटकों में से एक है। विभिन्न पात्रों के माध्यम से नाटककार ने इस नाटक को मनोरंजन रूप में प्रस्तुत किया है।

**33. ननकू कै ससुरारि :** पं0 चन्द्रभूषण त्रिवेदी "रमई काका" द्वारा यह नाटक लिखा गया है। टंकित 7 पृष्ठों के इस नाटक को आकाशवाणी लखनऊ द्वारा दूल्हे को तंग करने तथा उससे उत्पन्न हास्यास्पद परिस्थितियों का चित्रण इस नाटक में हुआ है। विभिन्न पात्रों के माध्यम से नाटककार ने

मनोरंजन का सुन्दर दृष्य प्रस्तुत किया है। यह नाटक रमई काका के अति लोकप्रिय नाटकों में से है।

34. **किरपिन मामा :** यह नाटक पं0 चन्द्रभूषण त्रिवेदी "रमई काका" द्वारा विरचित है। 28. 7. 1960 को आकाशवाणी के लखनऊ केन्द्र से प्रसारित यह नाटक हस्तलिखित 5 पृष्ठों में है। विभिन्न पात्रों के माध्यम से इस नाटक  में ग्रामीण जन समुदाय को फिजूलखर्ची पर रोक लगाने की सलाह दी गई है। यह नाटक कुल 9 एपीसोड में प्रसारित हुआ है।

35. **फूफा कै पहुनैती :** पं0 चन्द्रभूषण त्रिवदी रमई काका" द्वारा रचित यह नाटक 28. 7. 1960 को आकाशवाणी लखनऊ से प्रसारित हुआ था। टंकित 6 पृष्ठों का यह नाटक मनोरंजन प्रधान षैली में लिखा गया है। इसमें नाटक नें बड़े परिवार की समस्याओं का चित्रण किया है। नाटककार ने इस नाटक के माध्यम से परिवार कल्याण संबंधी सरकारी सुविधाओं की जानकारी श्रोताओं को दी है।

36. **किरपिन मामा :** बरात में :- 3.9. 1960 को आकाशवाणी लखनऊ से प्रसारित यह नाटक रमई काका द्वारा रचित है। टंकित 4 पृष्ठों का यह नाटक प्रधान पात्र किरपिन मामा की कंजूसी पवृत्ति पर आधारित है।

37. **हम भी फौजी हैं :** इस नाटक के रचयिता पं0 चन्द्रभूषण त्रिवेदी "रमई काका" है। 12.11. 1960 को आकाशवाणी लखनऊ से प्रसारित यह नाटक हस्तलिखित 5 पृष्ठों का है। इस नाटक में नाटककार ने फौजी और मिलिट्री में भर्ती के संबंध में गाँव में प्रचारित कुप्रचारों की समस्या का चित्रण किया है। देश प्रेम तथा फौजी में भर्ती में भर्ती होने के संदर्भ में युवकों कों प्रोत्साहित करना नाटक का मूल विषय है। यह नाटक 7 एपीसोड में प्रसारित हुआ है।

38. **किरपिन मामा :** (बिमारी में) इस नाटक के रचयिता रमई काका है। आकाशवाणी के लखनऊ केन्द्र से इसका प्रसारण 12.11.1960 को किया गया। हस्तलिखित 5 पृष्ठों का यह नाटक ग्रामीण जन समुदाय की उचित स्वास्थ्य रक्षा न कर पाने की समस्या पर आधारित है। कंजूस मामा की डाक्टर के यहाँ कंजूसी तथा फीस आदि पर आष्चर्य व्यक्त करना, इन सब घटनाओं ने नाटक को मनोरंजक बना दिया है।

39. **गाँव की मन्थरा :** श्रीमती सुमित्राकुमारी सिन्हा द्वारा विरचित यह नाटक आकाशवाणी लखनऊ के (पनघट कार्यक्रम) से 26.12.1960 को प्रसारित हुआ था। 15 मिनट के इस नाटक में श्रीमती सिन्हा ने ग्रामीण जीवन का चित्रण किया है। तथा प्रायः गाँव में पाई जाने वाली मन्थरानुमा औरतों द्वारा उत्पन्न की गयी समस्याओं का चित्रण किया है।मिश्रित भाषा का यह नाटक मूलतः अवधी में है।

40. **भला बूझो तो :** कुतुहलपूर्ण इस एकांकी की रचना रमई काका द्वारा की गयी है। 20-4.1961 को आकाशवाणी के लखनऊ केन्द्र से प्रसारित इस एकांकी में नाटककार ने पहेलियों द्वारा कृषि और कृषकों से संबंधित जिज्ञासाओं का निराकरण प्रस्तुत किया है

41. **मंगू-मंगू :** इस नाटक के रचयिता पं0 चन्द्रभूषण त्रिवेदी रमई काका है। इसे 18. 5.1961 को आकाशवाणी के लखनऊ केन्द्र से प्रसारित इस एकांकी में नाटककार ने पहेलियों द्वारा कृषि और कृषकों से संबंधित जिज्ञासाओं का निराकरण प्रस्तुत किया है।

42. **विकास पहेली :** इस एकांकी की रचना पं0 चन्द्रभूषण त्रिवेदी रमई काका ने की है। 20-4.1961 को आकाशवाणी के लखनऊ केन्द्र से प्रसारित इस एकांकी में कृषि संबंधी समस्याओं का चित्रण किया गया है। विभिन्न पात्रों के माध्यम से पहेलियों द्वारा नाटककार ने कृषि संबंधी नयी जानकारियाँ दी हैं।

43. **हम भी फौजी हैं :** यह नाटक पं0 चन्द्रभूषण त्रिवेदी रमई काका द्वारा विरचित है। 31.7. 1961 को लखनऊ आकाशवाणी द्वारा इसका प्रसारण किया गया था। टंकित 5 पृष्ठों के इस नाटक में भोले ग्रामीणों की समस्या का चित्रण किया गया है। विभिन्न पात्रों के माध्यम से नाटककार ने यह

स्थापित किया है। कि यदि साहस के साथ संगठित होकर कार्य किया जाये तो असंभव भी संभव सिद्ध हो जाता है।

**44. सहकारी खेती :** रामविलास बाजपेयी "देहाती" द्वारा रचित यह एकांकी प्रहसन दैनिक "स्वतंत्र भारत" के साप्ताहिक परिषिष्ट में 10. 9. 1961 को प्रकाषित हुआ। नाटककार ने इस नाटक माध्यम से सहकारी खेती तथा इससे संबंधित नये कानूनों की जानकारी पाठकों कों दी है।

**45. जग से न्यारे दातादीन :** यह नाटक रमई काका द्वारा लिखा गया है। आकाशवाणी लखनऊ से 23.9. 1961 को प्रसारित यह नाटक टंकित 4 पृष्ठों का है। महाजनी ऋण की समस्या का चित्रण इस नाटक में किया गया है तथा बिना जाने समझे किसी मर विष्वास न करने की सलाह दी गई है।

**46. चतुरी चाचा :** यह नाटक पं0 चन्द्रभूषण त्रिवेदी "रमई काका" द्वारा विरचित है। इसका आकाशवाणी लखनऊ से प्रसारण 11.11.1961 को हुआ। इस नाटक में ग्रमीण समस्याओं का चित्रण किया गया है। विभिन्न पात्रों के माध्यम से नाटककार ने यह स्थापित किया है कि परस्पर सहयोग से ग्रामोत्थान तथा ग्राम विकास सम्भव है।

**47. चंगू-चंगू :** इस बाल एकांकी को पं0 चन्द्रभूषण त्रिवेदी 'रमई काका" ने लिखा है। 21.12. 1961 को आकाशवाणी के लखनऊ केन्द्र से इसका प्रसारण हुआ। बच्चों में डर की समस्या का चित्रण इस नाटक में किया गया है। टंकित 5 पृष्ठों के इस नाटक में बच्चों को आत्मविष्वास से रहने की सलाह दी गई है।

**48. जग से न्यारे दातादीन :** इस नाटक की रचना पं0 चन्द्रभूषण त्रिवेदी "रमई काका" द्वारा की गई जिसे 23.12.1961 को आकाशवाणी के लखनऊ केन्द्र से प्रसारित किया गया। हस्तलिखित 4 पृष्ठों के इस नाटक में महाजनी ऋण की समस्या का चित्रण किया गया है। विभिन्न पात्रों के माध्यम से नाटककार ने यह स्थापित किया है। कि महाजन की चालाकी से सतर्क रहना चाहिए।

**49. तीन लोक से न्यारी मथुरा :** इस नाटक के रचयिता पं0 चन्द्रभूपण त्रिवेदी "रमई काका" है। इस नाटक को आकाशवाणी के लखनऊ केन्द्र से 14.5.1962 को प्रसारित किया गया। मनोरंजन प्रधान यह नाटक काका के लोकप्रिय नाटकों में से है।

**50. विकास पहली :** इस एंकांकी के रचयिता पं0 चन्द्रभूषण त्रिवेदी "रमई काका" है। आकाशवाणी के लखंनऊ केन्द्र से इसका प्रसारण 16.8. 1962 को हुआ था। इस नाटक में रमई काका ने ग्रामीण जनों को बचत सुविधाओं की जानकारी न होने की समस्या का चित्रण किया है। विभिन्न पात्रों के माध्यम से बचत बैंक तथा डाक बचत संचय की जानकारी पहेलियों के द्वारा दी गई है।

**51- जन्तर मन्तर :** 18. 12.1962 को आकाशवाणी लखनऊ से प्रसारित यह नाटिका पं0 चन्द्रभूषण त्रिवेदी "रमई काका" द्वारा विरचित है। टंकित 5 पृष्ठों की इस नाटिका में नाटककार ने ग्रामीण जन समुदाय में प्रचलित जंत्र-मंत्र के चक्करों की समस्या का चित्रण किया है। नाटककार ने विभिन्न पात्रों के माध्यम से अन्धविष्वास के निवारण तथा जंत्र-मंत्र के चक्करों को मिथ्या सिद्ध करने का प्रयास किया है।

**52. जगराना बुआ :** इस नाटक के रचयिता पं0 चन्द्रभूषण त्रिवेदी रमई काका है। 18. 2.1963 को आकाशवाणी लखनऊ से प्रसारित यह नाटक टंकित 3 पृष्ठों का है। इस नाटक में गाँव की स्वास्थ समस्या का चित्रण किया गया है। नाटककार ने विभिन्न पात्रों के माध्यम से ग्रामसुरक्षा तथा देषसुरक्षा हेतु साक्षरता की महत्ता को रेखांकित किया है।

**53. बन महोत्सव :** इस नाटक की रचना पं0 चन्द्रभूषण त्रिवेदी रमई काका ने की है 2.6.1964 को आकाशवाणी लखनऊ से इसका प्रसारण किया गया। इस नाटक में तकनीकी षिक्षा हेतु गाँव में योग्य

शिक्षकों के न होने की समस्या प्रस्तुत की गई है। विभिन्न पात्रों के माध्यम से नाटककार ने यह स्थापित किया है। कि उचित षिक्षण हेतु योग्य अध्यापक होने आवष्यक है।

**54. जगराना बुआ आई :** परपंच की गठरी लाई :- इस नाटक के रचयिता रमई काका जी है टंकित 3 पृष्ठों के इस नाटक का प्रसारण 29. 8. 1964 को आकाशवाणी के लखनऊ केन्द्र से किया गया है। अंधविष्वास तथा चेचक जैसी बीमारी की समस्या का चित्रण इस नाटक में किया गया है। विभिन्न पात्रों के माध्यम से नाटककार ने चेचक आदि से बचाव हेतु टीके के प्रचार-प्रसार का प्रयास किया है।

**55. फूफा की रोजगारी :** 4.5.1968 को आकाशवाणी के लखनऊ केन्द्र से प्रसारित इस लोकप्रिय नाटक की रचना प्रसिद्ध अवधी नाटककार रमई काका द्वारा की गई है। बड़े परिवार की समस्या पर आधारित यह नाटक टंकित 7 पृष्ठों का है। इस नाटक में नाटककार द्वारा यह स्थापित किया गया है कि बच्चों के उचित तथा सन्तुलित पालन-पोषण हेतु परिवार नियोजन को अपनाना चाहिए।

**56. दिया तले अंधेला :** इस नाटक के रचयिता पं0 चन्द्रभूषण त्रिवेदी ''रमई काका'' है आकाशवाणी के लखनऊ केन्द्र से इस नाटक का प्रसारण 23.8. 1968 को हुआ टंकित 7 पृष्ठों के इस नाटक में बडें परिवार की समस्या का उल्लेख किया गया है विभिन्न पात्रों के माध्यम से नाटककार ने परिवार नियोजन कार्यक्रम का प्रचार करते हुए ''सीमित परिवार स्वस्थ परिवार'' को रेखांकित किया है।

**57. लाटरी का नम्बर (उत्तरायण में) :** अत्यन्त लोकप्रिय इस नाटक की रचना प्रसिद्ध अवधी नाटककार रमई काका द्वारा की गई है। आकाशवाणी लखनऊ से इस नाटक का प्रसारण 10. 11.1972 को हुआ था। नाटक में लाटरी तथा जुएँ में लोगों के धन तथा समय व्यंयकरने की समस्या का चित्रण किया गया है। विभिन्न पात्रों के माध्यम से नाटककार ने यह स्थापित किया है। कि ज्योतिषियों के चक्कर में पड़कर में पड़कर पैसे नहीं बरबाद करना चाहिए।

**58. जन्तर-मन्तर :** इस नाटक के रचयिता पं0 चन्द्रभूषण त्रिवेदी ''रमई काका'' हैं। आकाशवाणी के लखनऊ केन्द्र से 18. 12.1972 को इस नाटक का प्रसारण किया गया था। अन्धविष्वास की समस्या पर आधारित यह नाटक टंकित 5 पृष्ठों का है। विभिन्न पात्रों के माध्यम से नाटककार ने यह स्थापित किया है कि रोग का उचित रूप से इलाज करना चाहिए न कि अंधविष्वास ग्रसित जंत्र-मंत्र द्वारा।

**59. बुद्धू का ब्याह :** 21.9. 1974 को आकाशवाणी लखनऊ से प्रसारित यह लोकप्रिय नाटक प्रसिद्ध अवधी नाटककार पं0 चन्द्रभूषण त्रिवेदी रमई काका द्वारा लिखा गया है। कालाबाजारी तथा बड़े परिवार की समस्या का चित्रण इस नाटक में किया गया है। नाटककार ने लोगों को परिवार नियोजन कार्यक्रमों की जानकारी दी है।

**60. किसानों के बीच लेखपाल की भूमिका :** इस नाटक की रचना पं0 चन्द्रभूषण त्रिवेदी ''रमई काका'' द्वारा की गई है। 22.8. 1976 को दैनिक नवजीवन के साप्ताहिक परिषिष्ट में लोकप्रिय स्तम्भ ''गाँव का नाटक'' के अर्न्तगत प्रकाषित इस नाटक में नाटककार ने लेखपाल के अधिकारों तथा कर्तव्यों की जानकारी दी है।

**61- अवैध कब्जा अब कल की बात :** इस नाटक के नाटककार पं0 चन्द्रभूषण त्रिवेदी रमई काका'' हैं। दैनिक ''नवजीवन'' में 20-9. 1976 को गाँव के नाटक'' स्तम्भ के अर्न्तगत प्रकाषित यह लोकप्रिय नाटक खेतों पर अवैध कब्जों की समस्या पर आधारित है। विभिन्न पात्रों के माध्यम से नाटककार ने लड़ाई झगड़े तथा मुकदमें-बाजी से बचते हुए भूमि संबंधी नए कानूनों की जानकारी पाठकों को दी है।

**62. छूटकारा : बेगार और कर्ज से :** प्रसिद्ध अवधी नाटककार रमई काका द्वारा लिखित यह नाटक दैनिक ''नवजीवन'' के 7. 11.1976 के साप्ताहिक परिषिष्ट में प्रकाषित हुआ। इस नाटक द्वारा विभिन्न पात्रों के माध्यम से नाटककार ने किसानों को सरकारी सुविधाओं की जानकारी दी है।

**63. बिना टिकट रेलयात्रा :** पं0 चन्द्रभूषण त्रिवेदी रमई काका द्वारा लिखित इस नाटक को दैनिक "नवजीवन" के 26.12.1976 के अंक में "गाँव का नाटक" स्तम्भ में प्रकाषित किया गया। विभिन्न पात्रों के माध्यम से नाटककार ने यह स्थापित किया है कि बिना टिकट रेलयात्रा कानूनन जुर्म है, इसलिए बिना टिकट रेलयात्रा नहीं करनी चाहिए।

**64. बुद्धू का इण्टरविउ :** पं0 चन्द्रभूषण त्रिवेदी रमई काका द्वारा लिखित यह नाटक "ग्राम साहित्य मन्दिर" से 1976 में प्रकाषित "बहिरे बोधन बाबा" नामक पुस्तक में संकलित है। 17 पृष्ठों के इस नाटक में ब्याह, नौकरी की समस्या तथा अन्धविष्वास का चित्रण किया गया है। विभिन्न पात्रों के माध्यम से नाटककार ने इन समस्याओं का चित्रांकन करते हुए मनोरंजन प्रस्तुत किया है।

**65. होरी कै ठठोली :** सन् 1976 में प्रकाषित रमई काका की पुस्तक "बहिरे बोधन बाबा" में संकलित यह नाटक 13 पृष्ठों का है। विभिन्न पात्रों के माध्यम से नाटककार ने "होली" नामक पर्व की तैयारी का वर्णन मनोरंजन ढंग से प्रस्तुत किया है।

**66. चोरी :** पं0 चन्द्रभूषण त्रिवेदी रमई काका की पुस्तक "बहिरे बोधन बाबा" में संकलित यह नाटक काका के अत्यन्त लोकप्रिय नाटकों में है। 8 पृष्ठों के इस नाटक में गाँव में हुई एक चोरी की घटना का मनोरंजन वर्णन किया गया है।

**67. गरदभ रागः** लखनऊ आकाशवाणी केन्द्र से अनेक बार प्रसारित यह नाटक पं0 चन्द्रभूषण त्रिवेदी रमई काका द्वारा लिखित तथा "बहिरे बोधन बाबा" नामक पुस्तक में संकलित है। षीर्षक के अनुरूप इस नाटक में गायन को हास्यमिश्रित ढ़ंग से प्रस्तुत किया गया है।

**68. जगराना बुआ :** पं0 चन्द्रभूषण त्रिवेदी रमई काका द्वारा लिखित यह नाटक "बहिरे बोधन बाबा" में संकलित है। 14 पृष्ठों के इस नाटक में नाटककार ने ग्रामीण समाज में प्रायः प्राप्य जगराना जैसी स्त्रियों की विचित्र आदतों तथा कार्यों का उद्घाटन किया है।

**69. ननकू कै ससुरारि :** पं0 चन्द्रभूषण त्रिवेदी रमई काका द्वारा लिखित यह नाटक उनकी पुस्तक "बहिरे बोधन बाबा" में संकलित है। 5 पृष्ठों का यह लोकप्रिय नाटक मनोरंजन सुन्दर उदाहरण है। इस नाटक का अनेक स्थानों पर मचन भी हुआ है।

**70. रतौंधी :** "रतौंधी" नामक पुस्तक में प्रकाषित यह नाटक प्रसिद्ध अवधी नाटककार रमई काका द्वारा विरचित है। 14 पृष्ठों के इस नाटक द्वारा नाटककार ने पद्यमिश्रित हास्यव्यंग्य षैली में पाठकों मनोरंजन किया है।

**71- दुसाला :** पं0 चन्द्रभूषण त्रिवेदी रमई काका की "रतौंधी" नामक पुस्तक में प्रकाषित इस नाटक में नाटककार ने हास्यप्रधान षैली में पाठकों का मनोरंजन किया है। सन् 1978 में इस पुस्तक का प्रकाषन हुआ था। पुस्तक में संकलित अधिकांष नाटक समय-समय पर आकाशवाणी के लखनऊ केन्द्र से प्रसारित होते रहे हैं।

**72. रतौधी :** इसी षीर्षक से प्रकाषित रमई काका की लोकप्रिय पुस्तक में प्रकाषित यह नाटक पूर्व में आकाशवाणी के लखनऊ केन्द्र से प्रसारित हो चुका है। प्रसारित नाटक और प्रकाषित इस प्रति में किंचित् परिर्वतन प्राप्त होता है।

**73. बहिरे बाबा :** रतौंधी षीर्षक से प्रकाशित इस पुस्तक में संकलित यह नाटक काका के लोकप्रिय नाटकों में से है। 7 पृष्ठों के इस नाटक में काका ने जनसमान्य के मनोरंजन का प्रयास किया है।

**74. नाम नैनसुख :** इस नाटक के रचयिता पं0 चन्द्रभूषण त्रिवेदी रमई काका है। मई 1978 में प्रकाषित पुस्तक "रतोधी" में संकलित यह नाटक काका के बहुप्रषंसित नाटकों में से एक है। नाटककार ने पठको/श्रोताओं के स्वस्थ मनोरंजन के लिए इस नाटक में अनेक मनोरंजक स्थितियों का

सृजन किया है।

**75. तीन आलसी :** "रतौंधी" नामक पुस्तक में संकलित रमई काका का यह नाटक मई, 1978 में प्रकाषित काका के सर्वाधिक लोकप्रिय नाटकों में से है। 10 पृष्ठों के इस नाटक में नाटककार ने आलसी व्यक्तियों का चित्रण किया है।

**76. नटखट पूसी :** पं0 चन्द्रभूषण त्रिवेदी रमई काका द्वारा लिखित यह नाटक "रतौधी" नामक पुस्तक में संकलित है। काका ने 15 पृष्ठों के इस नाटक में जनसामान्य के मनोरंजन के उद्देष्य से अनेक सामान्य स्थितियों का वर्णन अपनी हास्यमिश्रित षैली में प्रस्तुत करके पाठकों का मनोरंजन किया है।

**77. अफीमी घाघा :** पं. चन्द्रभूषण त्रिवेदी रमई काका लोकप्रिय नाटकों के संकलन 'रतौधी' में संकलित नाटक अपने षीर्षक के अनुरूप मादक पदार्थो का सेवन करने वाले व्यक्तियों पर आधारित है। 10 पृष्ठों के इस नाटक में नाटककार ने अफीम का सेवन करने वाले लोगों की स्थिति का वर्णन किया है।

**78.का हम कोई ते कम हन :** पं0 चन्द्रभूषण त्रिवेदी "रमई काका" के महत्यवपूर्ण संकलन "रतौंधी" में संकलित यह नाटक मनोरंजन प्रधान नाटक है। नाटककार ने इस नाटक में अनेक मनोरंजन स्थितियों का उल्लेख किया है।

**79. सुघरि सगाई :** इस नाटक की रचना श्री लक्ष्मण प्रसाद मित्र द्वारा की गई है। अनेक स्थानों पर मंचित इस नाटक में नाटककार ने स्त्री षिक्षा तथा दहेज की समस्या का चित्रण किया है। विभिन्न पात्रों के माध्यम से नाटककार ने स्त्री षिक्षा के महत्व तथा दहेज कुप्रथा के विरोध हेतु युवकों को चेतना प्रदान की है। इस नाटक की रचना 6.12.1983 को की गई ।

**80. जब राम का कृषक औतारू लेइ का परा :** श्री लक्ष्मण प्रसाद मित्र" द्वारा लिखित यह नाटक हस्तलिखित 25 पृष्ठों का है। वर्तमान षासकीय भ्रष्टाचार की समस्या पर आधारित यह नाटक अनेक स्थानों पर मंचित तथा प्रषंसित हुआ है। विभिन्न पात्रों के माध्यम से नाटककार ने वर्तमान सरकार की नीतियों तथा सिद्धान्तों की आलोचना की है। यह नाटक 22.1.1984 को लिखा गया है। नाटक में समसामयिक ग्रामीण समस्याओं का चित्रण भी किया गया है।

**81- सुनीता :** 25.3.1984 को लिखा गया यह नाटक श्री लक्ष्मण प्रसाद मित्र का सर्वाधिक लोकप्रिय नाटक है। हस्तलिखित 16 पृष्ठों का अन्तर्जातीय विवाह की समस्या तथा सामाजिक अप्रासंगिक मान्यताओं की पृष्ठभूमि पर आधारित यह नाटक अनेक मंचों से मंचित तथा प्रषंसित हुआ है। विभिन्न पात्रों के माध्यम से नाटककार ने यह स्थापित किया है। कि समसामयिक संदर्भो में अप्रासंगिक सामाजिक मूल्यों तथा मान्यताओं को घसीटना न तो सम्भव ही है और ना ही प्रासंगिक।

**82. जगमग दीप जले :** पं0 इन्दर चन्द्र तिवारी "बौडम लखनवी" द्वारा लिखित इस नाटक का लखनऊ दूरदर्षन के चौपाल कार्यक्रम के अर्न्तगत प्रसारण हुआ था। दीपावली की पृष्ठभूमि पर आधारित इस नाटक में जुएँ की समस्या का चित्रण किया गया है। विभिन्न पात्रों के माध्यम से नाटककार ने यह स्थापित किया है। कि लालच के चक्कर में जुएँ से अनेक समस्यायें पैदा होती है। इस सामाजिक कुरीति का सजीव चित्रण तथा प्रभावपूर्ण विरोध इस नाटक के माध्यम से किया गया है।

**83. नवविहान के पंख :** शुद्ध मनोरंजन पर आधारित इस नाटक के नाटककार पं0 इन्दरचन्द तिवारी "बौड़म लखनवी" है। लखनऊ दूरदर्षन के अत्यन्त लोकप्रिय "चौपाल" कार्यक्रम के अर्न्तगत प्रसारित यह नाटक बौड़म साहब के अत्यन्त किया लोकप्रिय नाटकों में से है। नाटककार ने पाष्चात्य चकाचौंध से प्रभावित सामान्य जन की मानसिकता का सुन्दर चित्रण इस नाटक में किया है।

**84. हरि के जन :** छुआछूत की पृष्ठभूमि तथा समस्या पर आधारित इस प्रष्रंसित नाटक के रचयिता पं0 इन्दरचन्द्र तिवारी "बौड़म लखनवी" है। दूर्दषन के "चौपाल" कार्यक्रम के अर्न्तगत प्रसारित इस

नाटक के माध्यम से समसामयिक संदर्भो मे छूआछूत की प्रासंगिकता पर प्रष्नचिन्ह लागते हुए दर्षकों को भी इस परंपरा का विरोध करने की प्रेरणा दी गई है।

**85. फटफटिया :** दूरदर्षन लखनऊ के चौपाल कार्यक्रम से प्रसारित इस नाटक के रचनाकार पं. इन्दरचन्द्र तिवारी 'बौड़म लखनवी' है। दहेज की समस्या पर आधारित इस नाटक मे इस कुत्सित समस्या का प्रभावी चित्रण किया गया है। नाटककार ने विभिन्न पात्रों के माध्यम से दर्शकों को इस कुप्रथा की जानकारी तथा इसके विरोध हेतु प्रेरणा दी है। नाटक में दहेजनिरोधक कानूनों की जानकारी भी दी गयी है।

**86. सोहाग सेंदुर :** इस नाटक के रचयिता पं. इन्दरचन्द्र तिवारी 'बौड़म लखनवी' है। लखनऊ दूरदर्शन के 'चौपाल' कार्यक्रम के अर्न्तगत प्रसारित इस नाटक में छुआछूत की समस्या का चित्रण किया गया है। विभिन्न पात्रों के माध्यम से नाटककार ने इस सामाजिक कुरीति के प्रति दर्षकों को चेतना प्रदान की है।

**87. सबको सम्मति दे भगवान :** वँधुआ मजदूर ी समस्या पर लिखे गसे इस नाटक के नाटककार श्री इन्दरचन्द्र तिवारी "बौड़म लखनवी" है। लखनऊ दूरदर्षन के 'चौपाल' कार्यक्रम के अर्न्तगत प्रसारित इस नाटक मे नाटककार ने वर्तमान समय में इस प्रकार के षोषण के विरोध मे आवाज उठायी है।

**88. गंजिहा परी :** लखनऊ दूरर्दषन के लोकप्रिय "चौपाल" कार्यक्रम से प्रसारित इस नाटक में अधुनातन फैषन से प्रभावित तथा उसका अन्धानुकरण कर रही युवा पीढ़ी की समस्या का चित्रण किया गया है। विभिन्न पात्रों के माध्यम से नाटककार ने इस ओर लोगों को प्रेरित किया है। कि अच्छे बुरे का ध्यान रखते हुए इस फैषन से प्रभावित हों ।

**89. मंगरे मामा :** पं0 इन्दरचन्द्र तिवारी "बौड़म लखनवी द्वारा लिखित इस नाटक को लखनऊ दूरदर्षन के लोकप्रिय चौपाल कार्यक्रम के अर्न्तगत प्रसारित किया गया। युवा वर्ग द्वारा फैषन के अन्धानुरकण की समस्या का चित्रण इस नाटक में किया गया है। नाटककार ने विभिन्न पात्रों के माध्यम से युवा वर्ग को इस अन्ध दौड़ मे विचार कर षामिल होने का संदेष अत्यन्त प्रभावी ढ़ग से दिया है।

**90. मंगरे मामा :** अन्धविष्वास तथा कृषि संबंधी समस्याओं पर आधारित इस नाटक मे नाटककार पं0 इन्दरचन्द्र तिवारी "बौड़म लखनवी" ने अन्धविष्वास की परंपरा का विरोध किया है। लखनऊ दूरर्दषन के लोकप्रिय "चौपाल" कार्यक्रम से प्रसारित यह नाटक अत्यन्त प्रषंसित नाटक है।

**91- मंगरे मामा :** तीन श्रृंखलाओं के इस नाटक के रचनाकार बौडम लखनवी है। साक्षरता तथा प्रौढ़ षिक्षा की पृष्ठभूमि पर आधारित इस नाटकक मे ग्रामीण अषिक्षा की समस्या का प्रभावी चित्रण किया गया है। विभिन्न पात्रों के माध्यम से नाटककार नें प्रौढ़ षिक्षा तथा साक्षरता के महत्व से ग्रामीण समुदाय को परिचित कराया है।

**92. जरि गसे हरे हरे धान हो :** श्री इन्दर चन्द्र तिवारी "बौडम लखनवी " द्वारा विरचित इस नाटक का प्रसारण लखनऊ दूरदर्षन के लोकप्रिय "चौपाल " कार्यक्रम में किया गया। दहेज की समस्या पर आधारित यह नाटक बौडम साहब के लोकप्रिय नाटको मे से एक है। नाटककार ने विभिन्न पात्रों के माध्यम से इस समस्या के विरूद्ध युवको का आह्वान किया है। तथा दहेज संबंधी नयें कानूनों की जानकारी दर्षको/श्रोताओं को दी है।

**93. जब सत्य का असत्य के कपरा पहिरै का परे :** श्री लक्ष्मण प्रसाद मित्र द्वारा रचित इस नाटक मे नाटककार ने प्रतीक पात्रों के माध्यम से आधुनिक भ्रष्टाचार तथा एतद्‌जन्य समस्याओं का चित्रण किया है। नाटककार ने प्रतीक के माध्यम से सत्य, असत्य, बुराई, भलाई आदि पात्रों को मानवीय रूप में प्रस्तुत करते हुए उनसे साक्षात्कार किया है।

इन नाटकों के अतिरिक्त काफी बड़ी संख्या ऐसे नाटकों की भी है जो प्राप्त हुए है किन्तु उनका

रचनाकाल याकि प्रसारण /प्रकाषनकाल ज्ञात नहीं हो सका है। इन नाटकों में है-

**94. नई होली :** यह नाटक पं0 चन्द्रभूषण त्रिवेदी रमई काका द्वारा विरचित है। रेडियों सप्ताह के अर्न्तगत आकाशवाणी के लखनऊ केन्द्र से प्रसारित यह लोकप्रिय नाटक होली की पृष्ठभूमि पर आधारित है। टंकित 13 पृष्ठों के इस नाटक में नाटककार ने आधुनिकता से बचने की सलाह दी है तथा ईमानदारी के महत्व को रेखांकित किया है।

**95. फेरी वाले :** पं0 चन्द्रभूषण त्रिवेदी रमई काका द्वारा विरचित यह नाटक आकाशवाणी के लखनऊ केन्द्र सें प्रसारित हुआ है। फेरी वालो द्वारा आकर्षक ढ़ंग से अपने सामान की बिक्री हेतु अनेक प्रकार के छंद सुनाकर ग्राहकों को अपनी तरफ आकर्षित करने का चित्रण इस नाटक में हुआ है। नाटककार ने फेरी वालों के लटकों-झटकों को मनोरंजक ढंग से श्रोताओं के सम्मुख प्रस्तुत किया है।

**96. बीछी का डंक :** आकाशवाणी के लखनऊ केन्द्र से प्रसारित इस नाटक के रचयिता पं0 चन्द्रभूषण त्रिवेदी रमई काका है। नाटककार ने अफवाहों की समस्या का चित्रण इस नाटक में किया है। विभिन्न पात्रों के माध्यम से नाटककार ने यह स्थापित किया है कि बिना पूरी बात तथा घटना को समझे हुए प्रतिक्रिया नहीं व्यक्त करनी चाहिए।

**97. प्लेटफार्म :** पं0 चन्द्रभूषण त्रिवेदी रमई काका द्वारा रचित इस नाटक में नाटककार ने रेल तथा रेल यात्रा से संबंधित जानकारी श्रोताओं को दी है। आकाशवाणी के लखनऊ केन्द्र से प्रसारित इस लोकप्रिय नाटक में विभिन्न पात्रों के माध्यम से नाटककार ने अनुषासन का महत्त्व तथा उसकी आवष्यकता का प्रतिपादन किया है।

**98. माता व चंगू :** इस नाटक के रचयिता पं0 चन्द्र भूषण त्रिवेदी रमई काका है। आकाशवाणी लखनऊ से प्रसारित यह नाटक बाल समस्याओं पर आधारित है विभिन्न पात्रों के माध्यम से नाटक कार ने बाल मनोविज्ञान का चित्रण करते हुए बालकों को अधिक षैतानी न करके अपना समय पढ़ाई की तरफ लगाने की प्रेरणा दी है।

**99. होरी के ठठोली :** पं0 चन्द्रभूषण त्रिवेदी रमई काका द्वारा रचित यह नाटक अनेक अवषरों पर आकाशवाणी के लखनऊ केन्द्र से प्रसारित हुआ है। होली की पृष्ठभूमि पर आधारित इस नाटक में नाटककार ने होली के उपलक्ष्य मे परिहास प्रस्तुत करते हुए श्रोताओं का मनोरंजन किया है।

**100. जगराना लउटी :** पं0 चन्द्रभूषण त्रिवेदी रमई काका द्वारा रचित यह नाटक आकाशवाणी के लखनऊ केन्द्र से प्रसारित हुआ है। इस नाटक में नाटककार ने ग्रामीण जीवन के मनोविज्ञान तथा उसकी आषंकाओ, कुषंकाओं का चित्रण किया है। नाटककार ने विभिन्न पात्रों के माध्यम से यह स्थापित किया है। कि पहले से ही अप्रिय की आषंका नहीं करनी चाहिए। तथा बिना पूरी तरह जानकारी किए आषंका को प्रामाणित नहीं मान लेना चाहिए

**101- खोई हुई महिला :** पं0 चन्द्रभूषण त्रिवेदी रमई काका के इस अत्यन्त लोकप्रिय प्रहसन में नाटककार ने आधुनिकता की पृष्ठभूमि प्रस्तुत की है। आकाशवाणी लखनऊ के अर्न्तगत प्रसारित इस नाटक में नाटककार ने आधुनिकता को अनावृत करते हुए मनोरंजन का पुट प्रदान किया है।

**102. जन्तर मन्तर :** इस लघु प्रहसन के रचयिता पं0 चन्द्रभूषण त्रिवेदी रमई काका है। अनेक बार आकाशवाणी के लखनऊ केन्द्र से प्रसारित इस नाटक के रिकार्ड भी एच0 एम0 वी0 कम्पनी द्वारा बनाये गये है। अन्धविष्वास की समस्या पर आधारित यह नाटक रमई काका के लोकप्रिय नाटको मे से एक है। विभिन्न पात्रों के माध्यम से नाटककार ने यह स्थापित किया गया है। कि बिमारी की दवा हेतु डाक्टर के पास जाना चाहिए न कि ओझा या तांत्रिक के पास।

**103. मटरू मामा :** आकाशवाणी के लखनऊ केन्द्र से प्रसारित इस नाटक की रचना प्रसिद्ध अवधी

नाटककार "रमई काका" द्वारा की गई है। बड़े परिवार की समस्या पर आधारित यह नाटक काका के लोकप्रिय नाटको में से है। विभिन्न पात्रों के माध्यम से नाटककार ने यह स्थापित किया है कि परिवार को नियोजित करने के लिए सरकारी सुविधओं का उपयोग करते हुए सुखी तथा निरोग जीवन के लिए, कम से कम बच्चों को जन्म दें।

**104. खिचड़ी** : इस लोकप्रिय नाटक की रचना पं0 चन्द्रभूषण त्रिवेदी "रमई काका" द्वारा की गई है। आकाशवाणी के लखनऊ केन्द्र से प्रसारित तथा विभिन्न मंचो से मंचित/ प्रषंसित यह नाटक काका के लोकप्रिय नाटकों में से है। नाटककार ने इस नाटक के माध्यम से स्वस्थ मनोरंजन प्रस्तुत करते हुए सिद्ध किया है कि किसी भी अच्छी चीज की अधिकता भी अरूचिकर लगने लगती है। स्वस्थ एवं निरोग रहने के लिए सन्तुलित भोजन हेतु नाटककार का विषेष आग्रह परिलक्षित होता है।

**105. हरफनमौला** : पं0 चन्द्रभूषण त्रिवेदी "रमई काका" द्वारा रचित इस लोकप्रिय नाटक का आकाशवाणी के लखनऊ केन्द्र से अनेक केन्द्र से अनेक बार प्रसारण हुआ है। कई वार प्रसारण हुआ है। कई बार यह नाटक फिल्मी इण्टरव्यू षीर्षक से भी प्रसारित हुआ है। मनोरंजन प्रधान यह नाटक काका के लोक प्रिय नाटकों में से है।

**106. बहरे बाबा और पंचायत** : पं0 चन्द्रभूषण त्रिवेदी रमई काका द्वारा लिखित यह नाटक आकाशवाणी लखनऊ से प्रसारित किया गया है। इस लोकप्रिय नाटक में नाटककार ने न्याय तथा अन्याय का नीर-क्षीर विवेचन करने वाली पंचायत तथा पंचो को रेखांकित किया है।

**107 चप्पल की खीसें** : इस नाटक के रचयिता पं0 चन्द्रभूषण त्रिवेदी "रमई काका" है। आकाशवाणी लखनऊ से प्रसारित यह नाटक काका का बहुप्रचारित तथा प्रषंसित नाटक है। विभिन्न पात्रों के माध्यम से नाटककार ने मनोरंजन प्रस्तुत किया है।

**108. लाटरी का नम्बर** : पं0 चन्द्रभूषण त्रिवेदी रमई काका द्वारा लिखित यह नाटक आकाशवाणी लखनऊ केन्द्र से प्रसारित किया गया। ज्योतिषियों द्वारा सामान्य जन को बरगलाने की समस्या का चित्रण इस नाटक में किया गया है। विभिन्न पात्रों के माध्यम से नाटककार ने ऐसे लोगों से बचने की सलाह दी है।

**109. अनोखे पण्डित** : पं0 चन्द्रभूषण त्रिवेदी रमई काका द्वारा विरचित इस नाटक का आकाशवाणी लखनऊ से अनेक बार प्रसारण किया गया है। गाँव में मिलने वाले कुछेक विचित्र पंडितों के व्यक्तित्व का चित्रण इस नाटक में किया गया है। अपनी स्वार्थपूर्ति हेतु लोगों को गुमराह करने वाले ऐसे पंडितों से बचने की सलाह लोगों को दी गई है।

**110. चुटकुले और विकास पहेली** : पं0 चन्द्रभूषण त्रिवेदी "रमई काका" द्वारा लिखा गया यह नाटक आकाशवाणी के लखनऊ केन्द्र से प्रसारित किया गया। विभिन्न पहेलियों तथा चुटकुलों के माध्यम से नाटककार ने कृषि तथा ग्रामीण समस्याओं का समाधान प्रस्तुत किया है।

**111- गरदभ राग** : इस नाटक के रचयिता पं0 चन्द्रभूषण त्रिवेदी "रमई काका" है। आकाशवाणी के लखनऊ केन्द्र से प्रसारित इस लोकप्रिय नाटक की अनेक आवृत्तियाँ हुई है। इस बहुप्रषंसित नाटक में नाटककार ने संगीत तथा गायन के सड़क छाप गवैयों का चित्रण किया है।

**112. सु-रा-ज** : इस नाटक की रचना सूर्यप्रसाद दीक्षित "सुरेष" द्वारा की गई है।यह नाटक आकाशवाणी लखनऊ के पंचायतघर कार्यक्रम के अर्न्तगत प्रसारित किया गया। छंदमिश्रित इस नाटक में महात्मा गाँधी और उनके "सुराज" आन्दोलन को रेखांकित किया गया है।

उपर्युक्त नाटकों के अतिरिक्त काफी मात्रा में नाटक प्रकाषित और प्रसारित कहे गये हैं। परन्तु काफी प्रयास के बावजूद प्राप्त नहीं हो सके हैं। इनमें- "झगड़ू महराज", "चलांका चाची" "बल्लू महाजन" "बजरंगी पहलावान" आदि विषेष महत्वपूर्ण है।

113. पं0 युक्तिभद्र ''पुतान साहब'' द्वारा लिखित झगडू महराज नाम से यह नाट्य श्रृंखला आकाशवाणी के इलाहाबाद केन्द्र से सन् 1955 से 1969 तक माह में एक बार प्रसारित होती रही है। 125 से अधिक श्रृंखलाओं (सीरियल) का यह नाटक दीक्षित जी के लोकप्रिय नाटकों में से है। स्वतंत्रता के बाद गाँव के जीवन में होने वाले परिवर्तनों पर आधारित इस नाटक में झगडू महराज, पण्डितायन, मुरहू, बहू तथा जगेसर नाऊ जैसे पात्र हुआ करते थे।

114. **चलांका चाची :** आकाशवाणी के इलाहाबाद केन्द्र से सन् 1964 के आस पास माह में एक बार प्रसारित धारावहिक इस नाट्य श्रृंखला की रचना पं0 युम्तिभ्द्र दीक्षित ''पुतान साहब'' द्वारा की गई है। कुल 50 से अधिक श्रृंखलाओं में प्रसारित यह नाट्य श्रृंखला प्रचलित कुरीतियों के विरूद्ध समाज से लड़ने वाली महिला की कहानी पर आधारित है। समाज सुधार के लिए जागृति पैदा करने वाली महिला के रूप मे यह श्रृंखला ग्रामीण महिलाओं में अत्यन्त लोकप्रिय रही है। चलांकाा चाची तथा पुत्र मुकरू के आलावा इस नाट्य श्रृंखला मे विषयानुसार पात्र बदलते रहते थे।

115. **बल्लू महाजन :** 25 से अधिक श्रृंखलाओं (सीरीयलों) में आकाशवाणी इलाहाबाद से प्रसासित इस श्रृंखला की रचना पं0 युक्तिभद्र दीक्षित द्वारा की गई है। बल्लू महाजन तथा उनकी बीबी (ललाइन) इस नाट्य श्रृंखला के स्थाई पात्र थे। इनके अतिरिक्त विषयानुसार पात्र सम्मिलित रहते रहे हैं। 1966 से 1968 के मध्य इस नाट्य श्रृंखला का प्रसारण हुआ।

116. **बजरंगी पहलवान :** 1964 से 1968 के मध्य आकाशवाणी के इलाहाबाद केन्द्र से 25 से अधिक श्रृंखालाओं में प्रसारित इस नाट्य श्रृंखला के रचयिता पं0 युक्तिभद्र दीक्षित जी है। पं0 षुकदेवी प्रसाद (पं0 युक्तिभद्र दीक्षित के ताऊ तथा पं0 बलभद्र दीक्षित ''पढीसजी'' के अग्रज) के चरित्र को ध्यान में रखकर लिखे गये इस नाट्य श्रृंखला में नाटककार ने ग्रामीण समस्याओं तथा उनके आसान निदानों का उल्लेख किया है।

117.**भानुमती का पिटारा :** श्रीमती सुमित्राकुमारी सिन्हा द्वारा आकाशवाणी लखनऊ से प्रसारण हेतु लिखे गये ये नाटक ग्रामीण जनजीवन में अत्यन्त लोकप्रिय रहे है। आकाशवाणी के ''पनघट'' कार्यक्रम के अर्न्तगत माह में एक बार प्रसारित से नाटक/प्रहसन 1950 से के 1976 तक की अवधि में लिखे तथा प्रसारित किये ।इस नाट्य श्रृंखला में भानुमति भौजी षुद्ध अवधी भाषा में तथा षेष पात्र विषयानुसार ग्रामीण भाषा में बोलते थे।

118. **बतासा बुआ :** ग्रामीण जनसमाज में अत्यन्त लोकप्रिय प्रहसनों की इस श्रृंखला की रचना श्रीमती सुमित्राकुमारी सिन्हा द्वारा आकाशवाणी लखनऊ केन्द्र से प्रसारण हेतु की गयी सन् 1950 से अद्यावधिक इन नाट्य श्रृंखलाओं का प्रसारण हो रहा है। अत्यन्त लोकप्रिय इस श्रृंखला में बतासा बुआ नामक पात्र शुद्ध अवधी तथा षेष पात्र विषय तथा वातावरण के अनुसार ग्रामीण बोली में बोलते थे।

उपर्युक्त नाटकों के अतिरिक्त कुछ ऐसे नाटक भी है, जिन्हें प्रकाशित अथवा प्रसारित कहा गया है। परन्तु बहुत प्रयास के बावजूद वे प्राप्त नहीं हो सके हैं। इन नाटकों में पं. बलभद्र दीक्षित 'पढ़ीस' के 'पवित्र प्रेम' तथा 'सुहागिन', विशुद्ध प्रेम, 'श्रीकृष्ण लीला' आदि। पं. जगमोहन अवस्थी का नाटक 'अवतारु', श्री विजयेन्द्र कुमार कृत 'भूलभुलैया' तशा श्री बुद्धिभद्र दीक्षित कृत कुछ नाटक उल्लेखनीय हैं।

इन नाटकों के अतिरिक्त ऐसे नाटक भी काफी संख्या में प्राप्त हुए है। जो अवधी अहुल होते हुए भी पात्रा नुकूल खड़ी बोली या अन्य क्षेत्रीय बोलियों में है। इन नाटकों की भाषा अवधी बहुत होते हुए भी पात्रानुकूल खड़ी बोली मिश्रित है। इस प्रकार के नाटकों में उल्लेखनीय है।- ''निराला गढ़ाकोला में'', ''अवध में राना'', ''बैसवारा केसरी'' तथा ''सपूत'' आदि। इन सभी नाटकों की रचना पं0 सूर्यप्रसाद द्विवेदी ''काका बैसवारी'' द्वारा की गई है।

# अवधी के पारम्परिक लोक व्यंजन

**रश्मिशील**

---

*(अवधी का अध्ययन करने के लिए उसके लोक व्यवहार, परम्परायें, कलाएं आदि का भी अध्ययन आवश्यक है। यहाँ अवधी क्षेत्र के पारम्परिक व्यंजनों की जानकारी दी जा रही है। यह जानकारी खासकर लखनऊ, सीतापुर, बाराबंकी के आस-पास के क्षेत्रों की है, परन्तु छोटे-छोटे क्षेत्रों में भी नये-नये व्यंजन और उसके तरीके मिलेंगे। स्थानीय कृषि उपज भी व्यंजन के प्रकार को प्रभावित करती है। रश्मिशील ने काफी परिश्रम करके इन व्यंजनों की जानकारी उपलब्ध करायी है। - सं.)*

**पेय :** 1. ठण्डाई, 2. गुलाब का शर्बत

**मीठे व्यंजन :** 1. खीर, 2. मालपुए, 3. रसेवर, 4. सोंठ के लड्डू, 5. गुलगुले, 6. लडुवा, 7. माठ, 8. खरिका, 9. गुझिया, 10. पचधारी के लड्डू, 11. अलसी के लड्डू, 12. सोठइला, 13. हरेरा, 14. कसरावन, 15. लपसी।

**नमकीन व्यंजन :** 1. सादी पूरी, 2. खस्ता कचौरी, 3. पनेउछा, 4. भरवा फरा, 5. दही-बड़ी, 6. करेल, 7. कढ़ी-पकौड़ा, 8. भौंरी, 9. अलौरी, 10. अन्नकूट भुजिया, 11. बेसन के गट्टे, 12. मुगौड़ी, 13. बड़ी, 14. बुकनू, 15. मिजनी, 16. रसाजे।

**ठण्डाई**

**सामग्री :** सौंफ - 6 चम्मच, खसखस - 6 चम्मच, कालीमिर्च - 3 चम्मच, खरबूजे के बीज- 3 चम्मच, मुनक्का - 25 दाने, छोटी इलायची - 20, बादाम - 25 दाने, गुलकंद/गुलाबजल - 1 चम्मच, चीनी - स्वादानुसार, दूध - 12 गिलास (लगभग), पानी - 10 गिलास (लगभग), बर्फ - आधा किलो।

**विधि :** सब सामान साफ करके अलग-अलग बरतन में भिगो दें। रात भर भीगने दें। सुबह सब चीजें अलग-अलग पीस लें। पीसते समय उसी पानी का इस्तेमाल करें जिसमें कि सामग्री भीग रही थी। साफ पानी में चीनी घोल लीजिए। बादाम को छोड़ कर अन्य चीजें मिलाकर महीन कपड़े की सहायता से छान लीजिए। अब पिसा बादाम और दूध डाल लीजिए। बर्फ को टुकड़े करके मिला दीजिए और गुलाब जल डाल दीजिए। ठण्डाई तैयार है।

ठण्डाई होली के उत्सव का खास पेय है। ग्रामीण क्षेत्रों में शादी-विवाह के अवसर पर ठण्डाई को विशेष रूप से तैयार किया जाता है और बारातियों का स्वागत इस पेय से किया जाता है। कभी-कभी ठण्डाई में भाँग पीस कर मिला दी जाती है जिससे ठण्डाई पीने से खुमारी आती है।

## गुलाब का शर्बत

**सामग्री :** गुलाब के फूल/कलियां - 250 ग्राम, चीनी - स्वादानुसार, पानी - ढाई लीटर, टाटरी- आधा चम्मच चाय का, बर्फ - आधा किलो।

**विधि :** गुलाब की ताजा कलियां तोड़कर, उनकी डण्डियाँ निकाल कर उन्हें अच्छी तरह धोकर साफ कर लें। एक लीटर पानी डालकर आँच में पका लें। जब पकते-पकते रस आधा रह जाय, तब नीचे उतार का ठण्डा कर लें। ठण्डा होने पर गुलाब की पत्तियों को अच्छी तरह हाथ से मसल लीजिए। पतले कपड़े से छानकर गुलाब का रस अलग कर लीजिए। अब शेष पानी में चीनी व टाटरी घोल लीजिए। शर्बत को छान कर गुलाबरस व बर्फ के टुकड़े करके डाल दीजिए। शर्बत पीने के लिए तैयार है।

इसे संरक्षित भी किया जा सकता हे। इसके लिए 2 किलो चीनी व टाटरी को पानी में घोलकर अच्छी तरह 10. 15 मिनट तक आग में पका लीजिए। आग से उतार कर शर्बत ठण्डा कर बोतलों में भर कर ठण्डे स्थान में रख लीजिए। जब पीना हो या सर्व करना हो तो पानी व बर्फ डाल कर पीजिए।

गुलाब का शर्बत ठण्डक पहुँचाता है। यह अवध क्षेत्र में खास-खास अवसरों पर दिया जाने वाला पारम्परिक पेय है।

## खीर

**सामग्री :** दूध - 2 किलो, चावल - 100 ग्राम, चीनी - 250 ग्राम, गरी - कसी हुई एक बड़ा चम्मच, मेवे - रुचि के अनुसार, छोटी इलायची पाउडर - पाँच या छः पिसी, घी - एक चम्मच।

**विधि :** चावलों को साफ करके धोने के बाद पानी में भिगो दें। आधे घण्टे बाद चावल को घी डालकर हल्का गुलाबी होने तक तल दीजिए। दूध में 200 ग्राम पानी डाल कर आँच में उबालने के लिए चढ़ा दें। चार छह उबाल आने पर उसमें चावल डालकर मुलायम होने तक पकायें। बीच-बीच में चलाते रहिये, जिससे दूध बर्तन के तले में लगने न पाये। चावल पक जाने पर खीर में चीनी डाल कर एक-दो उबाल आने तक पकायें। अब इस खीर में कसी हुई गरी व अन्य मेवा डाल दें। पिसी हुई इलायची पाउडर डाल कर उतार लें।

खीर विशेष रूप से बच्चे के अन्नप्राशन संस्कार के समय बनाया जाने वाला मीठा व्यंजन है। सर्वप्रथम खीर चटाकर ही बच्चे को अन्य अन्न से निर्मित सामग्री दी जाती है। खीर अन्य अवसरों पर भी बनाई जाती है।

## मालपुए

**सामग्री :** गेहूँ का आटा - 50 ग्राम, सूजी - 20 ग्राम, चीनी - 75 ग्राम, दही - 1 छोटा चम्मच, सौंफ - आधा छोटा चम्मच, घी - तलने के लिए।

**विधि :** दही में चीनी और आधा कप पानी डाल कर घोंट लीजिए। अब इसमें सूजी व आटे तथा सौंफ को डाल कर अच्छी प्रकार मिला दीजिए। इस मिश्रण को एक घण्टे के लिए रख दें। फ्राई पैन या चपटे तले की कड़ाही में घी गरम करें। इस घी में कलछी से मिश्रण डालकर पुए बनाइए तथा लाल होने तक तलिए। यदि मिश्रण गाढ़ा हो तो पानी डालकर पतला कर लें।

शादि आदि अवसरों पर मालपुए पकवान के रूप में तैयार किये जाते हैं।

## रसेवर

**सामग्री :** चावल - 250 ग्राम, गन्ने का रस - 1 लीटर, किशमिश, बादाम - 10. 10 ग्राम, नारियल (कसा हुआ) - 10 ग्राम, छोटी इलायची पाउडर - 8. 10, घी - 50 ग्राम।

**विधि :** चावलों को साफ कर धोने के बाद आधा घण्टा पानी में भिगो दें। पतीले में घी गर्म करें। बादाम को छोटा-छोटा काटकर, नारियल व किशमिश भून लें। चावल को हल्का गुलाबी भून लें और इसमें

गन्ने का रस डालकर धीमी आँच पर पकायें। जब चावल अच्छी तरह पक जाये, तब उतार कर इलायची पाउडर मिला दें।

रसेवर जाड़े में बनने वाला विशिष्ट व्यंजन है।

## सोंठ के लड्डू

**सामग्री :** आटा - 1 किलो, सोंठ - 200 ग्राम, मूठ - 50 ग्राम, कसी गरी - 100 ग्राम, खड़ी हल्दी- 100 ग्राम, किशमिश - 20 ग्राम, छुहारा - 100 ग्राम, चिरौंजी - 20 ग्राम, अजवाइन - 50 ग्राम, गुड/ चीनी - डेढ़ किलो, देसी घी/सरसों का तेल - 500 ग्राम।

**विधि :** सोंठ, मूठ, खड़ी हल्दी, अजवाइन, साफ करके अलग अलग पानी में भिगो दें। अच्छी तरह भीग जाने पर महीन पीस लें। पिसे हुए पेस्ट को तेल अथवा घी में भून लें। सभी मेवे महीन-महीन काट कर हल्की आँच में भून लें। आटे को छान कर घी में बादामी रंग का भून लें। अब सारी सामग्री आटे में मिला कर हथेली की सहायता से अच्छी तरह मल दीजिए। गुड़ अथवा चीनी की चासनी बनाकर आटे को चासनी में डालकर लड्डू बना लें। आटे के स्थान पर सूजी का प्रयोग भी किया जा सकता है।

ये लड्डू प्रायः सन्तानोत्पत्ति के बाद जच्चा के लिए बनाये जाते हैं और ये खुशी के इजहार के लिए बंटवाये भी जाते हैं।

## गुलगुले

**सामग्री :** गुड़ - 150 ग्राम, गेहूँ का आटा - 250 ग्राम, इलायची पाउडर - 4.5, गरी - 50 ग्राम बारीक घिसी हुयी, घी - आवश्यकतानुसार तलने के लिए।

**विधि :** पहले गुड़ को पानी में भिगो दें। जब गुड़ पानी में पूर्ण रूप से घुल जाय, तब उसे अच्छी तरह से चलाकर छन्नी से छाल लें। अब आटा छान कर घोल में मिला लें। दो बड़ा चम्मच घी का मोयन डाल दें। अब उसे हाथ से अच्छी तरह फेंट लें। पेस्ट इतना ढीला रहे जिससे हाथ से पकौड़ी घी में डाली जा सकें। सादे पानी में फेंटे हुए आटे की बूँद डालिए, अच्छा फेंटा हुआ आटा पानी में तैरने लगेगा। अब तैयार आटे में गरी व इलायची पाउडर डाल दें। कड़ाही को आँच में चढ़ाकर घी डाल दें। जब घी गरम हो जाय तो फेंटे हुए आटे की पकौड़ी घी में चुवाये। अब उन्हें गहरे गुलाबी रंग होने तक तलें। गुलगले तैयार हैं।

गुलगुले बच्चे के जन्मदिवस पर बनाये जाने वाला पारम्परिक लोक व्यंजन है।

## लड्डुवा

**सामग्री :** बेसन - 1 किलो, घी - 1 किलो, गुड़ - 1 किलो, मीठा सोडा - 1 चम्मच।

**विधि :** बेसन को मोयन डालकर मीठा सोडा मिला कर अच्छी तरह हाथ से मल लें। फिर गुनगुने पानी में ढाली गूँथकर आधे घण्टे के लिए रख दे। कड़ाही में घी डालकर सेव छाँटने वाले छन्ने की सहायता से सेव छाँट दें। सेव धीमी आँच में भून लें। लड्डुवा के लिए थोड़े मोटे सेव छाँटना ठीक रहता है। गुड़ की चासनी बना कर उसमें सेव डाल कर लड्डू बना लें। गुड़ के लड्डुवा सोंधे व स्वादिष्ट होते हैं, किन्तु इच्छानुसार चीनी की चासनी में भी पागा जा सकता है।

लड्डुवा यज्ञोपवीत एवं विवाह के अवसर पर बनाया जाने वाला पारम्परिक व्यंजन है।

## माठ

**सामग्री :** मैदा - 1 किलोग्राम, घी - 1 किलोग्राम, चीनी - 1 किलोग्राम, मीठा सोडा - आधा चम्मच

**विधि :** मैदे में मोयन डाल कर उसको अच्छी तरह हथेली से मलिये। मोयन इतना रहे कि मैदे

के लड्डू बन जायें। मैदे में मीठा सोडा डालकर गुनगुने पानी से थोड़ा सख्त गूँथ लें। आधे घण्टे तक गुँथी हुई मैदा कपड़े से ढक कर रख दें। मैदे की थोड़ी बड़ी लोई बनाकर मोटी-मोटी रोटी की तरह गोल बेल लीजिए तथा उसे बीच-बीच में किसी चीज से गोद दीजिये जिससे कि सेंकते समय माठ फूले नहीं। अब अँगूठे के सहायता से उसमें किनारी गोंठ दीजिए।

कड़ाही में घी गरम करके धीमी आँच में माठ सेंक लीजिए। सिंकी हुई माठ ठण्डी होने के लिए फैला दीजिए। चीनी की चासनी बना कर माठ पाग लीजिए। चासनी सफेद दिखाई दे, इसके लिए चुटकी भर मैदा चासनी पकाते समय डाल दीजिए।

माठ उपनयन संस्कार एवं विवाह संस्कार में बनाया जाने वाला पकवान है।

## खरिका

**सामग्री :** मैदा - 200 ग्राम, चीनी - स्वादानुसार, दूध - 2 किलो, घी - आधा किलो, इलायची- 4 पिसी हुई।

**विधि :** मैदे में मोयन डाल कर हाथ से अच्छी तरह मलकर गूँथ लें। गुँथे हुए मैदे को बेलन की सहायता से पतला बेलकर छोटे-छोटे टुकड़ें काट लें। कड़ाही में घी गरम करके धीमी आँच में हल्का गुलाबी सेंक लें। आँच में दूध को गाढ़ा कर लें व खरिका को उस गाढ़े दूध में डाल दें। स्वादानुसार चीनी डाल दें व आँच में 2.3 खौल आने तक पकायें। उतार कर पिसी इलायची पाउडर डाल दें। खुशबू के लिये केशर का प्रयोग भी किया जा सकता है।

खरिका विवाहोत्सव में पकाया जाने वाला व्यंजन है।

## गुझिया

**सामग्री :** मैदा - 250 ग्राम, खोया - 250 ग्राम, चीनी - 250 ग्राम (पिसी), चिरौंजी - 50 ग्राम, गरी- 50 ग्राम घिसी हुई, किशमिश - 50 ग्राम, छोटी इलायची पाउडर - 6.7, घी/रिफाइंड - 1 लीटर।

**विधि :** मैदा को छलनी से छान लें। अब मैदा में मोयन डाल कर हाथों से अच्छी तरह मलें, जिससे कि फुटकियां न रहें। मोयन इतना हो कि मैदा के लड्डू बन जायें। मैदा गुनगुने पानी से गूँथ लें। आधे घण्टे के लिये गीले कपड़े से ढक कर रख दें। खोये को एक चम्मच घी डाल कर गुलाबी रंग का भून कर ठंडा कर लें। उसमें मेवा एवं पिसी हुई चीनी मिला दें। इलायची पाउडर डाल दें।

गुँथे हुए मैदे की छोटी-छोटी लोई बना कर छोटी-छोटी गोल पूड़ी बेल लें। पूरी में तैयार पीठी भर कर पूरी के सिरे को अच्छी तरह आपस में चिपका दें। गुझिया के किनारे अँगूठे की सहायता से गोंठ दें। गुझिया गोंठने के लिए बाजार में बने-बनाये गोंठन व गुझिया बनाने वाले साँचे भी मिलते हैं। कड़ाही में घी/रिफाइंड गरम करके गुझिया तल लें। हल्की गुलाबी हो जाने पर घी से निकाल लें।

गुझिया होली के अवसर पर विशेष रूप से तैयार किया जाने वाला व्यंजन है।

## पचधारी के लड्डू

**सामग्री :** गोंद - 200 ग्राम, खोया - 500 ग्राम, सूजी - 500 ग्राम, सभी मेवा - 250 ग्राम, चीनी- 2 किलो, घी - आधा किलो।

**विधि :** गोंद को घी में भून कर बड़े टुकड़ों को छोटा कर लें। एक चम्मच घी डालकर खोया भून लें। अब घी डाल कर सूजी को गुलाबी रंग का भून लें। सभी मेवा घी में हल्का-हल्का भून लें। अब चीनी की चासनी तैयार कर उसमें सारी सामग्री मिला कर अच्छी तरह हाथ से मलते हुए लड्डू बना लें।

पचधारी के लड्डू पौष्टिक तत्वों से भरपूर होते हैं। इन्हें सन्तानोत्पत्ति के पश्चात् जच्चा के लिए बनाया जाता है। ये लड्डू 10 से 15 दिनों तक खराब नहीं होते हैं।

## अलसी के लड्डू

**सामग्री :** अलसी - 1 किलो, खोया - आधा किलो, चीनी - आधा किलो।

**विधि :** अलसी को सूखा भून लें, फिर उसे महीन पीस लें। खोया घी भून लें। चीनी कड़ाही में डाल कर चासनी बना कर उसमें खोया व अलसी का चूर्ण डाल कर लड्डू बना लें।

अलसी के लड्डू सर्दियों के मौसम में खाने के लिये बनाये जाते हैं।

## सोठइला

**सामग्री :** सोंठ - 250 ग्राम, गुड़ - 250 ग्राम, मिक्स मेवा - 250 ग्राम, घी - आवश्यकतानुसार।

**विधि :** सोंठ को अच्छी तरह पीस कर भून लें। गुड़ का पाग बना कर उसमें मेवा भूनकर मिला दें तथा लड्डू बना लें। सोंठइला कच्चे गुड़, घी व सोठ में मेवा मिला कर भी बनाया जाता है।

सोंठइला शिशु को जन्म देने वाली माँ के लिये बेहद फायदेमन्द होता है।

## हरेरा

**सामग्री :** सोंठ - 250 ग्राम, हल्दी - 250 ग्राम, अजवाइन - 100 ग्राम, मूढ़ - 100 ग्राम, गोंद- 50 ग्राम, मिक्स मेवा - 250 ग्राम, गुड़ - 500 ग्राम, घी या तेल - आवश्यकतानुसार तलने के लिए।

**विधि :** सोंठ, अजवाइन, हल्दी, मूढ़ को साफ करके साफ पानी में अलग-अलग भिगो दें। अच्छी तरह भीग जाने पर सिल पर महीन पीस लें। कढ़ाई में घी या तेल गरम करके सभी चीजें लाल रंग में भून लें। गुड़ की चासनी बना कर उक्त सभी वस्तुएं चासनी में मिला दें व देर तक आँच में पकायें। कढ़ाई उतारते समय मेवा डाल दें। हरेरा इच्छानुसार गाढ़ा अथवा पतला बनाया जा सकता है। चासनी बनाने के लिए गुड़ के स्थान पर चीनी का प्रयोग भी किया जा सकता है।

हरेरा बच्चे को जन्म देने वाली माँ के लिए खास तौर पर तैयार किया जाता है। इसके खाने से माँ को प्रसव पीड़ा से राहत मिलती है। पेट में सूजन नहीं रहती व यह दुग्धवर्धक होता है। हरेरा गरम होता है, अतः इसको खाने से जच्चा को प्रसूति ज्वर होने की संभावना कम होती है।

## कसरावन

**सामग्री :** चावल - 1 किलो, चीनी - 500 ग्राम (पिसी), कालीमिर्च - 50 ग्राम, कटी मेवा - 250 ग्राम, छोटी इलायची - 10 ग्राम पिसी, देसी घी - 500 ग्राम।

**विधि :** चावलों को साफ करके भिगो कर सुखा लें। सूखने के बाद महीन पीस लें। अब उसमें कटी मेवा, कालीमिर्च, इलायची मिला दें। देसी घी डाल कर हथेली की सहायता से अच्छी तरह मल दें। कसरावन तैयार है।

कसरावन शादी के अवसर पर वधू पक्ष के द्वारा खाद्य पदार्थों के साथ वर पक्ष को भेजा जाता है।

## लपसी

**सामग्री :** दलिया - 1 प्याला, लौंग - 2.3, दालचीनी - 2.3 टुकड़े, घी - 2 बड़े चम्मच, छोटी इलायची - 5.6, चीनी - 1 प्याला, जायफल - 1 छोटा चम्मच (घिसा हुआ)।

**विधि :** पतीले में घी गरम करके उसमें लौंग, दालचीनी डाल कर दलिया भून लें। गरम पानी डालकर उसे उबालिये। दलिया पक जाने पर उसमें चीनी मिलाकर धीमी आँच में अच्छी तरह चलायें, जिससे दलिया के दाने अलग-अलग हो जाये। अब पतीले को तवे पर रख कर थोड़ी देर गरम करें।

लपसी तैयार होने पर दूसरे बरतन में डाल कर जायफल व इलायची से सजायें। दलिया के स्थान पर आटे का प्रयोग भी किया जा सकता है।

## सादी पूरी

**सामग्री :** गेहूँ का आटा - 500 ग्राम, घी/रिफाइण्ड - 250 ग्राम।

**विधि :** आटे को बड़ी थाली या परात में छान लें। घी गर्म करके दो बड़े चम्मच मिला दें। आटे को पानी की सहायता से थोड़ा सरल गूँथ लें। गुँथे हुए आटे को मसल कर लोच लाइए। आटा नरम हो जाने पर लोई बना लें। परथन के स्थान पर घी का प्रयोग करते हुए चकला-बेलन की सहायता से गोल पूरी बेल लें।

कड़ाही में घी गरम करके बेली हुई पूरी डालें। एक तरफ सिंक जाने पर करछी से पलट कर दूसरी तरहफ सेंकिए। बादामी रंग की सिंक जाने पर घी से बाहर निकाल लें। कड़ाही में घी इतना होना चाहिए कि पूरी ठीक से तैर सके। सादे आटे में इच्छानुसार नमक व अजवाइन मिलाकर नमकीन पूरी बनाई जा सकती है।

सामान्यतः पूरी सम्पूर्ण भारत में त्यौहारों व किसी विशेष मेहमान के आने पर बनाई जाती है।

## खस्ता कचौरी

**सामग्री :** मैदा - 2 प्याला, सूजी - आधा प्याला, घी - आधा प्याला, भीगी उरद की दाल - 1 प्याला, धनिया पाउडर - 3 छोटे चम्मच, सौंफ - 3 छोटे चम्मच, बेकिंग पाउडर - ¼ छोटा चम्मच, नमक/मिर्च- स्वादानुसार, वनस्पति/रिफाइंड तेल - तलने के लिए।

**विधि :** मैदा सूजी नमक मिलाकर उसमें घी या रिफाइंड का मोयन डाल दें। सभी सामग्री को हथेली से अच्छी तरह मलकर मिला लें। हल्का गुनगुना पानी लेकर मैदा गूँथ लें। गुँथी हुई मैदा को लगभग आधे घण्टे तक हल्के गीले कपड़े से ढक दें।

कचौड़ी की पीठी तैयार करने के लिये भीगी हुई उड़द की दाल छिलका हटा कर पीस लें। कड़ाही में थोड़ा घी/तेल डाल कर उसमें पिसी हुई दाल डाल दें। उसमें मिर्च धनिया पाउडर सौंफ डालकर अच्छी तरह भून लें। ठण्डा होने पर उसमें नमक व बेकिंग पाउडर मिला दें। गुँथी हुई मैदा को अच्छी तरह मसल कर छोटी-छोटी लोई बना लें व तैयार पीठी भर दें। हथेली से दबा कर हल्का फैला दें या चकला-बेलन की सहायता से बेल लें। कड़ाही में घी या रिफाइंड गरम कर धीमी आँच में सुनहरा होने तक दोनों तरफ तल लें।

विभिन्न पर्वों, उत्सवों व समारोहों में बनाया जाने वाला यह विशिष्ट व्यंजन है। इसके बिना त्योहार अधूरा सा लगता है।

## पनेउछा

**सामग्री :** मूँग की दाल : 250 ग्राम, नमक - स्वादानुसार, हींग - आधा छोटा चम्मच, वनस्पति/घी- तलने के लिए।

**विधि :** मूँग की दाल भिगो कर उसका छिलका उतार दें। दाल को गाढ़ा पीस कर हींग व नमक मिला कर पेस्ट को कपड़े में बाँधकर उबले पानी में डाल दें व धीमी आँच में पकने दें। पक जाने पर कपड़ा खोल कर दाल के टुकड़े बनाकर तल लें। सब्जी का घोल बनाकर तले हुए पीस उसमें डाल दें। चार पाँच पर खौल जाने पर उतार लें।

## भरवा फरा

**सामग्री :** गेहूँ का आटा : 250 ग्राम, उड़द की दाल - 1 कटोरी, चने की दाल - 4 कटोरी, अजवाइन- 1 चम्मच, हींग - आधा चम्मच, गरम मसाला - 1 चम्मच, नमक/लाल मिर्च - स्वादानुसार, हरी मिर्च-

2 महीन कटी हुई, हरी धनिया - थोड़ी कटी हुई।

**विधि :** उड़द व चने की दाल अलग-अलग भिगो दें। उड़द की दाल का छिलका उतार लें। अब दोनों दालों को मसाला मिला कर पीस लें। दाल गाढ़ी रखें, अब इसमें कटा हुआ मिर्चा व धनिया मिला लें। नमक मिला कर दाल न रखें अन्यथा दाल पतली हो जायेगी।

गेहूँ का आटा रोटी के अनुसार गूँथ लें। आटे की छोटी-छोटी लोई बनाकर गोल बेल लें। अब तैयार दाल के पेस्ट को रोटी में भरिये। नमक दाल में भरते समय मिलायें। रोटी के आधे हिस्से में दाल रखें व आधे हिस्से से दाल को ढक दें। रोटी के दोनों सिरों को आपस में अच्छी तरह चिपका दें। अब इन कच्चे फरों को उबलते हुए पानी में डाल कर धीमी आँच में पकने दें। टाइट हो जाने पर उतार कर पानी से अलग कर दें। फरों के टुकड़े करके कड़ाही में हींग व जीरा डाल कर थोड़ा गरम मसाला डाल कर कल्हार लीजिए।

फरा एक अच्छा व स्वादिस्ट नाश्ते के रूप में बनाया जाता है। यह करवा चौथ के दिन व नीरू नौमी के त्यौहार का विशेष व्यंजन है। करवा चौथ में स्त्रियां बड़ा व फरा से चन्द्रमा को अर्ध्य देती हैं।

## दही बड़ा

**सामग्री :** उड़द की दाल - 250 ग्राम, हींग - आधा छोटा चम्मच, नमक व मिर्च - स्वादानुसार, दही - 1 किलो, वनस्पति/रिफाइंड - तलने के लिए।

**विधि :** उड़द की दाल पानी में भिगो दें। अच्छी तरह भीग जाने पर छिलका उतार दें। दाल को पीस कर अच्छी तरह फेंट लें। दाल पतली न रहे। फेंट लेने के बाद दाल को पानी में थोड़ी चुवायें। अगर दाल पानी में तैरने लगे तो समझिये कि दाल तैयार हो गई है।

कड़ाही में तेल गरम करके बड़े तल लीजिए। बड़े बनाने के लिए थोड़ी सी दाल हथेली में रखें। दूसरे हाथ की सहायता से गोल फैला लें। बड़े के बीच में उंगली से छेद बना दें जिससे बड़े अच्छी तरह से पक जायें। तले हुए बड़े गुनगुने पानी में डाल दें। पानी को हींग व जीरा से छौंक दें।

बड़े का दही तैयार करने के लिए दही अच्छी तरह फेंट लें। दही में भुना जीरा मिला दें। स्वादानुसार नमक डाल दें। पानी से बड़े निकाल कर दही में भिगो दें।

दही बड़ा सभी सुअवसरों पर बनाया जाने वाला विशिष्ट व्यंजन है। ऊपर दी गई विधि पारम्परिक है। आधुनिक समय में दाल में मेवा व चीनी आदि भर कर दही बड़े बनाये जाते हैं। दही बड़े मीठी चटनी के साथ स्वादिष्ट लगते हैं।

## करेल

**सामग्री :** मूँग की दाल - 200 ग्राम, हींग - एक चुटकी, गरम मसाला - एक छोटा चम्मच, धनिया पाउडर- एक छोटा चम्मच, नमक/मिर्च - स्वादानुसार, वनस्पति/सरसों का तेल - तलने के लिए, जीरा- आधा छोटा चम्मच।

**विधि :** मूँग की दाल साफ करके पानी में भिगो दें। अच्छी तरह भीग जाने पर छिलका अलग कर दें। धुली हुई दाल पीस लें। अब दाल में मसाला मिला कर अच्छी तरह फेंट लें। कढ़ाही में वनस्पति या तेल गरम करके छोटी-छोटी पकौड़ी तल लें। थोड़ी पिसी दाल बचा दें।

कढ़ाही या भगोने में एक बड़ा चम्मच वनस्पति या तेल गरम करके हींग जीरा का छौंक लगाकर बची हुई पिसी दाल डाल कर भून लें। अन्य मसाले व पानी डाल कर तरी बना लें। स्वादानुसार नमक मिला दें। अच्छी तरह पक जाने पर पकौड़ी डाल दें। चार-पांच बार अच्छी तरह खौल जाने पर उतार लें।

करेल मूँग की नयी फसल तैयार होने पर बनाया जाता है।

## कढ़ी-पकौड़ा

**सामग्री :** बेसन - 250 ग्राम, खट्टा दही - आधा किलो, हल्दी - 1 छोटा चम्मच, लालमिर्च - स्वादानुसार, धनिया पाउडर - 1 छोटा चम्मच, नमक - स्वादानुसार, हींग - चुटकी भर, वनस्पति/सरसों का तेल - तलने के लिए, मेथी अथवा जीरा - 1 छोटा चम्मच।

**विधि :** बेसन को छान लें। आधे बेसन को पानी में डाल कर अच्छी तरह फेंट लें। इसे इतना गाढ़ा रखें कि उंगली से आसानी से टपक जाये। बेसन को पानी में बूँदें डाल कर देख लें कि घोल पानी में तैरने लगा है। कड़ाही में वनस्पति अथवा तेल गरम करके पकौड़ी उसमें चुआ कर तल लें।

दही को अच्छी तरह फेंट कर उसमें शेष सूखा बेसन भली प्रकार मिला दें, ताकि बेसन में फुटकियां न रह जायें। अब एक बड़े बरतन (भगोना/कड़ाही) में एक बड़ा चम्मच वनस्पति अथवा तेल गरम करें। हींग अथवा मेथी या जीरे का छौंक लगाकर हल्दी डाल दें। इसके बाद बेसन मिला हुआ दही व एक लीटर पानी व मसाल डाल दें। स्वादानुसार नमक डाल दें। कढ़ी को तेज आँच में पकाइए। जब तक कढ़ी खौलने न लगे, तब तक करछी से चलाते रहिए अन्यथा दही फट सकता है। अच्छी तरह पक जाने पर तली हुई पकौड़ी डाल दें। थोड़ी देर पका कर उतार लें।

कढ़ी सन्तान के जन्म के छठे दिन बनाई जाती है और छठी मनाई जाती है। गोवर्धन पूजा, करवा चौथ व अन्य शुभ अवसरों पर कढ़ी बनाई जाती है। विवाहोपरान्त बहू द्वारा ससुराल में सर्वप्रथम कढ़ी बनाने की परम्परा प्रचलित है।

## भौंरी (बाटी)

**सामग्री :** गेहूँ का आटा - 2 प्याला, देसी घी - 1 प्याला, मीठा सोडा - 1 चुटकी, नमक - 1 छोटा चम्मच।

**विधि :** आटे में नमक व सोडा डाल कर चार बड़े चम्मच घी का मोयन डाल दें। आटे को सख्त गूँथ कर ढक कर रख दें। 1 घण्टे बाद अच्छी तरह मल कर छोटी-छोटी लोई बना लें। लोई को बीच में अँगूठे से दबा कर गड्ढा बना लें। अब इसे सुलगती आँच पर रख कर अच्छी तरह उलट-पलट कर सेंक लें। आँच बनाने के लिए गोबर के उपले प्रयोग किये जाते हैं। भूरी होने पर आँच से निकाल लें। बचा घी उलट-पलट कर भौंरी में चुपड़ लें।

किसी प्राणी की मृत्यु होने की दशा में पारम्परिक विधि से क्रियाकर्म करने वाला व्यक्ति भौंरी को स्वयं पका कर खाता है।

## अलौरी

**सामग्री :** चने की दाल - 200 ग्राम, गरम मसाला - 1 छोटा चम्मच, धनिया पाउडर - 1 छोटा चम्मच, लाल मिर्च/नमक - स्वादानुसार, हरी मिर्च - 2.3 बारीक कटी हुई, हरी धनिया - 20 ग्राम कटी हुई, हींग-एक चुटकी, जीरा - 1 छोटा चम्मच, आटा - 250 ग्राम, घी या रिफाइंड - 200 ग्राम।

**विधि :** चने की दाल साफ करके पानी में भिगो दें। अच्छी तरह भीग जाने पर एक चम्मच घी अथवा वनस्पति डाल कर हींग जीरा का छौंक लगाकर दाल डाल दें। स्वादानुसार नमक डालें। फिर थोड़ा पानी डाल कर दाल पका लें। पक जाने पर पानी पूरा सुखा दें। दाल को पीस कर मसाले मिला दें। हरा मिर्च व धनिया डाल कर पीठी तैयार कर लें।

आटा गूँथ कर लोई बनाकर तैयार पीठी भर कर हल्के हाथों से बेलन की सहायता से बेल लें। तवे पर हल्का घी लगाकर दोनों तरफ से सेंकिए।

## अन्नकूट भुजिया

**सामग्री :** गाजर - 50 ग्राम, चुकन्दर - 50 ग्राम, आलू - 100 ग्राम, मूली - 50 ग्राम, पत्ता गोभी- 100 ग्राम, शलजम - 50 ग्राम, टमाटर - 100 ग्राम, बैगन - 50 ग्राम, हरी धनिया - 20 ग्राम कटी हुई, हरी मिर्च - 2.4 बारीक कटी हुई, नमक/लाल मिर्च - स्वादानुसार, जिमीकन्द - 50 ग्राम, कच्चा केला- 50 ग्राम, मेथी व सरसों के पत्ते - 100 ग्राम, अमचूर - आधा छोटा चम्मच, हल्दी - 1 छोटा चम्मच, धनिया पाउडर - 2 छोटे चम्मच, गरम मसाला - 2 छोटे चम्मच, हींग - 1 चुटकी, जीरा - 1 छोटा चम्मच, सरसों का तेल - एक बड़ी कटोरी।

**विधि :** सभी सब्जियों को साफ धोकर बारीक काट लें। कढ़ाही में सरसों का तेल गरम करके हींग, जीरा व हल्दी का तड़का देकर सब्जियां छौंक दें। अन्य सूखे मसाले बुरक कर नमक मिला दें। सब्जियों को बिना पानी डाले पकायें। सब्जियां पक जाने पर अमचूर पाउडर डाल दें। हरा धनिया, मिर्च डालकर धीमी आँच में भून लें। कसा हुआ नारियल डाल दें व करारा होने तक भूनते रहें। सब्जी में पानी बिल्कुल न रहने पाये।

अन्नकूट भुजिया दीपावली के दूसरे दिन गोवर्धनपूजा के दिन विशेष रूप से बनाई जाती है।

## बेसन के गट्टे

**सामग्री :** बेसन - 250 ग्राम, घी/तेल - 100 ग्राम, साबुत जीरा - 1 छोटा चम्मच, सौंफ - 1 छोटा चम्मच, नमक व मिर्च - स्वादानुसार।

**विधि :** बेसन में नमक, लाल मिर्च, जीरा, सौंफ और घी का मोयन डालकर पानी की सहायता से कड़ा गूँथ लें। तैयार मिश्रण की गोल व लम्बी बत्तियाँ बना लें। अब इन्हें 10. 15 मिनट तक पानी में उबालें। अच्छी तरह उबल जाने के बाद छलनी से छान कर पानी अलग कर लें। बत्तियों के छोटे-छोटे टुकड़े बना लें। बचे हुए पानी का प्रयोग आटा गूँथने अथवा सब्जी की तरी बनाने के लिए करें।

तैयार बेसन के गट्टे सूखे कल्हार कर नाश्ते के रूप में अथवा झोल की सब्जी में प्रयोग करें। कढ़ी में पकौड़े के रूप में डालिए, कढ़ी स्वादिष्ट बनती है।

## मुगौड़ी

**सामग्री :** मूँग की दाल - 2 किलो, हींग - 1 छोटा चम्मच।

**विधि :** मूँग की दाल साफ करके रात में पानी में भिगो दें। अच्छी तरह भीग जाने पर सुबह छिलका उतार लें। हींग व दाल पीस लें। दाल को अच्छी तरह फेंट लें। हथेली की सहायता से मुगौड़ी चुवाइए व धूप में अच्छी तरह सुखा लें। मुगौड़ी का आकार जितना छोटा होता है, वे उतनी ही अच्छी मानी जाती हैं। सूखने के बाद संरक्षित कर लें। सूखी मुगौड़ियों को भून कर सब्जी के झोल में डाल कर सब्जी बनायें।

मुगौड़ी वधू पक्ष के द्वारा वर पक्ष को अन्य खाद्य पदार्थों के साथ भेजी जाती है।

## बड़ी

**सामग्री :** उड़द की दाल - 1 किलोग्राम, खड़ी धनिया - 100 ग्राम, सूखी मेंथी - 50 ग्राम, हींग- 20 ग्राम, मसाले वाली सौंफ - 20 ग्राम, कलौंजी - 20 ग्राम, कुम्हड़ा या फूलगोभी - 2 किलोग्राम (महीन कटा हुआ या घिसा हुआ), मिर्च - स्वादानुसार।

**विधि :** उड़द की दाल भिगो दें। अच्छी तरह भीग जाने पर छिलका उतार कर पीस लें। कुम्हड़ा या फूलगोभी घिस कर मिला दें तथा सभी मसाले मोटा दरबरा कर मिला दें। हींग पीस कर मिला दें। दाल को रात भर ढक कर रख दें। अगले दिन धूप में चादर बिछा कर हाथ की सहायता से बड़िया चुवा

दें। बड़ियों का आकार इच्छानुसार बड़ा या छोटा किया जा सकता है। बड़ियों को तेज धूप में सूखने दें। सूख जाने पर बड़ियों को संरक्षित कर लें। सूखी बड़ियों को भून कर सब्जी का झोल बना कर सब्जी बनाइए।

कच्ची बड़ियां विवाह के अवसर पर वधू पक्ष के द्वारा विशेष रूप से वर पक्ष को अन्य खाद्य पदार्थों के साथ भेजी जाती हैं।

## बुकनू

**सामग्री :** सोंठ - 250 ग्राम, हल्दी - 250 ग्राम, अजवाइन - 100 ग्राम, छोटी हर्र - 50 ग्राम, बहेड़ा- 100 ग्राम, बड़ी हर्र - 50 ग्राम, वायु विडंग - 50 ग्राम, तलाव हींग (खड़ी हींग) - 50 ग्राम, मूढ़ - 50 ग्राम, काला नमक - 250 ग्राम, सफेद नमक - 250 ग्राम, सरसों का तेल - आवश्यकतानुसार तलने के लिए, टाटरी - 20 ग्राम (इच्छानुसार)।

**विधि :** कढ़ाई में तेल गरम करके सोंठ, हल्दी, अजवाइन, बहेड़ा, बड़ी हर्र, छोटी हर्र, वायु विडंग, हींग, मूढ़, आदि सामग्री अलग-अलग भून लें। सारी सामग्री व काला नमक मिला कर पीस लें। बाद में सफेद नमक मिला कर पुनः पीस लें, जिससे बुकनू महीन हो जाय व सारी सामग्री भली भांति परस्पर मिल जाय। बुकनू तैयार हो गयी।

बुकनू एक प्रकार का हाजमा चूर्ण है। इसे विभिन्न अवसरों पर भोजन परोसते समय चुटकी भर परोसा जाता है। बुकनू स्वादिष्ट होने के साथ ही भोजन हजम करने में सहायक होता है।

## मिजनी

**सामग्री :** बेसन - 500 ग्राम, नमक - आवश्यकतानुसार, लालमिर्च - 1 छोटा चम्मच, हींग - आधा चम्मच, तेल अथवा रिफाइंड - आवश्यकतानुसार तलने के लिए।

**विधि :** बेसन छान कर उसमें नमक मिर्च व हींग ठीक प्रकार से मिला लें। अब बेसन में पानी के छींटे दें व हाथ की सहायता से हल्के बेसन को हिलायें, जिससे बेसन में फुटकियां पड़ जायेंगी। उन्हें छाँट कर अलग कर लें। पुनः पानी के छींटे डालें और फुटकियाँ पड़ने पर छाँट लें। जब बहुत थोड़ा बेसन शेष रहे तब उस बेसन का घोल बना कर सब्जी का झोल बना लीजिए और जो फुटकियाँ या मिजनी बनाई थी, उन्हें तेल अथवा रिफाइंड को कढ़ाही में गरम करके तल लें व सब्जी के झोल में डाल दें।

मिजनी एक अत्यन्त स्वादिष्ट सब्जी है।

## रसाजे

**सामग्री :** बेसन - 250 ग्राम, हींग - आधा छोटा चम्मच, मिर्च - स्वादानुसार, गरम मसाला - 1 छोटा चम्मच, पिसा धनिया - 1 छोटा चम्मच, सरसों का तेल/रिफाइंड - आवश्यकतानुसार तलने के लिए।

**विधि :** सर्वप्रथम बेसन में मसाले मिलाकर पानी की सहायता से घोल तैयार कर लें। कढ़ाई में गाढ़ा होने तक पकने दें। पक जाने पर थाली में फैला कर टुकड़े काट लें। कढ़ाई में तेल अथवा रिफाइंड गरम करके टुकड़ों को तल लें। सब्जी का झोल बना कर तले हुए टुकड़े उसमें डाल दें। सब्जी को भलीभाँति खौला कर उतार लें।

रसाजे बैसाख माह की अक्षय तृतीया के पर्व पर बनाया जाने वाला पारम्परिक व्यंजन है।

# लोक कथाओं में सीता-परित्याग

डॉ. महावीर सिंह

संस्कृत और हिन्दी भाषा के अतिरिक्त अन्य अनेक लोकभाषाओं में लोक कवियों ने रामकथा का अपने-अपने परिवेश, स्थानीय परम्पराओं और मान्यताओं के अनुसार अपनी बेजोड़ कल्पनाओं को जोड़कर सृजन किया है। अनेक लोकभाषाओं के लोक काव्यों में रचित अनेक प्रसंग अलिखित (मौखिक) ही प्रचलित हैं।

रामकथा का सबसे मार्मिक प्रसंग है- 'सीता-परित्याग' जो आदि कविकृत रामायण में तो अवश्य उल्लिखित है। लेकिन तुलसीकृत 'रामचरितमानस' में वर्णित नहीं है।

उपलब्ध कथा के अनुसार, भगवान राम का एक प्रजाजन धोबी जिसकी पत्नी बिना उसकी अनुमति कहीं चली जाती है और कई दिन बाद वापस आती है। उसके वापस आने पर उसका पति (धोबी) उसे प्रताड़ित करता हुआ यह कह कर घर से निकाल देता है कि मैं राम नहीं हूँ जिन्होंने रावण के यहाँ इतने दिन रहने के बाद भी सीता जी को अपने पास रख लिया। मैं तुझे इतने दिन बाहर रहने के बाद, वापसी पर स्वीकार नहीं करूँगा। यह प्रसंग रामजी की जानकारी में आते ही उन्होंने सीता जी को वन में छोड़ आने का लक्ष्मण जी को आदेश दिया। राजा राम के आदेशानुसार लक्ष्मण सीता जी को वन में छोड़ आते हैं।

सीता परित्याग का कारण भिन्न लोककथाओं, गीतों एवं काव्यों में अलग-अलग उल्लिखित है। अधिकृत वर्णन में दशरथ जी के केवल चार पुत्रों—राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न का ही उल्लेख मिलता है, लेकिन लोककाव्यों में उनकी एक पुत्री का भी वर्णन मिलता है जो सीता-परित्याग का मुख्य कारण बनती है।

अवधी भाषा के एक प्रचलित लोकगीत के अनुसार सीता जी अपनी ननंद के साथ महल में बैठी मनोविनोद कर रही हैं, साथ ही वार्तालाप भी चल रहा है। किसी प्रसंग में ननंद कहती है- 'भाभी, जो रावण आपको हर ले गया था, आप ने तो उसे देखा ही है। वह कैसा था, एक चित्र बनाइये, आपके साथ मैं भी उसे देखूंगी।' गीत के बोल हैं -

*ननंद-भौजी इक मत करें वही गजोवर।*
*भौजी तनिक रावना उरोहो दोउ जमी दे खिवे।*

संकोच से भरी सीता जी कहती हैं- 'कैसे हम दोनों उसे देखेंगी वह तो तुम्हारे भइया का दुश्मन था, हम उसका चित्र कैसे बनायें।'

*कइसे रावना उरेहों, दोउ जनी देखिबे कइसे*
*जउन रावना भइया बैरी मैं कइसे उरोहों।*

सम्भवतः ननंद के बहुत जोर देने पर सीता जी रावण का चित्र बनाती हैं। पूरा चित्र बन जाता

है, मात्र बायाँ अंगूठा शेष रह जाता है तभी रामजी और लक्ष्मण जी के आने की आहट आती है। सीताजी चित्र को छिपाना चाहती हैं-

*सब धड़ रावना उरेहि दिखावैं*
*बाया अंगूठा जब रहिगा - रामजी आ गये।*

सीता जी पूछती हैं-

*ननंदी का लइ मूंदो राम आगे?*
*का लइ मूंदो लछिमण आगे?*

ननंदी जवाब देती है-

*भौजी नोइया लै मूंदों राम आगे*
*अंचरा से मूंदों लछिमन आगे।*

ननंद-भाभी का बैर जग विख्यात है। जो ननंद, सीता जी पर दबाव डाल कर रावण का चित्र बनावती है और उसे छिपाने के उपाय भी सुझाती है, वही ननंद पूरे प्रसंग को नमक-मिर्च लगाकर राम के सम्मुख प्रस्तुत कर देती है -

*राम-लछिमन दूनो भइया, बइठे जेवनरिया,*
*बहिनि दुख रोवै।*
*भइया जउन रावन तुम्हरा बैरी, बइठि भौजी उराहैं।*

फिर क्या था, सुनते ही राम जी आगबबूला हो जाते हैं और तुरंत लछिमन जी को आदेश देते हैं कि हे लछिमन तुम मेरे भाई हो, जाओ सीता को वन में छोड़ आओ, तभी अन्न जल ग्रहण करूंगा।

लक्ष्मण जी सीता जी के पक्ष में तर्क देते हैं कि जिस भाभी ने भूखे को खाना और प्यासे को जल पिलाया है, वह गर्भावस्था में चल रही हैं, उसे वन में कैसे छोड़ आऊँ -

*अरे-अरे लछिमन भइया, तुम्ही मोरे भइया,*
*सीता का घर से निकारौ, तबै अन्न जल होई।*
*जिन भौजी भूखे की भूख जानी,*
*प्यासे को पानी दे।*
*वी भउजी हैं गरुवे गरभ से, मैं कइसे निकारौं।*

लेकिन राम के आदेश के सामने लक्ष्मण को झुकना पड़ता है। वे बहाने से सीता जी को ले जाते हैं-

*द्वारे ते आंये लछिमन, अंगनवां मा ठाढ़े*
*भउजी तुम्हरे नयिहर कछु काज, चलो हम जइबै।*
*अंगना भीतर करैं सीता, कछू नहिं पावैं,*
*मुट्ठी इक लिहिन सरसों, बटिया बोवत चलैं,*
*वही बाटि के सरसों वही बाटि जामेव,*
*अइहैं लछिमन देवरा, तो कड़री भोजन करैं।*

सीताजी को कुछ आभास हो जाता है, फिर भी वे एक मुट्ठी सरसों लेकर रास्ते में बोती हुई लक्ष्मण

जी के साथ चल देती हैं, और कहती जाती हैं कि हे राह के सरसों राह में भी उगना, मेरे देवर लछिमन जी अब (अकेले) लौटेंगे, तो तुम्हारा भोजन करेंगे। सीताजी के मन की निश्छलता और ममता इन पंक्तियों से फूट पड़ती है।

लछिमन जी एक बन जाते हैं दूसरे बन से गुजरते हैं, आगे बहुत घना भयानक जंगल आ जाता है। सीताजी प्यासी होती हैं, लक्ष्मण जी से जल की मांग करती हैं-

*यक वन गइले, दूसर वन, तिसर वन विरझावन,*
*देवरा, बूंद इक पनिया पियाओ प्यास मोहि लागी।*
*न हियां ताल न सागर, न नेरे गांव बसै*
*भौजी कहाँ ते पनिया लै आऊं, तो तुमको पियाऊं।*

और सीता जी को एक पेड़ के नीचे बैठा कर पानी लेने जाते हैं -

*छोटा-मोटा बिरवा कदम का*
*भौजी बइठो कदम जूड़ी छहियां।*
*मैं पानी भरि लैं आऊं।*

सीता जी की गम्भीर गर्भावस्था, सफर की थकान, सुखद शीतल बयार पाकर अंचरा बिछाकर लेट जाती है और सो जाती हैं -

*दुख की बहे बयरिया, दुख की निंदिया*
*अंचरा बिछाये सीता सो गई, वही बिरिछ तरे।*

लक्ष्मण जी आते हैं, सीता जी को सोया हुआ पाकर पानी का दोना, उसी पेड़ से लटका कर, वापस अयोध्या लौट जाते हैं -

*निहुरे-निहुरे आये लछिमन, वही बिरिछ तरे,*
*दोनवा बाँधि कदम डरिया, निहुरे लछिमन भागे।*
*इक बूंद गिरा छाती पर, दूसर होंठ पर, तीसर मुख मां,*
*झिझकि सीता उठि बइठीं।*

सीता जी चौंक कर उठ बैठती हैं और लक्ष्मण जी को न पाकर उनकी शंका की पुष्टि हो जाती है। वह बिलख कर रो पड़ती हैं -

*अरे-अरे देवरा हमें न बतायो*
*पकरि करिहइयां रोय तो लेती।*
*पीछे न लगतेन।*

हे देवर तुम मुझे तो बता देते कि तुम मेरा परित्याग कर जा रहे हो। मैं तुम्हें भेंट कर रो तो लेती। मैं वापस चलने के लिए तुम्हारा पीछा न करती।

गीत की ये कड़ियां, भारतीय नारी की विवशता और निश्छलता को प्रदर्शित करती हैं, जो उसकी नियति बन कर यशोधरा के मुख से बुद्ध के पलायन पर फूट पड़ती हैं - 'सखि वे मुझसे कहकर जाते।'

उस सघन वन में सीता जी अकेली बिलख बिलख कर रो रही हैं तभी एक तपस्वी (संभवतः बाल्मीकि जी) प्रकट होता है और सीता जी से उनके रोने का कारण पूछता है -

*बिलखि बिलखि सीता रोवैं बिरिछा वन*
*वन से निकसे तपसी सो सुख-दुख पूंछैं -*
*सीता तुम्हें कउन दुखु परिगा जो तुम रोइनि?*
*काह कहौं वन तपसी, कहत दुख लागै,*
*को मोरे खर तिनु काटी की छनिया छवावै,*
*को मोरे जागै राति, कि रतिया विपति की,*
*को मोरे धिंगरिनि बोलावै को नार छिनावै,*
*को देय सोने का टिकउना, लौटि घर जइहैं।*

सीताजी अपना दुख बयान करती हैं कि गर्भ से हूं। मेरे लिये कौन व्यवस्था करेगा, तिन काट कर लायेगा, छानी छवायेगा, धंगरिन बुलायेगा और नार काटने के बदले सोने का सिक्का कौन देगा।

वन तपसी आश्वासन (ढाढस) देते हैं -

*हम ही तिनु काटब, हम ही छनिया छवाउब,*
*हम ही धंगरिन बोलाउब, हम ही देबै सोने का टिकउना*
*तो धंगरिन लौटि घर जंइहैं।*

सीता जी पूर्ण आश्वासित होकर वन तपसी (बाल्मीकि जी) के आश्रम पर आ जाती हैं। विपति की रात्रि सकुशल बीत जाती है और लव-कुश जन्म लेते हैं। शुभ सुखद सुबह होती है -

*भोर भये भिनसारे तो ललने जनम लीन्हे,*
*हंकरि कि नउवा बोलायो, तो हरदी नटायो।*
*रचि-रचि बांटो तो हरदी, तो रोचना लइ जाओ,*
*रोचना लगायो भरत-सत्रुघ्न माता कौसल्या रानी,*
*रोचना लगायो देवरा लछिमन, राम न जनायो।*

नाई बुलाया जाता है और अयोध्यापुरी रोचना ले जाने का आदेश दिया जाता है। सीता जी स्वयं कहती हैं कि भरत, शत्रुघ्न, माता कौशल्या और देवर लक्ष्मण को रोचना लगाना। लेकिन राम को इसकी जानकारी भी न देना। नाई रोचना देकर और नेग लेकर वापस होता है।

*भरत दीन्हें घोड़वा, कौसल्या रानी आभरण*
*लछिमन सिर की पगड़िया, हरषि नउवा लउटे।*

बात आई-गयी हो जाती है, समय अपनी गति से गतिमान रहता है, समय के साथ लव-कुश बड़े होते जाते हैं। राम लक्ष्मण जी के साथ शिकार खेलते हुए उसी वन में पहुंच जाते हैं। बालक लव-कुश गेंद खेल रहे हैं। सुन्दर बाल-युगल को देख कर मन वात्सल्य से सराबोर हो जाता है। खून का लगाव अंतर्मन को प्रेरित करता है। बालकों से उनका परिचय पूछते हैं -

*राम-लछिमन दूनो भइया, वन का सिकार गये,*
*लव-कुस खेलैं दूनो भइया हाथ गेंद लिहे।*
*केहि के तुम आहिव नाती, केहि के भतिजवा,*
*कउनी मइया के लाल, तौ हम ते बताव।*

उत्तर मिलता है

*दसरथ के हम नाती, लछिमन हमरे पीती,*
*मइया सीता के लाल, पिता नहिं जानो।*

इतना सुनते ही राम घोड़े से उतर पड़ते हैं और कहते हैं- 'हम तुम्हारे पिता हैं बालकों, तुम्हारी मां कहा है, हम वहीं चलेंगे।'

*इतना वचन सुनि राम घोड़ से उतरि पड़े,*
*लड़के कहां बसै मइया तुम्हारि, हुवैं हम चलिबै।*
*आगे-आगे लव-कुश दूनो भइया*
*पीछे-पीछे राम औ लछिमन।*
*मइया मुख पर अंचरा डारो, पिताजी मोरे आवैं।*

सीताजी लव-कुश की आवाज सुनकर बड़े धर्म-संकट में पड़ जाती हैं। जिस परिस्थिति (गर्भावस्था) और जिस आरोप के साथ उनका परित्याग हुआ था, वह घाव अभी तक भरा नहीं था, बल्कि आज फिर हरा हो गया था। यद्यपि वह दुख की घड़ी (विपरीत की रात्रि) सकुशल बीत चुकी थीं, लेकिन वे इतना दुखी थीं कि राम के सामने नहीं आना चाहती थीं। बचत का कोई और उपाय नहीं दिखायी दिया तो अंततः सीताजी सच्चे-दुखी मन से अपनी जन्मदात्री मां धरती से प्रार्थना करती हैं -

*फाटति धरती, चिहुरि जातै, ठाढ़ै समातूं,*
*कटि गै विपति की राति मैं मुख कइसे देखूं।*

धरती मां उनकी प्रार्थना पर करुणासिक्त हो गयीं -

*फटिगै धरती, चिहुरि गे सीता समाय लागीं।*
*राम लंबरि के पकड़े लम्बे केश तो केश उखरि आये।*
*जो सीता सत की होवो, सतै मा रह्यो,*
*केशन के कुश होवैं मैं पइती बनइबै,*
*पैंती से पितर पानी पावैं,*
*पैंती ते हो कन्यादान,*
*पैंती ते हों सब शुभ काम।*

धरती फट जाती है और सीता जी उसी में खड़ी-खड़ी समाने लगती हैं, राम दौड़ कर सीता जी को पकड़ने का प्रयास करते हैं लेकिन उनके हाथों में केवल सीता जी के लम्बे बाल (केश) ही उखड़ कर आते हैं। भाव विह्वल भगवान राम विलाप करते हुए कहते हैं- 'सीता अगर तुममें सत था तो यह केश कुश (एक प्रकार की घास) के रूप में परिवर्तित हो जायें, मैं इनकी पैंती बनाऊंगा और हाथ में धारण करूंगा। आगे भविष्य में भी इन्हीं कुशों की पैंती बनाई जायेगी जिसे हाथ में धारण कर, पितरों के पिण्डदान जैसे शुभ कार्य किये जायेंगे। धार्मिक कर्मकाण्डों में आज भी इस परम्परा का पालन किया जा रहा है।

सीता परित्याग की इस प्रकार की कथा बुन्देलखण्ड लोककाव्य में भी मिलती है। उसमें भी ननद भाभी का वार्तालाप, रावण का चित्र उकेरना, और ननंद द्वारा उसकी जानकारी राम को देना - सीता परित्याग और लव-कुश का जन्म आदि वर्णित है।

लेकिन थाई रामायण की कथा कुछ अन्य ही है। उसके अनुसार रावण के वध का बदला लेने के लिए पाताल लोक की रावण की एक रिश्तेदार, राक्षसी भेष बदल कर सीता जी की सेवा में आती है। वही दासी आग्रह करके, सीताजी से रावण का चित्र बनवाती है, तभी रामजी आ जाते हैं। सीताजी चित्र मिटाने का प्रयास करती हैं, लेकिन चित्र मिटता नहीं है, क्योंकि वह राक्षसी स्वयं ही अपनी माया बल से चित्र में प्रवेश कर जाती है। सीता जी चित्र को सिंहासन के नीचे छिपा देती हैं। राम आकर उसी सिंहासन पर बैठ जाते हैं। राक्षसी की माया से सिंहासन गर्म होने लगता है। राम उठ कर खड़े हो जाते हैं और सिंहासन के नीचे देखते हैं, तो उन्हें रावण का चित्र प्राप्त हो जाता है। पूछने पर सीता जी विनम्रता पूर्वक चित्र का बनाना स्वीकार कर लेती हैं। राम परम आक्रोशित होकर कहते हैं- 'सीता तुम्हारे मन में अब भी रावण बसा हुआ है' और तत्काल लक्ष्मण को आदेश देते हैं कि सीता जी को वन में ले जाकर तलवार से काट डालो।

राम के आदेश से लक्ष्मण जी सीता जी को जंगल में ले जाते हैं और उन पर तलवार से वार करते हैं। हाथ कांप जाता है, तलवार छिटक कर दूर गिरती है। दुबारा फिर तलवार चलाते हैं। इस बार तलवार फूल-माला बनकर सीता जी के गले में पड़ जाती है। लक्ष्मण जी बेहोश हो जाते हैं। सीता जी प्रयास करके लक्ष्मण जी को होश में लाती हैं। लक्ष्मण जी सीता जी को वहीं (वन में) छोड़कर अयोध्या वापस आ जाते हैं।

लगभग सभी काव्यों और लोक कथाओं में वर्णित सीता-परित्याग प्रकरण में कुछ समानता और कुछ भिन्नतायें मिलती हैं। जहां तक समानता का प्रश्न है, सभी में परित्याग स्वीकार है, लक्ष्मण जी जंगल में छोड़ने गये हैं, ऋषि आश्रम (वन) में ही लव-कुश का जन्म होता है। राम और सीता का पुनर्मिलन नहीं होता। वह वहीं धरा को (जहां से वे पैदा हुई थीं) सुपुर्द हो जाती हैं।

इसी प्रकार भिन्नतायें भी भिन्न-भिन्न हैं। परित्याग का कारण, परित्याग का तरीका, राम-लवकुश मिलन आदि में भिन्नता मिलती है। कहीं जंगल में ले जाकर सोता हुआ छोड़ दिया जाना दिखा गया है, तो कहीं जंगल में ले जाकर तलवार के घाट उतारने का असफल प्रयास दिखाया गया है। इसी प्रकार राम-लवकुश मिलन में भी भिन्नता मिलती है। परित्याग का कारण भी कहीं धोबी द्वारा कटाक्ष तो कहीं चित्र उकेरने में ननंद और कहीं सेविका का किरदार दिखाया गया है।

यह सर्वमान्य और सर्वविदित तथ्य है कि साहित्य कभी इतिहास नहीं हो सकता। प्रायः इतिहास सत्य पर आधारित होता है। जबकि साहित्य में इतिहास (ऐतिहासिक घटनाओं) को भी सत्यम्-शिवम् और सुन्दरम् की कसौटी पर खरा उतारने के लिए ऐतिहासिक सत्य को भी कल्याणकारी (शिव) और सुन्दर बनाने के लिए कल्पना के रंग भरने पड़ते हैं। इसके साथ ही उसमें विश्वसनीयता लाने के लिए तत्कालीन परम्पराओं और मान्यताओं का भी पालन करना पड़ता है और उनका समाविशन भी। इस भिन्नता के ऐसे ही कुछ कारण हो सकते हैं।

# आधुनिक अवधी की बानगी

# अवधी में सत्यधर शुक्ल की आत्मकथा

**सत्यधर शुक्ल**

अवधी बानी माँ लिखी कुछू कबितन क्यार पहिल संकलनु 'अरघान' साहित्यकारन के हाँथन माँ सौंपिके हम मगन तौ हैये हन, साथे कुछू हलुकौपन का अनुभौ करित हइ कि यतनी कबितन के बचावै के बोझ ते बरी ह्वैग्यन। नाहीं तौ न जानें कब सरसुती मइया की नजरि बदलि जाइ औरू गनेस महराज के मुसवा उन्हें कुतरि डारैं या सरदियाइ जाइँ तौ दिउँक खाइ जाइ या कोई उचक्का मूड़े तर ते कबितन के रजिस्टरन क्यार झोरै खैंचि लै जाइ। अवधी साहित्य के संदेह-मनीषी दादा मधुप जी (डॉ. श्यामसुन्दर मिश्र 'मधुप') अवधी कबितन के छपावै का बहुतु पहिले ते आग्रह करति रहैं - खड़ी बोली की रचनन ते उनका यत्ता मोहु कब्बौं नाहीं रहा। मुला उनके आग्रहु का दुलारु मानिके हम पहिले खड़ीबोली की कितबिया छपाई दिह्यान। हमैं अस लाग कि दादा हमते रूठि गये हैं। उनकी गुस्सा हमारी दीठि ते बचि न सकी औरू उनकी बेरुखी का हुकुम समुझि के यहु संकलनु छपावै क परा। वहि जब यहु संग्रहु देखिनि तौ गदगदु ह्वैगै, औरु वहे खुसी की झोंक माँ वहि कबितन क्यार चुनाउ किहिनि नावौं तै किहिनि, झट्ट ते याक छोटि भूमिकौ लिखि डारिनि।

भारत देस की धरती पर जब जलमु मिला, तौ दूधु पियै क मिला सती महतारी गजरानी देबी का, जिनका कितबिया समरपित है। पिता मिले - अवधी का, देस-भगति का झण्डा कसमीर ते कन्याकुमारी औरू कलकत्ता ते करांची लौं समूचे देस माँ फहरावै वाले राष्ट्रकवि, अवधी समराट, जनकबि पंडित बंशीधर शुकुल। का यहौ बतावै क परी कि वहि स्वतंत्रता संगराम केरि बेधड़क सिपाहिउ रहैं औरु उत्तर परदेस विधान सभा के बिधायकौ रहि चुके रहैं? कनिया ख्यलाइनि (पितियानी पिता जी कै सगे अग्रज पं. प्रभुदयाल शुक्ल की पत्नी) महादेवी और दुलराइनि बड़ी बहिनि मुनिया (मुन्नी देवी) का। पुजारी बप्पा (पं. चतुर्भुज शुक्ल) फदलिया, पुजारिनि चाची औरू भंगड़ी बप्पा (पं. भारत प्रसाद शुक्ल) कड़कवा कहिके लाड-पियारू किहिंनि। ठौरू मिला जिला खीरी क्यार गाँउ मान्योरा।

मान्योरा- हाँ मन्यौरै जो पिता जी के नाउं के आगे उपनाम तक जुरा है-

*'जीतिगये बंसीधर सुकुल मन्यौरा के।'* - बलवीर सिंह रंग।

गांउ के पुरुबै घरू; म्वहरे पर फरिका, निबियन के बिच्चा बीच तुलिया। गुलरी की, कबहूँ नीबे की डार माँ परै झुलुवा-जो कहूँ झूँकु लिहे ते टूटै तलियै माँ गिरै झड़म्म। महतिया की बगिवा थनिहैंन का झुरमुट; परोसै बहिरा बगिया; बड़कऊ महराज का सिसवरा-तिन पुरुवै ख्यात। भिनसारे की खिलनि, सांझ की मुरझानि, बसन्ती बहार की लहरानि, बरिखा की घहरानि। क्वैली की कुहूकनि, पपिहा की प्यँहकनि, मोरन की च्यँहकनि। तलबुड़की बच्चन का लै लै दौरैं, न्यौरा औ सांप की लड़ाई रोजुइ होइ-सब कुछु दुवारे पर आँखिन के समहें गुजरति रहा। बँदरवन के दुइ गिरोह-कुवरहा, ललमुँहा औरू गलचिर्रा गजभिल्ला हाँथन ते रोटी छीनि लै जाइँ- आगे ते थरिया घसीटि लेइँ। गाँव ते उत्तरै, सड़क पार नौवा

बाग-बीरबाबा के परोस पांडे बाग-सधारी बाग, त्यवारी बाग, व्यरिहा तलिया के किनारे की व्यरिहा बाग, कंठीबाग, जगन बाग, पसिया बाग सबमां राति-राति टायर बारि-बारि खूब टपका बीन्यन। उसरहिया तलिया मां असनान, रेलवे लैन के किनारे गोरून की चरवाई औरू हुँवै कटैया के तनिक सरे बिरवा के तरे, पतौरन के बिच्चा आंड़ मां बैठे कबित्तई लिखति पूज्जि पिता जी। बाल-सखा रहे ओमपरकास, साहबदयाल, लल्ला (शिवज्ञानचन्द्र)। गुरू रहे- जगदम्बा परसाद, सैदापुर मां मुंसी खूबचन्द्र औरु अकबर अली।

ननिहारू मिला-हरदोई जिला बने सहाबाद तहसील का सहुवापुर गाँउ। वहिके उतरै औरु पुरुबै लहरै खजुरा तालु - रामगंगा की छँड़ान। खिलै असंख्यन पुरयन; कमलच्छन की अरधान ते घसमंडि उठै गाँउ। बड़े निराला औ पियार है कमलगट्टन औरु भैसीड़न क्यार संसार। गाँउ के दखिनै पछुवै लम्बी चौड़ी भयंकर भूड़-बारू के ढूह बनै बिगरें, धनी पतौरा का जगलु ठाढ़-तितुर - बटेरन क्यार निवासु। सगे मामा दुइ-गयापरसाद, गंगापरसाद औरु दुइ माईं। दिन मां चारि दायँ पाउँ छुवैं-हमारो भनेजु - कहि-कहि। संघ खेलैं दादा बरह्मानन्द, बिसुननरायन। बहिनी ओमवती व सोनकली घरी-घरी पर सरबत का पूछति रहैं। वैसे याक थरिया के खवैया गाँउ भरि घरौवा - अंटेरि के दिछित। गाँउ भरे माँ माई-मामा, नाना-नानी, दुई तीनि मौसी, भाईद्व भौजाई औरु बहिनी। सबके रह्यन लड़ैते। जब पिता जी झण्डा उठाइ के जेलि जाइँ, तब महतारी हमैं औ बहिनि मुनिया का लैके हुँवै चली जाइँ-कुरुकी-डिगरी ते जान बचावै बदिकै।

सैदापुर ते चहर्रुम पास करिके गयन पढ़ै वैल-कालेज माँ; प्रकृति की गोदी माँ रहा-बसा कालिज। पुरुबै हरे-भरे ख्यात, पछुवै भट्ठा की भारी-भारी तलिया औरु बाँसन की घनी थनिहैन का जंगलु। हिंयै साथी मिले- राजकुमार तिरवेदी, विनोदशंकर जनार्दनप्रसाद ओमप्रकाश बिड़ला, गोपीकृष्ण दिनेशचन्द्र, रामकिशोर, नरेशचन्द्र श्रीवास्तव, विनायक राव माने। भाइ राजकुमार तिरबेदी तो ऐसि मिले कि जीवन-संघी बनिगे। रहै क मिली ढखवा गढ़ी - हमार दोसर घरु, हमरी सिच्छा-दिच्छा औरू जिन्दगी का आधारू। पिता जी के ठौर तीनि चाचा-जनहिकि तना त्यागी, तपस्वी, जुझारू और स्वतंत्रता संग्राम के धुंवाधार सिपाही-पूज्य श्री माधव सिंह, रतन सिंह, गंगा सिंह। तीनि भाई बड़े-श्री कौशल किशोर सिंह श्री अवधेश प्रताप सिंह श्री भानुप्रताप सिंह। पितियानी और महतारी के ठोर दुइ भाभी बडी व छोटी। जिनते भाभी का फुलवारी; ज्यहियां खिलैं फुल-बेला, जुही, चमेली रातरानी, चांदनी मनोकामिनी, हरसिंगार, न्यवारी आदि कइयो तना के। गुलाब तौ बहियाँ कैया मेल का फूलै, औरु हियैं ते भई कबितई की सुरुवाति, प्रेरना के गंगोतरी-सिखर ददू पंडित हरद्वारीलाल औरु भानू दादा-एकु कबि, एकु कहानीकार।

दुइ बरस लखीमपुर पढ्यन-हिन्दी परिषद के मंतिरी रह्यन : पत्रिका छपवायन। छात्रावास मां रह्यन-साथै मां भाई राजकुमार। गुरू श्री इन्द्रेसुर दयाल दुबे। हिन्दी के जाने-माने विद्वान् साहित्तकार श्री कुँवर चन्द्र प्रकाश सिंह के हिंयै रह्यन प्रिय सिस्य। जिनते भाषा-भाउ सबका प्रभावु मिला। आदरणीय चाचा ठाकुर बंकटासिंह, श्रीराम पितरिया औरु कुंवर खुसवक्तराय हिंया रहे हमारि अभिभावक औरु जबलै ई धरती पर रहे लरिकै अस माननि। यहे ब्यरिया पिता जी भये बिधायक तौ पाँच बरस लखनऊ महानगर मां बीते- दारुलसफा बी बिलाक, कमरा नम्बर 13। बिस्वविद्यालय ते किह्यन पास एमे हिन्दी औरु यलयल बी। पूज्जि गुरू रहे डॉ. श्री हरिकृष्ण अवस्थी, डॉ. दीनदयालु गुप्त, डॉ. ब्रज किसोर मिश्र, डॉ. देवकीनन्दन श्रीवास्तव औरु डॉ. भगीरथ मिश्र। हिंयौ रह्यन हिन्दी विद्यार्थी परिषद के सभापति। सहपाठी भाई मिले श्री सूर्य प्रसाद दीक्षित, श्री पुरूषोत्तमलाल सुकुल, श्री रघुवीर सहाय दीक्षित मिलिन्द, श्री गिरिजा संकर सक्सेना स्वतंत्र आदि औरु याक बहिनिउ मिली उमा ताँगड़ी-अबै लै राखी पठवति रही।

कमरा नंबर तेरह की बातैं निराली समूचे देस के बड़े से बड़े कबी-साहित्यिक नेता, स्वतंत्रता सिपाही, सहरुवा सौखीन औ गंवार द्यहाती हुँवा पधारैं। हिंयै पर दादा श्री मधुप जी औरु श्रीमती उर्मिला

भाभी ते अपनपनु जुरा। अस जानि परा जैसे सगे दादा-भाभी मिलेगे। कमरा माँ सुर्ज उवै ते लैके राति बारा बजे लौं गूँजा करै मीठी-मीठे गीत, छंद औरु भवा करै राजनीति औ साहित्य केरि चरचा। तीनि सुकबि दादा-लवकुश, चाचा भरवदत्त सुकुल औरु डॉ. रवीन्द्रनाथ मिश्र औरु दुइ कबि हृदय- राजकुमार त्रिवेदी औ श्यामलाल अगिनहोतरी तौ कमरै माँ रहैं। कबहूँ का, अकसर आवा करैं, रहौ करैं दादा भ्रमर जी (श्री पारसनाथ मिश्र 'भ्रमर') औरू दादा राकेस जी (श्री विष्णुकुमार त्रिपाठी 'राकेश')। दादा दिवाकर जी, अलिन्द जी, रामबहादुर भदौरिया, शिवबहादुर भदौरिया-सब जन खूब आवैं, हमरिउ सुनैं, अपनिउ सुनावैं। कबिन के साथ कबहूँ-कबहूँ कोई कवित्रिउ आवैं-कुमारी मधु, ज्ञानवती सक्सेना। कबहीं श्यामनारायण पाण्डेय तौ हमैं बैठारिके अपने परोस घंटन कविता सुनैं औ उपदेस देइँ। दादा श्री गोपालसिंह नेपाली औरु दादा श्री ब्रजेन्द्र अवस्थी बिना हमका साथ लिहे लखनऊ घुमै नाहीं निकरैं, पं. सोहनलाल द्विवेदी, श्री बलबीर सिंह रंग, श्री शिशुपाल सिंह 'शिशु', आचार्य आसुकबि देवेन्द्र शास्त्री, डागटर आनन्द, श्री ब्रजनन्दन पाण्डेय, श्री रामभरोसे लाल पंकज, श्री राजेन्द्र कुमार 'भानु' पिता जी के परम मित्र रहैं औरु हमहुँक लरिकै अस मनति रहैं।

सन् तिरसठि (1963) माँ -आँबन के बड़े-बड़े बाग; कौवा साँझ का बसेरा करैं, भ्वरहरे त्वहका लगै कि पहले गाँउ भरेक जगाइ देइँ। पंजरै बड़कैया रेल लैन, गाँउ छ्वाट, मुल नाउँ बड़ा। संगिनी मिलीं उषारानी-पंडित मूलचंद मिसिर की मँझिली बिटिया। अजिया-ससुर पंडितनंदलाल-पहलवानी, सुख माँ पला, भारी-भरकम डील-डौल-सुभाउ के सौकीन, ब्यौहार माँ दुयौता-इलाका भरि कहैं 'लम्बरदार'।

दुइ बरस लखीमपुर माँ बकालतिउ किह्यन। सनातन धर्म इण्टर कालिज, हरदोई ते नौकरी की सुरुवाति भई; सालु भरि धरम सभा इण्टर कालिज लखीमपुर औरु सालु भरि डिगरी कालिज सीतापुर माँ पढ़ायन। सेस सब नौकरी गौरमिंटी कालिजन माँ गुजरी-अबहूँ लखीमपुर के गौरमिंट कालिज पढ़ाइत है। पहाड़ पर तीनि तीर रह्यन - लोहाघाट, गंगोलीहाट, जोसीमठ। सबै ठौर पहाड़ी प्रकृति के अनगिन्त रूप-रंग देख्यन। गंगोलीहाट माँ जगदम्बा महाकाली का महान मंदिरु - हिंयै पर महिषासुर का मैया मारिनि औरु पाताल भुवनेसुर-याक बहुत बड़ी गुफा माँ बिराजे भोले बाबा पर कामधेनु की दूध-धार गिरै। जोसीमठ की कही- जगतगुरू संकराचार्य की तपस्थली सहतूत के भारी बिरछ के तरे, देस के चारि मठन मैहाँ एकु-जाड़े भरि भगवान बदरीबिसाल की पूजा हियै होइ। पाँच-छः दाइँ दरसन किह्यन भगवान् के। गाना गाउँ, (इन्द्र देवराज की गरमिन की राजधानी अलकापुरी) बसुधारा लौं गयन। तपोवन (भगवती उमा केरि तपोभूमि) आदि बद्री, भविष्य बदरी औली, हेमकुण्ड, औरु फूलन की घाटी घूम्यन - भोजपत्र की छाल औरु कमल तोरिकै लायन। देवपराग, करनपराग, रुद्रपराग, नंदपराग औ बिसुनपराग तौ गल्लिनि माँ परि जाति हैं। हरीशचंद्र साह, नवीनचन्द जोसी जस साथी हियैं मिले।

मुला लोहाघाट की यदि कुछू निरालिनि है। टनकपुर औरु पिथौरागढ़ के बीच दुयारनी (देवदारु के वन) माँ लोहावती नदी के किनारे बसा गंधरबुलोक। हिंयौ एकु घरु अस बनिगा हमार। पंडित प्रेमचन्द पुनेहा के मकान माँ नीचे का कमरा - साथ रहैं भाई मिथिलेसचन्द्र सरमा-बड़े सरस औरु सहृदै। बादि माँ भाई श्री रामनारायन सुकुल। कबहूँ आवैं भाई गोपालकृष्ण गुरुरानी, प्रहलाद सिंह बिष्ट औरु मोहनलाल यादव। भ्वरहें देबीधार ते नारायण जी उवैं औरु साँझ का बानासुर किला माँ अस्त है जाइँ। बादर हिंया सड़कन पर छुट्टा घूमैं। चम्पावत (चंद राजन की राजधानी), मायावती (स्वामी विवेकानन्द कौ मुक्खि असरमु), एबट माउंट ब्यार-ब्यर घूम्यन। अक्कल धारा का पानी पीके सबकी अक्किलि के क्यवारा खुलि जाइँ, तौ भगवान ऋषि स्वर औरु मैया घूमा धूरी के दरसन करिके मोच्छु सुगम है जाई। खूब लिख्यन हिंया कबिताई।

☐ सत्यधर शुक्ल

# अवधी मा कहावति

**आद्याप्रसाद सिंह 'प्रदीप'**

---

अवधी-साहित्य मा लोकोक्ति पर्याप्त परचलित बार्टीं। यहि कहउतिन कइ परयोग रोज की बोल चाल मा कहि जार्थीं। बाति ई उठत बा कि ई कहाउति या लोकोक्ति कहाँ से हमरे समाज मा आई? एकइ उत्तर सम्भवतह ई होये कि समय-समय पइ येहि भुई पइ अनेकन महान पुरुष जनमेनि वो सभे कुछु कहावति कहि के कुछु लिखि के चला गय। कुछु कहावति कइ समय निहचित बा कि कब के कहेस या लिखेस मुल कुछ कहावति ऐसनउ बार्टीं आदिकाल से जीभी-जीभी चली आवा थईं। न साहित्य मा आई न केउ लिखेस। महाकहावतिकार घाघ कवि, पक्का किसान हमरे उत्तर परदेस मा पइदा भा रहेन। ओनके जनम स्थान के बारे मा विभिन्न विचार हयेन। केउ ओनका फरुखाबाद, केउ बाराबकी कइ जनमा कहा थेन। चाहे जहाँ जनमा होंइ ओनकइ कहावति पूरे भारतइ मा नाइ बल्कि बहरेउ कहि जाथी। घाघ से ई सनसार उरिन नाइ बा। एहि कहउतिन के परयोग से भाषा मा सुनरउता बढ़ि जाथइ अउ गागर मा सागर येस झलकइ लागाथइ। आगे कुछु कहउतिन पइ धियान देइ कइ परयास कइ जात बा। अगर केउ कउनो काम कइके न करइ कइ उपकरम करत देखा जाथइ तउ ओका कहि जाथइ कि 'सात दाइ खायि के बिलारि भई भगतिनि'। अगर मालिक पीछे अउ सेवक आगे आगे भा तउ कहि जायं 'गोसयाँ भूई कुकुर पुरउटी' 'बूढ़ भया बछउवइ नाउँ'। जहाँ मूर्खता के नाते कउनो काम मा बिगाड आइ जाइ वहि कहा जाथइ कि 'जनम्या पूत तू लोलक लइया। बोया धान पछोर्‌या पइया।।'

जहाँ माँग-पूर्ति कइ सम्बन्ध रहा थइ वहिं कहि जाथइ कि 'एक अनार सौ बिमार' 'ऊँट के मुँह मा जीरा' 'हाथी के बच्चा का लवागें कइ घूटी'। जहाँ केउ अपने स्तर से बढ़ि के बाति करे वहिं कहा जाये कि 'करइ कुटउनी गावइ सीता हरन'। अनसमझी बाति बदे कहि जाथइ कि 'भँइसी के आगे बेन बजाव भँइसि खड़ी पगुराइ'। यहिं सब कहउतिनि मा अवधी भाषा कइ केतना मजा मँजावा रूप देखइ का मिला थइ। यहि कहाउतिनि का एक मुहे से दुसरे मुहे सुना जाथइ। अब सब एनकइ महत्व जानि लिहेन यहि कारन से एनका लिखि के साहित्य कइ एक अंग बनइ लिहिन। वइसे तउ हर एक साहित्यकार अपने साहित्य मा सूक्ति कइ प्रयोग करा थेन। तुलसीदास मानस मा बहुत सूक्ति दिहे हयेन जवन रोज की बाती मा प्रयोग कइ जार्थीं।

घाघ बहुत बड़ा कहावतिकार मानि जा थेन। येनकइ कहावति घिसि पिटि कं सब भाषा अउ बोली मा परयोग कइ जार्थीं। कुछु नीतिपरक कहाउति आगे लिखी जात बार्टीं। जादा खोराक गनइ वाले मनई के बारे मा घाघ कहाथेन कि ओनके मरे दुख नाइ करइ का चाही :

*आठ कठउती माठा पिअइं, सोरह मकुनो खायिं।*
*ओकरे मरे न रोइये, घर कइ दारिद जायि।।*

येहिं कहउतिन मा जीवन जिअइ कइ ऊरजा मिला थइ। जे मनई आधे परिवार कइ खोराक झटकिले

ओकरे मरे काउ रोवइ। घरे कइ मढ़ दूरि होइ जाये। आगे की कहाउति मा केतनी गहिरि सिच्छा निहित बा। आगे :

*बिनु बैलन खेती करइ, बिनु भइयन के रारि।*
*बिनु मेहरारू घर करइ, चौदह लाख लबार।।*

खाना खाये के बाद आराम करइ कइ बाति चलबइ कराथइ साथइ साथ मा एक नीति कइ बाति अउरो जोरि उठाथइ। 'खायि के परिजाय। मारि के टरि जाय।' जेकरे घरे मा सार मलिकई करइ अउ मेहरारू कइ बाति मानी जाइ। सावन मा हर न होइ ओनकइ कवन दसा होथइ येहि कहावति मा साफ जाहिर बा :

*जेहि घर साला सारथ, अउ तिरिया कइ सीखि।*
*सावन मा बिनु हर लखै, तीनिउ मागैं भीखि।।*

समाज का दिसा देइ बदे घाघ महराज गहिरि-गहिरि बाति उठाइ के धइ दिहे हयेन। इ सब ओनके जीवन कइ अनुभउ होइ। येनसे जउ हम सब सिच्छा न लेईं तउ कहउतिन कइ कवन दोख। साधू, चोर, प्रेम अउ बुद्धि की दिसा मा एक कहाउति देखइ लायेक बा :

*साधू क दासी, चोरहिं खासी, प्रेम बिनासइ हाँसी।*
*वइसइ सब कइ बुद्धि बिनासइ, खायि जे रोटी बासी।।*

यहि उक्ती मा केतनी गहिरि भाउना भरी बा। साधी जउ दासी राखि के साधना करइ चाहे तउ दासी वहि साधू कइ साधना कवनी ओर लइ जाये? सोचइ कइ बाति बा। चोरी करत की चोरे के खोंखी आइ आये जउ कवन चोरी करे। हँसी मजाक जादा भये पे विवाद उठे अउ प्रेम कइ तागा टूटि जाये। इही तरह से बासी खाब खाये पइ स्वास्थ कइ विनास होइ जाथइ। फेरि आगे घाघ कुछु बाती से हमइ सब का सावधान करइ का परयास कराथेन :

*नस-कट पनहीं, बतकट जोय। जउ पहिलउठी बिटिया होय।*
*पार कृषी, बौराहा भाय। घाघ कहँइ दुख कहाँ अमाय।।*

बाति काटि के बोलइ वाली औरत, नस काटइ वाली पनही, अउ पहिली सनतान बिटिया होइ, जेकइ खेती पारु होइ जाइ, अउ घरे मा पागल भाई होइ घाघ कहाथें कि ई सब दुख अमाइ लायेक नाइं होत। आगे की कहाउति मा जउ कुदारी कइ बेंट ढील रहे तब कामे मा बाधा पहुँचे। औरत जउ हँसि के बाति किहेस अउ हँसि के दाम कइ तगादा कइगा तउ सबइ काम चौपट होइ जाथइ।

*ढिलढिल बेंट कुदारी। हँसि के बोलइ नारी।*
*हँसि के माँगइ दामा। तीनिउ काम निकामा।।*

आगे कुछु ब्योहारिक बाति बताइ जाति बा। यहि पइ धियान दे का चाही। जे धियान नाइ देतेन वो अपने व्यवहारिक जीवन मा परेसान रहा थेन।

*बिनु गौने ससुरी जाय। बिना माघ घिउ खिचरी खाय।*
*बिनु बरसे पहिरइ जे पउवा। घाघ कहइं ये तीनिउ कउवा।।*

बिना गौन आये ससुरारी नाइ जाइ क चाही येहिसे सामाजिक प्रतिष्ठा पइ आँचि आवा थइ। माघ माह के बिना घिउ खिचड़ी नाइ खायि का चाही। बिना बरसात भये पउला नाइ पहिरइ का चाही। जइसे चिरइनि मा कउवा कइ जइसे मान नाइ रहत ओइसे एन तीनिउ कइ समाज मा मान ना रहे। घाघ बड़ा

चतुर सुजान नीति कइ गहिरि भावना देखइ लायेक बा :

*अम्बा नीनू बानियाँ, गर दोने रस देंइ।*
*कायथ कउवा करहँटा, मुरदा हूँ रस लेंइ।।*

आम, नेबुआ अउ बनियाँ गला दाबे पे रस दे थेन। कायथ कउवा अउ करहटा मोरदउ से रस चूसइ कइ परयास करा थेन। खेती पाती अउ बितनी घोड़ा कइ जीव अपने हाथे बनाये पे बनाथइ। मनई पे निरभर रहि के खेती करइ चाहइ तउ होत नाइ। तबइ तउ कहा बा 'जो हर गहइ खेती ताकी। जे पूँछेसि हरवाहा कहाँ बीज बूड़ि गै तिनको तहाँ।'

*खेती पाती बीनती, अउ घोड़ को तंग।*
*अपने हाथ सँवारिये लाख लोग हों संग।।*

आगे बइदकी कहावति आ देखा गाउँ घरे मा कहिजाथइ कि 'कम खायि गम खायि'। घाघ कहा थेन कि 'जादा खायि जल्द मरि जाय। सुखी उहइ जे थोरा खाय।' घाघ बतावा थेन की जेका मारइ चाहइ ओका येहि ढंग से मारइ कि लाठिउ न टूटइ अउ साँपउ मरि जाय।

*जाको मारा चाहिए बिन मारे, बिन घाउ।*
*वाको यही बताइये घुइयाँ पूरी खाउ।।*

स्पष्ट बा कि घुइयाँ बहुत गरिष्ठ होथइ। येका पूरी से खाये पनी पाचन एकदम बिगड़ि जाये। आउँ परइ लागे इहाँ तक कि मनई मरि सकाथइ।

घाघ के मत से कउने महीना मा कवन चीजु खाइका चाही अउ कवन चीजु सरीर के बदे नेकसान करे बड़े अच्छे ढंग से कहा थेन :

*चइते गुड़ बइसाखे तेल, जेठ के पन्थ असाढ़ क बेल।*
*सावन साग न भादउँ मही, क्वार दूध न कातिक दही।*
*अगहर जोरा पूसे घना, माघइ मिश्री फागुन चना।।*

यहि कहाउति मा जवन जवन बाति लिखी कही हई ठीक नाइ परतीं। चैत मा गुड़ नुकसान कराथइ, बैसाख मा तेल नेकसान करे। जेठ महीना मा राहि चलब बड़ा कठिन होथइ। असाढ़ मा बेल खाब हाँनिप्रद होथइ। सावन मा साग, भादउँ मा दही, कुवार मा दूध, कातिक मा मही ये सबइ चीजन कइ प्रयोग बरजित बा। एक साहसी अउ नियमित काज करइ वाले के बद कहा बा 'पहिले जागइ पहिले सोवइ। जो वह सोचइ वह ही होवइ।' जे पहिले समयि पइ सोइ जाये तउ ऊ समय पइ उठि के अपने कामे मा लागि जाये। काम काज अपुनइ पूरा होइ जाये। 'खाइ के मूतइ, सूतइ बाऊँ। कबहूँ बैद न आवइ गाऊँ।' नित्य किरिया सरीर के स्वास्थ्य पइ अच्छी असरि डारा थीं। जउ समय-समय पइ सब काम होवा करे तउ कउनो विकार कइ डर न रहे।

*प्रात-काल खटिया ते उठि के, पिअइ तुरन्तइ पानी।*
*वहि के घर मा बैद न आवइ, बाति घाघ कै जानी।।*

अपने जीवन के साथे जवन पाठ पढ़इ का मिलि जाइथइ उहइ कहावति के रूप मा विद्वाने कहा थें। पुरान मनइ नियम से सबेरे पानी पिअइ कइ आदति डारे रहा थेन। ओनकै स्वास्थ्य अउ ओनकइ बल, संजम-नियम सब अउरइ होथइ। ऐसनउ पुरान मनई समाज मा अबइ ले बाटेन जे जिनगी के अन्तिम सीमा पइ आइ गयेन तबउ अबइ तलक अंगरेजी दवाई नाइ खायेन। इहइ संजम-नियम बनइ

के स्वास्थ्य सुधारइ कइ अनेकन सिच्छा घाघ अपनी कहउतिन मा दिहे हयेन। घाघ कइ मत आ कि चारि चीजु जे रोकाथइ ऊ थोरइ दिन जिया थइ :

*घग्घू रोकइ चारि जे, जिअइ थोर दिन पूत।*
*भूख प्यास के साथ मा, मल-संका अउ मूत।।*

जे भूखि, पियासि, टट्टी अउ पेसाब रोका थइ ऊ कम दिन जिया थइ। जे अपनी मेहनति के अनुसार भोजन करइ, साहस के अनुसार काम करइ, इन्द्रिय अपने वस मा राखे होइ, ऐसन मनई सारे सनसार का अपने बस मा कइ सकाथइ।

*स्रम भइ निसि दिन खाइ जे, दम भइ कारज कीन्ह।*
*इन्द्रिय जेहि के बस रही जगत जीति बस कीन्ह।।*

जेकरे भेत्तर श्रम करइ कइ तल्लीनता भरी बा, जेकरे काम करइ कइ दम बा अउ जेकर राही मा अवरोध डारइ बदे ओकइ इन्द्रिय ओका बाध्य नाइ करतीं, वहि मनई का केउ कबहु असफल न कइ सके।

समाज मा बहुत प्रकार कइ अन्ध-बिसवास ऐसनि कुप्रथा फइली हई। येहि कुप्रथन मा कुछु तउ काम करइ मा व्यवधान डारा थीं। समाज मा ई कहि जाथइ कि सोम का पुरुब नाइ चलइ का चाही। मंगर बुध उत्तर नाइ जाइका चाही। एहि भ्रम का दूरि करइ बदे भड्डर एक विद्वान अउ पण्डित कइ विचार देखा :

*पुरुब गोधूरी, पश्चिम प्रात, उत्तर दुपहर, दक्खिन रात।*
*का करइ भद्रा कादिप सूर, कहइँ भड्डर सब चखनाचूर।।*

पुरुष जेका जाइ का होयें वै ऊ गउधिरिया मा चला जाइ, पच्छू क जाइ का होइ सबेरे जाइ, उत्तर जाइ बदे दुपहरिया मा, दक्खिन जाइ बदे राति की जाइ। एसे बढ़िके अउर साइति नाइ बा। कवि भड्डर कहा थेन कि भद्रा अउ दिसासूल कुछु एहि समय ना कइ पाये। एककरे सामने सब चकनाचूर होइ जइहें। चलत की जउ नेउर मिलि जाइ अउ बाई ओर गाइ चरत मिलइ। दहिनी ओर कउवा केतना बइठा मिलइ। हे भइया अगर ऐसन सफलता कइ लच्छन मिलि जाय पूरा मनोरथ सफल जाना।

*चलत समय नेउरा मिलि जाय। बाम भाग चारा चखु खाय।*
*काग दाहिने खेत सुहाय, सुफल मनोरथ समझहु भाय।।*

लच्छन कइ बाति कहउतन मा बहुत मिला थइ। जे जहाँ रहा थइ उही स्थान कइ ओका अभ्यास होथइ। धोबी कपड़ा की नादि मा पानी का देखि के ई बतावइ लागा थेन कि बरसात होइ वाली बा। बरदा के गोबरे पइ सफेद किरवना देखि के पता चला थइ कि अब बरसा होये। इही परकार एक लच्छन देखा- पहिली बरसात मा जउ बरसा होइ जायि तउ फेरि 'पहिली बरखा भग्गिा ताल। आगे केसि बरसा कइ हालि'। अउर बरसात नाइ होति। बरसा कइ लच्छन अउर बा कि :

*दिन मा गरमी, राति मा ओस। कहइँ घाघ बरखा सौ कोस।*

जउ दिन मा गरमी परइ लागा थइ अउ राति की खुब ओस परइ लागा थइ तउ बरसात सउ कोस दूरि होइ जाथइ। मतलब ई होथइ कि जउ दिन मा गरमी जादा परइ अउ राति की ओसि परइ तउ बरसात नाइ होत। चैत मा जउ थोरउ बरसि जाइ तउ सावन सूखइ सूख रहाथइ। अकास के लालउ पियर भये पइ कहि जाथइ कि बरसात नाइ होत। अवधी मा घाघ कइ लिखी बहुत कहाउति हईं जौने मा आजु ले बरधा खरीदइ मा कामे आवा थीं। बरधा कइ पहिचान आ कि :

*छोटा मुह अउ छोटा कान। इन्हइ छोड़ि जनि लीजै आन।*
*छोटा मुहँ अउ छोटी पूँछ। ऐसन बरधा ल्या बे पूछ।*
*सेत रंग अउ पीठि बरारी। ताहि देखि जनि भूल्यो अनारी।*
*बड़ सींगा जनि लीजय मोल। कुँए मा डारउ रुपिया घोल।*
*छद्दर कहइ मैं आऊँ-जाऊँ। सद्दर कहइ गोसइयर्यिं खाऊँ।*

ई बरधन कइ लच्छन हयेन। येहि लच्छनन से जे परिचित न रहे उ बरदा खरीदइ मा केस ना फँसि जाये। करिया कच्छा अउ झबरा कान होइ तउ तुरन्तइ बरधा खरीदि लेइ का चाही। उज्जर रंग होइ दबी पीठि होइ तउ बरदा ठीक हयेन। बड़ी सींग वाला बरधा न ल्या रुपिया बुडिऋ जाइ कइ संका देखाथइ। छद्दर बरधा जल्दी खरीदि के बेंचि उठा थेन। सात दाँत वाला गोसयाँ का खाइ लेथइ। अगर कउनो बरधा के नउ दाँत होइगा तउ ऊ मलिके कइ परिवार मित्र नात-बाँतउ का ना छोड़े। 'नीला कन्धा बैगन खुरा। कबउँ न निकरइ कन्ता बुरा।' मतलब कि नीले रंग कइ कन्धा होइ अउ बैगनी रंग कइ खुर होइ ऊ बरधा ठीक हो थेन। छोट मुँह, छोट कान, अउ छोटि पूँछि वाला बरधा खरीदि लेइ का चाही। जउने बरधा कइ कान अँइठा होथइ अच्छा हो थेन।

*बैल चमकना जोत मा अउ चमकनही नार।*
*ये बइरी हँइ जान कइ, लाज रखइँ करतार।।*

जोतत कई जउ बरधा चिहुँकि के भाग तउ ये वोइसे खतरनाक हयेन जइसे चमकीलि औरति। दुइनउ जान लइ सका थेन। येनसे भगवान बचावइँ। आगे लच्छन परक कुछु कहाउति अउर हईं। जइसे-

*जहाँ परइ खैरे कइ खुरी। तउ कइ डारइ चापर पुरी।*
*जहाँ परइ खैरा कइ लार। वढ़नी लिहे बुहारइ सारि।*

खैरा बरधा असुभ मानि जाथेन। घाघ कहा थेन कि ये जउनी सारी मा रहि जाथेन वहि सारी का बढ़नी लइके बोहारि देथेन। येकइ मतलब ओहमा अउर जानवर नाइ रहि पउतें।

आगे कुछु कहाउति ऐसनि दयि जात हईं जउने से सब किसान अउ गिरहस्ती वालन का एक सीख मिले। इ सीख बेवहार मा आये पइ मिलत घाघ पहिलेन दयि दिहेन :

*तीनि बैल घर मा दुइ चाकी। पूरब खेत राज कर बाकी।*

जउ किहिउ किसाने के तीनि बरधा होइहें तउ एकठी तउ बेकारइ रहे। एकये के नाते झनझटि लागि रहे कि किहिउ से हरसझा करा चाहे एक बरधा साँझ सबेरे समय बरबार कइके हेरा। घरे बान्हि द्या खोराकउ डाँड़इ परे। घरे मा दुइ चाकी कइ मतलब दुइ बिचार होइ गवा। फूट परि गये पइ तउ सुख सान्ति हेरे नाइ मिलत। जेकइ चक घरे से पुरुब होथइ उहू का परेसानी रहा थइ। सबेरे सुर्ज कइ किरिन आँखी पइ सोझइ आये। लउटानी सुर्ज पच्छू ओर रहिहें फेरि किरिनि अँखियइ पइ अघात करे। पुरुब अउ पच्छू से आन्हीं-पानी जादा आवा थइ। जेकरे घर मा राज कर बाकी होये उहू का कस्टइ रहा थइ। चिन्ता कइ एक विषय बना रहा थइ।

# यक रहें राजा

**डॉ. राम बहादुर मिश्र**

---

लोक साहित्य मा लोकगीत अउ लोक कथाई दूनौ विधा सबसे ज्यादा सुनी औ कही जात है। लोकगीत, मौसम, रितु अउ समय संस्कार के अनुसार गाये जात हैं, मुला लोक कथा कइ कउनौ मौसम या महीना नहीं। यह बारहौं मास कहा सुनावा जात है। हाँ यक बात जरूर है कि लोक कथा दिन मा नहीं सुनाई जात। यक लोक बिसुवास है कि जे दिन मा किहानी सुनावत है वहिके मामा हेराय जात है। वइसे यह बात हंसी मजाक औ हंसौआ मा कही गय है, मुला यक बात है कि गाँव गेराँव मा खेती, किसानी, मजूरी औ आपन काम धन्धा करै वाले का अतनी फुरसत कहाँ कि वह दिन मा काम की बेरिया बैठि के किहानी सुनावै मा आपन समय बरबाद करैं। न सुनवैया का मौका, न कहवइया का फुरसत। हाँ जब दिन भरे कै काम धाम निपटाय के संझा बेरिया खाय पी के बैठक परत है तब ई कहानी सुनायी जात है। जाड़े के मौसम मा लोक कथा ज्यादा सुनैक मिलति है काहे कि टोला-मुहल्ला खाय पीके जब तपता पर बैठत है तौ गांव देस के हाल-चाल औ सुख की बातैं भये के साथ कथा-किहानी शुरू होइ जात है कबौ-कबौ अधरतिया होइ जात है, किहानी सुनत-सुनत। तपता के अलावा घर मा बूढ़ी आजी-दादी या बाबा-आजा जिहका पुरनिया कहा जात है उइ लरिकन का किहानी सुनावत हैं। इनमा बड़ी गूढ़ बातै छिपी रहति हैं। इनमा लोकजीवन कइ रस भरा रहत है मनई कइ आचार विचार, रीति-रेवाज, धरम-करम, रहन -सहन, आस-बिसुवास, सुख-दुःख कइ झाँकी देखइ का मिलत है।

ई कहानिन मा कइयव संदेस छिपे रहत हैं जिका सुनि के बाल मन पर बड़ा असर होत है। करुणा, दया, जीव-जन्तु से नेह, पेड़-पौधा, पसु-पक्षी सबमा ईसर कै बास, उँच-नीच, गरीब-अमीर, राजा-रंक न जाने कतने भाव छुपे रहत हैं। इन मा। कथा मा परिवार अउ समाज के सम्बंधन पर बड़ा आइर्स भरा रहत है। अस कउनौ बात या बिसय नहीं जउने के बारे में ई लोक कथा मा कुछ न कहा गवा होय। हर कथा मा यक उपदेस छिपा रहत है यही बहाने समाज वहिका अपनावत है। जइसन यक भइया दुइज कइ कथा है जिहमा नदी-पहाड़ पेड़ साँप, बीछी, बाघ, भेड़हा, भेड़हरि, झाड़ी झंखार सब कै पूजा कीनिगै। यहि के पाछे यहै मरम है कि पर्यावरन खातिर आदर कै भाव राखै से यहिकै सुरक्षा होये।

**हियाँ भइया दुइज कै किहानी दीन जाति है**

"यक बहिन रही, वहिकै बियाह बहुत दूर कइ दीन गवा। कइव साल बीति गये भाई से भेंट मुलाकात नहीं भै। जब भइया दुइज कै परब आवै तउ वहिकी आखी मां आँस आय जायँ, रोय के कहै लागै- हमारी भइया हुवती तउ रोचना करित। वह अपनी सखियन से आपन बिथा बताइस। वहिकी सखी बताइन कि तुम्हार भइया कसक आवैं? रस्ता माँ बड़ी-बड़ी नदी-नारा, झाड़ी झंखाड़ कीरा, बीछी, बाघ भेड़हा, भेडहर परत हैं, वहिके मारे राह मा आउब जाब बंद है। बहिन कहिस हम सबकै पूजा करबै भइया दुइज कै परब आवा बहिन अंगना गोबरे से लीपि के वहि पर चौक पूरिस। चौक मा साँप, बीछी, गंगा-जमुना, बाघ,

भेड़हा, झाड़ी, झंखार सब बनाइस फिर सबका पूजिस अउ कहिस कि भइया मोर बटिया चलति आ कटिया न लागइ। यही तना वह गंगा-जमुना का पूजिस अउ उनहू ते बिनती किहिस भइया मोर बटि चलत आवैं पार उतरि आवैं, फिर जतने जीव-जन्तु अउ बाधा रही सबका पूजिस। यक सखी बताइ कि सब होइ अस करौ कि रस्ता मा कउनौ दुस्ट न मिलि जाय। बहिन यक ईंट धरिस अउ वहिक मुसरे से कूंचि दिहिस, जउने भइया का कोउ न सतावै। अतना सब किहेके बाद वह देखते है कि भइय आय गये। बड़ी खुसी से रोचना लगाइस। बहिन पूछिस-भइया रस्ता मा कौनउ तकलीफ तौ नही भै, भाए कहिस कौनउ तकलीफ नहीं भै। गंगा-जमुना राह दै दिहिन। बाघ-भेंड़हा, कीरा, बीछी आगे से हटिगे इ तिना से हम हिंया पहुचि गइन। कउनौ तकलीफ नहीं भैं। बहिनी का बडी खुसी भै। भगवान जइसेन उइ दुइ भाई-बहिन का मिलाइन वइसन सब भाई-बहिनिन का मिलावैं।''

किस्सा किहानी मा परी कथा बहुतइ असरदार होति है लरिकन का तौ बड़ा मजा आवत है बड़े गौर से सुनत हैं परी के पखना की तिना उनहुन कै मन उड़ै लागत है परी कइ सुन्दरता, वहिकै कोमलता, बुद्धिमानी सारी बातन पर ध्यान दियत है लरिकै। अवधी मा तमाम अइसन परी कथा है जउने मा परी गरीबन और दुखिया मनइन कइ मदद करत है, रंक से राजा बनाइ देत है, सराप दै दियत है, वरदान दियत है, सोना-चाँदी, हीरा जवाहरात-मोती से घर भंडार भरि देत हैं। कुछ मां परी अउ राजकुमार से बियाह, मुहब्बत के किस्सा दीन जात है। यक परी कथा देखी जाय जउने मो सोना परी अउ रूपापरी कइ कथा कही गई है-

''बहुत दिनन के बात भै, यक राजकुमार अपने महल से घोड़ा प सवार होइके सिकार का निकरा। वहिकै घोड़ी खुब सरपट चली औ उ जंगल मा जाय के पहुंचा। सिकार खेलत-खेलत जब संझा होइगै तब राजकुमार के घोड़ी पियासी होइगै राजकुमार बगल की नदी म घोड़ी का पानी पियावै लाग। पानी पियावत बेरिया राजकुमार चौंकि परा। उ देखिस कि पानी मसे यक सोनापरी औ यक रूपा परी आपन सोनहुले अउ रूपहुले बार फैलाये नहात रही। यह देखि के राजकुमार ठग जस ठाढ़ होइगे। सोचै लागि ई परी कतनी सुन्दरि है। इनके साथे हमार बियाह होइ जातै तौ कतना नीक रहा। अब कै यक-यक बार तूरि लिहिन अउ अपने महल का चलि दिहिन, महल मा पहुंचि के यक अंधेरी कोठरी मा मुंहभरवा गिरि परें। भोजन की बेरिया ढुंढ़ना परा। नौकर चाकर ढूंढै लाग। यक नौकरानी देखिस कि राजकुमार अंधेरी कोठरी माँ औधे परे हैं वह राजमहल मा जाय के रानी से सब बात बताइस। रानी पूछिन का बात है? काहे मन मलीन किहे पहुड़े है? जो कोउ तुमका कुछ कहिस होय, वहिकै मूड़ कटाय लेई। राजकुमार उठि के बैठि गे अउ पगिया से यक रूपे कइ यक सोने कइ बार देखाइन अउ कहिन कि ई बार वाली परिन के साथ बियाह करब नहीं तो बनबास लइ लियब। रानी कहिन ई कउनउ बात है? यही खातिर अतना हठ किहे परे हौ? राजकुमार कहिन हमका तौ सोनापरी औ रूपापरी मिलै का चाही। रानी कहिन तुमका वहै परी मिले।

रानी कहि तउ दिहिन, मुला उनके मन मा बड़ी चिन्ता व्यापि गै। रानी पूरे राज मा डुग्गी पिटुवाय दिहिन, चारिउ आरिया सिपाही दौराय दिहिन ओ कहवाय दिहिन कि राज मा जतनी कुंवारी बिटेवा होयँ सब राजमहल मा हाजिर होयँ आपन-आपन मूड़ उघारई। दुसरे दिन राजा के राजमहल मा राज भर की बिटेवा आपन-आपन मूड़ अघारि के निकसी। राजकुमार झरोखा मा बइठ कै देखत रहै। आखिर मा राजकुमार हिरासे होइके उठि परे। जतनी बिटेवा आई रहैं उनमा सोन रूप बार वाली कौनउ न रहै। अब राजा रानी बहुतै दुखी भये। अतने मा राजा अचरज से देखिन कि बगैचा मा फंउहारा के लगे केवल फूल के पास दुइ सोने के बारन वाली बेटिवा बैठी हैं। अब रानी खुसी के मारे हल्ला मचावै लागी। दौरो दौरौ रूपा परी सोनापरी मिलि गई। राजकुमार मारे खुसी के बेहोस होइ के गिरि परे राजा आय के देखिन तौ

राजकुमार के मुंह पर पानी छिरका गवा और राजकुमार जब होस मा आये तौ राजा कहिन ई तौ परी अहीं, राजकुमारी न अहीं। इहमा हमार सबकै कौनउ बस नहीं। राजकुमार कहिन कुछौ होय, हम तौ इनहिन से बियाह करब, नहीं तौ बन का चले जाब। राजा बहुत मानइन, नौकर चाकर बहुत मनौआ किहिन, रानी हाथ जोरि के बिनती किहिन कि ई परी से बियाह न करौ नहीं तो बाद मा पछितइहौ, परी मनइन के लगे नहीं रहती मुला राजकुमार टस्स से मस्स न भये। मरता का न करता। बियाहे क तयारी होय लाग, मंडप सजावा गवा, नौबत बाजै लाग।

जब केवल के फूल मा बइठी सोनापरी औ रूपापरी का लेवावै खातिर नौकर चाकर चले अउ जइसन उनके हाथ लगाइन तइसन दूनौ के आंखिन से मोती झरै लाग अउ उन मोतिन से यक बिरवा ठाढ़ होइ गवा। बाढ़त उ बिरवा अकास मा लागि गा। सोनापरी रूपापरी वही पर बैठी रहै। राजमहल के सब जने हाथ जोरि के मनावै लाग। उतरौ सोनापरी नीचे उतरौ। लगन कइ बेरिया आयगै। मुला मोती के बिरवा न झुके औ दूनौ परी उपर से बौलै लागीं हम राजा के घर मा कइसे रहबै, हमार तउ घर अकास मा है। अब घर भर परिन क बलावै लागि औ परी उपरै उपर उड़त चली गई। अतने मा बड़े जोर से बादर गरजा, मोती कइ बिरवा फाटि गा, मोती जमीन पर बिथरि गई अउ सोनापरी रूपापरी धरती मा समाय गईं।"

कहानी किस्सा मा आदमी से ज्यादा पसु-पक्षी जानवर, कइ बिरतंत देखइ का मिलत है। इन सब कइ समाज का कतनी जरूरत है। इहकै संदेस ई कहानिन मा छुपा रहत है। मनई जानवर अउ पेड़ पउधाई तीनउ यक दूसरे के पूरक है। यक दूसरे कइ जिन्दगी आपस मा जुड़ी है। मनई जानवर अउ पेड़ पउधा आपन जीवन चलावै बरे पालत पोसत है। जानवर जहाँ मनई कइ घर भंडार भरत है। हुवें मनई उनका खवावत है पालत पोसत हैं जानवर दुइ तिना के होति हैं यक पालतू दूसरे जंगली। पालतू मा गाय, भइंस, बैल गदहा, घोड़ा बकरी, भेंड़ी तोता, तीतर, सुअर, कूकूर, मुर्गा, मुरगी। जंगली जानवर मा भेड़हा, सेर, बाघ, लोखड़ी, सियार, नीलगाय, साही, भालू आदि। पालतू अउ जंगली जानवरन मा कबौ पटरी नहीं खात। जंगली जानवर पाय जायँ तौ पालतू जानवरन का मारि डारैं पालतू जानवरइ नहीं उइ मनइव का घायल कइ डारत हैं कबौ-कबौं मारि डारत हैं। पालतू जानवर बड़े दयालू रहत है।

जंगली उखमज मचाये रहत है, छीना-झपटी, चोरी-मक्कारी, लइ भगवल मा वइ बिसुवास करत हैं। कुछ किस्सन मा पालतू किस्सन मा पालतू औ जंगली जानवरन कइ दोस्ती देखाई गइ है साथेन जंगली जानवरन कइ बिसुवासधात देखावा गवा है। यक लोककथा हाजिर है जउने मा गया अउ बाघिन कइ मेल-जोल के साथे बाघिन कइ बिसुवातघात बतावा गवा है।

गउ बाघिन कै कथा- "यक जंगल मा यक गाय औ बाघिन रहत रही। बाघिन गइया का बड़ी बाहिनी की तिना माानत रही। गाय अउ बाघिन जब बन मा चरइ जात रहीं तउ आपन-आपन दूध कटोरवा मा धइके जात रही कि उनके बच्चा जब भुखइहैं तउ दूध पी लियहैं। धीरे-धीरे गाय अउ बाघिन बुढ़ाय लागी। दूनौ जनिन के बच्चा बड़े होइगे।

यक दिन कइ बात गाय अउ बाघिन दूध धइके चरै चली गई। गाय तउ अइसी वइसी हरियर घास चरिके आपन पेट भरि लिहिस मुला बुढ़ाय गये के कारन बाघिन का छोटा-बड़ा काउनउ सिकार न मिला। वह बेचारी भूखइ लौटि आई अउ गइया लग बइठ गइ। गाय पागुर करइ लागि। बहिके मुह से फेना निकरत रहा। गाय नदी मा पानी पियै गई, बिगनिउ बहिके साथ गइ। दूनौ जनी पानी पियेइ लागी, गाय कइ फेना जब पानी मा बहिके बाघिन कइती गवा तब वह पानी के साथइ फेना पी गइ। गाय कै फेना बहुत मीठ लाग। बाघिन सोचइ लाग जेहिकइ फेना अतना मीठा है वहिकइ मास कतना मीठ होये। भूखी तउ रहबै रही वह गइया का मारि डारिस अउ खाय गइ।

गाय क खाय के बहिकइ पेट तौ जरूर भरि गवा, मुला वहिका बहुत भारी सोच भवा, अउ गइया

कइ सुधि कइके रोवइ लाग। रोवत रोवत संझा होइ गइ, मुला बाघिन अपने घर का न गइ। जब संझा का बड़ी देर भइ तउ दून्हउ लरिका भुखाय गये अउ दूध पियै गयें। बछवा देखिस कि दूध खून बनि गवा है तब वह बांय बांय कहिके रोवइ लाग। बाघ पूछिस काहे रोवत है तउ बछवा बातइस कि महतारी बताय गई रही जब दूध खून होइ जाये तब समझि लिहौ कि महतारी मरि गई। आज दूध खून बनिगा, कोउ हमरी महतारी का मारि डारिस। बछौना गुस्साय गवा अउ कहिस कि जे हमरी महतारी का मारिस वहिका आज हम मारि डारब।

अतनेन मा बाघिन आय गइ। वह उदास रही। अकेलि देखके बाघ पूछिस कि गउ माता कहां गई। बाघिन कहिस कहौं होये अबहिन थोरी देर मा आय जाये। तुम दूध पी लियउ। मुला बाघ कइ बच्चा न मानिस। महतारी से बेर बेर पूछइ लाग। हारि के बाघिन साफ साफ बताय दिहिस कि आज कुछौ नहीं मिला बड़ी भूख लागि रही हमहिन गइया का मारि के खाय लीन। यह सुनिके बछउना लाल भभूका होइ गवा, मारे गुस्सा के महतारी कइ पेट फारि डारिस और मारि डारिस। बछौना कहिस यही लिए हम बहिका मारि डारा। बछड़ा कहिस तुम बड़ा खराब काम किहौ गइया मरि गइ रही तउ बाघिन तउ रही। अब तउ यक्कौ महतारी नहीं बची। बघवा कहिस तुम फिकिर न करौ जब तक हम जिन्दा रहब तुम पर कौनउ आंच न आये। यक घंटई तुम्हरी गटई मां बांधे दियइत है, कउनउ मुसीबत परे, मूड़ हिलाय दिहौ, घण्टी बाजइ लागे हम आय जाब। तिना दूनौ सगे भाइन की तिना रहइ लाग।

यक दिन कइ बात आय, बाध कहौ दूरि सिकार के पाछे निकरिगा। बछवा अकेले बन मा घास चरत रहा। वही बेरिया यक कसाई कइ बरात जात रही। कसाई उइ बछवा के देखिन तउ बछवा का मारइ चलें। बछौना मूड़ हिलाय दिहिस घण्टी कइ आवाज सुनिके बघउना आपन सिकार छोड़ि के दौरि परा, मुलाा हुंवा पहुंचइ के पहिलेन कसाई वहिका मारि डारिन। यह देखि बघउना तड़पा अउ सगरी बरात का मारि डारिस। सबाका मारे के बाद देखिस कि बहिकइ भाय बछवा मरा परा है तौ वही के बगले मूड़ पटकि-पटकि के आपन जान दइ दिहिस।"

ई किहानी मा पसु-पक्षी कइ प्रेम-भाव देखइ वाला है। कहां तौ बाघ अउ बछड़ा यक दूसरे के जानी दुसमन, मुला उनमा बैर भाव के बजाए कतना प्रेम-भाव रहा कि यक दुसरे खातिर मरिगै। बछरा बछरा के मरतइ बाघ आपन जान दइ दिहिस।

पसु-पक्षी कइ प्रेम भाव आपस मा निहछल होत है। उनकइ आचरन अउ बेउहार मनई से अच्छा होत है। घोड़ा हंस, कौआ, कबूतर, तोता, मैना, चिरई ई सब लोक कथा मा जगह जगह देखइ का मिलत है। कबौ कबौ मनई के उपर इनकइ जीत देखाई जात है। इहके पाछे यहइ भावना छुपी रहत है। कि संसार के सब प्रानी एकुइ आयं। असकइ आत्मा यक समान है सरीर के नाते कोउ बड़ा कोउ छोट होत है मुला आत्मा यक समान है। यक लोक कथा मा राजा औ यक चिरई कई कहानी है। जउने मा राजा चिरई से हारी मानि लेत है-

"यक रहै चिरइया। यक दिन वह उड़त उड़त राजा की अंटरिया पर जाय के बैठि गइ। राजा की अंटरिया पर मोती झुरात रहे। चिरई चोंच मा यक मोती उठाय लिहिस अउ कहइ लाग राजा कइ मोती चोराय लीन। राजा के महल पर चिरइया रोजद यहै कहइ लाग। राजा गुस्साय के कहिन ई चिरई का पकरि के मारि डारौ। सिपाही चिरइया का पकरि के महल मा लइ आये। चिरइया फड़फडात जाय अउ कहत जाय राजा चिरइया से डेराय गें यह देखि राजा कहिन यह तौ बड़ी बेढब चिरई है। राजा गुस्साय कै कहिन ईहका मारौ न। मसाला मा सौंदि के इहका छौंकि दियौं, हम इहका खाबै। मसाला पीसा गवा, चिरैया सौंदी जाय लाग तब कहिस हम तौ लाल-पियर होइत है। हम तौ लाल पियर होइत है। राजा बहुतइ गुस्साय गये कहिन यहिका जल्दी छौकउ।

जब चिरैया छौंकी जाय लाग तब बोलै लाग हम तो छुनुन मुनुन होइत है, हम तौ छुनुन मुनुन होइत है। राजा बहुतइ हैरान कि यह तौ बड़ी बदमास चिरइया है। हाली से पकाउ हम जल्दी यहिका खाय डारी। चिरइया जब पाकि गइ, थरिया मा परसी कइ तब बोली हम तौ अब राजा के अंधेरी कोठरिया मा जाइत है, हम तौ राजा की अंधेरी कोठरी मा जाइत है। राजा बहुतइ खिसियान, कहिन लाउ यहिका जल्दी खाई। जइसेन राजा चिरइया का हाथे लिहिन अउ मुंह मा डरइ लागें, वइसन चिरइया फुर्र से उड़िगै। उड़िके बिरवा पर जायके बइठ गय अउ कहै लाग- - - राजा तो हारिगे, राजा हारि गै। राजा सोचइ हारि गए। हक्का बक्का होइके सबका ताकै लागें।"

लोक कथा मा धरम करम के बारे मा बहुत कुछ कहा गवा है। लोक जीवन मा बिसुवास आस्थां कई बड़ा महातम है। धरम म तौ आस्था अउ बिसुवास कइ बातइ न पूछउ। गांवन मा तमाम देवी देउता देउहार, महारानी बरमदेव, बड़े बाबा न जाने कतने थान बने रहते है। नीमी के तरे महारानी, पिपरे के तरे बरमदेव, बरगदे तरे बड़े बाबा, गांव की सरहद पर डेउहार बाबा पर जल, फूल, अच्छत रोजइ चढ़ाव जात है। यहिके अलावा ांकर जी हनुमान जी, दुर्गा जी, काली मइया, राम-सीता, लक्ष्मी-नरायन, राधा-कृष्ण के मंदिर बने है जिनमा रोजइ पूजा आरती भजन किरतन हुवत रहत है। यही तिना तमाम बर्त राखे जात है। अतवार, सुम्मार, मंगर, बीफै, सूक, सनीचर अइसन कउनौ दिन नहीं जउने दिन बर्त न राखा जाय। यकादसी, पूरनमासी, सप्तमी, अस्टमी, नवमी, अमावस जइसी तिथियन पर बर्त राखे जात हैं। यहिके अलावा हर महीना मा कउनउ न कउनउ बर्त आय जात है। महासिउरात, सीतला आठौं, सावनी, अषाढ़ी, बहुरा, कजरी तीज, बड़का अतवार, अनन्त चौदस नवरातम, डिढ़ोनी यकादसी तमाम बर्त होत है। भादौं के हरछठि, माघ कै तिलवा अउ करवा चउथ ई तीनि बर्त तौ हिन्दू परिवार मा कउनउ मिहरिया अस बाकी नहीं जे न रहइ। हर बर्त के साथे वहिके बारे मा यक किहानी जरूर सुनाई जात है। सकट चउथ के बर्त की कथा मा यक किहानी सुनाई जात है जउने मा राजा की बिटिया से यक गरीब बुढ़िया के बेटवा कइ बियाह होत है-

"यक रहे राजा, उनके यक बिटिया रही। वहिका यक साँप डस लेत रहा। राजा बिटिया का बचावै खातिर बिटिया की जगहा एक मनई बैठाइ देत रहें जेहिसें साँप वहिका डसि लियइ। यक दईं यक बुढ़िया कइ बारी आई वहिकै यक्कै लरिका रहै। बुढ़िया बहुत दुखी होइकै रोवइ लाग। तब तक हुंवा से सिउ पारवती निकरे। पारवती भगवान संकर से कहिन पता कीन जाय बुढ़िया काहे रोवत है। जाय के पता किहिन तउ बुढ़ियाा से कहिन लरिका से कहौ अपनी बायी अंगुरी काटि के बहिमा लोन भरि लेय अउ तुम रात भर यहै कहौ चारि घड़ी चौघड़िया कइ बाती, तिल तिल संकट मनाओं राती, बांधे छूटैं बिछुरैं मिलैं। लरिका अउ बुढ़िया दूनौ जने यहै करिन। लरिका आधी रात का राजा के महल मा गवा तब तक सांप आय गवा। लरिका अपने हाथे ढार-तरवार लइ गवा रहइ। उ सांप का मारि डरिस अउ ढाल के तरे वहिका झांपि दिहिस। फिर सोय गवा। राजा जब सबेरे देखिन कि सांप मरा परा है तउ उनका अचरज भवा अउ उइ बड़े खुसी भयें। राजा डुग्गी बजवाय दिहिन कि जे सांप का मारि डारिस है, हम वही के साथे अपनी बिटिया का वियाह करब अउ वहिका आधा राज पाट दै दियब राजा का जब पता लाग तउ बुढ़िया के बेटवा के साथे अपन बिटिया बियहि दिहिन अउ आधा राज पाट दइ दिहिन। जइसन बुढ़िया के दिन बहुरे सबके दिन बहुरैं।"

# तरक्की ई बिधि भई

**डॉ. भारतेन्दु मिश्र**

---

अब गाँव-गाँव तक सड़कैं पहुचिं रही हैं। छपरन तरे अंगरेजी दुकानें खुलि गई हैं। लरिका मोबाइल लिहे मुँहबाय रहे हैं। घर घर बिजुली चमकै लागि है। गाँवन माँ बैल बिलाय रहे हैं। ख्यातन मा टट्टर हरहराय रहे हैं। दूरदर्सन पर सिनेमा चल रहा है। आब चौपालन मा सीरियलन पर बहस होय लागि है। किसनऊ खेती किसानी के उम्दा तरीका दूरदर्सन ते सीखि रहे हैं।

बड़कये गाँव कस्बन मा तब्दील हुइ रहे हैं। नान्ह लरिका टॉप बूट पहिन कै स्कूल जाय लाग हैं, पढ़ी बेपढ़ी मास्टरनी कुछु अंगरेजी मा गिटिर पिटिर सिखावैं लागी हैं। तुकमी आम की बागै कटि गई हैं। कुइयाँ बिलाय रही है। बड़क्के सरकारी हैण्डपंप गाँव-गाँव लगवाये जाय रहे हैं। अब झूवारा मा रस्सी लोटिया लइ कै कौनौ नहीं चलत है। अब परचूनिया की दुकान पर ठंडी बोतल बिकै लागि है।

अब कच्ची माटी वाली छती थोरी रहि गई हैं।छोटकइया गड़ही पटि गई है। लिलगइया अबहिउ कहूँ कहूँ देखाती हैं। तराई लंग करक्वालै अबहिउ आय जाती हैं। कोइली, मुरइला औ पपिहा अबहिउ बची खुची बागन मा देखायी दै जात है। साँप कम हुईगे हैं। खलझार घटिगा है। तरक्की पसंद पढ़े लिखे मनई बाहेर दिसा मैदान ताईं नहीं जात हैं। अब राखी या कोइला ते कोउ दाँत नहीं माँजति है। दतून क्यार चलन घटिगा है। सब लरिका मेहारू कोलगेट कइ रहे हैं। नए नए साबुन औ क्रीम घर घर मा मिलै लागि है। अब भाँग ठंडाई क्यार चलन घटा है मुला देसी बिदेसी दारू छानी जाय लागि है।

देसी बिदेसी बजार गाँवन-गाँवन पहुँचि गई है। बूढ़ ठूढ़ अबहिउ खरिहान मा कितौ दुआरे परे हैं। कहाँ बंसीधर सुकुल लिखिन रहैं-

आजु घर के जादातर मनई चाह पिये बगैर खटिया नाई छाँड़ति हैं। गाँव क्यार हाल चाल बदलि रहे है। सहरून की नकल कइकै तरक्की क्यार चिकारा बजि रहा है। कहूँ कहूँ तरक्की ई बिधि भइ कि गाँवन की सकल बिलाय गइ है। जाति बिरादरी के नेता नई नई तरकीबै बनाय रहे हैं। कहूँ-कहूँ सरकारी समिति बहुत बढ़िया काम कई रही हैं। पढ़े लिखे उत्साही नौजवान युवक मंडल बनाय रहें। परधानी के चुनाव मा लाठी-बंदूख चलै लागि हैं। अवध के गाँवन मा जातीय समीकरण हल कीन जाय रहे है। दबंग लोगन के साथ पुलिस थाना अबहिउ डटा है। गरीब सहरन लंग भाजि रहे है। आबादी बढ़ी है खेती बंटी है। धीरे-धीरे बड़े किसानन की जमीन घर-परिवार के बटवारे मा बँटि गई है। जहाँ चारा अउर पानी की कमी है हुआँ दुधारू जानवर नाई देखाई देत हैं। जी गाँवन मा दूध दही इफरात मिल जाति रहै हुआ लरिकवा दूध खातिर तरसति हैं।

तरक्की भई है गाँवन क्यार गलियारा अब सड़क बनिगा है। गाँवन के भीतर खड़ंजा लागि गवा है। जहाँ कबहूँ साइकिलन का अकाल रहै हुँआ मोटर साइकिलैं भरभराय रही हैं। गाँव गाँव दुइ चार कारैं खड़ी हैं। घोड़ी पर बइठि कै बाजार हाट जाय बाले न उइ पुरनिहा पुरिखा रहिगे न घोड़ी न बैलगाड़ी रहीं।

# भला है पान, मान के भाई

डॉ. राघव बिहारी सिंह

अरे आऊ आऊ महतौ! आजु बहुत दिन की बादि अइसी फ्यारा किहौ, कहौ सब ठीक ठाक? या बात कहिकै चौधरी दउरि कै महतौ का बइठाइन महतौ यहु हाव भाव पाय कै मारे खुशी के फुटेहरा होइगे। फूलि कै कुप्पा होइगे। इहिमा बात या रही की चउधरी बहुत बड़े जिमीदार रहे औ महतौ एक गरीब मुला गुनी। इनकी बेचरऊ की तई 'ठकुरै हमका मउसी कहिनि' वाली बात होइगै। चौधरी साहेब बेचारे सबकै आदर भाव करा करत रहैं। अऊर नव बढ़ेन ते थ्वारै इत्तिना होइ पवतै वहुतौ झूठी अँकड़े मा अँइठा रहतै।

यह तौ यक नजीर आय की मान कै बहुत बड़ी कीमति ह्वात है। मान दइकै छोट मनई बड़े ते बड़ा काम पूरा कै ल्यात् है। भले मनई की तई मानै धन आय। रूपइया पइसा धन दउलत यहु तौ हाथे कै मइल आय, आवा जावा करता है। मुला मान राखे की तई बहुत सहे का परत है औ हेंकड़इव राखै का परत हवै। आवै जाय के बारे मइहों तुलसी बाबा अस कहिकै बरजबौ किहिन हैं-

*आवत ही हरसै नहीं, नैनन नहीं सनेह।*
*तुलसी तहाँ न जाइये, कञ्चन बरसै मेह।।*

कहे कै यहु मतलब है कि जिहिके दुआरे जाव औ वहु हहाय कै न दउरै औ कहै 'अरे आऊ आऊ' तौ हुवाँ जाब बेकारै है चहै हुआँ राजा रामचन्द्र कै अवतारै काहे ना भवा हुवै।

ई दुनियॉ मॉ बड़े मेर मेर के मनई परे हैं। कुज्जने के दुआरे जाव तौ उइ बड़े बेरूखे होइकै पूँछै लागत हैं, "कहाँ चल्यौ?" कुछ, जने तौ मुहँ ते बोलतै नहीं ना अपने लेखे उनके दुआरे कूकुर आवा है। काहे ते उइ यू समझत है। की अस ना हुवै यहु कुछ माँगि परै।

ई दुनियॉ मा मतलब लागे ते यक दुसरे के लगे तौ मनई जातै है मुला कुछ मनई नित्ता मतलबै ते नहीं जाती प्रेमौ भाव ते जावा करत हैं। इत्तिना माँ जौ उनकै अपिमान होइ जाय तो उनके उप्पर का बीते? रहीमौजी ई के बारे मॉ कहिनि है-

*रहिमन रहिला की भली, जे परसै चित लाय।*
*परसत मन मइला करै, सो मइदा जरि जाय।।*

यक कथा इत्तिना है- जुधिष्ठिर महराज के राजसूय यज्ञ माँ भगवान् श्री कृष्ण जी के कहे ते सुपच भगत का न्यउता गवा। ज्यौवे की बेर भगत सुपच सब मेर कै बिंजन यक्कै मॉ सानि कै भोग लागाइनि औ खाय लागि। दुरपदी जे बड़ी मेहनति ते भोजन तयार किहिनि उद् घिनानी औ मनमॉ सोचि डारिनि की यहु सूद खाय का जानै। कत्ती मेहनति ते हमस ब बिंजन तयार कीन मुला यौ सूद सब मिथ्या कै डारिसि। दुरपति के मन मॉ यहु भाव अउतै सुपच भक्त भोजन छोड़ि कै उठि परे। साधू ना ठहरे कउनौ ठट्ठा। पहिलेव उइ मनादन कै आयें रहै वहै निहादि होदगै यक तौ करैला दूसरे नीम चढ़ा।

सनमान कै जिन्दगी मॉ एक साधारण मनई की तई बड़ा महत्व है। बड़े मनई (धनैतन) के बातै अउरि

है। जतनी जिम्मेदारी सनमान दियै बाले कै हवात है वतनिन लेइव वाले कै अकि बहिते ज्यादा। मान पवइव कै आपनि लियाकत (योग्यता) होय का चाही। जबरदत्ती थ्वारै मिलति है? सुभाव, काम औ रहन सहन ईसब बातै देखी जाती हैं औ इनहिन ते सम्मानौ मिलत हैं। बानी कै इहिमाँ बहुतै योगदान है, कहा गवा है-

*"बातै हाथी पाइये, बातै हाथी पाँव।"*

कुज्जने इत्तिना के हवात हैं कि उनकै चहै जतनी खातिर कौन जाय, भटकेन रहत हैं। इनमाँ उइ तना के मनई जे तुनुक मिजाजी हवात हैं ज्यादा बेकार माने जात हैं। सनमान करइ मा तौ आपन जिब तिकारि कै धै घात हैं उनके मनै नहीं भउतै उद् कवनिव न कउनिव कमी या तौ निकरिहै या तिनिगिं जइहैं अइसै बाबू साहेबन का बताबा जात है 'भला है पान मान कै भाई।

इलाही कै यह शेर हम कब्बौ सुना रहै जउन इत्तिना है-

*इलाही तूने कैसी-कैसी, सूरत ये बना डाली।*
*कि हर सूरत कलेजे से, लगा लेनेके काबिल है।*

यही विचार वाली बात माँ यक परकार मनइनु कै इत्तिना है की उनका का कहा जाय, समझै माँ नहीं अउतै। जहाँ द्याखौ हुवै खीस काढ़े खड़े रहा करत हैं, अतनै नहीं की हुआँ जायें या बने रहैं, उइ अपनै ओसाये रहत है। कुज्जने भइया होरि जे अपना का बड़े देखावै के चक्कर माँ रहत है, दइव की किरपा ते लकलकौ बनाय ल्यात् हैं, उइ हर जगा सीना फुलाये टहरा करत हैं मुला उइ जौ दरबारगीरी माँ जात हैं जौ उनकै दशा धाखै वाली रहत है। कोऊ नहीं उनते बोलतै चलतै उइ परेषान रहा करत है, उनते छोट मोट टहलौ करायी जात है मुला बाहेर जौ निकरत हैं तौ बहँकै लागत है की भइया हमते यहु कहिनि वहु कहिनि वहु कहिनि, हमका आपनि बापै अस मानत हैं मुला उनके उइ भइया उनके चले आये पै गरियउतै हैं- सारि होत भिनसार आय कै मरि रहत हैं न नहाय पायी न सूधे खाय पायी।

मनई चहै बड़ा हुवै चहै छोट, जाय का हुवै चही जहाँ आव-भगति हेय। इहिमाँ यहु जरूर स्वाचँ का चही की कहौं रवाजैं न जाय। जहाँ जाय वनतू पना तें अलग होयकै जाय जिहिते, जिहिके हियाँ जाय वहिका खले ना। ज्यादा ब्वालब औ हाथी के औजार माँ तीर मारै वाली बात न करै का चही। हिनवता, गम्भीरता औ चतुर बतकही ते आपन जगा बनावै का चही। देखावटि वाली नीति बहुत दिन तक नहीं चलि पउतै।

यक बात अउर है की खातिरदारी माँ जउन मोट-महीन खाय-पिये का मिलै वहिका चुप्पे खाय -पी लियै का चही। चहै जउने बियाहे-बरात माँ जाय, न्यौते जाय गम्भीरता राखब बहुत जरूरी है। अस ना स्वाचै पावै, जिहिके हियाँ जाय वहु मनई की का बताई ई मनई का बेकारै का बोलावा। आजु-काल्हि के नवबढे न्यौतहरीं बहुतै गड़बड़ी कीन करत हैं औ जौ उइ शराब पिये हुवैं तौ कहयिनि का काहै।

जिन्दगी औ समाज मइहाँ कहै का जौ कुछ अनहोनिव होय जात हैं। मनई साफ -सुथरे मन ते आवत-जात है मुला कुछ अस परिजात है की वहू का अपना का सानै (शामिल) का परत हैं। कब्बौ-कब्बौ हम खुदै अइसी जगा पै परिथै की स्वाचै का परिजात है की हियाँ नहकै आय धइन। यहु नेउता या बरात छोड़ि दिहे होइत तौ नीक रहा। न कोऊ पूँछत है ना कोऊ द्याखत है, मुला यहु बड़कयेन (नवबढ़ेन) के हियाँ हवात है।

आखिर माँ कुल्लि मिलाय कै यहु कहै का है की जहाँ आपनि मानदारी हुवै हुवाँ बड़ी श्रद्धा ते जाय औ जहाँ आपन मान न हुवय हुआँ जाय का को कहै उ कइती का सपनेव माँ मुँह ना करै का चही। थौ तब्बै होय सकत है जबकी अपनेन समाज माँ खान-पान, नेवता-हँकारी, बियाह -गउन करा जाय। सनमान के बारे माँ रहीम कवि अस कहिनि हैं-

*मान सहित विष खाय कै, शम्भु भये जगदीश।*
*बिना मान अमिरित पिये, राहु कटायौ सीस।।*

# कहकुती अवधी माँ

**डॉ. राघव बिहारी सिंह**

बहुत पहिले कै बात आय, यक जने के दुआरे यक तगदिहा (अपन पइसा मांगने वाला व्यक्ति) बइठ रहा। घर कै पुरिखा अपने घर मां लुकान रहा। तगदेहऊ बड़ी देर तक ओनात रहें की अब निकरैं, अब निकरैं। तहुलिक नावैं के यक जने दूसरि मनई वही की निकरि परे। उइ बड़े कुटुक्वार (निन्दा करने वाला व्यक्ति) रहें। देखतै दूयाखत कुटुक्वारी करैं लागत रहैं। उनका देखतै मसाला ढारि दिहिन।

*सात-पांच की कउन चलावै, सुन रे सारे सौ कै,*
*ई द्वारे ते लौटि जात हैं सत्रह-सत्रह सौ के।*

अतना कहिकै बुढ़ऊ हँस दिहिन। महाजन चुप्पेन लउटि गवा और जिहिका कर्ज दिहिस रहै उनके उप्पर दावा ठोंकि दिहिस औ जे कर्ज लिहे रहें दउरत-दउरत उनके सब करम होइगे। यहु परभाव आय कुटुक्वारी कै।

कहूकुती और मसला ई सब का बड़ी सीख घात है काहे ते की कउनिव न कउनिव बारदात, कमी और समस्या का लइनि कै ई कही जाती हैं। या लम्बी कहकुति घाखौ कतनी कढ़ी भई है -

*ज्वान रोगी, बैद रोगी, शूर पीठी घाव रे,*
*किरिया कै कै भीख माँगै, इनहीं जनि पतियाव रे।*

*इहिमा जानि परत हवै की कब्बौ, कहाँ ई सबन ते ध्वाखा रहै।*

पहिले पुरनिया मेहरारू-मर्द अपनी-अपनी जमाति माँ बइठ कै यही तिना के मसला ढारा करत रहें। वहै निहादि कहिकै कहा जात रहा-चिरई कै जिव जाय, लरिकन कै खेलउना।

कहकुती हर जगा कही जाती रही हैं और अब्बौ कही जाती हैं, मुला अपने अपने खेता (क्षेत्र) जवारि औ जगा की कहकुती अलग-अलग होती हैं, काहे ते की इनकैं बोली भाषा अलगै-अलग रहत है। कुछ अस शब्द वहिमा आय जात हैं की कुछै दूरि तक आदमी वहिका समझि पावत रहैं घाखौ तौ -

*पनही पहिरे हर ज्यातैं औ पउला पहिरि निरावैं।*
*घाघ कहैं ई तीनिव भकुहा, हसैं अउर बतरावैं।।*

अब ई कहकुती मइहाँ पउला (खड़ाऊँ का ही भद्दा मोटा रूप जिसमें खूँटी के स्थान पर मोटी रस्सी बाँधी जाती है, जिसमें अपेक्षा कृत कम सपोर्ट मिलता है), पनही, भकुहा (कम अक्ल) अस हैं जो हर जगा नहीं बोली जाती। यही तरा-साठा तौ पाठा असिया सो रसिया, या ब्रज मइहा कहा जात हवै। मन मोर महुआ चित्त भुसैले' वाली कहकुति भोजपुरी कै आय। हियां हम थोरी अइसी कहकुती घावै जउन हमरे अवध मइहाँ बोली जाती है औ इनका बात-बात मा ढारा जात हवै।

*नावैं पिरथीपाल, भुइयाँ बिसुवौ नाहीं,* यह कहकुति बिना सोचे समझे अपने लरिकन कै नाँव भूपति, भूपाल राखे पै ठूसै की तिना है। यही तिना आँख के अन्धे नाम नयन सुख आय। रहीस औ सहीस दून्हौ कै हाव-भाव अलान (स्पष्ट) रहत हैं। यही तेरे कहा गावा है कि *रानी कै बानी चेरिया कै सुभाव नहीं छुटतै।* पण्डित कै पण्डिताई, ठाकुर कै ठकुराई, सेठ के सेठाई सब जाहिर रहत है। यही तिरा कै *'कतनी अहिर बिसुन पद गावै एक अहिरई आगे आवै'* जाति कै किस्सा बतावत है।

अस कहा जात है कि समै-समै पै सबै चीज नीक लागत है। पूस मा लाइसि आम खावा जाय औ जेठ मां ह्वारा (छिल्का सहित आग में भूना चना-फल) चबावा जाय तौ वहु स्वाद नहीं मिलतै। यही तिना ते जौ माघ मां आल्हा गावा जाय औ सावन मा फगुवा गावा जाय तौ सुनै पै रिसिन लागे। यही ते कहा गवा है -

यही ते जेठ के दसहरा ते आल्हा गावा जात है औ कुआर के दशहरा ते यहि कै गाउब बन्द होय जात है। यही तिना गोहूं बोवारी ते लैकै चइत महीना भरि फगुवा, चैती होरी गायी जाती है।

मरदै नहीं मेहरुअनौ का अपनी जिन्दगी मा बड़ा तजुरबा रहा करत है। यक जनी मेहरेऊ अपनी सास कै बड़ी कूटि करै लागीं तौ यक जनी बूढ़ा उनते अस कहिन डारिन -

*ना कर सास बुरायी, तोरेव आगे आयी।*

कुछु कहकुती कउनौ किहानी या घटना कै यादि देवावा करती हैं। 'कोरवा लरिका गाँव गोहारि' नउववा कै जामा यही तिना के अहीं।

मउसम औ रितु केरे हिसाब ते दिन कै घटा बढ़ी यकदम घड़ी कै कान काटत है। कहकुति है-

*कुआर घर कै दुआर, कातिक बात कहातिक,*<br>
*अगहन दालि कै अदहन, पूस लरिकवा चूस,*<br>
*तिलवा ते दिन तिल-तिल बाढ़ै, बहुरा ते दिन लहुरा।*

मउसन कै पैमाना की तई अस कहा जात है - जै दिन जेठ चलै पुरवाई, ते दिन भादौं गर्द उड़ाई। सावन कै पुरवैया, भादौं कै पछियाव, हरा छोड़ हरबहवा लरिका जाय जियाव।-कुज्जने कहत हैं कीं सावन मा जौ पुरवैया चलै और भादौं मा पछियाव तौ खुब पानी बरसत है, मुला ज्यादा कहसुनि पहिलेन वाली कही जात है।

मउसन (बरखा) के बारे मइहाँ यक घटना अस है, यक जने बेटउनू अपने खेते मा हर नाधे रहें। उतरा नखत रहा औ कुद्दिन पहिले ते पानी नहीं बरसा रहै। उनके महतारी जौ घर ते रोटी लइकै निकरी तौ भद्दर उतरहरि हहरात रही। महतरेऊ पानी बहाय कै लोटिया घरहिन मा धय दिहिन। जब खाली खानै लइकै पहुँची तौ उनकै लरिकवा कहिसि "माई पानी नहीं लाइउ?" महतरेऊ जबाव दिहिन, उतरा बाउ बहै जौ ऊता, मेड़े पानी पियव तुम पूता। या सुनिकै लरिकऊ बासी खाय का लगा लगाय दिहिन। उइ खातै रहैं की लाग पानी बरसै और खुब पानी बरसा। उइ प्रेम ते पानी पीनि। कहै कै यौ मतलब है कि जौ उतरा नखत मा उतरहिर चलै तौ अदबदाय कै पानी बरसत हवै।

खेती वाली कहकुती कुछ अस हैं - जउनी के गे धान धना, वही के मास चना, असाढ़ वाली फसिल कुतरिक गये ते चइती वाली फ़सिल गड़बड़ाय जात है।

ई दुनिया मा मनई कोशिश करत है, काम वनि जाय तौ वाहु-वाव औ बिगरि तौ ठूसै, यही ते कहा गवा है - लागि जाय तौ तीर नही तौ तुक्का।

*कुछू न रहे ते कुछ न कुछ रहब तौ ठीकै है,* कंगाल ते जंजाल भला या छूंछि सरिया ते मरकहा डांगरै भले। यक बहुत परखी भई कहकुति है, जस जिहिकै माय बाप तस तिहिकै लरिका, जस जिहिकै घर-दुआर तस तिहिकै फरिका। खैरौ कै खैरी ना होय तौ टिकुवा तौ हवावै करे। ई मनोवैज्ञानिक कहकुती हैं।

*हाकिम कै अगाड़ी, हरहा कै पिछाड़ी* ना जाय का चही यह तौ अजमाई बात हवै। यही तिना कै अर्थ वाली हाकिम हरहा यक्कै आय सुभाव वाली बात बतावत है की हरह न जानी कब लात मारि दियय या सींग घोपि दियय औ हकिमौ पता नहीं रिसाय कै दण्ड दै डराय। जब तक पढ़िहौ मक्का काई तब तक जोतिहौ तीनि अउर पढ़िहौ लिखिहौ होइहौ खराब, खेलिहौ कुदिहौ होइहौ नबाब, ई दूनौ मानस कै विशेष रुख बतावत हैं। दुनियां की तई कही गयी या बात, दुनिया दुरंगी मकारा सरांय, कहूं खूब खूबी, कहूं हाय-हाय, कतनी सटीक उतरत है। करू करू थू मीठ मीठ गप्प या व्यवहार वाली कहकुति आय। दाना का हहा, हहा, सवारी का पर्र-पर्र, या दाना खरी कब्बौ नहीं, खरहर बार-बार, ई दूनौ कहकुती स्वारथी मनइन की तई कही गयी हैं।

कुछ डीलक्स मेर की कहकुती होती है। यक नजीर इत्तिना है -

*जाको मारा चाहिए, बिनु पइसा बिनु घाव,*
*ताको यही बताइये, घुइया पूरी खाव।*

यही तिना कै यक अउर है - ऊंच ते बैर नीच के खाये, ई दूनौ के गाय बजाये। या इहिमा दुयाखा खाय -

*विप्र पहरुआ चेरि धन, औ बिटियन कै बाढ़ि,*
*अतनेव पै धना ना घटै, तौ करै बड़ेन से रारि।*

जिहिकै धन जात है वहिकै धरमौ जात है, ऊँट हेरान डोकिया माँ ढूढ़ा जात है, आवा मोहिका लइगा तोहिका, पहिरै मोट खाय महीन, इत्तिना की छोटी-छोटी कहकुती रोजमर्रा वाली अहीं जे दुयाखै मा तौ कउनौ बड़ी महत्वपूर्ण नहीं है मुला इनके भाव बहुतै ऊँच औ मानै वाली हैं।

घाघ-भड्डरी, गिरधर कविराय, साईं औ यही तना के अउर बहुत कहकुतिहा कहकुतिन कै खजाना दिहिन हैं। इनकी पंचन की बातैं गाँठी बाँधै वाली हैं। दुनिया दारी मा मनइन के मुँह ते मेर-मेर के मसला, कहकुती रत्ती-रत्ती बात पै निकसा करत हैं। सारी कहकुती अनेभव ते भरी औ शिक्षा देय वाली हैं। हमका पंचन का इनका पढ़ै, समझै औ जानै का चही। *इनकै मतलब आजौ लागत है औ आग्यौ लागे।*

# कहानी

# भैरो क माई

विद्या विन्दु सिंह

भैरो का माई क आज चित ठेकाने नाय रहा। महादेव के याद करिकै रोवत-रोवत मूँड़ पिराय लाग, आँसू थमबै न करै। ई आँसू महादेव के याद म रहा, अपने फूटे करम के लिए रहा औ भैरो क फीस जमा करै क चिन्ता म रहा। सब समय क फेर होय।

फूलमती जब सत्रह बरिस क रही तबै बियाह होइगै रहा औ अठारहवें बरिस मा भैरव क जनम होइगै रहा। सासु नन्द फूलमती कै मुंह जोहै लागीं। फूलमती क जैसे नाव रहा वइसै गुलाब कै फूल यस सूरत रही, काम काज करै म वतनै फुर्त और चतुर। फूलमती क मर्द रेलवई म ड्राइवर रहिन। कमाऊ पूत क मेहरारू होय के नाते भी बड़ा ओछार दुलार रहा फूलमती कै।

भैरो के जनम क खुसी म घर ढोलक और सोहर से गूंजिगै रहा। आसपास के सारे गांवन म सोठौरा बंटा। मुला भगवान की मरजी के कौन जाने। फूलमती कै मरद रेलगाड़ी कइके जात रहे। छुट्टी मंजूर होइगै रही। आज सारा सर समान खरीद कै बक्सा तैयार करि कै धइ आय रहिन।

ई गाड़ी कानपुर सवेरे पहुंचि जाये। नहाय धोय के समान लइकै बिहान घरे रवाना होइ जाब। महादेव की आंखिन म फूलमती क फूलबदन नाचि उठत रहा। लाल-लाल गोल मटोल लरिका लिहे फूलमती कैसन लगति होई। यही कल्पना म महादेव का मन तेजी से गाड़ी आवति देखाय परी।

महादेव जब ले गाड़ी म ब्रेक लगावै क कोशिश करैं गाड़ी से गाड़ी आइके भिडिगै। हाहाकार मचिगै।

तमाम यात्रियन के साथे महादेवौ कै इंतकाल होइगै।

महादेव कै साथी बिहारी ई बज्रपात कै खबरि अउर ओनकै सर समान लइके जब आय तौ फूलमती की दुनियाँ म अन्हियार होइगै। ससुर पहिलेहि भगवान कॉ प्यारा होइगै रहिन। सासु ई सदमा नाय बरदास कै पायीं धीरे-धीरे घुलत-घुलत सालि भितरै म वनहूँ चलि बसीं।

फूलमती बेटवा कै मुंह कै जीयत रही।

सासु के मरतै देवर जेठ सब आँखि फेरि लिहिन। एक बेवा कै मदद करैके के कहै, ओकार जीयब दुसवार कै दिहिन। सवेंरे उठतै फूलमती आपन मनहूस चेहरा छिपावै की खातिर लुकानि फिरै। केहू कै सामने परि जाय तौ सारा दिन कान छेदि उठै। जब बड़ा छोट सबकै सोपत लागि जाय, तब बचा खुचा महतारी बेटवा खाइ पी कै गुजर करैं। लरिकन के साथे खेलै जाय तौ केहू-केहू दुत्कार कै भगाय देय। औ केहू-केहू ओकरे ऊपर तरस खाय के कहै - "बेचारा बिना बाप कै लरिका होय जिन भगावा।"

भैरों देही, दिमाग से कमजोर होय लगा। एक दिन फूलमती सपने म महादेव क देखि कै रोवै लागि। महादेव बोलिन ऐसे रोई के त तू पालि भइउ भैरों कै? अरे पगली हम तो तोहरे आत्मा म बसा हई। कहूं दूर थोड़े गै हई। हर समय तोहरे साथ हई। उठ, रोउब बन्द कर।

फूलमती क आंखि खुलि गै। सामने शंकर पार्वती कै तसवीर लगी रही जौने म आधी देह पार्वती

माई की आधी संकर बाबा क। उ सोचै लागि महादेव पार्वती दुई देंही म एकै हैं। इहै बाति त सपने म भैरों क बाप कहिगै। ओकरे चेहरे पै संकल्प चमकि गै।

ऊ उठिकै खड़ी होइगै हम्में अपने बेटवा कै जिन्दगी माई-बाप दूनौ बनि कै सँवारे क परी। भैरो की उमिरि क छोट-छोट लरिका स्कूले जाय लागिन। भैरों क छठवौं बरिसि चलत रहा।

ऊ भैरों क लइकै गाँव के स्कूल पहुँची। नाव लिखाइ कै लौटी त आँखिन म मारे क सपना झूलत रहा। हमार भैरो पढ़ि लिखि कै बाबू साहेब बनि जायें। खूब साफ लक-दक कपड़ा पहिरै। खूब ठोंक बजाय कै बेटवा के बियाह करब। झिलमिल-झिलमिल रंग-बिरंगी सारी पहिरे पतोह आये। ओकरे पायल, पाँवजेब के रुनझुन से घर क कोना कोना गूंजि उठे।

बिना बाप क लरिका है, कहूं बिगरि न जाय। यही से हमहूं क राति-दिन चौकन्ना रहे क परी कि ठीक से पढ़त बाय कि नाय।

फूलमती भैरो क नीन सोवैं, भैरों क नीन जागैं। भैरो क बुद्धि तेज होय लागि, मुला खिलाड़ी बहुत रहा।

गांव के स्कूल में ऊ भैरव क दाखिला कराय के लौटी त जेठ-जेठानी दुआरेन पै खड़े मिलि गये।

कहाँ गै रह्यू दुलहिन! फूलमती क जेठ तमकि कै बोलिन।

फूलमती घूंघट खींचि कै एक ओर मुंह कैके धीमे से बोलि उठीं - भैरा क स्कूल म नॉव लिखावै गै रहेन।

जेठानि ओठ टेढ़ि कै के बोलि उठीं - "घर म और केहू त रहा नॉय, अकेले यनहीं रहीं दाखिला करावै जाय के लिये। कैसे सब जाने कि बेवा कै मदद करै वाला केहू नाय बा।"

फूलमती चुप रही। काव बोलैं? कैसे जवाब दें कि पन्द्रह दिन से सबसे कहिके थकि गया कि भैरों का नॉव मदरसा म लिखाय द्या, मुला केहू नाय सुने रहा।

फूलमती कुछ बोली नाही, भीतर चली गयी।

भैरो मदरसा जाये लगा। फूलमती कुछ दिन पहुंचावै जाय और संझा क घरे लावै जाय। फिर भैरो अपने आवै जाय लाग। अब केहू के चिढ़ावै पे ऊ चिढ़ै नायें। केहू बेचारा कहिकै दया दिखावै त ओंकों बुरा लागै।

फीस बहुत मामूली रही, मुला फूलमती के लिये उहौ भारी परै। अपने लगे जौन रहा भर्ती करावै के समय वही म से खर्च होइ गै रहा।

महादेव कै पेंसन अबहीं तक नाहीं मिली रही। हादसा म दोषी ड्राइवर रहा कि नाहीं एकर जांच होत रही। महादेव की विधवा के अधिकार के अधिकार से नौकरी खातिर फूलमती अरजी लिखाय कै भेजि चुकी रही। मुला जहां से जवाब आय कि "मामले की जांच हो रही है। अभी कुछ नहीं हो सकता।"

पार्वती क धोती तार-तार होय गै रही, पर कैसे कहैं?

अपना चाहे जइसे रहिलेय लरिका क कपड़ा लत्ता, फीस क इन्तजाम त करही क रहा। फूलमती आपन गहना एक-एक कइके बिचि कै खर्च चलावै लागीं।

जब भैरव के लिए कुछ लावै त जेठ-देवर कै लरिका आइकै खड़ा होई जायें। अब कैसे भैरव कै अकेले देय, यहीं संकोच म थोड़ा बहुत सब पै खर्च करै क परै। जेठ-देवर कै लरिकै जब कुछ नवा पहिरै खायें त भैरव चुपचाप देखै। फूलमती कुछ न बोलैं। लेकिन देवरानी-जेठानी अपुनै से बोलि उठैं- "यनकै मामा पठइन हैं, या मौसी पठई हैं।"

फूलमती के तो नैहरौं म केहू नाय रहा अकेली औलाद रहीं। पितियाउत भाय फूलमती की माई कों डेराय धमकाय कै ओकर खेत-घर लिखवाय लिहे रहा। ओसे पूरा गांव डेरात रहा।

सास ससुर रहे नाही। जेठ-देवर बारी संभारत रहैं। फूलमती एक हिस्से क हिस्सेदार रही। पै दबी-दबी रहत रही। ओकर दुइ जून क रोटी भी भार रही सबके लिए। घर मा भैस लागत रही, लेकिन भैरो क दूध नायें मिलै कबौ बटारिया क माठा बासी तिवासी मिलि जाय तौ भैरो ओठ चाटि-चाटि पीयै। फूलमती दूध की ओर भैरो क ललचियात नजर देखि कै कइयो बार जेठानी से कहिउ दिहिस - दीदी एक घूँट दूध भैरो क दै द्या।"

जेठानी बोली - "लै जा पियावा न हम कौन अपुना खातिर धरे हई और सचमुच एक घूँट के स्थान पर दो घूँ दैके परछी लैके चली गयीं। ऊपर से सुनाय गयीं - अरे इज्जत बरे दुइ बून घिउ खातिर जमाइ देइेथै। नाहीं त का हमैं नाय नीक लागत कि लरिकै परानी पीयै खॉय दूध-दही।

फूलमती कुछ बोली नाहीं ऑखिन म उमड़त ऑसु रोकै क कोशिश करै लागीं पर कहाँ मानत हैं ई आँसू। फूलमती जानथिं कि रात म सोवत कै अपने लरिकन का और आदमी का एक-एक गिलास दूध रोज पीयै क देथीं।

फीस क पैसा क जब नाय इंतजाम भै त पार्वती से बोलीं कि भैरों क फीस जमा करै क बाय। जेठानी बोलीं-"का हम पैसा गाड़ि कै धरै हई? फूलमती बात नाहीं बढ़ावै चाहत रही। बोली- दीदी! थोड़ा सा गेहूँ बनिया किहाँ दैके पैसा लै लेई।

भैरो क फीस आज न जमा होई त नॉव कटि जाये। पाँच दिन से हम चिरौरि करि कै रोके हई।

यतना सुनतै जिठानी कै पारा गरम होइगै - नाव लिखवावै से पहिले दीदी से पूछे रह्यू। मरि-मरिकै हमार पूत भतार खेती करै औ तू माई पूत बइठि कै खाबौ करा औ बनिया किहाँ बेचबौ करा। हे भगवान अब यह घर कै भगवानै मालिक है।"

बतकही सुनिकै जेठ आइ गये। "का भै मलकिन! काहें गोहार मचाये हयू।"

अरे हम काहे गोहारि मचाइब? लै जा एक बोरी गेहूँ बेंचि कै भैरो क फीस जमा कराइ द्या। हमार लरिका त भैंइस चरावै, खेत जोतै, हम नायें पढ़ाइ पायन। अब भतीजे क पढ़ावा, ऊ तलूका तसीले, कलट्टर बने। तूहूँ कॉ बुढ़ापा म सिहासन पै बइठाये।

फूलमती उहाँ से उठि कै चली आय। देर तक जेठ-जेठानी बकझक करत रहे। रात भर सोय ना पाइस भैरो क माई। जब से महादेव मरिन तबसे रोवतै त बीतत रहा। मुला एक ढॉढस रहत रहा कि देवर जेठ के साथ रहिके सबके सहारे से जिनगी कटि जाई। जवान बेवा नान्ह भरे क बच्चा क लैके कहाँ जाब?

महादेव क साथी लोग आइके कहि गय रहे कि महादेव क जवन क्वार्टर मिला रहा वहीं म चलिके रहा। मुला फूलमती अपने ससुरारि वालन पै भरोस कैके घर से नाय गयी। परदेस म के सुख-दुख म साथ देई। महादेव क क्वार्टर दूसरे क मिलि गय। सब कहै कि फूलमती भौजी आइगै होंती त केहू खाली न कराय पावत।

वनही सबके कहे से फूलमती नौकरी क अरजी भेजि दिहे रही, मुला कुछ होय नाय पाइस। सब लोगे कहैं कि यतनी दूर से खाली कागज भेजि म जातीं त ओकर असर पड़त। रेलवे के मंत्री जी से फरियाद करतीं त जरूर नौकरी मिल जात।

सहर वाले ई कहैं औ गांव वाले डेरवावै। अरे महादेव बहू। इहाँ तोर खेत बारी बा, घर बा, कहां दर-दर ठोकर खाये जाबू।

फूलमती केकर सुनै मानै? यही उलझन माँ आठ बरिस बीति गय रहा। आज फीस कै इन्तजाम न होय पाये से औ रोज-रोज जेठ-जेठानी देवर-देवरानी क ताना सुनत-सुनत ओका आपन गलती समझ म आई गय। अब ऊ केसे मदद माँगै?

भोरहरे में आंखि लागि औ तुरतै चिरई क बोली सुनिकै आंखि खुलिगै। दर्द के मारे मूड़ फटा जात रहा। मुला उठे क त हइहै है। सारे घर कै झाडू, बुहारू, गाय भैंस कै चारा पानी, सारि क सफाई, गोबर पाथव, ई सब काम फूलमती के जिम्मे रहा। देवरानी के जिम्मे रसोई क काम रहा। जेठानी मलिकाना सँभारे रहीं।

फूलमती उठिके खेते की ओर चलि पड़ीं। अँजोर होये से पहिले दिशा मैदान से लौटब जरूरी रहा। फिर कहूँ ठेकान न मिली।

घर से निसरतै ठकुराइन अइया मिलि गयीं फूलमती निहुरि के गोड़ धरिस त पूँछीं। कौन है रे?

"हम हई अइया।"

"के महोदव बहू?"

"हाँ अइया !"

"अरे दुलहिन कैसे है रे! सुनेन है कि भैरो क नाव लिखाई दिहै हये।

हाँ अइया लिखाय त दिहे हई। मुला अब तो नाव कटि जाये, जनात बाय।"

"काँहे रे?

फीस नाय जमा कै पावत हई।" कहिके फूलमती फफक पड़ी।

ठकुराइन अइया से ऊ आपन सब दुख कहि लेत रही। आज सवेरे ओकरे मन मां आयो गै रहा कि आज अइया से मदद मांगब। काँहे से कि जेठ-जेठानी के झगरा करै के डर से केहू उधार देय या मदद करै क हिम्मत नाय करत। अकेले ठकुराइन अइया क गाँव मॉ सब अदब माँगत रहा।

ठकुराइन अइया आह भरिके बोलि परीं - अरे महादेव बहू ! हम जानित है रे कि तोहार देवरान-जेठान केतनी कँड़ाकुल हयीं। तोहार खेत-बारी सब जोतत-बोवत हइन औ तू रात दिन खटत हयू। तबौ तोहार दुई जून कै रोटी वन्हें भारी लागत बाय। आज आयि जाये हमरे लगे। हम फीस कै पैसा तोके दै देब।"

भैरो क फीस जमा कै के फूलमती फिर ठकुराइन अइया के यहाँ पहुँ गय। सवेरे जल्दी से पैसा लैके चली गय रहीं।

अइया चाउर बीनति रहीं। बैठिके बीनय लाग। मुँह झुरान रहा।

ठकुराइन बोलीं- "दुलहिन रहै दे जा गुड़ औ लइया निकारि लाव। पहिले खाइ के पानी पी ले, तब बैठ।"

पानी पियाये के बाद ठकुराइन पूछे लागीं - "ऐसे कैसे काम चले दुलहिन? कुछ आगे क सोचै क परी न?"

का करी अइया। अब तो सोचित है कि भैरो क लैके कानपुर चली गय होइत त के जानै काम मिलि गय होत। तब तो हाथे म चार ठौ पैसो रहा। अब तो हाथ खाली है।

त अब से चली जा न। हम खर्चा दै देब। कबौ होये त लौटाइ दिहूया। नाहीं त समझब कि गया ठाकुरद्वारा कै आयन।

फूलमती ओनके गोड़े पे गिरिके रोय परीं। अइया समझायीं-बुझायीं कि पहिले घर वालन से कहा कि लै चलैं। ऐसन वै सभे राजी होइ जॉय तब तौ कौनो बाति नायँ। मुला बखेड़ा कइकै मना करैं, त अकेलै चली जा। उहाँ बिहारी त हइयै है।

बिहारी क पता फूलमती के लगे रहा। बिहारी बगल के गाँव के होयँ, जौन महादेव के मरै क खबरि और सर समान लैके आय रहिन।

फूलमती क मुँह से कानपुर के बाति सुनतै घर म हड़कम्प मचिगै। केरावा भारा मानिल्या न लागी,

रेलवे क पास बा, पै उहाँ रहै क खरचा बरचा लागी। ऊ कहाँ से आये। जे इलके जाये ओकर त केरावा भारा लगवै करी। और उहाँ चलत बा। औ जवान जहान मेहरारू सहर म अकेले कैसे रहे? कहूँ ऊंच नीच होइगै तौ कहूँ मुँह देखावै लायक बिरादरी म हमरे सब न रहि जाब। काव कही दुनिया कि बेवा क परवरिस नाय कै पाइस परिवार, तबै ऊ सहर म चली गै।

फिर धीरे से एक बात और उठी देवर की ओर से कि भउजी जौ लिखि देयँ त ई नौकरी हमें मिलि जाये। हम उनका पलके प बैठाय क रखब।

फूलमती के घरे दुइ दिन मंथन चलत रहा।

जेठ जी बोलिन - "दुलहिन हमरे लगे तौर रूपया पैसा से आजु कालि हाथ तंग बाय। तूँ अपने हिस्सा क खेत गिरवी रखै चाहा त केहू कै हाथ गोड़ जोड़ि कै इन्तजाम करी। धीरे-धीरे चुकाइ कै छोड़ाय लीन जाये।"

फूलमती पहले से ही इन उत्तरों के लिए तैयार थी।

दूसरे दिन ठकुराइन अइया से ऊ कुछ पैसा लै लिहिस। तय किहिस कि भैरो क साथे लइके भोर की गाड़ी से कानपुर के लिए रवाना होइ जाये।

फूलमती क कुछ उम्मीद रही कि शायद चलत कै कुछ रूपया केहू पकड़ाय देय। मुला ऐसन कुछ नाय भै। उलटे पूछा गै - "कैसे खर्चा कै इन्तजाम करबू, जात त हयू?"

फूलमती ऊपर आकाश की ओर देखकर मूड़ि झुकाइ लिहिस औ धीरे-धीरे बाहर निकरि आय।

गाँव कै कैयो औरतें मरद लड़िकै सब सड़क तक पहुँचावै खातिर साथे निकरि परिन।

गाँव के एक जने क बैलगाड़ी कस्बे में सामान लादे जाति रही। सब मिलिके बैलगाड़ी रोकवाइन और फूलमती माई-पूत का गाड़ी पै चढ़ाई दिहिन। गाड़ीवान स्टेशन तक पहुंचाइ दिहिस।

फूलमती जब कानपुर पहुँचीं त स्टेशन से बाहर क क्वार्टर पूछत-पूछत पैदरे पहुँचि गय। बिहारी बड़े आदर से वन्हैं अपने घर म रहै क ठौर दिहिन।

इतवार क फूलमती पहुँची रही। सोमवार से फूलमती क दौड़ भाग शुरू भै।

फूलमती क ई देखि कै भारी अचरज भय कि ओकर अरजी एक मेज से केतनी मेज तक दौड़ लगावत रही। फूलमती कों लागि कि ऊ चिट्ठी नाय आपन बहिन होय जौन हमार दुख दर्द लैके पूरे रेलवई के दफ्तर माँ घूमति बाय। ओकर मन कहिस कि ऊ चिट्ठी जौने क इहाँ अरजी कहि जात है, ओका लैके करेजे से लगाय लेय। मुला ऊ चिट्ठी अब देखै क नाय मिलि सकत। ऊ फाइल बनि गै बाय। औ एक मेज से दुसरी मेज, फिर तिसरी और आखिर मा मंत्री जी कै हियां पहुंचि गै।

ऊ बिहारी के साथ मंत्री जी के पास मिलै गै। मंत्री जी जनता से मिलत रहे। उहौ जनता रही। पहुँचि गै हाथ जोरे। पाछे-पाछे भैरो महतारी क अँचरा क खूँट पकरि के चलत रहा।

उबले लाइन म खड़े-खड़े फूलमती क नम्बर आवै भीड़ क एक रेला आइकै फूलमती क दूर ठेलि दिहिस। भैरो क गोड़ कुचलि गै रहा केहू के बूट से। ऊ बिलबिलाय के रोई परा। औ यतने में टाइम खतम होईगै। मंत्री जी भीतरै-भीतर लौटि गइन। फूलमती ओनके बहिरे निकरै क इन्तजार करति रहीं।

जब दोपहर होइ गै त भैरव क भूख पियास देखि के रोवाहिन होईगै। औ बिहरे आय के बिहारी का अगोरै लागि।

एक घंटा बाद बिहारी आइन त भौजी क रोऑसी खड़ी देखि कै तसल्ली दिहिन - "कौनो बात नाय। बिहान फिरि आवै क परी।"

दूसरे दिन मंत्री जी अउबै ना किहिन।

फूलमती रोज सवेरे तड़के तैयार होइ जायँ। बिहारी अपने दफ्तर जात कै राही मा फूलमती का

मंत्री के दफ्तर मॉ उतारि देयें।

पन्द्रहवें दिन मंत्री जी क निगाह फूलमती पै परी। ओकरे चेहरे पर ऐसन बेबसी रही, जवन ओकरे चनरमा ऐसन सुन्नर मुंह पै गरहन यस लागत रहा।

मंत्री जी अपने सेक्रेटरी से ओका बोलवाइन। ऊ अचकचाय उठी। ऊ तो सोचति रही कि आज फिर वापस जाये क परी। मंत्री जी के लिए लिखी हाथ क अर्जी जवन रोज-रोज निकारत धरत मुड़ी-तुड़ी होइगै रही मंत्री जी के आगे बढ़ाइ दिहिस। मंत्री जी कहिन- "इनकी फाइल मँगाकर आज मेरे पास भेज दीजिए।"

बिहान भै फिर ऊ गै त सेक्रेटरी साहब बोलिन - मंत्री जी आज फाइल पे आर्डर कर दिये है कि जल्दी से जाँच करके विधवा को न्याय दिया जाय।

फूलमती अब फिर बिहारी के साथे रेलवे दफ्तर रोज पता लगावै लागि। एक अफसर से दुसरे तक फाइल घूमति रही।

जब केहू कहै कि फाइल चल रही है त फूलमती हँसि देय - "चलत त हम हई, फाइल बेचारी बिना हाथे गोड़े क कैसे चलि सकत है। लेकिन सचमुच एक महीना तक फाइल चलत रहि गै।"

फूलमती क चिन्ता रही कि भैरो क पढ़ाई क नुकसान होत बाय। लेकिन बिहारी क दुलहिन औ उनके बच्चे समझावैं - "भैरो घर ही म एकतना पढ़त बाय कि ओकै हरजा न होये।"

औ एक दिन फूलमती अपने साथ नौकरी क चिट्ठी लैके लौटी। ओहि दिन बिहारी क दुलहिन के गले लगिके खूब रोई।

बहिन! तोहरे सब यतना किह्या कि आपन सगे सम्बन्धी नाय करि सकत है। फूलमती क नौकरी लागि गै। पढ़े लिखे नाय रही, यही से चपरासी क जगह मिली।

बिहारी अर्जी देवाय दिहिन क्वार्टर के लिए। फिर वही अरजी, फाइल, मेजों पर दौड़ने लगी और दुइ महीना बाद मिलि गै। तबले माई-पूत बिहारी के घरे मा रहिन।

बिहारी और महादेव क गहरी दोस्ती रही। दोस्त के परिवार के लिए यतना कइके बिहारी का बड़ा संतोष होत रहा।

फूलमती अपने घर मा गयी त लाग कि नैहरे से बिना होति बा। घर साफ सफाई कैके त गाँव जाये क खातिर छुट्टी लिहिं। भैरो क टी.सी. लाइके इहाँ नाव लिखावै क रहा। ठकुराइन अइया कॉ और गाँव वालन का देखै क बड़ा मन होत रहा।

फूलमती गाँव में अपने घर पहुँची त कुछ देर तक केहू बोलबै नाय किहिस। लागै कि जैसे कोई पाप कइके लौटी होय, ऐसन निगाह से घर वाले देखत रहिन। गाँव के लोग आइन त हालि-चाल पूछे पै फूलमती आपनि नौकरी औ क्वार्टर मिलै क बात बताइस और कहिस की भैरो क खारजा (टी.सी.) लेके फिर जाये के बाय। यही खबर से घर वालन क चेहरा बदलि गै। मौन टूटि गै।

देवरानी लोटा क पानी लैके पहुँचीं, "दीदी लावा गोड़ धोय देई।" फूलमती लोटा हाथ से लै लिहीं- "नाहीं दुलहिन। रहै द्या हम धोय लेब।"

जेठानी चना-चबैना मँगवाई- "पानी पी ल्या और फिर नहाय धोय के खाय पिया।"

फूलमती क मन भरि आय। इहै घर होय जहाँ से बिना कुछ खाये पिये अपने बच्चे के साथे जब ऊ निकरी रही तब केहू न एक पइसा दिहे रहा औ न खाये क-पीये क पूछे रहा।

महादेव जब रहिन तौ सहर जाये लागैं त उनके महतारी ठोकवा (मीठी पूड़ी), अचार, चबैना, गुड़, सतुवा, चिउरा, सांवा क खरबुज (उबले भुने सांवा को कूटकर निकाला हुआ चावल जो भिगोकर दूध से खाया जाता है।) कच्चा चना सब बाँन्हि देत रहीं। महादेव लाख मना करैं लेकिन माई कहाँ मानै वाली

रहीं।

वहि दिन जात कै फूलमती सोचति रही, पैसा नाय रहा त मानि लेइत है, मुला भैरव के खातिर दुइ दाना लइया औ गुड़ त दिया जाय सकत रहा।

ठकुराइन अइया चुप्पै से चलत कै एक पोटली पकराइ दिहे रहीं। राही मॉं भैरो जब शुखान तब फूलमती पोटली खोलिस। तब सोहारी, भाजी और गुड़ देखिकै फूलमती रोइ परी रही। भैरो माई क रोवत देखि के पूछे रहा, तब फूलमती लरिका क जिउ न दुखाये, यही कारन कुछ नाय बताये रहीं। मुला भैरव अब समझे लाग रहा प्यार और दुतकार क भाषा।

आज कितने दिन के बाद बड़की माई मूड़े पे हाथ फेरीं त भैरो क वहमन प्यार नाहीं देखाय जानि परा।

बिहारी काका भैरो का दुनिया क ऊंच-नीच रोज समझावत रहिन औ इहौ कहे कि भैरो! तू मेहनत से पढ़ा बेटा। तोहार माई तोहरे लिए केतना तकलीफ उठावत हयीं। एकर खयाल रखा। बिहारी काका इहौ कहे रहें कि तू आपन भला बुरा सोचै क दिमाग रखा। तोहार माई बहुत सीधी भोली हयीं। आज काल्हि दुनिया बड़ी चगड़ होईगै बाय। तू अपने ताऊ से मॉंगि के कुछ गोहूँ चाउर लिहे आया। तोहरे माई क तनखाह त मिले पहली तारीख कै तबले खर्चा चलावै क परी। तू लरिका हया तोहरे कहबे ठीक रहे। माई तोहरे संकोच के मारे कुछ बोलि ना पइहैं।

अबले हमरे घरे रह्या तबले तोहरी माई संकोच के मारे मरी जाति रहीं। अब तौ दूसरे क्वार्टर मा नोन से लैके लकरी तक कै इन्तजाम करै प परी। हम देबौ करब तौ तोहार माई बोझा मानिके एहसान तरे दबत रहि है। यहिलिए तुहैं समझावत हयी।

दाना पानी कइके भैरो अपने ताऊ के लगे दालान मा चला गै। ताऊ हालि-हालि पूछिन। कहॉं रहत रह्या? केकरे इहॉं खात रह्या? माई तोहार दफतर केकरे साथे जाति रहीं? काम हेरे जाति रहीं तौ तूहें लैके जाति रहीं कि नाय? केतनी देर मा लौटति रहीं। दिने मा लौटि आवै कि रांति होइ जाति रही?

भैरो ताऊ के कुलि सवाल कै जवाब सच-सच देत चला गै।

अब ताऊ पूछिन तोहरे माई कै दिन कै छुट्टी लैके आय हयीं?

ऊ बोला परसों जाये क है। आज इतवार है। बिहान सोमवार हमार क स्कूल खुले त टी.सी. लैके जाय बाय।

भैरो चुप होई गै। कैसे कही ताऊ से राशन वाली बात? फिर सोचिस कि अबहिनै कहि देई, नाहीं त फिर पता नाहीं कब बैठिहैं।

दादा! हमरे सब का थोड़ा राशन अबकी दै दूया। और कुछ रूपया दै दूया। माई बड़ी परेशानी मॉं बाय। बिहारी काका कै काफी रूपया कै करजदार होई ग हइन।

अब ताऊ कै भौहन मॉं बल परि गै। बोलि परिन - "तोहरे बिहारी काका हमरे सबसे ज्यादा सगा होइ गै हइन ना? ऊ तौ नौकरिहा होंय, हमरे सब कहॉं पाई रूपया? बैल यस जॉंगर पेरिके अनाज उपजाइत है। सबकै पेट भरी कि बेचिके पैसा बनई?"

अब ओकर ताऊ गुर्राय परिन - ई अपनी माई से जाइके पूछा। जवन बिहारी के चक्कर मॉं कुल कै मान-मर्यादा भूलिक मनाही किहौ पर चली गयीं। बेवा कै ई लच्छन हमरे खानदान मा न कबौ रहा, न हम बर्दाश्त करब।

अब भैरव के भीतरे फूटत लावा भड़भड़ाय परा। ऊ उठिके खड़ा होइगै। दादा हमरी माई के कुछ कहबा त ठीक न होई। हमार माई देवी होय देवी।

भैरो क बात सुनतै ताऊ उठिकै खड़ा होईगै और जोर-जोर से बोलै लागै। वाह बेटा! वाह। बित्ता

भर कै अपना ह्या और जीभ चार हाथे कै।

बाय। देवी! हाय देवी ! इहै देविन कै लच्छन होयकि पराये मरद के साथ राति भये लै घूमैं। अरे हमार भाय मरिगै, हमार त बाँहि कटिगै। कबौ ऊँची आवाज म हमसे नॉय बोला रहा। औ तू ....

जोर-जोर आवाज सुनिकै सब औरतें बहिरे दलानि की ओर दौड़ी के झगरा होय लाग? फूलमती भी ड्योढ़ी पै खड़ी होइगै। जेठ जी केकरे ऊपर यतना जोर से चिल्लात हइन। सामने त खाली भैरो खड़ा बाय। भैरो क लाल भभूका आँखि और चेहरा देखिकै ऊ चौंकि परीं। भैरो काव कहि दिहिस यस कि जेठ जी बिगरि परे हैं।

भैरो धीरे-धीरे महतारी के लगे आय और ओकर अंगुरी पकरि के बोला - "माई इहाँ से ई समझि लिह्या कि इहाँ हमरे सबके लिए कौनों जगह नाय बाय। हम पढ़ाई छोड़ि देब माई! हम मजूरी करब औ आपन तोहार पेट भरब।"

फूलमती क लाग कि भैरव जवान होइगै। जवन भैरव काल्हि तक हमरी गोदी मॉ लुरियाय-लुरियाय खेलत रहा, मचलत रहा, ऊ आज हमैं सहारा देत बा।

माता के गौरव बोध से ऊ भरि उठी औ महतारी पूत घर से निसरि परे। पीछे घर औ गाँव के लोग मनावत रहिगै।

# पुरुषार्थ के करिसमा

**डॉ. जय सिंह व्यथित**

अषाढ़ सावन कै महीना रहा। पीली नदी अपनी जवानी क दिन पाइ के मदहोस रही। ओकरे उत्ताल तरंगन के बीच परा कुरमी किसानन कै गाउँ हरीपुर बिनास लीला क केन्द्र बनि चुका रहा। बाढ़ गाउँ का चारिउ ओर से अपने बिकराल बिनासकारी कातिल पंजा मा जकड़ि के लीलि लेइ क उद्यत देखि परत रही। गाउँ बासिन क निकरब पइठब टट्टी पेसाब सब दूभर होइ चुका रहा। जउनिन ओर लखैं पानिन पानी देखि परत रहा। 'छुद्र नदी भरि चली उतराई' तुलसी ऐसनइ बरे लिखेन। वर्ष का आठ महीना जवनि पीली अपाहिज बुढ़िया जइसनि खीसि निपोरे बूँद बूँद पानी क बरे तरसति रही, जेहिका गाउँ के लोगे 'सूखी पिलिया' जैसन अपमान जनक नाउँ लइ के अपमानित करत चला आवत रहेन, ऊ आजु छुछेरेपन की चरम सीमा पे इठलाति अहइ। सब पसु परानी त्रस्त होइ चुका हयेन पिलिया के यहि बिनासकारी ताण्डव से।

जनावर, गाइ, भैंइसि, छेगड़ी-बोकड़ी होंकड़त अउ मिमियात परा हयेन। न चरै क घासि बा न खाइ का कोयर। सगर गाउँ म मातम छाये बा। कुकुर बिलारि रोइ रोइ असगुन क सूचना देइ मा लाग अहाँ। चिउँटी-माँटी, बीछी-कीरा पानी की धारा म बहत चला जात अहैं। दइउ क गति ऐसनि कि बिजुरी चमकि के बज्र गिरावइ म अउ बादर घेरि-घेरि के बरसइ म चूकत नाइ बा।

गाउँ में संतोखी बर्मा नाउँ क एक नवजुवक निवास करत रहेन। वइ भइया मोर बड़ा भाउक, सम्बेदनसील अउ नेता मनई रहेन। मेहनत तउ एतनी कइ लेत रहेन कि काउ केउ माई क लाल करे। ओन्हइ पूरा गाउँ संतोखी भइया कहि के पुकारत रहा। वइ इ दुख देखि न पायेन। गाउँ के खास खास लोगन का बटोरइ का प्रयास किहेन। कुछइ देरि मा आइ-आइ सब संतोखी भइया के दुवारे छाइ लिहेन। संतोखी भइया हाथ जोरि के बिनम्र भाव से कहै लागेन कि हे पंचउ, आजु आपन गाँउ अउर हम सबै बिपति मा जूझि रहा अही। यहि बिपति से कब तक जूझत रहब्या? आजु जरूरति बा साहस कै, आजु जरूरति बा एक जुट होई के कुछू करै का। आजु हमैं सामूहिक पुरुषार्थ देखावइ का जरूरति बा। हम सब मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम कै सन्तान अही। जवन राम बनरन भालुन का अपने साथे लइ के समुंदर ऐसन अथाह अउ गहिरि धारा क बाँधि के वहि पार चला गै। चलै नाइ गै बल्कि लंका के राजा रावन क जीति के विजय पताका फहराये रहेन। जवन रावन, जेसे तीनिउँ लोक काँपत रहा। जेकरे इसारे पे हवा बतास सूरज, चाँद सब आपन काम करत रहेन। जेकरे हियाँ पवन देउ दुवार बोहारइँ, वरुण कियारी सींचत रहेन, सुरुज-चाँद अंजोर करत रहेन। जउ वइ वोका हराइ देहेन तउ का हम सब एक जुट होइ अउ नल-नील अंगद बनि के यहि पिलिया क नाइ बाँधि सकित?

भीड़ के सूनेपन क चीरति की एक तेज आवाज उभरि के सामने आइ। संतोखी भइया की जय। भइया आदेश द्या। हमहूँ तोहरे आदेस क पाइ के कठिन से कठिन काम करै म सक्षम अही। बोला काउ

करै का बा?'' त सुना हे हमरे गाउँ क नव जुवकउ! आजु तोहारि जरूरति बा। यहि पीली नदी का बान्हि के यहि कै धारा मोड़ै क जरूरति बा। सब एक जुट होइ के तैयार होइ जा।

एतने मा गाउँ क एक नव जुवक उहीं भीड़ी से निकरि के बोला, बोला काउ गरजा - 'इ काम हमार न होइ। इ सरकार का काम आ। चलि के सरकार से कहा 'जाय'। एतने में रामगढ़ के गाउँ कै खोजि खबरि लेइ आइ भइया भगवान दास डपटि के वहि जुवक का बतायेनि कि सरकार के पास पनरह साल से चिट्ठी पै चिट्ठी देत चला आवत अहा मुला कुछु भा नाईं। सरकार के पेटे क पानी तक नाईं हाला। आजु सरकार से कहै क मौका नाइ बा, कुछु करै क जरूरति बा। इ रामकाज आ। 'रामकाज लगि तव अवतारा' क यादि करा।

अब इ पूरी भीड़ि दुइ खेमें में बँटि गइ। एक जुटैवाले, दूसर सरकार से कहै वाले। बहुत सोर सराबा भा। वही समै मा फेरि संतोखी भइया उठेन। हाथ जोरि के दुइनउ खेमन का एक करत की बोलि परेन 'भाइउ मोरे आपन हाथ जगन्नाथ होथै।' जब तक हम आपनि मदद अपने आप न करब दूसरे क कवनि आस करब।' सब लोगे अब सान्त होइ गै। सबकी समझि में पूरी बाति आइ गइ। संतोखी का दुइनउँ खेमा कै लोगै गाउँ अगुवा मानि लिहेन।

अब सन सान्त होइ के बइठि गयेन। उहीं बीच संतोखी भइया संतोस क दस भरत कि बोलि परेन, 'हे पंचउ! हम आपन घर बनवइ बरे जोरि बटोरि के पचहत्तर हजार रूपिया धरे हई अउर पचीस हजार कै जेवर सब जोरि बटोरि के देत अही। अब हमार घर बादि में बने, पिलिया पे बाँध पहिले बने। जब तक इ बाँध पूर न होये तब ले हम चैन क साँस ने लेब। इहै हमार दृढ़ संकल्प बा।'

एतनी बाति सुनतै भरे मा खुसी कै एक लहर दउड़ि परी। संत संतोखी कै जय जयकार होइ लागि। सबै उत्साह मं आइ गै अउर बोलि परेन 'संतोखी भइया, जब तू गाउँ बरे एतनी बड़ी कुरबानी करै क तयार अहा तउ हम सब पीछे रहै वाला नाइ अही। हम सभै जन धन, बल से तोहरे साथे अही। दुसरे दिन भोरहरै नवजुग क श्रीगणेश होइ गा।

रोजै पाँचै सौ लोगन के श्रमदान क देखि के पीली सहमि गइ औ पन्द्रह दिन के भितरै भीतर बाँध बनि के तैयार होइ गा। यहि सामूहिक पुरुषार्थ के क्रिया कलाप का देखि के आस पास सगरउ इलाका दंग रहि गा।

# जियै केर अधिकार

**डॉ. ज्ञानवती दीक्षित**

स्कूल के बीचौ बीच पीपर केर बिरवा है। खूब घना और छांहीदार। पीपर के तरे वैसेव ठंड रहता है। यौ बिरवा तो बहुतै पुरान है जइसा पुरनिया लोग बतावा करत हैं। यहै बिरवा की छांही मां कबहूं-कबहूं इम्तिहानौ होय जात है। जब कबहूं कक्षा मां छात्र जादा होय जात हैं तो यहै बिरवा की छांही मां बैठाय दिये जात हैं। दुनिया मां बहुत कुछ होत है जो दिखाई नाय परत। बात न चीत कोई कोई आदमी एकदम बड़ा आदमी होइ जात है और दूसर शिक्षा, बुद्धि और क्षमता होत भये भी नीचे जाय लागत है। 'यौ आजादी झूठी है'। लाउडस्पीकर चिल्लात हैं, पर हम तौ ठहरेन इतिहास के मास्टर। हमका तौ सब अच्छा-अच्छा पढवैव है। आजादी के बाद से देस कहां-कहां तरक्की करइगा, सब याद करावैव है। आज सवेरे से मन बहुत खिन्न है। बार-बार अइसा लागत है कुछ गलत होइगा हमार मन कल से परेसान हैं। अबहीं मानौ सामने केरी बात है हम अपनी कक्षा का रूस की क्रान्ति पढ़ाय रहे रहन। सब बच्चा लोग आपन आपन कापी निकाल लेव अउर लिखौ- "भारतवर्ष मां गरीबी के कारन"। लड़िका लिखै लाग। लाठी टेकत मूर्तिमान दरिद्र जइसे हमरे सामने आयके खड़ा होइगा होय।

रामजोहार मास्टर साहेब।

राम राम।

बहुत परेसान हन मास्टर साहेब। दुई दिन से कुछ खायक नाय पायेन। कुछ मदद कै देतिउ?

देखौ। हम पढ़ाइत है। कहूं अउर जायके मांगौ। ई इस्कूल है।

हम तनिक रुखाई से बोलेन। हमार झिड़की सुनिके बुढ़वा हुवां से चल दूर नीम के बिरवा तरे जायके बैठिगा। दिखाई देत रहा कि ऊ बुढ़वा की हालत बहुतै खराब है। सरीर मां हाड़ै हाड़ बचे रहैं। प्रान ज्यों सरीर से निकलै का व्याकुल होय। तब तक इण्टरवल केरी घंटी बजी। मास्टर लोग आपन-आपन टिफिन खोलिकै बैठिगे। बच्चा लोग जौ खाना लाये रहैं ऊ खाय लागै। कुछ खैलै कूदे लागे। चारिउ ओर जइसे एक कोलाहल व्यापि गा होय। तब हमरे पास तेवारी मास्टर आइगे। टिफिन खोलि कै रक्खिन। अचार अउर पूरी आलू केरी महक चारिउ ओर फैलि गई। हमरेउ मुंह मां पानी आयगा। हम घर से रोटी अउर कद्दू केरी तरकारी लाये रहन ऊका खोलि के सामने रक्खेन कि फिर वहै बुढ़वा पर आंख परि गई।

का हैं सुकुल जी। काहे परेसान हौ? ई तौ सब लूटै खायके धंधा आय। इनके बैंक बैलेंस का को पाई। ई सब लखपति होत हैं लखपति। अबै वहै दिन अखबार मां निकरा रहै कि ऊ भिखारी मरा तौ ऊके तकिया मां हजारों रूपिया निकरे।

का मालुम सच मां भूखा होय।

हमरे गले मां निवाला जइसे अटकि गा होय।

लेव पानी पी लेव मास्टर साहेब।

रामदीन चपरासी पानी लइके दउरा। पानी पी के हम पूछेन।

का ई बुढ़वा का जानत हौ रामदीन?

हां साहब। पासै लहसुनिया गांव है। वही मां रहत है। लड़िका बच्चा अलग होयगे हैं। बूढ़ा मरि गई। मांगत खात है।

पानी केरा जग मेज पर रखिके रामदीन चला गा। हम सोचै लागेन कि बुढ़वा का बोलाय के कुछ दै देई। तब तक तेवारी मास्टर जौ गले-गले तक खाना ठूंसि चुके रहैं अउर डकारै लागे रहैं, हमका फिर टोकिन का हो मास्टर साहब। ऊ बुढ़वा के रंगीन खयालन मां अबहूं खोये हौं। गोली मारौ बुढ़वा का। आज सहर मां बड़ा काण्ड होइ गवा। राम सेवक लाला केरी बिटेवा लाल मोहम्मद गद्दी के लड़िका साथ भागि गई। लाला एफ.आई.आर. लिखवाइन है के उनकी बिटेवा का अपहरण भवा है। हां । हां । का भवा।

आसपास अउर दुइ तीन रसिक मास्टर आय जुटे। निन्दा सबद रसाल ठीकै कहा गा है। हमार तौ प्राइमरी स्कूल है, साथै मां जूनियर हाईस्कूल है। हमरे स्कूल मां तौ हेडमास्टर साहब, हम और एक शिक्षा मित्र हैं जूनियर मां पांच छः मास्टर हैं। तौ रौनिक बनी रहत है। तेवारी जूनियर केरे साइंस टीचर हैं। साइंस वाइंस तो नाम बात है। कइसेव प्राइवेट इण्टर कै लिहिन है। परमोसन होयवे आये हैं। आवत जात कुच्छौ नाय है। खुदै कहत हैं हम नकल कै के पास भये रहन। पढ़ावै लिखावै की तरफ उनका रुझान तनिक कमैं है। स्कूल आयके इधर-उधर केर गप्प सटाका, फालतू बात, तीन तिरपंच, यूनियन बाजी और अगर उनके हेड कुछ काम करैवा कहि दिहिन तौर अज्ञात सत्रु का गारी गलौज देना उनकी आदत है। हम कइयौ बार समझायेन तेवारी यू ना किया करौ। हेडमास्टर तुमसे उमिर मां बड़े हैं।

तेवारी हमरी बात चुटकी बजायके उड़ाय देत है। अरे तुम सीधे साधे हौ मास्टर साहब। सहर से आये हौ। तुमका का मालुम। इनका हमहीं रखवाये रहन अब हमहीं का वैतालीम पढ़ावै लागे हैं। लेकिन हमहूं कम नाय हन। अइस फुलेरी रोज छोड़ित है कि हेडमास्टर साहब के चूतर नाय लगै पावत है।

हमका मालूम रहै कि तेवारी और उनके हेडमास्टर केरी पाटरी नाय खात है। एक दुसरे का नीचा देखावै के लिए वै कुछौ करैक तैयार रहत हैं। इनका दूनौ जने का यउ अहसास नाय है कि अहिसे उनका केतना उपहास होत है। दुसरेन के हंसौवा के पात्र बनिके पता नाय कउन आनंद केरी अनुभूति होत है। खैर हमका का। ऊ जानै उनकेर काम जानै। हम अनमने मन से फिर टिफिन केर सामान खतम करै मां जुटि गयेन। लेकिन घूमि फिरि कै घड़ी कै सुई अइस हमार निगाह फिरि वहै बुढ़वा की ओर चली जात रहै। थोड़ी देर बैठे के बाद ऊ बुढ़वा चला गा तौ हमरी जान मां जान आई और हाथ धोयके हम फिर पढ़ावै लागेन। छुट्टी केरा घंटा बजा। लरिका खुसी-खुसी घर की दिसा मां दौरे लागे। हंसत खिल खिलात बच्चा जइसे दुनिया केरी हर चिन्ता से निरदुन्द खेलत कूदत जाय रहे हैं। जबकि हम बड़े लोग दुनिया जहान की चिन्ता छलप्रपंच और गम मां दबे मानौ पैर घसीटत घर की ओर चले।

x x x

आंखिन के आगे अंधेरा छाय रहा है। ई पापी दुनिया मां हम गरीबन की कौनो सुनवाई नाय है। तीन दिन से भूखे हन। कब से मारे मारे घूमित है कुछ नाय मिला। ई दुनिया से का रहमत उठि गयी? हमरे बाबा कहा करत रहैं कि बड़े-बड़े लोग सदाबर्त करत रहै, भण्डारा करावत रहैं, कुंआ खोदावत रहैं। अब तौ जमानै बदलि गा। लोग कुंआ पटावत है अउर सुनै मां आवा है कि गरीब लरिकन का मांस तक खाय जात हैं। अइसे मां हम गरीब बुढ़वा का को पूछीं। आह। पेट आतंन से धपका जाय रहा है। सबसे

बड़ी बीमारी है भूख। ई दुनिया मां जौ कुछ होत है सब पेटै की खातिर। आज अगर हमरे सरीर मां ताकत होती तो हम चोरी राहजनी कै के खाय लेतेन। अगर हमरे सरीर मां सत नाय बचा। का करी। वहाँ जाई। कहा हौ भगवान।

*मड़ैय्या के रखवार हमार राम।*
*मड़ैय्या के रखवार हमार राम।*
*अब दौरे आवहु स्याम।*
*मड़ैया के रखवार हमार राम।*
*मडैय्या के रखवार ... हमार राम।*

कहीं कोई सहारा नाय है। जिन लरिकन का पैदा किहेन, पालन पोसेन, ऊ तोता तरा आंखी फेरि लिहिन। सब अपनी-अपनी दुनिया मां मस्त हैं। कोई का यौ चिन्ता नाय है कि ई बुढ़वा भूखन मरि रहा है। आजु जसोदा जिन्दा होती तौ का हम भूखेन अइसे मरित। आह लगत है प्रान निकरि जइहैं। ई दुनिया मां का हम यही लिये आये रहन? अइसन अन्त होयक रहै हमार जिन्नगी केरा? बरबरात बरबरात बुढ़वा भुइ पर गिरिगा अउर वहिकी आंखी टंगि गई। थोड़ी देर मां तड़पि तड़पि कै वहिके प्रान निकरिगे वहिके खुले मुंह पर माछी भिन भिनाय रही रहै। अउर ज्योति हीन आंखी अइस खुली रहैं, मानौ ई जुल्मी दुनिया से अपनी तकलीफन का हिसाब मांगि रही होय।

अगले दिन फिर इस्कूल लगा। लरिका झोरा लै लै कलास मां आवै लागै। हमहूं टाइम से पहुंचे गे रहन। प्रार्थना करायेन। फिर पढ़ाई लिखाई, हाजरी, वजीफा, वेतन-पचासौ तरह की चिन्ता मां सब भूले बइठे रहन कि एक लरिका उठि खड़ा भा।

मास्टर साहेब। मास्टर साहेब।

का है ?

ऊ जौ बुढ़वा रहै ....

हां! हां! बताव। बताव।

हम कुछ झुंझलाय के बोलेन ।

ऊ मास्टर साहेब, बुढ़वा मरिगो।

कक्षा मां जइ से बम विस्फोट होइगा होय। हम भौंचक्के रहिगेन।

मरिगा। कइसे मरिगा?

ऊ मास्टर साहब, भूखन से मरिगा। गांव केरे लोग कहत हैं कि तीन दिन से भूखा रहै बुढ़वा।

हमका घरा बरा कुछ सुझाय नाय परि रहा रहै। कानन मां सीटीं अइसी बजै लागी रहैं। अगर हम वै दिनवहिका कुछ दै देतेन तौ ऊ मरता नाय। हम मन की मन अपने का धिक्कार रहे रहन कि सोरसराबा सुनि कै हम हूं सड़क पर निकरि आयेन। देखेन कि एक जुलूस जात रहै। वहिमा नारा लागि रहे रहैं ............ ई सरकार निकम्मी है। ई सरकर बदलनी है।

हम याक जन से पूछने - भइया यू का होय रहा हय।

देखत नाय हौ? जलूस निकरि रहा है। गांव मां एक बुढ़वा भूख से मरिगा है। ई सबै जन डी.एम. का ज्ञापन देय जाय रहे हैं।

हमरे कानन मां गूंजै लागा- Men are born and remain free and Equal in rights. Law is the expression of general will. All citizens have the rights to take part personally or by their representatives in its formation. No man can be accused, arrested or detained except in the cases determined by law and according to the forms it has prescribed.

(आदमी अधिकारन के मामले मां जनम से स्वतंत्र और समान होत हैं। कानून आम आदमी केरी इच्छा केर अभिव्यक्ति हैं। सबै नागरिक निजी तौर पर या अपने प्रतिनिधि के जरिये ईमा भाग लेय के अधिकारी हैं। कोई आदमी तब तक दोषी नाय करार होय सकत है, ना बंदी बनावा जाय सकत है, ना हिरासत मां लीन जाय सकत है, जब तक यौ कानून केरा उल्लंघन ना करै।) का गरीबन का ई सब हमरे देस मां सुलभ है? का है उनके अधिकार? का कीड़ा मकोड़ा की तरह भूख से मरि रहे इन इन्सानन का आदमियत का दर्जा हासिल है? अगर नाय तौ कौन है ऊ जो इनका उससे वंचित किये है।

हमरे कानन मां कोई फिर सुनाय रहा रहै -

That they are endowed by their creation with certain unalienable right: That among these are life, liberty and the pursuit of happiness....

But when a long train of abuses and uswepations, pursuing in variably the same object evinces a design to reduce them under absolute despoticism. It is their right, it is their duty to throw of such government and to provide new guards for their safety. (आदमी का अपने रचयिता ईश्वर के जीवन, स्वतंत्रता और खुशी केरा अधिकार मिला है। .......... लेकिन जब दुरुपयोग और छीनाझपटी केरा लम्बा सिलसिला चलै लागत है और तानाशाही पैदा होय लागत है तो ई जनता केरा अधिकार है कि अइसी सरकार का उखाड़ि फेकै और अपनी सुरक्षा-संरक्षा के लिए नये रक्षक रखै।)

जलूस नारे लगावत बढ़ि रहा है - ई सरकार, निकम्मी है। ई सरकार बदलनी है। कुछ लोग नारा लिखी तख्ती भी हाथ मां लिहे घूमि रहे हैं। गरीबन पर जुल्म बन्द करौ। भूख से मरने वाले हिन्दुस्तानी कौन हैं? गरीबी हटाओ। हमरे दिमाग मां फिर सन-सन होय लगी है। कहां है महात्मा गांधी? यहै आजाद भारत है आपन। जहां गरीब भूख से तड़प तड़प के मरि जात हैं और नेता के घर व्हिस्की की नई-नई चमचमाती बोतलें खुलती हैं। आखिर ई इतने सारे अफसर का करत हैं? अपने अपने आलीशान बंगलेन मां बैठके रंगीन टेलीविजन का आनन्द भारतीय करदाता के पइसेन से उठाय रहे हैं। इनका खबर है कि कितने परिवार हैं जिनमा एकै टाइम चूल्हा जलता है? जहां पेट की भूख मिटावै के लिये जवान लड़की जिस्म का सौदा करै लगत हैं? का ई नेता अफसर-गठजोड़ ई भारत देस का लीला जाई, जेहिके लिये जयशंकर प्रसाद लिखिगे। "अरुण यह मधुमय देश हमारा। जहां पहुंच अनजान क्षितिज को मिलता एक किनारा। कहां हौ निराला, मुक्तिबोध ? कहां है नयी कहानी के पुरोधा व्यंग्यकार, चित्रकार कोई है, हमरे ई देश का नंगापन ढाकि पावै - कोई कलम मां है इतनी ताकत? नारा बदस्तूर लगि रहे हैं। हमार मन वितृष्णा से भरिगा। एक गरीब जान से गवा। वहिमौ इनका आपन राजनीति चमकावै केर बहाना मिलिगा। जलूस नारे लगावत आगे चला गा। अगले दिन हम अखबार मां पढ़ेन। एक तो स्वयं भू नेता जी स्टेटमेंट रहै कि ई सरकार हर मोरचा पर बिफल है। ऊ का इस्तीफा दै देक चाही। दुसरी ओर डी. एम. केर स्टेटमेंट रहै कि बुढ़वा भूख से नाय बीमारी से मरा है। हमरे आगे यौ सवालु बहुत बड़ मुंह बाये खड़ा रहै कि आखिर कब तक लोग अइसे मरिहैं अउर हमरे जइसे पढ़े लिखे लोग गरीबी पर निबंध लिखावत रहि हैं। आपन नकारापन यतना कबहूं नाय खला, दोस्त जितना आज खलि रहा है। अगर अइसा कौनो आपकी मदद का तलबगार आपके दुआरे आवै, तौ यै स्कूल मास्टर की छपील है कि कौनो सरकार या नेता का मुंह न ताकै, वहिकी मदद करै बस।

# बदलाव

**रश्मि शील**

---

ठाकुर राम प्रताप सिंह क्यार बुलावा जैसेह हरिया का मिला तो हरिया केर दिल बइठगा। ज्याठ बैसाख केरि दुपहरिया मा कँपकपी लागि गै। ठाकुर प्रताप सिंह गाँव केर परधान रहय औ हरिया उनके हिया बेगार करै वाला छ्वाट-म्वाट मुलाजिम। वहौ कउनो आजु ते? यहु सिल सिला तो पीढ़ी दर पीढ़ी क्यार हवै। हरिया केर तो उमिरि बीति गै हय औ हरिया केर बेटवा किरपा केर उमिरि तो उमर ते पहिलेह चुके गै। हरिया क यहि बात केर अन्देसा हय कि परधान काहे क बरै बुलायेनि हय। पिछले साल गाँव मा अस महामारी फैली कि गरीब क्यार कउनो घर न बचा। वही महामारी की चपेट मा किरपौ आय गा। डाक्टर कहत रहय कि य महामारी गन्दे पानी ते फइली हय। कारण कुछौ होय, मुलु वहिकी मार ते गरीब अउरो अधमरा होइगा। लरिका के इलाज के बरै लाचार मार ते गरीब अउरो अधमरा होइगा। लरिका के इलाज के बरै लाचार हरिया परधान ते करजु लीन्हेस रहय। वहि करजु का अदा करेक बरै हरिया जी-तोड़ कोसिस कइ रहा रहय। मगर गरीब के जिउ के नौ सौ पचड़ा, सो करजु उतारि न सका। यही खातिर हरिया परधान क्यार बुलावा पाय के मरा सनाय उनके घर तन चलि भा।

जब हरिया परधान के दुआरे पहुँचा तो हुआ बड़ी भीड़ रहय। अब तो हरिया केर कदम पाछे लउटे लागि, मुंह ते बोल नदारत। चुप्पै देहरी लाय ठाढ़ होइगा।

परधान देखिनि तो बोलायेनि - आओ, हरिया।

जी सरकार। कहि के हरिया चुप्प।

प्रधान-हरिया ! तुम हमका समझत हौ? और हमका केतना मानत हौ?"

"अरे, सरकार! हम गरीबन केर तुमहीं माई-बाप हौ। अब हम अउर का कहीं।' हरिया एतनै बोला।

प्रधान - अच्छा तो सुनौ। परधानी केर चुनाव होय वाला है।

हरिया - हाँ, साहेब! औ यहौ पता हय कि सरकार का छाड़ि के या परधानी कहिका मिलि सकति हय।

प्रधान - यहु सब तो ठीक हय, मुलु हरिया। अबकी सरकारी नियम कुछ बदलि गै हय। जहिके कारण यहि गाँव मा परधान केर सीट अनुसूचित सीट घोषित कीन्ह गै हय।

सुनि के हरिया का तो कुछ समझ मा न आवा। बोला- यहि का माने का भा?

प्रधान - माने का? अब की हिया ते कउन अनुसूचित जाति केर मनइ परधानी केर चुनाव लड़ी। यहि लिये हम चहित हय कि या परधानी अबकी तुम लड़ौ। खाली तुम्हार नाँव चली, बाकी हम सब संभारि ल्याब। जौ तुम हमार कहा करिहौ तो समझौ तुम्हार सब करजु माफ और बिटिया के बियाहै के बरै दस-बीस हजार अलग ते दइ द्याब सो अलग। अब बताओ तुम का कहत हौ।

यहु सब सुनि के हरिया क्या मुँ खुला क खुला रहिगा। औ मुँह ते हाँ छाड़ि नाहीं न निकसा।

बोला - अब साहेब। हम का कही? हमका तो जादा मालुम नहिन। यहिलिये जउनु सरकार केर मर्जी वहै हमार।

इ सब बातै कइके हरिया सरपटै घरै दउरा।

वहिका महसूस होत रहय कि आजु वहु सही रूप मा अपने पुरख (पूर्वजन) का मुक्ति दिलाएसि हय। औ फिरि किरपा केरि याद ते आँखी भरि आई। बिचारा कस बिमारी हालत मा मंजूरी करत-करत मरि गा। कास यहु सरकारी नियम थोरे दिन पहले बनि जात, मुलु भाग्य के आगे कहिका जोर। लिलार केर लिखा कइसे मेटा जाय सकत हय।

घरै पहुँचा तो आजु क्यार सब किस्सा घर मा कहि सुनाएसि। कोउ तो न बोला, मुलु किरपा केर लरिका जहिकी उमिरि अबै मुस्किल ते उनैइस-बीस बरस केरि होइ, बोल परा - "नाही, बाबा। यहु न होइ। कतहू नमक नमक के साथै खावा जात हय। तुमका हम परधानी के बरै खड़े न होय दूयाब। तुमका पता नहिन कि तुम्हार या हां केतनी घातक होइ। सुमेर चाचा यहि चुनाव के बरै जी-जान ते जुटे हय। तुमका अपनि जाति-बिरादरी के साथै चलै क परी।"

हरिया बोला-पर बबुआ। परधान केरि बात मानि लेय ते हम करजा ते मुक्ती पाय जाब। बिटिया केर बिहाव नीकी तरा होइ जाइ। हमार सब दलिद्दर दूरि होई जहिहै।

सूरज-मुलु, बाबा। सुमेर चाचा केर साथ देय ते पूरी बिरादरी क्यार दलिद्दर दूरि होइ। हम कहित हय कि कब तक तुम पंचै खाली अपय-अपय स्वारथ ते जुड़ि के जीवन जी हौ। एकु बार खाली एकु बार सच केर साथ देव। का तुम नहीं जानत हौ कि सुमेर चाचा हम लोगन के बरै कउनी तर हलकान होइ रहय हय। हम अउर कुछौ नहीं जानिति हय, बस एतनै कहिति हय कि प्रधान केर बात मनिहौ तो हमका अपन विरोधी जानौ। औ फिरि एतना कहि के धमधमात घर ते बाहर निकसि गा।

हरिया तो निरास होय के खटिया मा पहुड़ि गा औ फिर पूरे दिन केरि दिनचर्या स्वाचै लाग तो दिन का पूरा जीवन जइसे एकु बार फिरि ते आंखिन आगे नाचे लाग।

हरिया सात आठ बरस क रहा होइ जब यहि देस का आजादी मिली रहय। हरिया खुदौ कागज क्यार तिरंगा लइके गांव-गांव गली-गली लरिकन केरि टोली मां झण्डा ऊंचा रहय हमारा" गावत घूमा करत रहय। वाहे समय सबकी आँखिन मा कइस-कइस सपन रहय। सबै राजराज केरी कल्पना मा खोये रहत रहय। सबका लागत रहय कि अब कोउ गरीब न रही, कउनो मनइ छूवाट - वड़ा न रही। सब अपनी अपनी इच्छा और मनानुसार अपय अपय राज पाट का सजावट रहय। फिरि सुनाई परा कि अब जमींदारी परथा खतम होइ जाइ और देसमा परजातंत्र आई। परजातंत्र आवा मुलु हरिया हसि मनई समझि न सकै कि परजातंत्र आवै ते का बदला। वइ ठाकुर राम प्रताप केर पिता ठाकुर रघुवीर परताप सिंह जउनु जमींदार साहब रहय उइ अब परधान कहाये जाय लाग। औ उनके बाद ठाकुर राम प्रताप सिंह परधान भये। यहै सब दूयाखत दूयाखत सात बरस केर हरिया सत्तर बरस का होइगा। मुलु वहिकी अवस्था छाड़ि व्यवस्था न बदली। जउनु बदलाव आवा वहिमा गरीब और गरीब भा, तो अमीर अउर अमीर। हरिया यहौ जानत हय कि सुमेर अउ सूरज हस मनइ कुछौ न कइ पहिहै। खाली चिल्लाय। औउर रिरियाय के चुपाय जइहै। सुमेर के मन मा यहि समाज के लिये केतना आक्रोस भरा हय। मुला यहि सब ते वहिका हासिल का होई पाई।

सारा देस विकास-विकास चिल्लात हय मगर विकास कहाँ देखात हय। गाँवन केर हरा भरा यहु देस ठूँठ होइ रहा हय। जहाँ दूयाखौ पहाड़ काटे जाय रहे हय, हरे-भरे जंगल खतम, खेत खलिहान खतम, बरसा खतम, पानी खतम। सब तरफ धुंआ, धुंआ खाली धुंआ। मनइ विकास के पाछे दउर रहा हय। खांसी दमा, टी.वी. औ न जाने कउनी कउनी बीमारी। जेहिका नाम तक हरिया नहीं जानत हय। वहिके

गाँव क्यार पोखर, जहि ते पूरा गाँव पानी पी-पी अघात न रहय। आजु हुआ खाली कचरा भरा हय।

हरिया का याद आवा कि ठाकुर रघुवीर प्रताप जब जानेनि कि अब यहि देस ते जमींदारी प्रथा खतम होइ जाइ और देस मा परजातंत्र कायम होइ। वहि समय उनका लाग कि अब आपनि खैर जनता ते बनाय के रखेम हय दूसर उनका यहौ संका रहय कि परजातंत्र कायम होय ते कतहूँ उनकेर माल-असबाब सब छिन न जाय। यहि लिये उनके मन मा विचार आवा कि कुछ अइस काम किन्ह जाय, जहि ते गाँव मा उनकी प्रतिष्ठा कायम रहय और उनके अत्याचार ते पीड़ित यहि जनता-जनार्दन के घावन पर थोरा मरहमौ लागै । यहि बरै उनका ध्यान जनता की भलाई कइती गा। जब उइ गाँव बालेन की तमाम समस्यन पर नजर डारेनि तो उनमा एकु यहौ समस्या रह्य कि गांव मा पानी केर बड़ी कमी हय। यहि बरै ठाकुर साहब करीब-करीब चौरासी बीघा जमीन मा एकु तालु बनवायेन। जहिका पानी गांव की जनता और चौपायन केर जीवनदाता भा। मगर जउनी मनसा ते यहु ताल खोदा गा रहय। वहिका रूप तो जमींदारी परथा खतम होय के बाद बदहाल होइगा। जब जमींदारी विनास अधिनियम बना तो वहि ताल के रख रखाव मा कमी होय लाग। धीरे-धीरे ताल किनारे सैकड़ों बेसरम खरपतवार जामै लागि औ वहि के गहराई कम होय लाग। पानी गन्दला होइगा। हरिया केरी बस्ती मा तो पानी पाय केर एकै सहारा रहय। गर्मी मा तो पानी एकदमै सूखि जात हय। गन्दा पानी होय ते कइयो बीमारी हर साल महामारी बनि के अउती हय औ सैकड़न मनइ औ जानवरन का लील जाती हय। पिछली बरस यही पोखर का पानी पियेत किरपा बीमार भा रहा और फिरि जीवन ते हाथ धों बैइठा।

सुमेर यहि बस्ती केर पढ़ा-लिखा मनई हय। वहिका ज्ञान की बड़ी-बड़ी बाते मालूम हय। खाली समय मा वहु सबका गुन-ढंग बतावत हय। परदूषण जलसंरक्षण अउर न जाने कितनी बाते वहिके जेहन मा हय। गन्दे ताल के बारे मा वहि का विचार हय कि अगर यहि ताल केर फिर ते खुदाई कीन्ह जाय औ सीमांकन कइ दीन्ह जाय तो फिर यहु ताल गांव वालेन के बरे वरदान साबित होइ। बस्ती केर मनइ भले ह सुमेर केर खिल्ली उड़ावत होय, मुलु यहौ मानत हय कि वहिकी बाते सही हय। सब यहौ चाहत हय कि यहु होय, मगर काउ साथ देयक बरे तैय्यार नहिन। इ सब कामन के खातिर जउनु धन चही वहौ इ गरीबन के लगे नहिन।

सुमेर तो इ बस्ती के सुधार के बरे काफी परयास करत हय। पता नहीं, केतने कागद लिखि के अइसी-वइसी लगाइस हय। मुलु गरीब केर सुनवइया को है? हरिया फिर विचार वीथी मा चक्कर लगावै लाग। सुनिति हय कि परधान का गाँव की भलाई के बरे सरकार की तरफ ते पइसा दीन्ह जात हय। जो सुमेर परधान बन जाइ तो फिर यह बस्ती साधन-विहीन न रही औ यहि बस्ती की भलाई के जउनु सपन सबकी आँखिन मा हय, उनकी किरच आँखिन मा न चुभी। जउनी तरा मनइ डरावने सपन ते बचय के खातिर नींद ते जागत हय, वही तरा यहि बस्ती के मनइन का रोउना रोवै क बजाय हिम्मत जुटाय क परी औ अज्ञात केरी नींद ते जागे क परी। सूरज सही कहत हय, हम सबका सच का साथ देय क चाही। खाली भाग्य के भरोसे बइठे ते काम न चली। व्यवस्था बदले क बरे अब बदलाव चही। यहु सब सोचते हरिया क लागि कि अब वहौ विकास रथ पर आरूढ़ हय।

# कोख जाये

रश्मि शील

अजिया चुपा जाओ तुम काहे रोउती हो। हमका चहय किहानी सुनाओ न, याक राजा रहँय याक रानी। अरी भाग जाओ नाहीं तो खँइचि के दूयाब एक ठई तउन सही होई जइहौ। हिंया दिल मा फाँस चुभी है औ तुमका किहानी की पड़ी है। अरे अजिया कहौ न। हमका बड़ी नीकी लागति है। चहय राजा रानी केरि किहानी। तुम मनिहौ ना चहय किहानी, वहय किहानी। अरे राजा तो कबके मरिगे औ रानी के तो करम फूटि गे। अरे बबुआ हमरी किस्मतै का दोसु है नहीं तो हम रनिही रहन जब येहि घर मा बेहि के आएन रहय। औ अजिया अपनि गाथा कहय लागीं। उनका यहौ सोधु न रहय कि योहु नान्ह क्याए लड़िका ई सब बातै का समझी।

का दिन रहँय उइ। खूब धूम मची रहति रहय। सासू नन्दी सब केत्ता मनती रहंय फिरि कुछै साल बादि सासु हमरे ऊपर गिरिस्ती केर बोझु छाड़ि के भगवान का पियारी होइ गई। भगवान उनका सरग मा जगा दे। देबी हती, देबी। सुख केरि उइ दिन तो जइसे हव मा बिलाय गे। सोरा बरस की रहन जब येहि डेहरी मा पॉव धरा रहय। वोहु दिनु औ आजु का दिन। सब कुछ सहा मगर डहरी न छूवाड़ा और आजु हमरे पैदा हमसे कहति हैं। जब तुम्हरे चारि औलादें हैं तो बरसैं मा तीन तीन महिना सबके हियाँ रहव। ई वुई दिन भूलि गे जब हम उनका बडा कीन, मनई बनावा। कउन सुख पावा येहि जिन्दगी मा। बड़कउनू के बाबु तवही गुजरि गै रहय जब बड़कउनू सात बरस केर रहा। मँझलू, रामदेयी और छोटकन्नू केते बड़े रहंय। पाँच चारि औ तीन बरस केर। तबसे इ लरिकन के पाछे जिय दई दीन। राति का राति औ दिन का दिन नहीं जाना। बड़े विरोधन का सामना करै का मड़ा रहय। केत्ती मुसीबतै सहा। उइ दिनन मा तो घर से बहू बेटिन का बाहर निकसव केत्ता बुरा समझा जात रहय। सब नाते रिस्तेदार साथ छोड़ि दीन्हेनि रहय। तब अकेले ई लरिकन का बड़ा कीन।

येई लरिका आजु हमका आँखी देखावति हँय। हमका अपने अपने घर मा राखै के बारे पंचाइत बइठइहैं। का कई लेहें। हमहूँ चुप्पे न रहब। ई नासिपीटे, हमार धरम ईमान ले मा तुले हँय। कहति हैं कि तीन महीना बिटिया के घर मा रहव और तीन महीना सब लरिकन के लगे। अब स्वाँचौ कि बुढापा मा बिटिया के हियां खाई? याहु हमसे न होई पाई। औ फिरि बिटिया कै यिा काहे का रही जब हमार सब जादाद तु सब मिलि के धरि लेहौ। छोटकन्नू बहुत अंग्रंजी मा गिटिर पिटिर करति हँय। सहरू का रूआबु झाड़ति हैं। योहु नहीं जानति कि सहर मा हिय के लायक को बनावा। अगर पढादत लिखाइत ना तो कहँ से अफसरी मिलति।

का जमाना आवा है। औलाद महतारी का दुई रोटी नही दई सकति हैं। का जानै कि महतारी केरि ममता का होति है। नही तो ममता केरि बटवारा न स्वॉचति। अरे कपूतो! टाजु ई बुढ़ी का रखे का बरे एक दुसरे का मुँहु धाखति हौ। हम कबहूँ बटवारा कीन? सबका जनम दीन। सबका बड़ा कीन है। जवानी के जोस मा यहै भूले पड़े हैं कि हमहूं औलाद वाले हन। हमहूँ का येहु दिन देखे का पड़ि सकत है।

ख़ैर हमसे जाये जुम हमारि चिन्ता न करौ।

अजिया एतना सब बरयि के, रोय धोय के वोही कोठरिया मा पड़ी खटिया मा मुँह ढाँपि के सो गयीं। बबुआ तो पहिलहे सो गा रहय । वोहिका ई सब बाते कहाँ समझ मा आवै वाली रहँय। हाँ। अतिया के पन केरि भड़ास निकसि गै रहय। औ कि वुई इन बातन का हिरदे से लागाय के कहाँ तक रखि सकती रहँय। भला आजु तक कउनो बाप महतारी ओलाद का बुरा चाहेसि है जउन अजिया चहतीं। येही ते सबेर होत होत सबै बातै अजिया का बिसरि गयीं और उई चारै बजे ते उठि के अपने कामे मा लागि गयी। दिसा मैदान जाय के आदि झाड़ू बहारू करब उनका कामु रहय। वोहि समै वुई हमेसा तुम बिन दीना नाथ हमारौ नहि कोई गावा करती रहँय।

जहाँ। अजिया केर बरवि झर्राब छिन भर का मलाल रहै हुवैं उई लरिका काफी संजीदा रहँय। येहि बेवाल का निबटावै के बरे। अजिया वई पंचान का भारू होइ गयी रहँय येही ते बड़कउनू औ मँझलू, रामदेई औ छोटकन्नू का चिट्ठी पत्रि डारि दीन्हेन रहय । देखतै देखत रादेई ससुरे ते औ छोठकन्नू सहर ते आये गे। घर मा चहल पहल खूब मची हिति रहय मुलु अजिया केर कउनो कोहुका सुमार न रहै। बस सब जने जब द्याखौ तब यहय सल्लाह मसबरा कीन करै कि बुढिया क, का कीन जाये? मगर कउनो निरनय नहीं होई मा रहा रहय। निरनय तो तब होय जब उइ पंचै एकु मतै होय। छोटकन्नू तो तीनि महीना बड़ी बात आये तीनि दिन अपँय साथै राखे का तैयार न रहय: कहेनि कि नाहीं, हम अम्मा का अँपय साधे नहीं रखि सकित हय। उनका न तो ब्यालय केर तमीज है औ न सहर केर रंग ढँग आवति हँय। हुँआ चारि मनइन के आगे हमारि बेज्जती होई। मँझलू और छोटकन्नू अपनि अपनि कन्नी काटै लागि। उनका तरकु रहय कि या बात भली भै जादाद तो बराबर बरावर बटी औ बढ़ापा मा सेवा करय का जुम्मा हमार राम भजो। रामदेई का तो वोहिका मनई खूब समझा बुझा के भेजेसि रहय कि द्याखौ तुम ई सब झंझटन मा न परेव। जब लरिका नहीं रखि सकति हैं तो तुम का कउनो ठेका लीन्हे हौ। औ हाँ हुआ बेखबर होइ के सोउते न रहेव। जादाद के निबटारा करै के समय खूब चौकस रहेव, सजग रहेव। कहूँ अस न होय कि भयवा सब बटोरि लें औ तुमका देखावैं ठेंगा। अजिया तो खाली सब कुछ चुपचाप द्याखा सुना करै। न काहू से लेना एक न देना दो।

ब्यालव चालब, खाब पियब तो जइसे हरि गा रहय। रामै राम जपा करै। अरे देवा! तुम सब द्याखनहार हौ। येहि बुढ़िया का उद्धार कीन्हेव। हमका फजीहत होय ते बचायो। पंचायत के समय केत्ती नककटी होई। ई लरिकन का तो यहौ नहीं सुझाई दई रहा हय:

गाँव की बाजार वाले दिन मंचाइत केर समय नियत कीन गा। पंचायत कउनि वोई गाँव के दुई चारि मनई जउन दुसरे के घर जलति देखि के अपन हाथ स्याकै वाले तः पंचाइतहा रहँय। उनका तो एक मसाला मिलिगा रहय। वइसेव गाँव वालेन का बइठे ठाले कउन कामु। मुलु योहु का भा। पंचाइत केर मौका कोहुका नहीं मिला। अजिया सबेरेहे सबेरे उठीं एक ठँई गठरी मा दुइ चारि कपड़ा बाँधेनि औ अपने लरिकन ते कहेनि कि हम यह जमीन जादाद घरू दुआरू सब छोड़ि के जाय रहेन हय, कतहूँ तौ ठौर मिलबै करी। संसार बेकारै औलाद के बरे मरा जात है। हम कहित है कि तुम जइसे कपूतन ते तौ निपूतै भला। हरि इच्छा। सब सुखी होव। औ अजिया बगल मा पुटु किया दबाय के चलि भंई। अब सब चुप्प। का कहैं? अजिया कोहुक कुछ कहेक औसार दीन्हे होती तब तो मुँह ते बोलु फूटत। हाँ रामदेई ते योहु सब द्याखा न देखी गा। वोहिकी अंखियन का पानी अबै नहीं मरा रहय या योहु कहव कि महतारी केर यहु हाल देखि के मनु दुख औ बिथा ते भरिभा येहिते चिल्लाय पड़ी अम्मा रूकौ तुम कहूँ न जइहौ। अबै तुम्हारि बिटिया है। बिटिया केर खायें मा, बिटिया के हिंया रहय मा कउनौ बुराई नहिन। सब लड़िका-बिटिया एकै कोख जाये हैं उनमा कइस भेद भाव? हम तुमका येहि तरा अकेले नहीं छोड़ि सकित। सारी जिन्दगानी तुम हमरे साथ रहेव।

# उपन्यास अंश

# निरहू कै यात्रा

भारतेन्दु मिश्र

---

निरहू दिल्ली खातिर तयार हुइगे रहैं। ठाकुर ते तीन सौ रुपया उधार माँगि लीन्हेन रहै। ठाकुर जानति रहैं कि पइसा वसूल हुइ जाई। सो ठाकुर बिना ना नुकुर के निरहू का पइसा दै दीन्हेनि रहै।

निरहू दाढ़ी बनवाइन कटिंग क राइनि नहाय धोय कै दुइ जोड़ी कपड़ा तैयार करवाइनि। सुरसतिया पूछेसि-

'कै दिन का जाय रहे हौ?'

'अरे दुइ चारि दिन तौ लगिही जइहैं। पहली दफा दिल्ली जाय रहेन है।'

'जाय तो रहे हौ मुलु सही सलामत घर लउटि आयेव।'

'तो हुआँ का करबै? ...का हुआँ कोऊ हमार ससुर बैठ हैं? अरे रमेसुर भइया के पास जाइ रहे हन। कुछु पइसा मिलि जाई तौ बसि लउटि अइबा। ...पइसा का इंतिजाम करना है कोठरी गिरिगै है। कइसे होई सब...।'

'हमार जिउ डेराति है। ...तुम पहिली दफा अतनी दूरि जाय रहे हौ। कारे क्वासन दूरि है दिल्ली।'

'तो का तुम्हरे पेटीकोट मा घुसि रही। घर ते कहूँ न निकरी? ...अरे आवै जाय ते भइयाचारु बनी। फिरि रमेसुर दद्दू खुदै बोलाय रहे हैं। उनका हमारि चिंता है। ...कउनौ जंगल मा थोरे जा रहेन है। ...तुम हमारि चिंता न करौ। थोरे सेतुआ बाँधि देव बसि।'

'महमूदाबाद ते गाड़ी कै बजे छूटी?'

'अरे गाड़ी तौ राति साढ़े आठ बजे छूटी। लेकिन हमका छ बजे पहुंचैक होई। टाइम से पहिले टिकट लेक परी। ...अरे हाँ भउजी कहेनि रहै केंवड़ा का फूलु लै आयो।'

'केंवड़ा क्यार फूलु तौ पंडित के कुँआ पर मिली। ...उनते पूछैक परी।'

'उनते हम पूछि लीन है। ...बिट्टो ते कहौ हँसिया लइ कै जाय औ एक फूलु काटि लावै।'

'अरे बिट्टो का न भेजेव। ...हम काटि लइबै।'

'अम्मा तुम नहीं जनती हौ। ...हम काटि लइबै। हमका मालुम है।'

'अरे काटि तौ तुम लइहौ। ...मुला तुमका मालुम नहीं है केवड़ा की झाड़ी मा साँप रहति हैं।'

'अरे दिन मा कहाँ साँप खाये जाय रहा है तुमरी बिटिया का। ...ग्यारह साल की हुइगै है। नान्ह बच्चा थोरै है। ...ईका जाय देव। या हमार बहादुर बिटिया है।'

बिट्टो हँसिया लइ कै चली गै। निरहू सुरसतिया का हाथ पकरि कै कोठरी मा लइ आये। सुरसतिया पूछेसि-

'का चही?'

निरहू बोले तो कुछ नहीं मगर सुरसतिया का खटिया मा गिरा लीन्हेनि। सुरसतिया बोली-

'तुम्हरे तीर अउरु कोई काम नहीं है? ...आजु रातिही मा सब कइ चुके हौ।'

'तो का हुइगा? ...दुइ तीन दिन अंझा हुइ जाई तउनु?'

'हुआँ दिल्ली मा कइसे रहिहौ?'

'हुआँ की हुआँ देखी जाई।... पहिले हियां मजा ले देव।'

निरहू सुरसतिया क्यार पेटीकोट लउटि दिहिन रहै। सुरसतिया निरहू के मूड़े पर हाथ फिरावै लागि रहै। मानौ निरहू कउनौ नादान लरिका होय जो टेम-कुटेम न जानति होय। सुरसतिया बड़ी समझदार रहै। तनिक देर मा सब निरहू की प्रेम लीला खतम हुई गै। सुरसतिया पूछेसि-

'छकि गयेव कि नाहीं। ...अउरु इच्छा होय तो अउरु कूदि लेव।'

'बसि। अब दिल्ली ते लउटि कै अइबा तबै कूदब।'

निरहू थोरी देर निढाल परे रहे। सुरसतिया उठि कै मुँह हाथ धोइस। यही बिच्चा मा बिट्टो केवड़ा का फूल लइ आयी रहै।

बिट्टो बहुत उमंग मा चिल्लाय लागि- 'पापा देखो हम केवड़ा का फूल लइ आयेन। ...लेव सूँघ कै द्याखौ। कतनी खुसबू आय रही है।'

निरहू खटिया पर आँखी मूँदे परे रहे। सुरसतिया कहेसि- 'उनका तनी आराम करै देव। उइ बहुत सूँघि चुके हैं। ...तनी चाय बना लाओ फिर इनका जगाई। ...दिल्ली की तयारी मा थकि गे हैं।'

'ठीक है अम्मा। लेव यू फूलु तुम सँभारि लेव। पापा के कपड़न मा लपेटि कै धरि देव।'

'लाव।'

सुरसतिया निरहू के तहमद मा केवड़ा का फूल लपेटिस फिर लाइफबॉय साबुन की बट्टी, चारि दतून औ दुइ जोड़ी कपड़ा सुरसतिया निरहू के थैला मा ठीक से धरि दीन्हेसि। सेतुआ अउरु लइया केरी धोंधियाँ दुसरके ब्वारा मा बाँधि कै सुरसतिया अब निसाखातिर हुइ गै रहै। निरहू आँखी मूँदे मकरवा तना परे रहैं। बिट्टो के सामने या आराम करै वाली नौटंकी जरूरी रहै। तनिक देर मा बिट्टो चाय बना लायी तो सुरसतिया बोली-

'अरे सुनति हौ... अब उठौ। चाय पियौ। अब धीरे धीरे चलै की तयारी करौ। ढाई-तीन बजै वाला होई।'

'निरहू उठे मुँह हाथ धोइनि फिर चाय पियै लाग। चाय पीकै बिटेवा का समुझावै लाग।

'बिट्टो द्याखौ अपनी अम्मा का कहा मानेव। जमुनी पर न चढ़ेव। टाइम ते इसकूल जायेव। ... हम तीन चारि दिन बादि अइबै। हमका तुम्हारि सिकाइत न मिलै।'

'ठीक है पापा। ...पप्पू भइया खातिर हम अमरस बनावा रहै तउन लिहे जाओ।'

'अरे वाह बिटिया। ...तुम तौ हमार काम आसान कइ दीन्हेव। हम सोचित रहै कुछु न कुछु मिठाई खरीदैक परी। ...वाह बिट्टो तुम तौ बहुत समझदारी का काम कीन्हेव। ...अमरस ते बढ़िया अउरु कौन देसी मिठाई होई।'

सुरसतिया बोली- 'कहाँ बचा है अमरस? ...सब तौ खतम हुइगा रहै।'

'अरे अम्मा। तुमका नहीं मालुम है। हमरे तीर धरा हैं हम लुकाय कै धरा है।'

'तो फिर लइ आओ। ई ते बढ़िया का है। ...जेठानिउ खुस हुइ जइहैं।'

'ठीक कहती हौ। ...लेकिन अब देर न करौ।'

बिट्टो अपनी बकसिया ते अमरस के दुइ पुआ निकारि कै दीन्हेसि। बिट्टो ई तना ते समझदारी वाले काम जब तब कीन करति रहै। बिट्टो की समझदारी देखि कै निरहू अउरु सुरसतिया दूनौ बहुत मगन हुइगे। निरहू बिटिया क्यार माथा चूमि लिहिन। बोले- 'अइसि बिटिया भगवान सबका देंय।'

गाँव के डाँड़े तक सुरसतिया अउरु बिट्टो निरहू का बिदा करै आयी रहैं। उइके बादि निरहू रजोले भइया की साइकिल पर बैठि कै रामपुर तक आयगे रहैं। गाँव क्यार सब मनई जानिगे रहैं कि निरहू भइया दिल्ली जाय रहे हैं। सो सब रमेसुर भइया खातिर अपन राम जोहार पठवै लाग। जो घाखौ वहै खैर सल्लाह पूछै अउरु कहै- 'भइया रमेसुर ते हमारौ राम-राम कहि दीन्हेव।'

रामपुर ते महमूदाबाद के लिए बस पकरै का रहै। निरहू सुदामा तना झोला-झंटा पकरे बस मा चढ़ि लीन्हेनि। टिकट लइकै खिड़की वाली तरफ बइठ तो पहिली दफा दिल्ली मा सही ठेकाने पर पहुँचै की चिंता उनका होय लागि। आबिदा ट्रेन जीका अब सत्याग्रह एक्सप्रेस कहा जाय लाग है वहि पर रमेसुर भइया का बैठावै की खातिर महमूदाबाद तके कइयौ दफे निरहू आये रहैं। सो उनका रेल मा बइठै तक की चिंता न रहै। चिंता उतरै केरि रहै। हालाँकि दद्दू सब कायदे ते समुझाय चुके रहैं। पता ठेकाना सब लिखवा दीन्हेनि रहै। लेकिन पहली दफे की चिंता तो सबही का हुइ जाति है। निरहू बीड़ी जलाइनि। चिंता फिकिरि जब होय तो बीड़ी-तमाखू सहायक होति है। मनु बँटि जाति है। थोरी देर यहर-वहर चित्तु डूवालै लागति है। रामपुर ते महमूदाबाद तक की दूरी तो जादा नहीं है लेकिन सड़क सुद्ध नहीं है। सड़क पर जगह जगह गड्ढा हैं तो बस लढ़िया माफिक चलति है। ती पर जगह जगह सवारी चढ़ती उतरती हैं। गर्मी के दिन रहैं। निरहू पसीना पसीना हुइगे रहैं। कंडक्टर ते निरहू बता राखिन रहै कि 'हमका दिल्ली मेल पकरनी है।' तो कंडक्टर कहिस रहै- 'चिंता न करौ छः बजे तक इस्टेसन जरूर पहुँचि जइहौ। दिल्ली की कइयौ सवारी हैं।'

दिल्ली की गाड़ी पकरै वाली कइयौ सवारी हैं यू जानि कै निरहू निस्चिंत हुइगे रहैं। धीरे धीरे ठोंकि बजाय कै बस सवा छः बजे महमूदाबाद इस्टेसन पहुँचि गै रहै। निरहू भइया बस ते उतरि कै रेल टिकट वाली खिड़की के सामने लगी भीड़ मा घुसै लाग। पुलिसवाला निरहू के पास लोहे के पाइप पर डंडा बजाइसि। पूँछेसि-

'कहाँ घुसे जा रहे हौ? यकदम चूतियै हौ का?'

'का गलती भै साहब?' निरहू घबराय कै पूँछेनि।

'अबे चूतिया लाइन में लग। गलती पूछि रहा है...'

'साहेब हमका दिल्ली जाना है। ...दिल्ली का टिकट लेना है।'

'दिल्ली जाओ चहै बम्बई। टिकट लाइन से मिली। ...चलो उधर लाइन में जाओ। ..चले आते हैं गाँजर से इ्वारा पकड़ के।'

निरहू टिकट की लाइन में लग गये। मगर आगे वही पुलिसवाला पइसा लै के कुछ खास लोगन के टिकट कटवा रहा रहै। लाइन बहुत धीरे धीरे सरकि रही रहै। कोई डेढ़ घंटा बादि निरहू का नम्बर आवा। निरहू टिकट लीन्हेनि अउरु पलेटफारम पर आयगे। याक बेंच खाली रहै हुवैं बैठिगे। तनिक-तनिक देर मा निरहू उठैं औ आस पास जउन मनई देखाई दे वहिते पूछैं- 'का भइया दिल्ली मेल यही पलेटफारम पर आयी?' कउनो जवाब दे। कउनो न दे। फिर एक सरीफ आदमी मिलिगा। वो कहेसि- 'हाँ।'

'कै बजे आयी?' निरहू पूछेनि।

'साढ़े आठ बजे।'

'लेट तो नहीं है?'

'नहीं, गाड़ी ठीक टाइम पर आवै वाली है। ...रिजर्वेसन है कि नहीं?'

'नहीं भइया! रिजर्वेसन तो नहीं है।'

'तो फिर आगे बढ़ि जाओ।'

'काहे?'

'ऊ जो चौथा बोर्ड लगा है ऊ के पास जनरल डिब्बा होई। हुँवैं सवारी डिब्बे मा चढ़ि जाना।'

निरहू आगे बढ़ि आये। हुऑं खड़े आदमी से फिर पूछेनि-

'का भइया! जनरल सवारी डिब्बा हियैं खड़ा होई?'

'कुछ पता नहीं। डरेबर की मर्जी है। पता नहीं कहाँ रोक दे।'

'फिर भइया! हम कइसे चढ़बै?'

'अरे मर्द आदमी हौ औ चढ़ना उतरना नहीं सीखेव...'

'अरे चढ़ना उतरना तो हमहू जानित है। मगर डेब्बा तो मिल जाय।'

एकु मुसाफिर निरहू का भोला-भाला समझि कै बतायेसि- 'भइया चिंता न करौ। जनरल डिब्बा हियैं लागी।'

निरहू ऊ की तरफ देखेनि तौ तनिक घबराहट कम भै। यही बतकही मा रेल आवै की घंटी बजिगे रहै। तनिक देर मा दूर ते रेल की बत्ती देखाई दे लागि रहै। निरहू अपन झ्वारा मजबूती ते पकरि लीन्हेनि रहै। गाड़ी आयगै तौ गनीमत यहै रहै कि गाड़ी मा जादा भीड़ न रहै। निरहू आखिरकार दिल्ली खातिर गाड़ी मा चढ़िगे। दरवाजे के पास याक सीट खाली रहै तौ निरहू वहि पर बैठिगे। जस गाड़ी सीटी दिहिस तौ दुइ मुस्टंडे आयगे। उनमा एक तनिक जादा बदमास मालुम परति रहै ऊ निरहू ते पूंछेसि-

'हियाँ कइसे बइठि गयेव?'

'भइया सीट खाली रहै तो बइठि गयेन।'

'हियाँ हम दुइ जने बइठ हन। अउरु कहूँ देखि लेव।'

निरहू चिरौरी करै लाग- 'भइया हमका दिल्ली तके जाना है। याक किनारे बइठ रहै देव।'

'दिल्ली जाना है तौ का हमरे मूड़े पर बइठि के जइहौ। चलौ आगे बढ़ौ।'

ऊ हाथ पकरि कै निरहू का उठा दीन्हेसि। निरहू दुइ मुस्टंडन ते लड़ि नहीं सकत रहै। सो उनका फर्स पर बइठैक परा। वइसे तो फर्स पर बहुत जने बइठ रहैं। निरहू याक किनारे बइठि गे। धीरे धीरे गाड़ी सीतापुर पहुँचै वाली रहै। फर्स वाली सवारिन ते निरहू बतलाय लागि रहैं। कउनौ बाढ़ की तबाही की बात करै लाग, तौ कउनौ कुछु दुसरे कहानी किस्सा सुना रहा रहै। तनिक देर मा निरहू देखिन कि सब कुछ न कुछ अपने थैला ते निकारि के खाय रहे हैं। निरहू सेतुआ के पींड़ा बनवाय लाये रहै। तो वहू अपना झ्वारा खोलि के पींड़ा निकारि कै खाय लाग। निरहू के पास बइठ एकु आदमी आलू के परांठा लावा रहै। ऊ पूंछेसि-

'लेव भइया पराठा लेव।'

निरहू कहेनि- 'नाहीं भइया! हम ई सेतुआ लाये हन। तुम अपन पराठा खाओ भइया। रस्ता खातिर हम सेतुआ के ई पींड़ा बनवा लेइति है। बसि इनही ते काम चलि जात है।'

*'सेत्तू लपेट्टू*
*जब घेरे*
*तब खाये*
*तब चले। धान बिचारे कूटे खाये चले।'*

हाँ भइया! वाह, यू तौ हमरेहू गाँव मा कहा जाति है।'

'अरे या मसल पूरे जवारि मा चलति है।'

'तुम्हार कउन गाँव है?' निरहू पूछेनि।

'हमार गाँव पैंतेपुर है।'

'पैंतेपुर जानित है भइया! यू तौ महमूदाबाद के पासै है।'

'हाँ बसि कोई चारि-पाँच किलोमीटर होई।'

'हम धाँधी ते आय रहेन है। दिल्ली जाना है। हुआँ हमार दद्दू रहति हैं। हम हियाँ खेती किसानी मा फँसे रहित है। उइ दिल्ली मा कमाय रहे हैं। अब तौ दिल्ली मा अपन मकान बनवा लीन्हेनि है।'

'यह तौ बड़ी खुसी की बात है। दिल्ली मा अपन मकान है तो बहुत बड़ी बात है।'

'अरे दद्दू बड़े मजे मा हैं। अपन काम है। चारि ठईं रिक्सा हैं केराये पर चलति हैं। भउजी अलग नौकरी करती हैं। ...अच्छी पैदा है।'

'हियां कै बिगहा खेती है?'

खेती तौ कुल चारि बिगहा रहै। लेकिन हिया हाँके मा कउनौ बुराई न रहै। निरहू अपन रुतबा बढ़ाय कै बताइन-

'खेती कोई दस बिगहा है।'

'दस बिगहा अकेले परिवार खातिर बहुत है।'

'बहुत तो है। लेकिन अब जन मंजूर मिलति नहीं हैं, सो खुदै मेहनति करिति है।' निरहू सोचिन। चारि के दस बतावा औ मंजूर की बात कइ कै अपन रुतबा बढ़ा लीन।

सामने वाला आदमी कहेसि- 'ठीक कहति हौ भइया! अब गाँवन मा मँजूर कहाँ मिलति हैं? जीके घर मा तीन चारि मनई हैं वहै खेती कइ सकति है।'

'अब खेती मा खर्चु बढ़िगा है। ...अब पहिले वाली बात नहीं है।'

'ठीक कहति हौ भइया।'

सामने वाला मुसाफिर निरहू की गप्पै सुनि रहा है। निरहू लगातार अपन बहबूदी हाँकि रहे रहैं। दूनहू जन जब खाना खा चुके तो निरहू बीड़ी का बंडल निकारि लीन्हेनि। सामने वाले ते पूछेनि-

'बीड़ी पीहौ?'

ऊ कहिस- 'सुलगाओ। ...बीड़ी तो हमहू पियब। खाना खायेके बादि हमका बीड़ी चही।'

निरहू कहेनि- 'हम तौ भइया सिकरट पीति रहै। अरे रेड ह्वाइट वाली। लेकिन डाक्टर जबते मना कीन्हेसि है तब से बीड़ी पियै लागेन।'

'का दमा हुइगा रहै?'

निरहू मन मा कहेनि- की का दहिचोदे का दमा हुइगा रहै? फिर जोर ते बोले- 'हाँ भइया साँस फूलै लागि रहै तो डाक्टर बाबू कहिन सिकरट छोड़ि देव। ...हम डाक्टर ते कहि दीन- याकै तौ सौख है। वहु कैसे छोड़ि देई। ...हम ते न होई।'

'फिरि?'

'फिरि का... डाक्टर घरवालेन का समझा दीन्हेसि रहै कि सिकरट इनके लिए जहर है।'

'फिरि?'

'फिर भइया हम डाक्टर ते कहि दीन- डाक्टर साहेब तुमका अपनि फीस लेनी होय तो कउनौ दूसर रस्ता बताओ। सिकरट तो न छूटी। फिर डाक्टरवा कउनिव तना माना।'

'का कहेसि डाक्टर?'

'ऊ कहेसि- सिकरट नहीं छोड़ सकते तो बीड़ी कभी कभी पी सकते हो। ...बस तबसे हम बीड़ी पियै लागेन।'

सामने वाला मुसाफिर कहेसि- 'ठीक भवा। बीड़ी कम नुकसान करति है।' निरहू मन ही मन गल्लु हुइ रहे रहैं। बातन-बातन मा गाड़ी सीतापुर आय गै रहै। सीतापुर मा गाड़ी देर तक खड़ी रही। हियां

सवारी उतरी कम रहैं चढ़ी जादा रहैं। अब डेब्बा मा भीड़ हुइगै रहै। तीपर तमाम चाय-पानी-ठंडा-समोसा-पूरी ब्याचै वाले बार बार यही डेब्बा मा घुसि रहे रहैं।

निरहू यू सब देखि कै ऊबै लाग रहैं। गर्मी रहै- पसीना चलि रहा रहै। भीड़-भाड़ मा कउनौ ब्वारा कचरि दिहिसि तौ निरहू ऊ का धकिया दीन्हेनि।

'काहे भइया! का सुझात नहीं है?....'

'का हुइगा?'

'हुइगा? .....अरे ब्वारा कचरे दै रहे हौ औ पूछि रहे हौ का हुइगा?'

'देखि नहीं पायेन दद्दू भीड़ है।'

'देखि नहीं पायेन.... आँखी तौ बड़ी बड़ी हैं। ...पूर लोटन कबूतर हुइ रहे हौ। - चढ़ति चले आय रहे हौ।'

'दादा! गलती हुइ गै।'

'चलौ आगे बढ़ि जाव... चूतिया सार। यकदमै बउखल हौ।'

गाड़ी खुलि चुकी रहै तौ कुछ पसिंजर भागि कै चढ़े रहैं। वे धक्का-मुक्की करै लागि रहैं। निरहू मौका देखि कै पैंतरा बदलि लेति रहैं। थोरी देर पहिले जब महमूदाबाद मा चढ़े रहैं तौ दुइ मुस्टंडन का देखि कै सिटपिटाय गे रहैं। अब दुइ चार फर्स पर बइठ बतकहा उनके साथी हुइगे रहैं तौ उनका जिउ बढ़िगा रहै। पैंतेपुर वाला साथी उनके बगल मा रहै वहौ उइ लरिकवा का हड़का दीन्हेसि-

'आगे बढ़ौ... नहीं तो द्याब एकु कनपटी पर।'

ऊ लरिकवा सिटपिटाय कै आगे बढ़िगा। ठीक वहे तना जइसे निरहू महमूदाबाद मा चढ़ति बेरा सिटपिटाय गे रहैं। लरिकवा आगे खसकि गवा तौ निरहू मुस्क्यान मानौ जगु जीति लिहिन। फिरि झट्टै दुइ बीड़ी सुलगा दीन्हेनि। याक बीड़ीं पैंतेपुर वाले साथी की तरफ बढ़ा दीन्हेनि। गाड़ी अब इस्पीड पकरि लिहिस रहै। खट-खट, खटर-खटर, झटर-झट पटर-पट करति भई गाड़ी बढ़ै लागि रहै। इस्पीड मा अउतै खन हवा लागै लागि रहै। सब सवारी अपनी अपनी जगह अँउघाय लागी रहैं। कउनौ बइठे बइठे स्वावै लाग तौ कउनौ ठाढ़ै ठाढ़ स्वावै लाग। निरहू चैन ते बइठे-बइठे सोय रहे रहैं। जब गाड़ी कहूँ रुकै तौ सबकी आँखी खुलि जाँय। गाड़ी राति मा कहूँ आउटर पर खड़ी हुइगै रहै। साइति साहजहांनपुर के पास रहै। हुआँ अइसि चिराइँध फैलि रही रहै कि सबका जिउ खराव हुइगा। रेलवे लाइन के किनारे बदबूदार पानी भरा रहै। कउनौ फैक्टरी क्यार गंदा पानी होई। निरहू बिल्लाय गे। पैंतेपुर वाले ते कहिन-

'भइया बड़ी चिराइँध फैलिगै। मालुम होति है कउनौ हगि मारिस है।'

पैंतेपुर वाला हँसा, फिर बताइसि-

'हगि नहीं मारिस.... यू लाइन के किनारे फैक्टरी क्यार पानी आय सड़ि रहा है तीकी बासु आय।'

'का कहति हौ? ...पानी की बासु आय?'

'हाँ भइया! यू फैक्टरी क्यार गंदा पानी आय। ई मा बिरवन की पाती अउरु खरपतवार सड़ा करति हैं।'

'ओफ्फो... दादा रे दादा, या चिराइँध तो यकदम दिमागै मा चढ़ी जाय रही है।'

निरहू अपन अँगौछा निकारि कै नाक पर धरि लीन्हेनि। सब मुसाफिर हैरान रहैं। जब निरहू देखिन कि सबै हैरान हैं तौ उनकी परेसानी तनिक कम हुइगै। गाड़ी करीब आधा घंटा वहे तीर खड़ी रही। सब बिलबिलाति रहे। याक मेहेरुआ तौ उलटी-पलटी करै लागि। सवारी डेब्बा मा रोसनी कम रहै। कहू-कहू दुइ-चारि बलब लगे रहैं। डेब्बा यकदम खटारा रहै। सवारी डेब्बा यही तना के होति हैं। होति-करति कउनिउ तना जब गाड़ी चली तौ जान मा जान आयी। लेकिन बड़ी देर तक नथुनन मा वहै चिराइँध वसी

रही।

निरहू का फिरि नींद आवै लागि रहै। अपने इवारा के सहारा निरहू फर्स पर पाँय फैलाय के लोटिगे। जहाँ पाँव धरै केरि जगह न रहै निरहू हुआँ अपनी बतकही ते पहुड़ै का जुगाड़ कइ लिहिन रहै। सुबेरे के सात बजे गाड़ी गाजियाबाद पहुँचि गै रहै। पैंतेपुर वाला साथी निरहू का हला दीन्हेसि। निरहू भरभराय कै उठि गे। पूछेनि-

'का गाजियाबाद आय गवा?।'

'हाँ! भइया गाजियाबाद आय गवा। ...तुम तौ बहुत भदूदर स्वावति हौ।'

'का बताई आँखि लागि गै। काल्हि बहुत थकि गे रहन। ...चली भइया। तुम तौ दिल्ली उतरिहौ?'

'हाँ! हम तौ दिल्ली उतरब। तुम उतरौ।'

'तुम आपन का नाम बताये रहौ?'

'हमार नाम बिनोद है। पैंतेपुर कबौ आयो तो मुलाकात होई।'

'हमार नाम निरंजन परसाद है। मुला गाँव मा सब निरहू कहति हैं। कबौ धाँधी आयो तो तुमहू मुलाकाति कइ लीन्हेव। ...अच्छा भइया। ...राम-राम।'

'राम-राम।'

निरहू गाजियाबाद इस्टेसन पर उतरि गे रहैं। जीना चढ़िकै बाहेर निकरै लाग तो टिकट कलट्टर रोकि लीन्हेसि। सब अपन टिकट देखाय रहे रहैं। टिकट कलट्टर कहेसि-

'टिकट लाओ?'

'तुम का करिहौ हमार टिकट?'

'टिकट है तो देखाव। नहीं तौ हजार रुपया जुर्माना भरौ।'

'टिकट है भइया। लेव द्याखौ। ...जुर्माना काहे क्यार।'

'चलौ आगे बढ़ौ।'

निरहू आगे बढ़ि गे। मन मा कहै लागि- 'सरऊ जुर्माना ल्याहैं। का कउनौ चोरी कीन है। ...कउनो बेटिकट हन का?'

इस्टेसन से वाहेर निकरि कै निरहू अपने खलीता ते पर्स निकारिन ऊ मा एकु कागज रहै जीपर रमेसुर भइया का पता लिखा रहै। वहे हिसाब से निरहू भइया जी.टी.रोड़ तिराहे पर पहुँचि गे। हुआ देखिन तौ बिक्रम वाले- 'बाडर-बाडर' चिल्लाय रहे रहैं। निरहू याक ते पूछेनि- 'का अपसरा बाडर जइहौ?'

'हाँ! जल्दी बइठौ।'

'भइया हमका बता दीन्हेव। काहे ते हम पहली दफा बाडर जाय रहेन है।'

'बताना का है। हुआँ सबै सवारी उतरि जइहैं। ...गाड़ी खाली हुई जाई।'

निरहू डेराति डेराति बइठि लिहिन। पहली दफा दिल्ली आय रहे रहैं तो बड़ी घबराहट मन मा रहै। जइसे आठ सवारी पूरी भईं बिक्रम वाला गाड़ी चला दीन्हेसि। दूसर याक सवारी दौरि रही रहै मुला बिक्रमवाला कहेसि- 'गाड़ी फुल है दुसरी मा आओ।'

यू सुनि कै निरहू बड़े खुस भे। कि हिया जबरदस्ती मनई का ठूँसि कै नहीं बैठावा जाति है। धड़ाधड़ बिक्रम वाला इस्पीड मा चला। ऊ का किलीनर लँउडा न जानै का का बिल्लाति रहा। जहाँ सवारी उतारै क होय हुआँ तनिक देर बिक्रम रुकै दूसर सवारी मिलै तो ठीक नहीं तो आगे बढ़ि ले। सुबेरे का टाइम रहै कोई आधा घंटा मा निरहू बाडर आगे रहैं। बाडर पर उतरि के निरहू देखिन तौ सड़क पर एक बड़ा क्यार दरवाजा अस बना रहै तीपर लिखा रहै- 'दिल्ली में आपका स्वागत है।' निरहू बहुत खुस हुइगे कि चलौ ठीक से पहुँचि गयेन। अब रिक्सा वाले से पूछेनि-

'भइया कलंदर कालोनी केतनी दूरि है?'

'बहुत दूर नहीं है। लेकिन पैदरि तो दूरि परि जाई।'

'कै पइसा लेहौ?'

'बसि दस रुपया।'

'दस तो जादा है।'

'तुमका मालुम है कलंदर कालोनी?'

निरहू बोले- 'नाहीं।'

'फिर कइसे कहि दीन्हेव दस जादा हैं।'

'हमका बताइन रहै पांच रुपया लागति हैं।'

'कलंदर कालोनी मा की के घर जाना है?'

'रमेसुर भइया है हमार.... कलंदर कालोनी मा रहति हैं।'

'तो यू कहौ। रमेसुर भइया के घर जाना है। ....बइठौ।'

'लेकिन केरावा?'

'बइठौ यार! तुमते केरावा को माँगि रहा? ...यू रिक्सा उनहिन का आय। बइठौ जलदी बइठौ। ....तुम निरंजन भइया आव? ....सीतापुर ते आये हौ?'

'अरे वाह भइया! ...तुम तौ हमका चीन्हि लीन्हेव। ...ठीक पहिचानेव हमही निरंजन परसाद निरहू आन। जिउ खुस कइ दीन्हेव भइया।'

तनिक देर मा रिक्सावाला निरहू का रमेसुर के घर पहुँचा दीन्हेसि रहै। रमेसुर भइया निरहू का गले से लगाय लीन्हेनि। निरहू भइया के पाँय छुइनि फिरि भउजी के पाँय छुइनि। पप्पू कूदि कै आवा निरहू के पाय छुएसि औ झ्वारा पकरि लीन्हेसि। निरहू खलीता से दस रुपया का नोट रिक्सावाले का दे लाग। रमेसर समझाइन- 'यू पैसा न लेई। ...यू अपनै रिक्सावाला है।'

'कोई बात नहीं हम केरावा नहीं दै रहेन। हम तो ई का इनाम दै रहे हन।'

'इनाम काहे का?'

'अरे भइया! यू हमका-तुमका मिला दीन्हेसि। यू न मिलतै तो कहूँ भटकि जाइति। ...ई दिल्ली मा न जाने केतने मनई भागति भये मिले हैं। मानौ सबका कुछु न कुछु हेराय गवा है।'

रमेसुर हँसे। कहिन- 'ई सब ड्यूटी वाले आँय। मनई-मेहरुआ-लरिकवा-बिटेवा- बूढ़-ठूढ़ हिया सब कामे पर निकरति हैं। सुबेरे औ संझा का यहै भगदड़ रहति है।'

'दद्दू हम तौ बाडर के चौराहे पर भगदड़ देखि कै डेराय गये रहन। कि कहूँ आगि तो नहीं लागि है- जीका बुझावै खातिर सब दउरि रहे हैं।'

फूलमती जोर से हँसी- 'वाह निरहू भइया! तुम तौ कमाल की बातै करै लाग हौ।'

निरहू कहेनि- 'तुम्हार हँसी देखि कै जिउ जुड़ाय गा। बरसन हुइ गे रहैं। ...यू पप्पू अब तौ सयान हुइगा है। चारि साल पहिले दीख रहै। अब कहूँ अकेले मा मिल जाय तो पहिचान न मिली। ...बच्चा तनी ई झ्वारा ते अमरस निकाल लेव। बिट्टो तुमरी खातिर पठयिनि हैं। ...वा अपने हाथ से बनाइस रहै।'

'वाह चाचा! अमरस तो हमका बहुत पसंद है। ...देखेव मम्मी! बिट्टो हमार केतना ध्यान रखती हैं।'

'अरे तुम्हार बहिनि आय। ...बहिनी भाई का ध्यान न रखिहैं तो को राखी?'

रिक्सावाला इनाम के दस रुपया लइके चला गा रहै। निरहू भइया थकि गे रहैं तो खटिया पर आराम करै लागि। भउजी चाय नास्ता करा दीन्हेनि रहै। रमेसुर भइया अपने कामे ते चले गे। भउजी अपने कामे ते चली गयीं। पप्पू रहिगा रहै। वहिका इस्कूल साढ़े बारह बजे ते लागति रहै। भउजी याक कोठी मा

चौका बासन करै जाती रहैं। हुआँ ते बारह बजे अउती रहैं। फिरि छ बजे साम का वहे कोठी का काम पर जाती रहैं। फिरि आठ बजे अउती रहैं। तीके बीच मा घर के सारे काम फूलमती भउजी ही का करैक परति रहैं। हट्टी-कट्टी हैं। फूलमती। महिना मा डेढ़ हजार कमाय लेती हैं। रमेसुर भइया के चारिउ रिक्सा केराये पर चलति हैं। कलंदर कालोनी का साइकिल-रिक्सा मरंम्मत केरि उनकी दुकान है। दुकान का ठीहा है। सड़क के किनारे याक कोने मा रमेसुर भइया दुइ चार टायर-कुछु साइकिल रिक्सा का सामान पंप अउरु टायर लीवर-रिंच-पाना लइ कै बइठति हैं। वहे तीर लकड़ी क्यार एकु बकसा धरा रहति है तीमा सब औजार धरे रहति हैं। एकु तसला-याक बाल्टी-सुलेसन-रेगमाल-ग्रीस अउरु सब अटरम-घटरम उनके ठीहा पर धरा रहति है। एकु लरिकवा राखे हैं जो ठीहा पर काम करति है। मंगलवार की छुट्टी होति है। मंगल वाले दिन हियाँ सब दुकानै बंद रहती हैं। वहे दिन फूलमती अपन छुट्टी कइ लेती हैं। लेकिन छुट्टी वाले दिन फूलमती का जादा काम परि जाति है।

डेढ़ कोठरी क्यार घर रमेसुर के पास रहै। संडास बाहेर रहै। पूरी कलंदर कालोनी मा यहै इंतिजाम रहै। बिजुली की चोरी होति है। दुइ चारि मनई बिजली का बिल देति हैं। बाकी सब कटिया डारि कै काम चलावति हैं। अब कुछु सख्ती हुइ गै है। पहिले कलंदर कालोनी मा भालू-बंदर नचावै वाले मदारी रहति रहैं। अब जबते जानवर राखै पर चालान होय लाग है तबते हियाँ के मदारी अउरु कलंदर सब मेहनति मँजूरी करै लाग हैं। कोई पाँव रिक्सा चलावति है, कोई तिपहिया इस्कूटर, कोऊ ठेलिया लगाय कै तरकारी फल बेचि लेति है, कउनौ राज मिस्तिरी वाला काम करति है, कुछ हुसियार लँउडे बिजली पानी के मिस्तिरी हैं। हियाँ की मेहेरुआ सब मँजूरी मेहनति करती हैं। नाले के किनारे घनी आबादी वाली गरीबन की हियाँ यहै मसहूर कालोनी है। कुतवा-बिलइया तना सब खुब लड़ति हैं तीकै फिरि मेल मुरव्वति से रहै लागति हैं।

हियाँ की दुनिया के बारे में निरहू सब जानकारी याकै दिन मा कइ लिहिन रहै। हुसियार तौ रहबै करैं निरहू कुछु देखि कै समझिन-कुछ सुनि कै बाकी जउनु कुछ समझ मा न आवा तीका पप्पू तक पूंछि कै जानि लीन्हेनि। थोरी देर बादि निरहू का नींद आय गै। रेल मा ढंगते नींद न परी रहै।

# तुलसी निरखैं रघुवर धामा

**डॉ. सुरेश प्रकाश शुक्ल**

हमार भारत वर्ष राष्ट्र भौतिकता औ आधुनिकता मैंहा भले अबहीं तक संघर्ष कै रहा है लेकिन हिंया केरि पौराणिक संस्कृति औ शिक्षा दीक्षा बहुत अधिक पवित्र औ असरदार रही है। हमका सबका सहिष्णुता, दुलार, त्याग-तप और सुख-शांति भावना केरि स्वाभाविक गुण विरासत मां मिले हैं। पौराणिक काल के आरम्भ सहिष्णुता औ त्याग भाव अबहीं तक हमरे सबके घर मां महतारी बाप और अपने पुरिखन से बताए-सिखाए जाति हैं। या हमरे दर्शन कै महानता रही है कि भीतर-बाहर से हमरिनि होइकै रहिगे। आज हमरे ई आधुनिक भारत मैंहा एक करोड़ मनई सबै धर्म-कर्म वाले रहि रहे हैं। तौ कुछ विसंगति औ खटपट भी कब्बौ-कब्बौ होति रहति है, तबहूँ हमारि तमाम तनकी विविधता मैंहा एकता जगजाहिर है। भारत फिरि विश्व केरी ललचाई आंखी अपनी कैसी खैंचि रहा है।

अध्यात्मिक धरोहरि तौ खुब पसरी परी है। अपने देश मा लेकिन सुख शांति, खुशहाली, और ज्ञान केरि पूंजी अबहिंव गवंई गाँव मां रहै वाले तमाम देशवासिनि केरे भाग्य मैंहा वैसे दुर्लभ है जैसे बीते हजार-पाँच सौ सालन मां हमारि पुरिखा भोगिनि हैं। उनकी दशा तौ बहुतै विपन्न दुखदाई रही और उनका जीवन पशु पक्षिनि तना बहुतैं अल्प और अनिश्चित रहै। ई स्थिति क्यार खुब-बढ़िया बखान अपनि तुलसीदास बाबा राम चरित मानस औ अपने सब काव्य ग्रन्थन मैंहा किहिनि हैं।

अब द्याखौ बड़े-बड़े नगर होइगे। ई महानगर, कस्बा, बजार, हाटन मैंहा तौ फिरिउ मनई कुछ आसानी मैंहा, कुछं बढ़िया, खुब छकलौ-बकलौ, तौ बहुत जने अपनी जरूरतै भरि सही, परिवार तौ पालि रहे हैं, मुल गंवई गाँवन मैंहा उफनाति जाति या हमारि जनसंख्या न ठीक से खाय पहिरि पाय रही है औ न शिक्षा-ज्ञान सबका नसीब है। हमरी तनके कत्ते निकरि पावति हैं जी गाँव से ई नगर तक अपन ठौर-ठिकाना औ रोजी-रोटी बनाय पावति हैं?

उइ दिन गांव पहुचति हमका सबका दुपहर होय लागि रहै। असाढ़ क्यार महिना मुल ख्यातन से लैके गलियारन तक धूरि उड़ति रहै। सवेरे सेनी बदरेम चढ़ी धूंधी हमेशा केरी तना सबका पानी बरसै केरि आस लगाय दिहिस रहै। पिछले तीन चारि साल से जरूरति भरि पानी इन्द्रदेव बरसाइनि नाई तौ खेती पाती, जर, जानवर, औ उद्यम-रोजगार सब नरम परिगे। मनई कौनिव तना पेट जियावैक कोई नहरि खोदि, कोई मंजूरी कैके औ कुछ हिम्मती नगर कस्बन की राहिम रिक्सा, खोमचा चलाए, कौनिव तना लरिकन कैंहा जियाए रहैं। यहै स्थिति हमरे ई उत्तर भारत भरेम उइ साल होइगै रहैं। मनै मन अपने पर गुमान भा कि चलौ छोटि-मोटि नौकरी-चाकरी सही, मुल पैसा रूपया तौ द्याखैक मिलति हैं।

अपनी गाँव जवारि केरि तमाम जने तौ रेलवे स्टेशनै पर मिलिकै सब हाल, बताइनि। तबहूँ अपनी घर ड्योढ़ी और परिजनन कहां द्याखैक मन व्यग्र होइ चला, "अम्मा केरि निगाह औरौ कम तौ न होइगै

होई? बापू केरे बात रोग मैंहा वा वैद्य जी की दवा जरूर लागिगै होई? औ पता नाई सुमेरी दद्दू कुछ सुधरे कि अबहूँ घर से बाहेर तक कलह मचाए होइहैं। उनके महतारी बाप और भाय ल्वाग भाई बड़े समियाई दार और जीवटि केरि निकरे, नाई तौ भला याक से याक शातिर औ कुछ घिनौने कामन मा फंसे अपने सुमेरी दद्दू कैंहा अक्सर कोर्ट कचेहरी औ जेल सेनी छोड़ौती? देखी चलै अब उनके सबके का हाल हैं?

तब्बैं याक के बादि याक गांईन केरी नरेही हमरे गाँव सेनी चरै खातिरि बहिरयाति देखानीं। सब से राम जोहारि करति औ अपने गाँव-राव केरि दशा-दुर्दशा निहारति जातै रहन कि एकदम से पछुवा हवा जोर-जोर से झिक्वारा मारै लागि। सवेरे सेनी नभ मां चढ़ी धूंधी सुरजन कैंहा अपने अंचेरम छिपाये धरती पर बड़ा सुखदायी मौसम कै दिहिसि रहैं। तो भला खुस्की और गर्मी मिटै कितना? ऊतौ बरखा क्यार पानिनि धरती औ ई के बासिन्दन केरि पियास-भूँख मिटाय सकति है।

देखतै दुयाखति बयारि अंधड़ क्यार रूप ले लागि। धूरि-बयारि औ सांय-सांय केरि आवाज के साथ दिन-दुपाहरेन, सांझी आठ बजे कस अंधेर घिरि आवा। अब तौ दुइ याक जनेन के साथ, हमहूँ सबै परिजन, हाथन मां हाथ थामे कौनिव तना घर का लपकेन। अबहीं तक धान व्यारन और गर्मी केरी मकाई कैंहा सींचैक जौन इंजन धरती सेनी पानी खैचे लेति रहैं, ई अचानक आये अंधड़ से सब शांत होइगे। कुछ चरवाहन और उनके परोहनन कैंहा बचाव खातिरि ऐसी-वैसी भागत दुयाखा तौ हमरौ जू घबरान। मुल हमार अपन गाँव रहै तौ बचपने केरि ढिठाई कामे आई औ घर का लपकि आयेन सब जने। सबके घर मां पल्ला दरवाजा सब बंद। कहूं कोई बोलचापौ नाई सुनाई दे। बसि सांय-सांय हवा, याक आधी बूंदी औ कुछ उड़ै गिरै केरि दूरि तक आवाजै सुनायं। सुमेरी दद्दू केरे घर के आड़ेम अपने लारिका औ घरौतिन कैंहा लिहे सिमटे बौड़र और तूफान थमै केरि प्रतिक्षा करै के अलावा हमरे लगे अउर कौनौ राह रहबै न करै। लेकिन मौसम औरो बिगरै लाग। अंधेरू घिरतै चला आवै। राम जी का नाम जपति सब खैर मनाइति रहैं कि तबहें कुछ दूरि मातन चौतरा लगे लागि विशाल पीपर केरे बिरवा तरै कुछ हरकत भै क्यार आमास भा। तल्हे बिजली जोर से चमकि उठी तौ वा बिरवा तरै केरि सफेदी औरौ दृष्यमान भै औ लाग कि कोई हुआं है जरूर। हिम्मति तौ नाई परै मुल स्वांचा कि कोई हुंआ बिरवा तरे ई बेरहम आंधी केरि थप्पाड़ा कितना झेलि पाई। चलौ वहुक हिंयै देवाल केरे आंड़ लै आई। औ जैसे देवाल के आगे आयेन कि अत्ता जोर क्यार झिक्वारा आवा कि बिना पांव चलायेन हम तौ वहे पीपर केरे मोटे तना मैंहा जाय लड़ेन। यू समझौ कि उइ मनई केरे उपरै जाय गिरेन तौ उइ भाई केरे मुंहि से वेदना क्यार स्वर उभरा,

हे राम, अब तौ तुमरौ सहारा है। औ अगिलेहे पल हमका साथ पाय उइ भाई कैंहा सहारा मिला तो मुल कुछ अउर न बोलि पाये। अत्ता हमहुंक ध्यान अबहीं है कि जब तक आंधी उड़ि नाई गै, उइ भाई हमार हाथं कसिकै पकरेन रहे।

अइसी हमारिव छोटि-छोटि लरिका घबरायं औ महतारी केरे कहे सेनी जोर-जोर हमहेंक बोलावै।

बापू कहाँ हौ? आय जाव बापू हो .......................... सुनि कै हम जवाब तौ देई मुल जनौ उल्टी हवा के कारन सुनात नाई रहैं, तबै तो उनकी घबराहट औ रूदन उनकी पुकार मैंहा साफ सुनाति रहै।

खैर कुछ अउर आफति नाई आई लेकिन घंटा भरि चली आंधी सबका जीवन अस्त-व्यस्त कइगै। पशु-पक्षी, मनई तौ फिरिव अपनक संभारिनि लेकिन तमाम बिरवन केरी डारै फाटि परीं। ख्यातन मैंहा फसल पात रहबै नाई करै तो हुंवा का हानि होतै? जौनि सयानी मक्का औ लहड़रा सींचे परे रहैं उइ जरूर भुंइ लोटिगे। बिरवन मां एक आधी बची अंबिया रहै, पुरज़ोर थप्याड़न मां चुई परी।

धीरे-धीरे जीवन फिरि गतिमान जब होय लाग तब तक हम अपने परिवार के लगे आय गयेन रहैं। अब उइ नव आगन्तुक कुछ तुरधुल अवस्था मैंहा साफ देखाय परे। उनका हमारि लरिका मेहेरिया बड़े

गौर से दृयाखै लागि।

बच्चा हम साधू सैलानी हन। अपने शिष्य केरे साथ अपने गाँव याक धार्मिक अनुष्ठान मैंहा जाइति रहै। अब दृयाखौ माया प्रभू केरि। घंटै भरेम सब उल्टि पल्टि दिहिन।

आगन्तुक जब अपनी सधी और मर्यादित बोली बानी मैंहा अपन परिचय देक प्रयास किहिन तौ उनमां कुछ असाधारण शारीरिक और कुछ ओजस्वी लक्षन, देखाय परे। अबहीं छिन भरि पहिले आंधी थप्याड़न मैंहा जौनि उनकी काया औ वस्त्र कुछ जर्जर औ मलीन परिगे रहैं, उनके बोलतै सब स्वस्थ औ धवल, निर्मल होइगे। हमहूँ अपन अचरज भला रौकि कितना पउतेन, पूछि लिहा झट से,

आप केरि संयत वाणी सुनिकै औ आप के ई वस्त्र और उनके धारण करैक शैली बतावति है कि आप कौनिव सन्त महातिमा हौ। महराज तनिक अउर खुलासा करौ कि आप कहां केरि तपस्वी हौ औ कौने जाति रहौ हिंया हमरे ई पुरवा मैंहा आधी-पानिम फंसि गयेव?

हमारि सामान्य जिज्ञासा सुनि उइ बाबा जब कुछ न कहति देखानि तौ हमरे सबके मन मा अउर जिज्ञासा बढ़ी कि आखिर ई महराज आँय को?

अधेड़ उमिरि, सुगठित शरीर, वस्त्र रहैं एकदम सफेद लेकिन पहिनावा साधु केरे अंचरा तना, केश विहीन सिर औ मुंह मण्डल पर एक विशेष मुस्क्याति आभा। हुंआ अब तक जमा होइगे तमाम जनेन से बिल्कुल अलग उनकी काया निहारि सबै उनका जानैक समझैक उतावले होय लागि तौ हमहैं फिरि अबकी उनके लगे आय पूछेन,

आप कैंहा हम सबै हिंया पहिले दृयाखा नाई ना, येहेसि ई सब हमारि भाई बंद भीर लगाय लिहिनि हैं। फिरि आपै अबहीं कहेव है कि सब माया प्रभु केरि है। अबहीं सब आंधी बौखा सैनी बचैक घरन मां लुक्के रहैं औ अब दृयाखौ जनौ कुछ भइबै नाइ भा। अब महाराज हमारि सबकी जिज्ञासा शांत करैक अपन पूरा परिचय देक कृपा करौ।

हमारि मनुहारि सुनिकै, उइ मुस्क्याति कहि उठै, "भाई आप लोग तौ बहुत दयालु औ श्रद्धालु हौ। तबै तौ ई लीलाधारी प्रभु हमका मिलाइनि हैं। हम सन्तन क्यार ठौर ठिकाना तौ सबै कहूँ आप श्रद्धालु बनाए हौ मुल अपने राम जी की कृपा सेनी हिंया सेनी बीस मील पर हमार मुंडा गोपाल आश्रम जाना जाति है। येहें सेनी हमारि श्रद्धालु हमका मुंडा गोपाल बाबा कहति हैं। हमार बचपने क्यार नाम चिन्तामणि है। राम जी के आदर्श, उनकी मर्यादा अपने ई देश, समाज मैंहा जन-जन तक पहुँचाय पायीं बसि यहै आज्ञा हमारि प्रभु हमका दिहिनि हैं।"

महराज कय परिचय जानि हुंआ एकत्र सब जने अब आंखी फैलाए उनका बड़े अचम्भै मैंहा दृयाखै लागि रहैं। कुछ अउर जानैक जिज्ञासा मैंहा याक जाने फिरि पूछि बैठि।

औ महतिमा हिंया कौनी कथा भागवति मैंहा आये हौ? कहां पर यू आयोजन होई?

अरे भाई ! जहां राम जी की चर्चा होय हुवै समझौ कथा होइगै। फिरिउ जानि लियौ कि त्रिलोक पुर है न हिंया आप के पड़ोसे? हुंवै याक भक्त है, औ महाकवि महतिमा तुलसीदास जी की रामचरितमानस बहुत अच्छी गावति बजावति हैं। हमरे हिंया आश्रम आवा करति हैं तो उनहें हमका अपने ई आयोजन मां बोलाइनि हैं। और बोलाइनि का हैं समझौ या विशेष कथा हमहेक तौ कहैक है।

विशेष कथा महराज? का ई रामकथा सेनी भी विशेष?

बाबा क्यार गूढ़ मन्तव्य सुनिकै हमरे साथे औरो सबके मुँहि से साथेम या जिज्ञासा जाहिर भै। अब हम सबै उनका लैकै अपने द्वारे मोहरा तक आय गयेन रहै। हमारि परिजन हमरे सबके साथे उइ महतिमां केरे स्वागत मैंहा तखत पर याक देसी बीनी चटाई बिछाय दिहिन। साधु पुरुष क्यार हाथ थामि हम उनसे आग्रह केहेन।

आओ स्वामी जी हिंया बिराजौ। पहिलहे आयी आंधी तूफान मैंहा बहुत हलकान भए हौ। महराज जौ कुछ पानिव बरसि जातै तबहूँ आंस प्वाछैक हरेरी तौ होइ जातै। अब द्याखौ महराज इंद्र देव कब कृपा करैं?

ई हमारि परिजन हैं, इनका अपनि आशीष दियौ। औ महराज त्रिलोकपुर तौ जानौ आइनि गयेव है। कुछ भोजन, पानी ग्रहण कै लेतिव तौ हम पर बड़ा उपकार होतै।

महतिमा अब तक हमरी सबकी सद्भावना मैंहा खुब-मिलिगे रहैं। हमरे छोटन्नूं कैहां दुलरावति कहै लागि,

भाई यू संयोग न होतै तौ काहे तूफानी संकट केरी घड़ी मैंहा उइ पीपर देव तरे तुमार सहारा मिलते? अब जइसि प्रभु की इच्छा? अत्ता जरूर किहेव कि दिन रहतै हमका त्रिलोकपुर हमरे यजमान के हिंया अटाय जरूर दिहेव। अबहीं हमका हमरे शिष्य केरि चिन्ता लागि है। बिचरऊ पता नहीं कहाँ भटकति होंय?

हाँ महराज अबहीं द्याखौ हम अपने भाइन कैंहा सब कहूँ उनकी तलाश मां भेजिति है। तब तक आप हमरे गांव वालेन केरि औरिव जिज्ञासा शांत कै दियौ। महराज गांव मैंहा सब जने विपन्नता, अभाव, अज्ञानता, रूढ़िवादिता और अनिश्चिय सेनी जूझि रहे हैं। आप ज्ञानी, ध्यानी औ समर्थ मार्गदर्शक देखाति हौ। तौ हमका सबका कुछ उबरै केरि युक्त बताओ स्वामी जी।

हमरे अनुग्रह सेनी महराज बड़े प्रसन्न औ संतुष्ट भे। कहै लागि अपनै,

त्रिलोकपुर मां हमारि यजमान तुलसीराम रहति हैं। ईश्वरानुरागी हैं मुल परम भक्त है महाकवि बाबा तुलसीदास जी कै। अइसि मनहर राम कथा लिखिनि कि हम सब जने ऊका रोजुई गाइति है औ राम जी का वंदन करिति है। औ यहै ठीकै है, जो पड़ाव तक पहुँचावै ऊ तौ वन्दनीय भक्ति योग्य हैने है। तब्बै तौ कबीर दास कहिगे,

*गुरू गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागौ पाय।*
*बलिहारी गुरू आपने, गोविन्द दियौ बताय।।*

तौ तुलसीदास बाबा याक गुरू तना अपने आराध्य राम जी तक हमका सबका पहुँचाइनि। उइ महाकवि है, भक्ति करै योग्य हैं। येहे सेनी ई विशेष तुलसी कथा क्यार आयोजन किहिनि है हमारि यजमान। आजुई से पखवाड़े भरि तक हुआ चलौ औ तुलसी बाबा औ उनके हमारि आराध्य श्रीराम जी के जीवन से प्रेरणा औ शक्ति लैकै अपनौ जीवन सुधारैक प्रयास करै।

हाँ महाराज हमारि या दारूण स्थिति आप सेनी भला कहाँ छिपि पाई। सब जने उबरैक छटपटाइति है मुल कुछ राहै नाई सूझति। का करी? आमदनी अठन्नी औ खर्चा रूपय्या। जौन महाराज कहौ वहै करी। हम सबै आपके साथै कथा सुनै जरूर चलिबै, त्रिलोकपुर।

स्वामी जी की स्यावा सत्कार करति दिन का तीसर पहर होइगा तौ उइ फिरि खुरक्याइनि,

अच्छा तौ अब जौने निमित्त आये हन, हुवां पहुंचैक समय आएगा है। चलिति है यजमान?

औ उइ अपन झोरिया, बेंत उठावै लागि तौ हम लपकि कै उनसे निवेदन केहेन,

स्वामी जी, इतना अकेले कितना चलिहौ भला। हम सब चलिति हैं आप के साथे। बस थ्वारा अउर रूकौ।

स्वामी जी, तखत पर फिरि बइठिगे। अब कइयो जने, अगौछा, धोती सह्यांजति उनके साथ चलेक आवै लागि रहैं। सबके हाल पूछैं औ अपने लगे बैठावैं। महराज बहुत संतुष्ट लेकिन सबकी दीनता पर बड़े दुखी और भावुक देखाय लागि। गांइनि केरी नरेही अब वापस अपने खूटन पर आवै लागी रहैं। दुपहरे केरी आंधी मैंहा मारि झिकझोरि गे चिरिया चुनगुन फिरि अपने बस्यारन की तलाश करै लागि रहैं। गर्मी और उसम अत्ती कि पसीना आउब रूकबै नाइ करै।

# अमंगलहारी

कृष्णमणि चतुर्वेदी 'मैत्रेय'

"एक कहावत बाटै, दुखिया दुख रोवै सुखिया पाँणर देय। सूखा परे से जहाँ रेती मा तराहि-तराहि मचा बाटै उन्हीं कुछ जन मदद न कइके रैती के अउर चूसत बाटेन। किसान क उधार तक नाय मिलत बा. ............ चमड़ी चली जाय लकिन दमड़ी न जाय अस विचार सूम लोगइ अबहिउँ पाले हयेन। हे द्विज गन! अब तुहरे सब बतावा कि एहि समस्या कै कवन उपाय बाटै?"

राजा रोमपाद झंखत की पूछेन।

रोमपाद अंगदेस कै सहजोर राजा रहेन .............

"आज बड़ी नीक कथा सुरूकेहे बाट्या बेटवा !" बाध बरत की चटकीला थोर कै आगे सरकीं। "रामायन कै ई कथा सुने से सगरौ पाप कटि जा थै। आगे सरकीं। "रामायन कै ई कथा सुने से सगरौ पाप कटि जा थै। अब राम जनम से लइके राम विवाह तक कै कथा तुहैं सुनावै क परे ललऊ!"

"सुनाउब।" नन्हकू बोलेन । "लकिन बाधे क बरब बन्द करा, काम एक्कै होये कथा सुना या बाध बरा........ ई नाय कि चउरौ कूटा और कँखरिउ ढाँका।"

नन्हकू खटिया पे बइठा रहेन बाकी चार जनी भूँई। नीलम और फेंकुना एक ओर रहीं। गोड़वारी से लम्मरदारिन सटी रहीं, चटकीला रसरी बरब बन्द कइके वनही के लगे घुसकुरिया मारीं।

"सही कहया बेटवा!" लम्मरदारिन नन्हकू के हाँ में हाँ मिलाई.......! "चटकीला कै उहै निहादि बाटै करै *पिसउनी गावै सीता हरन*।"

"अंगदेस कै इतिहास काउ आ पंडि जी?" नीलम मुह खोलीं।

"जहाँ गंगा सरजू क संगम भै बाटै उहीं तट पे एक पवित्र आसरम रहा.......... भगवान स्थानु यानी सिवजी उही आसरम मा तपस्या करत रहेन। एक दिन एकाएक कामदेव वन पै धावा बोलि दिहिस. ........... तब भगवान सिव अपने रिसि भरी दृष्टि से कामदेव क जराई देहेन। जहाँ कामदेव आपन अंग छोड़िस उहै अंगदेस नाउ से सन्नाम भा।"

"रोमपाद फिर काउ केहेन पूत"! फेंकना गाले पे हाथ धइके पूछीं।

"..........कुछ बाभन रोमपाद क बतायेन कि जउ रिसि सृंग कै गोड़ नगर मा परै तो बरसात होइके रहे। रिसि सृंग महर्षि विमाण्डक कै बेटवा, बाल ब्रह्मचारी; जौन तेवई क के कहै बाप के अलाँवा अउर केहू मनसेधू तक क न देखे रहैं। वनका नगर मा लावै बदे रोमपाद योजना बनइ के सुन्नर गनिकन क पठायेन। गनिकै जंगल के बीच मा बास किहीं। एक दिन रिसि सृंग टहरत कै बहरे निकरेन। वनकै निगाह मेहरारून पे परी तो वै चउँकि परेन.............. मन मा कुतूहल बाढ़ औ रसे-रसे वै आगे बढ़ेन।

सुन्नर गहना, सुन्नर कपड़ा से सजी सब तेवई जब रिसि सृंग का चितई तो वनके तेज से बदुरि गई। गाँव-नगर मा कइउ मनसेधू कै चेहरा वनके सामने आइ रहा मुल आज वाले चेहरा के आगे ऊ सब

खासर जनाइ लाग। एक तपसी ; कंद-मूद फल पे गुजर करै वाला यतना सुन्नर होये ई बात केउ सोचे नाय रहीं। मेहररूये अपुवाँ का धन्य मानीं ......... आज वनकै भागि जागि गै जौन कि रिसि कुमार कै दरसन मिला।

एक गनिका आगे आइ ; पलक मा नेह कै समुन्दर भरि के बानी मा खाँड़ घोरि के पूछिस - "हे रिसि कुमार! तू के हया? सँकड़ा न, हम तुहैं चीन्हैं बदे आतुर बाटी। हम अंगदेस के गनिका होई; तोहरिक नाय हमरउ मनई मा गिनती बाटै।"

रिस सृंग के कान मा फुरै खाँड़ घोरि उठी। मनसेधू के अलाँवा मेहरारू कै असलियत कुछ-कुछ भाँपि के वनकै मन कुहकै लाग........ कउनो फूल से केउ परिचित भले न होय तबौ सामने आये पे वहिके सुगंध से परभावित भए बिना न रहि पाये। रिसि क लिंग भेद कै जानकारी रच्चौ नाय रही मुल तेवई कै दाढ़ी मूँछ विहीन गोल चेहरा, सुतवाँ नेकुरा, सुन्नर ओंठ, चंचल कजरारी आँख औ कमान की नाय भौंह बहु नीक लाग। वै आपन परिचय देहेन तो बात-चीत आगे बाढ़ि.............

"अब तक तुहार जीवन बन मा बीता। लरिकाईं से आज तक तू न कतहूँ गया, न केहूँ से मिल्या जुल्या.......... हर छन अपने बाप के संहे रह्या।" एक गनिका रिसि सृंग के हाथ पे आपन हाथ धड़के फुसुर-फुसुर कहिस।

मेहरारू कै नरम छुअब; मन मा गुदगुदी पैदा भै। महीन आवाज तो अउर लेसि दिहिस, ऊपर से गरम-गरम साँस। रिसि सृंग के मन मा कुछ संका उठी जौने क दूर करै ताई वै पूछि परेन- "सबका बनवै बाला तुहैं यतना सुन्नर काहे क बनइस हमै समुझाइ के कहा।"

चतुर गनिका बोलिस- *"बूढ़े कै बात, औंरा कै स्वाद बाद मा पता लागा थै*........... हम पुरनियन से जौन सीख पाये हई तौन सुनावत बाटी। दुई रास्ता "बझब और निकरब" सन्नाम बा। लरिकाईं से मोह-माया कै परदा काटि के आत्म तत्व पावै बदे कुछ जन सारी जिनगी तप करा थें। सुख-दुःख, भूख-पियास, सँग-साथ, अउघाँई बगैरह से दूर रहिके अन्त मा परमात्मा मा बिलीन होइ जा थें। चार आसरम के बारे मा तुहूँ अपने बाप से सुने होब्या। आयु कै चौथइया हिस्सा ब्रह्मचर्ज आसराम यानी पठन-पाठन मा लगावै कै सीख सास्त्र देहे बाटै।"

रिसि सृंग हाथ के इसारा से सबका बइठि जाय ताईं कहि के अपुनौ बइठि गै। ............. सब गनिकै वनका घेरि के बइठीं।

"सिच्छा पूरी कइके ..... "गनिका आगे बोलिस - "गिरस्थ आसरम मा बझै; तब पानिग्रहन संस्कार हो थै। नर-नारी पवित्र अग्नि कुंड कै सात भावँरि कइके सम्बन्ध पोढ़ करा थें। मेहरारू पिता क घर छोड़िके पति के साथे रहा थै औ पति कै सेवा करा थै। मनई गिरस्थ आसरम मा तब तक बझा रहा थै जब तक पितर रिन से उरिन नाय होइ जात। बिना पितरि रिन से उरिन भये बानप्रस्थ आसरम मा जाब ओछर परा थै ...... कहइ कै मलतब पहिले बझब जरूरी हो थै। जस तू अपने बाप कै बेटवा हया तस तुहूँ क पदे होय कि आपन बेटवा पैदा करा तब रिसि रिन कै बारी आए औ तबै वानप्रस्थ मा जाब सोहे। .......... ... हम सब "मेहरारू" हई औ तू मनसेधू। गनिका मेहरारू मनसेधू कै भेद बताय दिहिस।

"हे मेहररूवौ!" रिसि सृंग "मेहरारू" शब्द पे जादा जोर देहेन। "तू सब बहु सग्गि हऊ कलेस न होय तो हमरे आसरम तक चला तबै सोलख मिले।"

गनिका काँपि उठी। ऊ महर्सि विभाण्डक का भल जानति रही। बेटवा के तपस्या राह पे बाधा देखि के वै रिसिहा परि सकत रहेन; साप तक दइ देतेन। बोलिस - "तुहार बाप हमरे सबका देखि के भुरकुस होंय तो?"

"भुरकुस होइ कै नउबतै न आये।"

"काहे?"

"वै आसरम प नाय हयेन।"

"सिकहर टूट बिलारी क भागि से।" एक दूसर गनिका कहि परी। "हमरे सब तयार बाटी मुल एक सर्त बाटे।"

"ऊ काउ?"

"मनब्या?"

"मानै लायक होये तो मानब।"

"तुहूँ क हमरे हियाँ चलइ का परिहै।"

कहेन - "चला ठीक बा......।"

गनिकन कै घताई गै। ........... सूरज अन्हियारे मा खिंचि ग .... जोग औ भोग एक दुसरे कै एक दम उल्टा मारग। जोगी विसय मा बन्हि के साधारण जीव की नाय मेहरारू के बतकहिया मा भुलाइ ग। जौन चित अब तक जोग के दबाव मा सँकड़ा रहा; तौन अब जइसे उहै बदला चुकावै बदे कामकेलि ताईं मचलै लाग। बन्धक बना दुस्मन खुले पे मौका पाये जस नाय चूकत तस दसा मन कै बा; ई तनिकौ मौका पावत भरे मा विसय के रसरी मा कसि के सिउरि दे थै।

राजा रोमपाद कै मन चिन्ता से अलग नाय होइ पाइस, लगातार वै विभाण्डक के भय से सँकड़ा रहेन। जस-जस देर होई लाग तस-तस वै अफनाइ लागेन। जउ रिसि सृंग अंगदेस मा न आएन तौ ? रोमपाद के मुहे से सिसकारी निकरि गै, आत्म विश्वास भसकि ग, पोर-पोर करकै लाग औ माथे पे पसीना कै कन चमकै लाग।

ई दसा देखि के पुरनिया सचिव उठा। आदर से पूछिस- "काहें एतना अफना थया महराज?"

रोमपाद काँखि के बोलेन- "चिन्ता बस। लागत बा गनिकन कै उहै हाल होये कि मारै गएन मेहरी ठेठाबै लागेन डेहरी। कहूँ बैरागी वातावरन मा रमि न जाँय या विभाण्डक के रिसि मा बेचारिन बिलाइ न जाँय...........।"

"होनी अटल हो थै महाराज! सही पूछा तो हमै एहि बात कै चिन्ता नाय बल्कि एकै चिन्ता बा कि रिसि सृंग इहाँ आइके जो वइसे पाल्हा चूमिन के लउटेन तो वनकै "छूँछि पैलगी जिउ झन्न" वाली निहादि होइ जाये; फिर तो बाप से जादा बेटवै रिसिहा परि सका थै। तब काउ होइ जाये कहा नाइ जाइ सकत।"

"त-तो कउनो जुगुति नाइ ना?" रोमपाद हकलाइ गैं।

"एक जुगुति वा...............।"

"बतावा...........।"

"बताउब; लकिन जुगुति सुनिके मुह न फुलाया महराज।"

"न फुलाउब।"

"तो सुना। रिसि सृंग औ वनकै पिता तुहसे खुस रहैं ई वर सृंग से माँगि के खतरा से बचि सका थ्या। लकिन एतने से काम न चले; जउ रिसि सृंग कै चित तेवई मा बझि जाए तो वनकै सत्कार वनके गरिमा की नाय करै क परे। तब गनिका से गाँठ जोरे काम न चले महाराज!"

"हम सान्ता बिटिया का रिसि सृंग के सेवा मा लगाइ देब।"

बात चलति रही; उही बीच पुरवाई कै झँकोरा उठा औ सीतल बयारि से सगरौ उमस दूर होइ गै; बहुत खमसत रहा मुल आकास मा बादर उठा औ देखत-देखत ताइ लिहिस।

फिर झम-झमाइ के पानी बरसै लाग। आसा के एकदम उल्टा काम भा। खुसी से लरिका, सयान,

बूढ़ सबकै मन कुहकै लाग। ऊपर बादर बोलि परा तो नीचे मुरैला। अन्हरे क आँख मिले, बाँझिन क सुत मिले, चुग्गुलखोर क केहू के घरे झगरा लगाये औ भैंस के पँड़िया भए गोसयाँ क जस सुख मिला थै तस सुख परजा मा बियापि ग। पनिहारिन कुआँ से गगरी भरि के केऊ मुड़े पे धरे तो केऊ कमर पे धइके कोहनी लगाये आवति रहैं कि बीचइ मा भीजै लागीं।

घसियारिन बादर उमड़त देखीं तो खुरपा सवाँचि के हल-बल हल-बल झववा में घास भरीं लइके चलीं, लकिन बीच रास्तइ मा भीजै लागीं। कुछ जनी तो हलबलाइ के बढ़ी लकिन एक मेहरारू रसे-रसे चलै का बिबस रही। कारन बेचारीं एक हाथें मूड़ पर कै झउवा पकरे रही तो दुसरे हाथे आपन तीन साल कै बिटिया कनिया लेहे रही; पुरवाई कै झँकोरा, पानी से भीजब वहि तीन साल के करिना से नाय सहि ग तो ऊ जोर-जोर से चिघरै लागि....... अपुवाँ क लुकवावै कै कोसिस करै लागि। बड़ी-बड़ी बूनी चट्ट-चट्ट वकरे देहीं पे परै औ ऊ लारिकनी रोवै मुल घसियारिन झउवा टेढ़ होइ के डर से रसे-रसे चलै। और कुछ लरिकै अपने-अपने छान्ही के ओसरा मा कूदि-कूदि ओरउनी लखि के गावत रहैं -

*आन्ही आवै पानी आवै आवा थै पताई,*
लरिकन कै कान जइसें आमे कै खटाई।

अंगनू, धरमू, चिथरू, दुखी औ मेवा एक साथे बइठि जोर-जोर कहत रहैं - "आन्ही पानी आवा थै, चिरैया ढोल बजावा थै।"

एक लरिका कै बड़ा विचित्र नाउ "पंडोही" रहा ऊ खुसी के मारा यस आन्हर होइ ग कि सोझै कहि परा-

"हे भगवान बरसा, खपड़ी मा अँड़सा।"

सारी जनता निहाल होई गै।

"सचिव महोदय!" रोमपाद खुसी मा बोलेन। "एकाएक बारिस कै मतलब तुहरे समझ मा आवत बा?"

"चूक क्षमा करा महाराज? हमका लागत बा कि गनिकै सफल होई गई।" सचिव जवाब देहेन।

"रिसि सृंग अंगदेस मा आइ चुका बाटेन! अब प्रासाद मा वनके सत्कार कै सगरौ तयारी करावा। अंगदेस के सब कोलियन मा बंदनवार, तोरन लगाइ के सुगन्धित पानी कै छिड़काव कराइ द्या। मुदितायन मा खबर पठवा कि सान्ता बिटिया एक अतिथि कै आदर करै बदे तयार रहैं। यतनै नाय, अन्न सचिव का बोलि दिहा कि वै एक बड़ेभारी भण्डारा कै आयोजन करै।"

गोपन-विभाग कै सचिव अपने आसन से उठेन, कुछ छन तक राजा कै भाउ पढ़ेन तक बोलेन - "महाराज! हमहू कुछ कहवइयाँ रहे......।"

"तो कहा ..........................।"

"एक गुप्तचर बतावत रहा कि नीमर कै दसा बड़ी खराब बाटै। काल्हि दुपहर तक वै नहाये- धोये तक नाय रहेन; वनकै लारिकै अलगै सिड़ान एक रहेन। जब नीमर के मेहरारू फुनि-फुनि नहाय क कहिस तो मारे किरोध कै नीमर कहेन-'खाइ का हइअइ न, नहाय बड़े तड़के।' नहाये के बाद नीमर क भूख के मारा रहाइस न हो एहि लिए वै न तो नित्य किरिया केहेन, न सुर्ज क अरघ देहेन। बनकै तीनिउ जून कै 'सन्ध्या' छूटि गै। अपने नगर में अइसन पहली बार सूखा परे के नाते भा। हमार बिनती बा कि नीमर के घरे पहिले अन्न पठवा जाय ताकी बनकै इहउ कहावत छुटि जाय कि "घरे मा दानइ न, अइया भुजावै चलीं।"

रोमापाद बात मानि लेहेन।

"संगत सुभाउ लोह पानी मा पउड़ै" रिसि सृंग अउ सान्ता क अलगन्ट रहइ कै मौका मिलै लाग।

सान्ता हर छन सेवा मा जुटी रहीं, नित्यकरम से लइके भोजन तक वनकै ध्यान राखैं। न बहुत लम्बी न बहुत छोटि न पातरि न मोटि तबउ मांसल देह, सुतवाँ नेकुरा, हिरनी की नाय आँख, सुराही दार गरदन, सुन्नर कटि परदेस और सरीर कै रंगत वइसे जस माखन मा सेन्हुर मिलाइ देहे प हो थै।

रिसि सृंग जब सान्ता क लखेन तो वनकै ध्यान विखरि ग। ब्रह्म गायत्री आराधैं मुल हाल उहै भै कि 'मन मोर महुआ चित भुसउले।'

कहाँ परनकुटी कहाँ प्रासाद, कहाँ कुसे कै चटाई कहाँ फूल-पराग कै सेज, कहाँ कन्दमूल फल कै आहार और कहाँ छप्पन परकार कै नैवेद्य? पहिले तो रिसि क कुछ अटपट लाग लकिन कल्ले-कल्ले जब खाइ पी के रूग-रूगाइ गै तो मन फफफै लाग। गाँसि के राखा ग मन खुल्लम-खुल्ला होइग, उमंग और पड़क्कई मा बाप क भुलाइ के रिसि सृंग मन कै भाउ पालै लागेन। उहै भा कि "अपने मन कै मनुआ, चाहे दूध पियै चाहे पहुआ।"

"प्रासाद अच्छा लाग रिसि कुमार!" जस मंदिर मा घंटी बाजि होय या बाँसुरी पिहकी होय सा बीना कै झंकार उठी होय चतना मीठ स्वर रहा सान्ता कै।

"बहुत नीक लाग।" रिसि सृंग जबाब देहेन।

रिसि कै हाथ अपुनै सान्ता के पीठ पे रेंग औ कल्ले-कल्ले कटि तक पहुँचा............ गुद-गुदी लाग औ सान्ता उछरि के दूर जाइ गिरीं।

"उठा राजकुमारी!" रिसि आपन हाथ बढ़ायेन; सान्ता कै हाथ पकरेन औ उठाइ देहेन।

सान्ता हरछन सान्ति रहैं लकिन वहि समय एकदम भवचक्की देखानीं .............कुछ अखर बस, कुछ डर बस तो कुछ मेहरारू के सुभाउ बस। कनमनिया लखि के बोलीं- " रिसि कुमार! जउ हमार हाथ गहे बाट्या तो अब गहेन रह्या नाहित धरम कै लोप होइ जाये।"

"काहे ?"

"मेहरारू कै धरम होय कि जे मनसेधू वहि कै हाथ पकरै; मेहरारू जीवन भै वकरे साथे रहै ... पति रूपी परमेसर कै सेवा करै। जउ तू हमका न गहब्या तो हमरे पतिबरत कै रच्छा न होइ पाये।"

"जस मुह तस थबेर चाही सान्ता! जस मुह तस बीरा एहि कहावत पे अमल करै तो झंझट अउबै न करै.......... महल कै सुकुमारी का कुटिया मा रहि पाये? का कुसे के चटाई पे सोइ पाये ? का साग खाइ के मालपुआ क भुलाइ पाये?"

"भाउना मा खोल न होय तो मेहरारू पति के साथे काँटा के खटिया पे ओलरि सका थै कन्त! नारी चाहे देवता पूजै या न पूजै खाली पति क पूजि के भवसागर उतरि सका थै।"

"हमरे साथे पेड़े के नीचे ओलरै का परै।"

"कउनो चिन्ता नाइ न।" सान्ता सहजोर परि के कहीं।

"घामउ-सीत सहै क परे।"

"सहब। और कहब्या तो एक गोड़े खड़ी रहब; ससुर कै पूजा करब।" सान्ता रोवाँसी होइ गईं। "लेकिन हमै छोड़ा न भगवान।"

रिसि सृंग कै मन मुरैला की नाच नाचै लाग। वै सान्ता से बियाह करै कै मन बनइ लेहेन।

"...............दण्ड, मेखला, कौपीन धारन करै वाले तपसी से बियाह कइ के सान्ता अपुना का धन्य मानीं महराज!" सुमन्त्र अयोध्या नरेस दसरथ क देखि के बहुत सधी बानी मा कहत रहेन। "रिसि सृंग अबहूँ रोमपाद के प्रासाद मा बसा बाटेन। होनहार विरवा कै लम्बा पात यानि रिसि सृंग के गए जैसे बरसात भै........... वइसे वै अपने ग्यान विग्यान से तुहार बेटवा कै इच्छा वाली अस्वमेंध जग्य का सफल कइ देहैं। हम इहै चिरौरी करब कि मुख्य अतिथि रूप मा अस्वमेंध जग्य कै परधान रित्विज रिसि सृंग

का बनावा जाय।"

सुमन्त्र!

दसरथ कै महान्त्री-नीतिवान मनसेधू।

वनकै बात सुनि के अउर सब मन्त्री गन वनके हाँ मा हाँ मिलायेन। "जइसे बापे, वइसे पूते" वाली कहावत दसरथ पे लागू नही। .............. वै अपने बाप अज की नाय खूब ठोक-बजाइ के निरनय लेहेन कि रिसि सृंग का सान्ता सहित अजोध्या मा बुलाइ के जग्य करवइहैं।

राजा दसरथ के मन मा बेटवा ताईं बड़ी गलानि रही।

जाबालि, बसिष्ठ औ बामदेव दसरथ का सुझाउ देहेन कि बाभन, मन्त्री और आपन रानी साथे लिवाइ के दसरथ अंगदेस जाँय।

बाभन भक्त दसरथ परिवार सँहें कुछ मन्त्री और बाभन का लइके अंगदेस रिसि सृंग का बुलावै चलि परेन।

"वहि के बाद रिसि सृंग सान्ता के साथे अवध मा पदारपन केहेन। गली-कूँची मा वनकै जोरदार सत्कार भा। अजोध्या क महाराज मनु बसाये रहेन। अजोध्या बारह जोजन लम्बी औ तीन जोजन चौड़ी रही।"

"फुरै भइया?" चटकीला हक-बकाइ के पूछीं।

"ल्या..........। यनके बदे सोरहौ धान पइया बा। कथा सुने के बादौ कहा थईं फुरै भइया।" नन्हकू कथा रोकि के बोलेन। "उहै बा कि भँइसी के आगे बीन बजावै भँइस खड़ी पगुराय।"

एक हाथ पे गाल धइके चटकीला मजाक वाले स्वर मा कहीं - "भागा पूता! भगवानौ के कथा मा तू गपोली छाँटी थ्या।"

"तुहका कवन ; खाइ क नौ बरा बजावै क झाँझ ............. बइठे-बइठे इहै बाध बरा बस। कथा मा टोकइ क नाय चाही।"

"तू छींकत भरे मा नेकुरा काटा थ्या नन्हकू! जादा तीन-पाँच करब्या तो सोंटा कै मारू पउब्या।" चटकीला आपन बिड़वा निहुरि के लम्मरदारिन के आरे सटईं फिर बइठीं।

*"खिसियानी बिलारि खम्भा नोचै।"*

"जिन नाय हम सब उठि के चली जाब।"

"तू अपुवाँ उठा, काहे क सब उठै? उहै बा कि बाँड़ो अपुवाँ तो गबै किहीं चार हाथ पगहौ लइ गईं।

"तुहरे सब कै सवतिया झार सुनिके हम उठि जाइत बा राम-कथा के नाते बइठी हुई। एक्कउ जने कम नाय हया।" लम्मरदारिन कहीं।

नन्हकू कहेन - "सावन से भादौं का दूबर?"

फेंकना कहीं - "तुहीं न चुप मरत्या पूता!"

"ना चुप मारब।"

चटकीला भुरकुस होइके मुन्न से बोलीं - "तू मारै बिना खोवा बाट्या मुल हम कुछ कहब न।"

"ऊ काहें?"

"पंडिते कै गेंद हया, कहा बा बाभन बछिया बचावै क चाही।"

"बाभन न होइत तो?"

"तो आज इहै सोंटा कि तुहार पीठ............. या तो चिढ़ाउब छोड़ि देत्या। एक तो 'नाती लागा।'

"ल्या आधी अरहरी लेहे गएन मउसी-मउसी लागै बा.......... अब 'नाती' कै नाते बरपा कर थईं।"

सब जोर से हँसि परीं। नीलम बोलीं- "छोड़ा पंडित जी ! राम कै कथा सुनावा ............ बात औ पाठा जेतनै बढ़ावा वतनै बाढ़ा थै।"

"हाँ नाती ! कथा कहा जहिया गोरैया बाबा के मेला से तुहैं पिपिहरी लाई।" चटकीला कहीं।

"बहुत मयानी मैभा सासु, कंड़ा लइके पोंछीं आँसु; अब हम पिपिहरी बजाउब, हा .......... हा............ हा...... जानौ लरिका हई।" नन्हकू हँसेन।

चटकीला क मुहे मा ताला लागि ग।

"अच्छा अइया बुरा न माना अब आगे कै कथा सुना। ................ फिर मन्त्रिन कै बैठक भा। राजा बहुश्रुत, आचार्ज, औ कुलगुरू वसिष्ठ से पूछि के रिसि सृंग का 'बड़का रित्विज' बनइ देहेन। फिर जग्य परबन्ध समिति कै गठन कइके चतुर काम कर्ता बेरावा गै और वसिष्ठ के आदेस पे सब राजन का नेवता भेजा ग। गुरू सुमन्त्र क समझायेन कि जनक औ कासी नरेस क नेवता लइके अपुना जाँय तब घतायें।" नन्हकू कहेन।

सब फिर बड़े ध्यान से कथा सुनै लागेन।

"कहइ कै मतलब दसरथ के जग्य मा बहु धन खर्च भा। गुरू वसिष्ठ कहेन कि जग्य मण्डप सरजू के उत्तर तट पे बनवा जाय....... जग्य वहीं होंये। एतनै नाय जग्य मण्डप के लगे नेवतहरी ताईं सब साधन वाले कइउ घर बनावा गै। गुरू कइउ काम अउर बतायेन .......... कहा बा जबरा से न भखावै औ निमरा से न परसावै।

"हाँ पंडित जी!" नीलम बोलीं। "जबरा से यहिं बदे न भखावै कि उ केतनौ कम भाखे लकिन कमजोर ताई जादा रहे। औ सब कुछ भरा रहै तबौ निमरा परसत की डेराये कि चुकि न जाय।"

"आगे सुना। जग्यसाला के बगल कइउ बड़ा-बड़ा भोजनालय बनेन जवने मा खाय, पियइ, चूसइ औ चाटै वाली चीज जुटाई गै। अन्नागार, कोषागार, सस्त्रागार, घुड़साला, गजसाला औ खेल कै मैदान बनावा ग। विदेस से आवै वाले सैनिकन बदे कइउ सैनिक छावनी बनी। औ जाना थू........... ई नाय कि खाली बाभन, रिसि मुनि, कामकर्ता, सैनिक औ राजै बदे घर बना बल्कि उहाँ साधारन जनतौ ताईं आवास, भोजन, औसधालय कै व्यवस्था कीन गै। जेकै मन कहै ते आवैं; खाय-पियइ रात रूकै औ अस्वमेघ जग्य क देखै।

"जग्य कै तयारी होइ गै महाराज!" सुमन्त्र राजसभा मा 'जनउवा' देहेन। "हम तीन मन्त्री .... ...... जयन्त, धृष्टि औ विजय का अगवानी बदे लगाये बाटी। देस-विदेस कै तमाम राजा आवा वटेन। तू अपुवाँ चलि के सारी व्यवस्था लखि सका ध्या।"

धरम पाल नाउ कै मन्त्री उठि के बोलेन - "छमा करा महराज! हमार इच्छा बा कि महामन्त्री सुमन्त्र से सलाह लइके दुइ मन्त्री जग्य बदे अउर लगाइ दीन जाँय जौन कि हरछन जग्य कुण्ड पे आपन दीठ जमाये रहैं। जउ अकोप मन्त्री का हमरे साथे कीन जाय तो हम एकरे बदे तयार बाटी।"

"सुराष्ट्र औ राष्ट्रवर्धन ई दुइ मन्त्री सुरच्छा सैनिक औ गुप्तचर का लइके निरिच्छन करै ताकि केउ कउनौ बाधा खड़ी न कइ पावैं। अवध के अउर मन्त्री सुजग्य, जावालि, काश्यप, गौतम, मार्कण्डेय, कात्यायन सुमन्त्र ढंग से अउर व्यवस्था संभारैं।" धरमपाल कहेन।

"राय नीक बा।" सुमन्त्र बोलेन। "तो महराज! अब चलिके जग्य कै सुरूआत करावा।"

राज दसरथ मेहरारू के सँहैं जग्य कै दिच्छा लेहेन

अस्वमेध कै घोड़ा छोड़िगा। ऊ कुलि धरती घूमि के अवध लउटि परा। फिर सास्त्र विधि से प्रवर्ग्य कै सुरूवात भै। सब देवतन कै पूजा कइके तीनिउ सवन पूरा कीन ग ................... तीनिउ सवन के बीच मा जोन समय बचै वहि मा विद्वान जन सास्तार्थ करैं।

"महाराज जनक पधारा बाटेन।" एक पहरेदार से जब अइसन खबर दसरथ क मिली तो वनके स्वागत बदे वै अपुनै आगे बढ़ेन। एक नीक महल मा जनक क ठहराइ के दास-दासी तैनात कइ उठेन।

अस्वमेध जग्य मा यूप कै बड़ा महत्व हो थै। यूप खड़ा करै कै मौका आय। नियम अनुसार बेल, खैर, ढ़ाख कै छः-छः यूप गाड़ा गै। फिर देवदार कै दुइ यूप औ बहेर्रा कै एक यूप मूल रूप से गाड़ा ग। कुल एक्कइस यूप गड़ा जौने मा सबकै नाप एक्कइस - एक्कइस अर्रात्न रहा। फिर गरूड़ की नाय अगिन अठ्ठारह प्रस्तार सहित स्थापित भै।

यूप मा तीन सौ पसु बाँधा गै। वहि के बाद रानी कौसल्या प्रोच्छन से घोड़ा कै संस्कार कइके तीन तलवार से छुईं और एक रात घोड़ा के सामने सोईं। अस्वमेध जग्य पूरी होई गै। राजा दस लाख गाय, दस करोड़ सोने कै मुद्रा, चालिस करोड़ चानी कै मुद्रा औ एक करोड़ जाम्बूनद सोन कै मुद्रा ओसरी-ओसरी होता, अध्वर्य, उद्‌गाता और बरह्मा क दान केहेन। सब रित्विज बहुतै खुस भै। फिर रिसि सृंग के निरदेस पे पुत्रेस्टि जग्य कै तयारी होइ लगा।

"घर बान्हें बड़ी झंझट हो थै : आज ई नाइ न तो विहान ऊ नाइ न, आज काकी कै मूड़ पिरात बा तो कउनो दिन अइयाँ क बोखार पकरे बा, बरधा क खरी दाना चलावा, पैना, जुआठ, हर ओर कुदारि हेरा-सोचा, कहूँ से खटि के आवा तो लरिकवा कै पेटउ झरत सुनाइ परा, जिउ तो झन्न होइ ग, एक न एक बैदण्ड लागै बा........ "अइसन सोच खाली वनकै रही जे 'चिरकुट' के नाउ से अपने गाँउ मा सन्नाम रहेन।

.........औ तबै चिरकुट आपन विआह नाय केहेन। ........ अँचला पहिर लेंय औ भाउ-भजन करें। जहाँ मन मा आवै चला जाँय।

आज वै दुबरी के घर आइ रहेन।

"कहाँ तयार बाट्या गँड़इत?" दुबरी पूछेन।

चिरकुट बोलेन - "अजोध्या।"

"का करै ?"

"ल्या; सम्मै गाँउ जरि ग फुहरौ क लत्ता गन्हान। तुहार भला भई।"

"टेर्र-पेर्र न करा साफ बतावा।"

"अजोध्या मा अस्वमेध जग्य भै तुहै पतै नाइ न ?"

"बाटै.......... ।"

"तो चुप-चाप चलिके अब बेटवा वाली जग्य देखि आवा।"

दुनौ जन अजोध्या पहुँचेन। जग्य कै परसाद और राज भोग खाइ के एकदम कुही काल होई गै।

"यतना बढ़िया उत्सव जीवन मा पहली दाँय देखा थई भाय!" चिरकुट पेट सोहरावत कै बोलेन। "एस जानत होइत तो पहिलेन आइके कुछ मेहनत करित।"

"जेका खड़े न देखा ओका बइठे। एक अँचला पहिर के बड़का परमहंस बना हया। उहै निहाद बा कि नाउ तो निरमली मुल अहेन जहर कै कली। तू बिरथा गाल न बजावा।" दुबरी बोलेन।

"तू भाय गोपाली करा थया, पेटू होइ के नाते हमका चाही जौन कहि ल्या नाहित हम.......... ।"

"नाहित तू उतिन डरत्या .......... 'खाइ क नौ बरा बजावै क झाँझ।' अरे मेहनत नाय चला कुछ गप्प - सड़ाका हाँका, फिर साँझ होइ जाये तो चलिके नीक-नीक भोजन कइ लिह्या।" दुबरी एक साँस मा कहिगै।

"काउ करी भाय हम तो ई मानी थै कि देह गलाये भगवान खुश नाय होतेन.................... ।"

"तबै सबका संजम कै उपदेश दे ध्या। उहै बा कि आनका लोहखरी संगुन बतावै अपुना कुकुरे

से नोचवावै।''

''देखा भाय जिउबा तो जगत बा।'' चिरकुट सफाई देहेन। ''पूजा पाठ अपनी जगह बा खाब पियब अपनी जगह। हम तो खाये पिये टन्न रहब .......... बात कहब सफा, घाटा हो या नफा।''

''सना जिन जेतना खा थ्या चलि के ओका अदा करा।''

''हम इहाँ दरसक बनि के आइ बाटी न कि काम कर्ता। राजा कै निरदेस बा कि बाहर से आवइ आले अतिथि से काम न लिहा जाय।''

''हुँह........।'' दुबरी रिसिहा परि गै। ''तू निपट अहदी हया चिरकुट। तुहार उहइ हाल बा कि न हर चलै न चलै कुदारी बइठे भोजन देइ मुरारी।''

चिरकुट कै भौह तनि गै, पूछेन- ''तो काउ करी दण्ड बैठक मारी।''

''वहर पुत्रेस्टि जग्य होत बा जौन कि अंतिम चरन मा बा....... चला जग्य देखी औ जथा जोग सेवा करी।''

चिरकुट क जग्य देखै वाली बात जँची, लकिन सेवा के नाउ पे वनकै मुह वइसे बिगड़ा जइसे मुहे मा फिटकिरी परि गै। दुबरी निपट गरीब लकिन मेहनती मनई, जबकि चिरकुट आलसी पेटू मनई।

''मुह न बिचकावा।'' दुबरी समझायेन। कहावत बा कि अहदी कै घर कोढ़ी लूटा थें।''

सुनि के चिरकुट कै रिसि गोड़े से उठी मूड़े बुतानि। डपटेन-''बइठी झावरि बहु नीक लागा थै; तू अपुना क बड़ा करतबी माना थ्या, चर्खी, बेड़ी रोपाई मा खटा थ्या लकिन हमरी केतना न खाइ पउब्या। जौने के मारा तुहैं कुछ कहित नाय; उहै बा कि लाजू मरैं ढीठू जिअँइ।''

दुबरी चिरकुट का समझाइ के सान्त केहेन। पूछेन-''भण्डारा मा चलब्या ?''

''अबहीं नाय।........ वइसे दुबरी ! हम इहाँ कै भण्डारा देखि के फूलि के कुप्पा होइ ग हई। बहुत टहरे घूमे मुल इहाँ की जाय कतहूँ चौबीसौं घण्टा भण्डारा चलत नाय पाये। धन्य हयेन राजा दसरथ ........ देखि लिह्या यनके बेटवा होइ के रहें। कहा बा जइसे नेति वइसे बरक्कति..........।''

दुनौ जन जग्य साला के लगे गयेन अथाह भीर देखिके चिरकुट कुछ सँकड़ेन। दृष्टि उठाइ के सरजू क निहारेन।

वहि समय सरजू कै जल बहत रहा, सुर्ज कै रोसनी वहि पे परि के चमकत रहै। तट पे कुछ जन नहात रहैं तो कुछ जन चिरई- उरई क दाना डारत रहें। बहुतक चिरई तट पे उतरी रहीं। सरजू के किनारे कै हरियर पेड़ देखतै बनत रहा।

वहर.................

जग्य कुण्ड म से एक दिव्य मनई परगट भा जौन कि अपने हाथ मा जाम्बूनद सुबरन कै परात थामें रहा। वहि मनई के चेहरा से तेज निकरत रहा, आग के लपट मा ऊ दुग्ध नाय होत रहा।....... ..... आहुति डारब बन्द भै।

होता, ब्रह्मा, रित्विज जौन कि पियर कपड़ा पहिरे रहेन, सब मगन होइ गै।

मेघ की नाय गम्भीर बानी मा कुण्ड कै मनई बोलि परा - ''हे राजा दसरथ! ई खीर हम तुहैं बदे परजापति के निरदेस पे लाय बाटी। एका लइ जाइके तू अपने रानिन क खियाइ दया। अब तुहार जग्य सफल बा। तुहार रानी बेटवा जन्माइ के तुहार जस फइलइहैं।''

दण्डवत कइ के राजा दसरथ परात पकरेन। दिव्य मनई अन्तरध्यान होइ गै। दसरथ अन्तःपुर गै।

वै खरी कै आधा भाग कौसल्या क आधा कैकेयी क देहेन। कौसल्या औ कैकेयी अपने-अपने भाग कै आधी-आधी खीर निकारि के सुमित्रा क दइ दिहीं।

गरभ रूकि ग औ दसरथ महल मा खुसी बियापि गै।

# लोक कथाएँ

# लाला अउ अहीर

एक जने रहेन अहीर। वइ दुइ भाय रहेन। दुइनउ जने घरेन खेती बारी करत रहेन। आँटत बाँटत नाइ रहा। एक दिन वइ दुइनउ जने सलाह किहेन कि एक जने घरे रही, अउ एक जने बहिरे कुछु कमायि जायि। जेठरू कहेन की तु खेती देखा अउ हम जात बाटी कुछु कहूँ कमावइ के लइ आउब। निकरि परेनि घरे से जात जात एक लाला के दुवारे पहुँचेनि। कार-बार अच्छा जनान। लाला से पूछेनि कि लाला साहेब का नोकरे कइ काम बा। लाला कहेन कि हाँ भइया बा जरूर। उहाँ रहइ का तइयार होइ गय। लाला पूछेनि कि काउ लेब्या पत्ता भरि भत्ता कि घिउ चभोरी रोटी? घिउ चभोरी रोटी पइ तइयार होइ गयेनि। काम अउ सर्त कइ बाति चली तउ लाला बतायेनि कि कचेहरीउ मा आवइ जाइ का परे। कौनो सूचना देइ अउ हालि पहुँचावइ का परे। लाला ललायिनि का दतुनि पानी देइ हाथ मोह धोवइ कइ काम करइ का परे। अइतवार का हमरे रिसिउ लागा थइ, ओका सम्हारइ का परे। इहिउ पइ जउ हम तोहँका छोड़ाउब तउ तू हमार नेकुरा काटि लिहा अउ जब तू छोड़बा तउ हम तोहार नेकुरा काटि लेबइ। कुलि सर्त पइ अहिरू तइयार होइ गय। एक दिन दुइ दिन बिता जब सनीचर कइ दिन नेकचायिगा तउ लाला की सब झंझटि पहाड़ येस ओनके ओप्पर आयि के परिगा। तीन-चारि दिन मा झुरायि गयेन। अब सनीचर का सोचेनि कि इतउ अउर दिन कइ बाति आ अइतवार का जब लाला के रिसि लागे तउ कवनि हालि होये। भिनउखयि उठि के राहि पकड़ेनि।

वइ भागि के घरे आयेनि। छोटके भइया से कुलि हालि बतायेनि। ऊ तनी बग्गड़ मनावत रहा। कहेस भइया तोहँसे नाइ बना लाला तउ बड़ा निक मनई बाटेन। हम जाई तउ बताई। अब तू घरे रहा हम नोकरी करइ जाब। सलाह कइके चलेनि लाला के घरे आइके पूछेनि कि का मनई कइ जरूरति बा किहिउ के। एक जने लाला के घरे लियायि के आयेनि। लाला कहेनि कि भइया मनई कइ जरूरति तउ हमरे बा। मुल केउ हमरे हियाँ टिकत नाइं। लाला काहे ना टिके तोहँका सही मनई नाइं मिला तउ कइसे तोहरे रुकइ।

अच्छा जउ तू सही मनई मिला अह्या तउ बतावा पत्ता भरि भत्ता लेब्या कि घिउ चभोरी रोटी? लाला जी पहिले काम बतावा तब हम तोहँका बताई की काउ लेबयि? काम सबेरे उठि के ललायिनि कइ मोह हाथ गोड़ा धोवइ का परे। लरिका खेलावइ का होये। कचेहरी मा कउनो सनेस देइ का होये। घरे दुआरे देखरेख मा तउ रइहनि का होये। नहवाउब-धोवाउब ई सब तोहार काम रहे। ठीक बा कि नाइं? एक बाति अउर जानिल्या कि अइतवार का हमरे बहुत रिसि लागा थइ उहउ सम्हाँरइ का परे। तब अहिर राम कहेनि कि लाला जी पत्ता भरि भत्ता अउ तनुखाह लेबइ। दुइनउ जनेका पटिगा। जब साँझ कइ समयि भइ तउ केरा कइ पात काटि के खायि बइठेनि, पूरे घरे कइ खाना खायि गय। जवन खायि पायेनि खायेनि अउर कुकुरे बिलारी का दइ दिहेन। पत्ता भरि भत्ता रहा न। हण्डा भइ भात तउ केरा के बड़े पाते पइ अमाबइ करे। लाला ओनका खियवइनि मा हैरान होइ गयेनि।

पहिलेन दिन लाला अउ ललायिनि कइ मोह धोवइ बरे पानी मा तेजाब डारि के लयि गयेन मोह

धोउतउ भरे मा तउ पूरा चेहरा खंदरिगा। दुइनउ जने के घावइ घाउ होइ गइ। उही दिन से मोह हाथ धोवइ से छुट्टी पाइ गयेनि। बिहान भे फेरि गयेनि पानी लइके तउ न लाला मोह धोवायेनि न ललायिनि। ओ कहा कराथयेनि कि नायिं धोवावत बाट्या हमार दोख जिनि दिह्या। हर नाधइ का काम करइ चलेनि तउ लाला कहेनि कि उखुड़ी से अरहरी तक अपनयि आ कुलि जोतइ का बा। जोते के बाद हेंडनवइ का परे। बरधा जोखरि के उखुड़ी की ओर चलेनि। उहीं से नाधि दिहेन। हेंगा नाधि के हेंगायिउ दिहेन। लाला साँझ की आयेनि पूछा थयेनि की का हो तु ई काउ किह्या। अरे लाला तुहीं तउ कहे रह्या कि उखुड़ी से अरहरी तक कुलि जोतइ का बा। हम एक ओर से सुरू किहे हई। साँझ की बोझ लयि के लउटेनि पूछेनि ललायिनि कहाँ धरी? कउनो बाती पइ ललायिनि रिसिही परी रहीं वइ कहीं कि हमरे मूड़े पइ पटकि दूया। बोझ लइ जाइ के ललायिनि के मूड़े पइ पटकि दिहेनि। ललायिनि कइ मूड़ी मिरुकि गइ। लाला कहेनि कि येई कहीं हइं कि हमरे मूड़े पइ पटकिद्या। कहे पइ हम पटकि दिहे यहि मा हमार कवन दोख बा। काहें कहीं हइ?

बिहान भे अइतवार कइ दिन रहा। सबेरे पानी लइके गयेनि तउ लाला लागेनि मारइ मुला अहिरू कुछु नायिं बोलेनि। लाला बेचारू अपुनइ थकि गयेनि तउ हाँफत की बन्द किहेन। पूरा दिन अइतवार भइ अहिरू लाला कइ कुलि सहेनि। विहान भइ सोम्मरउ रहइ। ओनहूँ के रिसि लागत रही। सबेर भा पानी लयि के आयेनि। लाला के लगे पानी धइ के लागेनि पटकि-पटकि मारयि। लाला बेचारू के टट्टी पेसाब कुलि होइ गइ। अहिरू जब जानेनि कि मरि जइहैं तब बन्द किहेन। कुछु बेर मा लाला कइ लरिका कहेस कि टट्टी करइ जाबइ। लाला कहेनि जा हो करायि आवा। अहिर राम गयेनि लरिका से कहेनि कि सरऊ हग्या तउ मूत्या जिनि, अउ मूत्या तउ हग्या जिनि। लरिका तउ डेरायि के बइठा बा। ओ बोलेन लाला देखा येनका न हगतइ हयेन न मुततइ। लाला रिसिहा परिके कहेन कि टँगरी पकरि के चीरि दे सारे का। बसि लाला के कहइ मा बेरि नाइ भइ कि अहिरू टाँगि पकरि के चीरिनि तउ दिहेन। लाला अउ ललायिनि दुइनउ जने लागेनि रोबइ, पूरा गाँउ एकट्ठा भा। अहिरू कहेनि कि जउ एतना रोवइ का रहा तउ काहे का ऐसन कह्या हा।

दुसरे दिन लाला कचेहरी चलेन। घोड़ी के पीछे-पीछे अहिरऊ चलइ लागेनि। लाला कइ अँगउछा गिरिगा। वोका लयि के ओ झाली मा धइ दिहेन। जब लाला कचेहरी मा आयेनि तउ अँगउछा नांइ रहा। अहिरू बतायेनि कि उतउ राही मा गिरिगा। तउ उठाया काहे नाइं लाला कहेन। उठायिति कइसे कह्या तउ हइयवि नाइं। अच्छा अब जवन गिरइ उठायि लेवा किह्या। ठीक बा अहिरू कहेनि। विहान भे फेरि लाला चलेनि तउ राही ते अँगउछा अहिय लयि लिहेन। कुछु दूरि आयेनि तउ घोड़ी हगयि लागि ये उही अँगउछा मा बान्हि लिहेन। जब लाला कचेहरी मा गयेनि तउ ओ अँगउछा थम्हाइ दिहेन। लाला कहेनि कि ई काउ आ? तुहीं तउ कह्या कि जवन गिरइ उठयि लिह्या। इतउ गंदी चीजु आ एका नाइ उठावइ का चाही। अच्छा बाति आय बताएनि लाला जी एइसे कुलि बतायि देवा किह्या।

एक दिन घरे नोन नायिं रहा। कचेहरी मा जाइ के अहिरू चेल्लायि के कहेन कि हे लाला घरे नोन नांइ बा लेताया। अरे राजू तोहँका हम येतना समझाई थइ कि येसस बाति धीरे से कहइ का चाही, लाला समझायेनि। अच्छा अब धीरे से कहा करबइ। घरे गयेन। दुसरे दिन लाला कचेहरी मा गयेनि वइ दुवारे रहि गयेन। लाला के घरे मा आगि लागि गइ। वइ धीरे-धीरे चुपके से जाइ के लाला के लगे खड़ा भयेन। थोरिक बेर वहर रहेन फेरि येहर आयेनि तब काने मा कहा थेन कि हे लाला! तोहरे घरेमा आगि लागि गयि बा। अरे जोर से गोहार लगावा येका जोर से कहइ का चाही तउ धीरे से कहत बाट्या। तुहीं तउ कहे रह्या कि धीरे से बोला करा। एकरे बाद जोर से गोहारि लगावत की अहिरू दवरि परेनि। जाइ के देखाथयेनि कि कुलि जरि के राखी होइगा।

लाला घरे गयेनि ललायिनि से कहेनि कि हे ललायिनि! इतउ जवन दानउ आइगा कि हमार तउ सफाया करइ का लपटियायि गवा। काउ करइका होये कइसे गाड़ी निमहे? हमरी जान तउ एक काम करा कि चला घर-दुवार छोड़ि के भागि चली। लाला ललायिनि की यहि बाती का कुछुइ दूरि से कुलि सुनत रहा हा। दुइनउ जने सलाह कइके तय किहेन कि कुछु आदमी सोचिल्या जउने से बक्सा अउ सनदूक सब चली चलयि। तय होइगा कुलि। खायि पी के जब सब सोवइ कइ जूनि लखेन तउ अहिरू सन्दूकी मा बिस्तरा कपड़ा धरा रहेन उही मा जाइ के लुकाइ गयेन। लाला ललायिनि आधी राति उठेन मनयिनि के मूड़े पइ बक्सा उठायि दिहेन, लइ के चलेनि। बड़ी सन्दूक का दुइ मनई उठायेनि तबउ बहुत गरू रही। कइसेउ दुइनउ मनई लइके चलेनि। राही में अहिरू पेसाब रोकि नाइ पायेनि उही सन्दूके मा कइ दिहेन। जब मनइनि के ओप्पर गिरी तउ पूछेनि ललायिनि काउ ढरकात बा? कहीं तेल होये। अरे इतउ खतात बा मनयिनि कहेन। अन्त मा एक जगहाँ उतारेनि, उतारि के देखयि बदे जइसे खोलेन तउ अहिरू निकरि के कहेन का लाला पहुँचि गया? लाला ललायिनि के काटा तउ खूनयि ना। हक्का बक्का होइ के ताकयि लागेनि। कहेनि कि का भइया तू हमार पेन्ड ना छोड़ब्या। नाहीं लाला इहइ कहयि का कि टिकि नाइ पायेनि। हम अपनी बाती पइ अटल रहबइ। जउ तू चाहत हो तउ लावा हमार हिसाब अउ तोहार निकुरा काटि लई चला जाई। लाला घरे आयेनि। पूरा हिसाब दिहेन। आधी खतउनी ओनके नाउँ किहेन। तब अहिरू लाला कइ नेकुरा छोड़ि के घरे गयेनि।

अहिरू घरे आयेनि। ओनकइ भाय कहेन का हो केस चला आया तोहऊँ टिकि नाइ पाया। हम देखा ई रुपिया पइसा हिसाब आ। अउ ई देखा आधा खेतउनी अपने नावउँ करायि देत हई। चाहे एक जन उहीं चलिके रहा चाहे वहिं बेंचि के इहीं लयिल्या। वहिं जेतनी घटना घटी रही उहउ कुलि बतायेनि। बड़ा भाय कुलि बाति सुनेनि ओनकी मोटाई देखि के ओनके पूरा बेस्सास परिगा। मानेनि कि 'सोझि अँगुरी घिउ नायिं निकरत'।

# टूँड़ी भूसी

एक बाभन रहा। ऊ बहुत गरीब रहा। पण्डिताइनि कहीं कि जात्या कहूँ कुछु कमाइ अउत्या। ठीक बा मुल काउ साथे लइ जाबइ। परदेसे जायि कइ तइयारी करइ बदे टूड़ी अउ भूसी कइ सेतुवा कइ दुइ पोटरी बनये रहेनि। जात-जात गयेनि एक कुवाँ पइ दुपहरे नहाइ धोइ के पूजा पाठ किहेनि। तब दुइनउ पोटरी का देखि के सोचा थयेनि कि टूड़ी क खाई कि भूसी कइ। इहइ बेर तक सोचत रहि गयेनि अउ मुहं से कहत जात रहेन कि टूड़ी खाई कि भूसी? वहिं इनारा मा दुइ परेत रहत रहेन ओनकइ नाउँ रहा टूँड़ी-भूसी। वहि कइ बाति सुनि के टूड़ी अउ भूसी बहुत हैरान भयेन। वइ दुइनउ जने आइके हाथ जोरि के खड़ा भयेन। कहेन हे महराज! हमका काहे खाब्या हम तोहइं एकटी बटुली दयि देई ऊ जवन कहब्या तवन तोहँका खियाये। महराज बटुली पाइ के बहुत खुस भयेनि। साँझ की लउटि के घरे चला आयेनि। ओनकइ मेहरारू डाँटि के कहं कि इहइ कमायि के चला आया। बड़ा कमवइया भा रहया। 'कमान्या'? 'हाँ कमाने।' 'अरे पण्डित! एतनी जल्दी काउ कमायि लिह्या।' 'साँझ की बतउबइ'।

जब साँझ कइ बेला आइ, पण्डिताइनि कहीं पण्डित आजु घरे मा कुछु नाइं बा। एहि जूनी काउ होये। पण्डित कहेनि कि पण्डिताइनि काउ खाइ कइ मन बा? जवन कहा तवन खियायी। कहीं कि पूड़िउ साग खियायि सका थ्या? हाँ, अच्छा खियावा। पण्डित बटुली झोरा से निकारि के कहेन की दुइ खोराकै सोहारी अउ तरकारी खीरि परोसिं द्या। जउ टूँड़ी-भूसी कइ असली बटुली होउ तउ जल्दी करा। एतने मा बटुली से दुइ खोराक पूरी तरकारी अउ खीरि परसि उठी। दुइनउ परानी बहुत दिन के बादि आजु पेटु भरि कै खायेनि। ऐसन खाब ओनका ओनके पूरे जीवन मा नाइं मिला रहा। अब ओनके खायि वाली विपति तउ दूरि होइ गइ।

एक दिन दुइनउ परानी सलाह किहेनि कि अब बिरादरी का खियावइ का चाही। बिरादरी का नेवति के दुइनउ परानी सबके उठयि बइठइ कउ तउ इन्तजाम करइ मा भिरान रहेन मुल खायि के इन्तजाम कइ तनिकउ चिन्ता नाइ रहा। जब खायि कइ जून भा तब खियाउब सुरू किहेनि। पूरी बिरादरी खायि के बखान करत की घरे गयेनि। जेकरे जउने चीजु कइ मन कहेसि वहिका उहइ खायि का मिला। ओनकइ मड़ई छाप-छीप लागि गयि। ढेर दिन ते नात-बाँत रुका रहेन। अनेक परकार कइ मेवा पकवान खियायि-खियायि सबका बिदा किहेनि।

वहिं देस कइ राजा मैदान करइ गा रहइ। सब नेउतहरी कइ बखान अपने काने सुनेनि। सबेर होत ओनके घरे मा झारा लेइ का पठयेनि। कुछु नाइं मिला। राजा कइ आदेस भा कि बटुली लइ आवा। बटुली उठायि लइ गयेनि। एक गरीब जेकइ पेट भरब राजा नायि देखि पायेनि। बटुली लायिके आपन काउ बनयि लेइहें। ऐसन चर्चा पूरे नगर मा फइलयि लागि। जब महराज के आगे अन्हियार होइगा तउ फेरि टूड़ी भूसी के लगे गयेनि। पानी भरयि लागेनि। नहायि धोइ के फेरि टूड़ी खायी की भूसी? ऐसन बिचार करइ अउ कहइ लागेनि। टूँड़ी-भूसी फेरि निकरेनि। हाथ जोरि के कहेनि कि काहे हमका खाब्या महराज अब काउ चाही? बभनू पूरी कथा बतायि दिहेनि। इनारा से एक मुंगरा लइके परेत निकरा अउ बभनू

का दयि दिहेसि। मुंगरा लइके गयेनि बताये के अनुसार कहत बाटेन कि जउ टूड़ी भूसी कइ असिली मुंगरा होउ तउ जाइके बटुली लयि आवा। बसि का भा कि मुंगरा जाइ के जे नौकर लइगा रहा उही का मारइ लाग। जे उहाँ छोड़ावइ जाइ उहू का मारइ। धीरे-धीरे खबरि राजउ के हियाँ तक पहुँची। राजा वहिं आयेनि। ओनहूँ के दुइ मुंगरा लाग। वइ तुरन्तइ बटुली दयि देयि कइ आदेस किहेनि। मुंगरा बटुली लइ के बभनू के लगे लाइ के धइ दिहेनि। मुंगरा अउ बटुली बभनू धयि लिहेनि।

# डेढ़ छयल की नगरी

एक जने रहेन राजा। राजा कइ बेटवा सुबह साम अपने परजा कइ सुख-दुख देखयि घोड़ा पइ बयिठि के निकरँइ। एक दिन एक कुर्मी कइ बिटिया खेते पइ चिरई हड़ावत रही। राजा वहिं घोड़ चढ़े आयेनि। ओका देखि के पूछेनि तू केकयि बिटिया अहू? जेकयि खेत आ। केकयि खेत आ? जेकयि बिटिया हई। कउयउ बेरि पूछे पइ वइ बहुत नराज भयेन। अन्त तक ऊ बिटिया बतायेस नाइ। राजकुमार कहेन तू हमसे जउ एतनी दुष्टता करत बाटिउ तउ तोहँका अधबिअही कइ के छोड़ि देब। हमहूँ असिल कुरमी कइ बिटिया होबइ तउ तोहँसे कोदउ दरायि के छोड़ब। एतनी बाति कइके राजा कइ बेटवा घरे आयेनि अफसोस कइके परेनि। राजा के पास तक खबरि गयि। राजा आयेन पूछेन का बेटवा काहू ते रिसियान बाट्या? हे बाबू जउ फला गाउँ के कुरमी के बिटिया से हमार बियाह न होइ जाये तउ हम जान दयि देब। ठीक बा बियाह होये। राजा कुरमी का दूत भेजि कै बोलवायेनि। जब मनई लउटि के आइ वोनके आवइ कइ सनेसा कहेस तब राजकुमार खायेनि पियेनि।

कुरमी सोचेस का जनी काहे का राजा बोलवाये बाटेन हम छूछे हाथे चलब तउ ठीक न होये। पाँच मोहर लकिय के कुरमी चलि परा। राजा के दरबार मा आइ। राजा ओनका ऊँचे आसन पइ बइठायेन। ऊ कहेस अरे महराज हम आप के दरबार मा एतने ऊँचे आसन लायेक नाइं बाटी। राजा के आदेस कइ पालन करइ का परा। बइठा। राजा कहेनि कि आपकी लड़की कइ वियाह हम अपने राजकुमार से करइ चाही था। अरे महराज हम तउ एक किसान कहाँ आप एक राजा, ई जोड़ कइसे चलि पाये? किसान हाथ जोरि के दोहाई देयि लाग। राजा के कयियउ दायिं कहे पइ किसान सोचेस कि कवन हरजा व बिटिया कइ बियाह राजा के घरे होइ जात वा। किसान राजा के बाती का मनइ मन प्रसन्न होइके स्वीकार लिहेस। तुरन्तइ थइली से पाँच मोहर निकारि के राजा के हाथ पइ धयि दिहेस। अब किसान के इह बियाह कइ तइयारी होइ लागि। राजधानी से किसान के घरे ले पक्की सड़क बनि गयि। अउर तइयारी होइ लागि।

राजा कइ बरात सजि धजि के गइ। किसान बड़ी तइयारी के साथे जलपान कइ सुरम्य व्यवस्था किहे रहा। दुवार चार कइ सोभा अपरम्पार रही। पूरी बरात खायि पीके निवृत भा। बिआह होइ लाग राजकुमार एक घोड़ा कइ गुप्त प्रबन्ध किहे रहेन। जब भाँवरि साढ़ी तीन दाइं घूमेनि तउ राजकुमार घोड़ा पइ बइठि के चलि दिहेन। कुलि रंग मा भंग होइगा। सबेर होत बरात चली आयि। चारिउ ओर एक चरचा चलइ लागि। केउ कारन पइ बाति चलाँवइ केउ कुरभ अउ राजा कइ बाति करइँ। पुरनिये कहँ चाहे जवन होइ मुल राजा निक नायि किहेन। लड़की कहेस हे बाबू तू हमारि चिन्ता जिनि किह्या हम रानी बनि के रहब। सालन कइ समयि बितइ लाग।

एक बेरि एक तवायफ आइ के राजभवन के बगल आपन डेरा डारि दिहेसि। ओकइ चरचा चारि ओर चलइ लागि। बहुत जने वहिं गयेन मुल गीत सुनायि साज-धाज देखइ के अलावा कुछु किहिउ क दालि नाइ गली। राजकुमार वोकरे अवस्था रूप राग रागिनी पइ विधिवत मोहित होइ गयेनि। जइसन सु

रहेन ओइसन देखबउ किहेन। राजकुमार रीझि के दीवाना होइ गयेनि। राजकुमार से मोरगा कइ गोसउ खायि कइ बाति किहेस। स्वीकार किहेन मुल खँसी कइ गोस बनवायेस। खायि पियि के राजा राति कइ पूरी समयि ओकरे साथे ऐस-अराम में बितायेनि। सबेर भा राजा घरे जायि लागेनि तब तवायफ से फेरि राति की आवइ कइ बाति किहेन। राजा से कहेसि कि सनेह प्रेम बनेय रहया राजा जी फेरि कबउं मिलब। अपने भायन से डेरा कूँच करइ कइ बाति किहेस अउ सब चलि परेनि।

ऊ कुरमी कइ बिटिया नयिहर मा आयि के रहयि लागि। राजा कइ हमल वहि के रहिगा रहा। एक सुन्नर बेटवा जनम लिहेस। ओकइ रूप रंग सब राजकुमार कइ परा। चारिउ ओर हल्ला मचिगा। गाउँ-घर मा सब कहइ लागेनि कि दुसाधि कइ लरिका आ। लरिका का सब दुसाधि कहँइ। जब गदेला कुछु सुनयि समझयि लायेक भा तब माई से पूछेसि कि माई हम्मइ दुसाधि काहे सब कहा थेन? केतना जन तउ ओकरे सुनरउता पर मोहित होइ जाइँ। महतारी बेटवा से कहेस कि हे बेटवा! तू अबइं लरिका हया तोहँवा अबइ यहि बातिन से मतलब नाइ राखयि का चाही। गोर पहलवान 12 बरिस कइ लरिका कटार हाथे मा लायिके बोलेस तू हमका बतावा हम के कयि लरिका हई। तब महतारी बतायेस कि बेटवा तू राजा कइ लरिका हया। बेटवा से महतारी अपनी जिनगी कइ पूरी कहानी बताइ लइ गइ अन्त मा राजा कइ परनि औ आपनि परनि दुयिनउ बतायेसि। बेटवा कहेसि हे माई तोर परनि हम पूरा करब। राजा से जब तक कोदउ ना दरवायि लेव तब तक हमइ चैन न मिले। हे महतारी सुना हमहूँ परतिज्ञा करत हई जब तक परतिज्ञा पूरी न कइ लेव तब तक सुख कइ नीनि ना सोउब, घरे ना आउब। महतारी खर्चा के लिए कहेस जवन कुछु होइ तवन सब लइजा। एक अँगूठी अउ एक कटारि लयि के लरिका घरे से निकरा। आपन नाँउ अढ़ाई छयल रखेनि मुल किहिउ से बतायेन नाइं। अब राजा कइ नाउँ डेढ़ छयल उही नाते ई नाउँ ढाई छरूल परा। राज दरबारउ मा जाइ लागेनि। अढ़ाई छयल नगर मा एक बुढ़िया के घरे गयेन, कहेन कि हे माई तू हमका अपने हियाँ रहइ द्या। बुढ़िया के घरे केउ नायि रहा। ऊ एनका पायि के बहुत प्रसन्न भइ। बुढ़िया एनका बहुत माननि लागि। एक दिन कहेन कि हे बुढ़िया माई आटा घिउ गुर हम लायि हई ल्या एकइ बरिया बनावा। बुढ़िया बड़े प्रेम से बरिया बनायेस। अढ़ाई छयल घाटे पइ गयेन जहां धोबी राजघराने कइ कपड़ा धोवत रहा। वँजाइ के बरिया खायि लागेनि। धोबी कइ लरिका कहेसि कि हे दादा हमहूँ बरिया लेब। धोबी एनसे कहेस हे भइया इहू का दुइ ठे दयिद्या। वइ कहेनि कि हे धोबी राजा के हियाँ आजु सदा बरत बँटत बा जा तुहूँ लयि आवा। धोबियऊ कहेनि कि अच्छा लखे रह्या हम जाई लेति आई। धोबी चलि परेन। लरिका पीछे लाग चलागा। कुलि कपड़ा बटोरि के लइ के चलि दिहेस। एक बोर्ड उहीं टांगि दिहेन। डेढ़ छयल की नगरी मा अढ़ाई छयल आवा है। किहेस अबइ कुछु नाइ, करे अबइं बहुत कुछु।

ई समाचार राजा के इहाँ पहुँचिगा। वहि अहथान पइ राजा मंत्री सब पहुँचेनि। स्थान कइ निरीक्षण परीक्षण किहेनि। अब धोबी लउटि के आयि जब सून घाट देखेसि तउ रोवत चिल्लात की राजा के दरबार में गा। दरबार मा यहि पइ बिचार करइ लागेनि।

सभा मा बीरा रखिगा कि चोर पकड़इ का जे तइयार होये उहइ ई बीरा उठावइ। राजा कइ वजीर बीरा उठायि के एक ऊँट अउ दुइ बोरा रुपिया कइ प्रबन्ध करायि के चलि परेनि। जे सड़के पइ निहुरे उहइ चोर आ। अढ़ाई छयल जूता मा तारकोल पोति के निकरि परेनि कुलि रुपिया चिपकइ लागि। इही ढंग से कुलि रुपिया उठायि लिहेनि। राति की वजीर एक जगहा ऊँट बान्हि के सोइ गयेनि। अढ़ाई छयल रुपिया सहित ऊँट धीरे से लयि के चलि दिहेनि। बुढ़िया के घरे मा रुपिया कइ बोरा अउ ऊँट मारि के अँगना मा गाड़ि दिहेन। खून एक कूँड़ा में धइ के घरे मा धरायि दिहेनि। बूढ़ा से बतायेनि कि किहिउ से कहिउ जिनि। जब वजीर जागेनि तउ न ऊँट, न सड़के पइ रुपिया। सिपाही सड़क कइ रखवारी करत

रहि गय। रुपिया कइसे के बीनेसि पता नाइं लाग। ऊँटे के अहथान पर बोर्ड टांगि उठा। एहर ऊँटउ के गायेब होइ कइ सूचना दरबार मा आइ कयि दीनि गयि। वजीरउ दरबार मा रोवइ लागेनि। बतायेनि कि रुपिया अउ ऊँट अढ़ाई छयल लइगा।

फेरि बीरा धरइ कइ समयि आइ गइ। धइगा। अबकी एक कुटनी जाइ के बीरा उठायि लिहेस। नगर मा जायिके कुटनी दरी दरी कहइ लाग कि हे भइया हमार नाति विमार बा, हमइ 4 बून ऊँटे कइ खून चाही हमार नाती बिमार बा। पूँछत-पूँछत ऊ बुढ़िया के इहाँ पहुँचि गयि। उहूँ कहेस कि हे बुढ़िया माई, हमार नाति बिमार बा जउ ओका 4 बून खून मिलि जाये तउ बचि जाये। हे बहिनी तोहँका एक बाति बताई। किहिउ से कहू जिनि जेतना खून कहा ओतना खून देई। तोहार नाति बचि जायि तउ ठीक। नाहीं माई हम किहिउ से बताउब ना तू हमयि दयिद्या। हमार भला होइ जाई।

बुढ़िया खून कइ लोटर हाथेम लइके चली। बुढ़िया के मोहारे पइ एक पंजा खूने कइ लगायि दिहेस। अढ़ाई छयल राति की आयेनि पंजा देखि के बुढ़िया से पूछेनि, बुढ़िया माई खून दिहिउहा किहू का। बुढ़िया कहेस कि हाँ बच्चा एक बुढ़िया कइ नाती बीमार रहा। वहि का बचइ कि ताईं ऊँटे कइ खून चाही रहा। हम दयि दिहे। अच्छा ठीक बा माई। अढ़ाई छयल राति की सब मोहारन पइ पंजा लगायि के बढ़त चला गयेन। कुटनी के मोहरा पइ दुइ पंजा अउ राजा के मोहरा पइ चारि पंजा ठोंकत की पूरे नगर मा घूमि आयेन। कुटनियऊ राजा के घरे गईं अउ राजा से बताईं कि पता लागि गइ बा। मोहारे पइ खून कइ पंजा लाग बा। सबेरे सिपाही खून कइ पंजा के निसान पइ चलेनि। देखत बाटेनि कि नगर भरे मा जेतना कुलि मोहार बाटेनि सब पइ खूने कइ पंजा लाग बा। कुटनी के मोहरा पइ दुइ पंजा अउ राजा के चारि चारि पंजा लगायि के लिखि उठावा। "डेढ़ छयल की नगरी मा अढ़ाई छयल आया है, किया अभी कुछु नहीं करेगा बहुत कुछु।"

कुटनी कइ सारा परयास व्यरथ होइगा। बिहान भे राजा फेरि बीरा धरेनि। अबकी एक जने पहलवान बीरा उठायि के घाठी कइ पुरजा तइयार करइमा जुटा रहेन। अढ़ाई छयल उहाँ पहुँचि के कहेस कि का हो पहलवान ई काउ बनवत हया। कहेन कि इही मा चोरे का घाठी दयि जाये। उतसुकता से कहेन कि कइसे भइया। कइसे घाठी दीनि जाथइ तनी हमहूँ का समझावा। पहलवान आपन गटई वहि पइ धइ के कहेनि के धीरे से दाबा। एतने मा अढ़ाई छयल जोर से दाबि दिहेन, पहलवान राम अपुनइ घठियायि उठेनि। अउ उहीं बोर्ड टांगि दिहेन कि "डेढ़ छयल की नगरी मा अढ़ाई छयल आया है, किया अभी कुछु नहीं करेगा बहुत कुछु।"

सबेरे देखिगा कि पहलवान घठियायि दीन गा रहेन। चारिउ ओर हल्ला मचि गा। राजा सचिउ सब देखयि आयेनि। अब ओनके सभे कइ अचरज कइ सीमा नायि रही। दरबार लाग। फेरि बीरा उठावइ कइ बाति चली। वहि राजि मा अब के बीरा उठावइ कइ नाँउ नाइं लेतबा। अन्तमा एक पतुरिया बीरा उठायेस। खायि पी के राति की पतुरिया के साथ आइ के पूछेनि कि बीबी का होता बा? का हमहूँ तोहरे साथे चली? बीबी कहीं कि लरिका हया चलत्या न मोह बोलारउ रहब्या। ये अपनी झोरी मा दुइ किसिम कइ बरिया धरे रहेनि। एक मा खुब नोन डारि के एक मा गुर डारि के। अब बीबी के साथे चोर पकड़इ बरे चलेनि। घूमत-घूमत भूखि लागि गइ। बीबी कहीं कहूँ कुछू खायि का न मिले। काउ यहि जूनी मिले। भूख बढ़ति गयि। बीबी कहीं कि अब रहाइसि नायि बा। कहेनि कि कुछ बरिया हम लिहे बाटी। लावा खायि जाइ। नमकीनि बरिया पतुरिया का दिहेनि अउ मीठि अपुना खायेनि। अब पतुरिया का पानी कयि जरूरति महसूस भयि। उही के साथे बिना मन का एनहूँ कहइँ कि हमरेउ पियासि लागि बा। येनसे कहइ कि जा किहिउ के घरे से पानी लइ आवा। एक दुआरे गयेनि इनारा पइ उबहनि धरी रही। अढ़ाई छयल कहेनि कि एक काम करा कि पहिले हमका लटकावा हम आई तब तोहँका हम लटकायि देई। पतुरिया

कहेसि कि नाहीं हमरे जोर कइ पियासि लागि बा, पहिले हमका पियावा। का किहेनि कि बीबी कइ गोड़ पकरि के रसरी मा बान्हि के लटकाय दिहेनि। धन्ना मा रस्सी बान्हि के बोर्ड लगायि दिहेनि "डेढ़ छयल की नगरी मा अढ़ाई छयल आवा है, किया अभी कुछु नहीं करेगा बहुत कुछु।"

सबरे सब कुवाँ मा लटकी बीबी का देखेनि ओनसे पूछेनि कि ई तोहारि दसा कइसे भइ। बीबी के उत्तर देयि के पहिलेनि सब बोर्ड पढ़ि लिहेनि। अब चारिउ ओर हल्ला मचइ लाग कि अब केउ चोर का पकरि न पाये। अबकी चारि सिपाही मिलि के बीरा उठायेनि। अब अढ़ाई छयल नदी पइ कँटिया लगावइगा। चारिउ सिपाही नदी के किनारे पहुँचेनि, पूछेनि ऐ लवन्डे! का तइँ चोर का देखे हा? हाँ साहेब अबहीं की दुइ लात मारि के भाग जात बा। चारिउ सिपाही आगे बढ़ेनि। फेरि लउटि के आयेनि, केहरी गा रे लरिका। अरे साहेब जइसे आप अगवा गयेनि वोइसे फेरि आइ दुइ थबरा मारि के पुरबइ का गा है। फेरि पुरुब का दौरा। लउटि के आइ तब लरिका कहेस कि अबकी नंहइ इही नदी मा कूदिगा। आपउ अगर वहि मा कूदि जाथेन तउ निहचय मिलि जाये। यहि नदी मा बूड़ि के हेरा। एक साथ जा, एक साथे पकड़ा। चारिउ जने नंहइ हेरा। जब सब वहिमा डुबकी लगायेनि तब येहर सब कइ कपड़ा समेटि के एक घोड़ा पइ बयिठि के भागि के चला। नगर मा ऐलान कइ दिहेस कि आजु राति की नगर मा चारि हू हू अइहैं। सावधान रहया नाहीं तउ खायि लेयिहें। चारि ओर केवाड़ा बन्द होइ लाग। लरिके बच्चे डर कइ मारा घरे मा ओलियायि गयेनि। राति भइ चारिउ सिपाही पानी से निकरि के जाड़ कइ मारा हू हू करत की नगर मा परबेस किहेन। सब ओनका हू हू जानिके ओहरी लखेनि नायिं। दुइ पुरनियाँ हू हू देखयि कइ मारा बहिरे आयेनि। देखेनि कि जाड़ कइ मारा करत रहेनि। आगे बढ़ेनि तउ एक बुढ़वा अउ एक बुढ़िया चइला दहकाये बइठा रहेनि। पूछेनि तू चारिउ जने हू हू हया? चइला लयिके मारत मारत गिरायि दिहेन अउ जुटि गय तमाम आदमी। बाद मा पता चला कि ये चारिउ जने सिपाही हयेनि। चारि अँगउछा दयि के तपायेनि। सब बतायेनि कि ई अढ़ाई छयल कइ काम आ। राजा के इहाँ ई समाचार पहुँचा। वइ सब बतायेनि कि हमार सब कइ बहुत दुरदसा भइ। देही मा फफोलइ फफोला होइ गवा। पूर सरीर मारु से पिटि गइबा।

दरबार लाग राजा परस्ताउ रखेनि कि अब के बीरा उठाये। केउ उठावइ का तइयार नाइं भा। अन्त मा राजा स्वयं बीरा उठायेनि। अब ढाई छयल बुढ़िया के घरे से चाकी अउ कोदउ लइके सड़की पइ बइठा रहा। कोदउ दरइ लाग। राजा घोड़े चढ़ा आयेनि, पूछेनि कि का रे बुढ़िया येहरी चोर आइ रहा। हाँ सरकार येहर का गा बाटइ। राजा ढालि तरवारि लयि के तेजी से ओहरी गयेनि। नाइं मिला। फेरि लउटि के आयेनि का बुढ़िया आइ रहा? हाँ साहेब अबकी येहरी आइ के यहि दिसा का गा। फेरि दउरेनि फेरि लउटि के आयेनि। नाइं मिला। बुढ़िया कहेसि कि हे राजा साहेब अब इहीं कोदउ दरा अबहें आये। उहइ बुढ़िया के कथरी ओढ़ि के राजा साहेब कोदउ दरइ लागेनि। वइ राजा कइ कपड़ा पहिरि के घोड़ पर चढ़ि लिहेस। वोहर दउरा जायिं तउ दुइ कोड़ा राजा का सड़ाक सड़ाक लगायि देंइ। येहरी से आवइं तउ दुइ कोंड़ा। मारि कोड़ा राजा कयि देंहि बेकाबू कइ दिहेनि। वोका आवत देखि के राजा हाली हाली चाकी चलावइ लागयिं। यही तरह से राजा से खूब चाकी चलवायेस अउ अपुना राजा के सोवइ वाले कमरा मा जायि के सोवइ लागेनि। यहरी जब सबेर होइ वाला भा तउ राजउ कथरी ओढ़े पैदरइ सड़की पइ चलइ लागेनि। राज दरबार के मुख्य द्वार पइ पहरेदार डाँटे के भागि जायि के आदेस दिहेस। लगे जायि के राजा आपन परिचय दिहेन तब ओनका जायि दिहेन। पहरेदार बतायेस महराज आप के भेख मा एक मनई महल मा कुछु बेर पहिले गा रहइ। अब राजा डरत की महल मा जात हयेन। वहिं देखयि लागेनि तउ सैय्या पइ सोवत एक मनई मिला। राजा पूछेन तू के हया। ऊ बतायेस कि हम राजा हई। राजा सेनापति अउ कमाण्डर कुछु सैनिक बोलाय कै फेरि प्रस्न करइ लागेनि अउ ऊ उत्तर देइ लागेनि।

राजा पूछेनि कइसे तू राजा हया? तुरन्तइ एक रूमाल राजा का देखायेनि पूछेनि केकयि रूमालि आ? राजा अवाक। फेरि तुरत कटार देखायि के पूछेसि केकयि कटारि आ? राजा अवाक, फेरि अँगूठी देखायेनि ई केकइ अँगूठी आ? राजा अवाक। राजा का ई मालुम होइगा कि ई तीनिउ समान तउ वहि अधब्याही लड़की कइ होयि। फेरि ओ बतायेनि कि एक तवायफ आपके पड़ोस मा एक दायिं आइ रही? राजा स्वीकार किहेनि, हाँ। ऊ उहइ अधबियाही औरति रही। उही दिन के सम्पर्क से हम पैदा तोहार लरिका होई। राजा ओनका छाती से लगायि लिहेनि। अउ रानी का बोलवायि के रनिवास मा प्रतिस्ठित किहेनि। राजा राज किहेन परजा सुख।

# सत्त बड़ा कि लछमी

एक दायिं सत्त अउ लछमी मा विवाद छिड़ा। सत्त कहेनि कि हम बड़ा, लछमी कहयिं कि हम बड़ी। सत्त कहयिं कि येहि जग मा सत्त से बढ़ि के केउ नायिंबा। जेहिमा हम बाटी युग युगान्तर तक ओकइ गाथा वेद पुरान उपनिषदन मा चला करा थइ। कवि अउ विदवान वोकयि गाथा गावा थेन। लछमी सगरे विस्व मा अपुना का व्याप्त बतायि के आपनि मान-प्रतिस्ठा कइ गहिरि से गहिरि उद्यमन कइ वर्णन करा थेन। दुइनउ जने कइ विवाद निरणय पइ नायि आयि। निहचित किहेनि कि चला विकरमाजीत के हियाँ एकयि निरणय कीन जायि। दुइनउ जने राजा विकरमाजीत के दरबार मा आयेनि। राजा के सामने दुइनउ जने कयि विवाद पेस भा। राजा बड़े धर्मसंकट कयि अनुभव किहेन। लछमी का कही था सत्त रिसियाये। सत्त का कही था तउ लछमी। राजा आतमनिरणय लिहेन कि सही बाति हम कहब चाहे केउ नराज होयि। निहचिन्त होयि के राजा कहि दिहेन कि सत्त बड़ा आ अउ लछमी छोटि। जउ किहिउ कइ सत्त बना रहे तउ लछमी दउरी आवा थीं। लछमी तउ रिसिआयि गईं।

राजा कइ रुपिया-पइसा, धन-दउलति कुलि धीरे-धीरे उड़ि गा। खजाना खाली होइगा। हाथी-घोड़ा राज-पाट सब पता नायि के केहरी चला गयेनि। इहाँ तक कि राजा खायि-पिययि तक का मोहताज होयि गय। भिखारी कइ रूप लयि के चारि ओर गली-गली मा भीखि माँगइ लागेनि। जउनी गली मा जाइं चारि ठी गारिउ मिलयि लागि। मुल राजा अपने सत्त का नायिं छोड़यि का तइयार भयेनि।

एक दिन रानी से कहेनि कि चला तोहरे नयिहरे चली। रानी बहुत परसन्न भईं। दुइनउ जने गयेनि। समयि-समयि कयि बाति आ। येई राजा पहिले आवयिं तउ नगर कइ सड़क सजि जाइ। तोप कइ सलामी दीन जाइ। इहाँ तक कि अगुवानी करयि राजा दउरयें। तवने राजा विकरमा जीत के आये पइ केउ ओहरी तकतयि नायिं बा। अपनी ससुरारी गयेनि अपुनयि बइठेनि। केउ ओनकी ओर तकत नायिं बा। रानी घरे मा चली गईं। अब ओनहू का के छाती से लगायि के पहिले कि नायिं केउ भेंटत नायिबा। रानी का देखिके मोह ओहर कयिके दुसरयि बाति उठावयि लागेनि। जब राति की सब खायि पी के नेमका तउ घोड़ा कइ खिचरी बनई रही उही मा से राजउ का खायि का आयि। राजा खिचरी देखि के धरती माता का धियान मा धइ के खिंचरी भुई मा गाड़ि दिहेन। अउ कहेन कि हे धरती माता जब चाही तब ई खिंचरी इही रूप मा हमका मिलयि। वइ सबेरे एक मित्र के घरे के बदे उठि के तइयार भये। केउ रोकस नायिं। न केउ पहुँचावयि गा।

मित्र के घरे खबरि जनायेनि कि राजा विकरमाजीत आवत हँइ! बड़े प्रेम से राजा कइ मित्र दउरि के नगर के बाहर आयेनि। राजा विकरमाजीत का खूब साजि धाजि के हाथी पइ बइठायि के लयि आयेनि। बहुत स्वागत सम्मान किहेन। तोप कइ सलामी दयि गयिं। लयि के बड़े प्रेम से सम्मानित भयेनि। एक कमरा मा अलग व्यवस्था कीनि गयि। राति की खायि पी के आराम करयि लागेनि तउ देखत बाटेनि कि कमरा मा खूँटी पइ नौलखा हार टाँगा बा। थोरिकी बेर मा इहउ देखत बाटेन कि खूँटी हार की एक एक मबियाँ का लीलत जात बा। जब पूरा लीलि लिहेस तउ येनका बड़ी गलानि भइ कि हमका ई चोरी

लागे। यहि भय से राततिनि निकरि के भागि खड़ा भय। एक गाउँ मा जायि के एकठी खरही के आड़े बइठ रहेन कि सबेर होय तब जाब। वहि गाउँ मा चोर आयि रहेनि। सब गाउँ वाले चोरन का खेदेनि चोरे भागि गयेनि। येई खरही के आड़े पकरि गय। गाउँ वाले जानेनि कि चोर होयिं। मारत पीटत घेर्रावत गाउँ मा लयि आयेनि। राजा के हियाँ पेस किहेन। राजा अउर आदेस दिहेन कि हाथ गोड़ काटि के एक चउरस्ता पइ बयिठायि द्या। उही चउराहा पइ येनका सब देखयिं। तब राजा विकरमा जीत का लयि जायि के हाथ गोड़ काटि के चउराहा पइ बइठायि दिहेनिं

बजार कइ दिन रहा। एकठी तेलिनि तेल बेंचयि जात रही। जब एनका देखेसि तउ ओका बड़ी दरदि भयि। ऊ तेल ओकरे घाउ पर लगायि दिहेस। जब बजारे गयि तउ देखत बा जेतना तेल ऊ बेंचयि फेरि बरतन भरि जायि। 500 टका कइ बेंचेसि चुका नायिं। जउ अपने घरे आयि अपने तेली से पूरी हालि बतायेसि। दुइनउ परानी यहि बाति पइ बहुत ताजुब किहेन। एकठी बिना हाथे गोड़े के मनई का तेल लगाये पइ 500 टका कइ बिकाबउ कीनि अउ ओतनयि बचबउ कीन। हे स्वामी जउ तू कहत्या तउ जायि के वहि अपंगे का हम अपने घरे लयि आयिति। कोल्हू पइ बइठायि देइति हाँकवइ करत। तेली राम कहेनि कि कवनि बाति किहू घरे मा वहि अपंगे का लायि के एकठी काम बढ़उबू। तेलिनियाँ नायि मानी ऊ जायि के ओनका घरे लयि आयि। अपंग कइ ऊ सेवा करयि तेल लगावइ। धीरे-धीरे ओकयि घाउ पूजि गयि। कोल्हू पइ बइठाइ देयि तउ दिन राति हाँकत रहइं। एक दिन राति मा जब नगर कइ सगरउ दिया गुल होयि गयेनि तउ उही समयि पइ विकरमाजीत कोल्हू पइ बयिठि के दीपक-रागि कइ गीत गायेनि। ओनके गउतइ भरे मा पूरे नगर कइ दिया जहाँ तक रागि सुनानि जरि गयेनि। रानी के अन्टा पइ धरी गैसउ बरि गयि। ई अचरज देखि के पूरे नगर मा हल्ला होइगा कि दिया अपुनइ बरि गयि। रानी तुरन्त नगर मा गावइ वाले कइ पता करयि कइ अदेस दिहेन। नौकर जायि के पता लगायि आयेनि कि तेली के घरे कोल्हू पइ बइठा एक बिना हाथ गोड़ कइ मनई ई रागि गावत बा। ऊ रानी विकरमाजीत की यहि रागि से परिचित रहीं। बताईं कि ई मनई चाहे जेस होइ विकरमाजीतइ होइहें। मन मा ओनके चिर यस गाथा का दोहरावइ लागेनि।

राजा की लड़की कइ स्वयंवर होयि वाला रहा। बहुत राजा वहिं स्वयंवर मा आयेनि। गावँउ कइ लोगे आयि के देखयि वदे चारिउ ओर खड़ा भयेनि। येऊ तेलिनि से कहेनि कि हमहूँ का लयि चलतू तउ हमहूँ देखि आयिति। अबयिं हम नायिं जानिति कि स्वयंवर कइसे होथयि। तेलिनि तेली से कहेसि कि एनहू का देखायि द्या। तेलिया कहेसि कि येनका लूल राम का तउ अकाजयि होत बा। एनके देखे बिना जानि परत बा स्वंबरइ न होये। जयिसे येनहीं के गलेमा जयमाल परयि का बा। तेलिनि कहेस कि मनयिनि कइ जिउ तउ होयि। इहीं बइठे बइठे उबियान रहा थइ। मन आन होयि जाये। ओनका थामिके लयि जायि के घूरे पइ बइठाइ दिहेनि। राजकुमारी चारिउ ओर घूमत घूमत आयि के घूरे पइ बइठा अपंग मनई के गले मा जयमाल डारि दिहेस। पूरे स्वयंवर मा हाहाकार मचिगा। सब कहयि लागेनि कि राजकन्या कइ दिमाक खराब होइगा। फेरि से स्वयंवर होये। जब दुबारा होइ वाला भा तउ राजकुमारी पूरे स्वयंवर को छोड़िके उही अपंग मनई के गले मा जयमाल पहिरायि दिहेसि। तीनि दायिं इहइ किरिया कयि गयि। राजकुमारी तीनिउ दायिं ओनहीं के गले मा जयमाल पहिरायेसि। राजा पूरे रजा समाज का चला जायि का कहेनि। अब माला यहीं के गटई मा परा तउ येई हमार दमाद होथिं। रोवत धोवत बिआह सम्पन्न भा। राज दरबार से दूरि एक बँगला मा रहयि कइ निहचय कयिगा। उही बँगला मा परा रहिहे। बँगला मा रहइ लागेनि। वहिमा रहत कुछु दिन बीतिगा। राजा विकरमाजीत अब अपनी नई रानी के साथे आराम से बँगला मा रहइ लागेनि। नौकर चाकर सेवा मा लपटियान रहइँ।

एक दिन राजा विकरमाजीत यानी लुलऊ अपनी रानी से कहेनि कि जा अपनी भउजायिनि से

सिकार मांगि लउतू। हमार मन कहत बा कि सिकार खायि जायि। औरति पतिव्रता तउ रहबयि करयि भउजायिनि से जायि के कहेस कि भउजी जो लुलऊ का बहुत मन कहत बा सिकार दयि देतू। भउजायिनि कहीं कि जउ तोहँयि सिकारयि खायि का रहा तउ उहइ लुलवइ बरयि का रहा, बड़े-बड़े राजा महराजा आयि रहेन। ओनका बरे होतू। दिहीं लयिके आयि। दुइ चारि दिन के बादि फेरि सिकार माँगयि बदे पठयेनि। भउजायिनि के मुहें से फेरि निकरि परा कि सिकारयि खाइ का रहा तउ उहयि लूलयि लंगड़यि रहा तोहका जयमाल पहिरावयि का। किहू राजा महराजा का पहिराये होतू। रानी कयि जवन अनादर भउजायिनि करत रहीं ये से प्रेरना पायि के सत्त लछमी के लगेगा बहुत बिगड़ा कि तू मति भ्रम भयि अहू। किहिउ कयि एतनी बड़ी परीछा नायि होत। लछमी राजा के घरे गयीं। घर मा प्रवेस करयि कयि जगहा खोजयिं लागीं। फाटक बन्द रहा। ओनका जायि कयि जगहयि नायिं मिली। सत्त से कहीं कि रस्तयि नायि मिलत बा। सत्त फेरि कहेसि कि जल्दी तू जायि के आपन अहथान राजा के घरेमा ल्या नाहीं तोहका रहयि का अहथान न मिले। तू जा पण्डोहे की जायि के ओनके घरे मा स्थान ल्या। लछमी गयीं जउ कहूँ जगहा नायि मिला तउ पण्डोहे कयीं जायि के परवेस किहीं। लछमी के आयि गये पइ राजा विकरमाजीत कयि दिव्य चेहरा होइगा। हाथ गोड़ सव दुरुस्त होइगा। सबेर होत ओनकइ सिंहासनउ पहुँचिगा। राजा विकरमाजीत सिंहासन पइ बइठेनि।

अब राजा कहेनि कि जा अपने भायिनि से कहि आवा कि लुलवा एकठी घोड़ा मांगत बा। रानी जायि के अपने भायिनि से कहेस वइ सभे वहुत खुसी भयेनि। सोचिनि ई आयिबा घोड़ा माँगयि बदमास घोड़ा दयिद्या जउने एका बहायि देयि मरि जायि तउ लुलऊ का खन्धके मा बहायि के मारि डारा जाये। बवाल खतम होयि जाये। रानी बदमास घोड़ जानि के आईं विकरमाजीत से बताईं। वइ कहेनि कि तू जा एक काम किहिउ ओकरे लगे जायि के काने मा कहि दिहू कि विकरमाजीत राजा बोलावत हइँ। तब पकड़ि के लयि के चली आयिउ। रानी गयीं, विकरमाजीत कयि नाउ सुनतइ भरे मा घोड़ सीधा-सादा घोड़ा की नायिं होइगा। सबका बड़ा ताजुब भा। लगामि अउ तरवारि मांगि के लायि। घोड़ा पइ जीन कसेस। लयि के आयि विकरमाजीत का घोड़ दिहेस। कूदि के सवार होयि गय। जंगल मा गयेनि कुलि सिकारन कइ कान पूंछि काटि के बोरा मा भरि के लयि आयेनि। वहि दिन ओनकयि चारि सार खूब सिकार पायेनि। पावहिं काहे ना, सब घायल तउ रहबयि करयिं।

राजा फेरि रानी का पठेयनि कि जा कहि द्या लुलवा का सिकार दयिद्या। गयीं अउ कहीं मुल भउजायिनि कहीं जउ तोहँयिं सिकार खायि कयि सउक रही तउ उहयि लुलवयि रहा, राजा-महराजा का बरे होतू। तब सिकार मनमानी खातू खियउतू। इ बाति सुनि के रानी का बहुत दुख भा। वयि सिकार नायिं लिहीं चली आयीं। राजा कहेनि कि इहयि कान पूछि लयि जायि के ओनके आगे पटकिद्या कि देखा, कुलि सिकार हमरे लुलवयि कइ मारा आ। एक्कउ के कान पूछि रही। पूछे पइ बतायेनि कि आजु कुलि सिकार के कान पूछि का केउ बहुत बड़ा सिकार आयि के काटि लिहे रहा। बोरा भयि कान पूछि देखि के सबका बड़ा अचरज भा। भाय लागे आयि के राजा विकरमाजीत का देखि के ओनके गोड़े पइ गिरयि लागेनि। सब ओनसे छमा मांगेनि अउ पूरी जानकारी चाहेनि। राजा विकरमाजीत बतायेनि कि यहिमा कउनो तोहरे सभनकइ दोख नायिबा। हमारि समय वइसे रही। ओनकयि ससुर जी सुनेन तउ बहुत परसन्न होयिके आयेनि राजा विकरमाजीत के गोड़े पइ गिरि परेनि, पहिचानिउ लिहेन। राजा विकरमाजीत अब चलयि बदे तइयार भयेनि। ओनका इहां से 1 हजार हाथी 10 हजार घोड़ा हीरा मोती रतन खजाना पायेनि। येतनी बड़ी उपहार रासि पाइ के राजा विकरमाजीत अपने राजकाज के खियाल कइके चलि परेनि। अपने मित्र के हियाँ आयेनि खबरि दिहेन। वयि बड़े मान सम्मान से लायि के ओनका बइठायेनि। ओनका उही कमरा मा अहथान मिला जउने मा जात की बेरी मिला रहा। जब राजा खाइ

पी के राति की अराम करयि लागेनि तब खूँटी पइ निगाह परी ऊ एक एक दाना हारि उगिलयि लागि। वहि समय राजा अपने मित्र का बोलायि कि कहेनि कि भइया देखा ई खूँटी तबकी हार लीले रही अबकी उगिलत बा। ओऊ हार उगिलत देखेनि। सबेर भये पइ राजा फेरि तइयान भयेनि। सम्मान के साथ राजा कइ विदायी भइ। वइ अपने मित्र के हिंया से विदा होइके अपने राजधानी का प्रस्थान किहेनि। राही मा ससुरारी परत रही। वहिं सनेस भेजेनि कि राजा भोज आवाथयेनि। ससुरारी के लोगे बहुत खुस होयि के स्वागत किहेन, तोप कइ सलामी दीन गइ। सम्मान के साथे लियायि गयेनि। नौकर चाकर जुटेनि मान सम्मान का कउनो कमी नायि रही। जब भोजन करयि का कहेनि, राजा कहेनि कि अबयिं हमार तबकी वाला भोजन धरे बाटी, उहयि खाब। राजा जहाँ धरे रहेनि भुइँ से निकारि के गरम गरम खिचड़ी खायि लागेनि। ओनकयि ससुर जब देखेनि तब ओनका एतना कस्ट भा कि हिरदयि कइ गति रुकि गइ वइ सरग सिधारि दिहेनि। पुन्नी रानिउ का साथे लयि के अपने नगर की ओर राजा चरि परेनि।

राजा के राज कइ तउ अउर विचित्र हालि होयि गयि। लछमी गली-गली, राज दरबार अउ पूरे राज मा आपन डेरा डारि दिहीं। हाथी घोड़ा रतन खजाना जइसे पहिले रहा उहयि फिरि से वहिं राज मा आयिगा। ओनकयि मंत्री अउ पूरी हुकूमति उतरि परी। राजा दरबार मा गयेनि अउ राजकाज करयि देखयि लागेनि।

# केतकी अउ अमोला

एक रहेनि राजा। ओनके रहीं पाँच रानी। लरिका एक्कउ के नायिं रहेनि। कुछु दिन के बादि सबसे छोटी रानी के गरभ रहिगा। राजा बहुत परसन्न भयेनि। मुला चारिउ रानी का बड़ा दुख भा। वइ सब इरसा अउ द्वेस से भरि गयीं। सोचयि लागीं एकरे जउ लरिका होयि जाये तउ हमन कइ मान सम्मान कम होयि जाये। राजा अबै छोटी रानी से प्रसन्न रहा थेन। येहर छोटी रानी राजा से कहा तहीं हे महराज तु दिनभयि सिकार खेलाथ्या जउ हमरे तकलीफि होये तउ कइसे तोहँका खबरि देबइ। राजा एक घन्टा बन्हायि दिहेनि। रानी से बतायेनि कि जब तोहरे तकलीफ होये इहइ घन्टा बजवायि दिहू। तब हम चाहे जहां रहब आयि जाबयि। राजा सिकार खेलयि गयेनि। येहरी रानी अन्दाजाये बरे घंटा बजवायि दिहीं। राजा दउरा आयेनि पूछेनि कि कवन तकलीफ बा। रानी हँसी अउ कहीं हे राजा साहेब हम अन्दाजयि कइ मारा बजाये हा। हमरी गलती का छमा करा। राजा सिकार खेलयि चला गयेनि। फेरि कुछु समय के बादि रानी का सही तकलीफ होयि लागि। घन्टा बजाईं मुल राजा नायि आयेनि। फेरि बजायीं फेरि नायिं आयेनि। सब रानिन से सलाह कयिके बड़ी रानी ओनके लगे गयीं। कहीं कि ये बहिनी तोहरी आँखी मा पट्टी बान्हि देत बाटी। तू कोने की ओर मोह कयिके बइठा। तुहका तकलीफ न होये। अब सब मिलिके पट्टी बान्हि के कोने की ओर मुह कइके बयिठायि दिहेनि।

रानी के एक बेटवा एक बिटिया भयेनि। होतयि भरे मा वइ चारिउ रानी गायब कइ दिहेनि। लरिका की जगहा पइ ईंटा अउ पाथर लायिके रखि दिहेन। आँखि छोरी गयि। छोटकी रानी कुछु बेर के बादि पूछीं कि लरिके कहाँ हयेनि तउ वइ सभरे उत्तर देयि मा नायि चूकी, अरे बहिनी इकाउ आ इहइ ईंटा अउ पाथर भा बाटेनि। दुइनउ बच्चन का एक कुटनी लयि जायि के कोहारे के आवाँ मा धरायि दिहीं। सांझ की राजा आयेनि, पूछेनि तउ पता लागि की ईंट पाथर भा बाटेन। इं सुने पइ छोटकी रानी का राजा बिगड़ेनि। छोटी रानी का राजा कहेनि कि येनका करिया कपड़ा पहिरावा। अउ पूरे नगर भरे कइ कउवा हड़ावयि कइ काम करयिं। राजा के अदेस से रानी के मुँहमा करिखा पोति के करिया कपड़ा पहिरायि के हाथे मा डंडा थम्हायि दिहेनि। वइ नगर भरे कइ कउवा हंड़ावयिं लागीं। नगर बासिन के आंखी से आंसु कइ धारा बहयि लागि। सब चारिउ रानी अउ राजा का आड़े-आड़े शुड़ी बोलयि लागेनि। भला येतनी सुन्नरि रानी दिन-दिन कउवा हड़ावयि कयि हिम्मति केस कइ किहीं। ओहरी कोहाँर आपन बरतन खोलेस। कुलि बरतन तउ ऐसन पाकेनि जयिसे काँच कइ होयिं। जवने मा वइ दुइनउ लरिके रहेन आँच नायि लागि। लरिका अउ लरिकिनी कइ रक्षा भगवान किहेन। कोहार लरिकन का पायि के बहुत प्रसन्न भा। कहयि लाग भगवान हमका दिहे हयेन। वोकरे एक्कउ बच्चा नायिं रहेन। वइ दुइनउ परानी निहाल होयि गय। ल्या मलकिनि लरिका बरे बहुत ललात रहू अब ल्या सेवा पखेवा। लरिके पलयि पुसयि लागेनि, कुछु बड़ा भय। माटी कइ घोड़ा अउ काठ कइ लगाम लयिके खेलयि लागेनि। चारिउ रानी नदी पइ असनान मज्जन करयि गयीं। वहि आपन घोड़ा लयि के गयेनि, रानी के लगे कहेनि 'माटी कइ घोड़ा काठ कइ लगाम घोड़ा सारे पानी पिउ।' रानी कहीं बहुत बेकूफ लरिका हयेनि कहूं माटी कइ घोड़ा पानी

पिया थइ। रानी कइ बाति सुनि के लरिका कहत बाटेन कि 'कहूं मेहरारू ईंटा पाथर दिया थीं।' रानी दरबार मा जायि के राजा से सिकायत किहीं कि कोहारे कइ लरिका लरिकी हम्मयि गारी देथेन। हे राजा दुइनउ लरिकन का मरवयि द्या नहीं तउ हमहीं राज छोड़ि के निकरि जाबयि। लरिका लरिकी मा बोलायि राजा पूछेनि कि केस हालि आ। बतायेनि कि हम खेलत रहे अउ कहत रहे कि 'माटी कइ घोड़ा काठे कइ लगाम घोड़ा सारे पानी पी।' तउ रानी कहीं कि बड़ा बेकूफ लरिका हयेनि। कहूँ माटी कइ घोड़ा पानी पिया थइ। तउ हमहूँ कहि दिहे कि कहूँ मेहरारू ईंटि अउ पाथर बिया थीं। इही पयि रानी कहयि लागीं कि गारी दे थयेनि। हम गारी नायि दिहे। राजा दुइनउ लरिकन का भूईं मा गाड़ि देयि का गड्ढा खोदायेनि। वहि मा एनका दुइनउ जने का गड़वायि दिहेन। उही अहथान पइ लड़िका अमोला अउ लड़िकी केतकी होयि के जामि। जेतना सुन्नर दुइनउ गदेला रहेनि ओतना सुन्नर ऊ पेड़ होयि के जामेनि। केतकी कइ फूल खिलि के सारे संसार का रिझावयि लागि। जे देखयिं फूल तोरयि का मन करयिं तउ पावयिं ना। अमोला जब देखयि कि केउ आवत बा फूल तोरयि तउ कहयि लागयि :

> *अरे सुनु सुनु बहिनी केतकिया रे ना।*
> *बहिनी आवत बाटे नगरा के लोगवा रे ना।*
> *बहिनी डारि पाति लयि बढु अकसवा रे ना।*

फूल अकासे मा जायि के खिलिगा। ओका केउ पायि न सकेनि। राजा ओकयि फूल देखेनि, तोरयि चाहेनि मुल पायेनि नायि। मोहित होयि के पावयि कइ बड़ी इच्छा लयि के घरे गयेनि। दुसरे दिन फेरि राजा फूल तोरयि आयेनि। अमोला कहत बा :

> *सुनु सुनु बहिनी केतकिया रे ना।*
> *बहिनी आवत बाटे बपवा पपियवा रे ना।*
> *बहिनी डारि पात लयि चलु अकसवा रे ना।*

फूल ओप्पर चला गय। राजा निरास होयि के फेरि चला आयेनि। राजा राज में ऐलान किहेनि कि जे केतकी कयि फूल लाये 1000 रु. इनाम पाये। राजा कइ बाति सुनि के चारिउ रानी फूल लावयिं गयीं। ओनका देखिके अमोला बोला :

> *सुनु सुनु बहिनी केतकिया रे ना।*
> *बहिनी आवत बाटीं मयिया पपिनिया रे ना।*
> *बहिनी डारि पात लयि चलु अकसवा रे ना।*

फूल पात आकास मा चला गा, केउ नायि पाईं। देखि के ललचायि के चली आयीं। एक्कउ पाती फूल कुछु हाथे नायिं आयेनि। नगर कइ तमाम मनई सब आयेनि केउ नायि पायेनि। सब के सब निरास होयि के चला गयेनि। सबसे पीछे कउवा हकनी आयि। ऊ अपने मन मा कहेस हमहूँ चली देखी। जब वहिका आवत देखेनि तउ अमोला कहत बा :

> *सुनु सुनु बहिनी केतकिया रे ना।*
> *आवत बाटी कउवा हँकनी मयरिया रे ना।*
> *बहिनी डारि पात माई जिउ के कोरवा रे ना।*

एतना सुनि के वहिं केतकी का आजु पहिली दायिं अपनी सही मायी के कोरा मा जायि का अवसर मिला बा। अमोला अउ केतकी दुइनउ जने कउवा-हँकनी के कोरा मा आयि के जीवन कइ अपने सही माई के सूनी गोदि का उजियार किहेनि। कउवा हँकनी बड़े प्रेम से केतकी कइ फूल कोंछा भरि के उतारि

लिहेस। उतारि के राजा के दरबार मा आयि। राजा कउवा हँकनी का फूल के साथे देखेनि। तउ राजा का बड़ा अचरज भा। राजा फूल लिहेनि। यहि के वैज्ञानिक तथ्ये पइ विचार करावयि लागेनि। पेड़ कटायि दिहेनि। जब नीचे खोदा गा तउ आवाजि आयि :

*भइया धीरे-धीरे मारा फरुहवा हो ना।*
*भयिया उही नीचे राजा कइ दुलरुवा हो ना।*

फरुहा चलावयि वाले सउधानी से फरुहा चलायि के दुइनउ सुन्नर लरिकन का निकारेनि। दुइनउ लरिके ब्रह्म तेज से ओत-प्रोत रूप लयि के यहि भुइं पइ विस्व कइ आकरसन कइ केन्द्र होयि के अवतार लिहेनि। लरिकन का राजा के घरे लयि के आयेनि। लरिकन के आये पइ आजु राज-महलि बड़ि सुहावनि लागति बा। जन परमुख अउ मंत्री कहयि लागेनि कि राजा साहेब ई दुइनउ लरिका रानी कउवा-हँकनी कयि होंयि। राजा एका मानयि का तइयार नायि भयेनि। राजा एकठी सरत रखेनि कि सब औरतन के वज्र कइ तावा छाती पइ लगायि जाये जेकरे छाती कइ दूध तावा फोरि के लरिकन के मुहे मा चला जाये उहयि एनकयि महतारी होयिहैं।

पारी-पारी सब लरिकन के सामने आयि के खड़ी भईं। मुल किहिउ कइ दूध ओनके मुहेमा नायि आयि। राजा कइ चारिउ रानिउ यहि परीछा से गुजरीं। मुला दूध नायि निकरा। अन्त मा कउवा हँकनी रानिउ आईं। सबका कबहुं नायि बेस्सास रहा कि इहयि येनकयि माई होये। दूध कइ धार छाती से वज्र कयि तावा फोरि के आयि के दुइनउ लरिकन के मुहेमा एक एक धारि दुइनउ लरिकन के मुहे मा गिरयि लागि। सब नगरबासी, दरबारी, चारिउ रानी, राजा अपुनइ हक्का-बक्का होइके ओकरी ओर निहारयि लागेनि। ऐसनि कठिन परीछा मा जउ कउवा हँकनी का सफलता मिलि गयि तउ यहि लरिकन के सम्बन्धे कइ कउनो तार जरूरयि जुड़ा होये। केतकी कयि फूल केउ नायि पायेस कउवा हँकनी लयिके आयी। दूध कउवा हँकनी कइ लरिकन के मुहे मा गा। राजा कउवा हँकनी का बोलायि के पूरी कथा पूछेनि। रानी कउवा हँकनी आयि के बतावयि लागि। जब लरिका हमरे होयि लागेनि तब घन्टा बजाये मुल आप आयेनि नायि। ये चारिउ जनी हमरे आँखी मा पट्टी बान्हि दिहीं। ईंट पाथर धयि के लरिकन का कोहारे के आवाँ मा धरायि दिहीं। वयि लरिके ये दुइनउ जने हयेनि। ये वई लरिके हयेनि जेका आप भुइं मा गड़ायि दिहेनि। अमोला अउ केतकी होयि के जामेनि। तबयि केतकी कयि फूल हमका मिला अउर किहिउ का नायिं मिला। राजा की समझि मा पूरी बाति आइ गइ। कउवा हँकनी अउ लरिकन का राजा अपनायि लिहेनि। लरिके राज दरबार मा आयि के वहि कइ सोभा बढ़ावयि लागेनि अउ रानी रनिवास कयि। चारिउ रानी कइ खाल खिंचवायि के भूसा भरायि के टाँगि दीन गा।

राजा राज करयि लागेनि परजा सुख।

# रन जीत, रन धूर

एक जने रहेन राजा। राजा कइ नाउ रहा रतनसेन। ओनके दुइ रानी रहीं। बड़ी रानी के रणजीत छोटी रानी के रणधूर नाउँ कइ दुइ लरिका पैदा भयेनि। राजा कइ उमिरि जादा होइ गयि। मंत्री लोगन से सलाह लयि के राजा अब राजकाज कइ भार अपने मूड़े से हटावइ कइ निहचय किहेनि। रणजीत बड़का लरिका राजकाज देखयि लायेक भवउ बाटयि। पण्डितन से सुभ घड़ी अउ लगन सोधायि के राजतिलक कइ तइयारी होयि लागि। बड़े धूमधाम से बड़ी रानी के बड़े लरिका कयि राजतिलक होइ गयि। अब रणजीत राजा होयि गयेनि। ओहर छोटकी रानी बिघिनि डारइ बरे कोपभवन मा जायि के परीं। राजा ओनका जादा मानत रहेन। कोपभवन मा राजा मनावयि गयेनि। रानी कहीं कि हमरउ लरिका रणधूर हमार बड़ा लरिका आ। रणधूर का राजा बनवा नाहीं तउ हम तोहरे ओप्पर परान दइ देब। राजा हिरदयिं मा दुख कइ पेटारी भरे कोपभवन से निकरि के राज दरबार की ओर चलेन। ओनके मोह कइ दुति हेरायि गयि रही।

राज दरबार मा जायि के रणजीत से कहयि लागेनि कि हे बेटवा! तोहँसे एक चीजु मंगवयिया बाटी। काउ मंगवयिया हया बापजी! तोहरयि तउ कुलि आ। राजा के मुँहे से निकरि परा राजगद्दी रणधूर का दयिद्या। ठीक अहइ बापजी, मुल हम यहि राज मा तब रहब ना। ठीक बा बच्चा जिनि रह्या मुल दयि द्या। तुरन्त रणजीत ताज उठायि के रणधूर के मूड़े पइ धयि के घोड़ा पइ बयिठि कुछु समान लयिके चलि परेनि। जात-जात काफी दुरि निकरि गयेनि। बहुत दूरि गये पइ एक राजा के अन्तःपुर वाले वहिं बगीचा मा निकरि गय जहाँ खाली राजा के घरे कइ औरतिन कइ बिहार होत रहा। घोड़ा कइ जीन बिछायि कं थका रहेनि तुरन्तयि नीनि आयि गयी रही। राजा कइ लड़की अपनी सखी सहेलरि के साथे बगीचा मा भरमण करयि बदे आयि। ध्यान देयि कइ बाति ई बा कि रणवीर कइ इहीं सादी भयिबा मुल ओनका एकयि ज्ञान नायि बा। लड़िकिनी आयि के देखेसि दूरि से कहेसि सखी ई पुरुष घोड़ा लयिके यहि बागी मा कइसे आयि। ओनका देखि के ओनकइ धरम पतनी जवन अपनी सखिन के साथे आयि रहीं घरे चली गईं। घरे खबरि आयि गयि। ओनकइ सार गयेनि घरे लयि चलयि बदे। ओनके पहिलेन सब सखी मिलि के पूछीं कि तू के हया? कइसे यहि बागी मा आयि गया। यहि केउ पुरुष नायि आवत। वइ छमा मांगि के चलयि चाहेनि मुल ओनकयि सार आयि गयेनि। वइ घरे आवयि बदे कहयि लागेनि। मुला घरे आवयि मा राजकुमार लजात रहेन। कहेनि कि हमका अवयिनि नायि चाही रहा जउ आयिनि गये तउ हम्मइ जायि द्या। नाहीं केउ ना जाने चला। घरे लियायि के आयेनि। ओनका एक कमरा मा बिस्तरा लगायि के कयि दिहेनि। खायेनि पियेनि अउ अराम करइ लागेनि। उही समयि मा ओनकयि पतनी वहिं आयि के पूछीं कि तोहरे ओप्पर कवनि बिपति आयि गयि, केस घर दुवार छोड़ि के कहां जात बाट्या। अपनी औरति से अपनी जिनगी पइ गुजरी बतायेनि अउ इहउ बतायेनि कि हम पुर पाटन जाती बाटी। उहीं नौकरी करब। ओनसे उहाँ न जायि का कहेनि मुला मानेनि नायिं। बीरमती जवन ओनकयि रानी रहीं ओऊ ओनके साथे जायि का तइयार भईं। बहुत रोकेनि मुल मानयि का तइयार नाइ भयीं।

रानी बीरमती अउ राजा दुइनउ जने दुइ घोड़ पइ चढ़ि के चलेनि। वहिं कइ राजा अपने दमादे का

पहुँचावइ गयेनि। कुछु दूरि गये पइ दुइ रस्ता मिला। एक रस्ता साल भरे कइ रही दुसरी छह महीना कइ। राजा दुइनउ बतायेनि। छह महीना वाली डगर पकरि के चलयि का तइयार भयेनि। राजा पहुँचायि के चला आयेनि। आगे गयेनि बिकट जंगल परा जउने मा सिंह भेड़िया, सेर-सेरनी मिलेनि। एक सेर एक सेरनी दुइनउ राही पइ आयि के खड़ा होइ गयेनि। राजा तरवारि लयि के सवधानी से घोड़ का एंड़ लगावइ जात रहेनि कि सेर हटि गवा। अब सेरनी रहि गयी। राजा घोड़ा तुरंत लउटि परेनि। रानी से कहेनि कि ई सेरनी आ यहि पइ तू वार करा हम स्त्री जाति पइ वार न करब। रानी सेरनी का तरवारि से मारि दिहीं। दुइउ जने आगे बढ़ेनि। घोड़ा पइ चढ़ेन एंड़ लगायेनि। एक जंगल पार भा दुसर जंगल पार भा। आगे पुर पाटन कइ राज आयिगा।

पुर पाटन में एक सुन्नर पक्का तलाउ रहा उहीं जायि के घोड़े से उतरेनि। दिसा मैदान किहेनि। पानी पियेनि। रानी से कहेनि कि तू इहीं तलाउ पइ रहा हम जाई नौकरी खोजि आई। वइ पुर पाटन के राजा के दरबार मा गयेनि। राजा के दरबार मा भीरि लागि रही। कुछु मोकदिमा, कुछु नौकरी, अउ कुछु अउर कामे से सब जुटा रहेन। यनहूँ का लाइनि लगाये बड़ी देर होयि गयि। साँझ की एनकइ नम्मर आयि। राजा से कहेनि कि हम बहुत असहाय अउ बेरोजगार हई। हम्मइ कउनौ नौकरी दयिद्या। दिन कइ कउनो काम तउ नायि मिला। फाटक पइ डिउटी देयिकइ राति कइ काम तउ मिला। अदेस आ कि अबहँइ जायि के फाटक पइ पहुँचा। बड़े फेर मा परि गयेन कि रानी कहाँ जइहें? येहर नौकरी कइ भूखि ओहर रानी कइ मोह, दुइनउ अपनी अपनी ओर खींचयि लागेनि। डिउटी पइ आइ गयेनि। रानी का चिन्ता बनी अहयि। अन्त मा सोचेनि नौकरिया बनी रहे रानी धीर-वीर अउ धैर्य वाली तउ होबयिं करइं। बिहान मिलिहैं।

ओहरी तलाउ पइ एकठी पतुरिया आयि। रानी कइ सोन्नरता देखि कइ मोहित होइ गयि। जायि के कहेसि का बिटिया यहिं काउ करत बाटू। हे मतवा तू के हऊ? बिटिया हम तोहारि मउसी हई। तु छोटिका रहू तब तोहरे हिंया गयि रहे। तु हमयि चीन्हत नायि बाटू। हम इहीं रही था चला हमरे घरे। काउ चली मउसी राजा अबयिं नायिं आयेनि। चला बिटिया उही अइहें। ओकरे साथे जायि देखत बा कि ओकइ घर तउ पतुरिया केस जनात बा। एक कमरा मा रानी का कइ दिहीं। अब सराब पिययि वाले चलेनि। कुछु हहा हिही मचावयि वालेन आयेनि। पतुरिया कहत बा कि आजु बजार जादा तेज बा। सहर कइ कोतवाल आयेनि। येनका रानी कइ कमरा देखायि के तगड़ा भाउ किहीं। कोतवाल जायिके फाटक थपथपावइ लागेनि। रानी जानी कि हमार राजा आइ गयेनि। वइ आयि के फाटक खोलि दिहेनि। रानी पूछीं तू के हया? इहाँ कइसे आया? जब ओनकइ रुख अउर लाग तउ रानी म्यान से तरवारि निकारि के मारीं मूड़ कटिगा। खिड़की से बहिरे फेंकि दिहीं। घरे के बहिरे सड़क पइ कोतवाल कइ लासि देखिके चारिउ ओर तहलका मचिगा। पुलिस छापा मारयि पहुँचि गयि। रानी फाटक बन्द कइ लिहेसि। कपतान आयेनि फाटक खोलयि का अदेस दिहेन। बीरमती बतायेसि जब ले हमार पतिदेउ न आयि जयिहें हम फाटक बन्दयि किहे रहबइ। उही समयि मा राजा सैर करयि का निकरा रहेनि। वइ आयि के स्थान कइ निरीक्षण किहेनि। राजा स्वयं अदेस दयि दिहेन कि फाटक जिनि तोरा राति भइ पहरा कड़ा रखा। भिनसारे राजा पूछेनि तोहरे आदमी कइ नाउ काउ आ? ऊ अपने पति कइ नाउं रणजीत बतायेसि। कइयउ जने रणजीत नाउं बतायि के केंवाड़ी खोलावयि चाहेनि। रानी कुछु प्रस्न पूछि के न खोलयि। अन्त मा सबेरे कामे से छुट्टी पाये पइ हेरत रणजीत पहुँचेनि। राजा के लगे जायि के कहेनि कि महराज ई फाटक खुलि जाये। कइसे? हम रणजीत आयि गये। रणजीत जायि के कहेनि कि बीरमती फाटक खोला। तु के हया? हम रणजीत हई। कउनी राही आया? छ महीना वाली। काउ भा? कैसे भा? तमाम प्रस्न उठयि लागेनि। सब कइ सही उत्तर दयि देंयि मा राजा रणजीत सफल भयेन। राजा सब प्रस्न उत्तर सुनत रहेनि। ओनसे

बहुत परभावित भयेनि। ओनका सम्मानपूर्वक लयि आयि के अच्छी नौकरी दयि दिहेन। कुछु दिन बादि राजा एनकइ परीछा लेयि चाहेनि कि सही काम करा थेन कि नायिं। एनका कामे पइ ठीक पायेनि। भवानी के मन्दिरे मा परसन करयि गयेनि। उहाँ भवानी भविस्यबानी किहं कि यहिं देस कइ राजा सात दिन मा मरि जयिहें। भवानी से कहेनि कि कइसे बचिहें राजा। बताइं कि जउ केउ जेठ बेटवा कइ बलि चढ़ायि देइ तउ राजा बचि जयिहैं। रणजीत देबी से कहेनि कि हे माता राजा का तू मारा जिनि हम अपने लरिका कइ बलि तोहंका दयि देब तू राजा कइ रछा करा।

बीरमती के पास जायि के कहत हयेनि कि हमहूँ तुहूँ जउ कलि से रहयि का होये तउ बहुत बेटवा होइहैं। यहि बेटवा का राजा की रक्षा मा दयिद्या देबी का। रानी स्वीकार कयि लिहीं। येनके सत कइ परीक्षा करयि राजा अपुनयि चलेन। रणजीत दुइनउ परानी गदेला लयिके काली के मन्दिर मा चलेनि। राजा पीछे आयेनि ये दुइनउ जने कहेनि के हे देबी तू राजा की रक्षा करा, तोहँका हम अपने जेठ लरिका कइ बलिदान दयि दिहेन। देबी बोली नायिं। रणजीत कहेनि कि हे देबी जउ तोहार अघाउ नायिं भा बा तउ ल्या रानी कइ मूड़ काटि के चढ़ायि दिहेनि। अबउ देबी कुछु नायिं बोलीं। तब रणजीत झट से उही तरवारी से अपनउ मूड़ काटि के देबी का चढ़ायि दिहेनि। तब राजा तरवारी से अपनउ मूड़ काटयि बरे तइयार मंदिर मा खड़ा भयेनि। कहेनि कि हे देबी जउ आजु तू एतना पियासी अहू तउ ल्या हमउ मूड़ तोहरे चरने मा अरपित बा। राजा कइ बाति सुनि के देबी दउरि के तरवारि पकरि लिहीं। बोली बसि होयि चुका, बोला काउ चाहा थ्या। राजा कहेनि कि हे देबी जउ तू प्रसन्न हऊ तउ पहिले यहि तीनिउ परानी का जियायि द्या। देबी के परसाद से तीनिउ जने उठिके खड़ा भयेनि। दुसरका का वरदान देवी से ई मांगेनि कि हमार राज छोड़ि के तू चली जा। देबी चली गईं। राजा रणजीत का राजतिलक दयि दिहेनि। रणजीत राजा बनिगय। अपुना तपिस्या करइ जंगल मा चला गय।

# अहिर अउ सोनारे कइ चालाकी

एक जने रहेन अहिर। ओनके हियाँ जिलेदार मालगुजारी बरे आयेनि। अहिर राम दुयि दिन कयि मोहलति मांगेनि। कहेनि घिउ बेंचि देयी तब देई। एक मेंटा मा गोबर भरि के ओप्पर घिउ धयि के बेंचयि निकरेनि। बजार मा हलेनि। कहात हँयि ले घिउ, ले घिउ। केउ पउवा केउ सवयिया माँगयि। तउ ये कहँयि कि हम कुतुवा बेंचब। फुटूट फैर न देबयि। धीरे-धीरे एक सोनार के घरे गये। एनकयि आवाजि सुनि के सोनार राम बोलायेनि। कहेनि केतना लेब्या? ये कहेनि कि 5 रुपिया लेब अउ मेटा सहित दयि देब। सौदा सहज जनान पूरे मेटा मा कम से कम 7 सेर तउ घिउ होबयि करे। सोनार रांगन वाली रुपिया ढारि के धरे रहा। येनका पकड़ायि के घिउ अपने हाथे मा लिहेसि। अहिर राम जानेनि कि हम ठगेन। सोनार राम जानेनि कि हम ठगेनि। बिहान भे जिलेदार से रोबयि के बोलेन, ल्या रोज रोज कुड़की को डेर रह्या कचाहिनि कयि दिह्या। पाँच रुपिया थम्हायि दिहेनि। जिलेदार देखेनि रुपिया कहेनि कहो अहिर राम रोज रोज हम दुनियां पढ़ाई पथ। तू इहाँ हमयि पढ़ावयि चला बाट्या। तू रांगन कयि रुपिया लकिय हम्मयि हाथ देखावत बाट्या। अब हम तोहँका नायि छोड़ि सकित। चला तोहँका हम अब जरूर बन्द करब। अहिर राम कर्जा काढ़ि के कयिस्येउ लयि आयि के रुपिया दिहेनि। घरे आयेनि अहिरिनि के सामने रोब से बोलेनि होयिद्या बिहान हम सोनार राम का बतायी था।

येहरी सोनार राम कयि पढ़ा। जब राति की खायि बइठेनि तउ सोनारिन से कहेनि सुनातहू हो तनी लावा आजु जवन खरीदे हा, वहिमा कयि तउ तनी चीखी। सोनारिन लयि के थोर का डारि दिहीं। सोनरू बिगड़ेनि आजु मेटा भयि घिउ खरीदे तबउ नायिं भरि हीक देत बाटू तनी सैगर लावा। गयि सोनारिन हाथ जोर से धँसायि के भरि हबोका लउबयि तउ किहेस। लायि के दाली मा डारि दिहेस। तुरन्तयि बड़हर कौर गपाका मुहेंमा डारेनि। सोनार तउ उगिलि दिहेन जवन खाये रहेन भितरउ से गिरि परा। सोनारिनि दउरीं ई काउ भा? अरे इतउ दकेस गोबराहिन आवत बा। का जनी लाया तू जानी हम। जवन लाया तवन हम तोहरे आगे धरे। दिया एहर लाउ तउ जायि के जब मेटा देखेनि तउ वहिमा गोबर भरा रहा। सोनरू बहुत जोर से बिगड़ेनि। कहेनि कि होयिद्या भेनसार हम अहिरू से पूछी था कि ई काउ किहा? ओनका सरऊ का उठायि लेब चढ़ि बयिठब। अब सबेर भा। अहिरू अपने घरे से लाठी लयि के चलेनि अउ सोनरू हथउड़ी लयिके चलेनि। अहिर राम सोनारे के अउ सोनार राम अहिरे के घरे का तयियार भयेनि। चलेनि। अहिरू लाठी पटकि-पटकि कहा तँहयि कि आजु सोनरू सारे का बताउब अउ सोनरू हथउड़ी पटकि के अहिरू का समझावयि कयि बाति मनयि मन सोचत चला आवत रहेनि।

राहीमा दुइनउ जने से भेंट होयि गयि। दुइनउ जनेमा कुछु कहा सुनी भयि। फेरि गारी सुरू होयि गयिं। एतने में अहिरू आपन लाठी उठायि लिहेन। सोनरू हथउड़ी कइ बेंट सम्हारेनि तब तक चारि बँसेटा लाग भुयि धायि लिहेनि। सोनरू कहेनि कि देखा अहिर भाय। हम तोहँसे तू हमसे बढ़ि के होई। अब चला दुइनउ जने राजा का ठगी। अहिरू कहेनि कइसे? तू चला जहाँ राजा कयि चियाड़ी बा उहीं तोहँका भुइं मा बयिठायि देई। राजा से हम तगादा करब कि तोहर बाप लिहे रहीं। चियाड़ी से उछाउब

तब तू सही उत्तर दयि दिहूया। जवन मिलि जाये दुइनउ जने लयि लेयि का होये। येनका खोदि के बयिठायि के राजा के दरबार मा सोनरू गयेनि कहेनि, राजा साहेब एक अजुर रहा आपसे। हाँ कहा कवनि उजुर बा। राजा साहेब ढेर दिन होयिगा तोहरे बाप तोहरे बिआहे मा जेवर लिहे रहेन अबयि तक हमका मिला नायि कुछु। राजा साहेब करिउ गयेनि। हम कुछु कहि नायिं पाये। राजा डाटेनि कि कहो सोनार राम हमार बाप तोहँसे करजा लिहे रहा? नाहीं महराज! कहेनि लउटि के दयि देब। हम कुछु दिन आयि नायिं पाये। वयि बिमार परेनि अउ मरिगय। यहिं संकट की घड़ी मा हम तगादा उचित नायिं समझे। राजा से सोनरू इहउ कहेनि कि जउ न बेस्सास होये राजा कयि चियाड़ी जहाँ होयि हम फुरवायि सकी था। सब बड़े अचरज मा परेन अच्छा चला देखा जाये। चियाड़ी कयिसे बोला थयि? मंत्री दरबारी राजा सहित गयेनि। मंत्री अउ राजा चरचा करत कि चलेनि कि हमरे माल खजाना कुलि भरा बा। तब पिता जान कयिसे उधार लिहेन? सोनरू कहेन कि महराज माल खजाना तउ भरयि बा हम्मयि बोलाये रहेनि कि आया लयि जाया। हम आये नायिं जब अउबउ किहे तउ राजा के घटका लागि रही देखि के चला गयेन। सब चियाड़ी पइ पहुँचि गयेनि। राजा बतायेनि कि सोनार राम जउ चियाड़ी कहिदे तउ 5000 कयि हम 10000 देबयि। अउ जउ न कहे तोहका फाँसी कयि सजा दयि उठे। राजा के फूँकयि वाली जगहा पयि आयेनि। साथे मा दरबार, नगर, परिजन सब जुटि के वहि अचरज का सुनयि अउ देखयि पहुँचि गयेनि। वहिं पहुँचि के सोनरू कहयि लागेनि हे राजा! हे राजा! हमरी बाती का सुना अउ सही उत्तर द्या। अपने बेटवा के बिआहे मा हमसे गहना लिहे रहूया कि नायिं। अहिरू अन्दर से बोलत बाटेनि 'हूँ'। पइसा दिहे रहूया कि नायिं 'उहुँऊँ'। राजा 5 हजार कइ 10 हजार देयि कइ बाति कहि के वहिंसे वापिस आयेनि। सब के चला आये पइ सोनार राम जायि के विली के मोहकड़ा मा हाँयसी कयि झालि घुसेरि के काँकर पाथर डारिके खुब खूनि-खानि के बन्द कयि दिहेनि। सबेर होत राजा के हियाँ आयेनि। पहिलेनि से राजा 10 हजार रुपिया चाँदी कयि बोरा मा भराये रहेनि। घोड़ा पइ लादि के लयि आयेनि। अहिरू मोहकड़ा के आयेनि झाँखर टोवत अन्दाजत कइसेउ गोड़ से लागेनि अन्दाजि के ठेलयि। बहुत मेहनति के बादि झाँखर ठेलि के निकरि आयेनि। देहीं मा काँकर अउ झालि झिनगायि डारेनि। दउरा अहिर ओकरे मुँहे से निकरयि लाग चला सरऊ देखी तउ कहाँ ले चलाथ्या। जायि के बजार से जउने मा सोने कइ तार लाग रहयि पनही लायि के आगे जायि के बयिठा। वहि राही पइ जउने से सोनरू का जायि का रहा एक पनहीं गिरायि दिहेनि। पनहीं देखि के सोनरू बहुत प्रसन्न भयेन मुल एक्कयि होयि के नाते उठायेनि नायिं कुछु दूरि आगे गयेनि तउ देखत हँयि दुसर पनहिउ गिरी रही। एहर ओहर बहुत देखेनि केउ नायिं देखान सोचेनि घोड़ा खड़ा रहयि देई के लयि जाये केउ देखातउ त नायिंबा। अहिरू उहीं झाली मा बयिठा रहेनि। सोनरू का जात देखि लिहेनि। दउरि के घोड़ा का बगल की लयि के चलि दिहेनि। घरे लयि जायि के रुपिया गिरायि के घोड़ा मारि के खेदि आयेनि। रुपिया अपने चूल्हा के तरे गाड़ि दिहेनि। ओहरी सोनार जूता लयि के आयेनि दुसरका जूता लिहेनि अउ घोड़ा नदारत। वयि जानि गय कि अहिर राम आयि गय। ओनकी खोज मा चरि परेनि। ओहरी अहिरू कहेनि कि खेतारी के इनारा में पाल बा हम उही मा बइठब खाना देवा किहिउ पानी के बहाने। सोनार राम का पता नायिं लाग मुल एतना तउ अन्जादि लिहेनि कि अहिरिन खेतारी मा पानी भरयि काहें क जाथयि जबकि दुवारे इनारा बा। खोज करयि बरे चलेनि। एकदिन दुयि मोटि रोटी अउ चकवड़े कइ साग लयि के सोनरू गयेनि। इनारा मा लटकायि दिहेनि। अहिरू देखतयि भरे मा रिसिहा परेनि कहेनि कि हराम: जादउ दस हजार रुपिया चूल्हा के तरे गाड़ि दिहे। इहयि मोटि रोटी अउ चकवड़े कयि सागयि हमरे बरे बा। लयिजा ना खावयि। सोनरू कइ मतलब पूरा होयिगा। ऊ अहिरू के घरे छिपा रहेनि देखेनि कि अहिरिनि खाब राजयि के लयिके गयि। तब ये जल्दी से रुपिया चूल्हा के तरे से लयिके चलि दिहेनि।

जब अहिरिनि बल्टी लटकाईं तब अहिरू कहेनि केस हरामजादउ अबहीं की निक खाना लाऊ? अहिरिनि कहेसि कि हमतउ अबहीं की आवत बाटी। अहिरू चाल समझि गयेनि। कहेनि रसरी तनी पकरा आयि गा सोनार सार। जायि के देखेनि तउ सोनरू कुलि लयि के फरार रहयिं। अहिरू कहेनि कि चाउर भेंयि के चला हमहूँ पहुँचे। जब तक सोनरू के घरे की ओर चलेनि तब तक सोनरू घरे धयि के पिछउरी ओढ़ि के ओलरि गय। अपनी औरति से कहेनि कि चाउर भेंयि के हमरे अगल बगल छींटि द्या अउ पसावन गिरायि द्या। माछी भिनकायि लागयिं। तु कारन कयि के रोवा। बतायि दिहू कि हयियवा कइ बेरामी पकड़ि लिहेसि मरि गयेनि। अहिरू पहुँचेनि तउ मरा मिलेनि। अहिरू कहेनि कि हमार साथी रहेनि अब एनका परवाह कयि देई तबयि जायी। सोनारिन कहीं तोहका अपने लरिकन कयि डरि नायिबा। लरिका बच्चा घरे हयेनि कि यहिं। हमँयि जायि का होये निकयि रहे साथ हयेनि उहूँ दुनउ जने साथे रहबयि। अउर का होये। बहिरे निकारयि लागेनि मोहरा मा गोड़ फयिलायि दिहेनि। अहिरू कहेनि टेंगारा लावा तउ गोड़वा काटि देयी तब सोनरू धीरे से बटोरि लिहेनि। बहिरे लायि के सोनरू कयि दुइनउ गोड़ अहिरू बान्हेनि। जवनि केतारि खुटिही रही उही मकी लयि के चलेनि। दिन भयि घेर्रायेनि। सांझ की एकठी बरगदे के पेड़े मा ओलटा टांगि दिहेनि। मोह झँउसिउ दिहेनि। खरबारि के मुँहउ झँउसि दिहेन। मुल तबउ सोनरू नायिं बोलेनि कहेनि कि इही पेड़े पइ चढ़ि के राति कि बयिठी।

राति की पेड़े के तरे चोर बँटवारा करयिं आयेनि। एक चोर कहत बा कि हे बरगदवा बाबा तोहँका 5 अजुरी देबयि जउ खूब मिलि जाये। गयेनि खूब धन पायेनि। लउटि के उही पेड़े के तरे बाँटयि आयेनि। जे मनि रहयिं कहयि लागेनि कि भयिया माने रहे 5 अजुरी दयिद्या। एकठी कहेसि कि हे अरगदवा बरगदवा बीर बाबा। चोप मारि के बाँटा अउ चला। तब तक अहिरा ओप्पर से पेड़ धयि के हिलायेस। जब ओप्पर ताकेनि तउ सोनरू कइ झँउसा मोह देखि परा। सब चेल्लायि के कुलि छोड़ि छाड़ि के भागेनि। का थोर कयि धन थोरउ लूटे रहेनि। सोना चानी रुपिया कुलि मिलाये पचासन हजार कयि रही। अहिरू कहेनि कि सोनरू भाय तू झूला हम तउ सैगर पाये बाटी। अब ओका संतोख कयि लेब। तब जायि के सोनरू बोलेन हे भइया हमका छोड़िद्या। इहउ उहउ दुइनउ बाँटि लेयी। कुलि ढोयि के लयि गय। दुइनउ मिलायि के बाँटि लिहेनि। दुइनउ जने अपने अपने घरे चला गयेनि।

# बरधा साढ़े तीनि कयि

एक जने रहेन अपने बाप कयि अकेल बेटवा। अपने बाप से व्यापार करयि के बरे रुपिया मांगेनि। बाप 30 रुपिया दिहेन कहेन जा बेटवा समझि बूझि के काम किह्या। जुग जबाना बहुत खराब बा। वयि जायि के 25 रुपिया कयि बरधा खरीदि लिहेनि। बरधा बेंचयि चलेनि। राही मा ओनका ठगहार मिलेनि। ठगहारे पूछेनि का भयिया बरधा बिके? हाँ भयिया बेंचबयि। अच्छा यहि बरधा कयि काउ दाम किहे बाट्या? कहेनि कि यहि बरधा कयि 25 रुपिया मा खरीदे बाटी जवन देत हो दयिद्या। वइ लोगे झट से 5 रुपिया दाम लगायि के कहेनि कि दयिद्या। फैसला नायिं होयि पाये रहा कि ठगहारन कयि बाप आयि गयेन। कहेनि केस भयिया तोहरे सब कयि सटत-पटत नायिंबा। अरे समझि-बूझि के लयि लेत जा। येहिमा काउबा। येतने नवा बैपारी रहबयि किहेनि कहेनि दादा तुही फैसला कयिद्या तू तिसरियत हया। तु पुरनियाँ हया जवन कहब्या हम मानि लेब। अच्छा जउ तू हमरेनि ओप्पर छोड़ि देत बाट्या तउ एक बाति हम कहबयि 'न बरधा 5 कयि न पचीस कयि, बरधा साढ़े तीनि कयि। हम न तोहार एस कहब न ओनकयि।' अब यहिमा काउ कहयिनि का रहा। पूरा अधिकार दयिनि दिहे रहेनि। बरधा कयि पगही पकरायि दिहेनि। वयि सभे तीनि रुपिया दयि के अठन्नी उधारउ कयि दिहेनि। अब जानि गय कि व्यापार मा सत्य अउ सील ताक पइ चाही।

घरे आयि के दादा से कहेनि कि दादा इतउ गड़बड़ायिगा। अबकी सौ रुपिया लिहेनि। कहेनि कि दादा रुपिया बुड़ी बा ओकर निकारयि का परे। बजारे जायि के एक घोड़ी खरीदेनि। घरे से दुयि मोहर लिहेनि गयेनि तगादा। जब पहुँचतहँयि देखेनि जवन बुढ़ऊ निरनय दिहे रहेनि दुआरे रहेनि। कहेनि कि बयिठा ये बच्चा तोहार पयिसा तउ देवयि करिहें पयिा मांगे के बादि बुढ़ऊ उत्तर दिहेनि। जउ तोहँयि जल्दी होयि तउ घोड़ी इहीं रहयि द्या जा इही जंगल मा बाटेनि मिलि आवा। नाहीं दादा हम ई घोड़ी छोड़ि के कहूँ जायिति नायिं। ई जब हगा थयि तउ मोहर गिरा थयि। येतने मा घोड़ी हगयि लागि। तउ एक बल्टी पानी मंगायि के लीद उही मा डारि दिहेनि। धीरे से आपनि मोहरउ गिरायि दिहेनि। बल्टी मा लीदि घोरि के दुइनउ मोहरि वहिमा से निकारि के देखायेन। कहेन कि आजु थयि गयि बा नाहीं तउ 15 मोहरि तक गिराथइ। बुढ़ऊ दादा मुहर देखि के मनमा सोचयि लागेनि कि ई घोड़ी जउ मिलि जात तउ नीक रहा। कहेनि बच्चा का इहिउ का बेंचब्या। हाँ दादा हमार काम काउ आ। दाम केतना लेब्या बच्चा। अब केउ खरीदे तब दाम लागे।

अच्छा दादा अब घोड़ी कुछु बेर न हगे हम मिला आई। गयेनि मिलेनि अउ कहेनि पइसा द्या। राजू कवनि बाति किह्या पइसा कयि। चला अराम करा खापिया तव पइसा ल्या अउ जा। आयेनि पइसा लयि के जउ वयि जायि लागेनि बुढ़वा अपने लरिकन से कहेसि कि चाहे जवन दाम लागयि ई घोड़ी खरीदि ल्या। ई घोड़ी तउ मोहरि हगा थयि। जउ थकी रही तउ दुयि नाहं तउ दस-पन्दरह तक हगा थयि। सब लरिके घोड़ी लेयि कयि बाति किहेनि। ये कहेनि भयिया तू सभे घोड़ी ना लेब्या अउ लेबउ करब्या तउ हम्मय घाटयि आये। नाहीं भयिया तू दाम कहा। हम येका जरूर खरिदबयि। अच्छा घोड़ी कयि दाम

बतावत बाटी लेकिन एतना तउ जानिन लिह्या कि बरधा ई ना होये। हाँ हाँ जानत हई घोड़ी आ ऐसन घोड़ी जवनि 10. 15 हजार कयि मोहरयि हगा थयि। अन्त मा व्योपारी घोड़ी कयि दाम 15 हजार कहिके आगे बढ़ेनि। लूटिपाटि के वइ सभे धरेनि रहेनि पइसा दयि के घोड़ी लयि लिहेनि। दुयि चारि दिन घोड़ी का खियायेनि पियायेनि। येहरी येइ घरे आयि के दुयि ठे चउगड़ा खरीदेनि। एक पिंजड़ा घरे धरे रहेनि एकवा साथे खेते मा लिहे रहँयि। घरे मँहतारी से कहे रहेनि कि 7 जने कयि हम खेते मा से आउब चउगड़ा का पूछब कि खायि बनवयि का कहेस कि नायिं। तु कहि दिहू कि हाँ कहेउ तउ। ओहर घोड़ी मोहर नायि दिहेस तउ वयि सभे कहेन चला सारे का लूटि लेयी। सातउ जने घोड़ी लयिके आयेनि येनके हियाँ। दुआरे पूछेनि कि रोजिगारी कहाँ गवा। ओनकयि महतारी कहेनि पानी पिया बयिठा खेते गा हयेनि, अब्बै आयि जयिहैं। वयि सब कहेनि कि पानी न पियब खेतवा बतावा कहाँ बा। जहाँ हर नाधे रहयिं ये बतायि दिहीं कि जा ओहर भेंट होये।

अब सातउ जने ओनके लगे जायि के पहुँचे। देखतयि भरे मा बिगड़ेनि कहेन कि तू बड़ा ठगहार हया। काहें झूठि-मूठि का कुलि बताया किहिउ के मुहें से कुछु किहिउ के कुछु निकरयि लाग। ये बेचारू हक्का बक्का कहेनि कि भयिया आपनि रुपिययि लेब्या कि अउर कुछु। यहिमा जउ झनझटि कउनो होयि तब ना। इहयि चारि कूड़ बा जोति लेई तउ चली। चला घरे खा पिया रुपिया ल्या जा अपने घरे। तब तक पिंजड़ा मा से चउगड़ा खोलि दिहेन कहेन कि जा माई से कहि दिह्या कि सात ये अउ हम तू सब कयि जेवना तयियार किहे रहँयि। चउगड़ा जंगल की राह लिहेस। घरे आयेन कहेनि कि का माई चउगड़ा खायि का बनवयि का कहेस हा? हाँ भयिया कहेसि हा। बहुत पियास रहा। भुखानउ रहा। दूध पियेस अब सोवत बा। चला तुहूँ सभे खायि ल्या। गयेन खायेन पियेन। सातउ जने सोचेन कहो राजू चउगोड़वयि मा फायदा बा। चाहे घोड़ी कयि दाम मिलयि चाहे नायिं चउगड़ा चाहे जेतने मा मिलयि खरीदि ल्या। जउ साथे ई रहे हमरे सभे कहू अटपटे परयि का होये ई आयि के घरे सूचना तउ दयि देई। एक जने कहेनि कि भयिया चउगड़ा कयि दाम लयि ल्या अउ दयिद्या। नाहीं भयिया तोहँका सबका न देबयि बड़ा बवाल आवयि लागा थइ। तोहँका सबका दुयि दांयि दयि के भोगा अही। हम तोहँयि सब का देब ना। वे सभे कहेन जवन माँगा तवन ल्या मुल चउगड़ा दइ द्या जरूर, घोड़ी हम सभे लेत जाब। पहिले ओकयि दाम तउ सुना ऊ घोड़ी अउ बरधा थोरउ आ। यहि पयि 25 हजार से कम न लागे। उधार एक पयिसा न होये। एक जने गय रुपिया लायि के दिहेनि अउ चउगड़ा लयिके चलेनि। जब गाँउ के नेकचानेन तउ कहेनि हा, ऊ अँगुरी से देखायि के कहेनि कि हमार घर आ। जा माई से कहि आवा कि खाब बनये रहयिं हम सभे अबहँयि आवा थई। ऐसन कहिके पिंजड़ा खोलि दिहेन। चउगड़ा जंगल की राह लिहेस। जब घरे आयेनि तउ माई से पूछेनि कि माई चउगड़वा खयि का बनवयि कयि सनेस कहे रहा कि नायिं। दहिजरू तोहरे सब का फेरि ठगेसि का? अब सातउ जने खूब गुस्सा परेनि कहेनि कि चला हाथ गोड़ा बान्हिके नदिया मा फेंकि देयी सारे का। घरे मा जवन कुछु धरे बा लयि लेयी। अब तुरन्तयि ओनके घरे आयि के सातउ जने पहुँचेनि। पूछेन पछोरेनि नायि तुरन्तयि हाथ गोड़ बान्हि के बोरा मा भरि के मोह बन्द कयि दिहेनि। लयि चला नदी मा बहायि देयी सारे का। लयि के चलेनि। जंगल मा एक जगहाँ आम पाक रहा। बोरा धयि के खायि लागेनि। खात खात कुछु दूरि के चला गयेनि। एहर बोरा मा ये बेचारू कुलबुलात रहँयि। उही एक जने ऊँट चरावत रहँयि, आयि के देखेनि कहेनि का भयिया तोहँका ये सभे काहे बान्हे बाटेनि। बोरा के अन्दर से कहेन कि भयिया हमार दुयि बियाह भा बा ये सभे फेरि हमार बिआह करयि चाहा थेन। हमरे इनकारे पइ देखा बान्हि के लयि जात बाटेन। उँटहरा कहेनि कि हे भयिया हमार बिआह नायि भा बा, करायिद्या। तब ये कहेन कि काउ कहयि का बा हम्मयि यहि मा से निकारा अपुना आयिजा। वइ उँअहरा राम बोरा छोरि के ओनका निकारि दिहेनि अपुना का वहि मा

वही प्रकार से बन्हायि के बइठि गा। आम खायि के सातउ आयेनि। बोरा बान्हा बन्हान धरा रहयि लयि के चलि परेनि। लयि जायि के नदी मा बहायि दिहेनि। ओहरी ऊँट लयि के वयि दुआरे पहुँचेनि। जब सातउ जने बहायि के आयेनि तउ एनका देखि के कहेनि कि हो देखा भयिया इतो सरवा बइठा होक्का पियतबा। ऊ कहत बा का भयिया थोर का गहिरे बहाये होत्या तउ हाथी पायिति इतउ तिरवयि बहाया इहयि ऊँट पाये हइ। बीच नदी मा मारे हाथी घोड़ा कइ बटेसर लाग बा। कहेनि कि भाय फेर एकठी बोरा लेति आवा अबकी बीच मा बहाइ देत्या तउ हाथी पायिति। नाहीं भाय अब तू हमरे सातउ जने का बहावा। हमरेउ सभे एक एक ठे पायि जायिति। अन्त मा ये सात बोरा लयिके सबका लियायि के नदी पइ गयेनि। एक जने का भरि के बहायेनि तउ कुछु बेर लखेनि नायि आयेनि। अरे ओनके मने नाइ भावा ता वयि बेरावत बाटेनि। एऊ सभे अकुतायेनि। सबका बोरा मा भरि के बहायि दिहेनि। तब स्वतंत्र होयि गयेनि। कहेनि जोर से जा अब तगादा करयि न अउब्या।

# पण्डित की पढ़ाई

एक जने रहेन पण्डित। ओ पढ़े लिखे नाइं रहेन। पण्डिताइनि पढ़े लिखे रहीं। पण्डित का बाति बाति मा नीचा खाइ का परिजाइ। जबइ होइ तबइ अपने पढ़े के गुमान मा पण्डित का हइहाइ लेंइ। ओनका मूरुख हया कइ संग्या देइं। पण्डित का अब अपने न पढ़े पइ बड़ा दुख भा। एक दिन सोचेन कि अबइ तउ समयि बा हम जाइ के बनारस पढ़ि आई। निहचय कइके घरे से सीधा पानी लइ के चलरि परेनि। तीन दिन चलि के कासी जी के पावन धाम मा जाइ पहुँचेनि। एनकइ गठरी देखि के एक ररा पीछे पीछे चलि परा। पूछेसि कहाँ जाब्या वइ पढ़इ कइ काम बतायेनि। कहेनि भइया पढ़इ जात हई। नहाइ धोइ पूजा पाठ कइके तब कउनो पाठसाला खोजी। ऊ बतायेस पाठसाला तू रहइ द्या खोजइ का हम तोहँका बहुत जल्दी पढ़ाइ देबइ। पहिले जवन सीधा लिहे बाट्या एका हम्मइ संकल्पि द्या तउ हम तोहँका पढ़ाइ देई। पण्डित के जल्दी से विद्वान बनइ कइ प्रबल इच्छा रहबइ कीनि। पढ़ावइ सुरू किहेस। चारिउ वेद छवउ सास्त्र अठरहउ पुरान पास हई।

जवन राम किहेन उहइ भा, जवन राम करिहइं उहइ होये। येहि मंत्र का पण्डित कण्ठस्थ किहेन। जब पण्डित कउनो ओरी निकर्‌या इहइ कहत की चलूया। आधी धोती पहिर्‌या आधी ओढ़े रह्‌या। तखता पइ सोया, कमरी बिछाया। चन्दन माथे मा लगाया। अब पण्डित बेचारू आपन सीधा पानी जवन कुछु रहा कुलि संकल्पि के पण्डित बनि गयेनि।

अब लउटि के घरे आयेनि। दुवारे आवत भरे मा मंत्र जप करइ वाला सुर घरे तक पहुँचा। पण्डिताइन दउरीं कहीं का हो पण्डित केस चला आया? हाँ पण्डितानी, चारिउ वेद छवउ सास्त्र, अठरहउ पुरान पास हई, जवन राम किहेन उहइ भा अर जवन करिहैं उहइ होये। पण्डित कइ भेस अउ मंत्र पाठ आसन कुलि देखि के पण्डिताइनिउ समझि गई कि जना पण्डित कुरइ पढ़ि लिहेनि। येनके पढ़ाई कइ चरर्चा घरे से गाउँ, गाउँ से जवार मा, जवार से दूरि दूरि ले फइलि गइ।

कासी कइ राजा ओनके येस गाथा का सुनेनि। ओनका अपने इहाँ रखइ मा वइ आपन सउभागि समझइ लागेनि। दूत पठइ के ससम्मान अपने इहाँ दरबार मा बोलायेनि। पण्डित दरबार मा परवेस करइ का तइयार भयेनि। ई कहत की दरबार मा परबेस किहेन 'चारिउ वेद छवउ सास्त्र अउ अठरहउ पुरान पास किहे हई, जवन राम किहेन उहइ भा, जवन राम करिहें उहइ होये।' दरबारी खड़ा होइ गयेनि, पण्डित अपने आसन पइ बइठेनि। राजा विनती किहेन कि हे पण्डित आपका हम अपने दरबार मा रखइ चाही था। का आप एका स्वीकार होई ई प्रार्थना? उपरोक्त मंत्र से पण्डित जी स्वीकार किहेन। राजा अपने पण्डितन में बड़का पण्डित एनकइ नाउँ राखेन। सब पण्डितन का 100 मुहर मिलइ एनका 500 मुहर महीना में स्वीकार कइ के राजा प्रसन्न हयेन। काहे न होंइ जेकरे सभा मा अब तक खाली दुइययि वेद सास्त्र कइ पण्डित रहेन अब चारिउ वेद छ सास्त्र अठारह पुरान कइ कढ़ा विद्वान आइ गयेन। जवन चारि पण्डित पहिले से रहेन ओनका सबका बहुत खराब लाग। अब ये चारिउ जने ओनकइ चुगुली करइ का सोचेनि। चारिउ पण्डित आयेनि सबेरे नहाइ धोइ पूजा पाठ करइ मा जुटि गय। बड़ा पण्डित गमछा

से कान अउ नाक-मोह बन्द कइके ध्यानमग्न रहेन। बादि में राज अउर पण्डितन से ओनकी पूजा पद्धति पइ बाति किहेन। पण्डिते बतायेनि महराज आप कइ राखा बड़का पण्डित हयेन ओनकइ बाति हम सब काउ बताई? नाहीं बतावा तोहरे सभे हमार पुरान पण्डित हया। ये सब कहेन कि कासी नरेस गन्धात रहा थेन। हम ओनसे कुछ बोलइ नाइ चाहिति। न ओनकइ सुनइ चाहिति। एतना सुनिके राजा बहुत नराज होइगा।

महीना कइ अन्तिम दिन रहा। राजा 500 मुहर की जगहा नाक कान काटइ कइ अदेस दयि दिहेन। पण्डित का चेक मिला। ओका लइके भुनावइ जात रहेन। चारिउ पण्डित सम्मान देइ बदे आयेनि अउ कहेन महराज आप कस्ट जिनि करइं। हम सब आप कइ चेक भंजायि देबइ।

चारिउ पण्डित लइके गयेनि तउ कमरा बन्द कइ लीन गा। जल्लाद बोलावा गयेन। चारिउ पण्डित कइ नाक अउ कान काटि उठा। राजा टहरइ निकरेनि तउ देखत बाटेन कि चारिउ पण्डित नाइ हयेन। पूछेन कि पण्डित कहाँ गय तउ पता लाग कि वइ सब चेक लइके गय। राजा जानि गय कि अब नाक कान कटिगा होये तउ मोह देखावइ अब ना अइहैं। राजा का बड़ा कस्ट भा। अब बड़का पण्डित अकेल बचेनि।

राजा कइ ससुर जी बहुत बिमार परेन। ओनकइ स्थिति बड़ी असहाय रही। चारिउ ओर बैदकी दवा से हारि गयेनि। झार-फूँकउ कइके देखेनि। एक न काम किहेस। राजा के दमाद का सूचना भेजि गयी। वइ पण्डित का बोलावइ का पठयेनि। पण्डित खायि पी के सोवत रहेन। कइसे के जगावइ। विचार कइ के चारि जने तख्ता सहित पण्डित का उठायि के लयि गयेनि। जब राजा के ससुर के इहां चारिउ मनई चलेनि तब पण्डित राहेमि मा जागि गयेनि। वहिं जायि के चारिउ जने बगल खड़ा भय। राजा कइ ससुर बगल बीमार परा रहेन। पण्डित जानेनि कि चारिउ मसे एक ढोंग कइके परा बा कउनो उठि के बीमार राजा के ओप्पर चढि बइठेन लागेनि रगरि रगरि मारइ। तब लयि जायि के झाली मा फेंकि दिहेनि। वहिं से फेरि गड़ही मा लइके कूदि परेनि तब राजा का छोड़ि के पण्डित निकरेनि। तब पता लाग कि राजा कइ बिमार ससुर हयेन। तब पण्डित ओनका पानी से बहिरे निकरवायेन। कहेनि कि अब एनका गरमी चाही, रजाई ओढ़ाई गइ। राजा दुइ घन्टा बादि उठि के बइठि गयेनि। अउ ठीक होइ लागेनि। दुयि दिन के बादि ठीक होइ गयेन। दुउनउ राजा बहुत प्रसन्न भयेनि।

अन्त मा राजा प्रसन्न होइके पण्डित का आपन आधा राजपाट दयि के राजा बनायि दिहेनि। पण्डिताइन मंगाई गईं। पूँछी कि काउ किह्या है। पण्डित बतायेनि कि पण्डिताइन चारिउ वेद छवउ सास्त्र अठरहउ पुरान पास किही हई। जवन राम किहेन उहइ भा, जवन राम करिहैं उहइ होये।

राजा राज करइ लागेनि। परजा सुख करइ लागेनि।

# चारि बाति

एक जने रहेनि राजा। एक जनीं रहीं रानी। ओनके एक्कउ बिटिया नायि रहीं। जब राजा बुढ़ायि गयेनि तउ राजगद्दी जेठ बेटवा का दयि दिहेनि। दुइनउ छोट बेटवा का एक एक लाख रुपिया दयि के कवनउ व्योपार करइ का कहेनि। मझिलू तउ कपड़ा कयि व्योपार करयि लागेनि। छोटका लरिका कहेसि कि हमसे व्योपार न होये। हम सहर जायिके नौकरी करब। ओनकयि रानी कहीं एक भाय राजा, एक भाय कपड़ा काय थोक व्योपारी अउ तुहू घरेनि रहिके कउनौ धन्धा करा। तइयार होयिके सहर देखयि चलि परेनि। रानी के हमल रहिगा रहा। अन्त मा रानी जायि कयि अनुमति दयि दिहीं। पूड़ी-मिठाई, रुपिया-पइसा, सोने कयि हार अउ कीमती कपड़ा पहिरि के लयि के चलि परेनि। कुछु दूरि गये राही मा एक बाभन मिला। बाभन पूछेनि कि कहाँ जाब्या? राजा कहेनि कि हम परदेस देखयि जात हई। आगे बढ़ेनि। बाभन से कहत अहँये कि कुछु सुनावा जउने से राहि कटयि। देखा भाई हम बाति कही था जरूर मुल हम अपनी एक बाती कयि सौ रुपिया लेई थयि। हमरी बातिन मा जीवन जिययि कयि राहि मिले। छोटकू राजा कहेन ठीक बा तू बाति कहा, हम एक वाती कयि 100 रुपिया देबयि। पण्डित कहेनि, 'एक्की एक्का चलयि न बाट' मतलब कि अकेल राहि नायि चलयि का चाही। एक बाति कयि 100 रुपिया लयि लिहेनि। कुछु दूरि गय फेरि कहेनि कि अउर बतावा? फेरि कहेनि बिन झारे बयिठी न खाट। फेरि कुछु अउर आगे गये तउ पण्डित फेरि कहेनि कि 'जागत नर मूसयि न कोय, जागत रहे पयि चोर मूसि नायि सकतेन।' आगे वाली बाति चउथी कहेनि कि 'रिसि मारे पाछे फल होत।' अब चारि बाति कइ चारि सौ लयि के पण्डित चला गयेनि। ये नोट कयि लिहेनि :

एक्की-एक्का चलयि न बाट, बिन झारे बइठयि न खाट।
जागत नर मूसयि ना कोय, रिसि मारे पीछे फल होय।।

अब पहिलि बाति एक्की एक्का चलयि न बाटि, एनके साथे लागू होत बा। एनकयि चलत गोड़ रुकि गय। वहिं अहथान पयि एकठी खिंचुही देखि परी बसि वोका पकरि के अगोंछा मा एक ओरी बान्हि लिहेनि। अउ चरि परेनि। कुछु दूरि गयेनि तउ पियासि लागि। एकठी छाँह वाला बरगदे कयि पेड़ मिला। ओकरे लगे पक्का इनारा रहा। उहाँ रुकि के हाथ गोड़ धोयि के मिठाई खायेनि पानी पियेनि अउ खिंचुही का छोरि के मिठाई खियायेनि अउ पानी पियायेनि। आपनि थकानि दूरि करयि बरे तनी ओलरि गयेनि। खिंचुही मूड़ी के बगल धरेनि। उही बरगदे पयि एक कउवा अउ एक साँप रहत रहेनि। दुइनउ मा दोस्ती रही। कउवा बहुत भुखान रहा। ऊ जोर से काउँ काउँ किहेसि। सँपऊ निकरि के हालि-चालि पूछेनि। कउवा बतायेस कि भुखान हई। साँप कहेस कि हमार सिकार तउ विषमय होयि जाये। कयिसे खाब्या? कउवा कहेस कि तु इही सोवत मनई का काटिल्या। मरि जायि अउ हम एकयि आँखि काढ़ि के खायि लेई अघायि जाब। साँप अपने मित्र कयि भूखि मिटावइ बरे तइयार होइगा। जायि के दहिने गोड़े मा काटि लिहेस अउ काटि के फेरि पेड़े पयि चलागा। राजा कि देही मा जहर फइलिगा। उ बेहोस होइगा। कउवा जायि के पहिले गोड़े पे बयिठा, फेरि ठेहुने पे गा। उहाँ से माथे पे गा। जइसे एहर वोहर देखयि लाग।

एतने मा खेचुही आपन मूड़ी काढ़ि के कउवा राम कयि गोड़ पकड़ि लिहेस। कउवा कहेस कि अरे ई काउ किह्या? खिंचुही टांगि पकड़ि के बोली जइसे साँप तोहार मीत आ उही ढंग से राजा हमार। बिना राजा का जियायि दिहे हम छोड़ब ना। जेतनी बाति तू करत रह्या हम कुलि सुनत रहे। जल्दी राजा का जियावा नाहीं तउ हम तोहँका खायि जाब। कउवा आपन परान संकटे मा जानि के काउँ काउँ किहेनि। साँप आयि कउवा के प्रान का बचावइ के खातिर राजा के गोड़े से आपन जहर चूसि लिहेस। राजा के होसि आयि गयि। जहर खींचे पयि साँपे के राजा कयि कुछु जहर आयिगा। जउने से परिश्रान्त होयिके पेड़े की डारी पयि ओलरिगा। अब खेंचुही कउवा कयि टांगि काटि के छोड़ि दिहेस। राजा उठिके आँखि मीजि के कहेन कि सोयि गये बेरउ होइ गई।

खेंचुही राजा का उठा देखिके कहेस कि हे राजा तू सोवत नायिं रह्या। देखा डारी पइ साँप परा बा। एक टांगी कयि कउवा वह डारी पयि बइठा बा। पूरी घटना खेंचुही राजा से कहि सुनायेस। राजा सुनि के अउर कउवा कीरा का अउ कउवा की टांगी का देखि के बिस्सास मानेनि। उही समयि पण्डित कयि बाति इयादि भयि 'एक्की एक्का चलयि न बाट'। राजा लाखन कयि जिउ बचायि लिहेनि एक बाति खरीदि के। अब उठि के पानी भरेनि हाथ मोह धोयि के मिठाई खायि के पानी पियेनि। खिचुहिउ का मिठाई खियायेनि अउ पानी पियायेनि।

अब पंडित कयि बाति गुनत की राजा खिंचुही साथे लयिके चलि परेनि। जात जात एक दरियाउ परी खिंचुही का उही मा छोड़ि दिहेनि। ऊ अगाध पानी कयि भण्डार पायि के परसन्न भयि अउ उही मा चली गयि। अपुना आगे का बढ़ेनि। आगे स्टेसन परा। उहाँ एक बेस्या अपनी दुयि लड़की के साथे रहगीरन का ठगत रह। जेका मालदार देखयि ओका अनेकन परकार से लोभायि के प्रेमपास मा बान्हि के लयि जायि, कमरा मा पलँग पयि बइठावयि। पलँग कच्चे सूते से बिनी रहयि। राहगीर गिरि जायि नीचे गहिर घर। घरे मा भाला, बरछी हथियार धरा रहयि। मरि गये पयि कुलि धन दउलति माल खजाना लयि लेयि। ई पूरी घटना राजा के साथ घटयि लागि मुल राजा पण्डित की बाति पयि आयि गय कि 'बिन झारे बइठै न खाट'। जइसे झारेनि ओनकयि पूरा रहस्य खुलिगा। राजा उहाँ से फूटि लिहेन। गाड़िउ आयि के चली गइ। नायि पायेनि। अब राजा ठगेन से बचयि खातिर गाउँ पकरि लिहेनि।

गाउँ मा गय एकठी अहिरे के दुवारे जेकरे घरे मा एक बुढ़वा, एक बुढ़िया अउ एक बेटवा रहेन। राजा जवन वहिं गाउँ कयि रहेनि ओनकयि एक बिटिया बहुत बिमार चलति रही। ओकरे पेटे मा नागिनि रही। उ भित्तर काटयि अउ दरद बढ़ावयि। राजा बहुत परेसान भयेनि। ओझा बैद देखेनि मुल ठीक न भयि। एक नाऊ कहेस कि हे राजा तू लड़की के सोवयि के समयि मा पहरा कयिद्या। राजा चारिउ ओर डुग्गी लगवायि दिहेन कि जे मर्ज कयि मरम बतायि दे ओका आधा राजा अउ लड़की बिआहि देब। अब पहरू जायि लागेनि। सब पहरा देयिं जब आधी राति मा नीनि तेजि लागयि तउ बिछायि के सोयि जायिं। सोये पयि नेकुरा से नागिनि निकरयि जे पहरू सोवा रहयि ओका काटि लेयि उहउ मरि जायि। नागिनि फेरि नेकुरा मा हलि के पेटे मा चली जायि। इही तना ते पहरू आवयिं। राति मा नागिनि काटयि। सबेरे मरा रहँयि।

एक दिन एकठी अहिरे के लरिका कयि पारी रही। ओकयि गवन आयि रहा। जब राजा दुवार पहुँचत बाटेनि तउ देखत बाटेंनि कि बुढ़िया जाँत ओयिरे बा। खन रोवयि लागथयि खन हँसयि लागा थयि। राजा खड़ा देखत हयेनि। बोलायि के पूछेनि। उ उत्तर दिहेसि हे महराज जउ खिवाल आवा थयि गवने कयि तउ हँसी थयि, पहरा कयि खियाल होथयि तउ रोई थयि। ओकयि दरदि भरी बाति सुनि का यहिं राजा का बहुत कष्ट भा। कहेनि हे बुढ़िया माई! हम तोहरे बेटवा के बदले जाब। तू रोवा जिनि। कुछु बनवा खायि जायि। बुढ़िया पूड़ी बनयि के येनका खियायेसि। अराम करयि मड़हा मा खटिया परि ओलरेनि। जब राजा कयि सिपाही बोलावयिं आयेनि तउ राजा उठि के गय। हाथे मा तरवारि लिहे पहरा

पयि गय। ताला लागि गा। आधी राति की जब जोर कयि नीनि लागि तब पंडित कयि बाति यादि आयि। 'जागत नर मूसयि ना कोय।' अपनी नीने का भगायि के पहरा देयि लागेनि। नागिनि निकरि के फण्ड फुलायि के ताकयि लागि। तुरतयि ये तरवारि से मारेनि, नागिनि कटि गयि। ओका खींचि के तीन फाल काटि के गँउखा मा धयि दिहेन। तब जायि के सोयि गयेनि। सबेर भा। लड़की जागि आजु अपनयि उठी अउ चलि परी। 'आजु केस अपुनयि चली आवत बाटू?' 'आजु हमयिं अराम बा' राजकुमारी कहेस। तबले पँहरू जागि गय। सिपाही कहेनि कि यहि अहिरे के लरिका कयि भागि बा। अब ई भारी मनई होयि जाये। राजा बाति सुनि के डाँटेनि कि काउ बतियात बाटूया। चुप रहा नाहीं तउ तरुवारी से बाति होये।

सिपाही लड़की का लयि गे गये अण्टा पयि। अपने बूते आजु राजकुमारी कयि जाब देखि के सब प्रसन्न भयेनि। लड़की भोजन मांगेसि। खीर पकवान सब आयि लड़की चाव से खायेसि। अब येनका राजा बोलायेनि। पूछेनि तू कइसे जियत बच्चा? हे राजा साहेब हमारि कजा हमका बचयेस नाहीं तउ हमहूँ मरि गा होयिति। जे सोवत रहा मरि जात रहा हम नायिं सोये नायिं मरे। राजा साहब आपकी बिटिया के पेटे मा नागिनि रहत रही। पहरेदार के सोये पयि निकरि के काटि लेयि अउ मरि जायिं। जब निकरी हम ओका तीनि फाल काटि के गँउखा मा धरे हई। राजा मँगायि के देखेनि। इहउ बतायेनि कि राजकुमारी के सीने पइ एक बून खून साँप कयि गिरि गा रहा। राजा स्पष्ट देखेनि। बाति सही रही।

राजा कहेनि कि हे यादव चला अपने मकान पयि। जब लड़की ठीक होयि जाये तब हम सादी करब औ आधा राज-पाट देव। राजा राजभवन से रासन अउ पूरी खीर दिहेनि। जल्दी से राजकुमारी ठीक होयि गयि। तब राजा कचेहरी लगायि के कहेनि कि बोलावा आधा राजपाट दयि के बिआह कयि जाये। वहिं समय राजा सोवत रहँयि। अहिरिनियाँ अपने बेटवा का पठवयि लागि। पतोह कहेसि कि पहरा दिहेस आन कयि बेटवा पठवति बाटू अपने कयि। हम गवाही देबयि। बूढ़ा डेरानी बहुत समझाईं मुल ऊ मानेसि नायिं। तव जगायि के राजा का उहाँ पठयिगा। सभा मा जब पहुँचेनि तब राजा दुख परगट करत की कहेनि कि हमरी बिटिया कयि बिआह अहिरे से बदा रहा। राजा बोलि परेनि कि हे राजा साहेब हम अहिर ना होई। हम अवन्ती नगरी के राजा कयि लहुरा लरिका उग्रसेन हई। हम अहिरे के बदले पयि पहरा दिहे रहे। राजा तुरन्तयि उठि के गले से लगायि के सिंहासन पयि जगह दिहेनि। सादी भयि। आधा राजपाट लिखि उठा। उग्रसेन के बरे एकठी अच्छा मकान अलगे बना। नौकर चाकर लागि गय। एक दिन नौकर बाति करत रहेन कि राजा महराजा कयि बिटिया रानी नौकरन से फँसि जाति होयिहें। राजा सुनि लिहेनि।

अब ओनका अपने पुरानी रानी कयि यादि आवयि लागि। 12 बरस निकरे होयिगा। हालि चालि लेयि का चाही। ससुर से अज्ञा मांगेनि। अब ये लड़की नौकर चाकर का लयि के डोला लयि के चलि परेनि। अपुना घोड़ा से। राति मा पहुँचेनि अपुना रानी कयि परीक्षा लेयि बरे खिड़की खोलिके चला गय। रानी के लगे रानी कयि 12 वर्ष कयि लरिका सोवा रहयि। ओका देखिके येनका रानी के चरित्र पयि सन्देह भा। तुरतयि तरवारि खोलि के मारयि चलेनि तउ फेरि बभने कयि बाति यादि आवयि लागि। 'रिसि मारे पाछे फल होयि।' वयि आपनि तरवारि लयि जायि के मियान मा रखि लिहेनि। आँखी कयि काजर अँगुरी से पोंछि के लरिका के माथे मा तीनि जगहा टीकि दिहेनि। सबेर होत राजा पूरे राज मा डुग्गी पिटवायेन कि जेतना नगरवासी हयेन सब बिना मोह धोयेन राज दरबार मा पहुँचि जायिं। एक एक नगरबासी राजा के सामने से गुजरयि लागेनि। जब सब आयि गय काजर कयि चीन्ह किहिउ के नायि आयि रहा। तब राजा कहेनि कि अबयिं के बाकी बा। अन्तमा लरिका बचा रहा, ऊ आयि। राजा साफ काजर कयि टीका चेहरा पयि देखेनि। पूछेनि ई के आ। सब बतायेनि कि ई राजकुमार हयेनि आप कयि लरिका। आपके गये पयि येनकयि जनम भा रहा।

राजा राजकुमार मा गोदी मा उठायि के छाती से लगायि लिहेनि। राजा सबका लयि के नई ससुरारी

का पहथान किहेनि। सब खुसी से रहयि लागेनि। जवन पण्डित 4 बाति 400 रुपिया मा दिहे रहेनि ओनका हेरयि लागेनि। पण्डित के दुवारे राजा अपुनयि गयेनि। पण्डित सुनेनि कि वयि राजा आयि हयेन जेका चारि बाति दिहे रहूया। पण्डित जानेनि कि सूत बियाज सहित हम्मै रुपिया जमा करयि का परे। हाथ जोरे आयेनि राजा प्रणाम किहेनि। पण्डित का एक लाख रुपिया एक गाउँ पूरा दयिके राजा लिखि दिहेन। संकरजी के पूजा करयि बरे डिउटी मिली। जब राजा कयि सास ससुर मरि गय पूरे राज कयि राजा बनेनि। राजपाट लउटा।

# आपनि तकदीर

एक रहेन राजा। ओनके रहीं सात लड़िकी। रोज सबेरे लड़िकी स्कूल पढ़यि जायिं अउ राजा सिकार खेलयि जायिं। साँझ की लड़िकी स्कूल से लउटयिं राजा सिकार कयिके। राजा सब लड़िकिन को बोलायि के एकदिन पूछेनि कि तोहरे सभे केकरी तकदीर से सुख कयि सेज, भोजन, बहतर पावा थ्या। छवउ तउ कहीं कि हे पिताजी! आपकी भागि से हमका सबका सब चीजु मिली अहयि। सतईं बिटिया कहयि पिता! अपनी तकदीर से। राजा का ओकयि उतर नीक नायिं लाग। छवउ कयि बियाह तउ राजा नीक जगहा खोजि के राजा-महराजा के हियाँ कयि दिहेन मुल सतईं का बहुत गरीबे के हियाँ किहेन। वोकयि सादी खोजयि निकरेनि। एक जगहाँ गयेन दुयिठे बभने कयि लरिका रहेन, माई बाप मरि चुका रहेन। खेतबारी बिकि चुका रहा। घर-दुवार आन का दयि के लखराउँ बागी मा एकठी कुरिया डारि के रहत रहेन। दिन भे लकड़ी तोरयिं साँझ की बेंचि के सीधा पिसान लावयिं। राजा मड़ई के लगे आयेनि। बागी मा कुवाँ रहा उही पइ हाथ गोड़ धोयि पानी पी के चरवाहे से पूछेनि कि ई मड़ई केकयि आ? चरवाह बतायेनि कि लकड़िहारिन कयि होयि। बागी मा लकड़ी तोरत बाटेन। राजा कहेनि बोलायि द्या। जायि के चरवाह कहेस कि दुयि जन घोड़ा से आयि बाटेन बोलावा थेन। वइ दुइनउ जने घबड़ानेनि कि जेकयि कुवाँ अउ जेकयि बागि आ वोई आयि बाटेनि। आयि के हाथ जोरि के प्रणाम कयि के कहेनि राजा साहेब हम मड़ई हटायि लेई, कि बागी मा लकड़ी ना तोरी जवन अदेस आप देयिहयिं हम तयियार हई। राजा कहेनि कि तू बागी मा रहा, लकड़ी तूरा रोक नायिबा। हम तोहार बिआह करवयियाँ हई। कवन जाति हया? 'हम तउ बाभन हई', कहेस।

हाथ जोरि के ओनसे बतायेसि कि हमार बिआह न करा, हम पेड़े की पुलुई पइ चढ़िके लकड़ी तूरी था। एक दिन गिरी मरि जाई तउ तोहारि बिटिया राँड़ होयि जाये। धीरे-धीरे उहाँ गाउँ कयि चारि छ जने आयि गयेन। सब अपुना से कहयि लागेनि कि राजा कयि बिटिया आ बच्चू तोहारि भागि लउटि आयिबा, कयि ल्या नाहीं तउ पछिताब्या। सब जुटि के बियाह मानि लिहेनि। राजा एक रुपिया अउ जनेउ बरेच्छा दिहेनि। दिन बार धयिगा। राजा कहेन कि तुही दुयि भाय चला आया। अउर किहिउ कयि जरूरति नायिं बा। गाउँ के बहेरे बरगद कयि पेड़ अउ पक्का इनारा बा उहइ पैदरयि आया।

जउ समय आयि तउ दुयिनउ भाय पैदरयि चलि परेनि। जब कुआँ पगि बरगदे के तरे आयेनि उहाँ नहवायि धोवायि, सुन्नर कपड़ा पहिरायि, तेल काजर दयि के मियाना मा बइठायि के दुवारे लयि के आयेनि। चारि सखी कहीं चला बराति देखि आई। एक सखी कहेसि कि कहाँ चलब्रू। चला वहिं चला जहाँ - माड़उ जरिगा, दुलहा मरिगा, रोवयिं सगर बराती (सीता का विवाह) चला वहिं देखि आई। दूसरि सखी कहेस नाहीं वहिं चला जहाँ दुयि दल मा मारु होयि घमसान घाउ हयिययि ना (द्वार पूजा) तिसरी सखी कहेस कि वहिं चला बागि लागि लखराउँ छाँह हयिययि न (माड़उ) चौथी कहेस नाहीं सखी वहिं चला जहाँ मछरी सोंयिसि घरियार चेंहटा हयिययि ना। (सामियाना)

दुवार चार से बिआह तक देखेनि। दुयिनउ भाय आस लगाये रहि गय मुल राजा-एक्कउ पइसा

दिहेन नायिं। सबेर होत लड़की का डोला मा बयिठायि के उहीं इनारा पयि बरगदे के तरे पहुँचायि के कँहारे चला आयेन। वहिं से तीनिउ जने आयेनि मड़ई मा। लहुरू कहेनि कि हे भउजी उही मड़ई मा चला पैरा बिछावा बाटयि। गगरी मा चाउर दालि रहा खिंचरी बनयि गयि। दुयिनउ जने खायेनि राजा कयि बिटिया नायिं खायेसि। देवर के कहे पयि पेट पिरायि कयि बहाना किहीं। सबेरे दुयिनउ जने का खियायि के लकड़ी तोरयि पठयि दिहीं। अपुना फेरि नायिं खाईं। इही तरह से तीनि दिन नायिं खाईं। लहुरा बहुत कहेस कि तू नायिं खातू आजु पहिले खा। कहीं कि नाहीं हम खाब पहिले तू दुयिनउ जने खा। फेरि ओनका खियायि के पठयि दिहीं अपुना वोयिसे रहि गईं।

बड़ा भाये पेड़े पयि चढ़ि के तोरेस छोट भाय बटोरेस। जब दुयि बोझ पूरा होयिगा तब उतरयि लागेनि। वहि पेड़े के खोड़रे मा एक लाल परा रहा। चिरई कयि अन्डा समझि के उठायेनि। बहुत सुन्नर देखि के लयिके उतरेनि। छोटके से कहेनि कि अपनी भउजी का दयि के पूछ्या कि कउनी चिरई कयि अन्डा बा। देवर भउजी के सामने जायि के पूछेसि कि भउजी देखा केथुवा कयि अन्डा आ? कहीं कि ई अन्डा ना होयि। येका उही सेठि का देखावा जेकरे हियाँ से जिनिसि लयि आवाथ्या। लकड़ी बेंचि के जब जिनिसि लेयि गय तब सेठि कहेनि कि बेटवा तोहार तकदीरि जागि गयि ई अन्डा न होयि। सेठि तब काउ आ? अरे इतउ एक राजा केतना तोहँका बनयि दिहेस। अब तोहँयि लकड़ी तोरयि का जरूरति नायिंबा। दुयिनउ जने सीधा पिसान लयिके घरे आयेन। खूब निक ढंग से कुलि खाना दालि चाउर, रोटी भात रीन्हिगा। पतरी मा दुयिनउं भाय खायेनि फेरि ओनहूँ खाईं। अउर बचा खाय सिकहरे पयि धयि उठा। दुयिनउ जने सबेरे फेरि खायि के लकड़ी तूरयि चला गयेनि। आजु जउ लकड़ी तोरयि सुरू किहेनि तउ खुब सैरानि। एकठी तोरयिं रस्ता मा दुयि होयि जायि भुइं आये पयि चारि होयि जायि। बोझ जल्दी पूरा होयिगा। उतरयि लागेनि तउ खोड़रे मा दुयि लाल धरा रहेन। बड़ी खुसी से लयि के उतरि परेन। लकड़ी बेंचि के सेठि का लयि जायि के दुयिनउ लाल दिहेनि। कहेनि कि सेठि जी आजु दुयिठे पावे हईं। सेठि अपने तिजोरी मा धयि के येनके साथे आयेनि। राजा के लगे जायि के भुईं कयि एक बड़हर मैदान बागी के बगलयि खरीदि लिहेनि। ओहिमा कोठी बनवावयि लागेनि। सेठि ईंटा, सरिया, चूना, सिरमिन्ट, बालू सब गिरवावयि लागेनि। पूरा राजमहलि एस बनयि लौंग। कयियउ साल मा बनि के पूरा भा। हाथी-घोड़ा खरीदि गय, नौकर-चाकर रखि गयेनि। बीसन गाउँ खरीदेनि नगर बसायेनि बारादरी फरके बनी। सजायि गयि। फूल-पाती अउ लता बिरिछ से वहिं बारादरी कयि सोभ खुब बनि परी। घर उतार भा। इनारा पर कयि कुरिया छोड़ि के महले में आयि गयेनि। जवन बचा सेठि खजाना मा जमा दिहेस।

येहर ओनकयि सासु राजा से कहीं कि तू कुलि बिटियन के घरे गया। हाल-चाल लिह्या। लहुरी बिटिया के घरे कबउँ नायिं गया। काउ जाई रानी छवउ जनी का येतने सुखे मा किहे रहे ओनकयि दुरदसा देखे येतना दुख बा ओका तउ दलेद्दरे के घरे जानि के किहे रहे। ऊ मरि-ओरि गयि होये। रानी जिद किहीं कि जायि के देखि आवा। राजा तयियार भयेन। इनारा पयि आयेनि। झोपड़ी उहाँ नायिं रही। चरवाहन से फेरि पूछेनि कि लकड़हारे कहाँ गयेनि। के हया अब ओनका लकड़हारा जिनि कहा। ओतउ राजा होयि गयेनि। देखा ओनकयि राजपाट। कोठी अँटारी ऊ लहकत बा। मिलयि का होयि तउ जा दरसन कयि आवा। राजा अउ मंत्री आपन घोड़ बढ़ायेनि लगे गयेनि। दूरि से ओनकयि बिटिया अन्टा से देखत बा। दुयि घोड़ केकयि आवत हयेनि। नेकचाने पयि ऊ पहिचानि गयि कि हमार बपई अउ ओनकयि मंत्री हयेनि।

नौकर चाकर दुवार अउतयि भरे मा दउरि परेनि। कुछु नोकर घोड़न का खियावयि पियावयि मा जुटि गय। कुछु येनकी सेवा मा। बारादरी मा लयि जायि के आसन लागि गा। दुयिनउ लरिके आयि

के प्रणाम किहेनि। राजा लज्जित होयि के रहि गय। जलपान, खान-पान के बादि मा लौंड़ी आयि के भेंट करयि कयि बोलउवा दिहेस। राजा महलि मा जायि के हक्का बक्का होयि गय। अपनी बिटिया का चिन्हबयि न किहेनि। जब ऊ बिटिया इन्द्र के परी कयि रूप लिहे ओनसे हालि चालि पूछयि लागि तब जायि के चीन्हेनि। राजा रोवयि लागेनि।

राजा बिटिया के महल मा दुयि दिन रहेन। बिटिया पारी-पारी अपनी छवउ बहिनी कयि हालि पूछयि लागीं। बिटिया का बतावत की राजा कयि आँखि भरि आयि। गटई मा हिचकी आवयि लागि। वयि कयिसेउ बतायेनि कि छवउ बहिनिनि कयि बड़ि दुरगति बा। तुहीं सबसे भली बाटू। कहेस कि हे बपई हम अपनी तकदीरी से खात पियत हई, वइ सब आपके तकदीरी से। ऊ अपनी बहिनिनि का बोलावयि। ओनका धन दउलति दयि के विदा करयि। बड़ा भाय अपने छोटकये भाये कयि बिआह किहेस घरे मा दुयि रानी आयि गयीं। दुयिनउ भाय सुख चैन से साँस लयिके राज करयि लागेनि।

# सूर बाबा

एक जन रहेन सूर। जंगल मा बइठा रहइँ। राम नाउँ जपइ मा धियान लगाये रहेन। राजा सिकार खेलयि निकरेनि। ओनके साथे मा एक नोकर, राजा कइ मैनेजर, अउ राजा अउर दुइ कुकुर रहेन। सिकार उठा जंगल मा भाग। कुकुर पीछे दउरि परेनि। आगे नोकर पहुँचा पूछेसि कि का रे! सुरवा एहँकी हन्नी गयि हा? सूरदास कहेनि हाँ हो गुलाम! हन्नी गयि हा। पेटे मा दुइ बच्चा, पीछे दुइ कुकुर रहेनि। एतने मा मैनेजर आयेनि पूछेनि का हो सूरदास, एक्कउ हन्नी येहँकी गयि हा? हाँ मैनेजर साहब, हन्नी गयि हा। ओकरे पेटे मा दुयि बच्चा पीछे दुयि कुकुर, ओकरे पीछे गुलाम गयेनि। ओनके पीछे कुछु बेर बादि मा राजा साहब आयेनि अउ सूरदास से पूछेनि, 'सूर साहब का येहँकी हन्नी गयि हा? हाँ राजा साहब हन्नी गयि हा। हन्नी के पेटे मा दुयि बच्चा, पीछे दुयि कुकुर वहि के पीछे गुलाम अउ गुलाम के पीछे मैनेजर सब एहरइ का गयेनि हा। आगे जायि के हन्नी का मारत गयेनि। मारे पइ देखेनि कि पेटे मा दुयि बच्चा निकरेनि। अपुनइं मा बतलात गयेनि कि सूरदास साधू कुलि बाति बतायेस। कइसे कुलि जानि लिहेस एका चलि के पूँछि जायि।

सब केउ जंगल मा जुटि के गयेनि। साधू के लगे जाइके सब पहुँचि गयेनि। साधू से कहत बाटेन कि हे सूरदास बाबा तनिका ई बतावा कि कइसे जानि गया कि हरिनी के पेटे मा दुइ बच्चा रहेन। कइसे जान्या कि ऊ गुलाम रहा। दुइ कुकुर कइसे पहिचानि लिहूया अउ एक बाति इहउ बताया कि कइसे जानि गया कि ये मंत्री अउ ये राजा हयेनि। सूरदास बतायेनि कि हे राजा साहेब! हिरनी के भागत की ओकरे पेट से ऐसनि आवाजि होति रही कि मालुम देत रहा कि दुइ बच्चा बाटेन। कुकुरन कइ दउड़ तउ साफइ जाहिर रही कि दुइठे जात बाटेन। ओनके बादि ऐसन सबद से हमका बोलायेस कि हम जानि गये कि किहिउ नौकर कइ ई बोलि आ। ओकरे बादि मा बोलि कइ ढंग सुनि के हम जाहिर कइ लिहे कि ई मंत्री अउ ई राजा अपुनइ बोलत बाटेनि।

राजा सूरदास कइ पूरी बाति सुनि कइ बहुत परसन्न भयेनि। अपने मनमा वइ सोचत बाटेनि कि केतनी बारीकी से ई साधू सब बातिनि कइ निष्कर्ष निकारि के रखि दिहेस। एनकइ ई अनुभूति बहुत ऊँचि बा। एतउ हमरे दरबार लायेक बाटेन। सूरदास से राजा प्रार्थना किहेन कि हे बाबा तु हमरे दरबार मा चला रहा। समयि-समयि पइ तोहँसे अच्छी जनकारी मिलि जाये। नाहीं राजा साहेब होइ सका थइ कि हमारि बाति किहिउ का खराब लागि जाये हम्मइं उहाँ जिनि लयि चला। नाहीं बाबा तु चला ऐसनि बाति न होइ पाये। साधू बाबा तब उहाँ गयेनि।

दरबार मा सूरदास पहुँचि के बहुत कमाल कइ बाति कहइ अउ करइ लागेनि। कमाल देखि के राजा साधू कइ दुइ रोटी बढ़ायि देत रहेनि। राजा के हियाँ कुछु दिन बादि देखुआर आयेनि। देखुआर कइ सादी मानइ बदे साधू के लगे जायि के पूछेनि। साधू कहेनि कि लड़की देखि के हम बतायि सकी था। लड़की देखावयि कइ समय रखि गयि। साधू बाबा जायिके लड़की का टोयि के देखेनि। देखिके कहेनि कि हमरे राजा लायेक तउ हयिययि बा। सब ऐका विस्तार से बतावइ का कहेनि। साधू कहेनि कि लड़की

नचनियां कइ अउ राजा खानसामा कइ सनतान होंइ तउ जोड़ा ठीकइ बा। सब पूछेनि कि साधू बाबा कइसे जान्या हा एका तू बतावा। अपनी अपनी माई से जाइके पूछा, पूछे पइ बाति सही निकली।

अब साधू सूरदास के पास जायि के राजा कहेनि कि अब सूरदास जी ई बतावइ का परे कि कइसे हम्मइं जानि गया कि खानसामा कइ लरिका हई। लड़की कइसे नचनियाँ कइ? साधू कहेनि कि हे राजा साहेब हमारि बहरे कइ जोति जेतनइ कम बा भेत्तर कइ जोति ओतनइ जादा बा। बात सुनि गुनि के सही चीजु खोजयि कइ बानि हमरे भेत्तर बा। कमाल किहे पइ रोटी बढ़ावइ वाला खानसामा कइ जनमा न होये तउ के होये। लड़की कइ देंहि छुए पइ ऐसन कम्पन होथइ ऊ कम्पन नचनियियिं के बच्चा के होये।

हे सूरदास अब तू यहिं दरबार मा रहयि लायेक नाइं हया। तू यहिं से चला जा। साधू जायि के उही जंगल मा फेरि राम राम करइ लागेनि।

# हीरामन तोता

एक जने रहेन राजा। ओनके एक रही बिटिया। बिटिया वेद सास्त्र उपनिषद आदि मा बड़ी कुसलता पाइ चुकी रही। ऊ ऐलान किहेसि कि चारि पहर की राती मा जे हमरे प्रस्न कइ उत्तर दयि दे उही से हम सादी करब। बहुत दूरि दूरि से राजा लोगे आवइ लागेनि। प्रस्न कइ उत्तर न देयि के कारन या गलत देयि के कारन सब राजे आयि आयि वापिस होयि लागेनि। एक जन लाला आयेनि कहेनि कि हमहूँ बाति करब। लाला का बाति करइ के खातिर परदा घेरिगा। लड़की आयि पूछत बा कि कहाँ कइ राजा हया। हम विक्रमाजीत हई लाला उत्तर दिहेनि। आप कयि राज काज केस बा? लाला उत्तर दिहेनि कि हमरे राजकाज का काउ पूछइ का बा राजा राज अउ परजा सुखे मा बूड़त उतिरात हयेनि। सब कारबार एकदम दुरुस्त बा। तब उ लड़की बोलायेसि कि केउ नोकर बा हियाँ। सुनतइ भरे मा दुइ चारि दउरेनि। लाला सोचेनि कि हमार उत्तर सही होइगा अब हमार विसेष सेवा कइ अदेस होये। मुल लाला तब हक्का बक्का होइ गय जब उ कहेसि इन्हइ कान पकरि के बाहेर लयिजा।

फेरि राजा विक्रमाजीत आयेनि। परदा घेरिगा। विक्रमाजीत अउ राज-बाला कइ बाति-चीति चलइ लागि। लड़की प्रस्न किहेस कि तू कहाँ कइ राजा हया? राजा आपन राज अउ नाउँ विक्रमाजीत बतायेनि। तोहार राजकाज केस बा? राजा उत्तर दिहेन कि हे भामिनि हम अपने राजकाज कइ काउ बताई, हमार एकठी बहनोइ राजा मघा रहेनि। जब हमरी बहिनी कइ बराति आयि वहिं समँय एतना सोना चानी लुटायेनि कि अबहीं ले गरीब लोगे अगल बगल से बोहरा थेन, पाइ जाथेन उही से केतनन कइ निरबाह होत बा।

एकाएक ओनके ओप्पर बिपति परि गयि। हमरे हियाँ आयेनि। जउ आवइ लागेनि तउ ओनके लगे अँगोछा अउ साड़ी नाइ रही। कइसेउ हमरे हियाँ आवत रहेन तउ देखेन कि कइयउ मनई अगले-बगले बोहारत रहेन। पूछेन तोहरे सभे काउ बोहारत हया। वहिमा से एक बोलिके बतावइ लाग। ये भइया हमरे राजा के एकठी बरात राजा मघा के हियां से आयि रही वइ एतना सोना लुटाये रहेन कि अबइ तक हमका सबको सोना चानी हीरा जवाहिरात मिला करा थइ जउने से हमन कइ रोजी रोटी चलत बा। राजा ई बाति सुनेनि तउ वहि दिन अउ आजु कइ दसा देखि के एतना अफसोस भा कि मघा मरि गयेनि। बहिन विधवा होयि गयि। ऐसन मघा कइ राज नायि रहिगा। हमरे राजकाज कइ कयनि बाति बा। एतनी बात सुनि कै राजा कइ धेरिया एक डंका लगावइ कइ अदेस किहेस।

अगिया कोइलिया दुइ दूत रहेन। वइ राजा विक्रमाजीत का पलँग पइ बयिठयि का कहेनि। जब राजा पलँग पइ बयिठयि कइ तयारी किहेनि अउ बयिठयि चलेनि तउ पलँग बोलयि लागि। कहत बा कि हे राजा! ई रानी एतनी बेहूदी बा कि जबसे हम बढ़ई के हियाँ से बनि के आयेनि तब से कबउँ हमरे ओप्पर नाइ सोईं। जउ एक्कउ दिन अराम कइ लिहे होति तउ हमरउ जनम सुफल होइ जात। रानी पलँग कइ बाति सुनि कं परेसान होइ गईं कहीं हे राजा साहेब! हम रोज यहि पँलगे पइ आराम करत रहे मुल तबउ ई एतनी झूँठि बाति काहे कहति बा? रानी कइ इसारा पाइ के अगिया कोइलिया डंका फेरि

बजायि दिहेनि। रानी विक्रमाजीत के आगे हाथ जोरि के बोलति बा कि हे राजा सचमुच तू राजा हया हम तोहँसे आपन बिआह करब। एक बाति हम निवेदन करबइ कि तू हमरे पिता जी से अउर कुछु जिनि मांग्या बसि एक चीजु मांग्या कि अपने हाथे कइ लिखी किताब दयि देंयि।

राजा आराम करयि गय। चारिउ ओर डंका बाजिगा के सादी राजा विक्रमाजीत के साथे होये। सजावट कइ ओहरी कार बार चलइ लाग। एहर राजा विक्रमाजीत आराम करइ चला गयेनि। सादी कइ तइयारी होइ गइ। सिस्टाचार भा। राजा खिचड़ी खायि गयेनि। राजा पूछेनि काउ लेब्या? विक्रमाजीत राजा ओनके हाथे कइ लिखी किताब मांगि लिहेनि। येकरक अलावा हमइ कुछु नायि चाही। राजा ना मानयिं कहइँ गाउँ घर रतन खजाना ई कुलि मंगत्या काउ माँगत बाट्या। विक्रमाजीत कइ धुनि बसि किताबइ पइ लागि रहि गयि। गाउँ घर साथी मीत सब राजा का किताब दयि देयि कइ उजुर कइ दिहेन। सादी कइ कुलि रीति रिवाजि पूरी भइ।

बिआहे कइ जेतनी रसम-रिवाजि रही सब पूर कीनि गइ। बारात के बिदा होइ कइ समयि आइ गइ। राजा विक्रमाजीत घरातिन से अपने राज का जाइ के निवेदन करइ लागेनि। सब कइ अदेस लइ के बरात घरे की ओर चलि परी। कुछु दूरि बरात चली आयि तब खियाल भयि कि किताब तउ नायिं लयि गइ। साथे साथे लाला आवत रहेन कहेन कि हम जाई लिहे आई। राजा कइ आज्ञा लइके लाला चलेनि किताब आनयि। लाला किताब लयि कि पढ़तइ पढ़त आयेनि। राजा का किताब दयि दिहेनि। राजा किताब लायि के पढ़इ लागेनि। मियाना कहाँरे लिहे बढ़ा जात अहेन। रानी राजा से पूछीं हे स्वामी यहि किताबी सं तु कुछु पढ़ि पाया कि नायिं। जउ पढ्या तउ समझ्या केतना? राजा उत्तर तउ दिहेन कि हां समझबउ किहे मुला दुरि तक आगे पीछे नायिं ताकेनि। रानी कहीं जवन कुछु पढ़े हा तवन देखउत्या न। राजा कुछु दूरि अउर आगे बढ़ेनि तउ देखत बाटेनि कि एक सोग्गा मरा परा रहा। तुरन्तइ रानी का आपनि जनकारी देखावइ बदे आपनि देहि छोडि के सोग्गा मा परवेस कइ लिहेनि। अब राजा कइ देहि मरि गयि अउ सोग्गा उड़यि लाग। लालउ किताबि कुछु पढ़े रहबइं करयिं। का किहेनि कि आपनि देह छोड़ि के राजा की देहीं मा हलिगा। येहर राजा कइ देहिं खलिययि नायिं रही। कइसे वहि मा आवइं। सोग्गा उड़िगा। रानी घरे आईं।

लाला विक्रमाजीत की देही मा परवेस कइके राज दरबार मा बयिठयि लाग। रानी रनिवास के बहेरे तप करइ कइ निहचय किहीं। रानी तउ जाना थईं कि हमार राज सोग्गा होयि गा हयेन। ई राजा तउ लाला राम हयेनि। लाला राज के सब बहेलियन का बोलवायि के बतायेनि कि जे सोग्गा मारि के लयि आये ओका राष्ट्रीय पुरस्कार मिले। बहुत सोग्गा मारि डारा गयेनि। पांच रुपिया सोग्गा कीमत धयि के मरवायेस। फेरि दस रुपिया बीस पचीस अउ पचास रुपिया एक सोग्गा पइ इनाम धइ जायि लाग। बहेलिये कुलि धन्धा छोड़ि के बसि इहयि सोग्गा का मारयि वाला धन्धा अपनावइ लागेनि। अन्त मा जब राजा देखेनि कि सोग्गा मिलत नाइं बाटेनि तउ वइ सौ रुपिया दाम लगायि के बहेलियन का उत्साहित किहेस। जब येतनेउ पइ सोग्गा नाइं मिलेन तउ एक हजार दाम लागिगा। वहिकी बादि दस हजार तक कइ कीमति लागि। बहेलियन कइ झुन्ड दूरि दूरि ले सोग्गा की खोजइ मा घूमत रहँइ। अबइँ हिरामनि सोग्गा बरे लाला कइ राजा के रूप मा खोजि जारी बा।

एक दिन एक बहेलिया देखत बा कि एक छोटि के पहाड़ी पइ हजारन की संख्या मा सोग्गा बइठ रहइँ। देखि के बहेलिया एक दायिं मालोमाल होइ कइ कल्पना करइ लाग। ई सोग्गन कइ उ टोली आ जउने मा राजा सोग्गा के रूप में अगुवई करत रहइँ। बहेलिया देखेसि कि एक सोग्गा बड़ा सुन्नर, सुडउल अउ बोलयि चालयि मा ठीक सुवा हिरवन नाउ कइ वहिमा रहइ। ऊ पूरी गोल कइ मालिक रहा। बहेलिया पेड़े पइ जाल लगायि के चलागा। तमाम सोग्गा भूख कइ मारा परेसानउ रहइँ। यहि समय बहुत समुझि

बूझि के सोग्गे दाना फल फूल पइ उतरइँ। सुवा हिरावन के नाते ई गोलि आवइं सुतंत्र होइ के दूरयि दूरि रहत रही। भूखि से तमाम सोग्गा विकल होयि गयेनि। वइ सब साँझ की वहि पेड़े पइ बयिठि गय जउने मा जाल लाग रहा। सब फँसिउ गयेनि। अब सब मिलि के कहत हँइ कि कहा सुवा हिरामन अब का होये। अबतउ जाल मा फँसि गये। सवेर होत सब राज दरबार मा जायि के मारि डारा जाबयि।

सब कइ निरासा से भरी बाति सुनि के हिरावन अन्त मा बोलेनि हे मोरे भाइउ सुना, येतना निरास भये से काम ना चले। बिपति काल मा धीरज से काम चला थइ। अब हमारि बाति सब ध्यान से सुना हम सबका बचइ कइ राहित बतउबइ। ई जाल पुरान जानि परत बा। सब जउ मिलिके एक जोर लगउब्या तउ जाल टूटि जाये। तब इहां से भागि के हम सभै उड़ि के कतहु दूरि चलि के आपन आपन बन्धन काटि लीन जाये। सब ओनकी बाति से सहमत भयेनि। जब ओहरी पुरुब ओर लोहा लाग। येहर सब कइ तइयरी रहबी कीनि येहर बहेलियउ राम सबेरे उठि के आसा कइ एक बड़ी लकीरि खींचे पेड़े के तरे खड़ा भयेनि। उही समयि मा भर्र....... कइ तेज आवाजि पेड़े से सुनानि। बहेलिया एतनी तेजि आवाजि सुनि के बहुत जोर से चिहुँकि गा। देखत बा कि सोग्गा ओकइ जाल लयि के उड़ा जात अहँइ। जब तक थकि के चूर नायिं होइगा जब तक ओकइ गोड़ काँटा से छेदि नाइ उठा, दउरत रहा। अन्त मा निरास होइके हाथ मीजत की लउटि परा। सोग्गे बहुत दूरि जायि के आपन आपन बन्धन काटि के सुतन्त्र होइ गयेनि।

जिउ कइ आदति आ कि केतनउ आफति आवइ मुल आपन बसेरा नायिं छोड़त। चाहे मनई चाहे पसु चाहे पंछी। कहउतउ बा कि 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' वइ सोग्गे फेरि उहीं पेड़े पइ फेरि जायि के बसेर लिहेन। बहेलिया का तउ मलुमयि रहा कि फेरि बसेर लेयि अइहें। ऊ नवा जाल लइ आयि के लगायि दिहेस। सबके सब सोग्गे फेरि जाले मा फँसि गयेनि। अब फँसे के बादि सबका बड़ी चिन्ता भइ। हिरावन सुवा सबसे ओप्पर एक कोने लटका रहँइ। ओनहीं पइ सब का बिसवास रहा। कहेन भइया हिरावन सुवा अब का होये? हिरावन सुवा कहेनि कि अबतउ दुबारा फँसयि हया। ओखली मा मूड़ परयि बा पहरुवा कइ कवन गिनती बा। भिनउखा एक दायिं बल लगायि जाये टुटि जाये तउ ठीकइ बा जउ ना टूटे तब ऐसनं करइ का होये कि सब बहेलिया का देखि लिहे पइ मरा सोग्गा एस लटकि जायि का होये। तब ऊ पेड़े पइ चढ़िके सबका नोचि नोचि नीचे फेंकि दे। जे पहिले गिरे ऊ गिनब सुरू कइ दे। एक हजार एक संख्या गिनि चुके पइ एक साथे सब भर्र धे उड़ि चला जाये। बाति सब सोग्गन की समझि मा आयि गइ। राति भइ कइसेउ सब परा रहेन। भिनसारे एक दायिं बल लगायि के देखेनि नवा जाल टूटयि मान का नायिं रहा। सब निरास होइ गयेनि। अउ कहिनि कि अब बहेलिया के आये पइ लम्मी साँसि कइके लटक्या। जइसे बहेलिया का दूरिनि देखेनि सब मरा सोग्गन टोली जाले मा लटकि गयि। देखत भरे मा बहेलिया बड़ा दुख किहेस तबउ कहेस चला कुछु तउ मिलबइ करे। पेड़े पइ चढ़ि के नोचि नोचि फेंकइ लाग। जे पहिले गिरेनि ओ गिनइ लागेनि। अवाजि सुनि के गिनत अहँइ। बहेलिया लासा कइ बेंगि लिहे रहा उहउ गिरि गयि। एकठी उहू का गिनि लिहेस। ओकरे गिनती मा जब 1001 होइगा सब एक दायिं मा उड़ि परेनि। सुवा हिरावन हाथे मा रहि गय। अब बहेलिया हिरावन सुवा का देखि देखि कहत बा कि ई सब कलाकारी तोहरइ आ। तोहईं सब काम किह्या हा। मनयि मन मा ओकरी सोन्नरता पइ रिझतउ बा। मुहें से कहे जात बा सब कइ सन्तरी तुहीं हलाल होब्या। अब झंखे अउ कहे सुने काउ होये। मन कइ अरमान तउ छनयि भरे मा ढहि गा रहा। अब आसा एक सुवा कइ रहि गयि।

हिरावन सुवा मनयी की बोली मा पूछइ लाग कि हे बहेलिया तू जब हमका मारि देब्या तउ काउ पउब्या। एक लाख रुपिया बहेलिया उत्तर दिहेसि। अच्छा जउ तोहँका एक लाख मिलि जायि तउ?

बहेलिया कहेस ठीक बा। तू हमका सेठि की नगरी मा एक मेला लागा थइ उहीं लयि चला। पिंजड़ा मा धइके बहेलिया सुवा हिरावन का लयिके गा। बजार मा जायि के पिंजड़ा टांगि के बेंचयि बइठा। कुछु जने पूछेनि कि केतना दाम सुवा कइ भाई। एक लाख कहे पइ सब चला जायिं। अन्तमा जेतना सामान बचयि सब सेठ खरीदि लेयिं। ऐसन नियम रहा। अन्तमा सेठ कइ आदमी आयेनि दाम पूछेनि बहेलिया कहेस कि सोग्गा से पूछा। सोग्गा से पूछेनि। ऊ बतायेसि कि एक लाख। सेठ से पूछि कि वइ सभे सोग्गा एक लाख मा लयि लिहेन अउ सेठि हिरामन सुवा का सोने के पिंजड़ा मा राखि के परवेस पइ टांगि दिहेन। हिरावन सुवा अपने गीता रमायेन वेद सास्त्र की चरचा से सगरउ नगर के चित्त का मोहि लिहेन।

सेठि के परोसे एकठी रण्डी रहत रही। ओकइ वेउसायि ठप होइ लाग। सोग्गा के आये पइ जे ओकरे कोठा पइ जात रहेन ओनकइ चित्त धर्म-वेद-पुरान मा उलझइ लाग। ओकइ घाटा होइ लाग। येहर हिरावन सुवा कइ दरबार बाढ़इ लाग। चारि महीना बादि सेठि के लरिका भा। रण्डी अपनी सब कला कइ प्रदरसन कइ के सेठि का रिझायि लिहेस। बसि मौका पायि के ऊ हिरावन सुवा का मांगि लिहेस। सेठि बहुत एहर ओहर किहेन मुल ओकरे प्रेमपास से निकरि नायिं पायेनि अन्तमा ओनका दयि देयि का परा। पतुरिया बहुत परसन्न भइ।

हिरावन सुवा का पतुरिया पाइ गइ। अपने घर लइ के आयि। घरे लाये पइ ओकइ धियान तउ ओनकी बुद्धि ज्ञान अउ सगरउ गुने पइ थोरउ जात। उतउ ओकरी मासू पइ जीभि चोटकावति बा। खानसामा से कहेस कि लइजा एकइ मासु आजु बनवा। ये हमार बहुत नुकसान कइ दिहे बाटेन। येनके आये पइ हमार बजारइ चउपट होयि गयि। खानसामा लइके चला पहिले एनकइ पखना नोचि दिहेस। जब काटइ का तइयार भा देखत बा कि चाकू लयिनि नाइ बा। दउरा चाकू आनयि गा। तब तक हिरावन सुवा खोसकत खोसकत एकठी बिली मा हलिगा। जब नायि पायेस तउ दूसर जनावर पकड़ि के ओकयि मासु खानसामा बनवायेस। आजु पतुरिये बहुत प्रसन्न हइं। एक लाख के सोग्गा कइ कवर बनवयि जात बाटीं ना। नाच गान होत बा। चारिउ ओर खुसियाली मनायि जाति बा।

अब सुवा हिरावन बिली मा परे परे दुइ एक दिन बितायेनि। रोवाँ-रोवाँ से खून पुचपुचाइ आयि रहा। डखना पखना टूटि गा रहा। पूरी देंही मा पीरा भरी रही। पेटे की पीरा से परेसान होयि के कइसेउ खुसुकि खुसुकि बहेरे आयि के कुछु दाना चुनेनि। एक गड़हा मा पानी पियेनि। अब कुछु ताकति जनायि लाग। भगवान की दया से गोड़ बचिगा रहा। धीरे धीरे पखना जामयि लाग। एक महीना दुयि महीना उही बिला कइ निवासी होयि गय। तब वहि अहथान से उड़ि के कुछु दूरि पेड़े पइ कोटरे मा रहयि लागेनि। पछिले दिनन मा घास फूस अउ दाना खायेनि। फेरि फूल पाती अब तउ खाना के रूप मा अच्छे अच्छे फल कइ परयोग करइ लागेनि। अब सरीर मा फुरती अउ ताकति आयि गयि। पतुरिया के घरे कइ आइ के ओसे कहेनि कि हम अब जात हई। फेरि सेठि के घरे बतायेनि कि ओनकइ केतनी दुरगति भइ। सेठ तू हमका धोखा दिह्या। सेठि फेरि ओनका सोने के पिंजड़ा मा धयि के अपने हियाँ रखेनि। अब हिरावन सुवा मोकदिमा देखयि वाला काम सुरू कइ दिहेनि। ये सोग्गऊ विकरमाजीत राजा तउ रहबइ किहेनि। ओहरी लाला विकरमाजीत बना रहँइ। एक मोकदिमा पेस भा रहयि। मोकदिमा ऐसन रहा कि एक जन रहइँ ठाकुर एक जन बनियाँ। बनियउँ दुयि भाय रहँयिं। दुयिनउ जने अलगायि गयेनि। बनियऊ भाये से बेईमानी कयिके चानी कइ रुपिया कूँड़ा मा भरि-भरि ओप्पर से खाँड़ि डारि के धरायि दिहेनि ठाकुर के घरे। कहेन कि कुछु दिन रहयि द्या हम उठायि लयि जाब।

एक दिन ठकुरायिनि कहीं आज देखी बनियऊ कइ खाँड़ि केसि बा? ठाकुर रोकेनि लेकिन नायिं मानीं। जब वहिंमा हाथ डारीं तउ वहिमा सब सिक्कइ सिक्का। अब ठकुरायिनि के भेत्तर लालचि होयि गयि। वइ सिक्का निकारि के खाड़ि भरयि कइ पलान बनायि लिहीं। ठाकुर रोकेनि कि बेईमानी जिनि

करा। मुला ठकुरायिनि का किहीं कि खाँड़ लइ आईं। रुपिया जगहा पइ खाँड़ि भरि दिहीं। कुलि कूँड़ा से इहइ किरिया किहीं। कुछु दिन के बादि बनियऊ आयेनि अउ आपन कूड़ा लयि गयेनि। जब घरे लयि जाये के देखिनि तउ वहिमा रुपिया हयियइ नायिं। बनियऊ ठकुरायिनि से कहेनि। वइ उत्तर दिहीं खाँड़ि दिहे रह्‌या अउ लिह्‌या हम रुपिया नायिं जानिति। ई मोकदिमा दरबार मा लाला विकरमाजीत बनि के देखत रहेनि। बनियऊ कहँयि कि रुपिया धरे रहे, ठकुरायिनि कहइँ नाहीं हुजूर हम खाड़ धरे रहे। दिहे अउ लयि गयेनि। अन्तमा रानी बनियाँ का भेजीं हिरावन सुवा के लगे। अउ नौकरउ भेजीं जा कुलि विवरन लयि आवा। वइ हिरावन सोग्गा के लगे मोकदिमा लयि के आयेनि। मोकदिमा पेस भा। बनियाँ बतायेनि कि हम रुपिया कूँड़ा मा भरि भरि धरे रहे। ठकुरायिनि कहीं नाहीं हम खाँड़ि धरे रहे दिहे लयि गयेनि। हिरावन सुवा एक महीना पइ तारीख बतायि दिहेसि।

हिरावन सुवा एक मोटि लकड़ी कइ सिल्ली तइयार करायेस। जवने मा एक मोहारा बना होइ। वहिमा एक मनई का बइठायि के बयान नोट करयि का कहेनि। सिल्ली एकान्त मा अकेलि धरायि गयि। पहिले सेठ सेठायिनि कइ पुकार भा। सुवा कहेसि कि जा सिल्ली दुइनउ परानी खींचि लावा। दुइनउ जने गयेनि। ठेलउबयि न करइ। सेठि कहेनि कि हे सेठायिनि कहत रहे ठाकुर के घरे जिनि धरा जबरा हयेनि लयि लेइहें। मानू नायिं। न तउ ई सिल्ली ठेलाये न फैसला होये। सिल्ली नायिं ठेलानि चला आयेनि। ओनका बगले बइठायि के ठाकुर ठकुरायिनि से कहेनि कि सिल्ली जायि के ठेलि ठकुरउ ठकुरायिनि का सिल्ली ठेलयि का आदेस भा। दुयिनउ जने जुटेन मुल ठेलान नाइं। ठाकुर कहेनि तु अपने मनयि कइ करा थू। कहे बेईमानी जिनि करा। मानू नायिं। ल्या ठेला सिल्ली। नायि ठेलानि। चला आयेनि। सिली कइ मोहारा खोला गा। बयान हिरावन सोग्गा के लगे गा। वइ पढ़ि के सुनावइ लागेनि। कि ठाकुर बनियाँ कइ सब रुपिया दयिद्या। अन्त मा बनिया रुपिया पायेस। नौकर रानी से आयि के बतायेस। रानी का पूरा बिस्वास होइगा कि ई हिरावन तोता राजा विकरमाजीत हयेनि। कहीं चाहे जेतनी रुपिया लागयि जायि के ओनका लयि आवा। राजा सुवा का आनयि आदमी गयेन। सेठ के जनकारी होइ गये पइ हिरावन का सेंतइ जायि का तइयार किहेन। हिरावन अपने राज्य मा जायि का बहुत प्रसन्न भयेनि। सेठि से कहेनि के अब हमयि जायि द्या तोहार एक लाख से जादा अदा कइ दिहे अही। सेठि सम्मान के साथे सोग्गा का भेजि दिहेनि। हिरावन रानी के लगे आयि गयेनि। राति भे बतलानी।

बतलायि के अधार पइ रानी बना विकरमाजीत लाला के लगे नोकर पठइ के सूचना दिहीं कि आहु हम अउबयि। हमार तप पूरा होइगा। अब ओहरी लाला राजा खुसी मनावत बाटेन। घोड़े पइ चढ़ि के रानी के तप करइ वाली वेदिका पइ आयेनि। एकठी बकरा पहिलेनि से बान्हा रहइ। रानी पूछीं ई बतावा तु किताब बहुत पढ़्या ओहिमा से कुछु सिख्या। हाँ हाँ रानी बहुत कुछु सिखे। जउ तू बहुत सिख्या तउ कुछु देखावा। बोला काउ देखाई। तु इहइ देखावा कि बकरा कइ मूड़ी काटि के फेरि बोलायि द्या। यहिमा काउ बा। देखा बकरा कइ मूड़ी काटि दिहेनि। फेरि उहीमा हलि गयेन। जी गा। बोलयि लाग। येतने मा हिरावन का इसारा किहीं वइ आयि के अपने देही मा प्रवेस कइ गयेनि। सोग्गा का मिरोरि के बहायि दिहेन। अब सही राजा विकरमाजीत तरवारे से बकरा कइ मूड़ काटि के फेंकि दिहेन। राजा राज करयि लागेनि परजा सुख।

# भगत

एक जने रहेन भगत। भगत के रहा एक बरधा। असाढ़ बरसा खेती बारी कइ काम चलइ लाग। मुला भगत के एक बरधा के आगे हर कइसे चलयि। खेती बारी कइ काम एकदम ठप चलत रहा। गाउँ मा एक जने पण्डित रहेन। पण्डितउ के एक्कयि बरधा रहा। दुइनउ जने गाउँ के राहे पइ मिलेनि। हालिचालि पूछेन कहेन पण्डित का होता बा? काउ होयि भगत बइठा किताबि पढ़ी था। अउर कइनि काउ पाउब। भगत कहेनि कि बरधवा हमका देब्या। हम तोहरउ अपनउ बोयिति जोतिति। पण्डित कहेनि कि ठीक बा एक सर्त बा। अब बरधा लयि जाया तउ कहि दिहा कि बरधा लयि जाथई। अउ जब बान्ह्या तउ कहि दिहा कि बान्हि जाथई। अब दुयिनउ जने कइ काम सुरू होयिगा। रोज लयि जायिं अउ लयि आवयिं। एक दिन सन्जोग से भुखान अउ पियासा रहइँ भुलायि गयेनि। पण्डित से कहेनि नायिं। बरधा बान्हि के चला आयेनि। पण्डित पोथी पढ़इ मा बूड़ा रहइँ। नायिं देखेनि फेरि ढेर बेर भा तउ एकाएक कहेनि कि आजु कोयिरियऊ बरधा नायिं लयि आयेनि। पण्डिताइनि बगल बयिठीं रहीं। अरे देखत नायिं बाट्या हउदी मा खात बा। हम ना मानब हमका काहे बतायेस नायिं। कितउ बरधा देयिं कितउ रुपिया। भगत के घरे पण्डित गयेनि। हे भगत राम दुइ मा एक करा या तउ बरधा द्या या तउ दाम द्या। अरे महराज हम बरधा का हउदी मा बान्हि आये रहे। हम मानब ना तु बताया काहे नायिं। यहि कइ फैसला हउदी पइ देखाये पइ नायिं होत बा, छमा मांगे पइ नायिं होत बा। तउ अब एका राजा विकरमाजीत फैसला करिहैं।

दुयिनउ जने राजा विकरमाजीत के घरे जायि का तयियार होइ गयेनि। सीधा पिसान लिहेन चलि परेनि। भगतउ भाँटा मुरई लिहेनि चलि परेनि। दुपहरे एक जन अहिरे के इनारा पइ उतरेनि। पण्डित महराज सेतुआ खायेनि अउ पानी पियेनि। भगत मुरई खायि लागेनि एकठी मेहरारू अहिरऊ के घरे से निकरी। ऊ भगत से कइेस कि मुरयिया हमहूँ का दयि देत्या। ये कहेनि कि हमहीं भरे का नायिंबा। तोहँका कहाँ से देयी? मेहरारू चली गयि। ओकरे पेटे मा हमल रहइ। कुछु बेरि मा ओकइ हमल गिरि परा। अब तउ ओकरे घरे मा कोहराम मचिगा कि मुरई नायिं दिहेनि गिरि परा। अहिरू लाठी लिहे भँयिसि चरायि के आवत रहेनि। सुनेनि बसि लाठी लयिके दउरा आयेनि कहयि लागेनि कि ये मेहरारू का मुरई नायिं दिहेन उही कइ मारा लरिका गिरिगा। कितउ लरिका देयिं कि तउ हम एनका मारि डारब। पण्डित महराज सिपारिस किहेन कि सुना हे भयिया जउ मरि जउब्या तब हम कइसे बरधवा पाउब। चला येकइ फैसला राजा विकरमाजीत करिहैं।

तीनिउ जने राजा विकरमाजीत के हियाँ चलि परेनि। अब साथे मा भगत, पण्डित, अउ अहिर राम चलेनि। आगे आवा थयेनि कि देखत बाटेनि एकठी घोड़ा कइ बैपारी घोड़ा बेंचि के आवत रहा अउ दुसरी ओरी बेंचयि जात रहा। एक घोड़ा चना के खेत मा परिगा। बैपारी कहेसि कि हे भयिया तनी ढेला से मारिद्या हटि जायि न खायि। भगत ढेला लयिके मारि दिहेनि घोड़ा मरिगा। अब ब्योपारी येनके जिउ का अँटका कहत बा कि कितउ घोड़ा द्या कितउ दाम। ना देब्या तउ मारि जाउब। अब पण्डित अउ अहिरू

दुयिनउ जने सिपारिस करयि लागेनि कि हे ब्योपारी भाय जउ एनका मारि जउब्या तउ हमरे सबकइ मामिला बेकार होयि जाये। आवा तुहू राजा विकरमाजीत के हियाँ चला, उहीं एकयि फैसला होयि जाये।

अब चारिउ जने भगत, पण्डित, अहिर, ब्योपारी चलि परेनि। आवत आवत काफी दूरि चला गयेनि। उहाँ एक बरगद कइ सघन छाया देखि के अराम करइ बेर उतरि परेनि। सब तउ आपन फैसला करावइ जात हयेनि भगत तउ जिनगी से उबियायि के सोचेन कि इही पेड़े से कूदि के मरि जाई, छुट्टी मिलि जाये। उहाँ एक ओरी सुन्नर तलाउ रहा। वहिमा एकठी धोबी कपड़ा धोवत रहा। ओकइ भाई उही पेड़े के तरे सोवत रहा। भगत पेड़े से कुदबइ तउ किहेनि। नीचे धोबी के सोवत भाये पइ गिरि गय। उतउ मरिगा। भगत बचि गय। अब धोबी कहत बा कि हमार भाय द्या नाहीं तउ हम इही पाटा पइ पटकि पटकि मारि डारब। अब पंडित बरधा के नाते, अहिर बेटवा के नाते, व्योपारी घोड़ के नाते, सिपारिस करइ लागेनि कि मारा जिनि चला तुहूँ राजा विकरमाजीत के दरबार मा तोहरउ फैसला होये। अब पाँचउ जने पंडित, अहिर, व्योपारी अब धोबी ओनका साथे लयि के चलि परेनि। चलत चलत सब राजा विकरमाजीत के दरबार मा पहुँचि गयेनि। दरबार लाग रहा। जायि के आपन उजुरदारी लगायेनि। नम्बर आयि गये पइ पुकार भा। राजा पूछेनि कि तोहार काउ लिहे हयेनि। पंडित कहेनि कि ई तयँ रहा कि बतायि के लयि जायिं अउ लयि आवयिं। नायिं बतायेनि तउ बरधा कितउ दाम देयिं। राजा सोचेनि समझेनि। कहेनि कि भगत तू जा एक अहरा सोलगायि के दुयि साइलि लाल करा। ऊ सायिलि पंडित की दुयिनउ आँखी मा डारि द्या। पंडित काँपइ लागेनि अउ कहेनि दोहाई महराज की हम बरधा न लेबयि।

अबकी अहिरू पेस भयेन कहेनि कि महराज ये हमार या तौ लरिका देयिं या तउ एनका मारि डारब। राजा पूरी बाति बिस्तार से सुनेनि। अउ अन्तमा फैसला दिहेन कि मेहरारू का एनके हियाँ कयिद्या। जब वहि ढंग पइ होइ जाये तउ लियायि आया। अहिर राम दोहाई देयि लागेनि कहँइ लागेनि कि महराज हम लरिका न लेबइ। मेहरारू का उहाँ न जायि देब।

व्योपारी कइ बारी आयि पुकार भा। पूरी हालि व्योपारी अपनी जबानी से कहिगा। राजा विचार किहेनि अउ पूछेनि कि एक्कयि ढेला मारि के रुकि गयेन कि अउर। व्योपारी उत्तर दिहेस कि महराज एक्कयि ढेला मारेनि। येनका बरी कीन जात बा। व्योपारी आपन येस मोह लयि के रहि गय।

अब धोबी राम कइ पुकार भा। पूरी खबरि सुनायेनि। बतायेनि कि महराज हमार भाय मरि गयेनि। भगत बतायेनि कि महराज हम येनही चारिउ जने के घेरि लिहे पइ परान देयि बदे पेड़े से नीचे कूदे मुला हे महराज जी उहीं निचवा एनकयि भाय सोवत रहेन ओनके ओप्पर गिरि परे। राजा पूरी बाति सुनेनि। फैसला दिहेन कि भगत पेड़ के नीचे सोवँइ। धोबी पेड़े से ओनके ओप्पर कूदयिं। इहयि फैसला मानि के राजा दरबारी अउ साथे मा देखयि वालेन कइ भीड़ि लागि गयि। पेड़े के लगे सब केउ आयि गयेनि। धोबी पेड़े पइ चढ़इ लागेनि। कउनू तरह चढ़ेन। पूछेन कहाँ से कूद्या। बतायेन अउर ओप्पर से। एइसे कहत कहत धोबी का पुलुई पइ लइ गयेनि। पुलुइ से कहेनि कि हाँ इहीं से कूदे। धोबी राम नीचे लखेनि तउ चुरकी सोंटा होइ गइ। कहेनि कि दोहाई महराज की हम आपन भाय संतोख कइ लेब हम यहि पइ से कूदि ना पाउब। धोबी उतरि आयेनि सब अपने घरे गयेनि। राजा राज करइ लागेनि परजा सुख।

# हारमती

एक जने रहेन राजा। राजा के सात बेटवा रहेन अउ एक बिटिया रही। बिटिया कयि नाउँ हारमती रहा। राजा मरि गयेन तउ सातउ भयिया परदेसे चला गयेन। हारमती घरे अकेल रही। हारमती बजारे जात रहीं राही मा एकठी डाकू कयि सरदार मिला। ऊ हारमती से पूरी जानकारी कयिके एक दिन डाका डारयि राति की दुआरे आयेन। सात डाकू साथे आयि खड़ा भयेनि। सरदार कहत बा-

हारमती हारमती खोला केवाँर।
देखु तोर सातउ भैया ठाढ़े दुवार।

दुवारे एकठी नीबी कयि पेड़ रहा। वहिमा से आवाजि आयि-

हारमती, हारमती जिनि खोला केवाँरि।
इतउ सातउ ठाढ़ तोहरे जियरा कयि काल।।

हारमती नीबी के पेड़े कयि कहा मानि के केवाँरी नायिं खोलीं। डाकू नीबी कयि पेड़ काटि डारेनि। डारि-पात दूरि फेंकि के फेरि डाकू आयेनि। कहेनि कि

हारमती, हारमती खोला केवाँरि।
देखु तोर सात भैया ठाढ़े दुवार।।

एतने मा नीबी कयि जरि जवन भुईं मा बची बा ऊ बोलयि लागि -

हारमती, हारमती जिनि खोला केवाँरि।
इतउ सातउ ठाढ़े तोहरे जियरा कयि काल।।

डाकू नीबी की जरी का खोदि के बहायि दिहेनि। वहि के अपार धन अउ दउलति का लूटयि अउ छलयि बदे आयि के फेरि अवाजि करयि लागेनि -

हारमती, हारमती खोला केवाँरि।
देखु तोर सातउ भयिया ठाढ़े दुवार।

नीबी कयि एक चयिली भीती के लगे परी रही उहाँ से बोलयि लागि -

हारमती, हारमती जिनि खोला केवाँर।
इतउ सातउ ठाढ़े तोहरे जियरा कयि काल।।

अब फेरि डाकू चयिली का उठायि के फरके फेंकि दिहेनि। अगल-बगल देखि के पूरी सफाई होयि गयि। यहि के बादि फेरि आयि के कहयि लागेनि -

हारमती, हारमती खोला केवाँरि।
देखु तोर सातउ भयिया ठाढ़े दुवार।।

अब हारमती का सचेत करयि वाली नीमी कयि कौनउ सनेस नायिं मिला। हारमती केवारी खोलि दिहीं। सातउ डाकू घरेमा हलि के कुलि लूटि पाटि के चला आयेनि। अन्तमा वयि सभे हारमतिउ का एक डाकू के बँटवारा के हिस्सा के रूप मा दयि घालेनि। हारमती वहि के घरे मा आईं। दुवारे आयि माई का बोलायेस- माई रे माई परछनि करू दुलहिनि लायि बाटी। महतारी परिछन कयि घरमा लायि के बइठायेस। जब घरमा बूढ़ा-बूढ़ी अउ हारमती रहि गयीं तउ हारमती बड़की कराही चूल्हा पयि चढ़ायि के एक कनस्टर तेल खउलायि दिहीं। पहिले बूढ़ा का कराही मा डारि के छानि लिहीं फेरि बुढ़ऊ का। बूढ़ा का घर के ओसारे मा अउ बुढ़ऊ का दरवाजा मा टांगि दिहीं। घरे मा जेतना सोना चानी गहना रहा लयि के भागि आयिं। एक बन पार किहीं, दुइ बन पार किहीं, तिसरे के बादि ओनकयि घर मिला। घरे मा जायि के सोना चानी धयि दिहीं अउ सुख से रहयिं लागीं। वहि कयि सातउ भयिया परदेस से कमायि के आयेन। ओनका सबका पायि के हारमती बहुत प्रसन्न भईं। पूरी हालि हारमती ओनसे कहयि लागीं। भयिया लोगे वहि कयि चतुरई देखिके बहुत प्रसन्न भयेनि।

कुछु दिन के बाद सातउ भयिया परदेस चला गयेनि। डाकू ढेर दिन के बाद उहाँ आयि के वहि के घरे कयि पुरहरि जानकारी कयि लिहेस। एक दिन राति के सात डाकू आयेनि दुवारी पयि आयि के कहयि लाग कि :

हारमती हारमती खोला केवाँर।
देखु तोर सातउ भयिया ठाढ़े दुवार।।

अतने मा नीमी कयि एक चयिली कहूँ खपरयिले परि परी रही जोर से कहयि लागि -

हारमती हारमती जिनि खोला केवाँर।
सात सात काल तोरा ठाढ़े दुवार।।

हारमती बजर केंवाड़ा नायि खोलेस। चोर चयिली का लयि जायि के दूरि फेंकि आयेनि। वहिके घरे के चारिउ ओर कउनो लकड़ी कयि टुकड़ा अउ चयिली नायि रहि गयि। फेरि सातउ जन दुवारे आयि ठाढ़ भयेनि, कहेनि -

• हारमती हारमती खोला केंवारि।
देखु तोर सातउ भयिया ठाढ़े दुवार।।

अब नीमी कयि लकड़ी नायिं बोली। हारमती आपन बज्जर के केवाँड़ी खोलि दिहीं। सातउ डाकू वहि के घरेमा हलि गयेनि। वयि पहिले हारमती का बान्हि लिहेनि फेरि जहाँ जहाँ हारमती सोना चानी अउ गहना धरे रहेनि कुलि लयिके घरे पहुँचा। अब हारमती का बहुत बहुत ताड़ना देयिं लाग। जब जायि जागयि तब बजार केवारी दयि के निकरयि हारमती दिन भयि रोयि के बितावयिं।

एक दिन जंगल मा बयिठी हारमती जोर जोर से रोवयि लागीं। वहि कयि रोउब पसु पछिन का असहि बनिगा। वहि समयि मा वहि कयि सातउ भयिया घोड़ा पयि बयिठि के परदेस से लउटा रहेनि। रोवयि कयि अवाजि सुनि के छोटका भयिया सबसे कहेसि कि हम्मयि जानि परत बा कि हारमती रोवत बार्टी। सब डँटिनि हमार बहिनि हारमती इहाँ कहाँ कयिसे अयिहें? छोटका भयिया सबका रोकि के कहेसि कि नाहीं चलि के देखा। जब लगे गयेनि तउ देखेनि कि हारमती जंगल के बन्दी खाने मा परी बिलपत बा। तरुवारी से छोटका भयिया लोहे कयि छड़ काटि के हारमती का बहेरे किहेसि। घोड़ा पयि पोछे बयिठायि के आगे चलि परा। एक बन पार भयेनि तउ देखत हयेनि कि डाकू कयि झुण्ड आयि परा। सातउ भयिया डाकुन के झुण्ड से लड़ाई कयि के सबका मारि डारेनि। जब डाकुन कयि समूह खतम होयिगा तब जायि के वहिके घर कयि पूरा खजाना उठायि लयि आयेनि। घरे आयि के सुख से रहयि लागेनि।

# लहुरा देवर

एक जने रहेनि राजा। एक जनी रहीं रानी। ओनके छ बेटवा रहेनि। पाँच कयि विआह भा। पाँच पतोह घरे आयीं। रानी पतोहन का बहुत डाहत रहीं। काम तउ बहुत कराईं मुल खायि पिययि का थोर का देयिं। सब भूख कयि मारा दूबरि होयि लागीं। अपुनयिं मा सब अपने दुखे पयि बाति चीति करयिं अउ आँसु कयि धारि बहाँवयिं। एक दिन राजा के घरे उतसउ मनायि जाति रहा। सब पतोहे दउरि-दउरि के काम करत रहीं। दावत कयि सामग्री तयियार करइ मा आपन हाथ देत रहीं। वयि सभयि सोचीं कि आजु सब पेट भरि के खायि का मिलि जाये। वयि सब मनमा सोचीं - "आजु मोरे पुजनी कयि पुजना। फयिलु पेट अँगना केतना।।" जब दावत मा पाँति कयि पाँति उठयि लागि तव एनहूँ सबका रानी रोज केतना भेजि दिहीं। तब तउ एनके सभे का काटा तउ खून नायिं। खायि के पहिले पेटं का समझावयि का परा - "आजु मोरे पुजनी का पुजना। फयिलु पेटु अँगना केतना।। पायेंउ ओतनी कयि ओतना। बटुरु पेट रोज केतना।।"

जहाँ कामे-काजे कयि बाति रही उहाँ तउ दउरत-धूपत बेहाल होयि गईं। मुल खायि पिययि का नायिं पाईं। सब जनी अपुना मा बतलायि लागीं कि बहिनी हमार पाँचउ जनी कयि पेट भरयि का नायिं बदा बा। ई बाति देवर सुनत रहा। आयि के अपनी भउजाइनि से कसम खियायि के पूछेसि सही सही बतावा। देवरी पूरी बाति सुनेसि अउ कहेस कि हम जवन तरकीब बताई उहयि करा तउ तोहरे सभे छुट्टी पायि जाबू। पाँचउ जनी पूछीं देवर कवन तरकीब वतउब्या हमयिं समझायि के बतावा।

देवर कहत वा तू सभी राति की हमरे कमरा मा आवा हमार कपड़ा पहिरि के रूप बदलि के माई के लगे जायि के डाँटा अउ कहा। बुढ़िया हये रे बुढ़िया। जउ बोलयिं तउ कहि द्या कि हम सब महदेवा सैतान हई। तोर छोटका बेटवा खाबयि। तब बूढ़ा तोहँका सबका हाथ गोड़ जोरिहैं। तब कहि दिहा कि अपनी पतोहन का परेसान न किहिउ नाहीं तब राजकाज बेटवा सबका साफ कयि देब। वयि सभे राजकुमार कयि बाति सुनिके तयियार भईं।

जब राति कयि समयि आयि तब पाँचउ जनी जायि के देवरे के कमरा मा करिया कपड़ा पहिरि के हाथे डंडा लयिके करिया रंग से मोछ दाढ़ी बनायि के चलि परीं। मूड़े पयि करिया पगड़िउ बान्हि लिहीं। उहाँ पहुँचि के पाँचउ जनी पहिले तउ बाँस पटकि पटकि बूढ़ा का बोलाईं। कहीं हम महोदव होईं रे महादेवा। बूढ़ा हाथ जोरि के गिड़गिड़ायि लागीं कहीं कि हे महराजउ बतावा काउ चही? हम तोर छोटका लरिका लेबयि। अतना सुनतयि भरेमा बढ़ा कयिउतउ होसि गुल होयि गयि। बूढ़ा दोहाई मनावयि लागीं। कहीं जवन कुछु कहा तवन देईं। मुल हमार भयिया कुसल से रहँयिं। नाहीं हम तउ तोर पूतयि खाब। तयिं बड़ी पापिनि हये। तयिं पतोहन कयि पेट नायिं भरि पउते। तयिं पापिनि हये। अरे महराज हम कबउं अस न करब। हम पतोहन का बहुत मनबायि। खाब-पियब दुरुस्त करबयि। हमरे बेटवा का बचावा महराज। अच्छा जे अब जउ ऐसन किहे तउ तोर लहुरा पूत मारि डारब। अरे महराज हम अब कबउं अस न करबयि। अच्छा जाथई। ऐसन कहि के पाँचउ जनी चली आईं। भेष बदलि के अपने घरे चलयि लागीं तउ देवर पूछेसि का भउजी का हालि रही? अरे देवर तोहार बताई राहि बड़ी गुनकारी रही। अब

वयि बचन दिहेनि कि हम कबउँ पतोहन का दुख न देबयि। पूरी हालि बतायि कि अपने अपने महलि मा सब गईं। सबरे उठिके बूढ़ा पतोहन के मोहारे जायि के मीठी बानी मा कहयिं लागीं कि उठा ये बहिनी सब उठा देखा भोर होयिगा बाटयि। सब उठीं भोरहरयि खायि पिययि कयि सामान आवयि लागि। बूढ़ा खजाना अउ रसोयियां कयि कुंजिउ दयि घालीं। कहीं ल्या बहिनी देखा कुलि तोहरेन सभे कयि आ। हमारि जिनगी कयि दिन कयि अब बा। अब पतोहन कयि राज आयिगा। सब सुखे से रहयि लागीं।

# बाले लखन्दर

एक जने रहेन राजा। एक रहीं रानी। ओनके नगर मा एकठी डायिनि रही। जब राजा के लरिका होयिं तब डायिनि धिगरिन बनि के पहुँचि जायि। लरिका कयि गटई धयिके दबायि देयि। यहि परकार से राजा कयि कुलि छ बच्चा मारि डारेस। सतयें पयि राजा वहिका नायिं आवयि दिहेनि। वयि दूसरि धि ंगरिन बोलायेनि। डायिनि अब नराज होयि गयि। राजा का मालूम होयिगा कि अब ऊ राजकुमार का लखि लिहेसि बा। राजा घरे से बहरे राजकुमार का न जायि देयिं। धीरे-धीरे राजकुमार 12 बरिस का होयिगे। अब नगर कयि अउर लरिकन से राजकुमार बाले लखन्दर से परिचय होयिगा। वोनके साथ खेलयि बरे सउकियायि लागेनि। बहरे निकरि के चोप्पे से खेलयि लागेनि। अब डायिनि ताक लगावयि लागि कि कब एनका काटि लेई अउ मरि जायिं।

एक दिन लरिके कँटिया लगावयि तैयार भयेनि। राजकुमार का जब बोलावयि आवयिं तउ वयि कहेनि कि हमरे कटिया डंडा नायि बा। आजु हम मँगायि लेई तउ विहान चलबयि। बाले लखन्दर राजा के लगे जायि के कहेनि कि हमका कटिया डंडा बनवायि द्या। राजा सोचेनि कि 15 किलो कयि कटिया अउ 15 किलो कयि डंडा बनवायि देई। जहिया न ओनसे उठयि अउ न वयि जायिं। जब कँटिया डंडा लोहार बढ़ई तैयार किहेन अउ एनका दयिगा तब ये कान्हें पयि लटकायि के चलि परेनि। पुरुब के घाट पयि जायि के कँटिया फेंकयि लागेनि। आवत की बाले लखंदर डायिनि कयि पड़हा उजारि दिहेनि। डायिनि कुलि लरिका का डाँटयि अउ मारयि का तैयार भयि। वयि बतायि दिहेनि कि बाले लखंदर पुरुब के घाटे बाटेनि। छी मानुस, छी मानुस करत की डायिनि चलि परी येहरी वहि कयि तेजि अवाजि जब सुनानि बाले लखंदर दुवारे जायि अटेनि। दुसरे दिन वयि उत्तर के घाटे गयेनि। उहूँ डायिनि जानि गयि छी मानुस कयि सबद सुनतयि भरे मा घरे अटेनि जायि। इही परकार से उयि कुलि घाटन से चले आयेनि।

एक दिन कुलि लरिकन के साथे गुल्ली डंडा खेलयि गयेनि। देखेनि कि एकठी बराति जाति रही। पीनस देखि के पूछेनि ई काउ आ यहि मा काउ बयिठा बा। सभे बतायेनि कि दुलहिनि। घरे आयि के नंगायि परेनि कि हमहू दुलहिनि लेबयि। बहुत समझायि बुझायिगा। मुल वयि कहाँ मानाथयेनि। अन्तमा राजा का नाऊ-पंडित का दुलहिनि के खोजे मा भेजयि का परा। नाऊ बाभन जात रहँयि। ओहर से दुयि जन देखुआरउ आवत रहेनि। नाऊ पूछेसि कि कहो भयिया कहाँ जाब्या। वयि बतायेनि कि हम सभे एकठी सादी खोजयि बरे जात बाटी। फेरि वयि नाऊ बाभन से पूछेनि कि तू दुयि जन कहाँ जाब्या। हम सब जात बाटी एक लड़की खोजय। हमरे राजकुमार बाले लखंदर जिद किहे बाटेनि की हम एकठी दुलिहिनि लेबयि। दुयिनउ पच्छ एक दुसरे से मिलि के सादी तयँ कयि लिहेनि। सादी कयि दिन बार निहचित भा। बारात चलयि कयि साज सजयि लाग। चारिउ ओरी गीत बाजा अउ प्रसन्नता कयि लहरि फैलि गयि। सादी कयि दिन आयिगा।

बाले लखंदर नहायि कयि तयारी किहेनि। नहछू नहावन के समयि जुआठे के तरह नागिनि बनी के डायिनि बयिठि गयि। ठीक उही समयि मा एकठी तोता कहयि लाग -

सुना सुना भयिया बाले लखंदर हो ना।
भैया सम्हँरि जुअठवा पयि जायउ रे ना।
भैया उही बीच काली नगिनियाँ रे ना।
भैया डसि ले ऊ अँगुरी के पोढ़वा रे ना।
भैया चलि जयिहं अल्हरा परनवाँ रे ना।।

येतनी बाति सुनि के बाले लखंदर तुरत जुआठे से उतरि गयेनि। नागिनि तुरन्तयि उड़ि गयि। जब वयि नहायि के चलयि लागेनि धोती पहरयि चलेनि तउ फेरि अवाजि आवत बा -

सुना सुना भयिया बाले लखंदर हो ना।
भैया सम्हँरि परदननियाँ उठायेउ रे ना।
भैया इही बीचे काली नगिनियाँ रे ना।
भैया डसि ले ऊ अँगुरी के पोढ़वा रे ना।
भैया उड़ि जयिहें अल्हरा परनवाँ रे ना।।

जब बाले लखंदर परदनी उठायेनि तउ वहिका झटकेनि। वहिमा से एकठी नागिनि गिरि परी। पट्ट कयि आवाजि भयि अउ उड़ि गयि। बड़ी साउधान से कुलि काम सम्पन्न होयि लाग। जब मउर पहिरावयि कइ समयि आयि तउ डायिनि नागिनि कयि रूप बनयि के जायि के वहिमा बयिठी। आवाजि फेरि आयि-

सुना सुना भयिया बाले लखंदर हो ना।
भैया सम्हँरि मउरवा धरायउ हो ना।
भैया उही बीचे काली नगिनियाँ हो ना।
भैया डसि लेयिहें अँगुरी के पोढ़वा हो ना।
भैया उड़ि जयिहें अल्हरा परनवाँ हो ना।।

मउर झारिगा वहिमा से नागिनि हवा बनि के उड़ि गयि। अब बरात चलै बरे तयार भयि। डायिनि जायि के पीनस मा लोह कयि मुनरी कयि रूप बनयि के बयिठि गयि। पीनस सजायिगा। रँग रँग कयि कामद कपड़ा से सजायिगा। बाले लखंदर जब बयिठयि चलेनि तउ अवाजि भयि -

सुना सुना भयिया बाले लखंदर हो ना।
भैया सम्हँरि पिनसवा मा बयिठउ हो ना।
भैया उही बीचे काली नगिनियाँ हो ना।
भैया डसि ले ऊ अँगुरी के पोढ़वा हो ना।
भैया उड़ि जयिहें अल्हरा परनवाँ हो ना।।

पीनस पूरा झारि झूरि के बयिठायि गा। जब पीनस लयि के कहाँर चलेनि तब ऊ डायिनि एक सोने कयि छड़ी बनिके परी रही। कहारे लेयि बदे डोली रोकिनि मुल बाले लखन्दर रोकि दिहेनि। अउर आगे चलेनि तउ ऊ डायिनि नोट बनि के राही मा छितरानि रही। कँहारे ललचियायि लागेनि मुल बाले लखन्दर रोकि दिहेनि। वयि जानत रहेनि कि सब उही डायिनि कयि काम आ। बरात जायि पहुँची। बाले लखन्दर अब कदमि कदमि परयि नोकर चाकर का सचेत किहे रहँयिं।

बाले लखन्दर रानी के साथे महलि मा आयेनि। वनके रहयि बदे राजा एक महल अलगे बनवायि लागेनि। राजगीरन का सचेत कयि दिहेन्हि कि वहिकी दीवाल मा कहूँ छेद न होयि। मुल ऊ डायिनि

एक लगड़ी कयि सींकि दिवाली मा डारि दिहेसि। जउने से आर पार छेदि बनिगा। अब राजा का बड़ी चिन्ता होयि गयि कि बाले लखन्दर कयिसे बचिहैं। राजमहलि मा वयि रहयि लागेनि। जउने दिन डसयि का कहे रही वहि दिन राजा रानी नोकर सब बयिठि के रखावयि लागेनि। जब अधिराति भयि तब सब सोयि गयेनि सबयि निहचिन्त होयि गयेनि। आधी राति के बादि नागिनि बनि के उही छेदे से आयि के सबकी मुड़वारी से आयि के अँगुरी के पोढ़े मा काटि लिहेसि। अब राजा मरि गयेनि। जब बाले लखन्दर की रानी कयि आँखि खुली तउ देखि के बड़ी घबराहट मा परि गईं।

उयि रानी उड़न खटोला पयि बयिठि के अपनी एक सखी के घरे गयिं। सखी का लयि के डायिनि के घरे पहुँची। उहाँ जायि के मामी हऊ हो। नानी हऊ हो बोलावयिं लागीं। अब डायिनि मानुस भच्छउँ मानुष भच्छउँ कहिके दउरि परी। दुयिनउ जन कही नानी नतिनियियिं का। तब रुकि गयि। उहाँ ऊ दुयिनउ जनी कयि स्वागत सम्मान किहेस। तब कहेस हम जात बाटी बाहेर तू दुयिनउ जनी घरे कयि रखवारी किहेउ। लयि जायि के आपन पूरा घर देखायि दिहीं। एक एक चीजु कुलि दुयिनउ जनी पूछि लिहीं कि काउ होयि। एक घरे मा दुयिनउ जनी गईं। पूछी नानी डिबिया मा काउ धरे बाटू। नानी कहीं कि ई डिबिया आगी कयि आ। दुसरी डिबिया पानी कयि आ। तिसरी अन्हीं कयि चौथी मा बाले लखन्दर कयि जिउबा। येहर ई कुलि उड़न खटोला हयेनि कुलि देखायि बतायि के डायिनि चली गयि। दुयिनउ जनी आगी पानी हवा बाले लखन्दर कयि जिउ वाली डिबिया लयि के उड़न खटोला पयि बयिठि लिहीं। सबसे पहिले बाले लखन्दर कयि जिउ छोड़ि दिहीं वहि जी गयेनि। तब उड़न खटोला पयि बयिठि के उड़ि चलीं। ओहर से देखत काउ बार्टी कि डयिनियाँ आवत रही। ऊ खेदि लिहेसि। दुयिनउ जनी जोर से उड़न खटोला उड़ायि के भागीं। जब देखीं कि डायिनि अब पकरि लेयि चाहाथइ तब आगी कयि डिबिया खोलि के वहिका जरायि दिहीं फेरि पानी कयि डिबिया खोलि के मारीं मारे पानी का बूड़ि गयि। तब डयिनियां पउड़त की दउरी तब हवा कयि डिबिया खोलि कै उड़ायि दिहीं। डायिनि जरि मरि के खतम होयि गयिं। दुयिनउ जनी चलीं। सखी का सखी के घरे पहुँचायि के रानी अपने घरे आईं। बाले लखन्दर के साथ सुखे से रहयि लागीं। वोनकयि राजपाट लौटा।

# सोना बहिनी

एक रहेनि राजा, वनके सात बेटवा रहेनि। सातउ बेटवा कयि बिआह भा। राजा के एक बिटिया रही। वहि कयि नाउ रहा सोना। सोना भउजाई पायि के प्रसन्न भईं। सातउ भयिया राजा के मरि गये पयि परदेस कमायि गयेनि। अपनी मेहरारुन का सँवाँचि के गयेनि कि सोना का तकलीफ न होयि पावयि। वयि सब कहि केतउ गयेनि जरूर मुल भउजाई लोगे सोना का बहुत डाहयिं लागीं। वोनकयि ई डाहब देखि सोना बहिनी बहुत दुखी होत रहीं। वोनकयि रोउब बन चिरई अउ जनवरन का असह बनयि लाग।

एक दिन बड़ी भउजाई कहीं कि जा बिना पहरुवा काँड़ी के चाउर कूटि लावा तब खाव देबयि नाहि त न देब। सोना बहिनी कोछे धान लयि के जंगल मा जायि के रोवयि लागीं। वहि कयि रोउब सुनि के जंगल कयि चिरई जुटि गईं। सब धान फोरि के चाउर कयि डारीं। तब सोना घरे लायि के भउजाई का दिहीं। वहिं चउरे का भउजाई जोखीं। एक चाउर कम होयिगा। वहिका एकठी कानी चिरयिया चोराइ लिहेसि। भउजाई कहीं कि जायि के लयि आवा नहीं तउ खाव पियब न देबयि। फेरि सोना बन कयि राहि पकड़ीं। उहाँ जायि के आठ आठ आँसू रोवयि लागीं। चिरई फेरि आईं। पूछीं सोना बहिनी काहे रोवत बाटू? सोना कहीं कि एक चाउर हमार हेरायि गा। हम उही का आनयि आयि बाटी। कुलि चिरई मिलि के एकठी कानी चिरई रही वहिका कहँयि लागीं कि कानी लयि गयि, कानी लयि गयि। तब कानी चिरई लायि के चाउर दिहेस। चाउर लयि के भउजाई का दिहेसि।

तब कहीं कि जा बिना रस्सी अउ लग्गा कयि जंगल से लकड़ी तूरि लावा तब हम खायि पिययि का देबयि। सोना बहिनी रोवत की बीच जंगल मा बयिठीं। उहाँ तमाम बानर आयि के सोना घेरि लिहेनि। पूँछयि लागेनि कि सोना बहिनी काहे रोवत बाटू्? सोना बतायीं कि बिना लग्गा कयि लकड़ी तूरि के लयि जायिका भउजी कहीं हा। बनरे तमाम लकड़ी तूरि के गिरायि दिहेनि। अब सोना बहिनी लकड़ी एकट्ठा कयि के उही के बगले बयिठि के रोवँयि लागीं। एक लम्मा साँप उहाँ आयि के बोला, का बहिनी सोना काहे रोवत बाटू्? भयिया हम यहि लकड़ी का बिना रस्सी का कयिसे लयि जाई? साँप कहेसि कि हम लड़की बान्हि देत बाटी तू लयि चलि के अपने घरे मा पण्डोहे के लगे गिराऊ। सोना लकड़ी लयि जायि के पण्डोहे के लगे गिरायि दिहीं। साँप पण्डोहे कईं भागिगा। अब भउजाइन का बड़ा अचरज भा।

फेरि कहीं कि चलनी मा पानी भरि के लयि आवा। वहिमा रसरी न लगावा। फेरि चलनी लयि के इनारा की जगती पयि बयिठि के सोना बहिनी रोवँयि लागीं! फेरि साँप आइ। इनारा के किरउना से ऊ कहेसि कि सब केउ चलनी कयि छेद बन्द कयिद्या। हम पानी काढ़ि देत बाटी। तुरन्तयि किरौने छेद बन्द कयि दिहेनि। कीरा पानी भरि दिहेस वयि लयि जायि के भउजी का दिहीं। भउजी बहुत अचरज किहीं। तबउ वयि सोना का बहुत डाँटि के घरे से निकारि दिहीं। सोना घरे से जायि के जंगले मा रोवयि लागीं।

सोना कयि सातउ भयिया परदेस से कमायि के लउटा रहेनि। सोना कयि रोउब छोटका भयिया

सुनेसि। ऊ सबसे कहत बा कि हे भयिया कहूँ सोना बहिनी रोवत बार्टी। नाहीं इहाँ सोना बहिनी कहाँ अयिहैं। नाहीं भयिया ई रोउब सोना बहिनी कयि होयि, दुसरे कयि नायिं। जायि के देखत हयेनि कि ऊ सोना बहिनी कयि रोउब रहा। लगे जायि के कुलि हालि मिली। सोना बतायेस कि भउजी हमारि बड़ी दुरगति किहीं। सातउ भयिया साथे मा लियायि के सोना का आयेनि।

जब वयि सभे घरे पहुँचेनि तउ पूछेनि सोना बहिनी कहाँ बार्टी? कहीं कि दूध भात खायि के सोने की पलँग पयि सोवत होयि हयिं। वयि सभे कहेनि कि सोना बहिनी का बोलावा तब हम सब पानी पियब। अन्तमा सातउ भयिया लोहे कयि कराही चढ़ायि के करू कयि तेल खूब खउलायेनि। खउलायि के सातउ जनीं का वहिमा किरिया देवायेनि। पहिले बड़ी भउजी कयि बारी आयि। कहीं -

ताई ताई ताई। जे ननदा सताई।
करहिया भयि तेलवा मा जरि जुरि जाई।
नाहिं त पार उतरि जाई।।

वयि जरि गईं। इही परकार से छ जनी जरि गईं। सतवीं दायिं सबसे छोटि भउजाई कयि पारी आयि। वयि कहीं -

ताई ताई ताई। जे ननदा सताई।
करहिया भयि तेलवा मा जरि जुरि जाई।।

छोटकी भउजी नायिं जरी। पार उतरि गईं। सव मिलि के साथे रहयि लागेनि। जे जेस किहेस, ते तेस भोगेस।

# लहुरी अउ जेठू

एक जने रहेनि राजा। ओनके दुयि लरिका रहेनि। लहुरी अउ जेठू। राजा रानी के मरि गये पयि लरिके छोट छोट रहेनि। मुनीम राजा कयि पूरा राज धीरे-धीरे बेंचि के भागि गयेनि। राजा के लरिकन पइ भारी मुसीबति आयि परी। दुयिनउ जने गय परदेस। परदेस जायि के दुयिनउ जने कुछु दिन कमायि के गठरी बान्हि के चलि परेनि। बड़कू छोटकू से कहेनि कि तोहरी गठरी कयि खायि पी जायि जहिया हलुक होयि जायि। लहुरू कयि रासन चुकिगा। अब भूख लागे पयि बड़कू से मांगेनि कि भइया आपनि गठरी खोला। एक ठी जंगल मा टुटहा इनारा परा। बड़के कहेनि चारि लोटा पानी काढ़ा नहायि लेई। काढ़ेनि अउ बड़ा भाय जेठू नहायेनि। नहायि के सेतुवा निकारयि लागेनि। छोटकू नहायि बदे कपड़ा काढ़ि के पानी भरयि लागेनि। डोरी कयि पूछेटा दबायि के बड़कू ठेलि के डोरी खींचि लिहेनि। वइ चेल्लानेनि कि हे भयिया ई काउ किह्या? मरे-मरे....... चाहे मरा चाहे जिया अब हमार खाब्या उही मा खा। कपड़ा अउ साग सामान सब लयि के चलि परेनि। इनारा मा चेल्लात चेल्लात गटई बइठि गयि। इनारा के खोड़रे मा जायि के बइठेनि। कुवाँ के बगले एक पेड़ रहा अउ पेड़े के बगले एक बिल्नि रही। पेड़ा मा ब्रह्म आ बिली मा विषधर साँप रहत रहा। दुयिनउ मा दोस्ती रही। राति की ब्रह्म अउ साँप बतलायिं। कीरा पूछेसि कहो भयिया राजा की लड़किया के लाग बाटूया। कुलि कयि चुकेनि छोड़त नायिं बाटूया। जब झारयि लागँयि तब पहिलेन हटि जायि। ओझा बैद केउ पता नायिं पायेनि। का करब्या भयिया यहि दुनियाँ मा गुनियाँ कमयि बाटेनि। हमार तउ सहलयि. दवायी बा। मुल एका केउ करेस नायिं। एक कण्डी सोलगायि के चामे कयि पनहीं घुसेरि देयि। जब पनहीं सोलगयि लागयि तब लड़की के नेकुरा के लगे लयि जायि के धुवाँ करयि तब हम तुरन्तयि भागि जाबयि। एतनी सहलि दवायी बा राजा का जनी कयि हजार खर्च कयि दिहेनि। परेसान होयि के राजा ऐलान किहेनि कि जे एका अच्छा कयि दे वोका आधा राजपाट दयि देब अउ बिटिया कयि बियाहउ उही के साथ कयि देबयि। लहुरू खोंड़रे मसे कुलि सुनत रहेनि। अब ब्रह्म पूछत बा कहो साँप भाय तोहरी मानी के तरे केतना बड़ा खजाना वा? हमरी मानी के तरे भयिया सात गाड़ी खजाना बाटयि। जौने मा चारि गाड़ी मोहर अउ तीनि गाड़ी रुपिया बा। इहिउ कयि साफयि दवाई बा। सात हण्डा पानी गरम कयिके केउ डारि देयि बिली मा हम मरि जाबयि। लहुरू इहउ सुनेनि। सबेरे ब्रह्म अपनी बिटिया के हियाँ चलागा। एक मनई आयि इनारा मा लोटा डोरी ओरमायेन त हाथ मोह धोयेस। रोज आयि के ऊ इहीं सबेरे कयि क्रिया करत रहा। चलत कि फेरि लोटा बोरेस तउ वयि पकरि लिहेनि। मनई चिहुँकि गा कि के आ जे हमार लोटा पकरि लिहेस। ये बतायेनि भयिया हम मनई हई। हम्मइ निकारि ल्या। दया लागि ऊ निकारि दिहेसि। उही जंगल मा आपनि धोती गारि गारि के आधी पहिरि आधी झुरवायि के घरे बरे तयियार भा। धोती फारि के दुयि टुकड़ा कयि दिहेसि। एक ठी पहिरि के एकठी कयि चारिउ टोंग बान्हि के कुछु इटकिनि बिटकिनि जड़ी बूटी धयि दिहेनि। एकठी टुटी पनहीं मिली उहउ दयि लिहेनि। राज दरबार के लगे जाइ के बैद बैद करयि लागेनि। रानी सुनी तउ बोलवाईं। राजा कहेनि कि बड़े बड़े बैद के लगे जायि के देखावा काउ एनका देखउब्या। राजा साहब

हम जरूर देखब राजकुमारी का। देखेनि कहेनि कि एक कण्डी लावा। कण्डी आयि। कण्डी सुलगायि गयि उही मा पनहीं डारि दिहेनि। जब पनहीं सोलगयि लागि, उठायि के नेकुरा के लयि के सुँघायेन। राजकुमारी चेल्लायि के खड़ी होयि गयि। फेरि बयिठि गयि। ब्रह्म अब भागिगा। ओहरी राजा डुग्गी पिटाये रहेनि कि जे अच्छा कयि दे आधा राज अउ राजकुमारी संकलपि उठे। अब राजकुमारी पूरी अच्छी होयिं गयिं।

अब नारी देखि के बैद पूर्ण स्वस्थ घोषित कयि दिहेस। राजकुमारी उठि के बयिठि गयि। अब कउनो तकलीफ नायि बतावति बा। राजा कहेनि के हे बैद! तुम हमारे महल मा कुछु दिन बरे अतिथि बना। राजकुमारी कयि स्वास्थ्य देखि के आगे काम होये। राजा बैद का अच्छा कपड़ा पहिरयि का दिहेनि। कुछु दिन के बादि राजा आधा राज अउ कन्या कयि संकलप कयि दिहेन। अब लहुरू राजा होयि गयेनि। ओनकयि बहुत बड़ी कोठी बनयि लागि। उहीं पयि एक दिन जेठू आयेनि। नौकरन से कहेनि कि इहिं इनारा मा झुखिया गिरा रहा। बचा कि मरिगा? झुखया जिनि कहा भयिया ओतउ राजा होइगै। जब राजा झुखिया कयि नाउ सुनेनि तउ मारयि कयि धमकी दिहेनि। पूछेनि के झुखिया कहेस? जे कहे रहेनि ओ आगे वाले यात्री का कहेनि। आगे वाला अउर आगे वाले का कहेनि। जेकहे रहेनि वयि बोलायि गयेनि। जेठू गय राजा के सामने। राजा डाँटि के झुखिया सबद कहयि का पूछेनि। अब जेठू समझि नायि पावत बाटेनि। बोलि नायि निकरी बा। गोली मारयि कयि अदेस दिहेनि। जब खड़ा कयि के गोली मारी जायि कयि अदेस देयि चलेनि तब लहुरी जेठू का चीन्हि लिहेनि। वार करयि का रोकि के लहुरी जेठू के गोड़े पे गिरि परेनि। कहेनि का भयिया। तोहारि कइसे बीतत बा। हम्मयि तउ इनारा मा ठेलि के हमार बड़ उपकार किह्या। जेठू तरर-तरर आँसु चुवावयि लागेनि। जउ हमरे साधे दुसमन कयि बेउहार न किहे होत्या तउ आजु हमहूँ तोहरिनि की नायिं होयिति। हम्मयिं उहीं कुवाँ मा पता लागि कि सात लढ़िया रुपिया अउ मोहरि कयि खजाना गड़ा बा। अब ओका लयि आवयि का चाही।

सात लढ़िया तयार भईं। पाँच हण्डा अउ एक लढ़िया उपरी लादि गयि। हण्डा चढ़ि गय। पानी भरा गा। जब पानी खउलयि लाग तब कुआँ के बगले बिली मा पानी डारि जायि लाग। एक एक कयिके पाँचउ हण्डा पानी उही बिली मा डारि दिहेनि। पाँच हण्डा मा बिलि भरि गयि। जब कीरा गन्हान तब जानि गय कि अब मरिगा कीरा। अब बिलि खोदयि कयि अदेस दयिगा। फरुहा चलयि लाग। जेसस नीचे जायि लागेनि ओसस बिलि फयिलि होति जायि लागि। मरा कीरउ मिला। ओकरे बादि बज्जर कयि तावा मिला। तावा तूरा गा। वहि मा चांदी कयि तीनि गाड़ी रुपिया रही। वहिका मनई मजूर ढोयि के गाड़ी मा भरयि लागेनि। तीनि लढ़िया तउ ओसे भरि गयि। जब रुपिया ढोयि उठी तउ ओकरे नीचे फेरि बज्जर कयि तावा मिला। छेनी वाले मनयिनि का बोलायि कि कटावयि लागेनि। काटत-काटत महीनन लागि गा। जब बज्जर कयि तावा कटा तउ देखिगा मोहर कयि चमक ऐसन अँजोर किहेस जयिसे किरिनि फूटी होयि।

मनई लागि गय मोहर ढोयि के चारि गाड़ी मा भरि दीनि गयि। सिपाही लयि के दरबार का आयेनि। उही समय मा राजा मतलब सास ससुर दुयिनउ जने कयि मरन होयिगा। वहि महलि मा जेठू का स्थान दिहेनि। अपुना नयिकी मा रहयि लागेनि। राज काज दुयिनउ जने के सहयोग से चलयि लाग।

ओनकयि राज चलयि लाग परजा सुख कर्रयि लागि।

# फूल झरी रानी

एक जने रहेन राजा। ओनके रहेन तीन बेटवा। राजा के दुइ बेटवा कइ बिआह भा। दुइ पतोह आईं। छोटके बेटवा कइ बिआह भा। दुलहिनि दुवारे आइ। दुलहिनि बहुत नीकि रही। बड़की पतोह मियाना से उतारइ गइ। ओकइ सुन्नरता देखि के बड़की पतोह ठगी रहि गइ। ऊ कल्लेसे निकरि के बहेरे आइ। मन मा विचार करइ लागी। अब हमार मान सम्मान घटि जाये। बड़ी सोन्नरि पतोह आइ गइ। मझिली से मिलि के उहू का पूरा पाठ पढ़ायेस। दुइनउ जनी एक्कइ बाति कहइं लागीं। हमरे देवरे कइ जिनगी बरबाद कइ दिहेन। ई कोढ़ी आ। ओकरे पूरे सरीर मा कोढ़ कइ छाया फइलि चुकी बा। अइसन हल्ला मचाइ के पूरे राजघर मा बज्र अस गिरायि दिहीं।

राजा का बड़ा दुख भा। अलगे रनिवास से दूरि घोड़सारि मा ओका जगह दिहेन। जेतना सामान ओकरे साथे आइ रहा उही घरे मा पहुँचाइ दिहेन। फूलझरी रानी तउ ईरसा द्वेस कइ सिकार बनि गईं मुल अपने सुघर सलोने रूप अउ करतब से घोड़सारिउ का सरग से सोन्नर बनाइ लिहेस। ऐसन रूप तीनि लोक मा नाइ रहा। ओकरे हँसे पइ फूल झरत रहा। ओकरी सोन्नरता पइ चनरमा सरमाइ जात रहेन। बिजुली कइ फूल ऐसन सरीर, सुन्नरता कइ प्रतिमूरति जेस रूप आजु घोड़सारी मा परा बा। हे भगवान तोहार ई केस बानि बा। पूरा राज ओहरी नाइ ताकत बा।

एक दिन कइ बाति आ। सबेरे रानी बाहेर घोड़सारी से निकरीं। अहीर कइ एक औरति देखि लिहेस। ओकरे चाल-ढाल से ओकइ करतब अउ रूप कइ वास्तविक कलपना कुछु अउरइ किहेस। दुइ चारि जनी से कहि दिहेस कि रानी बड़ी सुन्नरि बाटीं। कुछु जनी अब सुबह अउ साँझ की ओसे आड़े ओटे मिलइ लागीं। एक दिन एक अहिरे कइ बिटिया फाट पुरान कपड़ा पहिरे घोड़सारी की ओर निकरी। भूलिके रानी के घरे में चली गइ। ओका देखि के रानी परी अस पाईं। फलेल, काजर लगायि के बार सँवारि के वापस किहीं। ऐसन सुन्नरि सजावट वहिं राज मा केउ देखे नाइ रहा। अंग अंग मा कला कइ माला पहिराइ दीन गइ रही। धीरे धीरे छोटकी रानी कइ सुन्नरता कइ महँक चारि ओर फइलइ लागि। रानी आपनि पतोह देखइ बरे सब कइ आँखि बचायि के आईं। घोड़सारि वहिं महलि से सौगुन सजी अउ सुगन्धि से भरी मिली। सासु कइ आगमन सुनि के पतोह चरनोदक लइ के बहु परकार से कृतज्ञता कइ भाउ प्रदर्सित किहेस। रानी अब रोज आवइ जाइ लागीं। ओकरे सुन्नरता, कला, अउ साज-बाज का देखि के रानी दुइनउ पतोहन कइ चालबाजी जानि लिहीं।

राजा के दुइनउ पतोहन का पता चलिगा कि अब ओनके साँठ-गाँठ कइ भण्डाफोड़ होइ जाये। जब तक दुइनउ पतोहे ओका भोजन मा विष दयि के मारइ कइ सलाह किहीं तब तक सभै गाथा पूरे राजा अउ दरबारी सबका मालूम होइ चुका रहा। वास्तविकता जानइ बदे राजा स्वयं भवन मा गय। वहिं जायि के देखत बाटेन कि महल सरगेउ से सोन्नरि लागति बा। चारिउ ओरी साज सज्जा कइ अमूल्य निधि

वहिं उतरि परी बा। रूप देखत भरे मा राजा अपुना का भूलि गय।

दुइनउ पतोहन कइ कुआदति से हर आदमी परिचित होइगा। राजा जाइ के अदेस दिहेन कि दुइनउ पतोह घुड़सारी मा जाइं। नई पतोह राजमहलि में रहे। अब घोड़सारि गन्हाइ लागि। अउ राजमहलि अपुना का धन्नि समझत बा। वहि रानी का पाइके महलि सोने कइ बनि गइ। सुर्ज चनरमा ओकर रूप का देखइ बरे फेरी लगावइ लागेनि। किहिउ कइ यस कीरति पाइ के केतना दिन तक छिपाइ रखि जाइ सका था।

# इन्द्र कइ परी

एक जने रहेन राजा। वोनके रहेन सात लरिका। छोटके बेटवा के हिरदय मा अपनी नई भउजी के हाथे कइ पानी पिअइ कइ बड़ि सउक रही। ओनके हाथे कइ पानी बड़ा मीठ लागइ। एक दिन भउजाई डाँटि के कहेस कि जा तुहू सादी करा। इन्द्र कइ परी लावा उही से पानी माँगा। लरिका कइ हिरदय कोमल रहा। ओकरे ठेस लागि गइ। ऊ इन्द्र-परी के खोज मा निकरि परा। जात-जात बहुत दूरि निकरिगा। केतना दिन अउ राति फरे फूले पे बितइ लाग। एक साधू कइ कुटी मिली। चारिउ ओर घोर बन रहा। जउने में अनेकन खूँखार जानवर रहा थेन। वहिमा एक मन्दिर मिला। जउने मा एक सोन्नरि बाटिका, फुलवारी, कूप, बउली सब अपने अहथान पइ दुरस्त मिलेन मुल पेड़ पउधे सुखान जात रहेन। वहिं कइ घास कसम खायि के कहत रहीं कि कइयउ महीना से मनई वहिं नाइ आइ हयेन। जब लरिका धीरे धीरे डेरात की वहिं आस्रम मा आइ तउ देखत बा कि साधु महराज सोवत बाटेन। ओनकइ पूरी बेवस्था बिललाति बा। लरिका पेड़े की सीतलि हवा मा आपन स्रम खोयेस पानी पियेस। कुछु जंगली फल अउ आस्रम के फल से पेटउ भरेस। साधू के जागयि कइ प्रतिक्षा करइ लाग। कुआँ से पानी काढ़ि-काढ़ि पूरी फुलवारी सींचेस, गोड़ेस अउ आस्रम कइ सफाई किहेस।

साधू बाबा अपनी योग नीनि से जागेन। जउ देखेन चारिउ ओर हरी-भरी फुलवारी, स्वच्छ आसरम तउ ओनकइ मन प्रसन्न भा। फेरि सोचइ लागेनि कि के आ जे एतनी मेहनतैं कइ के एका सजाये बा। देउ-पूजा से लइके फुलवारी तक अँगना से लइके दुवारी तक सींचि गोड़ि, लीपि-पोति के दुरुस्त किहे बा। लरिका फूल फल आनयि बरे गा रहा। थोरिक बेर मा जब लउटा फरकेन से साधू का जाग देखेस। ऊ अपने मने मा सोचत बा कि साधू निहचय हमइ मरिहइं। काहे से कि साधू बाबा के लगे चलब जवन आये तवन देखि जाये। आइके बाबा के गोड़े पइ माथ धइ के प्रणाम किहेस। बाबा असिरबाद दिहेन अउ पूछेन कि बेटवा तू एतना सुकुवार, सोन्नर, राजलच्छन वाला तू के हया? गदेला कुलि बताइ लइगा। अन्तमा आपन असिल उद्देसउ बतायेसि। बाबा कहेनि कि बेटवा तू एतनी कम उमिरि मा घरे से काहें निकरि पर्‌या। हे भगवान! हम भउजी के ताना मारे पइ इन्द्र परी खोजइ चलि परे। आप हमका सही राहि बतावइं। जउने से हम इन्द्रपरी पाई, बाबा से निवेदन किहेस। बाबा ओकरे हिरदयि कइ बाति अउ गहिराई समझि गये। कहेन कि बच्चा हमार हाथ तोहरे माथे पइ बा। जउ तू यहि कठिन काजे बरे जाबइ करब्या तइ ई हमार सोंटा लइल्या तउ जा। लरिका पूछेस कि यहिं सोटा मा कवन गुन बा बाबा? बच्चा तोहरे ऊपर जब संकट परे तू एका जोहा्‌रया तउ ई तोहार सहायता करे।

बाबा के गोड़े मा फेरि-फेरि प्रणाम कइके लरिका चलि परा। जात-जात एक बन पार किहेस, दूसर बन पार किहेस? तीसर बन पार किहेस, चउथे मा फेरि एक साधू कइ आश्रम मिला। वहिं रुकि के वहिकइ फूल, फुलवारी, सींचेस-गोड़ेस आस्रम कइ सफाई किहेस। असनान-धियान, पूजा-पाठ समयि-समयि पइ करइ लाग। ऊ साधू बाबा का बिजनउ डोलायि के हवा किहेस इहां तक कि दिठाइ के गोड़ हाथ दाबेस। वइ छ महीना सोवत रहेन अउ छ महीना जागत रहेन। जब बाबा सोइ के उठेन तउ देखत

बाटेन कि हरियरि कियारी, स्वच्छ आस्रम, लिपा-पुता धाम, पूजा पाठ सम्पन्न मन्दिर, बड़ा अचरज भा कि ई काम के किहेबा? जउ उठेन तउ ओनकइ देह फुर्ति अउ स्वस्थ मिली। आगे बढ़ेन देखेनि एक गोर रंग, स्वस्थ देहिं, लरिका फुलवारी सींचत बा। साधू का उठा देखि के आइ ओनके गोड़े पइ भहरायि परा। बाबा वहिं लरिका का उठायि लिहेन। साथे आस्रम की चउकी पइ बइठि के पूछेन कि बेटवा तू कहाँ से आवा थया? कहाँ जाब्या? तोहार उद्देस्य काउ आ? लरिका बतायेस कि बाबा हम राजा कइ बेटवा हई। भउजाई के ताना मारे पइ इन्द्र परी खोजइ निकरि परा अही। हम्मई सही राहि अउ असिरबाद देयिं जउने हमैं सफलता मिलइ। साधू बाबा ओनका भली परकार से समझायि बुझाइ के आपन लोटा डोरी दिहेन कि जा बेटवा तोहारि मन कामना पूरे। ई लोटा डोरी तोहार कउनी परेसानी आये पइ सहायता करिहँइ। लरिका बेरि-बेरि प्रनाम कइके आगे बढ़ा। एक वन पार किहेस, दुइ बन पार किहेस, तिसरे मा एक तपसी कइ आस्रम मिला। उहाँ जाइ के देखत बा कि साधु तप-रत हयेन। फुलवारी झुरात बा, आस्रम मा खरपतवार भरिगा बा। फुलवारी सींचेस अउ गोड़ेस, आस्रम कइ सफाई किहेस, मन्दिर मा पूजा पाठ किहेस, कइयउ महीना कइ समयि उहाँ दयि घालेसि। आपन नित्य-क्रिया नियम से लइके समयि बितावइ लाग। छ महीना के बादि जउ साधू जागेनि तउ आस्रम कइ सजावटि, अउ हरियरि घासि, फूल पाती देखि के अँगुरी पइ महीना गिनेनि, तब ओनकइ धियान आस्रम कै सफाई लिपाई-पुताई पइ आइ। एतने मा लरिका जंगल से कन्द मूल बइरि लइके आइगा। बाबा का जाग देखि के गोड़े पइ ओलरि के प्रनाम किहेस। ई लरिका के परिस्रम कइ फल समझि के साधू बाबा प्रसन्न होइके आसिरबाद दयि के हालि-चालि पूछइ लागेनि। लरिका बाबा से कुलि बतायेस। अन्तमा इहउ बतायेसि कि हम इन्द्रपरी के खोज मा जाबइ। बाबा मारग कइ दुरगम कहानी कहि सुनायेनि। अपनि लगनि अउ उतसाह कइ भाउ फेरि से जनायि के प्रनाम किहेस। बाबा बतायेनि कि बच्चा इन्द्र पुरी मा रोज नाच गान कइ आयोजन होथइ। तू वहिमा जाया। जब तबला मृदंग बाजयि लागे, एक किनारे बइठि जाया अउ कह्या कि 'तबला खूब बना तबलची सार काना'। तीनि दांयि कहब्या अउ ऊ तबला तोहँइ दइदे तब लइके बजावइ लाग्या। अरे बाबा हम तबला बजावइ नांइ जानिति। हमार असिरबाद उहाँ काम करे तू बताया। तोहार वादन देखि के इन्द्र प्रसन्न होइहें, तउ तोहंसे वरदान माँगइ का कहिहें। तब बच्चा तू इन्द्र कइ परी माँगि लिह्या। जउ बेरावई कइ बाति चले तउ बच्चा जवनि घूरे पइ रहे, माछी भेनकत रहे, उहइ मांग्या। अब जा हमार भभूत दइल्या। जउ कउनो संकट परे तउ एक चुटकी लइके फूंकि दिह्या।

लरिका आसिरबाद लइके गोड़े मा बिजुली कइ चालि लिहेस अउ राहि पइ चलि परा। कइयउ बन नदी समुद्र पार करत की राजा कइ ऊ बेटवा इन्द्रपुरी मा पहुँचि गा। साँझ की नाच-गान सुरू भा। ओउ एक कोने मा जाइ के बइठि गयेन। उहीं से जोर से कहत बाटेन कि 'तबला खूब बना तबलची सार काना'। थोरिक बेरि बादि फेरि कहेनि। जउ तिसरी बेरि कहेनि तउ तबलचिया तबला एनकी ओर रिसिहा परिके फेंकि दिहेस। वसि काउ पूँछइ का वहिं लरिका कइ तबला वादन सुरू होइगा। ओकरे वादन पइ इन्द्र मोहित होइ गयेन। कहेन कि बेटवा काउ चाहाथ्या। वइ आपन मतलब बताइ दिहेन। हम्मइं इन्द्र कइ परी चाही। इन्द्र महराज बहुत लालचि दिहेन मुला ऊ लरिका अपनी जिदपइ अड़ा रहा। अन्तमा बेरावइ कइ बाति चली एक से एक सोन्नरि इन्द्रपरी सजी सजाई गईं। साधू बाबा कइ बाति यादि रही। दिखावा वाली परी का चुनाउ न कइके घूरे वाली का बेरायस। अन्तमा परी आपनि बाँसुरी दयिके कहेस कि अब हम तोहारि होबइ करी जब तोहरे जरूरति लागे तू बाँसुरी बजायि दिह्या। राजकुमार प्रसन्न होइके बाँसुरी लइ लिहेस। उहाँ से चलि परा। सबसे पहिले इन्द्र भगवान का प्रनाम कइ के प्रसन्नता हिरदयि मा भरि के बढ़ा।

जात-जात साँझ होइ गइ फेरि एक साधू की कुटी पइ आइके रुका। बाबा पूछेन बच्चा कहाँ से

आवत बाट्या? महराज हम तउ इन्द्र परी लइके आवत बाटी। बच्चा हमहूं का देखायि द्या। बाबा आधी राति की देखाउब। जब राति कइ खान-पान होइगा, आधी राति भइ तब बाबा के लगे बइठि के बाँसुरी बजाइ दिहेस। बाँसुरी बाजत भरे मा इन्द्र कइ परी सुन्नर रूप सजाइ के आइ गइ। नाचब गाउब सुरू कइ दिहेस। साधू बाबा बहुत प्रसन्न भयेन। वइ कहेन कि बच्चा हमारि संख लइ लेत्या। हम्मइ बाँसुरी दयि देत्या। बाबा तोहरे संख मा कवनि विसेसता बा। बच्चा जवनि इच्छा करब्या ई पूरा कइदे। आपनि कामना कहिक संख बजायि दिहे पइ उ काम तुरत होइ जाये।

अरे बाबा तोहरे संख मा तउ बहुत गुन भरा बा, ल्या बाँसुरी संख हमका द्या। अदला बदली कइके जब लरिका चलइ लाग तब सोंटा डोरी का भेजेसि कि जाइके बाँसुरी लइके आवा। वहि लालची साधू का डोरी बान्हि के गिरायि दिहेस सोंटा राम मय सोंटा कइ प्रहार करइ लाग। साधू चिल्लायि कि अपने जान का बचावइ खातिर पुकारइ लागेन। डोरी सोंटा बाँसुरी के साथ चला आयेन। अब लरिका आगे चला। ओनके लगे अब लोटा, डोरी, सोंटा, बाँसुरी, संख, ऐसनि महँगि वस्तु होइ गई।

जात-जात फेरि एक साधू कइ कुटी परी। साधू पूछेनि बेटा कहाँ से आवा थ्या? राजकुमार कहेनि कि बाबा हम इन्द्र कइ परी आनयि गा रहे। 'मिली कि नांइ'? बाबा पाइ गये। 'बच्चा हमहूँ का देखायि देत्या।' हाँ बाबा आधी राति की देखाउब। जब आधी राति होइ गइ तब राजकुमार बाँसुरी बजावइ लागि। एतने मा इन्द्रपरी आइके नाचब गाउब अउ मनोरंजन करब सुरू कइ दिहीं। यहि नाच-गान से साधू बाबा बहुत खुस भयेन। सबेरे कहेन कि बच्चा हमार हण्डा लेइलेत्या अउ बांसुरी दइ देत्या। बाबा तोहरे हण्डा मा कवन गुन बा? बच्चा यहि हण्डा मा अस गुन बा कि चाहे जवन मंगब्या तवनइ मिले। केतनौ भीरि होइ जाइ जवन चाहइ तवन खियावइ। अरे बाबा तब तउ तोहरे हण्डा मा बहुत गुन बा, ल्या बांसुरी द्या हण्डा। हण्डा लइके आगे बढ़ेन अब ओनके पास लोटा, डोरी, सोंटा, संख अउ हण्डा अस बहुत मूल्यवान वस्तु होइ गइ।

जब कुछु दूरि आयेन तउ डोरी सोंटा का भेजेनि। डोरी छानि के गिराइ दिहेस, सोंटा दोंइ-दोंइ लाग मारइ। साधू चेल्लानेनि कि हमार जान छोड़ा ल्या लइजा बांसुरी। बांसुरी का साथे लइके चला आयेनि। चलत-चलत राजकुमार एक बन पार भयेन, दूसर बन पार भयेन तिसरे के बाद आपन घर परायइ। आधी राति मा गाउँ के बाहेर आइ के पहुँचि गयेन वहिं पहुँचि के एक महल कइ कामना कइ के संख बजाइ दिहेन। देखत भरे मां सोने कइ महलि तयार होइ गइ। राजकुमार उही मा सयन किहेस। नाचगान भा हण्डा मधुर अहार दिहेस। सबेर भा चारिउ ओर हल्ला मचिगा कि के राति भरे मा महलि बनवायि लिहेस। सबेरे राजा कइ सिपाही देखइ आयेन। राजा अपने छोटके बेटवा कइ आउब सुनिके बहुत खुस भय। सबेरे सारे संसार का दावति दइ गइ। भीड़ एकट्ठा होइ लागि। खान-पान कइ बेवस्था न देखि के राजा का बड़ा दुख भा। छोटे राजकुमार का बोलाइ के बतायेनि कि बेटवा सारी दुनियाँ तउ नेवति दिह्या अब इज्जति कइसे बचे। राजकुमार कहेन कि पिताजी आप न घबरांइ, हम कुल परबन्ध करब। चारिउ ओर हाहाकार मचा बाटइ। दूरि दूरि ले टेन्ट लागि बाटइ। इन्द्रपरी कइ नाच गान होत बा। राजकुमार अपनी भाभियन का इन्द्र परी देखायेनि। सब बहुत खुस भईं। खायि पियियि कइ समयि आइ। राजकुमार हण्डा से बारह परकार कइ व्यंजन मांगि के सबका खियावइ लागेनि। एतना बढ़िया खाब आजु तक केउ खाये नाइ रहा। एक्कइ पांति मा सब बेवस्था होइ गइ। पता नाइ लागि पायेसि कि के कुलि परबन्ध किहेसि।

राजकुमार कइ ई परबन्ध देखि के कुछु जने खुस भयेनि, कुछु जने जरइ लागेनि। ओनकइ भउजी जानि गईं कि कुलि करामात बँसुरियइ मा बाटइ। राजकुमार इन्द्रपरी के साथे सोने की महलि मा स्वर्ग कइ सुख भोगइ लागेनि।

# राजा कइ नियाउ

एक जने रहेन राजा। ओनके रहेन चारि लरिका। रानी बिमार होइ गइं। सइया पइ रानी परी रहीं। उही समयि एक गौरइया के घोसला पइ निगाह गइ। वहिमा एक गौरइया कइ जोड़ा रहत रहा। कुछु दिन पहिले गौरइया मरि गइ अउ गौरवा दूसर गौरइया लाइ। अब गौरवा कइ जिनगी बड़े कस्ट मा बीतति रही। ओकइ अण्डा बहाइ अउ फोरि उठा। घोसलउ उजारि दिहेस। नवा घोसला बनवइ लागि। अपन कस्ट अउ बिमारी कइ धियान कइके रानी अपने साथ एहि घटना का जोरीं। उही समयि राजा का बोलायि के कहइ लागीं, अब हमार दिन नेकचायि गा बा। हम बचब ना। एक काम ई किह्या कि दूसर बिआह जिनि किह्या। नाहित हमरे चारिउ लरिकन का बड़ा कस्ट परे। राजा बिआह ना करइ कइ बिसवास दिहेन। रानी सरग लोक का चली गइं। पूरे राजि मा सोक लहरि फैलि गइ। किरिया करम से निबरित भये पइ मंत्री सभासद सब राजा कइ सादी कइ प्रस्ताउ लाइके रखेनि। पहिले तउ रानी कइ बाति धियान कइके राजा इनकार किहेन मुल अन्तमा ओनका स्वीकार कइ लेयि का परा। सादी भइ, नई रानी आईं। राजमहलि मा प्रसन्नता कइ लहरि उठी।

एक दिन राजा देसाटन मा गयेन। लरिके नई मा से बड़ा स्नेह रखत रहेन। अकेल समझि के बारी-बारी सब रनिवास मा पहरा देइ लागेनि। राति के अन्तिम पहर मा एक साँप छत से लटकत देखि परा। ठीक नीचे नई रानी निद्रा निमग्न रहीं। ओनपइ खतरा देखि के चउथा राजकुमार तलवारी से मारि के ढाल पइ रोकि लिहेसि। मुल दुइ बून खून सीना पइ गिरिगा। यहि खून का पोंछइ खातिर राजकुमार बहुत चिन्तित भा। अन्तमा मुंहे से रूमाल पकरि के दुनउ बून पोंछि लिहेस। इही बीच रानी जागि गईं। राजकुमार रूमालि गिराइ के वापस चला आइ।

राजा के आये पइ रानी बार खोलि के, गहना उतारि के, सइया का त्याग कइके कोपभवन मा परी जाइके। अन्तमा रानी राजा से पूछीं कि तू हमका अपने लिये लाइ हया कि छोटके राजकुमार बदे। रानी का राजा समझायि बुझाइ के मनायेनि। रानी का बचन दिहेन कि आजु 12 बजे ले एकइ फैसला होइ जाये। चारिउ राजकुमार सभा मा बोलायि गयेन। कचेहरी लागि। राजा बड़के बेटवा कइ पुकार किहेन। अउ पूछेन कि सही बाति काउ रही? एकइ उत्तर द्या।

राजकुमार कहेन, पिताजी! बताइति तउ कहूँ सिपाही अउ कुकुरे कइ हालि न होइ। राजा कहेन कि सिपाही अउ कुकुर कइ कवनि बाति रही? राजकुमार कहेन कि पिताजी धियान से सुना– एक रहा सिपाही। ओकरे पास एक ईमानदार पहरू कुकुर रहा। एक सेठि के इहाँ कुकुरे का गिरौं रखि देहेस। अपुना सादी के उतसव मा भाग लेइ बदे गा। इही बीच मा सेठ के घरे चोरी भइ। सेठ के दुकान कइ सोना चानी तांबा पीतल कुलि चोर सेंधि लगायि के उठायि लइ गय। ओहरी चोर मूसत रहेन एहरी कुकुर सेठि का जगावत रहा मुल सेठि जागेन नाइ। अन्तमा कुकुर चोरन के पीछे गा ऊ तलाउ देखि आइ जउने मा कुलि समान धरे रहेन।

सबेर भा चारिउ ओर सोर मचिगा कि सेठि के घरे मा चोरी होइ गइ। अब सेठि का कुकुरे के जगावइ

कइ मतलब समझि मा आइ। अबउ कुकुर इसारा से सेठ का तलाउ देखावइ लइगा। तलाउ पे जाइके वहिमा कुछु दूरि हला। सबकी समझि मा बाति आइ गइ कि सब समान इही मा बाटइ। अन्तमा कुलि समान उही मा मिला। सेठ कुकुरे से बहुत खुस भा।

जउने दिन कुकुर छोड़ाइ के रुपिया वापिस करइ कइ बाति रही वहि दिन सिपाही सेठ के घरे आवइ लाग। राही मा काउ देखत बा कि बिना रुपिया दिहे कुकुर चला आवत बा। नमक हरामी कइ नाउँ दयि के तरुवारी से ओकइ सिर-धड़ अलग कइ दिहेस। तब गटई मा एक चिट्‌ठी देखेसि वहि मा लिखा रहा कि 'तोहार ई कुकुर हमार बहुत धन बचायि दिहेस हम तोहँसे उरिन हई।' चिट्‌ठी पढ़ि के सिपाही हाय कुकुर! हाय कुकुर! कहि के मरिगा।

अब दुसरे बेटवा कइ बारी आइ। राजा पूछेन कि सही बाति तू बतावा? राजकुमार कहेनि कि सही बाति बताइति तउ मुला राजा अउ बाज कइ हालि न होइ। राजा अउ बाज कइ हालि काउ रही बतावा? राजकुमार बतावत बा कि -

एक जने रहेन राजा। राजा एक बाज जिआये रहेन। ओ मंत्री के साथे सिकार करइ गयेन। गहन बने मा पहुँचि गये पइ राजा के जोर से पियास लागि गइ। पानी कहूँ जंगल मा नाइ देखान। एक जगहाँ पहाड़े पर से एक-एक बून पानी टपकत रहा। मंत्री दोना लगायि के पानी रोपइ लाग। दोना जब भरइ लाग, बाजे साथे रहा। ऊ पंजा से मारि के दोना गिराइ दिहेस। मंत्री फेरि रोपेस, भरे पइ फेरि गिरायि दिहेस। इहइ हालि तीन चार बेरि किहेस तब राजा के क्रोध लागिगा। हाथे से तरवारि खींचि के बाजे का वइ मारि दिहेन। मंत्री अउ राजा ऊपर जाइ के देखत बाटेन एक अजगर सिलाखण्ड पइ जाइके मरा परा रहा। ओकरे मुहें से पानी चुअत रहा। जब ई स्थिति देखेनि तउ राजा बाज-बाज कहिके मरिगा।

तिसरे राजकुमार कइ बारी आइ। राजा सही बाति बतावइ कइ बाति कहेनि। राजकुमार कहेन कि सही बाति बताइति तउ लेकिन कहूँ साहु अउ साहु कइ पतोह कइ हालि न होइ। राजा साहु अर साहु की पतोह कइ हालि पूछेनि। राजकुमार बतावइ लागेनि।

एक जने रहेन साहु। ओनके लरिका कइ गौना आइ। पतोह बहुत हुसियार अउ जनावर-चिरई कइ बोली समझइ कइ वहि मा गुन रहा। पतोह राति मा एक सियार कइ बोली सुनेस। ऊ कहत रहा कि नदी मा एक मोरदा बहा जात बा। ओकरे जाँघी मा दुइ लाल बा केउ चाहइ कि लाल लइ लेइ अउ मोरदा बहरे कइ देइ। हम खायि लेई। पतोह चाकू लइके उठी, मोरदा खींचि के दुइनउ लाल चीरि के निकारि लिहेस, लइके चली आइ। साहु कइ बेटवा पीछे-पीछे जाइ के देखेसि, ऊ साहु से कहेस कि एका घरे से निकारि द्या। ई मोरदा खा थइ। साहु पतोह का लइके पहुँचावइ चला। जंगल मा एक पेड़े पइ कउवा बइठा रहा। कउवा कहत बा कि यहि पेड़े के नीचे खजाना गड़ा बा। केउ खोदि के खजाना लइ लेइ अउ वहि पइ बइठा साँप मारि के बहाइ देइ ओका हम खाइ लेई। पतोह जब सुनेस तब कहइ लागि -

कुछु करनी, कुछु करम गति, कुछु पुरुबुज कइ पाप।
जम्बुक बोले ऊ गति होइ गइ, तू का बोल्या काग।।

ससुर ई दोहा सुनि के पूछेसि कि हे बहुवरि तू ई काउ कहति बाटू। कुछु ना जहाँ चलत हयेन चलइं। नाहीं हम्मइ बतावा कि कउवा काउ कहत बा? बहुत पूछे पइ कहत बा कि केउ खजाना खोदि के लइ लेइ अउ साँप मारि के फेंकि देइ। उहइ हम बतावा थई कि एक दायिं सियार बतायेस कि दुइ लाल मोरदा की जांघी मा बा। हम उहइ लाल निकारइ गये। घरे से निकारि उठे अब काउ होये। ई बाति सुनि के ससुर ओकी वास्तविकता कइ परखि अउ सत्यता कइ जानकारी करइ बदे पेड़े के तरे खोदेस, साँप मारेसि अउ खजाना पायेस। एक गाड़ी पइ लादि के खजाना अपुना पतोहे सहित वापस चलेन। ससुर कुछु पहिले गाड़ी से उतरि के टट्‌टी करइ बरे उतरि गय। अकेल देखि के घरे ओकइ पति कहत बा कि

दादा का खायि के आवत बा। गाउँ कइ कइयउ मनई आइ के ओका मारि डारेन। जब साहु आयेन तब हायि पतोह! हायि पतोह! कहि के मरि गयेन।

येकरे बादि बेटवा का छुट्टी मिली। अगिले राजकुमार का बोलायेन। छोट राजकुमार आयेन। राजा पूछेन कि सही-सही हालि बतावा? राजकुमार कहेन कि हे पिताजी! बताइति तउ कहूँ नेउर अउ बभनियाँ कइ हालि न होइ जाइ। कवनि हालि राजा पूछेनि-

एक जनी रहीं बाभनि। वो एक नेउर जियाये रहेनि। अपने बेटवा का तेल बुकवा कइके, सोवाइ के कहूँ बहेरे चली गईं। एक नाग एक नागिनि बहेरे रहत रहीं। नाग के पियास लागि। घरे मा हलि के घिरुची पइ पानी पियेस। लउटि के आइ। नागिनि कहेसि हमहूँ पानी पिययि जाबइ। नाग कहेस तू सम्हरि के जाऊ। एक लरिका जागि के खेलत बा। बचायि के जाऊ। मेहरारू कइ जाति काटि जिनि लिहिउ। हमका पकरि लिहेस हम कइसउ छोड़ाइ के चला आये। तुहू बचाऊ। नागिनि गइ। पानी पियेस लरिका खेलत खेलत बीच राही मा आइगा। नागिनि जाति की चली गइ आवत की खेलौना समझि के लरिका पकरि लिहेस। बहुत छोड़ायेसि मुल ऊ लरिका नाइ छोड़ेसि। नागिनि रिसिही परि गइ। ऊ काटि लिहेस, गदेला मरिगा। खटिया मा नेउर बान्हा रहा। ऊ कइसउ बन्हना काटि के जड़ी बूटी आनयि दउरा गा। येतने मा बाभनि आयि। लरिका देखि के चिल्लायि लागि। गाउँ घर कइ सब जुटि आयेन। येतने मा नेउरे मुहें मा जड़ी लइके आइ। औरति के कोरा मा कूदि परा। उठायि के हटायि दिहीं। नेउर लरिका के मुहें मा जड़ी डारइ चाहत रहा। बाभनि कहेस हमार बेटवा मरा येहर येनका खेल भाई बा। उठाइ के पीढ़ा मारि दिह्रीं नेउर मरिगा। मोह फइलिगा। सब देखेनि कि नेउर मुहे मा जड़ी लिहे रहा। जड़ी समझि के एक जन जड़ी लइके लरिका के मुहेमा डारि दिहेन। लरिका जीगा। बाभनि हाय नेउर! हाय नेउर! कइके मरि गइ।

पिता जी! माता जी के ऊपर साँप लटका रहा। हम ओका तरवारी से मारि के ढाल से रोपि लिहे। तबउ दुइ बून खून सीना पइ गिरि परा। उहइ खून मुहमा रूमालि लयि के पोंछे रहे। आप चलिके सब देखइं। राजा गयेन मरा साँप, खून लागि तरुवारि, रूमालि सब देखेनि। पूरा बिस्वास परिगा।

राजा निरणय दिहेन कि रानी का वेदी पइ खनि के गाड़ि दीनि जायि। जल्लाद वहिका लइ जाइ के गाड़ि दिहेन। ओकइ राज पाट लउटा।

# टीड़ी महराज

एक जने रहेन टीड़ी महराज। टीड़ी बहुत गरीबी मा चलत रहेन। एक दिन टींड़ी कइ औरति उनसे कहेस कि राजा भोज केतने कवि अउ बभनन का रुपिया बाँटा थेन। तुहूँ जात्या कुछु पाइ जात्या तउ लरिकन कइ पेट पालिति। बहुत कहे-सुने पइ टींड़ी महराज राजभवन की ओर चलेन। सोचत बाटेन कि हम लंठ बाभन हई। जउ कुछु मुहें से मोट-पातर निकरि जाये तउ जेलउ फाँसी होइ सकाथइ। टींड़ी आजु एक लाठी मारइ कइ विचार कइके आगे बढ़ेन। दरबार मा पहुँचिगे। पहुँचत भरेमा एक लाठी राजा के मूड़े पइ मरबइ तउ किहेन। साफा से एक साँप फण्ड फुलायि के खड़ा भा। कचेहरी मा भगदड़ मचिगइ। टींड़ी लाठी से साँप का मारि के बहाइ दिहेन। राजा टींड़ी का बहुत धन्यबाद दिहेन कि राजा कइ जवन प्राण बचायेन। राजा टींड़ी महराज का ससम्मान नाउँ पूछि के एक लाख रुपिया दयि के घरे पठयेन अउ बिनती किहेन की कबहु कबहु राजदरबार मा आवा किह्या। राजा कइ बाति मानि कं एक लाख रुपिया पाइ के राजा का असिरबाद देत की टींड़ी महराज घरे गयेन। पूरा परिवार आनंदित होइगा।

एक दायिं कइ बाति आ वजीर राजा का मारि के राजा बनइ चाहेन। ओनका एक उपाय सूझि परा। नाऊ का बोलायि के तय किहेन कि राजा का बार बनवत की गटई काटिद्या तउ हम तोहँका आधा राज दयि देब। आधा-आधा खजाना बाँटि लिहे होये। नाऊ तयार होइगा। नाउ ओहर बार बनावइ बदे गा। येहर टींड़ी महराज राजा से मिलइ बदे चलेन। रस्ता मा एक सुअरि देखि के एकठी कविता बनयेनि। सुअरि पानी म ओलरि के पेड़े मा देंह खजुआवइ। कविता बनी कि 'बुड़ि बुड़ि आवइ घिसि-घिसि जाइ, तवन मरम हम जांनी।' राजा के पास जाइके टींड़ी महराज पहुँचि गयेन। देखत बाटेन नाऊ छूरा घिसत बा, दाढ़ी के पास लइ जाथइ फेरि घिसइ लागाथइ। हिम्मति नाइ परति ला काटइ कइ। एतने मा टींड़ी महराज सुनउबइ तउ किहेन कि 'बुड़ि बुड़ि आवइ घिसि-घिसि जाइ तवन मरम हम जानी।'

टींड़ी कइ कविता सुनता भरे म नाऊराम छूरा-सूरा फेंकि के भगवइ किहेन। राजा बहुत बोलायेनि मुल नाऊराम पीछा नाइ ताकेनि। राजा सिपाही पठइके बोलायेनि, तउ काँपत की आइ। ऊ सोचत वा कि टींड़ी महराज छूरा घिसइ पानी में बोरइ कइ रहस्य जानि गयेनि। राजउ से बताइ दिहे होइहें। नाउ पहुँचि के गोड़े पर गिरि परा अउ चेल्लायि के कहइ लाग कि राजा साहब हमार तनिकउ गलती नाइं बा वजीर हम्मइ पठये रहेन। हमारि हिम्मति नाइ रही गटई काटइ कइ। तबइ बेरि बेरि घिसतइ रहे। राजा कइ प्रान-रक्षा टींड़ी महराज फेरि किहेन। राजा का एक बड़े रहस्य कइ खबरि आइ गइ।

यहिं बड़े रहस्य के खोले पइ टींड़ी महराज का राजा सम्मान के साथे आधा राजपाट दयि दिहेन। राजा के साथ टींड़ी महराज राजगद्‌दी पर बइठइ लागेनि। वजीर का फाँसी कइ सजा दीनि गइ। केतना सभासद ईरसा द्वेस से जरइ लागेनि। टींड़ी कइ मूर्खता कइ जिक्र करइ कइ अनेकन संदर्भ रानी के लगे आवइ लागि। चुगुलखोरन से परभावित होइके रानी टीड़ी कइ परीक्षा लेइ चाहीं।

रानी टींड़ी की परीक्षा बदे बोलाईं। टींड़ी डेरात की रानी के पास गयेनि। रानी फुलवारी से एक टींड़ी

पकड़ीं। ओका पकरइ मा एक बार बचीं। दुइ बार बचीं। अब टीड़ी रानी के हाथे म आइ गइ। उहइ टींड़ी लइके रानी पूछति बाटीं बतावा टींड़ी महराज हमरे हाथे मा काउ बा? टीड़ी महराज तुरत कहइ लागेनि कि हे रानी, टींड़ी एक दायिं बचेनि, दुइ दायिं बचेनि, अब जवन चाहा तवन करा टींड़ी तोहरे हाथे मा बाटेनि। रानी एतनी बाति सुनि के बहुत प्रसन्न होइ गइं। चुगली करइ वालेन का राजि से निकारि दिहेन। टींड़ी कइ मान अउर बढ़िगा।

# जीतइ सरग

एक जने रहेन जमींदार। वइ बहुत दिन से जमींदारी करत रहेन। ओनकइ राज सुख कइ राज रहा। प्रजा बहुत खुसी रही। चारिउ ओर सुख अउ समरिधि कइ भरमार रहा। दुख एक्कइ रहा। ऊ ई रहा कि जमींदार के सन्तान नाइं रही। ई दुख बहुत बड़हर दुख होथइ। दइउ की किरपा से जमींदार के तिसरेपन मा पाँच लरिका पइदा भयेन। सबसे छोट लरिका कइ गुन के अनुसार धिरेन्दर नाम धरा गा। चारिउ लरिकन कइ गवन आइगा। छोटके राजकुमार कइ रानी अपने माई के इहाँ रही। चारिउ भाय परदेस से धन सम्पति कइ सेतु बान्हे रहेन। कुलि खर्चा देत रहेन, छोट राजकुमार पूजा, पाठ, दान-मान मा बहुत रिझा रहेन। असनान अउ धियान कइ के 5 मोहर रोज बभने का दान देइ लागेन। सब भाई तउ अपने राज-काज मा ब्यस्त रहत रहेन। पूजा दान अउर अतिथि सेवा अस जवन काम रहा सब छोटके राजकुमार पइ रहा। जब वो नहाइ धोइ के तइयार होंइ उही समयि मा एकठी बाभन परका रहा। रोज आइ के 5 मोहर लइ जात रहा। 5 बरिस बादि राजा साहेब कइ देह छुटि गयि ओ सरगे चला गय।

एक दिन कइ हालि आ, छोटका राजकुमार नहाइ धोइ के दान करइ चला तउ एकठी दूसर बाभन आइगा। ऊ पाँचउ मोहरि दान पाइगा। बहुत खुस होइके असिरबाद देत की आगे बढ़ा। जा बच्चा अइस एक गरीब बभने का दान दयि के आनंद दिह्या वइसे बदा होये तउ तीइ सरगे पहुँचि जाब्या। जब बाभन असिरबाद देत की पिछउड़ भा वइसे पहिला बाभन आइगा। ऊ देखेसि के आजु राजा कइ दान दूसर बाभन लइगा। बिहान से अब ऊ परकि जाये तउ वहि कइ पत्ता साफ कइदे। जउ हमार एतना घाटा किहेन तउ हम काहे न एनकइ मटरिगस्ती भुलवाइ देई।

ऊ बाभन चारिउ भउजाइनि से जाइ के मिला। छोटे राजकुमार के खिलाफइ मा ऊ पूरा बवाल रचेस। ऊ कहेस कि चारिउ जने कमाइं एक जन उड़ावइं इ कहाँ कइ बेउहार आ। काम काज के माने मा तउ कुछुना। तीनि मा तेरह मिलाइ के वहिमा फूट कइ बिया बोइ दिहेस। वोकरे सब बातिन मा नमक मिरिचि मिलवइ कइ बाति रानी लोगे नाइ समझीं।

बभने के लगातारि यहि क्रिया से छट्ठी कइ दूध यादि आवइ लाग। असनान धियान पूजा-पाठ मंहग परइ लाग। अब ओ अलग कइ दीन गय। बहुत सोच विचार करइ लागेन। चारिउ भाय एक मा हन काहे अलगे कइ दीन गय। यहि दूध कइ माछी होइ मा होइ न हाइ वहि बभने कइ हाथ होइ। सत्यता से परिचित होइ गये पइ बभने से चिढ़ि तउ गबइ किहेन। एक दिन उबियायि के राजकुमार असनान-धियान कइके आधी धोती पहिरि के आधी ओढ़ि के ससुरारी चला गय। वहिं पहुँचि के अपने ससुर जी से कहइ लागेनि कि हमरे घरे महामारी कइ बिमारी परि गइ। सब सरगे चला गयेन अब केउ बचा नाइ। दियाउ जरावइ का मोहताज बाटी। अब जउ चाहत हया कि हम्मइ दानी पानी मिलयि तउ बिना गवनेन कइ बिदाई कइद्या। अगर बिदा करइ का तइयार हो तउ रुकी नाहीं तउ उलटइ पाँउ लउटि जाई अउ आपनि डगरि नापी।

सास ससुर बहुत दुख किहेन अउ कहत बाटेन कि हे बेटवा औरतउ आधी अंग कहि जाथीं। जउ

ऐसन दुखे मा तोहरे कामे औरतिन आवइ तउ कइसन परानी। हम बिरा करब। तोहारी परानी आ अबहइं लिययि जा। एतना कहि के लड़की कइ विदाई कइ दिहेन। सोना चानी मुहरि असरफी गाड़ी मा लदायि के पहुँचायि दिहेन। येहर दुलहा दुलहिनि डोली मा बइठायि के चलि दिहेन। आधी रस्ता चले के बादि कहाँरन से राजकुमार बोलेन 'कहाँरउ धूपि बड़ी तेजि बा। तोहरे सभे अराम कइल्या। इहाँ पेड़ कइ सुखद छायउ बा। बगल मा पुरवा बा। कुछ खा पिया अउ अराम करा। कँहारे चला गय तउ घरइतिन से कहेन कि हमरे घरे न हइयबा परी रही न केउ मरा बा। हमइं हमरे चारिउ भाय अलगायि दिहेन। जउ तोहँइ हमार साथ देइ का होइ तउ चला नहीं तउ इहीं से डोली घुमाइ ल्या। मुला रानी कइ समझदारी काम किहिस। वइ साथे आवइ कइ समरथन किहीं। घरे आयेन अउ सुख से रहइ लागेनि।

अब एनकइ खर्चा उहइ रहा। आय नाइ नहि गइ। खजाना खाली होत चला गा। एक दिन रानी बोलीं देखा कमाई नाइ बा, सब खरचइ खरचा बा। यहि से एक दिन ऐसनउ आइ सकाथइ कि माँगे पइ भीखिउ ना मिले। येहि नाते कुछु रोजिगार करइ का चाही। अब राजकुमार रुपिया पइसा साथे लइके व्योपार करइ का तइयार भयेन। ओनके साथ नोकर-चाकर रहबइ किहेन। चलत चलत राति भये पइ एक जंगल मा पड़ाउ डारि दिहेन। कुछु खायि पी के नौकरन सहित सोइ गयेन। आधी राति के समयि मा संख कइ आवाजि आइ। संख की आवाजि पइ राजा आकरसित होइ गयेन। अगिली अवाजी पइ उठि के ओहरइ का चलि परेन। अन्तमा एक गाउँ मा पहुँचेन जहाँ एक पंडित कथा कहत रहेन। कथा पूर होइ चुका रहा। परसाथ बँटिगा रहा। अन्तमा पंडित एक जुगुति सबका बतावत रहेन कि देखा पंचउ जेकरे पास समरथ होइ, कलोरि गायि, सींगी मा सोन मिढ़ायि के कासी मा बभने का दान देइ तउ जीतइ सरग मिलि जाथइ। पंडित कइ ई बाति राजकुमारउ मन से सुनेनि। उही अहथान से मुड़ि के अपने घरे चला आयेन। जइसे ओनका सबसे बड़े बेउपार कइ राहि मिलि गइ होइ।

25 कलोरि गायि मँगवाइ के दान देयि कासी चलेन। सींग मा सोन मिढ़ागा। कासी मा रोज न्हाइ धोइ के 3 गायिं देइ कइ नियम बनिगा। अब 20 गायिं दान होइ गइं 5 बची रहीं।

कासी जी के दुसरी तरफ एक गाउँ मा 5 बाभन रहत रहेन। ओ बड़ा गरीब रहेन। दिन भइ भीखि माँगइ जवन मिलइ उही से सगर परिवार पालइं। एक दिन पाँचउ जने सबेरे निकरेनि ओहिमा से एक बाभन कहेस कि चला आजु कासी मा भीखि माँगि आई। चारि तउ तयार भयेन। एक जन कहेन हे भइया जउ हम रोज से कुछुअउ कम पउबइ तउ घरइतिनि डंडा से बाति करिहैं हम तउ ओहर न चलि पाउब। चारिउ जने कासी गय। एक जन एहरइ रहि गय।

ओहर कासी मा राजा नहाइ धोइ के दान करइ का तइयार भयेन कि चारिउ जने पहुँचि गयेन। चारिउ गायि येन्हइ चारिउ का मिलीं। एकठी दूसर बाभन लइगा। चारिउ जने आइ के अपने दुआरे चारि गायि बान्हि दिहेन। पंचये बभने कइ औरति जब देखेसि तउ पूछेस कि हमरे कहाँ गय। ये सब बतायेन कि हमरे सब कहे आजु कासी चला मुला ओनकइ राम रिसियान रहेन। पंचयीं गायि दूसर बाभन लइगा। मनइ मन मा भुरकुसात की घरे आईं। बढ़िया डंडा काटि छाँटि के दुवारी पइ बइठीं। कहति बाटीं कि गोड़ना हमरे पाले परिगा। येनके सबका अब भीख मांगइ का ना परे। सींगइ बेंचि के कइयउ साल रहि सका थेन। जइस बभनू पोटरी लइके आयेनि चारि डंडा बिना पूछे रसीद किहेस अउ कहेस जैसनि गायि ये चारिउ जन लायि बाटेन जाइ के लावा नाहीं तउ जाने से हाथ धावेइ का परे। डंडा पउबइ किहेन एक तरफ कइ मोछउ उखारि लिहेस। आखिर मा वइ घूमि के चारिउ जन से रोइ के कहइ लागेन कि कहाँ से पाया तनी हमहूँ का बतावा भइया। चारउि जने से पूँछि के बभनू जाइ अटेन। राजकुमार घरे जाइ कइ तइयारी पूरी करइ मा ब्यस्त रहेन। उही समय मा जय मनायि के बाभन पहुँचा। हाथ जोरि के कहत बा कि जइसे हमरे साथी लोगन का चारि गायि दिहे हया वइसन हमहूँ का दयिद्या नाहीं तउ हम तोहरे नाउँ

पइ फाँसी लगायि के मरि जाबइ। अब राजकुमार बड़े पेंचे परेन। वइ सोचत बाटेन कि ई बाभन अस कइ दिहेस कि जानि परत बा हमार कुलि वेरथ होइ जाये। ओकइ माँगन पूर करइ बरे उपायि सोचइ लागेनि।

अन्त मा वइ अपनी रानी का गिरौं रखि के बभने का गायि दयि डारिनि। रानी का छोड़ावइ बरे रुपिया लावइ घरे पैदर चलेन। पियास तेजि लागि रही। जइसे लोटा डोरी मा बान्हि के डारेनि वइसे वहि कुवाँ मा गिरा महाजन लोटा डोरी पकरि लिहेस। कुँवा से निकारइ कइ बिनती किहेस। ओका निकारेनि ऊ गुरु मानि के पता दयि के आगे चला। फेरि जब लोटा डोरी इनारा म छोड़ेनि तउ एक सर्प वहिमा लपेटि लिहेस। कहेस कि जउ हमइ निकारि लेब्या हम तोहँइ सात फाटक के अंदर से निकारि लेब। जइसे ओका निकारि के फेरि लोटा डोरी कुवाँ म डारेन तउ हनुमान जी वही कुवाँ मा रहेन, लोटा डोरी पकरि लिहेन। वइ कहेन जहाँ तोहँइ केउ सहायता देइ वाला ना रहे, वहि अहथान पइ हम तोहार सहायता करब। ओनहूँ का बहेरे निकारेन। जइसे चउथी बार लोटा डोरी कुंवा मा डारेनि वइसेइ एक सेर कुवा मा देखायि परा। कहेस कि हमका तू निकारि लेत्या तउ हम तोहँका भगवान कइ दरजा देइति। अगर न निकरत्या तउ अबहें गरजब हमार साथी सब आइकें तोहँका खायि लेइहें। येहरी बाघे का देखि के माथे पइ पसीना पसीना होइगा। सोचत बाटेन कि अगर निकारि देइ थइ तउ हमका मारि न डारइ। न निकारेपइ जंगली बाघ मारि डारिहैं। अन्तमा निकारइ का तइयार भयेन। जइसे बाघ बहेरे आइ वइसे अपने लोटा डोरी सब छोड़ि के भागेनि। बाघ पीछा कइ लिहेस। जंगल कइ कुलि बाघे देखेनि अउ कहेन सरदार जी अच्छा सिकार उठाये अहेन।

सब बाघे राजकुमार की ओर झपटि परेन। सरदार गरजि के सबका सचेत किहेस 'खबरदार ये भगवान हयेन, केउ पंजा न चलाया।' तब वइ खड़ा होइ गय। सरदार अपने घरे लइगा। उहाँ हीरामोती जवाहिरात तथा अनेकन गहना हार सब उहाँ धरा रहा, वहि मनिइन कइ जेका मारि के खाये रहेन। कुलि येनका दयि के पूर्ण तृप्त कइके बिदा किहेस। उही नेकचेनि महाजन कइ घर रहा जेकर ओ गुरु रहेन। उहू के हियाँ जाइ का तयार भयेन। गठरी घरेमा गयि। महाजनी घरेमा जानेस गुरु बाबा परसाध लाइ होयिहैं। गठरी खोलेस। सोना चानी कइ गहना वहिमा खून लाग। डाकू जानि के दरोगा का बोलवाइ के गुरु का जेल भेजवाइ दिहेन।

गुरु सात फाटक के अंदर से नाग महराज का यादि किहेन, जो छोड़ावइ का आसा दिहे रहेन। नाग वहिं से आइके एक से कहेस हम जेलर का काटबइ मरि जइहें। अपुना का छोड़े पर जिआयि देयि कइ बाति किह्या। ऐसनइ भा। जेलर का साँप काटेस। वइ मरि गयेन। जब ओनका लइके माटी देइ जाइ लागेनि तउ जियावइ कइ बाति एक ओर छूटइ कइ बाति दुसरी ओरि भइ। ओनका उतारि के सब लइ आयेनि। राजकुमार नाग का यादि किहेन। उ आइके आपन जहर खींचि लिहेन। वइ जी गयेन। येनका छुट्टी मिलि गइ।

राजा का काफी दिन बीति गवा। सोचेन रानी के पास चली केतना दिन बीतिगा रानी कइ हालि चालि लइ लेई। उहाँ रानी राजा की यादि मा आपन प्रान छोड़ि दिहे रहीं। सेठि अन्तिम संस्कारउ कइ चुका रहा। जब राजा सुनेन त एनकइ चारिउ कोन अंधियार होइगा। अब आगे पीछे सहारा देयि वाला केउ नाइ मिला। यहि समयि मा धियान आवा कि हनुमान जी कहे रहेन अब सहारा देयि वाला केउ ना रहे तब हम तोहार सहायता करब।

हनुमान जी का धियान धरेनि वइ आइ गयेन। पूछेन काउ चाहा थ्या। राजा कहेन आपनि रानी चाही था। हनुमान जी एक फूल दिहेन अउ कहेन कि जहाँ पइ रानी कइ चियाड़ी होइ, उहाँ जायि के फूल मीजि के हड्डी पइ रस चुआयि दिह्या। रानी जी जइहें। राजा का बेस्सास नाइं परा। जात रहेन

एक हड्डी के टुकड़ा पइ अजमाइस करइ लागेनि। हनुमान जी वहि बाती कइ ओनका बिसवास नाइ आ। फूल कइ रस चुवावइ बदे तइयार भयेन। जइसे फूले कइ रस हड्डी पइ गिरा एक कुकुरि-पुकुरु करत की भागि गइ। अब एनके पछताइ कइ सीमा नाइ रही। हनुमान जी का फेरि यादि केहेन अउ कहेन कि हमाका एक फूल अउर था। हनुमान जी बतायेन उ फूल अब यहि संसार मा नाइं बा। बिसनू भगवान के इहाँ से लाइ रहे। चला अब उहीं देखि जाये। हनुमान जी के साथे बिसनू भगवान के पास आयेन। वइ अलग-अलग कमरा मा फूल देखावइ लागेन। देखत अहेन कि अलग अलग कमरा माँ पचीसों गायि, दीन कीन पइसा, रानी सबका देखेनि लेनि ओनका पता कि वो सरगे मा घूमत बाटेन। ओनके बसि फूल कइ जिद बनी रही। बादि मा हनुमान जी बतायेनि कि तोहार सारा कस्ट दूरि भा। ई कुलि तोहारि परीछा रही। अब तू जीतइ स्वर्ग पहुँचि गया। तोहार कुलि किरिया कलाप यहीं बा, पूरा परिवार इहीं बा। रानी के साथ उहीं सरगे मा सुखपूरबक देउता की नाइं रहइ लागेन। ओनकइ राजपाट लउटा।

# सेर-सियार अउर लोमड़ी

एक जंगल मा एकठी सेर रहत रहा। गरमी कइ महीना आइ। एक दिन गरमी से तरस्त होइके सेरऊ घने पेड़े के नीचे सोरी पइ मूड़ धइके सोवत रहेन। ओहरी से एक सियार हाँफत की आइ। जंगल के राजा का देखिके कल्ले से भागेनि। मुल भागइ की अवाजी से सेर जागिगा। गरजि के बोला। का हो वियास जी का हालि बा। सियरू पूँछि हिलायि के ओलरि गय। ओनकइ चारिउ गोड़ ऊपर रहा। बोलेन कि राजा साहेब बड़ा दुख अहइ यहि साइति। खायि का नायि मिलत बा। देहिं खंखड़ होइ गइबा। खौरा रोग पकड़े बा। कइसउ एक एक दिन काटत बाटी। सेर पूछेस अरे वियास मुनि का खायिउ पिययि का कोताही बा। हाँ सरकार अब बहुत तकलीफ बा। लरिके बच्चेन कइ जियाउब मोसकिल भा बा। सेर कहेस कि अच्छा जा कहूं सिकार देखि आवा। हम ओका मारि देई अउ तू खायि ल्या।

सियार चतुर रहा। ऊ छोट जनावर नायिं हेरेस। उ एक हाथी देखि के आइ। हाँ राजा साहब एक सिकार तउ बा। कहाँ? थोरिक दूरि पइ। सेर सियरू के साथे गयेन। देखेन एक हाथी चरत रही। हाथी का देखि के सेर कहेस कि वियास मुनि अघायि जाब्या। सियार कहेस हाँ राजा साहेब एका हम महीनन खाबइ। अच्छा तउ ठीक बा। बतावा कि हमारि पूँछि भूई पहुँची?

हाँ राजा साहेब! सियार उत्तर दिहेस। चूतर बोला? हाँ राजा साहेब। आँखि लाल पियर भइ? हाँ राजा साहेब। पंजा तेज भा? हाँ राजा साहब। एतने मा सेर हाथी पइ टूटि परा। अउ ओका गिरायि दिहेस। नाखून से ओकइ पेट फारि दिहेस। सियार राम मस्त होइके खायेन। अउ अपने राजा का बहुत बहुत धन्यवाद दयि के कृतग्यता व्यक्त किहेस।

वियास मुनि अब उहीं पइ पहरा देत रहेन अउ हाथी कइ खून मासु खायि के प्रसन्न रहइ लागेनि। सियार राम अपने सिकारे में जुटा रहेन। ओहरी से लोहखरी चली आवत रहीं। नेकचे आइ के कहा तहँइं कि काहो बड़कऊ, काउ करत बाट्या? सिअरू कहेन इहइ सिकार मारे हा छोटका। तनी बड़हर लखि के मारि दिहे। अब महीनन चले कउनो चिन्ता नाइ ब.। अपने का होत बा। कुछु अन्न-पानी मिलत बा कि नाइ? नाहीं बड़कऊ एहर बड़ी परेसानी बा। रोजी-रोटी सब ताक पइ बा। फुरइ कहा तहू ना? हाँ कुँवर तोहार बड़कये कइ कसम खायि के कहत बाटी। अच्छा जा फेरि कहूँ सिकार देखि आवा। देखि के हमका बतावा, हम मारि देब खाबू ढेर दिन ले। लोहखरी चली गइ। जात जात ढेर दूरि चली गईं तउ उहाँ एक गड़ही मा गदहा चरत देखि के सियार राम के पास आइ के बोलीं। बड़कऊ सुनाथ्या हो? एक सिकार हम देखि आये। चलिके मारि देत्या तउ हमरउ पेट चलत। आगे आगे लोहखरी पीछे सियार चला। जब गदहा के लगे आई तउ सियरू कहेनि कि देखु छोटकी हमारि पूँछि भुईं पहुँची, नाही बड़कू। अरे कहिदे कि हाँ पहुँची। अच्छा पहुँची बा। चूतर हमार बोला? नाहीं बड़कू। अरे कहुकी हाँ। अच्छा बोला बा। हमारि आँखि लालपियरि भइ? नाहीं तउ बड़कू। अरे बोलु

जल्दी? अच्छा हाँ लालपियरि भइबा। बसि एतने पइ सिअरू गदहा के ऊपर कूदि परेन। इही बीच गदहा उछरि के ऐसन लात मारेस कि सियरू कइ होस ठेकाने होइ गइ। लोहखरी कहति बा कि हाँ बड़कू अबतउ तोहारि पूँछि भूइं परी बा। चूतर बोलत बा। अँखियउ लालपियर भा बाटइ। एतना कहेउ पइ सियरू छोटका का कउनो उत्तर नाइ दिहेन।

विहान भे बड़कू कइ मासु चाम कइ पता नाइं। थोर कइ हाँड़कइ साँसरि परी रही। ओनकइ राजपाट लउटा।

# परी कथा

एक जने रहेन राजा। एक जनी रहीं रानी। दुइनउ जन अंटा पइ सोवत रहेन। राति कइ समयि रही। बागी मा कोइलरि बोलयि लागि। राजा कहेन कि तउवा बोलत बा। रानी कहीं कि नाहीं महराज इतउ कोइलि बोलति बा। राजा ओका कउवा अउ रानी कोइलरि कहइँ। दुयिनउ जन मा जिद होइ गइ। राजा कहेन जउ कोइलरि होइ जाये तउ हम राज से निकरि जाबइ अउ अगर कउवा होये तउ तू निकरि जाबू। इही बाती पइ जिद कइके एक नौकर भेजागा बागी मा। जा देखि आवा कि ई काउ बोलत बा। नौकर चला तउ रानी अलग बोलायि के समझाईं कि जायि के देखि आवा इहाँ आइके कउवा बताइ दिहा, काहे से जउ सही बतउब्या तउ राजा का राज छोड़ि देयि का परे फेरि राज-काज बिललायि जाये। नौकर रानी के अनुसार छाती पइ पाथर धइ के कउवा बतायेस। रानी राज से निकरि परीं। वइ एक बन गईं। दुसरे बन गईं। तिसरे मा एक सन्त आस्रम मिला। सन्त कइ आस्रम बड़ सोन्नर रहा। वहिका देखि के रानी कइ चित्त लोभायिगा। आइ के आस्रम मा पहुँचीं। बाबा जी रानी का देखि के कहेन कि हे बच्चा तू के अहिउ? कहाँ जाबिउ? कइसे इहाँ तक आइउ तोहँका भालू सिंह बाघ चीता नाइ पूछेनि? तू देउ लोक कइ परी तउ न हया। रानी आपन पूरी गाथा सुनायि दिहीं। साधू बाबा बड़ा सतकार किहेन। कन्द मूल फल खायि अउ सीतल पानी पिअइ का दिहेन।

अन्त मा रानी साधू से राहि पूछीं कि हमका बाबा ऐसनि राहि बतउब्या जहाँ जाइके हम रहिति अउ जिनगी कइ एक एक दिन गिनि गिनि के काटिति। बाबा कहेन कि इहीं रहा बच्चा तोहँइ कउनो कस्ट न होइ पाये। महराज हमरे पेटे मा लरिका बा। इहाँ प्रसूति बेवस्था कइसे होइ पाये। धिंगरिनि इहाँ कहाँ के मिले। बच्चा ई सन्त आस्रम आ। इहाँ आवइ वाले का धोखा कबउँ ना मिले। सब बेवस्था हमइँ करइ का होये। तू चिन्ता ना करा। अब रानी निहचिन्त होइ के वहि आस्रम मा रहइ लागीं। साधू के सधे जीवन के साथे अपने जीवन का रानी साधि के साधु वृत्ति से रहइँ लागीं। कुछु दिन बीता। रानी के एक बहुत सुन्नर राजकुमार पइदा भा। बाबा मुसहरिन का बोलायि के रानी कइ पूरी बेवस्था सँउपि दिहेन। जंगल मा मंगलगान होइ लाग। पसु पंछिउ झाली अउ पेड़े से गाना सुरू कइ दिहेन। साधू बाबउ बहुत खुस भयेन। साधू बाबा बीच जंगल मा बरहिउ किहेन। बन कइ सन्त मण्डली जुटी। धीरे धीरे लरिका बड़ा होइ लाग। उ अपनी सुन्नरता से जंगल के पसु-पंछी, सन्त महतमा, कोल-भील सबके मन का मोहि लिहेस। सबकी गोदी मा उ लरिका वोइसे सोहइ जेइसे बदरे मा बिजुरी। सबेर होत सब बाबा के दुवारी आइ जाइं। इहाँ तक कि उ लरिका जंगल मा अँजोरिया अस उइ आइ। अपने बाल जनित खेल से साधू बाबा के तप साधना मा व्यवधानउ डारइ लाग। मंदिर की मूरति का येहरी ओहरी कइ देइ। पूजा के समयि मधुर बाति कइके बाबा के मन का मोरइ अउ धियान तोरइ लाग। जब लरिका दउरइ अउ खेलइ लायेक भा तउ बाबा एक तरुवारि मंत्र पढ़ि के दिहेन। जंगल मा सिकार करइ पठवइ लागेनि। जीउ-हत्या सिकार उकार से आस्रम कइ परिपाटिउ का कलंकित करइ लाग। रानी अब वहिं आस्रम कइ भार स्वयं अपुना का महसूस करइं लागीं। एक दिन बाबा के गोड़े मा माथ टेकि के बोलीं, बाबा हम तोहरे परसाधे से जिनगी कइ अगम दिन पार किहे। हमार लरिका अनेक उपद्रउ किहेस, तू भगवान होइ के

कुलि सहि लिह्या। अब हम स्वयं महसूस करत बाटीं कि हमरे नाते तोहार तप केतना खण्डित होत बा। हम समाज मा रहिके जिनगी बितावइ लायेक होइ गइ हई। हमका अब असिरबाद दयि के जाइउ कइ अनुमति दयिद्या। बाबा कहेनि ठीक बा बच्चा अगर तू जाइ चाहाथू तउ चली जा। रानी अपनी आंखी मा पितृ-सनेह कइ आँसु लइके आगे चलीं। वन कइ मुसहर कोल-भील सब दूरि ले पहुँचावइ आयेन। बाबा लरिका के तरुआरी मा असिरबाद से ऐसन मंत्र फूँकि दिहेन कि सब जगहां विजय होये। आजु रानी के आत की पेड़न के आँसु चुवत बा। चिरई चुरोमनि सब रोवइ लागेनि। मंदिर कइ घंटा अपुनइ बाजइ लाग। वहिं लरिका का गोदी मा लइके जेकेउ खेलाये रहेन ओ सभे आजु आठ-आठ आँसु रोवत बाटेन।

रानी आस्रम, पसु-पंछी, कोल-भील सबसे बिदा लइके आगे बढ़ीं। एक बन पार किहीं दुसरे बन का पार किहीं। तिसरा पार किहे पइ राजा कइ राज आइगा। उहाँ पहुँचि के एक पिसनहरि के घरे जाइ के रहइ लागीं। पीसना कुटना काम कइके आपन जिनगी कइ नइया खेवइ लागेनि। उ लरिका जउनी गली से निकरइ सब कइ धियान तउ एक दायिं खींचिनि लेइ। सब ओका पिसनहरी कइ लरिका कहइ लागेनि।

एक दिन राजा कइ लरिका घोड़े पइ चढ़ि के सिकार खेलइ जात रहेन। पिसनहरि कइ लरिका अपनी गली मा तरुवारि लइके अगुवानी एस करइ खड़ा रहा। राजा कइ लरिका कहेस चला सिकार खेलि आई। लरिका कहेस कि हमरे घोड़ा तउ बाटइ नाइ कइसे सिकार खेलयि चली। राजा कइ लरिका एक घोड़ा उहू का दिहेस। अब दुइनउ लरिका सिकारे चलेनि। जंगल मा जाइ के सिकार हेरइ लागेनि। राजा कइ लरिका कहेन पहिले तू सिकार करा। उ कहेस नाहीं पहिले तू करा। अन्तमा पिसनहरि वाला लरिका सिकार खेलयि गा। उ अपनी तरुवारी से कहेस कि हे तरुवारि! जाइ के सब जानवर कइ कान अउ पूँछि काटि द्या। तरुवारि सब जनावर कइ कान पूँछि काटि का आइ गइ। जब लउटि के आइ तउ कहेस कि हे राजकुमार जउने सिकार का हम किहे अही ओहिका तू जिनि किह्या। राजकुमार हैरान होइ गय कि जउनइ सिकार उठावइ कुलि कइ कान पूँछि कटी मिलइ। घरे आयेनि।

राजकुमार राजा से कहेस कि पिताजी! पिसनहरि के लरिका का दरबार मा नोकरी दयिद्या। राजा बोलवायेन। लरिका आइ। राजा देखत भरेमा मोहि गय। एतना सोन्नर लरिका पिसनहरी कइ। कहेन कि बेटवा बतावा वेतन केतना लेब्या? लरिका बतायेस कि चारि सौ रोज। अच्छा काम कवन करब्या? जवन केउ ना कइ पाये, उत्तर दिहेस। चारि सौ बेतन सब दरबारिन अउ खास कइके वजीर का बहुत खलइ लाग। वजीर कइ आदति खराब रही। राजा के लड़की से कुछु गलत सम्बन्ध बनये रहा। उही से येनका कउनो ढंग से मरवावइ का सोचेस।

एक रही बनियाँ कइ लड़की उ राजा कइ लड़की कइ सखी रही। एक दिन राजा अउ बनियाँ कइ लड़की दुइनउ जनी टहरइ निकरीं। बनियाँ कइ बिटिया लाल कइ हार पहिरे रही। वजीर कहेन तू राजा कइ लड़की होइके लाल कइ हार नाह पहिरिउ उ बनियाँ कइ बिटिया होइके पहिरी अहइ। राजा से कहा कि पिसनहरि कइ लरिका काउ करायेन लाल मंगावइं। राजा कइ बिटिया कहेस कि लाल केउ नाइ लाइ पावत पिताजी पिसनहर कइ बेटवा से कहा लइ आवइ। राजा कहेन। वइ घोड़ा पइ असवार होइके नदी के तीरे तीरे बहुत दूरि चला गय। लाल नदी मा बहत आवत रहा। घोड़ा बढ़ावत जात रहा। लाल कहाँ से आवत बा, एकइ परीछा करइ बदे आगे बढ़ा चला जात बा। अन्तमा देखत बाटेन कि एक परी पेड़ की डझरी पइ सोवत बा। ओकरी जाँघी से खून बून बून कइके नदी मा गिरत बा। ऊ लाल बनि जाति बा। राति की 10 बजे एक दानउ आइ। उ एक लकड़ी लइके परी का छुवाइ दिहेस परी जागि गइ। राति भइ आराम ऐस कइके सबेरे फेरि सोवाइ के चला गा। एऊ घोड़ा का नीचे बान्हि के पेड़े पइ चढ़ि के

उहइ लड़की छुवाइ के जगाइ दिहेस। परी जागि के पूछेस तू के हया? आपन परिचय बताइ के साथे चलयिउ का कहेन। परी बतायेस जल्दी यहिं से भागि चला नाहीं तउ राछस आइ जाये। तुरतइ उतरि के दुइनउ जने घोड़ा पइ बइठि के घरे आयेनि। अपने माई से बतायेनि कि ई हमारि रानी होइहैं। राति बिती लाल देइ कइ बाति चली। परी कहेस जेतन चाहा ओतना लाल लइ जाइके दयिद्या। जब दरबार जाइ लागेनि तब परी एक थार पानी मँगाइनि। वहिमा जांघी कइ खून चुवाइ दिहीं। वहिमा तमाम लालयि लाल होइगा। वइ गठरी मा गठियायि के दरबार मा लइ जाइके दयि आयेनि। पूरा दरबार प्रसन्न होइगा मुल वजीर के काटा तउ खूनइ ना। फेरि वजीर के कहे पइ राजकुमारी हीरा राजा से मांगेन। वजीर राजा से कहेन कि चारि सौ रुपिया रोज लेत बाटेन कहिद्या जाइ के लावइं। राजा कहेन कि लड़की कहति बा कि लाल के बीचे बीचे हार लागि जाये तब माला अच्छा बने। वइ घरे आइ के ई समस्या लाल परी से कहेन। लाल परी बतायेस कि बगले के पेड़े पइ हीरा परी रहा थइ। उहू का राछस लइके भागि आइ बा। वहि गये पइ उहउ मिलि जाये।

हीरा लावइ बरे घोड़ा पइ चढ़िके फेरि वहि पहुँचि गयेनि। राति मा दानउ आइ। लकड़ी से छुइ के परी का जगायि दिहेस। राति भइ ऐस-अराम किहेस। सबेरे सोवाइ के फेरि चला गा तब घोड़ा बान्हि के पेड़े पइ चढ़ि के लकड़ी छुवाइ के परी का जगायि दिहेन। परी कहेस तू के हया? हमका यहिं जेल से छोड़ायि लेत्या तउ ठीक रहा। पेड़े से उतरि के तुरत घोड़ पइ सवार होइके चलि परेन। एक बन पार किहेन दुसर बन पार किहेन। फेरि घरे पहुँचि गय। दुइनउ परी मिलि के प्रसन्न भईं। परछनि कइके ओनकइ महतारी प्रसन्न भईं। राति आइ बिती सबेर भा। कचेहरी कइ जूनि भइ। हीरा गठियायि के लइ गयेन दरबार मा दयि दिहेन। सब प्रसन्न भयेन मुला वजीर साहेब कइ जइसे नानी मरि गईं।

जब समय पइ राजा कइ बिटिया अउ मंत्री मिलेन तउ निहचित किहेन कि अबकी तू बीमार बना। बैद का घूस दयि के बघिनी कइ दूध मांगि जाये। तब देखी था कइसे लावा थेन। ऐसन भा। बैद से वजीर घूसे के बल पइ बघिनी कइ दूध मंगवायेन। बैद कहेस कि राजा साहेब तोहार बिटिया तबइ बचे जउ एका बघिनी कइ दूध मिलि जाये। राजा बड़े सोच मा परेन जानि गै कि अब बिटिया न बचे। राजा कइ लरिका कहेस कि अब हम यहि लरिका का बघिनी के दूधे का ना पठउबइ चाहे बचइ चाहे नाइ। वजीर कहेन केथा बदे राखे बाट्या? भेजा लयि आवइं। साँझ की लरिका घरे आइ परी से सब बतायेस। परी कहेस कि यहि मा कवन चिन्ता बा बघिनी कइ दूध मिलि जाये। तीनि कोन कइ लकड़ी लयि के छुवाइ देब्या तउ ऊ जागि जाये। घोड़े चढ़ा गय। लइके आइ गय। परिछन भा अब तीनि रानी भईं। तिसरी रानी बाघिनि परी रही। सबेर भा। बाघिनि परी का लकड़ी छुवाइ के बाघिनि रूप बनाइ के दरबार मा लयिगै। पूरा दरबारी उठि के भागेनि। बाघिनि कइ दहाड़ सुनि के सब डेरायि गयेन। वजीर का बोलायि के कहेन कि आवा दूध दुहि के राजकुमारी का पियावा। वजीर नायिं नेकचानेनि। पूरे दरबार मा सबके सामने बाघिनि कइ दूध दुहि के धइ दिहेन।

वजीर के आँखी के आगे अन्हियरिया छाइ गइ। अउर सब दरबारी पिसनहरी के लरिका कइ बखान करइ लागेनि। राजा बहुत प्रसन्न भयेन। लरिका राजा साहब से हाथ जोरिकै कहेस कि हे राजा साहब ये जवन तोहार वजीर हयेन येनकइ चरित्र ठीक नायिं बा। ये राजकुमारी से बरे घातक सिद्ध होइहैं। वजीर का भण्डाफोड़ भा। इही साथे राजा से उ इहउ बतायेस कि हम वहि रानी कइ लरिका हइ जेका तू निकारि दिह्या। राजा दउरि के अपने कोरा मा बइठाइ के गले से लगायि लिहेन। रानी का पिसनहरी के घरे से मँगाइ के राजधानी मा बड़ी रानी बनयेनि। तीनिउँ परी आईं। तीनिउ से एक छोट भाई कइ अउ दुइ आपनि अउरति बनयेनि। वजीर का सरगे टँगायि के झुरवाइ दिहेन।

राजा कइ अंतिम समयि आइ गइ। वइ सन्यास बरन कइके बड़े लरिका का राजगद्दी दयि दिहेन।

# जहाँ पेड न रूख, रेड़इ महापुरुष

एक जने रहेन राजा। राजा सत्त अउ नियाउ कइ राज करत रहेन। जनता का दरबार मा खुली छूट रही। कउनो समस्या होइ वहि पइ जनता आपन विचार दयि सकइ। सही विचार देइ वालेन का राजा पुरस्कारउ देत रहेन। एक जन अहिर दरबार मा जाइ का तइयार भयेन। सोचेन कि नाइ कउनो काम काज बा चली दरबारइ तउ कइ आई। ओनके गाउँ मा पढ़ा-लिखा अउ दरबार मा जाइ वाला केउ नाइ रहा। गाउँ नदी के वहि पार जंगल के बीच मा रहा। अपने नाउँ का गाउँ के नाउँ का ऊपर उठावइ खातिर ई पहिला कदम आ। जे हमार गाउँ अउ हमार नाउँ न जानत होये सब जाने अउ इनाम पाउब लरिके बच्चे जीहइँ।

पगड़ी ठीक करावइ मा ऊ बहुत परेसान भयेन। अन्तमा बड़के गुरवा कइ चउधिरी ओनकइ पगड़ी बनयेनि। एक दिन पूरा घूमि के पास पड़ोस कइ विचार लिहेन कि पगड़ी ठीक बा कि नाइं, सब पसन्द किहेन। दरबार जाइ बरे तयार तउ भय मुल लाठी ठीक नाइ बा। अन्त मा ओझा कइ सोंटा तउ मिला मुल कुछु छोट होइके नाते बदलू कइ लाठी जादा पसन्द आइ। कटवासी खूँटी कइ कटी, छोट-छोट गोल्ला, जादा नाइं तउ सवा दुइ हाथ सिर के ऊपर तक, लाल कला रंग कइ मिला रंग ई लाठी सबका पसन्द आइ। पनही रेड़ी के तेल से लथपथ, चले पइ मरर मरर कइ आवाजि, एड़ी ले परदनी, मेरजई साफ सुथरी, उज्जर मलमल कइ अँगउछा सबका पसन्द आई। अन्त मा पांच जने से आपन पहिराउ पसन्द कराइ के चलि परेन। रेह अउ धूरि भरा गलियारा पार किहेन। बबुर झालि मकोयि वाला जंगल पार किहेन, नदी पइ आइके पहुँचि गय।

पनहीं मा धूरि चफनि गय। गोड़े पइ धूरि कइ परभाउ परदनी के झारेउ पइ अबइ बची बा। हाथ मुँह धोउबउ जरूरी बा। धीरे से मूड़े कइ पगड़ी उतारि के एक झाली पइ धइके नदी मा उतरि परेन। हाथ मोह धोयेन। नदी के पानी मा मोह देखेनि। जइसे पगड़ी के लगे आइ के मोछे पइ हाथ फेरेन एक खरहा झाली से उठा अउ भागा। संजोग से पगड़ी मा ओकइ सिर चला गा। पूरी पगड़ी लइगे भाग। अन्तमा खुलि गये पइ साफा भुइं पइ फइलि गा। दरबारी तउ हक्का बक्का होइके ताकत बाटेन। चेल्लानेनि कि हे भइया हमारि पगड़ी जिनि खोवा। हाथउ जोरेन मुल खरहा कइ जाति कहाँ मानइ। बड़े धियान से खरहा कइ रूप रंग देखेनि। जोर से बोलायि के कहेन कि अच्छा चला हम आवा तही तोहरे बाप के लगे तोहार सिकायत बिना किहे न मानब।

पगड़ी बटोरि के हाथ मा लटकाइ लिहेन। सिकायिति करइ बरे चलि परेनि। जात जात बहुत दूरि निकरि गयेनि। उहाँ एक गदहा चरत देखेनि अउ रूप रंग मिलायेनि। अब निहचित कइ लिहेन कि येई ओकइ बाप हयेन। दूरि से कहेन कि भइया तोहार बेटवा बड़ी बदमासी किहेस। हमारि पगड़ी खोइ दिहेस। एकइ कउनो नियाउ करा नाहीं त हम राजा के दरबार मा पेस होबइ। गदहा चरत रहा उ चरत की कान फटफटावा करइ अउ मूड़ हिलावा करइ। उ जाने कि सुनत नाइ बा। बोलेन अरे भइया तनिका चरबवा तउ बन्द कइद्या। हमारि बतिया तउ सुनिल्या। अउर नेकचे जाइ के कहइ लागेनि। पीछे कइ दुइनउ लात छाना रहइ उछारि के कूदा मतलब मारइ कइ परयास करइ लाग। ओ समझेनि कि काने से न सुनि के पीछे से सुनाथइ, ऐसन इसारा करत बा। जइसे जाइके पीछे मोह कइके सिकायिति करइ लागेनि वइसे मारेस दुयिनउ लात जोरि के उहीं तमाम होइगेन।

# मूस बनियाँ

एक जने रहेन बनियाँ। चलेन बैपार करइ। उरद कइ बोरी कन्हियायि के पीठी पइ लादि लिहेन। राही मा एक मूस मिला। मूस कहेसि सेठि राम राम। सेठि राम राम कहिके हाल चालि पूछेन। काउ लादे हया महाजन? उरद अहइ भइया। मुसऊ के मुह मा पानी आइगा। ओन्हइ उरद बहुत पसन्द रहा। धीरे से गठरी पइ चढ़ि के काटि दिहेन उरद गिरयि लाग। बनियाँ से अपुना कहेन कि तनी रुका तोहार उरद गिरत बा। मुसऊ बिनावइ लागेनि, एक उरद काने मा, एक नेकुरा मा एक मुहें मा दुइ चारि अउर चोराइ के लइ आयेनि।

घरे लायि के बोइ दिहेन। अउ कहेन कि हे उरदऊ विहान जामि आया नाहितउ काटि कूटि करियये बरद के आगे डारि देब। बिहान भे जामि आइ। फेरि कहेन बिहान बड़ा का भा रह्या नाहीं तउ काटि कूटि करियये बरदा के आगे डारि देब। गयेन सबेरे देखेनि कि पेड़ा बड़ा भा रहा। फेरि कहेनि कि बिहान फुलान अउ फरा रह्या नाहीं तउ काटि कूटि करियये बरदा के आगे डारि देब। बिहान भे गयेन तउ देखेनि के फरा फुलान रहा। फेरि मुसऊ कहेन कि बिहान खुब गदरान रह्या नहीं तउ काटि कूटि के करियये बरदा के आगे डारि देब। बिहान भे खूब गदरान रहा। जुटि गयेन मुसऊ खायि। एतना खायेन कि पेट फूलि आइ। जब घरे गयेन तउ चूतर बिली मा अटकि गइ। बहुत कोसिस किहेन मुल हलि नाइ पायेन। बेचारू गयेन बढ़ई के घरे कहेन हे भइया बढ़ई-

बढ़ई बढ़ई चूतर छोल,<br>
चुतरा न बिलि समायि,<br>
गुदुरी बहुत खाये,<br>
खाये बिना रहि ना जायि।<br>
पेट फूलयि जिउ जायि।।

बढ़ई कहेस कि हाँ अबहें तोहार चूतर छोलबइ करब। हमार बँसुला खराब होइ जाये। मुसऊ निरास होइ के राजा के पास गयेन अउ अपने दुख कइ कुलि गाथा सुनायेनि अउ कहेन कि -

राजा राजा बढ़ई डांटु,<br>
बढ़ई न चूतर छोलइ,<br>
चुतरा न बिलि समायि,<br>
गुदुरी बहुत खाये,<br>
खाये बिना रहि न जाइ।<br>
पेट फूलइ जिउ जाइ।।

राजा कहेन कहो मुसऊ हम तोहँका बदे आपन बढ़ई का दण्ड देबइ। भागि जा यहिं से। वहिं से मुसऊ भागि के रानी के पास पहुँचेनि। कहेनि कि -

रानी रानी राजा छोड़ु, रजवा न बढ़ई डाँटइ,
बढ़ई न चूतर छोलइ, चुतरा न बिलि समाइ।
गुदुरी बहुत खाये। खाये बिना रहि न जाइ।
पेट फूलइ जिउ जायि।।

हे मूस राम, तोहरे कारन हम आपन राजा छोड़ि देब। ऐसन बाति अब जिनि किह्या। चला जा यहिं से। मुसऊ वहिं से भागि के गयेन साँप के पास। कहेनि -

साँप साँप रानी दन्सु। रनियाँ न राजा छोड़इ।
रजवा न बढ़ई डाँटइ। बढ़ई न चूतर छोलइ।
चुतरा न बिलि समायि। गुदुरी बहुत खाइ।
खाये बिना रहि न जाइ। पेट फूलइ जिउ जाइ।।

सँपऊ कहेनि कि करेतोंका बदे हम रानी का काटब। भागि जा यहिं से। अब ऐसन जिनि बोल्या। तब मूस लाठी के लगे गा अउ कहेस -

लाठी लाठी कीरा मारु। किरवा न रानी दन्सइ।
रनियाँ न राजा छोड़इ। रजवा न बढ़ई डाँटइ।
बढ़ई न चूतर छोलइ। चुतरा न बिलि समायि।
गुदुरी बहुत खाइ। खाये बिना रहि न जाइ।
पेट फूलइ जिउ जाइ।।

अब लाठी मूसे से कहत बा हम तोह्रे बदे सांपे का मारइ ना जाबइ। मूस उहां से भारे के लगे पहुंचा। वहि से आपन उद्देस कहिस -

भार भार लाठी जार। लठिया न कीरा मारइ।
किरवा न रानी दन्सइ। रनियाँ न राजा छोड़इ।
रजवा न बढ़ई डाँटइ। बढ़ई न चूतर छोलइ।
चुतरा न बिलि समायि। गुदुरी बहुत खाइ।
खाये बिना रहि न जाइ। पेट फूलइ जिउ जाइ।।

भार कहत बा कि हे मुसऊ हम लाठी काहे का जारी। न तु हमार मीत हया न कउनो सम्बन्ध बा। लाठी हम न जराउब। मूस वहिं से भागि के समुद्दुर के लगे पहुंचा। अउ कहेस -

समुद्दर समुद्दर भार बुताउ। भरवा न लाठी जारइ।
लठिया न कीरा मारइ। किरवा न रानी दन्सइ।
रनियाँ न राजा छोड़इ। रजवा न बढ़ई डाँटइ।
बढ़ई न चूतर छोलइ। चुतरा न बिलि समायि।
गुदुरी बहुत खाइ। खाये बिना रहि न जाइ।
पेट फूलइ जिउ जाइ।।

समुन्दर कहत बा हौं हम तोहरे खातिर भार बुताउब। जेका बोलावत हो बोलावा। हम भारे का काहे बुताई। चाहे लाठी जारइ चाहे नांइ। उहूं से मुसऊ निरास होइ के हाथी दादा के लगे पहुंचि गयेन। दादा से कहेन -

हाथी हाथी समुन्दुर सोखु। समुन्दुर न भार बुतावइ।
भरवा न लाठी जारइ। लठिया न कीरा मारइ।
किरवा न रानी दन्सइ। रनियाँ न राजा छोड़इ।
रजवा न बढ़ई डाँटइ। बढ़ई न चूतर छोलइ।
चुतरा न बिलि समायि। गुदुरी बहुत खाइ।
खाये बिना रहि न जाइ। पेट फूलइ जिउ जाइ।।

हाथी कहेस कि हां हो मूस राम, हम तोहरे बदे समुंदर सोखबइ करब। भागि जा यहिं से। तब भागि के मुसऊ गयेन बवँरी के लगे। बवँरी से कहेन -

बवँरि बवँरि हाथी छानु। हथिया न समुंदर सोखइ।
समुंदर न भार बुतावइ। भरवा न लाठी जारइ।
लठिया न कीरा मारइ। किरवा न रानी दन्सइ।
रनियाँ न राजा छोड़इ। रजवा न बढ़ई डाँटइ।
बढ़ई न चूतर छोलइ। चुतरा न बिलि समायि।
गुदुरी बहुत खाइ। खाये बिना रहि न जाइ।
पेट फूलइ जिउ जाइ।।

तउ हो मुसऊ हम तोहरे कारन हाथी का छानइ जाबइ। भागि जा इहां से। मुसऊ भागि के गयेन बकरी के लगे। हे बकरी दीदी तू चला बवँरि का चरि ल्या ओकरे भूख लागि रही। पूंछि हिलायि के बकरी तइयार होइ गइ चरइ बदे। डेरायि के बवँरि कहत बा कि -

हमका चरा वरा जिनि कोय।
हम तउ हाथी छनवइ लोय।।

जब हाथी के लगे बवँरि गइ तउ हाथी कहत बा कि -

हमका छना वना जिनि कोय।
हम तउ समुंदर सोखबइ लोय।।

समुंदर कहेस कि -

हमका सोखा ओखा जिनि कोय।
हम तउ भार बुतउबइ लोय।।

भार कहत बा कि -

हमका बुता उता जिनि कोय।
हम तउ लाठी जरबइ लोय।।

लाठी कहत बा कि -

हमका जरा वरा जिनि कोय।
हम तउ कीरा मरबइ लोय।।

कीरा कहत बा -

हमका मरा वरा जिनि कोय।
हम तउ रानी दन्सब लोय।।

रानी कहत बार्टी -

हम्मइ डसा वसा जिनि कोय।
हम तउ राजा छोड़बइ लोय।।

राजा कहत बाटेन कि -

हम्मइ छोंड़इ ओड़इ जिनि कोय।
हम तउ बढ़ई डंटबइ लोय।।

बढ़ई बोलइ लाग -

हम्मइ डांटइ वांटइ जिनि कोय।
हम तउ चूतर छोलबइ लोय।।

बढ़ई बंसुला खुब पँहटि के चोख कइके चूतर छोलयि बदे तइयार होइगा। मुसऊ आयेनि ठेहा पइ बइठि गयेन। बढ़ई चूतर छोलि दिहेस। बादि मा मुसऊ का खूब पिरान तब बढ़ई से कहत बाटेन हे भइया कउनो दवाई बताइ द्या। बढ़ई कहेन जाइ के चना की खूंटी मा लोटि ल्या तब जहा रेह उठी होइ वहिं लोटि ल्या। एतना किहे पइ तू ठीक जोइ जाब्या।

मुसउ जायि के चना के खेतें मा लोटेनि अउ वहिमा से निसरि के रेहे मा लोटेनि। खूटी धँसि धँसि खूनयि खून कइ दिहेस। रेह मा ओलरेनि यहि से खूब छरछरान उही अहथान पइ खीसि बाइ दिहेन।

# डइनियाँ रानी

एक जन रहेन राजा। ओनके रहीं छ रानी। एक दिन वइ सिकार करइ जंगल मा गयेन। उहाँ बीच जंगल से रोवइ कइ अवाजि आइ। एक डाइनि सुन्नर रूप बनायि के राजा का छलयि बदे बइठी रहे। रोउब सुनि के राजा वोहरी गयेन। देखेनि ओकरे रूप का देखि के राजा मोहित होइ गय। राजा पूछेनि तू के हऊ। ऊ बतायेस कि हम अउ हमार बाप जात रहे ओनका बाघ मारि के खायि लिहेस। हम इहाँ अकेल परी हई। राजा का इहउ मालुल भा कि अबइं एकइ बिआह नाइं भा बा। अपने साथे घरे लइके आयेनि। आपन बिआह कइके सतयीं रानी बनायि लिहेन। छवइ रानी से ऊ ईरसा अउ डाह से जरइ लागि। राजा सब कइ अलग अलग काज बाँटि दिहेन। सब रानी अपने अपने घोड़न का अलग अलग भोजन देयि लागीं। नई रानी डाइनि रहबइ करइ। ऊ अपने घोड़न का छोड़ि के ओनके सब के घोड़न कइ खून अउ मासु खायि लागि। फल ई होइगा कि छोटकी रानी की घोड़ मोटाइ लागेनि, बड़की रानी लोगन कइ घोड़ा दुबराइ लागेनि। राजा से सिकयतउ करइ लागि के ये सब आपनि डिउटी सही नाइ करतीं। घोड़ा कइ खोराक चोराइ ले थीं। राजा बिगड़ेनि अउ छवउ जनी का राज से निकारइ का अदेस जारी किहेन। फेरि कहेन कि मड़ार खोदायि के उही मा एनका गड़ाइ द्या। मड़ार खोदिगा वहिमा एनका सबका डारि के बज्जर कै तावा से जड़ि दीनगा। छवउ रानी वहिं मड़ारे मा भगवान की किरपा से जियत रहि गयीं। सब के पेटे मा गरभ रहा। भूख कइ पीरा अपरम्पार हो थइ। सब सहइ मा असमर्थ होइ गयीं। एक जनी के जब लरिका भा ओका सब मिलि के खायि लिहीं मुल छोटकी रानी धइ दिहीं, नाइ खायीं। फेरि दुसरी तिसरी चउथी अउ पंचवी के लरिका भा सब मिलि मिलि खावा किहीं मुल छोटकी अबउ नाइ खायेस, आपन हींसा ध इ देइ। अब छोटकी के बेटावा भा उ किहिउ का खायि नाइ दिहेस। सब एतराज किहीं तउ जवन ध रे रही उहइ भाग सब का दयि दिहेस। लरिका छवउ के बीच मा पलइ लाग। बड़ा होनहार लरिका भा। जब कुछु बड़ा भा तउ बज्जर के तावा पइ धक्का दयि के खोलि दिहेस। वहिं राही से अँजोर देखि परा लरिका चिहुँकि गा कि ई काउ आ। महतारी सब बतायीं। उ सबका वहिमा से निकारि के बहरे किहेस। सब कइ आँखि राजा निकरवाइ लिहेन। अँगुरी पकरि के जंगल मा लइगा। उहाँ मड़ई डारि के सब कइ सेवा करइ लाग। यहि सब समाचारे से डइँनिया रानी अवगत होइगै। राजउ का पता लागि। डइनियाँ कहेस हे राजा वहिं लरिका का बोलायि के ओसे हंस-घोड़ कइ पता लगवावा। राजा कइ सनेस लइके एक नौकर गा। ओ कहेन कि हम यहिं से कतहुँ ना जावइ। पहिले इहाँ भोजन पानी आदि कइ बेवस्था करा। सेवा करइ का नौकर लगावा तब हम चलब। सब तइयारी होइगा। पंडित आयेन भोजन बनवइ का सेवा के बदे दुइ सेवक गयेन तउ राजकुमार आयेनि। ओनकइ रूप रंग देखि के राजा कइ मन मोहित होइगा। मुला काउ करइँ डइनियाँ रानी कइ अदेस बा जवन। ओनका हंस-घोड़ पता लगावइ कइ अदेस दिहेन। डइनियाँ कइ मतलब ई रहा कि हंस-घोड़ एनका खायि लेइहें। तब छवउ रानी का मरवायि देब।

राजकुमार हंस-घोड़ हेरइ बरे निकरि परेन। एक जंगल मा कुछु मनई मिलेनि ओनसे पूछेनि कि हे भइया! हंस-घोड़ कहाँ रहा थेन? एनकी कोमलता पइ वइ सब तरस खायि गय। कहेन हमका नाइं

ालुम बा तू चला जा अपने घरे। दुसरे जंगल मा गयेनि लकिर गोरू चरावत रहेन। पूछे पइ वो राहि खायि दिहेन। गयेन वहिं तलाउ मा जहाँ घोड़ पानी पिअयि आवत रहेन। एकठी गड़हा खोदि के खर तवार धइ के लुकि गयेनि। सब घोड़ आयेनि पानी पियेनि उड़ि गय। जब सब कइ मालिक सबसे पीछे ायि। पानी पी के जइसे नेमका निकरि के कूदि के पीठी पइ सवार होइ गयेनि। अकास मा लइके ड़िगा। उलटि पलटि हर तरह से गिरावइ कइ परयास किहेस मुला राजकुमार ओकरे बड़हर बारे का पकरि े छपटा रहेनि। बहुत दउरि धूपि के हंस-घोड़ थकिगा।

अन्त मा हंस-घोड़ दउरि धूपि के समझिगा कि यऊ केउ होंइ। कहेस कि कहाँ जाब्या। ये आपन स बतायि दिहेन। ऊ वहिं के खातिर उड़ा। आइके उहाँ पहुँचिगा। राजा का बोलवाइगा कि घोड़ आइगा ा। आइके देखा। राजा कुछु सभासद अउ सिपाही के साथे चलि परेन। आइके देखत बाटेन कि घोड हुत सुन्नर बा। राजकुमार उड़ाइउ के देखायेनि। हंस-घोड़ सबका खायि बदे टूटि परा। राजकुमार चायेनि। राजा सभासद सब भागि के चला गय। डइनियाँ पता पायेस कि पता लगावइ का के कहइ इ तउ घोड़वइ पकरि के लयि आइ हयेनि। ओका बड़ा अचरज भा।

अब राजा से कहेस कि राजकुमार से कहिद्या कि जाइके वहिं धाने कइ बालि लावइं जवन साँझ की बोइके सबेरे काटि लीनि जाथइ। आदेस भा। राजकुमार छवउ अन्हरी महतारी कइ फेरि से उहइ बेवस्था कइ मांग किहेन। बेवस्था होइ गइ। हंस-घोड़ पइ बइठि के आठ घन्टा चलनि। साँझ की हंस-घोड़ लइके जंगल मा एक साधू की कुटी पइ उतरेनि। साधू छ महीना सोवइं छ महीना जागयिं। वहिं आस्रम मा रहि के साधू कइ फुलबारी सींचइ-गोड़इ सफाई करइं। साधू की पैर दांबइं। कइरूउ छ महीना बीता। साधू जागेनि, पूछेनि बच्चा कहाँ जाब्या? बाबा हम धान आनइ जात हई जवन साँझ की बोइ के सबेरे काटि लीन जाथइ। अरे बच्चा तू वहिं जाइ कइ बाति जिनि किह्या। वहिं जे जाथइ आजु ले केउ वापिस नाइ आइ। येसे बच्चा इहइ कहबइ तू घरे लउटि जा। नाहीं वाबा धान तउ अवस्य लइजाबइ। साधू बाबा मन्त्र बताइ के सोग्गा बनइ दिहेन अउ कहेन कि बच्चा जा बालि लइके भाग्या। केतनउे केउ खेदयि हल्ला मचावइ तू पीछे जिनि लख्या। सोग्गा गा बालि खोंटि के भागा। धरा धरा पकड़ा पकड़ा की आवाजि बहुत जोर से भइ। एक दानउ पहुँचि के कहेस पकड़िनि लेई थइ। सोग्गा पीछे देखि के राखी बनि के गिरि परा।

बहुत बेरि होइ लागि सोग्गा लउटा नाइ तउ साधू बाबा धियान किहेन तउ राखी पाती सहित चला आइ। मंत्र फूंकि के फेरि से ओनका मनई बनइ दिहेन। अब बाबा कहेन कि बच्चा चला जा घरे। वइ हाथ जोरि के गोड़े पइ गिरि परेनि। बाबा अबकी गलती होइ गइ अब हमै फेरि जाइ द्या। अब पीछे ना ताकब। बाबा फेरि से ओनका सोग्गा बनयि के फेरि से पठवइ का तयार भयेन। बच्चा मंत्र एक्कइ बार काम करा थइ। जउ अबकी बेरि पीछे ताक्या तउ न बचि पउब्या। बाबा मंत्र पढ़ेन वइ सोग्गा बनेनि अउ गै। धाने के खेत मा सजग रखवारेन कइ डिउटी लागि री। बालि काटेनि अउ लइके उड़ेनि। हड़ा हड़ा, पकड़ि ल्या कइ धुनि चारिउ ओर से उठयि लागि। आँखि मूनि के वइ भागि चलेनि। जब बहुत दूरि चला आयेन अउ खेदयि वाली अवाजि धीमि होइ गयि तउ ताकेनि अउ सोझयि साधू बाबा की कुटी पइ पहुँचेनि। बाबा रूप बदलेनि अउ प्रसन्न भयेनि। अब घरे चलइ का तइयार भयेनि। बाबा आपन आदेस दिहेन। गोड़ पइ माथ धइ के असिरवाद लिहेन अउ हंस-घोड़ पइ चढ़िके चलि परेन। घरे आइ के एक कूला बोइ दिहेन। सबेरे तइयार होइगा। राजा का सनेसा पठयेन। राजा मंत्री सब आइ के धान देखेनि। राजा ओनसे माँगेनि वइ देइ मा इनकार कइ दिहेन।

बिहान भे डइनियाँ रानी सोचेस कि हम अपनी माई के लगे हाले चाले का पठई। वहिं से तउ उबरि पइहें ना। राजा से कहि के बोलवायेस। आयेनि। चिट्ठी पत्री दयि के कहेनि कि जाइ के हालि चालि लइ आवा। घोड़ा पइ बइठेनि अउ नौकरन का सेवा बरे सचेत कइके चलि परेन। घोड़ा पवन गति से

चला जात बा। तेज घामे मा पियास लागि गयि। एक कुआँ देखि के रुकेनि पानी पियेनि, स्रम का खोवइ बदे लेटेनि, नीनि आइ गइ। एक सुन्नर राजकुमारी आइ। ओनकइ सुन्नर रूप देखि के ओनकी ओर ताकयि लागि। ओकरे भेद जानयि कइ इच्छा भइ कि ई राजकुमार के आ। कहाँ से आवत हयेन अउ कहाँ का जइहें? नेकचे आइ के धियान से येनकइ रूप सुहावन देखेस। ओकइ निगाह पगड़ी मा खोंसी चिट्ठी पइ गइ। ऊ धीरे से निकारि के पढ़ि लिहेस। वहिमा लिखा रहा कि हे माई! ये हमार दुसमन होंइ। तू एनका कउनो कीमति पइ बचइ जिनि दिहिउ। छवउ सवतिन कइ अकेल लरिका येनहीं हयेन। लड़की बेचारी एका पढ़ि के बड़े असमंजस मा परिगइ। सोचइ लागि कि एतना सोन्नर रूप वाला ई राजकुमार एनका मारइ कइ चिट्ठी येनहीं के हाथे भेजवावत बाटइ। केउ हिरदयि से हीन अउरति कइ काम आ। कागद कलम लइ के उ लिखति बा कि हे माई तोहार नाती होंय। येनका जिउ से जादा मानू। मान सम्मान मा कउनो कमी नाइ होइ का चाही। वहि चिट्टी का लइ लिहेस यहि चिट्ठी का ओइसे उही अहथान पइ खोंसि दिहेस। एनके रूप सुधा कइ पान करत की चली आइ।

कुछु बेर बादि मा नीनि टूटि। उठेनि फेरि घोड़ पइ सवार होइके हरहेटेन घोड़ का। उ बहुत जोर भरि के बढ़यि लाग। केतना नदी, बन, परबत, पार करत की आगे बढ़ेनि। आइ के वहिं पहुँचेनि जहाँ बदे चला रहेन। घोड़ कहेस कि ई डाइनि कइ गाउँ आ। इहाँ उतरऽ जिनि नाहीं तउ खायि लेइहें। जब घोड़ नेकचे आइ तब पूरे गाउँ मा मानुष खाउँ कइ अवाजि चारिउ ओर उठइ लागि। मारूँ मारूँ खाऊँ खाऊँ चारिउ ओर से घेरि लिहेन मुल घोड़ा के नचके केउ नाइ आवत बाटेन। वइ घोड़ की पीठी से उतरतउ नाइ बाटेन। घोड़े पइ राछस नाइ जातेन। घोड़ा कइ बारउ जेकरे लगे रहे उहू के लगे न अइहें। चिट्ठी निकारि के फेंकेनि। चिट्ठी से परिचय मिलि गइ। सबका अपनी एक बोली से हटायि दिहेस। आपन नाती कहिके घरे लइ गइ। सेवा पाती से नाइ चूकी। अब राजकुमार ननियउरे मा दस दिन रहि गय। जहाँ नानी जायिं येऊ जाइं। कोठा पइ ऊ चढ़ी तउ एऊ चढ़ेनि। उहाँ जाइके देखत बाटेनि कि तमाम सामान धरा बा। लरिका केस सुभाउ बनइ के पूछा थयेन कि हे नानी तीनिउ़ थली केसि आ? बच्चा तीनिउ थइली हवा पानी अउ आगी कइ आ। यहि से जवन थइली खोलि दे उहइ उधिराइ परे। इ लड़ाइ मारु काटु का काम दे थइ। नानी ई खटोला केस आ? बच्चा यहि पइ बइठि लिहे पइ केउ ना पाये। येतनी तेज गति वाला उड़नखटोला यहिं दुनियाँ मा नाइंबा। नानी ई केस आँखि धरी बा? बेटवा ई मनई कइ आँखि आ। यहि का जउ दूध मा भेंइ के सीती मा धइ देयि सबेरे लगायि देयि तउ लागि जाये। ई तोहरे अम्मा छ रानी कइ आँखि पठये रहीं। कुलि समझि के उतरेनि। धिरुची कइ पानी ढरकायि दिहेन। नानी आईं तउ कहेनि पियासि लागि बा। नानी पानी भरइ गईं। इनारा पइ उबहनी मा फानि के कुवाँ मा गगरा डारीं। पीछे नाती खड़ा भा जाइके। जब गगरा थाम्हइ का लपकीं उही समयि मा जोर कइ धक्का दयि के इनारा मा ठेलि दिहें। दउरि के कोठा पइ चढ़ेनि तीनि थइली, उड़नखटोला, छ रानी कइ आँखि अउर सामान लइके उड़ि परेन। हंसघोड़ साथे चला।

कुछु दूरि गये पइ दँइत, राछस, दानउ सब बड़हरि फउज लइके खेदि लिहेन। पहिले पानी वाली थइली खोदि दिहेन। तेज धारि से केतना तउ बहि गेन। जे बचा हवा कइ थइली खोलि दिहेन, उड़ि गय। ओहू मा जे बचा आगी कइ थइली खोलि दिहेन, जरिगा। यहि परकार से कइसेउ साँझ की घरे पहुँचेनि। गउधिरिया मा छवइ माई कइ आँखि दूधे मा भेंइ दिहेनि सीती मा धइके सबेरे लगायि दिहेनि सब कइ आँखि ठीक होइ गइ।

सबेरे राजकुमार राजा से जाइ के मिलेनि। ओनसे पूरी हालि बतायेनि। ऊ तउ डाईंनि कइ परिवार आ। हमका खायि बदे दउरेनि। घोड़ से उतरे नाइ। आवत की घोड़ा का उड़ायि के भागि के कइसेउ प्रान बचाये। राजा की समझि मा बात आइ गइ। डाइँनि कइ स्वरूप वहिमा देखयि लागेनि। छवउ रानी का वहिंसे दरबार मा मंगायेनि। डइनियां रानी का खौंड़ लगायि के कुकुरे से नोंचवायि के मरवायि डारेनि।

# परी कइ खोज

एक जने रहेन राजा। ओनके चारि राजकुमार रहेन। वहिमा से तीनि जने कइ सादी होइ गइ। छोटके बेटवा कइ सादी नाइ भयि रही। पानी माँगे पड मजाक मा ओनकइ भउजी कुछु कहि दिहीं ई मजाक कइ बाति ओनके हिरदयि पइ छुइ गयि रही। सुन्नरि दुलहिनि खोजइ निकरि परेनि। एक दुसरे राज मा पहुँचेनि उहाँ एक चोर पकड़ा गा रहा। राजा ओका फाँसी कइ सजा दिहे रहेन। राजकुमार जल्लाद से पूछेनि कि केतने कइ चोरी किहेन? जल्लाद बतायेस कि 500 रुपिया कइ। केतना जमा किहे पइ बचि जाये। 1000 रुपिया जमा किहे पइ बचि जाये। खुदि एक हजार रुपिया दयि के चोरे का फाँसी से उतारि लिहेनि। ओकइ नाउ रहा दिलबहार। जब राजकुमार आगे चलेनि तब पीछे लाग दिलबहारउ चलेन। राजा बहुत लउटायेनि मुल मानत नाइ बा। ऊ कहेस कि तू महार भगवान हया। हम साथे साथे रहनइ। दिन बीति गा। राति की बेला आइ गइ। दिलबहार पहरा पइ खड़ा होइ गयेनि। दिलबहार पसु-पच्छी कइ बोली जानत रहेन। जंगल मा एक जानवर बोला कि इहाँ पेड़े के तरे एक नाग आपनि मणि उगिले बा। जउ केउ सुनत होइ ऊ मणि लइ लेइ अउ साँप का हम्मइ दयि देइ। दिलबहार सुनि के चलेनि पेड़े पइ धीरे से चढ़ि गय। एक पिछउरी धीरे से मणि के ऊपर डारि दिहेन। साँप मणि के अभाउ मा मरिगा। मणि लइके चला आयेनि। राति कइ आखिर बेला रही। चुहचुइया बोलति रही। बन मा एक नदी रही। वहिं पहुँचि के कोल्ला दतूइनि किहेन। सबेरइ रहा तबउ देखा थयेन एक बहुत सोन्नरि औरति नदी के किनारे निकरी रही। जब ऊ दिलबहार अउ राजा का देखेसि तब पानी मा चली गइ। दिलबहार पानी मा हेरइ बदे मणि लइके प्रवेस किहेन। अन्दर जाइके देखत बाटेन कि एक किला बना हइ। वहि पइ दुइ विकराल राछस पहरा देत हयेन। आइ के राजा से बतायेस। राजउ कइ जिज्ञासा बढ़ी। दुइनउ जने मणि साथे लइके गयेन। मणि साथे रहे पइ पानी मा कउनो परेसानी नाइ होत। दुइनउ जने गय। पहरेदारन का किला के दरवाजे के दुइनउ पहरेदारन का तरुवारी से मारि के वइ दुइनउ जने अन्दर गयेनि। अन्दर जाइ के लालपरी से भेंट भइ। उ बहुत मान सम्मान किहेस। राजा हँसी खुसी से उहाँ रहइ लागेनि। राजा से एक दिन लाल परी कहेस कि हे राजा! हमारि एक बहिनि छोटि बा किरपा कइके उहू के साथे सादी करा। ओकइ नाउँ आ मोती परी। उत्तर दिसा मा पहाड़े की गुफा मा मोती परी रहा थइ। ओकइ बार सोने कइ होंइ। राजा के कामे बदे तउ दिलबहार जनमइ लिहे रहेन वइ तइयार होइ गयेनि।

लाल परी कहेस जउ जात हया तउ ल्या ई टोपी। जउ नेकचाया तब एका लगाइ लिह्या। लगाये पइ तू तउ कुलि देखइ लगब्या अउ तोहँका केउ ना देखि पइहें। दिलबहार मणि अउ टोपी लइके चलि परेनि। जात जात वइ गुफा के पास पहुँचि गेन। टोपी लगाये के नाते राछस ओनका देखत नायिं बाटेन। दिलबहार जाइ के परी के लगे पहुँचि गयेन। परी से कहत बाटेन कि तोहँका तोहार बहिनि लाल परी बोलाईं हइं। हे भइया हम कइसे चली तोहँका खायि लेइहँइं। हम्मइं ओनके खायि कइ चिन्ता नाइ बा। तू तइयार हो अउ चला। दिलबहार अउ मोती परी चलेनि। परी टोपी दयि के अउ दिलबहार मणि लइके चलेनि। एक दानउ पीछा किहेस। जात जात दुइनउ जने एक ऐसन राज मा पहुँचि गयेन जउने मा एक्कइ

परबेस दुआरी अउ निकरइ कइ दुआरी रही। टोपी अउ मणि के नाते दिलबहार अउ मोती परी का केउ देखि नायिं पायेस। दानउ दुवार पइ आइ के ठाढ़ भा। उहाँ राज का जेतना मनई आवइ ऊ खायि लेत रहा। कुछइ दिन मा हल्ला मचिगा। राजा आइ के दानउ से पूछेन तू काहे उतपात मचाये हया। दानउ कहेस कि तोहरे राज मा एकठी चोर हला बा। तू वहिं चोरे का निकारा तब हम यहिं से हटब। अच्छा हम एक एक कइके पूरे राज कइ मनई राज से निकारत बाटी तू आपन चोर देखा।

राजा कउ किहेन कि सबका एक सक बहरे होइ कइ अदेस दयि दिहेन। सब निकरइ लागेनि। उही समयि दानउ खड़ा होइके निहारइ लाग। दुइनउ जने का किहेन कि टोपी दयि के परी निकरि आयीं। एक बूढ़ि कइ रूप बनइ के दिल बहारउ निकरइ लागेनि। वइ दानउ के लगे आइ के धक्कउ मारि दिहेन। दानउ डाँटि दिहेस कि हे बुढ़िया! ठीक से जा। चला आयेनि। जब नजर से ओट होइ लागेनि तब भेष बदलि के भागेनि। सब मनइनि के खतम भये पइ दानउ राजा से छमा मांगि के आगे दउरा। जबधुक दुइनउ जने नदी के लगे पहुँचत बाटेन दानउ फेरि आइगा। तब तक मणि रहबइ कीनि नदी के जल मा प्रवेस कइगय। दानउ पानी मा जाइ मा असमर्थ रहा उहीं खड़ा रहिगा। वइ दुइनउ जने आइके राज के लगे किला मा पहुँचेनि। राजा अउ लालपरी दुइनउ जने बहुत प्रसन्न भयेन।

राजा कहेनि कि अब हमरे घरे से बरात आये अउ सादी होये तब हम घरे चलब। नाहीं तउ घरे पहुँचे पइ अनेक परकार कइ व्यंग बोलि जाये। दिलबहार का पहुँचायेनि अउ कहेनि कि जा बरात सजायि के लयि आवा। येहर दुइनउ बहिनि नदी तीरे मूड़ मीजयिं आईं। नदी के तट पइ मोती परी कइ एक बार गिरिगा। वहिका वहिं देस कइ राजकुमार पाइगा। घरे जाइके ऊ कहइ लाग कि जेकइ बार आ अगर वहिं रानी का केउ मिलायि देइ तउ ओका आधा राजपाट दयि देब। राजा कइ घोसणा सुनि के एक कुटनी रही ऊ उठि खड़ी भइ। राजा से कहेस कि रानी कइ खोज हम कइ देब मुला हमइ कुछु सहयोग मिलयि का चाही। राजा सहयोग देयि का हँमियायि लिहेन। एक नाउ अउ मल्लाह लइके राजा जहाँ बार पाये रहेन वहिं आइ। एक दिन दुइ दिन चारि दिन एहर ओहर घुमतइ बीता। एक दिन फेरि परी मूड़ मींजइ आइ। कुटनी आइ गइ। कहेस का बिटिया भले बाटू। ऊ चिहुँकि के कुटनी का लखयि लागि। हमका तू कइसे चिन्हबू? तु बहुत छोटि का रहू तबसे हम तोहरे इहाँ नाइं आये। हम तोहारि मउसी हई। ऊ प्रसन्न होइके मउसी के साथ लाल परी के लगे आई। लाल परिउ से बताईं कि ये मउसी हइं। ओनका बड़े सम्मान के साथे उहीं किला मा राखीं।

कुटनी रोज लाल परी अउ मोती परी का अनेक परकार के किस्सा कहानी मा बहँकायि के बहुत कुछु पता लगायि लिहेस। अपने मन मा सोचत बा कि राजा का कइसेउ मारि देई तबइ काम चले। किला मा मोती परी का लयि के घूमयि निकरी। घूमत घूमत एकान्त मागयि अउ कहयि कि हे बिटिया जवन राजा हयेन ये ठीक नाइं हयेन। ये लाल परी का जादा माना थेन तोहँका कम। ऊ बोली नाहीं मउसी ऐसनि बाति नाइबा। हम दुइ चारि दिन मा अन्दाजि लिहे तू लरिका हऊ अबइं एतना नाइ जनतू। अच्छा बिटिया तू येतना बतावा कि राजा कइ परान कहाँ रहा थइ तउ जानी कि तुहँइ मान्ना थेन कि नाँइ? कहेस कि एका हम नाइं जानिति। यह देखा तोहँका जउ मन कइ बाति नाइं बतायेनि तउ हम कइसे मानी कि तोहँका माना थेन। ई बाति लाल परी का बताये हयेन। अच्छा पूछा देखा बतावा थेन कि नायिं।

मोती परी राति मा राजा से पूछीं कि राजा तोहार परान कहाँ बसा थइ। राजा बतावइ का तइयार नाइं भय। बहुत जिद्द किहे पइ राजा कहेनि कि तु हमरे प्रानइ का भूखी बाटू तउ ल्या हम तोहँइ बतायि देत बाटी। मुल तू किहिउ से जिनि कहू। बिहान भे परी के साथे फेरि निकरी एकातन्त मा आइके पूछइ लागि कि बतायेनि कि नाइं। मउसी बहुत पूछे पइ बतायेनि। मुल इहउ कहेन कि किहिउ से कहू जिनि। अच्छा तब सही बतायें हयेनि कि गलतइ तउ नाइ बताइ दिहेन। मउसी कइसे पता लागे कि सही बताये

हयेन कि नाइं। हम्मइ बतावा तउ बताई। मउसी कहेन हाँ तरुवारी मा। अच्छा एकइ मतलब सही बतायेन हँइ। एतना कहि के अउरइ बाति चलायि के घूमत घामत वापिस आइ। राजा कइ तरुवारि हेरइ लागि। पाइ गइ। ओका चोराइ के आगी मा डारि दिहेस। जइसे जइसे तरुवारि गरमायि लागि राजा कइ तबियत खराब होइ लागि। जब तरुवारि लालि होइ गइ तउ राजा मरि गय। अब किला मा तउ हहान खहान परिगा। येहर मउसी छोटकी परी का लयि के नदी मा घूमइ निकरी बाटीं। नदी मा कहीं चला नाउ नेवरिया खेली। मल्लाह का इसारा किहीं ऊ लयिके नाउ आयिगा। दुइनउ जनी जब बइठीं इसारा कइके नाउ भगायि दिहेस। वहरी कहाँ चलत बाटिउ मउसी? चोपमारी बइठी रहू सबखवउ नाहीं तउ गटई रेति देब। अब मोती परी के काटा तउ खूनयिना। जमीनि ओकरे तरे से खिसकइ लागि। मउसी कइ सारी कला अउ बाति कइ थाह मिलिगा। अब ओकइ परान पचास कोठा मा जात बा। अब दिलबहार कइ अभाउ ओका खटकइ लाग। आजु जउ दिलबहार होतेन तउ हमारि ई दसा ना होत। भेत्तरइ भेत्तर विचारे कइ पहाड़ उठत चला जात बा। बीच बीच मा दिलबहार यादि आवत बाटेन।

येहर नाउ राजा के भवन के पास आइ के लागि। पालकी आइ। वहिमा मोती परी के साथ कुटकी बइठी। राजकुमार अगुवानी मा आयेन। मोती परी का देखि के बहुत प्रसन्न भयेन। मोती परी कहीं दुइ महीना अलगइ पूजा पाठ के बादयि हम महलि मा चलबइ। एका सबइ सहर्स स्वीकार किहेन। मोती परी कै राति दिन पहाड़ येस बितइ लाग। ओहरी किला मा लाल परी का मालुम होइगा कि ई सब किरिया कलाप मउसी के अलावा अउर किहिउ कइ नाइं रहा। येहर मोती परी के विचार मा सनीमा कइ तेजि रीलि घूमति बा। दिलबहार बहुत बड़ी बराति लयि के नदी तीरे पहुँचेनि सबका वहिं रोकि के अपुना जाइके राजा किला कइ दसा देखेनि तुरन्तइ ओ राजा कइ पारथिउ सरीर जवन तेले मा बोरि के राखी रहीं ओका देखेनि। येनका रहस्य कइ जानकारी होइ गइ। मउसिउ कइ पूरी कहानी सुनेनि। राजा कइ तरुवारि देखे पइ पूरी बाति पता लागि गइ। तरुवारि का रगरि के खूब चमकायेनि। चमकायि के पानी चढ़ायेनि। राजा जी गयेनि।

अब दिलबहार कइ चिन्ता कम भइ। बरातिन का लायि के किला मा पूरी बेवस्था किहेन। तब मोती परी की खोज मा चलि परेनि। जाइके देखा थयेनि कि उहाँ यज्ञकुण्ड बनवायि जात बा। उहाँ दिलबहार का कुटनी देखेसि तउ ही रूप रंग कइ ओकइ बेटवा 12 बरिस से गायब रहा, ओकइ यादि आइ। यादयि नाइं बलकी ऊ समझेसि कि हमार बेटावा येयि हयेन। राजा दरबारी अउर सब जानि गय कि कुटनी कइ बेटवउ आइगा। कुटनी साथे साथे लइके कुलि काम करइ लागि। कुटनी के लगे उड़न खटोला देखि के पूछेस माई येका कहाँ पाये हा। बेटावा येका हम तोहँका बदे धरे बाटी। ई बहुत तेज चला थइ। यहिं मीरी से नेमका राज से छुट्टी पावा तउ तोहँका हम समझाई। यज्ञ सुरू होइ गइ। मोती परी का मालुम होइगा कि हमार दिलबहार आइ गयेन अब चिन्ता नाइबा। जब हवनि कुण्ड मा आगि दहकि गयि, लउ फूटि गयि। कुटनी हवन सामग्री सजावइ गइ। उही समयि दिलबहार पीछे से जोर कइ धक्का दयि के कुण्ड मा स्वाहा कइके उड़नखटोला पइ बइठि लिहेन। वहि पइ पहिलेन से मोती परी बइठी रहीं। हवा येस निकरि गय। कुछुवइ छन मा जाइके किला मा पहुँचि गयेनि। राजा लाल परी अउ सकल बराती परसन्नता की लहरि मा गोता खायि लागेनि। सादी कइ कार्यक्रम रचागा। लाल परी बड़ी रानी, मोती परी छोटी रानी होइके अपने जीवन कै पैंड़ा पइ आइ गयेनि। दिलबहार ओनकइ प्रधानमंत्री बनेनि।

# नारद का असिरबाद

एक जने रहेनि बाभन। पूरे परिवार मा दुयि परानी रहेनि। महराजिनि बड़ी भक्त मनई रहीं। जउ दुवारे केउ अतिथि आयि जायि वयि पहिले गोड़ धोवँयिं फेरि दूध दही फल-फुल जवन कुछु ओनके रहयि लयिके खियावयिं पियावयिं। ओनके यहिं तप से भगवानउ कयि आसन डोलयि लाग। नारद मुनि का बोलायेनि। कहेनि हे रिसि जा देखि आवा। नारद भगवान बीना बजावत की चलेनि। श्रीमन नारायन नारायन करत की चलेनि। उहाँ चारि छ जने हरदम अतिथि सतकार पावत रहँयि। नारदउ का उहाँ सात रोज होयिगा। अब पूछि के जायि लागेनि। भगतिनि कहीं कि काहे पूछ्या हम जायि न देबयि। फेरि नारद मुनि का रुकयि का परा। यहि परकार नारद रिसि ओनकी सेवा का देखत-देखत आठ रोज बितायि दिहेनि। नारद महराजिनि का एक पूत कयि अपने मुंहे से असिरवाद दयि दिहेनि। उहाँ से भगवान के लगे पहुँचेनि। भगवान कहेनि का हो नारद तु सहियउ मा नारद हया। एतना दिन काहे लगायि दिहा? अरे महराज हम काउ बताई ओकरी किरिया कलाप का उही पर अकरसित होयि के हम रुकि गये। आवत की एकठी बेटवा कयि असिरबाद दयि दीनि एका पूरा करा। अच्छा देखा अपने बाप को बोलावा जउनी किताबी मा लिखा होयि लयि के चला आवयिं। आयेनि बहुत हेरेनि मुल मिला नायिं। भगवान कहेनि कि तब कयिसे बेटवा पयिहैं। नारद कहेन कि लिखा होत तउ कवनि बात रही। कउनो तरह से रता हेरत-हेरत 12 बरस के बदे ओनका बेटवा दिहेंनि। जनम भा तउ पण्डित बहुत खर्चा-वर्चा किहेनि। पण्डित जब पत्तरा खोजेन तब बरहयि बरिस के बरे रहा येंसे बहुत कस्ट भा। कासी के पण्डित से पूछेनि बात सही निकरी। लरिका पढ़यि लायि जार्ग। जेसस समयि करीब आवत बा पण्डित कयि खिन्नता बढ़त बा। मुल पण्डित आजु ले किहिउ का बतायेनि नायिं। जब 11 बरस पूर भा तब पण्डित घरे से डण्डा कवण्डल लयि के निकरि परेनि। जात जात बहुत दूरि एकठी सगरे पयि आयेनि। नहायि धोयि के पूजा पाठ किहेनि अउ सेतुआ निकारि के खात रहेनि। वहिं समयि पे तीनि बिटिया नहायि आईं। तीनिउ सखी रहीं। वहिमा से चमारे वाली पूछेसि कि जउ सखी तोहार पति मरि जयिहें काउ करबू? ठकुरे वाली कहेस कि हे सखी! मरि गये पयि कितउ ओनहीं के साथे जरि मरि जाब कितउ येहि समाज मा विरक्ति लयि के सत गारब। अउ तू काउ करबू? हमारि कवनि बाति बा सखी हमार माई बाप दूसर-तीसर बिआह कयि देयिंहयिं। तोहारि कवनि दसा होये तुहूँ बतावा बभने वाली बिटिया कहेसि कि हे सखी! काहे मरिहें। अपने मन कयि थोरउ हयेनि। हम मरयि न देबयि। हम अपनी मूठी मा एतना सत राखी था। तीनिउ बिटिया नहायि धोयि घरे की ओर चलीं। बभनू सब बाति सुनत रहेनि ओनका पिछियायि लिहेनि। पहिले चमारे वाली बगल भयि। फेरि ठकुरे वाली गयि। तब बभने वाली सबसे पीछे घरे पहुँची। बभनू उही के दुवारे जायि के गोहारि लगायेनि। पूरा गाउँ एकट्ठा भा। सबसे कहेनि कि हम पूरे गाउँ पयि जिउ दयि देब। सब ओनकयि बहुत हँसी किहेनि अउ घरे चला गय। सात दिन भा बभनू इनारा मा गोड़ लटकाये बयिठा रहेनि। एक दिन एकठी तेली के आगि लागि। पूरा गाउँ बुतायेस फेरि गड़ेरिया के लागि। उहू का बुतायेसि फेरि अहिरे के लागि। बुतावयि लागेनि तउ कुछु बुद्धिमान आगि लागयि कयि कारन हेरयि

लागि। कारन तउ कुछु नायिं मिला। सब बतायेनि कि बाभन धन्ने परा बा उही से आगि लागत बा। पूरा गाउँ जुटि के महराज के पास गा। बहुत विनती कयि के पूछयि लागेनि। पण्डित कहेनि कि हम पूरा गाउँ साफ कयि के उठब जिनि पूछा। बहुत जने जिउ देयि कयि कारन बतावा हाथ गोड़ जोरि के पूछयि लागेनि। महराज कहेनि कि हमरे एकठी लरिका बा यहिं पण्डित के एकठी बिटिया बा दुयिनउ कयि बिआह होयि जाये तउ हम न मरब। सब खुसी होयि गय कि जल्दी केउ मानत नायिं। ये अपुनयिं कहत बाटेनि तउ चला देखि आई। कयियउ जने तइयार भयेनि। नाउँ-गाउँ पूछयि आयेनि। पण्डित बतायेनि कि हमारि चरचा जिनि किह्या जा देखि ताकि के चला आया। पाँच जने तयियार भयेनि। महराज के हियां पहुँचेनि दुवारे तखता पयि बयिठेनि। महराजिनि गोड़ धोयि के सम्मान सहित खियायि-पियायि के संतुष्ट किहीं। पाँचउ जने कहेनि कि हम सादी हेरत बाटी। लरिका तनी बोलायि द्या। लरिका आयि। बहुत सुन्नर सबका बड़ा नीक लाग। बरेच्छा देयि कयि तयारी किहेनि। बरेच्छा भा। बरेच्छा देयि के सब घरे जायि कयि तइयारी किहेनि। चलत की महराजिनि पाँचउ जने का पाँच मोहर बिदायी दिहीं। सब बहुत परसन्न होयि के घरे आये।

# कथा जगन्नाथ स्वामी की

**दुरबिले ब्राह्मण :** एक दुर्बल ब्राह्मण थे। उनकी पत्नी और एक पुत्र था। निर्धनता के कारण उनका परिवार भर पेट भोजन भी न पाते थे। मांग जांच कर अपना काम चलाते थे। दिन भर माँगै तो दिया भर पावैं, रात भर माँगैं तौ दिया भर पावैं। ब्राह्मणी उपलब्ध आटे से रोटी बनाकर कठौती तरे रख दे। खोलैं तो तीनैं रहि जांय। वह अपने पुत्र और पुरखा को खिला दे, स्वयं संतोष करके रह जांय। किसी तरह पुत्र का विवाह हुआ, बहू घर आई। उसके आगे भी यही हाल चलता रहा। गरीबी का यह रूप देखकर वह बहुत दुखी हुई। उसने अपनी सास से कहा, 'का अम्मा जगन्नाथन की पूजा, उनकी रोटियां कोचिया घर मां नहीं होत, उनके नाम की मटकी नहीं भरी जात।' उनकी सास ने कहा, 'बहुरिया घर मा ना जानी कउन सनीचर का बास है, रोटी बनाओ तो तीनैं रहि जांय, बरक्कतै नहीं ना। पूजा कउन करी।' बहू ने सुझाव दिया, अम्मा जाओ मांग जांच के ही सही जगन्नाथ स्वामी का नाम लेकर उनकी पूजा घर में करो। और पिताजी से कहो जगन्नाथ स्वामी की यात्रा कर आवें। सास ने विधि पूछी, बहू ने कहा एक सोमवार को उनके नाम की 'रोटिया कोचिया' करे और दूसरे सोमवार को यात्रा पर जाये। सास ने ऐसा ही किया। जंगल से कुसुम का फूल (बर्रे का फूल) ले आई, अंबिया और गेहूं-जौ की बाली मांग जाच कर लाई किसी तरह उनके नाम की मटकी भरी। उनके पति दुर्बल ब्राह्मण जगन्नाथ स्वामी की यात्रा को तैयार हुये। कहने लगे, रास्ते में अपनी लड़कियों से मिलकर कह दें, जगन्नाथ जी जा रहे हैं जो कुछ सन्देश कहना हो कह दो और जगन्नाथ के भोज का निमन्त्रण दे दें।

पहले वह बड़ी लड़की के यहां गये। वह घर पर नहीं थी। गरीबी के कारण (मजूरी) मजदूरी करके पेट पालती थी। लड़के बाहर खेल रहे थे। ब्राह्मण ने उन बच्चों से कहा, जाओ अपनी मां को बुला लाओ कह दो नाना आये हैं। बच्चे बड़े खुश हुये, वह दौड़े गये अपनी अम्मा को बुला लाये। वह प्रसन्न हो घर आई। जो कुछ गहना था 'गिरों' रखकर सीधा सामान लाई (खाने का सामान राशनादि) और बड़े प्रेम से अपने पिता के भोजन का प्रबन्ध किया। कहा, 'बप्पा या खाय का बना रखा है खाय लिह्यो हम काम पर जा रहिन हैं, लउटि के आउब।' और चली गई। उस ब्राह्मण ने भोजन किया, बच्चों को कराया और कुछ भौंरी कठौती के नीचे मूंदकर रख दिया। बच्चों से कहा इन्हें अपनी अम्मा को खिला देना हम जगन्नाथ यात्रा पर जा रहे हैं। तुम सब भोज में आना। वह अपनी यात्रा पर चले गये। इधर वह लड़की आई। लड़कों ने उससे नाना का समाचार कहा, किन्तु लड़के फिर भोजन का आग्रह करने लगे। उसने कठौती खोली तो वह सब भौरियां सोने की हो गई थीं। वह बहुत खुश हुई। उनके घर लक्ष्मी आई।

ब्राह्मण आगे अपनी छोटी लड़की के यहां गये। वहां भी उन्होंने वैसा ही कहा। किन्तु छोटी लड़की ने उनका सम्मान नहीं किया, और कुवाच्य भी कहे। खैर ब्राह्मण संतोष कर आगे बढ़ गये और जाते समय जगन्नाथ के भोज का न्यौता दिया। रास्ते में नदी नाले मिले जो भारी वर्षा में भी मिलते न थे। उन्होंने पूछा, ब्राह्मण देवता कहां जा रहे हो? उन्होंने कहा 'जगन्नाथन'। कहा अरे हमारौ सन्देस कहि दिह्या,

भरी बरखौ मां हमार संगम नहीं होत, हम भरित है उमड़ाइत है तबौ अलगै रहित है।' ब्राह्मण ने कहा, अच्छा। आगे चले तो बाल का बंधा हाथी मिला। उसने कहा, विप्र हमारा भी संदेश कह देना। इतना भारी शरीर और बंधा बाल से है। आगे चले तो एक जने थे जिनके पाटा चिपका था। उन्होंने भी अपना संदेश कहा। और आगे चले तो एक आम का पेड़ मिला, वह फूलता फलता पर पकने के समय कीड़े लग जाते। उसने कहा, महाराज कहां जा रहे हो। विप्र ने अपना गन्तव्य बताया, कहा हमारा भी संदेश कह देना। विप्र ने कहा अच्छा। सभी संदेश ले वह जगन्नाथ जी पहुंचे। वहां जगन्नाथ स्वामी की माया से विप्र को उनका द्वार ही न मिले, आगे 'भार' जल रहा था। वह बहुत दुखी हुये, रास्ते में एक ब्राह्मण मिला पूछा बाबा कहां जा रहे हो। कहा, हम तो जगन्नाथ स्वामी के दर्शन करने आये हैं। परन्तु हमें राह नहीं मिल रही है। विप्र रूप में आये देवता ने कहा, यहां तो 'भार' जल रहा है। मंदिर कहां है। इतने में दुर्बल ब्राह्मण ने कहा, 'हम तो अब दर्शन करिन के जाब' और उसी 'भार' में गिर पड़ा। उनको स्वयं जगन्नाथ स्वामी ने आगे बढ़ कर उठा लिया। कहने लगे यही जगन्नाथ पुरी है हम जगन्नाथ स्वामी हैं। ब्राह्मण उनके चरणों में गिर पड़े, अपने अपराधों की क्षमा मांगी, अपना सारा दुख कह सुनाया। जगन्नाथ स्वामी ने उनके पांच बेंत मार दिये और कहा, अच्छा अब जाओ। वह दुखी मन लौट पड़े, सोचने लगे, हमको तो जगन्नाथ स्वामी ने कुछ भी नहीं दिया। लौटने लगे तो वह गूंगे, बहरे और अन्धे हो गये। उन्हें कुछ सूझ नहीं रहा था। फिर वही जगन्नाथ स्वामी ब्राह्मण देवता के रूप में आगे खड़े हो गये। बोले तुम कहां जा रहे हो। दुर्बल ब्राह्मण ने कहा, हम तो जगन्नाध पुरी गये थे, लौटने में हमारी यह दशा हो गई। ब्राह्मण के रूप में जगन्नाथ स्वामी ने कहा, तुम कुछ भूल तो नहीं रहे हो। दुर्बल ब्राह्मण ने कहा, अरे हमसे बड़ी भूल हो गई, बहुतों ने हमसे अपने संदेश कहे थे। विप्र देवता ने कहा, चलो फिर उनके संदेश कहो। जगन्नाथ स्वामी की कृपा से उन्हें सब कुछ दिखने लगा, वहां पहुंच कर उन्होंने पहले अपना ही हाल कहा फिर सभी की दशा और संदेश सुनाया। जगन्नाथ स्वामी ने कहा, हमने तुम्हारे पांच बेंत मार दिये हैं, उसी से सब अपराध क्षमा हो गये, और जिनके संदेश तुम लाये हो उनके पांच-पांच बेंत मार देना और ये अक्षत छिड़क देना, अपराध क्षमा हो जायेंगे। और सबका कारण समझाने लगे।

पूर्व जनम की ये **नदी-नाले** देवरानी-जिठानी हैं। इन्होंने परस्पर प्रेम नहीं किया, एक दूसरे का बायन नहीं लौटाया। इसीलिये इस जनम में नदी नाले बनकर अलग-अलग हैं। **बाल का बंधा हाथी :** ये फूहड़ स्त्रियां हैं जो बाल झाड़ते समय कंघा साफ करके नहीं रखती थीं। इसलिये इस दशा में हैं। **बोझ से लदा आदमी :** पूर्व जनम का अभिमानी है। इसने अपने अहंकार में दूसरे को कुछ नहीं समझा। **पाटा चिपका आदमी :** इसने बड़ों का सम्मान नहीं किया। बड़ों के आने पर बैठा रहता था। इसलिये इनका यह हाल है। **आम का पेड़ :** पूर्व जनम के ये सम्पन्न लोग कभी दूसरों को छाया नहीं दिया। अपनी सम्पत्ति का दान नहीं किया।

अब दुर्बल ब्राह्मण वहां से लौटे। सभी के पांच-पांच बेंत मार दिये, अक्षत छिड़क दिये। कह दिया तुम्हारे अब सब अपराध क्षमा। अब वह अपनी बड़ी लड़की के यहां आये, उनको जगन्नाथ स्वामी का प्रसाद दिया और न्यौता दिया। बड़ी लड़की को धनधान्य से सम्पन्न देखकर बड़े खुश हुये। छोटी लड़की के यहां जाकर यही व्यवहार किया। परन्तु उसे अपनी गृहस्थी में परेशान पाकर दुखी हो गये। लौट कर घर आये, ब्राह्मणी बहुत प्रसन्न हुई। जगन्नाथ स्वामी की कृपा से उनके बुरे दिन मिट गये। उन्होंने धूम से जगन्नाथ स्वामी की पूजा और भोज किया। दोनों लड़कियां आयीं। बड़ी लड़की के सामने जो कुछ परोसा जाय वह अच्छा अच्छा रहे। छोटी लड़की के पत्तल में सब राख मिट्टी हो जाय। छोटी लड़की बहुत चिंतित हुई। उसने कहा, हमारे पिता हमारे साथ दुर्भाव करते हैं। ब्राह्मण बहुत दुखी हुये। उन्होंने

लड़की के समझाया पर वह न मानी। विदा का समय आया। दोनों का समान मान सम्मान हुआ, परन्तु छोटी लड़की को जो सामग्री विदा के समय दी गई वह राख मिट्टी हो गई। इस पर वह फिर बुरा भला कहने लगी। हमारे पिता हमारे साथ कपट व्यवहार करते हैं। ब्राह्मण को बहुत बुरा लगा। वह दुखी हो जगन्नाथ स्वामी से प्रार्थना की, भगवन! इनके भी अपराध क्षमा करो। उनके पांच बेंत मारे और अक्षत छिड़क दिये। वह सुखी हो अपने घर गई। ब्राह्मण अपने घर में सुखपूर्वक रहने लगे। 'जैसे उनके दिन लौटे भरे पुरे हुये वैसे सब के हों।' 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की प्रतिध्वनि!

# वट-सावित्री कथा

यह एक पौराणिक आख्यान है, जिसमें सावित्री ने अपनी अखण्ड साधना से अपना अखण्ड सौभाग्य प्राप्त किया था।

**न्यूरी नावों की कथा :** न्यूरी नावों का व्रत पुत्रवती मातायें करती हैं। दीवाल पर इसका चित्र आलेखित करती हैं और पूजोपरांत न्यूरी नावों की कथा कही सुनी जाती है, जिसका संक्षिप्त रूप इस प्रकार है :

एक ब्राह्मणी थी। अपने पुत्र को नहला-धुलाकर सुलाकर पानी भरने गई। वह कुंये पर पानी भर रही थी। नेवला बार-बार उनके आगे आवे और फिर उनके घर को चलने लगे। उस नेवला के मुंह में खून लगा हुआ था। वह बार-बार उसी प्रकार चक्कर काट रहा था। यह देखकर ब्राह्मणी को क्रोध आ गया। उन्होंने जल भरा घड़ा उसी नेवले पर पटक दिया। नेवला मर गया। जब वह घर आई तो उन्होंने देखा कि बालक खाट पर सो रहा है। खाट के नीचे एक सर्प कटा पड़ा है। यह देखकर ब्राह्मणी बहुत दुखी हुई। वस्तुस्थिति को वह समझ कर पश्चाताप करने लगी। नेवले ने सर्प को काट कर उस बच्चे की रक्षा की थी। वही रक्त नेवले के मुंह में लगा था।

रात को सोते समय उस स्त्री को स्वप्न हुआ, नेवले ने स्वप्न दिया कि आज से पुत्रवती मातायें हमारा व्रत रखें, पूजा करें। (नेवले में जीवमह की परिकल्पना और विश्वास पुष्ट हुआ। न्यूरी नेवले का ही तद्भव है। नावैं से अभिप्राय नौमी तिथि से है। नेवले में देवत्व की प्रतिष्ठा की गई है।) भादौं में बहुरा चौथ को कपिला गऊ की कथा भादौं की तीज बेधी चौथ (कृष्णपक्ष) को पुत्रवती मातायें मंगल कामना से भरकर यह व्रत करती और कथा कहती हैं।

एक कपिला बगुला गऊ थी, वह पहाड़ों पर रहती थी। नदी का ठंडा जल पीती थी, हरी दूब खाती थी और तंदुरुस्त थी। बगुला गऊ खेतों, मेड़ों में घूमा करे। वह बड़ी दुबली थी। एक दिन कपिला गऊ को बगुला गऊ मिली। उन्होंने कहा, तुम तो बहुत दुबली हो। चलो हमारे साथ पहाड़ पर, वहां हरी दूब खाओ, नदी का ठंडा पानी पियो और सुख से रहो। बगुला गऊ उनके साथ पहाड़ पर चली गई। कुछ ही दिनों में वहां के वातावरण में वह भी स्वस्थ हो गई। एक दिन बगुला गऊ नदी किनारे पानी पी रही थी। दूसरे तट पर बाघ खड़ा पानी पी रहा था। बगुला गाय की लार बहकर उस तट पर पहुंची। बाघ के मुंह में लार लगी, उसे बड़ी मीठी जान पड़ी। वह सोचने लगा, जब इसकी लार इतनी मीठी है तो इसका मांस कितना मीठा होगा। यह सोचकर उसने गर्जना की. हे बगुला हम तुमको खायेंगे, खड़ी रहो। बगुला गाय ने प्रार्थना की, हमारे छः बच्चे खूंटे में बंधे हैं, वह भूखे प्यासे हैं हम उन्हें दूध पिलाकर आयें तब तुम हमें खा लेना। बाघ को विश्वास न हुआ। बगुला ने वचन दिया। वह कांपती डरती अपने बछड़ों के पास आई। बछड़ों ने पूछा, आज क्या बात है। मां तुम क्यों कांप रही हो। गाय ने कहा, कुछ नहीं तुम दूध पी लो। बच्चों ने जिद की। बताओ तभी हम दूध पियेंगे। उन्होंने बताया और उन्हें समझाया, 'द्याखौ तुम कुहू के खेतन म्याड़न पर न जायो, अपैं खूंटा मा रह्यो।' उन बच्चों ने कहा, मां हम भी

तुम्हारे साथ जायेंगे। और वह आगे-आगे 'कोढ़ात, गेरांव दुरावत वही नदी पर पहुंचे जहां बाघ रहै।' बाघ उन्हें देखकर गरजे, मन में बड़े खुश थे। गाय तो बहुत जनों से आई थी। आज भर पेट भोजन मिलेगा। इतने में सारे बछड़े आये, आगे आकर कहने लगे, 'मामा मामा पांय छुई'। बाघ कहने लगा, अरे हम तो तुम सबका खाय का दउड़ेन रहै, तुम हमही का छलि लिहेउ। अच्छा चलौ तुम सब जने अपैं बायें पांव के अंगूठा से हमका यहीं मां (नदी) ठेलि दियो, हम तर ताई। हम मामा तुम भइने।' उन्होंने वैसा ही किया, बगुला गाय बच गई। 'जइसे उनके दिन बहुरे वैसे सबके बहुरैं।' कथा के अंत में यह स्वस्तिवाचन कह दिया जाता है।

# हरछठ (हल षष्ठी) की कथा

एक राजा थे, उन्होंने सागर खुदवाया, घाट बनवाये, परन्तु उसमें पानी ही नहीं आया। इससे राजा चिंतित हो गये, क्या किया जाय। गांव के पुरोहित को बुलाकर उपाय पूछा, किस प्रकार सागर में पानी भरे। पंडित ने विचार कर कहा, राजा उपाय तो बड़ा कठिन है, जिससे सगरा भर सकता है। राजा ने कहा, बताओ। पंडित ने कहा, राजा जो तुम अपने बड़े लड़के के लड़की की बलि दे दो तो जल सगरा मा भर जाय। सुनकर राजा और चिंतित हो गये। 'भला कउन महतारी अइसी होई जो अपैं लरिका का बलि देई।' राजा विचार करने लगे। सोच में पड़े हुये थे। यह देखकर पंडित ने कहा, राजा बात तो बड़ी कठिन है पर उपाय तो निकालना ही पड़ेगा। हे राजन यदि तुम अपनी बहू को यह कहकर मायके भेज दो कि तुम्हारी मां की हालत बहुत खराब है- 'उनका होब जाब हुइ रहा है' जाओ जल्दी देख आओ। राजा ने ऐसा ही किया। सुनकर बहू दुखी हुई कि आज हरछठ का दिन यह कौन परेशानी आ गई। रोती-पीटती वह अपनी मां का देखने दौड़ गई। मायके पहुंची, उनकी मां ने उन्हें इस तरह व्याकुल देखा तो चौंक गई, कहने लगी, 'अरे हमरे का भा हम तौ ठीक हन। आजु हलछठ का दिन, ख्यातन की मेंड़ लरिकन की महतारी का ना नांघै का चही, न ख्यात मंझावै का चही। तुम भला रोवत पीटत ख्यात मंझावत कइसे आजु चली आइउ। जरूर कउनो छलु है।' उनकी पुत्री ने कहा, अम्मा हमसे तो कहा गा 'तुम्हार होब जाब हुइ रहा' हम तुमका द्याखै सुनै आयेन।' बहू की मां ने कहा, 'बिटिया हम तो सुना है तुम्हरे ससुर सगरा बनवाइन है वहिमा पानी नहीं आवत, कउनो लरिका का बलि दीन्ह जाई तो पानी आई। बिटिया तुम्हरेन साथे घात कीन्ह गा है तुम जल्दी लउटो।'

बहू दिन भर से हरछठ व्रत थी। वह रोती पीटती हरछठ मां की मनौती करती भागी चली आई। रास्ते में उसने देखा जिस सगरा को उनके ससुर ने बनवाया था वह जल से भरा लहरें ले रहा है। पुरइन पात लहरा रहे, वहीं एक बालक खेल रहा है। वह उसी सगरा की ओर दौड़ती हुई गई देखा तो यह तो उन्हीं का पुत्र था। उन्हानें उसे उठा लिया, चूमने लगी। हरछठ माता को मनाने लगी। उन्हीं की कृपा से आज उनका पुत्र बचा था। वह घर आई, घर का दरवाजा बन्द था। द्वार खुलवया और कहने लगी, 'आजु तो सब जने हमरे लरिका का बलि चढ़ाय दीन्हेउ, हमका बहाने से मइके पठै दिह्यो। मुला आजु हमरे सत से औ हरछठ माता की दया से हमार गोदी फिर हरी भै। हमार लरिका तो वही सगरा मां खेलत रहा।' सास ससुर यह देख सुनकर बहुत खुश हुये। बहू के पैरों में गिर पड़े और कहने लगे, आज तुम्हारी गोदी का बालक और हमारे कुल का दिया जगा। हरछठ माता ने जैसे हमारे दिन लौटाये वैसे ही सब का मंगल करें।

# करवा चौथ की कथा

एक भाई की दुलारी बहिन थी। विवाह हुआ, पहला करवा चौथ का पर्व पड़ा। आज बहन उपवास रखे थी। मां ने कहा, बिटिया निर्जला व्रत रखना तुम्हारा पहला करवा है। रात जुन्हैया उगने पर ही पूजा कर खाना पीना। सारा दिन दुलारी बहिन निर्जला व्रत रही। घर आने पर भाई दुखी हो जाय। आज हमारी बहिन ने कुछ खाया पिया नहीं है। दिन व्यतीत हुआ। गोधूली की बेला आई। भाई घर आया कहने लगा, बहिन जल्दी-जल्दी पूजा की तैयारी करो, चन्द्रमा उदय होने वाला है। बहिन ने सब तैयारी कर ली। ऐपन से करवा-परई रंगा, नये चावल, कोटइया, पिन्नी से करवा भरा। बाती चौमुखी संजोया, आंगन में चौक डाला। सोलह श्रृंगार किये बहिन करवा लिये आंगन में आ गई। रात्रि का प्रथम प्रहर लगा कि भाई द्वार पर पीपल के वृक्ष पर सीढ़ी लगाकर दिया और चलनी लेकर चढ़ गया। चलनी लगा कर दिया दिखाने लगा। और पुकार लगाई, 'बहिन जोन्धइया उई पूजा करौ'। बहिन ने सच समझ कर पूजा प्रारम्भ की। चन्द्रमा को अर्घ्य दिया, सुहाग लिया। जैसे ही मुंह जूठा करने के लिये अपनी कोंछ से पिन्नी लेकर चखा एक छींक हो गई। मां का मन शंका में पड़ गया। क्या बात है आज हमारी बिटिया ने पहला करवा पूजा, छींक हो गई। हे गणेश जी, करवा माता सब भला करना।

वह चौक पर से उठी, उन्हें भोजन परोसा गया। कढ़ी, बरा, फरा, भात सभी था। जैसे ही बिटिया ने पहला कौर (ग्रास) फरे का चखा, फिर छींक हो गई। घर में सभी चिंतित हो गये। दूसरा कौर तोड़ा फिर छींक, तीसरा कौर तोड़ा फिर छींक। अब तो सारा घर चिंता में पड़ गया। इधर उनकी ससुराल से नउवा (नाऊ) खबर लेकर आया कि इनके पति नहीं रहे। हम खबर देने आये हैं। घर में रोना मच गया। सभी परस्पर कहने लगे, आज पहला करवा पड़ा इनको फला नहीं। 'धाखौ छींक का असगुन तो पहिलेन हुइगा'। लड़की ने अपनी मां से कहा, मां हम उनको देखेंगे हमें वहीं भेज दो। मां ने पुत्री को ससुराल भेज दिया। जब वह अपनी ससुराल पहुंची तो वहां कोहराम मचा हुआ था। उन्होंने अपनी सास से कहा, मां इनकी चिता न लगवाना, न प्रवाह कराना, इनको जंगल में रखवा दो हम वहीं रहकर तप करेंगे। सास ने वैसा ही किया। जंगल में एक पीपल के वृक्ष के नीचे उनके पति का शव रखवा दिया गया। वह लड़की वहीं रह कर तप करने लगी। प्रतिदिन संध्या समय उसकी सास उनको भोजन ले घर देने जाती थी। वह उस भोजन को वही पीपल के नीचे रख दिया करती थी। इस तरह से दिन मास बीतने लगे, भोजन का ढेर लग गया। साल पूरा होने को आया। दूसरा करवा चौथ का पर्व पड़ा। उनकी सास संध्या को भोजन लेकर आई तो बहू ने कहा, मां कल करवा चौथ है, तुम नियम से पूजा की तैयारी करना। सब घर धोना, चौक धरना, करवा सजाना, एक करवा हमारे लिये यहां भेज देना। हम पूजा करेंगी। 'जो हममा सत होई तो हमार सेहाग हमका मिली।' सास ने उसके कथनानुसार ही किया।

करवा चौथ का दिन आया। उसी जंगल में वह सारा श्रृंगार किये करवा पूजने लगी। जोन्हैया उई। जैसे जैसे वह करवा पूजे उनके पति के शरीर में प्राण संचरित होने लगे। जैसे ही चन्द्रमा को अर्घ्य दिया

कि उनके पति खंखार कर बैठ गये। कहने लगे, अरे हम तो बहुत सो गये थे। बहू बहुत प्रसन्न हुई। प्रसन्न मन से सुहाग लिया। अपने पति के चरण छुये। करवा पूज कर बैठी ही थी कि उनकी सास करवा का सारा भोजन लेकर आ गई। उन्होंने देखा कि हमारी बहू करवा पूज चुकी है। आज तो हमारा लड़का उठा बैठा है। दोनों जने बैठे हैं। सास रोमांचित हो उठी। बहू के पैरों पर गिर पड़ी। कहने लगी, बहू तुम तो हमारी लक्ष्मी हो। हमारे पुत्र को जीवित कर दिया। अपना सुहाग बनाये रखा। तुम्हारा अहिबात बना रहे। 'जइसे उनके दिन बहुरे, वइसे सबके बहुरैं।'

# मेहरारू के मक्कारी

याक गांव मा मेहरिया मंसवा रहति रहैं। उइ दुहने मा बड़ा पिरेम रहै। याक दिन मनई अपनी मेहरारू ते ब्याला कि मेहरेवा बड़िही मक्कार होती हैं, अइस सुना जात है। मेहरिया कहिसि कि कहत तौ ठीक हौ, मुलु का तुमहूं मक्कारी द्याखा चहत हौ? मनई ब्याला, काहे नहीं, हमहूं का कुछु मक्कारी सिखाय देव। मेहरिया हंसै लागि औ कहिसि, द्याखौ भाई यहि का सीखै मा बड़िही बियाधि उठावै का परति है। बड़े कट्टु उठावै का परति हैं। मनई तइयार हुईगा। मेहरिया कहिसि, ठीक आय, समय आवै देव मक्कारी सिखाय द्याब।

कुछु समव बादि याक दिन संझबेरिया वहि मेहिरिया का कीन्हेसि कि याक मरी मछरी लीन्ही औ वही ख्यात के कोने पर गाड़ि दीन्हिसि जौने मा तड़क्केहे वहु मनई आपनु हरु मचवाइ क रहै। अब का भवा कि किसनऊ सबेरेहे आपनु हरु ख्याति कहइहां लइगे, औ ख्यात केरे कोनवां पर जैसेन हरु लगावा औ बरधवा हांकेसि तइसेहे कूंड़े मा याक मछरेवा निकसि परी। अव का कहैक, किसनऊ मछरीक देखिकै मारे खुसियाली के उछरइ कूदइ लाग औ हरु ठड़िआइ क मछरी लइकै आपन घरे पहुंचि आपनि मेहरारू तेने ब्याला, द्याखौ! आजु दुपहरिया क मछरी कै तरकारी अउ पूरी बनायेउ। यह जौनि मछरी आय तौ हमका सबेरेहे हरु मचावै के बेरिया कूंड़े मा मिली आय। अब का कहैक, मेहरिया कहिसि, हां ठीक आय, तुम जाव हरु ज्वातौ, दुपहरिया क तुमरी खातिर तुमरे मनचाहा कलेऊ तौनु मिली। औरतिया मनै मन बड़ी सिहाय गै औ सोचिसि कि ई मउका इनका मक्कारी सिखावइ खूब मिलिगा।

दुपहरिया क जब ऊ मनई हरु ज्वांति कै घरे आवा औ नहा-धोइकै कलेऊ करै चउका मइहां बइठ तौ का देखिसि कि थारि मा लोनु मिरचा पीसिकै अउरतिओंह मटरी कै दुइ मोटि रोटियन पइहां धै दिहिसि। मंसवा कै मन मइहां कहां तौ मछरी पूरी खाइ कै खुसियाली छाय रहै औ कहां इउ जिउ का जरावैक औरतिया खाना दीन्हिसि। ऊ मनई या देखिकै जरि भुनि कै आगि बबूर हुइगा। किसानु पूंछेसि कि जौनु मछरेवा मइं खेतवा ते लायन रहै, ऊ का कीन्हेसि? मेहरारू बोली, कइस मछरी, का पगलियान गयेउ का? मछरी तौनु तलवा पोखरियन मइहां होति आंय कि सूख ख्यातन म मछरी फरती आंय। तुम्हार ई अनहोनी कइहां को मानी। मंसवा सोचिसि कि हमका लागति आय यह तौनु हमका आजु मछरी पूरी देई ना। अबका भवा कि मनई जोर तेने चिल्लाय लाग, उत्तेहे मा सगरे गांउ टूवाला कै मनई-मेहरारून क्यार हजूम लाग्गा औ सब पूंछै लाग कि काहे भाय, काहे चिल्लाय रहेउ, काहे आपनि मेहरारू कइहां गरियावति आव, का चक्करु आय? मंसवा कहिसि, भाय! आजु तड़क्केहे मइं ख्यात क हरु ज्वातइ गवा, तौ हुंवा हरु खेते म लगावतै क बेरिया याक मछरी कूंड़े म निकसी, मइं वहिका तुरतै भागति घर का लायेउं औ यहि मेहरारू कइहां दइ गयेन औ कहि गयेन कि आजु मछरी क्यार तरकारी औ पूरी बनायेउ। मुला यहि का किहिस कि लोनु मिरचा औ मटरी कै मोटि मोटि रोटी दिहिस औ अपन सेगरी मछरी-पूरी खाय लीन्हेसि।

ई सुनतै मेहरारू आपन तिरिया चरित्तरु फैलावइ लागि औ कहिसि कि हे भाय पंचौ, अब तुमही

सब जन स्वाचौ कि दुनियां पर कहूं ख्यातन म मछरी निकरती आंय? मछरी तौ ताल-पोखरन मा औ नद्दिन मइहां होती आंय। अब तौ सबै मंसवा-मेहररुवै वहिकै बात मानिगे, कि हां भाय बात तौ ठीकै आय। काहे कि मछरी भला सूख ख्यात मइहां होति आंय। ऊ तौ जल क्यार जीव आय जल ही म रही, सूख धरती पर मरि न जाई? अइसन बतियाय क सबै ल्वाग आपन आपन घरे चले गे औ सोचिनि कि सांचौ, किसनवां सिड़ियान आय।

कुछुक दूयार बादि मनई फिरि चिल्लान कि, हाय राम! का कही, कही करी। हम ख्यात ते मछरी तौ लएहे रहन मुला या हमका देति नाहिन आय। अइस चिल्लाक आपनि मेहरिया क पीटै लाग। ई हुड़दंग सुनिकै गवंइयां भाय फिरि जमा हुइगे औ मंसवा ते कहिनि कि तुम आ पगलियान। फिरि वहिकै मेहरिया कहिसि, हां, भाय पंचौ! ई जरूर पागल हुइगे हैं, कहूं हमहूं कइहां न मारि डारैं, यहिक बरे इनका जंजिरिया म बांधि देव। तौ ल्वागनि उनका नीबे के दरक्खत मइहां बांधि दीन्हेनि अउ बेखटका हुइकै आपन आपन घरै चलेगे।

अब द्याखौ कइस रासु मेहररुए रचिसि कि याक मछरेवा केरि नीकि अइस लइकै पूरी पर धरिकै मंसवा क दिखा दिखा खाय लाग, औ यहै लागे मंसवा क बिरौतौ जाय। ई द्याखतै मनई आपन हाथ-पांव धरती म पटकै लाग औ मेहरिऐ बहुत गरियाइसि। वहु गवंइअन क गोहरायेस कि द्याखौ भाय, सब जन या आपन तौ मछरी पूरी खति आय, औ तुम सबन ते कहति आय कि हमार मंसवा पगलियाय गा। यही बिचवा म मेहरारू मछरी पूरी तौ भीतर धरि आई औरु वहै लोनु रोटी सब कइहां दिखावै लाग कि द्याखौ भइया यहै खात रहेन। ल्वागै जानिनि सांचु आय, यहु किसनवां बहुत सिड़ियान गा। मेहरारू केरि तनिकि गल्ती नाहिन। ई दुख्यावा त ल्वानैं रोटि खाति आय। पगलियान सार यहै आय, चलौ हो सब जन आपन घरे चली, यहि के मुंहु को लागै। या कहि कै फिरि भाय सब ल्वागै तौनु आपन आपन घर कै राह लीन्हेनि।

थोरिही दूयार बादि मेहरारू फिरि वहै स्वांग बनाएसि। आपन सुन्दर मछरी पूरी खाय लाग औ मंसवा क बिरावै कि ऊ! मछरी पूरी खइहौ। लेव खाव या कहिकै मेहरेवा आपन मुंहि मा गप्प सेने कौरु धइ लेइ। या देखि कै मंसवा फिरि बहुतै ज्वार ज्वार रूवावै चिल्लाय लाग औ फिरि सब कइहां गोहराइसि, हाय! दौरौ सब ल्वागौ यह द्याखौ मछरी पूरी आपन खाति औ हमका बिरावति आय। अब तौ गंवइंयन जानिनि कि इउ सार ऐसेहे बरौवा करी, अइसेहे चिल्लाई को आपन समै बरबाद करी औ को आपन दिमांकु खाली करी। यहि सार कइहां चिल्लाइ देव। अब की बेरिया गवंइयो कौनो नाहीं आवा, तौ ऊ मनई गांउं वालेन क गरियावै लाग कि, सार कौनउं हमरे तीरे नहिन आवत, हमरा पंचाइति नाहिन करत।

जादा को बकवास करै। वहि मेहररुऐ दुइ तीनि दौस भरि यहै तमासा कीन्हेसि औ मंसऊ दुखेउ चिल्लाति चिल्लाति थकिगे, कौनउं तीरउ नाहिं गवा। अब तौ जब मेहरारू जानिकि कि ई अब खुबइ पक्के हुइगे आंय, भूखि पियास के बरे बहुतै बिलाखान गे तौ आपुइ उठिकै मंसऊ कै हांथ-पांयन मइहां जकड़ी जंजिरिया खोलिसि अउ बड़ी पिरेम तेने चउका म बइठा क थार मइहां तौनु मछरी पूरी परसि के दिहिसि, तउ वहि मंसवहिं पेटु भरि कै खाइसि। खाइक बादि जब दुवानौं मनई-मेहरारू सुचित्त हुइक बइठ तौ मेहरारू पूंछिसि, कहौ! मक्कारी अच्छी तना सीखि लीन्हेउ कि कउनिउं कसरि रहिगे आय। मेहरारू केरि मक्कारी ऐसिही होत आंय, नाहिं तौ भला सूख ख्यातन म कहूं जिंदा मछरी निकरती आंय? आपन परैतिन कै लीला देखिकै मंसवा दांते तरे अंगुरी दबाएसि औ कहै लाग कि हे भगौती, अब अइस मक्करिया कबौ न सिखायेउ, एत्तेहेम अघाय गएन।

# मूस अउर बढ़ई (छंद कहानी)

एकु रहै मूस। वहिके बिल के लगे उरद का एकु बिरवा जामा। जब वहु बिरवा फरा तब उइ मुसौनू खूब पेटु भरिकै उरद खाइनि। जिहिसे उइके चूतर अस फूले कि उइ बिल मा ना घुसै पाइन। तब उइ बढ़ई लगे गे औ वहिसे कहिनि :

*बढ़ई बढ़ई मोरि चूतर छोलु, चुतरा न बिली समाय*
*गुदरी बहुत खाय, पेट फूलै जिया जाय*
*खाये बिना रहि न जाय।*

मुला बढ़ई कहिसि कि हम चूतर न छ्वालब। तब मुसौनू रानी लगे गे औ उनसे कहिनि कि :

*रानी रानी बढ़ई छोड़, बढ़ई न चूतर छ्वालै*
*चुतरा न बिली समाय, गुदरी बहुत खाय*
*पेट फूलै जिया जाय, खाये बिना रहि न जाय।*

रानी कहिनि कि हम बढ़ई न छ्वाड़ब, तब मुसौनू राजा लगे गे औ उनसे कहिनि कि :

*राजा राजा रानी छोड़, रानी न बढ़ई छ्वाड़ै*
*बढ़ई न चूतर छ्वालै, चुतरा न बिली समाय*
*गुदरी बहुत खाय, पेट फूलै जिया जाय*
*खाये बिना रहि न जाय।*

जब राजा कहिनि कि हम रानी न छ्वाड़ब, तौ मुसौनू सांप लगे गे औ वहिसे कहिनि कि :

*सांपु सांपु राजा का डसु, राजा न रानी छ्वाड़ै*
*रानी न बढ़ई छ्वाड़ै, बढ़ई न चूतर छ्वालै*
*चुतरा न बिली समाय, गुदरी बहुत खाय*
*पेट फूलै जिया जाय, खाये बिना रहि न जाय।*

सांपु कहिसि कि हम राजा का न डसब, तौ फिर मुसौनू लाठी के पास पहुंचे जाय अउर वहिसे कहिनि कि :

*लाठी लाठी सांपु मारु, सांपु न राजा का डसै*
*राजा न रानी का छ्वाड़ै, रानी न बढ़ई छ्वाड़ै*
*बढ़ई न चूतर छ्वालै, चुतरा न बिली समाय*
*गुदरी बहुत खाय, पेट फूलै जिया जाय*
*खाये बिना रहि न जाय।*

लाठी कहिसि कि हम सांपु न मारब, तौ मुसौनू भार लगे गे औ वहिसे कहिनि कि :

*भार भार लाठी जार, लाठी न सांपु मारै*
*सांपु न राजा का डसै, राजा न रानी का छ्वाड़ै*
*रानी न बढ़ई छ्वाड़े, बढ़ई न चूतर छ्वालै*
*चुतरा न बिली समाय, गुदरी बहुत खाय*
*पेट फूलै जिया जाय, खाये बिना रहि न जाय।*

भार कहिसि कि हम लाठी न जारब, तौ मुसौनू समुन्दर के पास पहुंचे जाय औ वहिसे विनती ‌ःन कि :

*समुन्दर समुन्दर भार बुताव, भार न लाठी जारै*
*लाठी न सांपु मारै, सांपु न राजा का डसै*
*राजा न रानी का छ्वाड़ै, रानी न बढ़ई छ्वाड़ै*
*बढ़ई न चूतर छ्वालै, चुतरा न बिली समाय*
*गुदरी बहुत खाय, पेट फूलै जिया जाय*
*खाये बिना रहि न जाय।*

समुन्दर कहिसि कि हम भार न बुतौब तौ उइ मुसौनू हाथी के पास गे औ वहिसे कहिनि कि :

*हांथी हांथी समुन्दुर सोखु, समुन्दुर न भार बुतावै*
*भार न लाठी का जारै, लाठी न सांपु मारै*
*सांपु न राजा का डसै, राजा न रानी का छ्वाड़ै*
*रानी न बढ़ई छ्वाड़े, बढ़ई न चूतर छ्वालै*
*चुतरा न बिली समाय, गुदरी बहुत खाय*
*पेट फूलै जिया जाय, खाये बिना रहि न जाय।*

हाथी कहिसि कि हम समुन्दुर न स्वाखब, तौ मुसौनू चींटी के लगे गे औ वहिसे कहिनि कि :

*चींटी चींटी हाथी मार, हाथी न समुन्दुर स्वाखै*
*समुन्दुर न भार बुतावै, लाठी न सांपु मारै*
*सांपु न राजा डसै, राजा न रानी छ्वाड़ै*
*रानी न बढ़ई छ्वाड़े, बढ़ई न चूतर छ्वालै*
*चुतरा न बिली समाय, गुदरी बहुत खाय*
*पेट फूलै जिया जाय, खाये बिना रहि न जाय।*

चींटी मुसौनू कै बात मानिकै चलि दिहिनि औ जब वह हाथी के पास पहुंची तौ हाथी कहिसि :

*चींटी चींटी हमका न मार*
*हम तौ समुन्दुर सोखबै करब।*

जब हांथी समुन्दुर के पास पहुंचा जाय तौ समुन्दुर कहिसि कि :

*हाथी हाथी हमका न सोखु*
*हम तौ भार बुतौबै करब।*

जब समुन्दुर भार के पास पहुंचा जाय, तौ भार कहिसि कि :

*समुन्दुर समुन्दुर हमका न बुताव*
*हम तौ लाठी जरबै करब।*

जब लाठी यह बात सुनिसि तौ वह कहिसि कि :

*भार भार हमका न जार*
*हम तौ सांपु मरबै करब।*

जब सांपु यहु सुनिसि तौ कहिसि कि :

*लाठी लाठी हमका न मार*
*हम तौ राजा का डसबै करब।*

जब सांपु राजा के पास पहुंचा तौ राजा कहिनि कि :

*सांपु सांपु हमका न डसु*
*हम तौ रानी का छोड़बै करब।*

जब रानी यह बात जाने पाइन तौ उइ कहिन कि :

*राजा राजा हमका न छ्वाड़ौ*
*हम बौ बढ़ई का छोड़बै करब।*

जब बढ़ई यह बात सुनिसि तौ वहु कहिसि कि :

*रानी रानी हमका न छ्वाड़ौ*
*हम तौ चूतर छोलबै करब।*

बढ़ई मुसौनू के चूतर छोल दिहिसि औ उइ मरिगे। हियैं पर कहानी खतम होइगै।

# रांउ के सांउ

याकै राजा रहैं। उइ राति मां सपने मां देखिनि कि सूरतगढ़ कै रानी हमरे पास है। सबेरे उइ ढिंढोरा पिटवाइनि कि जो सूरतगढ़ कै रानी कै फोटू उतरवाय लाई वहिका आधी राजिपाटि हम दइ द्याब। सब गांव बटुरा। कोऊ न वीरा उठावा। याकै रांउ के सांउ सभा मां वीरा उठाय लिहिन। कहिनि हम जाब मुला राजा हमका दुइ चीजै मांगे दियो, एकु आपन सोने के तार के जूता औ दूसर लसुना घोड़ु। लइके चले। रस्ता मां देखिनि, एकु रांउ रवावत आवत रहै, फिरि देखिनि रस्ता मां नाग ल्वाटत हैं। इही तरह के कयू असगुन देखिनि। चलत चलत सूरतगढ़ पहुंचिगे औ एकु मालिनि के दुवारे उतरे। मालिनि हुक्का चिलम भरि के दिहिसि। वहिका एकु अशरफी दइकै फिरि मालिनि ते पूछिनि, हियां सूरतगढ़ कै रानी कहां है औ हमका कइसे द्याखैं का मिली। मालिनि बताइसि कि राति के बारह बजे रानी अपनी सखी सहेलिनि के साथ फुलवारी मां गिरिजा जी कै पूजा करै रोज अउती हैं। ई फुलवारी मां गे औ राति भरि घोड़ा मा चढ़े घूमत रहे। रानी आईं औ ई जाने न पाइनि। सवेरु भा तो मालिनि ते पूछिनि कि का आजु रानी फुलवारी मा नहीं आयीं। मालिनि कहिसि, आई तौ रहैं मुलु तुम सोय गयो रहै। फिरि वह कहिसि कि तुम आपनि बांई छंगुनिया चीरि कै वहिमां निंबुआ निचोरि लियो। ई वइसे किहिनि। राति बारह बजे रानी आईं, पूजा किहिनि। ई घोड़ा चढ़े घूमत रहें। रानी चलै लागीं तौ ई घोड़ा पर ते उतरि परे औ कहिनि तुम कहां जातू है। वह कहिनि हम अपने महल मां जाय रहेन है। ई पूछिनि जो हम तुम्हरे लगे आवा चही तौ कइसे आई। रानी कहिनि हमारि राजा परदेस मां हैं। सासु घर मां रहती हैं। तुम आयो तौ कह्यो, अम्मा दरवाजा ख्वालौ। अम्मा कहिहैं कि हमार लरिका तौ परदेस मां है तो तुम कहि दिह्यो कि चारिउ मचवन के नीचे चारिउ लल्लन रक्खे हैं। बस उइ केंवारा खोलि देहैं औ तुम सीधे दुमहले पै चले आयो। राति मां ई पहुंचे औ उही तरह ते बोले तो बूढ़ा दरवाजा खोलि दिहिन औ ई सूधे ऊपर चढ़िगे। बूढ़ा का बड़ा रंजु भा कि हमार लरिका एतरे दिन बादि आये औ हमते एकु बात तक नहीं कीन्हिन।

इही बीच उनके असिलि लरिका राजा आयगे। बूढ़ा उनका सब विरतंतु बताइनि। राजा तलवारि उठाइनि औ दुमहला पर पहुंचे। जीनै पर उनका सोने का तारु मिला। रानी तुरतै रांउ के सांउ का पीछे फुलवारी मां उतारि दिहिनि औ केला ते कहिनि कि इनका मूंदे रह्यो। राजा फुलवारी मां पहुंचे तौ देखिनि केला अपने पातन मां वहिका छिपाये है। उइ कहिनि, तुम तो केला मोरे बाबा के सेये वैरी का राखे छिपाय जी। उइ तलवारि लइकै केला का छांटि दिहिनि औ वही के नीचे रांउ के सांउ बैठि रहैं, उनहू का काटि डारिनि। घरै आये तौ खूनाखच्चर। रानी देखिनि तौ कहिनि -

*कहवां भी जी राजा सोने कै पनहिया, कहवां भीजी तलवारि जी।*
*कहवां मोरे राजा खेल्यो सिकरवा रकत बुड़ी है सारी देह जी।*

राजा कहिनि,

*बसवा मां भीगी रानी पांय कै पनहिया रकत भिजी तलवारि जी।*
*क्याला बाग रानी ख्याला सिकरवा अही ते भिजी है सारी देह जी।।*

रानी चट्टपट्ट उनका खवाइनि पियाइनि औ क्याला बाग मां आय कै देखिनि उइ कटे परे रहैं। उनका बीनि वानि के इकट्ठा किहिनि औ चिता बनाइनि, फिरि आपनि अंगिया आंबे की डारि मां लटकाय दिहिनि औ खुदौ चिता मां बइठि गईं। जब राजा फुलवारी मां आये तौ देखिन बड़ा धुवां धक्कड़ है। फिरि उइ देखिनि आंबे पर अंगिया झूलि रही है। राजा पूछिनि-

*तुम तो अंगिया रह्यो रानी की छतिया अब कइसे झूलो अंबा डार जी।*

आंबु बोला-

*वहु तो भाय वहिके जी ते पियारा तउने का डार्‌यो राजा मारि जी।*

राजा रोय रोय कै चिता बटूवारै लागि। उइ जो एकु कूरा बनावैं तौ दुइ हुइ जांय, दुइ बनावैं तौ चारि हुइ जांय। वइसी ते शंकर पार्वती आवति रहैं। पार्वती कहिनि, हिंया कोउ संकट मां है यहिका देखि लेई। शंकर जी कहिनि, अरे चलौ यह दुनिया आय। पार्वती नहीं मानी औ आई फुलवारी मां। राजा सब हालु बताइनि। शंकर जी आपनि बांई छंगुनिया चीरि कै उनपर छिनिकि दिहिनि तौ रांउ के सांउ औ रानी दून्हो ठाढ़ि होइगे। पार्वती पूछिनि कि भला तुम राजा के साथ रइहौ कि इनके साथ जइहौ। रानी कहिनि हम इनके साथ जाब। रांउ के सांउ रानी का लइकै चले औ नग्र मां पहुंचे आय। हिंया हल्ला होइगा कि रांउ के सांउ रानी का लइकै आयगे। राजा हुकुम भेजिनि कि तुरतै रानी का लइकै आव। रांउ के सांउ कहिनि, पहिले हमै घर ते राजमहल तक परदा लगवावैं, वहिके भीतर ते रानी अइहैं। राजा तामझाम लगवाइनि। रांउ के सांउ रानी का लइकै गे औ आधी राजपाट लिखवाय लिहिनि। सब सुख ते रहै लागि।

# नाग बाबा

याकै बाम्हन रहैं। उइ एक लुटिया गाय का दूध रोजु सांप की बेबउरी मा चढ़ाय आवैं। होत करत बारह बरस बीते तौ नाग बाबा अपनी बेबउरी ते निकरे औ कहिनि, बाम्हन देउता हम तुमते बहुत परसन्न हन। जउन कुछ मांगै का होये, मांगौ। बाम्हन कहिनि, महराज हमका सब कुछ दिहे हौ मुला हमरे कौनव संतान नहीं है। हम वहै चाहित है। नाग बाबा कहिन, संतान तौ तुम चाहत हौ पर संतान तुमका लिखी नहीं है। बाम्हन कहिनि, लिखी नहीं तौ का महराज हमका आसीरबाद देव, तुम्हरेन आसीरबाद ते हमका संतान मिलै। नागबाबा कहिनि, अच्छा जाव तुम्हरे संतान होई, पर लरिका होई तो तुम्हार, लड़की होई तो हमार। बाम्हन कहिनि, महराज बहुत अच्छा, जउन कुछ होई हम तुम्हरी सेवा मां हाजिर करब।

थोरे दिनन मां उनके कन्या औ बालक दूनो भे। थोड़ा बाढ़ै लागि। नाग देउता सपना दिहिन, भाई तुम्हरे संतान होइगै। हमका कन्या दइ देव। बाम्हन कहिनि, महराज अबै रुकौ, अबै तौ कन्या हमारि बहुत छोटि है। महतारी का दूध पियत है। तनिक बाढ़ै देव। बाढ़त-बाढ़त कन्या बारह बरस की होइगै। नाग देउता फिर सपना दिहिन कि कन्या हमारि आय, हमका दइ देव। बाम्हन कहिन, अच्छा सोचब।

एकु दिन बाम्हन बाप बिटिया मेलै गे। हुवां किनारे पर ताल रहै, ताल मां एक कमल फूला रहै। बिटिया बाप से कमल का फूल के खातिर हठ करै लागि। बाप कहै लागि, बिटिया फूल तो बड़ी दूर है वो ना मिली। नहीं तो जाव तुमहिन लै आव। लड़की ताल मां उतरी। औ कमल कइत बढ़त जाय। वा जस-जस आगे बढ़ै, तस-तस कमल पाछे खसकत जाय। कमल बीच धारा मां जाय के पहुंचा, नाग बाबा एत्ते मां फन काढ़ि के ठाढ़ि होइगे औ वहि लड़की का खींचि लइगे। अपना अन्तरधान होइगे। बाप यो देखि कै ताल किनारे अपन मूड़ दइ-दइ मारै लाग औ हुवंय पर खतम होइगा। महतारी जब यो हाल सुनेसि कि बाप बिटिया दूनो जने मरिगे। वह चौका पोतति रहै वहौ हुवंय खोपड़ी पटकि के मरिगै। भाई बिचारा अनाथ होइगा। वो एक किंगरी लइ लिहेस। वही का बजाय गाय के भीख मांगै -

*माई मरी चउका पोतत, बाप मरे ताल किनारे*
*बहिन का लइके नाग बाबा, भाई मांगै भीख।*

यहै गावै औ भीख मांगै। भीख मांगत-मांगत एक दिन उइ वही ताल किनारे पहुंचे औ अपन किंगरी बजाय के यहै गावै लाग- माई मरी चउका.......

या अवाज जो वहिकी बहिन सुनेसि तौ अपने महल ते निकरी। उनका महल वही ताल के भीतर रहै। नाग बाबा वहिते बिहाव कइ लिहेन रहै। बहिन कहै लागि, भइया तनी फिर वहै गाना गाव। गाना सुनि के उइ समझि गई कि यह विपति तौ हमरेहे ऊपर परी है। औ यो हमार भाई आय। भाई से कहिनि, अच्छा तुम रोज हमरे ताल किनारे आवा करौ। हम तुमका रोज एक सोने की अशरफी देब। तुम एक लुटिया डोर मां बांधि के लटकाय दीन करौ। हम हियैं रहित है, हम तुमका वही मां असरफी दै दीन करब। भाई रोजु आवै उइ रोज असरफी दै देंय। एक दिन बहिन से न रहा गा। उइ अपने भाई चपटाय के बहुत रोई औ बताइन भइया या बिपति हमारिन आय। हम तुम्हरी बहिन अहिन। तुम हमार भाई। भइया बड़ा

दुखी भा। कहिसि, बहिन न होय तो तुम हमहूं का अपने साथै राखौ। बहिन बिचारी भाई की ममता मां पड़िगै औ अपने नाग से चोराय कै उनका राखि लिहिस।

नाग बाबा जो बाहेर से घूमि घाम के आये तौ कहै लागि कहूं हियां मानुष गंध आवति है। उइ रोज बहाना कइ देंय कि कोउ ना आय। येही तरह होत रहा। एक दिन नाग बाबा उनका देखि लिहिन। उइ गुस्सा मां कहिनि, तुम को आहिउ। हम तुमका डसि लेब। वो कहेसि हम अपनी बहिन के भाई अहिन। बहिनी आई औं हाथ जोरि कै ठाढ़ि होइगै। कहै लागि, हमरे भाई के जान की भीख हमका दइ देव। इनका न डसौ। ई हमरे भाई अहीं। नाग बाबा प्रसन्न होइगे। उनका छोड़ि दिहिन। सब जने सुख से रहै लागि।

# भगवान छप्पर फारि कै दियति हैं

एक रहैं महराज औ एक रहैं महराजिन। एक दई महराज कउनेव गांव का कथा बांचै गे रहैं। महराज बहुत गरीब रहैं मुले रहैं बहुत साफ दिल के। न कोउ से लेना न कोउ से देना। लालची रहैं नहीं। उइ कउनिव चीज मा लालच नहीं करत रहैं। भगवान के बड़े भगत रहैं। उइ कहा करत रहैं कि 'भगवान जब धन दियति हैं तौ छप्पर फारि कै दियत हैं।' ई से बेकार केर लालच करै से कौन फायदा। यहै महराज सोंचा करत रहैं।

तौ जब उइ गांव से कथा बांचि कै लौटे आवति रहैं तौ जेठ-बैशाख का महीना रहै, घाम ज्यादा रहै। रास्ते मा एक जंगल परा। उइ जंगल मां महराज एक बिरवा के नीचे कहिनि की थोरी देर संहिताय लेई तौ चली। महराज उइ बिरवा के नीचे संहिताय लागि।

जब उई बिरवा के नीचे महराज बईठ तब देखत का हैं की एक कलश धरा है। औ ऊ कलश एक प्याला से मुंदा है। तौ महराज कहिन की देखी ईमा का रक्खा है। यहै सोंचि कै जब ऊमा देखिन तो उ कलश चांदी सोने की असरफिन से भरा रहै। महराज ऊका जल्दी से झांपि दिहिन औ सोंचिन की ई का हिंया से को लई जाय भगवान द्याहैं तौ छप्पर फारि कै द्याहैं।

इतना सोंचि कै महराज हुवां से चलि दिहिन औ घर का आय पहुंचे।

शाम का जब खाना-वाना खायक महराज औ महराजिन पहुड़े तौ महराज महराजिन से कहै लागि की रास्ते मा जब हम आइत रहै तौ फलाने जंगल मा एक बिरवा के नीचे एक कलश रक्खा रहै। ऊ कलश चांदी सोनेन की असरफी से भरा रहै। मुलै ऊका हम लाएन नहीं।

तब महराजिन कहै लागीं की अरे तुमहूं मूढ़ आदमी रहेव अरे ऊका तुमका उठाय लावैक रहै। तब महराज कहिनि की अरे भगवान द्याहैं तौ छप्पर फारि कै द्याहैं। हमका हुवां से लावैक कौन जरूरत। वही दिन साइत वश महराज खुवां चोर आए रहैं चोरी करै। तौ इनकी बातन का जब उइ सुनिन तौ कहिन की चलौ ऊ का उठाय लाई चलै ऊ से ज्यादा महराज खुवां का मिली।

इतना सोंचि कै चोर वहीं जंगल का जाय पहुंचे। तौ जब उइ कलश का उठाय कै देखिन तौ ऊमा असरफी नहीं रहैं ऊमा सांप और बीछी भरी रहैं। इतना देखि कै उका झट से बन्द करि दिहिन औ कहै लागि कि ऊ महरजवा जानौ हमका जानि गवा है, तौ जीसे हमरे घर मा चोरी न करैं, ई लिए हम लोगन का बकाय दिहिस है। तौ चलौ चली वही के घर मां वही के ऊपर नाय देई चलै।

अतना सोंचि कै उइ चोर कलश का उठाय लाए। महराज छपरा तरे पहुड़े रहैं। उइ चोर कलश का लायेक छपरा कइहां तनिक फारि कै कलश नाय दिहिन। जीसे सांप बीछी इनके ऊपर गिरैं औ काटि खांय। मुले उइ सांप बीछी न रहि कै चांदी सोने की असरफी होइ गई। महराज के ऊपर जब उइ असरफी गिरै लगीं तब महराज महराजिन से कहिन की लियव ई असरफी जल्दी जल्दी बटोरि लेव। हम कहित रहै कि भगवान जब दियति हैं तौ छप्पर फारि कै दियति हैं। महराजिन जल्दी जल्दी असरफी बटोरि लिहिन। चोर कहिनि की द्याखौ महराज केरि बात सहिन है की जब हम लोग हुंवा देखेन तौ सांप बीछी रहैं। अब हिंया ई फिर असरफी होय गयीं। वही दिन से चोर चोरी करब छोड़ि दिहिन औ कहै लागि की भगवान देई तौ छप्पर फारि कै देई।

# महादेव कै लस

एकु राजकुमार अपने साथे एकु नाऊ लइकै अपनी ससुरारी चला। नाऊ बड़ा पाजी रहै। रस्ता मा दून्हौ जने एकु नदी मां नहाय की तई रुकि गे। नाऊ नहाय कै पहिलेन बाहेर आयगा औ राजकुमार के कपड़ा पहिरि कै राजकुमार की ससुरारी कइती चलि दिहिस। जब राजकुमार पानी ते बाहेर निकरा तौ देखिंसि कि नाऊ गायब रहै औ वहिके कपड़ा हुंवा परे रहैं। राजकुमार करता का? आखिर वहु नाऊ के कपड़ा पहिरि कै अपनी ससुरारी गा।

नाऊ जब राजकुमार की ससुरारी गा तौ अपना का राजकुमार बताइसि औ कहिसि कि नाऊ पीछे आय रहा है। वहिकै पोसाक देखिकै सबका बिस्वास होइगा कि यहु राजकुमारै आय। अब तौ नवऊ कै राजकुमार की तरा खातिरदारी भै। जब राजकुमार नाऊ के कपड़ा पहिरि कै पहुंचा तौ सबै जने वहिका नाऊ जानिन औ नाऊ की तिरा वहिका राखिन। राजकुमार रहै सुकुवार, वहु नाऊ के सब काम न कै पावत रहै। सबै जने कहैं कि यहु नाऊ बड़ा बेकूफ है।

खाय की बेरिया उइ नकली राजकुमार का तौ सोने की थरिया मा खाय का परसा गवा औ असली राजकुमार जउनु नाऊ के कपड़ा पहिरे रहै वहिते सब कहिनि कि जाय कै पत्ता तूरि लाव औ पतरी बनाय कै लाव तौ खाय का पइहौ। राजकुमार ढाक के बिरवा के तरे जाय के रूवावै लाग। वहि ते पतरी बनत न रहै। वही साइति वइसी ते पार्वती औ महादेव निकरे। राजकुमार का रूवावत देखिकै महादेव वहिते रूवावै का कारनु पूछिनि। राजकुमार सब धरि किस्सा सुनाय दिहिस। महादेव कहिनि, चिन्ता न करौ। हम तुमका एकु शक्ति देइत है। तुम जेहिकी तई कहि देहौ 'महादेव कै लस' वह चीज चपकि जाई। जब तक तुम 'महादेव कै छुट' न कहिहौ तब तक वह छूटी ना। तुम यही के सहारे बदला लिह्यो। यहु कहि कै पार्वती औ महादेव चलेगे। राजकुमार पतवन ते कहिसि, 'महादेव कै लस' पतवा चपकि गे औ पतरी बनिगै।

राजकुमार पतरी लइकै लौटा। जब नकली राजकुमार खाय पी कै पहुड़ा तौ राजकुमार कहिसि 'महादेव कै लस' अब तौ नवऊ जौन राजकुमार बने रहैं वही पलंग मा चपकि गे। वहु चिल्लाय लाग तौ सास, ससुर, मेहरिया औ ट्वाला वाले दौरि आए। राजकुमार फिरि कहि दिहिनि 'महादेव कै लस' अब तौ सब जने अपुसै मा चपकि गे औ चिल्लाय लागि कुउनौ अपनी जगा ते टरि न पावत रहै। तब राजकुमार सबकै सामने आयकै कहिसि, नउवा का राजकुमार समझि कै राखे हौ तौ राजकुमार का बिना बदला लिहे छांड़ी। फिरि राजकुमार सब धरि किस्सा सुनाइनि।

सब किस्सा सुनिकै सबै जने नाऊ का जद्द बद्द कहै लागि औ राजकुमार तै छोड़ावै की तई चिरौरी करै लागि। राजकुमार कहिसि, 'महादेव कै छुट' सब छूटि गे। फिरि तौ राजकुमार कै खुब खातिरदारी भै औ नवऊ कै मुहुं करिया कइकै घुमावा गवा फिरि मारि पीटि कै भगाय दीन गा।

# सारगा सदावृक्ष

रात के बारह बजे रहैं। एकु पेडु पै तोता मैना बैठि रहैं औ दुसरे पेंडु पै बन्दर बन्दरिया बैठि रहैं। तोता कहिसि मैना ते कि कुछु बात करौ कुछ रैनि कटै। मैना पूछिसि कि आप बीती कही कि जगु बीती कही। तोता कहिसि, जगबीती कहौ। मैना कहिसि, ई समै जो कोउ बिरवा ते नीचे कूदि परै, वहिका मनई का दूयाह मिलि जाई। बन्दर बन्दरिया सुनत रहैं। बन्दरिया कहिसि बन्दर ते कि चलौ हम दून्हो जने कूदि परी। बन्दर कहिसि, हां है तो नीक, मुलु हमारि हिम्मति परत नाहीं है। बन्दरिया कहिसि, चलौ साथे साथे हांथु पकरि कै कूदा जाय। कूदै लागि तौ बन्दर हिचकिचाय गा औ बन्दरिया नीचे आय गै। नीचे अउतै वह औरत का चोला पायगै। बिना वस्त्र की खड़ी हुइगै। सुबह उही नग्र के राजा सिकार ख्यालै आए। उइ देखिनि, एकु बड़ी सुन्दरी राजकुमारी ठाढ़ि है। पूछिनि, तुम को अहूयू। रानी कहिनि- राजा, पहले आपनि पगड़ी दइ दियो, पहिनि लेई तौ बात करी। उइ पगड़ी दइ दिहिनि। पहिरि कै रानी राजा कै साथे चली गयीं। अइसी उइ बन्दर का मदारी पकरि लइगे। रानी एकु दिन कहिनि, राजा हमरे नग्र मां जो मदारी आवै, यहु हुकुम दइ दियो कि वहु पहिले हमरे दुवारे नचावै। राजा कहिनि, अच्छा। एकु दिन एकु मदारी आवा। राजा के दुआरे बन्दर नचावै लाग। रानी कोठे पर ते बइठी देखती रहैं। मदारी के पास एकु औरु नवा बन्दर रहै। रानी कहवाइनि कि आजु उइ नये बन्दर का नचावा जाय। मदारी कहिसि हुजूर ई बन्दर का आजु पकरि कै लायेन है। अबै यहु नाचै नहीं जानत है। कहिनि नाहीं उही का नचाव। तो मदारी वहि के दुइ तीन डंडा मारिसि, औ वहु उछरै कूदै लाग। रानी ऊपर ते बोलीं, तेहिया ते कहौ मोरी नरमी कलइया घामु परै कुटिलाय जी। अब तो पर्यो है मदारी के पाले डंडा खाव दुइ चारि जी। तौ बन्दर हियां ते कहिसि, तुम्हरे करम रानी राजि लिखी रहै हमरे करम डंडा चारि जी।

अब मदारी ते रानी कहिनि कि यहु बन्दर हमका दइ दियो। जौनु कहौ यहिका मोलु दइ देई। मदारी कहिसि, नाहीं मालिक यहु ना दूयाब। यहु बन्दर मनई का बोलु पायगा है, एहिते हम बहुत कमाब। राजा कहिनि नाहीं दियै का परी। खुसी ते न देहूयो तो छोरि लीन जाई। बन्दर का लइ लिहिन। रानि का बन्दर कहिसि, रानी जो आजु हम मरि जाई तौ हमका नींबू के तरे गड़वाय दिहूयो। उही राति मां बन्दर मरिगा औ राजा नींबू तरे गड़वाय दिहिनि। दुसरे दिन रानी कहिनि, राजा जो आजु राति का हम मरि जाई तौ हमहूं का उही नींबू के नीचे गड़वाय दिहूयो। राजा कहिनि यहु का आय अगन्तु सोचतू है? तो उही राति रान्यू मरि गई औ रोय पीटि कै राजा उनहूं का नींबू तरे गड़ाय दिहिनि। तौ अगले जनम मा रानी तौ भई बनियन कै बेटी सरंगा औ बन्दर भा राजा जगदीश कै लरिका सदाबिर्छ। ई दून्हो जब सयानि भे तौ पाठशाला गे पढ़ै। हुंवा पढ़ै कुछू ना, बस एकु दुसरे का दूयाखा करैं। एकु रोजु फुलवारी सींचैं पठयेगे। तौ दूयाखा गा कि दून्हो एकु निम्बू के तरे परे सोय रहे हैं। दून्हो जनेन के बाप बुलायेगे। राजा कहिनि कि ई पढ़िहैं काहे ना। इन पर कसना करौ। तौ पढ़त रहैं। अब सदाबिर्छ का नौकरु जाय तौ एकु रुपिया का पान का बीरा लगवाय लावै औ सारंगा का नौकरु जाय तौ एकु असरफी का बीरा लगवाय लावै। ई स्वाचै लागि कि ओफ्फो एतरी बड़ी रानी है जो असरफी का बीरा खात है?

अब दून्हो जने मां अतरा प्रेमु होइगा कि कोउ रोंकि ना पावै। सारंगा बड़ी हुइगै पै वहिकै सादी न हुवै पावै। एकु दिन सारंगा के बाप कहिनि राजा जौ तुम सदाबिर्छ का कुछु दिन का कहूं भेजि देत्या तौ सरंगा कै सादी कइ देइत। राजा सदाबिर्छ का बोलाइनि औ कहिनि फलां फलां सहरै चले जाव औ वसूली कै लाव सदाबिर्छ चलेगे। अइसी सारंगा कै सादी तै होइगै। लौटिकै जउने दिन आए तौ का द्याखत हैं कि सारंगा का डोला जाय रहा है। ई घोड़ा पर चढ़े घूमै औ फिर हुवैं ते बोले-

*लट सभारि तम बावरी कि बरजत हूं मैं तोहि*
*लट तुम्हारि नागिनि वसै डसा चहत है मोहि।*

ऊपर ते सारंगा बोलीं-

*हम तो बेटी बानि की बेचौं दमरियन लोनु*
*तुम बच्चा जगदीस के बिना सींग के बैल।*

सदाबिर्छ बोले-

*जो हम जानित बैलु बनइहौ जइसे बाघु बोकरी खाय।*
*वइसे हम तुमका जो खाइत मोहु न आवत मोहि।।*

उनकै विदाई भै। पीनस चला। सदाबिर्छ नाउनि ते कहिनि कि हम सारंगा ते मिला चहित है। गे तौ कहिनि आगे बाग मां एकु सेवाला है हुवैं हम बइठब। तुम दरसन करै के बहाने आयो। चले तो एकु सोंटा मां खुब मोहरै असरफी भरिकै भांगु वांगु खाइकै सेवाला मां पहुंचिगे जायके। जब पीनस हुंवा पहुंचा तौ सरंगा अपने ससुर ते कहिनि कि हम बारह साल ते शंकर जी कै पूजा करति अहिन। आजु आखिरी पूजा करै का है। ससुर पीनस रोकवाय दिहिसि, कहिसि पूजा कइ आव। सरंगा गई तौ सदाबिर्छ का जगावै लागीं। उइ उठबै न करैं। बड़ी द्यार होइगै तो ससुर कहिसि-

*देव कै पूजा दुइ घरी बीते पहर पचास।*
*कितौ कालिया डसि लिया कितौ नसे कै वास।।*

मन्दिर मा एकु सुआ पाला रहै। वहु सरंगा ते कहिसि, यह कलम दवाइत रखी है जौनु लिखै का हुवै इहिमा लिखिकै रखि दियो। सारंगा लिखि दिहिन कि अब हम जा रहेन है। रस्ता मा एकु अहिरिन मिली। उहिते कहिनि कि कोउ बाबा पूछै तौ कह्यो कि पीनस चला गा औ अब ढूढ़ै न आयो। सदाबिर्छ जागे तौ हाय सरंगा, हाय सारंगा चिल्लाय लागि। अहिरिन सन्देसु दिहिसि तो उही दिसा का भागि। चलत-चलत उही नग्र मां पहुंचे औ फेरी लगावै लागि। सरंगा के दरवाजे पहुंचे तौ बोले-

*तुम्हरे कारन सरंगा री गोरी बड़ा बड़ा दुखु दीख*
*आय परेन यहि देसु मां धरेन फकीरी भेखु।*

सासु भीख लइकै निकरी तो कहिनि का तुम्हरे घर मा कउन्यू बहुरिया नहिन जो तुम भीख लायू है। हम ना भीख ल्याब। सासु सोचिन, फकीर का काहे नराज करी। कहूं सराप न दइ दियै। उइ सरंगा के हांथे भीख पठइनि। सरंगा ते कहिनि कि तुम बीमार बनि जायो, हम वैद बनिकै आउब। फकीर चलेगे तौ सरंगा मूड़ गूड़ कइकै परिगइं। सब स्वाचैं लागि, कहौ तौ कौनु वैदु बोलावा जाय। इही बीच सदाबिर्छ गोहार लगाइनि-

*तुम्हरे कारन सरंगा री गोरी बड़ा बड़ा दुखु दीख*
*आय परेन यहि देसु मां धर्‌यो वैद का भेखु।*

सुनिन तो सब जने बोलाइनि वैदु का। देखिनि, कहिनि हालत बहुत खराब है, घरी दुइ घरी की मेहमान हैं। घरवालेन का कहिनि तुम पंच बाहेर जाव तो हम कुछु उपाय करी। सब चलेगे तौ सरंगा ते कहिनि तुम स्वासा चढ़ाय लियो। जब तुमका समसान मा लइहैं तौ हुवैं हम मिलब। थोरी देर के बाद सरंगा खतम होइ गई। वैद महराज घर वालेन ते कहिनि कि इनकै तिखती समसान मां धरि कै भागि आयो नाहीं तो बड़ा खतरा हुइ जाई। सब लोग बहू कै मट्टी लइगे औ एक बिरवा के तरे धरि दिहिनि। सदाबिर्छ उही पर छिपे रहैं, उइ हुंवा ते नीचे कूदि परे तो सब घबराय कै भूतु परेतु के डेर ते जानु छोड़ि कै भागि। ई वहिका उठाय कै खड़ा किहिन औ लइ के चले। चलत चलत दूरि पहुंचे। थकि कै एकु बाग मां बिरवा के नीचे पहुड़िगे सारंगा के जांघे पर मूड़ धरिकै। इही बीच उइ राजि के राजा आये सिकार ख्यालै। उइ सारंगा रानी का देखि कै मोहित हुइगे। औ आपनि पगड़ी घोड़ा पर ते गिराय दिहिन औ कहै लागि सारंगा कि यहिका उठाय दियो। सारंगा कहिनि हम उठी कइसे। हमारि राजा मूड़ धरे सोय रहे हैं। तो राजा आपन अंगौछा फेंकि दिहिन, कहिनि यहिका मूड़े तरे धरि दियो औ पगड़ी पकराय दिया। उइ पकरावै लागीं तौ राजा उनका खींचि कै घोड़ा पर बइठाय लिहिनि औ लइके अपने नग्र चले आये। वइसी सदाबिर्छ जागे तो हाय सरंगा हाय सरंगा चिल्लाय। रवावत गावत उही नग्र मा पहुंचे। हुवां राजा कै कोठी बनत रहै। इहो गारा ईटा मां लगाय दीनि गे। ढ़्वावै लागि। जब घरै जांय तौ यहै कहैं -

*तुम्हरे कारन सरंगा री गोरी बड़ा बड़ा दुखु दीख*<br>
*आय परेन यहि देसु मां ढ़्वावत गारा ईंट।*

जब यह बाली राजा के बाप सुनिन तौ कहिनि कि औरु मजूर तौ काम कइ रहे हैं, यहु नवा मजूरु का आय कहि रहा है। वहिका बोलाइनि औ पूछिनि तो ई सारा बिरतंतु बताइनि। तो उइ कहिनि कि अच्छा तुम आपनि रानी लइकै जाव। उनका बड़ी इज्जत के साथ बिदा कइ दिहिनि औ ई दून्हो जने चले अपने घर का।

रस्ता मां एकु कुंवा परा। हुंवा कुछु बिटेवा हरहा चरौती रहैं। सदाबिर्छ कहूं कामे ते चलेगे। उइ बिटेवा सारंगा ते कहिनि रानी आपनि कपड़ा गहना हमका दियो, हमारि तुम पहनौ औ आव झांकी कुंवा मां को ज्यादा सुन्दर है। उइ झांकै लागीं तो बिटेवा धक्का दइ दिहिनि औ उइ कुंवा मां गिरिकै फूलु बनिके उतराय आई। राजा आये तो देखिन रानी नाहिन। कुंवा मां झांकिनि तौ वहै फूलु उतरात रहै। वहिका निकारिनि तो रानी परकट हुइ गई। उइ सब हालु बताइनि तौ राजा सब बिटेवन का कुंवा मां डारि दिहिनि औ रानी का लइकै अपने देस पहुंचिगे।

# किस्सा बुझावन पांड़े अउर बुलाकी नाई का

याकै बुझावन पांड़े रहैं। उइ एक बेर दुनिया घूमै का निकरे। साथ चलै के खातिर बुलाकी नाई क बुलाइन। बुलाकी आवा। जब वह जानिस कि हमका पांड़े क साथ कहूं जाय का परी, तौ हाथ जोरि कै कहिसि, पांड़े जी हम न जाब। पांड़े कहिनि काहे न जइहौ? बुलाकी ब्वाला, आप रस्ते मां कहिहौ ई चीज लै आव। फिरि कहिहौ यहु लै आव। जो एकै दईं दौराओ तौ हम चलि सकिति है। पांड़े कहिनि, तुम चलौ तौ। दूनौ जने चलि परे। जब शाम हुइगै तौ एकु शहर के किनारे डेरा डारि दिहिन। पांड़े कहिनि, बुलाकी जाव शहरु से आटा दालि लइ आव। बुलाकी सहरु गवा औ सब कुछ लइ आवा। पांड़े के आगे केवल आटा दाल रखि दिहिसि। पांड़े कहिनि त्वै खाली आटा दालै लाय है। खाना कइसे बनी? बुलाकी कहिसि आपइ तौ कहे रह्यो कि आटा दाल लै आवो, वहै हम लै आयेन है। जो आप हमका एकु बात का जवाब दै देव तौ हम सब लै आई। पांड़े कहिनि, तुम सब लै आवो, बादि का बताइब। बुलाकी सब समान लै आवा। पांड़े खाना बनाइन। जब सब खाना बनि गवा तौ पाँड़े कहिनि, बुलाकी आव खाओ आय। दोनों जने खाय लाग। खाय के बाद पांड़े बिस्तर पर लेटिगे औ बुलाकी पैर दाबब सुरू किहिन। पांड़े कहिनि, अब बताओ, तुम का देखेव।

बुलाकी कहिसि, हम सामान लिहे आइति रहै तौ का ग्याखा कि चारि जने एकु कुंभार का एक पालकी पर लिहे आइ रहे हैं। कुंभार के दूनों हाथ माटी मां सने रहैं। कुंभार यहु कहत जाति रहैं कि राजा पुछिहैं तौ का बताइब। राजा पुछिहैं तौ का बताइब? पांड़े महराज, यहु कुंभार कौन रहैं? राजा को हैं? पांड़े कहिनि, सुनौ बुलाकी, एकु राजा रहैं। उनके दुइ रानी रहैं। बड़ी रानी के कौनौ लरिका नाहिं रहैं। छोटी रानी के एकु लरिका भवा। बड़ी रानी सुनिकै जरि गै। मुला कहिन कुछू नाहिं। रस्ता देखती रहीं। लरिका कुछ बड़ा भवा तो जंगल का सिकार देखइ गवा। बड़ी रानी अपन आदमी पीछे लगाइ दिहिनि। आदमी सब मारै का जतन करै लाग। लरिका के साथ का आदमी जानि गवा। ऊ लरिका का लइकै भाग। बड़ी रानी के आदमी पीछा करै लाग। चलत चलत बहुत द्‌यार हुइगै। लरिका का लैकै वहु मनई एक सहर मा घुसि गवा। तबै बड़ी रानी के आदमी पहुंचि गे। तीरन ते लरिका का मारै लागि। तीर लरिका के आदमी के लागि गवा औ आदमी मरि गवा। लरिका भागि परा। बड़ी रानी के आदमी जानि न पाइन। दौरत दौरत लरिका थकि गवा औरु बेहोस हुइकै एकु घर के सामने गिरि गवा। वहु घरु एकु कुंभार का रहै। कुंभार लरिका का घरै उठाइ लै गवा। कुंभार के एकौ लरिका न रहैं। वहु लरिका का पालि लीन्हिसि। हुवैं पर एकु राजा रहैं। उनके एक राजकुमारी रहै। राजकुमारी एकु दईं सैर करै के खातिर निकसीं। कुंभार के घर का लरिका बाहर ठाढ़ रहै। राजकुमारी देखिकै मोहित हुइ गईं। उइ घरै आय कै ऊपर चली गईं औ पहुड़ि गयीं। खाना नाइ खाइनि। सब जने हलाकान हुइगे। का बात भई। बड़े बड़े वैद आये, पै बिमारी न ठीक कै पाइनि। राजा ऐलान कराय दिहिन कि जो कोउ राजकुमारी का ठीक करि देई, वहिका आधा राज दैके राजकुमारी से शादी कीन जाई। बहुत जने आय कै हारिगे। तब कुंभारे का लरिका आवा। राजकुमारी वहिका देखि कै खुस हुइ गयीं।

राजकुमारी का ठीक जानिकै राजा रानी सब खुश हुइगे। लरिका औ राजकुमारी कै शादी हुइ गै। ोरे दिन बादि राजा मरिगे तब लरिका राजा बनिगा। जब वहु गद्दी पर बइठै लाग, तब अपने मनइन ते हिसि, जाव कुंभार क लै आव। वहु जइसे बइठा होय वइसेन उठाय लाव। कुंभार माटी के बरतन बनावत है। वहिकै हाथ मांटी मा सने रहैं। राजा कै आदमी वहिका उठाइ के पालकी मां बैठाय लिहिन। बुलाकी हु वहै कुंभार है। कहत है कि रानी पुछिहैं तौ का बताउब। इतरा कहिकै पांड़े औ बुलाकी सोइ रहे।

# अहिर पंडित

एक पंडित रहैं दुइ भाई। बड़कवा भाय काशी का पंडिताई पढ़ै गवा रहै, औ छोटकवा भाई घर मा किसानी करत रहै, हर ज्वातत रहै।

औ एक गांव मां पंडित नहीं रहैं, ऊ गांव अइसा रहै कि उइ गांव म अहिरै अहिर रहैं। तौ एक अहिरै का पंडित बनाये रहैं। ऊ अहिर घर के एक कोने मा पन्दरा लाठी रखे रहैं। तौ परेवा के दिन याक लाठी निकारि लिययं औ दुइज के दिन दुइ लाठी निकारि लिययं यही तिना रोज याक लाठी निकारैं, औ जो कोई जाय, तिथि पूंछै तौ यही तिना बताय दिययं। उधर से जौन पंडित निकरै ऊका सब अहिर लोग रोकि लिययं औ कहैं कि हमरे पंडित से वारतालाप करि लियव, बगैर वारतालाप किहे जाय न पइहौ। हमरे पंडित एक बात पूंछति हैं अगर न बताय पइहौ तौ तुमार सब पोथी पत्तरा छीन लीन जाई। यही तिना कउनौ पंडित बताय न पावै तौ ऊकै पोथी पत्तरा छीन लियत रहैं।

एक दईं उनहिन पंडित जौन दुई भाई रहे उइ तिफाक से वैसी निकरि परे, काशी से लौटे आवति रहैं। तौ सब अहिर उनका रोकि लिहिन औ कहै लागि कि हमरे पंडित से वारतालाप करौ। कहिन चलौ। जब पंडित उनके द्वारे पहुंचे तौ बैठि। अहिर पंडित कहै लागि कि याक बात हम पुंछबै अगर ऊका न बताय पइहौ, तौ तुमार हम सब पोथी पत्तरा लइ ल्याब। तौ पंडित कहिनि कि पूछौ।

अहिर पंडित कहिनि, की बताव 'ख ख खा खईया' कौन चीज होत है?

एतना सुनि कै पंडित आपन सब पोथी पत्तरा दुयाखैक शुरू किहिन। उनका कहूं पर 'ख ख खा खइया' न मिला। तव बहुत परेशान हुइगे। औ कहिन कि हम अब बताय न पाउब। तब अहीर पंडित उनका जतना पोथी पत्तरा रहै सब लइ लिहिन औ खेदि दिहिन। उइ पंडित रोवत-पीटत हुंवा से भागि जव अपने गांव के किनारे पहुंचे, तौ इनका छोटकवा भाय हर ज्वातत रहै।

इनका रोवत देखि कै ऊ बोला कि भइया काहे रोवत हौ का काशी जी पढ़ि आएव। तब पंडित कहिन की काशी जी पढ़ि आएन है। तब ऊका छोटकवा भाई कहिस की आखिर रोवत काहे हौ?

तब पंडित कहै लागि की रास्ते मा हम काशी जी पढ़े चले आइत रहै, तौ एक गांव मिला। उइ गांव मा एक पंडित रहैं हमसे पूंछिनि की 'ख ख खा खईया' कायाय, हम नहीं बताय पाएन, तौ हमार सब पोथी पत्तरा लइ लिहिन।

एतना सुनि कै उनका छोटकवा भाय कहिसि की बस अतनिन बात मा तुम रूवावत हौ। चलौ घर मा हांथ मुंह धोयकै बइठौ, हम दुयाखौ जाइत है, अब्बै ईका उत्तर दइ अइबै। बस ऊ हरजोत्ता पंडित तिलक लगायक झूंठमूंठ का पोथी पत्तरा लइकै चलि दिहिस।

जब ई उधर ते निकरे, तौ सब अहिर लोग इनका रोकि लिहिन। औ अपनै पंडित के पास लइगे। अहिर पंडित कहिन की- एक बात हम पुंछबै, अगर तुम ऊका बताय न पइहौ तौ हम सब तुमार पोथी पत्तरा लइ ल्याब।

तब हरजोत्ता पंडित बोला- अगर हम न बताय पाउब तौ तुम तौ हमार पोथी पत्तरा लइन ल्याहौ।

ुले जौ हम बताय द्याब तौ, जतना पोथी पत्तरा छीने कै धरे हौ अपने घर मा ऊ सब दिययक परी। तब अहिर पंडित कहिन की- हां ठीक है।

तब हरजोत्ता पंडित बोला की- सुनौ ख ख खा खईया का मतलब : 'पहले जोत जोतईया, फिर बोय बोवइया, फिर जाम जमईया, फिर पाक पकईया, फिर काट कटैया, तइकै फिर माड़ मड़ईया, ऊके बाद ढोव ढोवईया, फिर पीस पीसईया, फिर पोव पोवईया, तब आयूक 'ख ख खा खईया।'

इतना सुनिकै अहिर पंडित कहिन की हां ठीक है। तब ई पंडित उइ जतने पोथी पत्तरा अब तक छीनिनि रहै, सब लई लिहिन। ईके बाद ई हरजोत्ता पंडित सारे गांव का बोलायकै पत्तरा खोलि कै बताइन की ई साइत एक ऐसी साइत बनी है, जो कोई ई साइत मा तुमरे पंडित केरी मोंछ क्यार अगर एकौ बार उखारि लइ जाय तौ ऊ धनवान हुइ जाई। इतना सुनते सब सगरे गांव के आदमी उइ अहिर पंडित केर सब मोंछ उखारि लिहिन, मोंछ का एकौ बार नाहीं राखिन। इतना करायूक उइ हरजोत्ता पंडित अपने घर कै रस्ता लिहिन।

एक आदमी उइ गांव क्यार कहूं बाहेर गवा रहै, जब ऊ सन्झा कइहां घर का लौटा, तौ ऊ कै मेहरुवा कहै लागि- की हियां सब गांव धनवान होइ गवा, तुम बाहेर चले गये रहौ तुभ रहि गएव, एक पंडित हैं उइ बताइन रहैं की आज के दिन साइत बनी है की जो ई साइत मा अपने पंडित की मूंछ का एक्कौ बार उखारि लेई तौ ऊ धनवान होइ जाई। तौ तुमहूं जाव बार लइ आव।

ऊ आदमी घर से चला औ हुंवा देखिस जाय की उनकै सारी मोंछ साफ होइ चुकी रहै तौ ऊके गुस्सा आय गई की सारा गांव धनवान होइ गवा हमहिन एक रहि गएन तौ उइ आपन का किहिन की उइ अहीर पंडित केरि झोटईया उखारि लाए औ कहिनि कि न ज्यादा धनवान होबै तौ थोरे बहुत तौ होईन जाब। ई तिना उइ अहीर पंडित केरि दुर्दशा होइगै, औ नकली पंडित बनै केरि औ लोगन कै पोथी पत्तरा छीनै केर फल पायगे।

# पंडित देवतादीन

याकै रहैं पंडित देवतादीन। उइ बहुत गरीब रहैं। उनके राजा का नाम रहै शमशेर बहादुर सिंह। याक दिन पंडिताइन पंडित से कहिन की पंडित तुम कुछ कथा वथा नहीं कहति हौ, कहूं जाय कै कुछ लै आवा करौ। पंडित दोसरे दिन राजा से मिलै खातिन चलि दिहिन। राजा लोगन की बातै खरीद लीन करति रहैं। पंडित जी का रस्ता मा याक लोखरी मिली जउनि बिलु खोदति रहै। पंडित जी का उहिका देखि कै चिल्लाय उठे 'खोद भसाभस'। आगे चलिकै पंडित जी सकु बांदरु देखिन जउन बइठ रहै। पंडित जी फिर चिल्लानि 'बइठ मोटरमल'। तीसरी बार पंडित जी देखिन की एकु सांपु जमीन मा ल्वाटति रहै, उइ कहिनि 'परा धरनि अस'। जब पंडित जी फिर बढ़े तौ देखिन कि एकु हिरन भागति चला जाति रहै। पंडित जी जोर से चिल्लाय उठे, 'भागि चले कत'।

यही तिना राजा के पास जायकै पंडितजी याक-याक कइकै चारिउ बातै सुनाय दिहिन, मुला राजा उनका अरथु न समुझि पाइन औ थोरे से रुपइया दइकै पंडित का बिदा कै दिहिन। राति का राजा अपनी रानी का यहै कहानी सुनावै लाग औ वही समय राजा के हुंवा च्वार सेंधि काटति रहैं। राजा कहिन कि रानी सुनौ, जउन पंडित कहिन है वहै सुनउब। अत्ता कहिकै राजा सुनावै लागि। सबसे पहिले राजा कहिन 'खोद भसाभस'। च्वारन का पहिले कै बात मालुम नहीं रहै, उइ समुझिन कि राजा जानिगे हैं औ बइठिगे। तब राजा कहिन कि 'बइठ मोटरमल'। अब का कहै का रहै, च्वाँर बिचारे मारे डर के पहुड़िगे। तब फिर राजा कहिन कि 'परा धरनि अस' अत्ता सुनतै च्वार भागि। तब राजा कहिन कि 'भागि चले कत'। अब च्वारन का संका होइगै। दोसरे दिन सबेरेन च्वार राजा के पास हाजिर भे अउर एकु एकु कइकै माफी माँगै लागि। तब राजा का बड़ा ताजुब भा। बादि मा पूरी घटना सुनिकै राजा बड़े परसन्न भे अउर पंडित जी का बोलाय कै खुब धन दइकै बिदा किहिन।

# मुरुख रोगी

याक समय एकु किसानु का बुखारु आय गा। वहु डॉकडर तीर गा। डॉकडरु किसानु क दवाई दिहिस औ कहिसि कि तनिकु हलुकु हलुकु खाना खायेउ, गरु नांय। किसनवां पूंछेसि कि कइस हलुकु भोजन करी? डॉकडरु कहिसि कि तुम्हरे बरे हलुकु भोजनु सबते नीक खिचरि ही रही। किसानु एतना सुनिकै हुवां ते अपने घरै चला आवा।

किसनुवां राह भरि खिचरी खिचरी रटति चला जात रहै। जब वहि का घरु अधियारे दूरि रहिगा, तौ खिचरी खिचरी कहब भूलिगा अउ खाचिड़ी खाचिड़ी कहै लाग। एकु किसानु हुवै पर आपन खेतु चिरइयन ते रखा रहा रहै। खा-चिड़ी खा-चिड़ी सुनिकै वहिकै घांह मा आगि लागिगै। औ वहिका मारै क दउरा। किसनवा कहिसि, अरे भाई, हमका काहे क मारत हौ। मोहि ते कउनि गलती हुइ गै है? किसानु ब्वाला, 'तौ ऐ कुछु जानत नहीं हौ। हम तो चिरइन क उड़ाइत है औ तुई कहत हौ, खा-चिड़ी, खा-चिड़ी'। किसानु पूछिसि, यहु तौ डाकडर बताइसि हवै, तुमही बता देव, मोय का कहौं? किसानु बताइसि- उड़ चिड़ी, उड़ चिड़ी कहु। अब वहु किसानु उड़ चिड़ी उड़ चिड़ी कहत भा चलि दिहिसि।

उड़ चिड़ी, उड़ चिड़ी रटत-रटत किसानु जउनी राह ते जात रहै वही राह मा एकु चिड़ीमारु चिरइया फंसावै कै बरे जाल लगाये बइठ रहै। उड़ चिड़ी, उड़ चिड़ी सुनतै वहिका बड़ा गुस्सा आवा। वहु आव न देखिसि ताव किसनवा के दुइ चट्ठा रसीद किहिस। किसनऊ हांथ पांय ज्वारै लागि औ कहिनि- हमते कउनि गलती हुई गै हवै भाय, जउन हमका मारै लाग्यौ? चिड़ीमार कहिसि- ससुरऊ, हमरी चिरइया हुसका दीन्हेव, अउर कहत हौ का कीन। किसनवा कहिसि- तौ फिरि का कही, तुम्हैं बताय देव ना। चिड़ीमारु ब्वाला- कहु, आवत जाव, फंसत जाव।

अब वहु मुरख मनई आवत जाव, फंसत जाव रटति चलि परा। चलत चलत वहु एकु गांव के नगीचे गा। औ कुछु च्वार एकु घरु मा सेंधि मारि कै चले आवति रहैं। अइसी किसनऊ अपनी रटन्ति म मत्त चले आवैं। अब तो चोरउना चउकचे भे। औ जइसेहे किसनऊ क 'आवत जा फंसत जा' कहत देखिनि कि वहि पर टूटि परे औ अइसि मरम्मति किहिनि कि किसनऊ क छठी क दूधु यादि आइगा। जब किसनऊ सबै किस्सा रोय रोय बखानिन औ पूछिनि तौ अब का कही। तौ चोरउना कहिनि- देखु, अब कहु, 'अइस दिनु कबौ न आवै'। वहु मुरख किसानु यहै रटत चलि दिहिसि।

चलत चलत वहु राजा कि राजि मा पहुंचिगा। वही दिन निर्बंसी राजा के घर मा लरिका भा रहै। तौ परजा मा बड़ी खुसियाली मनाई जाति रहै। तमाम किसिम के ख्याल, तमासा और बाजा गाजा बाजति रहैं। खूब नाचु गाना होइ रहा रहै। वही बीच मा किसनवा 'अइस दिनु कबौ न आवै, अइस दिनु कबौ न आवै' बकत पहुंचिगा। यहु सुनतै राजा केर सिपाही वहिका पकरि के खूब पिटाई किहिन। कहै लागे, सारे केत्ती मान मनौती ते यहु दिनु दुयाखै का मिला औ तोए असगुन मनावत है। जब किसनऊ कै जामा कै निकी तना छीछाल्यादरि हुइगै तौ किसनऊ हांथ पांय जोरि कै पूछन लागे- सरकार तुहीं बताय देव का कही, हमका का, वहै कहै लागी। सिपाही कहिनि- अरे ससुरऊ कहौ, 'अइस दिन फिरि फिरि आवै।'

यहि कै बादि वहु मूरुख यहै बात रटति भा चल दिहिसि।

कुछु दूरि चलइ क बादि ओहि का देखिसि कि एकु राजा क्यार लरिकवा मरिगा है, अउ वहिका सारा परिवारु तौनु बिलखि बिलखि क रवावति आय। सोगु कै मारे सेगरे नगर मा तउन हाहाकार मचा। वहु मुरुख 'अइस दिन फिरि फिरि आवै' यहइ रटति चला जाति रहै। यहि बात का राजा केर नउकरन ने सुना अउ यहि मूरुख का तउन पकरि कै मारइ लाग। तउ वहि ने नउकरन ते कहा कि अरे भाप हम कइहां काहे मारत हवौ, हम कउनि खता कीन्हीं। तउ उइ बोले कि हियां तौ राजा साहेब केर बेटवा मरिगा अउ तुम चिल्ला रहेउ कि 'अइस दिनु फिरि फिरि आवइ'। तौ मूरुख ब्याला कि भाय तुमहीं बताव कि हम का कही? यहि पर राजा केर सिपहिया कहिनि कि कहौ 'अइस दिन कब्बौ न आवइ'। फिरि का भा, वहु मुरिखवा यहै बात रटति भा अपने घरे पहुंचिगा।

घरै पहुंचै के बादि वहि ने अपनै मेहरारू ते कहिसि कि दाक्दर ने कौनिउं हलुकि चीज खाइ क बताई रहै, औ हम वहिकै नांउ भूलि गयेन है, तौ तुमहीं बताव? मेहरारू बोली तौन हम कइस अउ का बताई? यहि बात क सुनिकै वहि मुरिखवा का गुस्सा आय गा औ वहु आपनि औरतिया क पीटै लाग, मुला वह बात कौनिउं क यादि न आई। यहिकै कुछु दूयार बादि मइहां उइ दूनौ मरद मेहिरिया नहाइ के बरे याक ताल का गए। हुवां तौन खूब किलोर कइकै, डुब्बी मारि कै नहाय लागे। एत्तेह मा का भा कि पनियां के भीतर डुब्बी मारे ते ऊपर कइहां तौन बुलबुला उठइ लाग। तौ यहि का देखि कै औरतिया हंसिकै चिल्लाय लाग कि दूयाखौ दूयाखौ पानी महियां कइस खिचरी अस पकति आय। यह सुनिकै वहु मुरुख मनई बोलि परा कि अरे का कही हौ। यहै तौ दाक्दर ने खाइके बरे बताई रहै। यहि के बादि मा उइ दूनौ आपनि घरे आए अउ औरतिया ने खिचरी बनाइ कै मरदवा क खवाइसि। फिरि मरदवा जाइकै निरोगि भा।

# बांदर के करनी

याकै रहै नवऊ औ याकै बंदरऊ। उइ दूनौ जनेन मा बड़ी दोस्ती रहै। याक दिन बंदरऊ कहिन कि नवऊ भाई हमारि बार बनाय दियौ। जब नवऊ बंदरऊ के बार बनाय भे तौ बंदरऊ कइंची लइके भागि। नवऊ कहिनि कि भाई यहु का किहेव, तौ बंदरऊ कहिनि कि सुन बे नाऊ-

नाऊ ने मेरे बाल लिया, मैंने नाऊ की कतरनी ली।

बंदरऊ कइंची लिहे भागि चले जाति रहैं, उनका रस्ता मा एकु गांव मिला जहां पर एकु गड़रिया अपने हाथन ते भेड़िन के बार उखारत रहै। बंदरऊ कहिनि कि गड़रिया भाई लियौ कइंची लइ लियौ, यही से भेड़न के बार काटौ। जब वहु गड़रिया कइंची से भेड़िन के बार काटै लाग तौ बंदरऊ उइ गड़रिया का कम्मर लइकै भागि तौ गड़रेऊ पूंछिनि कि बांदर भाई यहु का किहेव। बंदरऊ कहिनि कि सुन बे गड़रिये-

*नाऊ ने मेरे बाल लिया, मैंने नाऊ की कतरनी ली*
*मेरी कतरनी गड़रिये ने ली, गड़रिये का कम्बल मैंने लिया।*

कम्मर लइकै बंदरऊ चलि दिहिनि, आगे गली मा उनका एकु बनिया मिला जउन जमीन मा गुड़ की पारी ढनगावति लिहे चला आवति रहै। बंदरऊ कहिनि कि बनिया भाई लियौ कम्मर मा गुड़ की पारी बांधि कै लइ जाव, जब बनेउ कम्मर मा गुड़ की पारी बांधै लागि तौ बंदरऊ उनके याक पारी लइके भागि। बनेउ कहिनि कि बांदर भाई यहु का किहेव, तौ बंदरऊ कहिनि कि सुन बे बनिया-

*नाऊ ने मेरे बाल लिया, मैंने नाऊ की कतरनी ली*
*मेरी कतरनी गड़रिये ने ली, गड़रिये का कम्मर मैंने लिया*
*मेरा कम्मल बनिये ने लिया, बनिये की पारी मैंने ली।*

बंदरऊ गुड़ कै पारी लिहे भागि चले जाति रहैं तौ आगे उनका एकु हरवाहा मिला, जउन एतना भूखा रहै कि हरु जोतति बेरिया वहु हर फेरा मा एकु ढीला माटी खाय लियति रहै। बंदरऊ के दया लागि उइ कहिनि कि हरवाह भाई लियौ गुड़ खाय लियौ। एत्ता कहिकै बंदरऊ गुड़ कै समूचि पारी हरवाहे का दइ दिहिनि। जब हरवाहु पारी फोरि कै गुड़ खाय लाग तौ बंदरऊ वहिकै याक बधिया (बैल) लइकै भागि। हरवाहु कहिसि कि बांदर भाई यहु का किहेव, तौ बंदरऊ कहिनि कि सुन बे हरवाहा-

*नाऊ ने मेरे बाल लिया, मैंने नाऊ की कतरनी ली*
*मेरी कतरनी गड़रिये ने ली, गड़रिये का कम्मल मैंने लिया*
*मेरा कम्मल बनिये ने लिया, बनिये की पारी मैंने ली*
*मेरी पारी हरवाहे ने ली, हरवाहे की बधिया मैंने ली।*

बधिया लइकै बंदरऊ चलि दिहिनि। रस्ता मा एकु गांव मिला, हुवां एकु तेली महरिया-मन्सवा मिलिकै कोल्हू पेरति रहैं, वहि के बैलु न रहै। बंदरऊ कहिनि कि तेली भाई लियौ बैलु लइ लियौ यही

से कोल्हू प्यारौ। जौ तेलेऊ बंदरऊ से बैलु लइकै वही से कोल्हू प्यारै लागि, तौ बंदरऊ उनके मेहरिया लइकै भागि। तेलेऊ कहिनि कि बांदर भाई यहु का किहेव, तौ बंदरऊ कहिनि कि सुन बे तेली-

*नाऊ ने मेरे बाल लिया, मैंने नाऊ की कतरनी ली*
*मेरी कतरनी गड़रिये ने ली, गड़रिये का कम्मल मैंने लिया*
*मेरा कम्मल बनिये ने लिया, बनिये की पारी मैंने ली*
*मेरी पारी हरवाहे ने ली, हरवाहे की बधिया मैंने ली*
*मेरी बधिया तेली ने लिया, तेली की मेहरिया मैंने ली।*

एत्ता कहिकै बंदरऊ चलि दिहिनि। तेलेऊ की मेहरेऊ का लिहे बंदरऊ चले जाति रहैं तौ रस्ता मा याक गांव मा उनका पंडित मिले, जउनि अपने घर के अकेले रहैं अउर अपनेन हाथे से बरतन मांजति रहैं। बंदरऊ कहिनि कि पंडित भाई अपने हाथे काहे बरतन मांजति हौ, लियौ मेहरिया लइ लियौ। पंडित कहिनि कि लाव भाई यहु तौ नीकै से आय। पंडित का बंदरऊ मेहरिया दइ दिहिन अउर पंडित के ताखै मइसे उनका शंखु उठाय कै लइकै भागि। पंडित कहिनि बंदरऊ भाई यहु का किहेव, तौ बंदरऊ कहिन कि सुन बे पंडित-

*नाऊ ने मेरे बाल लिया, मैंने नाऊ की कतरनी ली*
*मेरी कतरनी गड़रिये ने ली, गड़रिये का कम्मर मैंने लिया*
*मेरा कम्मर बनिये ने लिया, बनिये की पारी मैंने ली*
*मेरी पारी हरवाहे ने ली, हरवाहे की बधिया मैंने लिया*
*मेरी बधिया तेली ने ली, तेली की मेहरिया मैंने ली*
*मेरी मेहरिया पंडित ने ली, पंडित का शंख मैंने लिया।*

बंदरऊ याक बिरवा पर चढ़िगे अउर हुवैं पर बइठिके शंखु बजावै लागि। बंदरऊ के शंख के अवाज सुनिकै तमाम एकु बांदर हुंवा पर इकट्ठा होइगे अउर बंदरऊ से कहै लागि कि बंदरऊ भाई हमका शंखु लाव हम बजाई। बंदरऊ सब बंदरन से कहिनि कि सब जने सुनौ। पहिले तौ सब जनै आव सेंवर के बिरवा मा आपति चूतर रगरौ औ जब चूतर लालि होइ जांय तौ चना का लोनहा खेतु मंझाय आव औं लौटि कै आव तौ हम तुमका शंखु देई। सब बांदर यहै किहिन। पहिले गे सब सेंवर के बिरवा मा चूतर रगरिन जब सब के चूतर खुब लालि होइगै तो चना के लोनहे खेत मा चलै लागि। हुंवा उनके चूतर खूब परपराय लागि। मुला शंखु पावै के लालच मा उइ सब चलै किहिन। आखिर मा उनके चूतर अस परपरानि कि वहि सहि नहीं पाइन अउर सब हुवै चना के खेतन मा मरिगे। अब बंदरऊ चैन से रहिकै शंखु बजावै लागि।

# बलई ख्यालैं फागु

बैसवारे मा याकै बलई मिसिर रहैं। उनका गांव आय सेमरउता। उइ बड़ेन फक्कड़ी सुभाव के रहैं। कउनो काम धन्धा ते उनका मतलब ना रहै। उनके बस बातै बात रहै, कितौ आपनु करतब दिखावा करैं। मुल उइ बातन बातन मा बात बनाय लेत रहैं। उनका सुभावै रहै हंसी मजाक करब। यही मा उनसे सबै खुस रहैं।

एक दिन कै बात आय गुड़ियन (नाग पंचमी) का परबु परा, सबके घर मा नीक नीक खाय का बनै, मुल बलई के घर मा दस बजे तक चूल्है न बरा। घर मा उनकी मेहरिया बड़ी परेशान औ अपने मनई पर खीझी रहै। और बलई मजे ते दुआरे पर स्वावैं। जो उइ घरै आये तो अपनी मेहरिया सें कहै लाग तुम का बरबरातू है। उइ कहिन- अरे तुमका कबहूं घर गिरिस्ती से मतलब रहा है। आजु गुड़ियन का परबु आय औ घर मा चूल्हौ बरै का नहीं, सबके घर मा नीक नीक पकवान बनत हैं। औ हम तुमरे माथे का करीं। बलई कहिन तौ का चही। कहिन अरे का चही, न घर मा घिउ है न मइदा है कुछौ बनै वनै का चही। यो सुनि के बलई चलेगे, अपने गांव के तालुकदार के हियां पहुंचे जाय। आपन रूप जोकर का अस बनाये, देही भरे मा धूरि लपेटे, औ लंगोट मारे, दरबार मा दउड़ लगावैं, दण्ड बैठक लगावैं या ख्याल उनका थोरी ब्यार होत रहा, तो अउर सब जने देखि कै कहै लाग- महराज आजु तो बलई द्याखौ कसक तमासा देखाय रहे हैं। राजा देखिन तौ मन मा समझि गे कि आजु बलई का कउनो जरूरति है। तबहिन उइ यहि तरा कइ रहे हैं। बोलाइन बलई का, कहै लाग- बलई का बात है? बलई कहिन अरे बात का है जानत नहीं का महराज कि आजु नाग पंचमी का परबु आय। राजा समझि गे, उइ बलई के सुभाव का अच्छी तरह जानति रहैं। अपने नौकरन का हुकुम दीन्हेन जाव बोरा भर गेहूं, मइदा, पीपा भर घिउ, शक्कर सब बलई का दइ देव।

उनके घर मा सब चीज पहुंचाय दीन गै। उर खुसी खुसी घरे आये, औ कहिन नीक नीक खाय का बनाव। उनके घर मा खाना पीना बना त्यउहार भा।

सबुइ देखि के कहैं- भाई इनका तौ कामु अइसन बनि जात है। उनके ऊपर या मसल बनिगै- "बलई ख्यालैं फागु, पराये गोहुंवन माथे।"

*(नोट : सेमरौता के निवासी बलई मिश्र एक हास्य विनोद प्रिय व्यक्ति थे। इनके सम्बन्ध में कुछ कहानियां इस जनपद में प्रसिद्ध हैं, जो इनके जीवन की घटनाओं से संबंधित हैं। उक्त घटना नागपंचमी के पर्व की इन्हीं घटनाओं में से एक है। अनुमानतः बलई का समय अब से 100 वर्ष पूर्व बताया जाता है।)*

# औसान बीबी की पूजा-कथा

बैसवारा जनपद में विवाह के अन्त में अथवा अन्य किसी शुभ कार्य की सकुशल समाप्ति पर इस पूजा का विधान किया जाता है।

**विधि :** पूजा के दिन सात सौभाग्यशाली स्त्रियों को आमंत्रित करके उनके सौभाग्य का पूजन होता है। भोजन में लाई गुड़ या पेड़े खिलाये जाते हैं। स्त्रियों के एकत्रित हो जाने पर किसी स्वच्छ स्थान पर चौक पूरा जाता है। मिट्‌टी की सात ढेलियां चक्राकार रखी जाती हैं। उन्हीं ढेलियों पर सिन्दूर लगाया जाता है। मिट्‌टी का कलश स्थापन होता है। उस कलश का पूजन होता है। सातों स्त्रियां चक्राकार कलश को घेर कर बैठती हैं। इन स्त्रियों का भी सिन्दूर आदि से पूजन होता है। लाई और पेड़े या गुड़ के सात कूड़े (ढेर) लगाये जाते हैं। यह सातों स्त्रियों का भाग होता है। सभी अपना-अपना भाग ग्रहण करती हैं। हाथ में अक्षत लेती हैं और औसान बीबी की कथा कही जाती है।

**कथा :** याकै बूढ़ा रहैं उइ हुरय्या (चिड़िया) पाले रहैं। एक दिन उइ मथुरा वृन्दावन जाती रहैं। अपनी बहुरिया से कहै लागीं- दूयाखौ हम जाइत है हमरी हुरय्यन का भूखन न मार्‌यो, इनका दाना पानी देत रह्‌यो। यो कहि के उइ चली गईं।

बूढ़ा की बहुरिया बड़ी लापरवाह रहै। समै पर उन चिड़ियन का दाना पानी न देय। वहिकी लापरवाही से उइ चिरइया मरि गईं। जब बूढ़ा लउटि के आईं तो देखिन कि उनकी हुरय्या मरी परी हैं। उनका बहुत दुख भा, अपनी बहुरियन का बरबरानी औ दरवाजे पर निकरि के बइठ गईं। राह देखती रहैं कि जो कोउ देखाई परै तो लाई चना भुनाय मंगाई, सुहगिलै न्यौती। वही समय सामने ते एक बरात निकरी। बूढ़ा बरातिन ते कहिन, कोऊ भइया हमार लाई चना भुजाय देव। यो सुनि के बराती कहिन- चलौ चलौ तुम्हार लाई चना भुंजावै का हमरे लगे समय नहीं है। उइ कुछौ न बोलीं। बरात थोरी दूर आगे बढ़ी औ एक जगह पर रुकि के विश्राम करै लाकि वहीं जगह बरात का दूल्हा अपने आप मूर्च्छित होइगा। सबै बराती घबराय गे।

बूढ़ा दरवाजे पर बइठी रहैं, इत्ते मां एकु मुर्दा केर अर्थी जात रहै। बूढ़ा कहै लागीं- अरे कोऊ हमार लाई चना भुंजाय देव तौ हम सोहगिलै न्यौती। उनमा एकु कहेसि का हर्जा है मुरदा जलावै का तौ अबै बहुत समय है लाओ इनका लाई चना भुंजाय देई। औ उइ उनका लाई चना भुनावै गे तौ ऐसी तन मुर्दा खंखारि के बइठि गा। सब लोग बड़े खुश भे औ उइ बूढ़ा का देवी मान के प्रणाम किहिन औ कहिन- माता तुम कौन जादू करि दिहेव जो हमार मुर्दा जी गा। उइ जवाब दिहिन- हम का जानी सब हमरी हुरय्या जानैं, औसान बीबी जानैं। गुड़ चना लइके घरै आईं सुहगिलै न्योतिन उनका जेंवाइन उनका हुरय्या जी उठीं - सब औसान बीबी की माया है। जिनका मुरदा जी गा रहै उनहूं के हिंयां औसान बीबी पूजा भै, औसान बीबी की दुरदुरइया चबवाई गईं।

जिनका दुलहा अचेत होइगा रहै उइ रोवत पीटत वही रस्ता ते लौटत रहैं। देखिन कि एक मुरदा यही रस्ता ते जात रहै वो जी उठा। औ हमरे बरात का दुलहा अचेत होइगा तौ उइ बूढ़ा से पूछिन कि

का बात है। बूढ़ा कहै लागीं- हम का जानी हमरी हुरय्या जानैं, औसान बीबी जानैं। जो कोऊ उनकेर लाई चना भुंजाय दिहिस उनका मुरदा जी गा तुम इनकार किहेव तुम्हार दुलहा अचेत होइगा, यहिका हम का करी। आजो तुमहू औसान बीबी की पूजा कइ देव। बूढ़ा पूजा केर विधि बताय दिहिन। उइ लोग घर जाय के औसान बीबी की पूजा करेनि, उनकी दुरदुरइया चबवायेनि उनकेर दुलहा चंगा होइगा। बरात नीकी तरा बिहाव के खातिर गै। सकुशल बिहाव के घरै लउटे। फिर उनके हियां सात सुहगिलै न्योति के औसान बीबी की विधि विधान से पूजा की गै। (इस प्रकार से विवाह के अंत में औसान बीबी की पूजा की परम्परा चली आ रही है।)

# सात समुन्दर टापू की कहानी

एक रहे राजा, उनके सात लरिका रहे, सातों के बियाह होइगे रहे। एकु दिन एक साधु आवा औ कहिस कि लरिका बने रहैं। तौ राजा के छोटकई बहुरिया आई, भिक्षा दिहिस तौ मारिसि जादू बहुरिया कुकुरि वना के साधू के पीछे पीछे चलय लागि। साधू जाय अपने कुटिया मां लइगा। राजा के सातों लरिका ढूंढ़य निकरे तौ साधु देखिस उनहू के जादू मारिसि सातों भाई पत्थर बनिगे तो पहली रानी का लरिका भगा उनके घर खाय खातिन कुछो नहीं रहा तो वहीं लरिका का सबका थोरा-थोरा दिहिन। जौकि होत कई रानी का लरिका मूड़ दइ दिहिन सब कोऊ मिलिकै वही का खाय डारिन। यही तरफ पांचो रानी अपना-अपना लरिका खा जाऊ। छठई रानी रही वहिके लरिका भा तो सब कोऊ आई और कहिन हम तो आपन लरिका दीन रहै तुमहू दियौ। तो छठई रानी कहिन- तुम पंचय मूड़ देहेव है। सबक मूड़ आरे भा धरे अपन-अपन लय लियव। सब कोऊ आपन आपन लय लिहिन।

वह लरिका गोली खेलय जाय औ पैसा जीत लावै तौ लाई-वाई लै आवै अपनो खाय अपनी महतारी का ख्वावै। होत करत एक दिन लरिका गोली ख्यालत रहा वही के साथ सब कोऊ बेइमानी करय लाग तो वह कहत कि खाइत महतारी बाप कसम हम बेइमानी नहीं कीन तौ एकु लरिका कहिस कि तुम्हारा बाप है कि कसम खाता है। वह लरिका लौटि आवत है औ कहत है अम्मा बप्पा कहां हैं। कहती हैं परदेस में हैं, अबहीं लौटि के अइहैं।

होत करत एक दिन करि यही भा तो वह जिद करे लाग तो रानी पूरा हाल बता दिहिन तो वह चल दिहिस। चलत-चलत वही साधू की कुटिया मा पहुंचे। मौसी बाप अरे यह तो हमार लरिका आय तो उइ कहिन बच्चा भागि जाओ नहीं तो वह आई मारी डाटी। जब साधु आवा तो उइ लरिका लिहिन वह लरिका कहिस कि मौसी साधू पूछे तो हमार जिव घबड़ात है, कोऊ तुमका मारि डारे। कहिन की अच्छा। जब साधू आवा तो उइ पूछिन की तुम घूमन न जावा करो तुमका कोउ मारि डारी तो हम कहा करिब तो साधु कहिन कि तो जल्दी हम मरय वाले नहिन। तो रानी कहिन कैसे कहिन सात समुन्दर टापू मा एक चन्दन का बिरवा है। वहीं एक तोता है वह तोता को जो कोउ मारि डारी तौ जानि लियो तब हम मरिबै। जब साधु चला गा तौ वह लरिका से बताइन तौ वह लरिका बुढ़िया की कुटिया मा पहुंचा। चारों तरफ फूल लगा दिहिस औ बूढ़ा माता खुश होइ गई औ कहिन कि यह को पेड़ लगावा है। तौ बूढ़ा पूछिन का चहत हौ बच्चा। तौ लरिका कहिस हम सात समुन्दर टापू जाबै औ सब बात बता दिहिस तो उइ दुई छड़ी दिहिन औ कहिन पहली छड़ी समुन्दर के पानी का छुवा दियौ तौ पानी गुप्ता जाई। दुसरी छड़ी छुवायो तो बिरवा के सांप उड़ि जइहैं तौ लरिका गवा औ पिंजरा उतारि लावा तौ साधु दउरा औ कहिस हमार पिंजरा हमका ला दियो तौ वह लरिका कहिस चलव देति है। वह सीध से एक आंख फोरि दिहिस तो साधु केरि एक आंख फूटि गइ। तौ वह लरिका कहिस पहले बाप का औ चाचा का मनई बनाव तौ उनका मनई बनाइस औ उनकी मौसी मेहरिया बनाई वह तोता की गटई मरोरि तौ साधु मरिगा। राजा रानी लरिका हंसी खुसी मे घर चलेगे।

# ठाकुर औ ठग मण्डली

एक रहिन ठाकुर त वै चलिन ससुरारि आपनि ठकुराइन आनै। राही म ठगन कै गांव परा। ठगै देखिन कि ठाकुर कै घोड़ा बड़ा नीक बाय औ माल असबाब साथ देखात बा। तौ राहि रोकि क खड़ा भइन कि ठाकुर बिना हुक्का पानी पीये, कुछ जल जलपान किहे काहें चला जात हया। धनि भागि कि तोहार चरन हमरे गांव म परा।

ठाकुर कहिन कि भाई हमै त होति बाय देरी। त कहिनि कि नाहीं बिना खातिर किहे हम न जाय देब। ठाकुर समुझि गइन कि ये सारै ठग होंय, मुला कहिन कि अच्छा चला।

जाइकै पहुंचिन त ठगै मेहरारू से बोलिन कि अच्छा ठाकुर साहब खाये से पहिले चला कहानी होय औ जे कहानी क झूठ कहि देय ऊ पांच सौ रुपया देय। ठाकुर कहिन कि ठीक बा। अब ठगवा सुरू किहिस कि हमारे बाबा एक छेगड़ी जियाये रहिन तौ जब वै मरि गइन तौ वही छेगड़ी के दूध घिउ से पूरी तेरही वनकै भै रही।

ठाकुर कहिन कि ठीक है। हमै मालुम है। ऊ छेगरी .. तोहार बाबा हमरे बाबा से मांगि कै लाय रहिन। औ कहे रहिन कि हमार नाती पैसा देइहैं, पांच सौ रुपया म बेंचै रहिन। अब ठगै परिन चक्कर मा। झूठ कहैं त सर्त हारै पांच सौ देवै क परै औ सच कहैं त छेगरी क दाम देवै क परे। का करैं दिहिन पांच सौ रुपया।

अब कहानी सुनावै कै नम्बर आय ठाकुर कै। कहै लागिन कि एक बेर कै बाति है कि हम अपनी मेहरारू के साथ कोठा प बइठा रहेन। बस एतनी जोरि के आन्ही आय कै हमार मेहरारू उड़िगै औ आइ कै तोहरे कोठा पै गिरी, न विसवास होय तौ देखि ल्या उहै बैठी बाय। कहिकै ठगन की बहिनी की ओर इसारा कै दिहिन।

अब ठगै सोचिन कि झूठ कहब त फिर पांच सौ देवे क परी। लावा बहिनि लै जाये देई। रिस्तेदारी होइ जाय त एकै कुलि धन ठगि लावै क होये। कहिन कि हाँ हाँ ठीक बाति है। औ बहिन का विदा कइ दिहिन वनके साथ। ठाकुर ससुरारि नाय गइन। लौटि परिन वहीं से। ठगै पूछिन कि जीजा कब विदा करावै आई? त कहिन कि पुनवासी ले आइ जाया। अब पुनवासी के दिने ठाकुर दुइ खरहा लिहिन एक ठू घरे बांधि दिहिन औ एक ठू खेते पै लै गइन।

ठगै आइन पहिले खेतवै प। ठाकुर खरहा खोलि कै कहिन कि जा घरे कहि दिह्या कि मेहमान आय हइन खाना पीना तैयार रहै। खरहा भागि कै जंगल ** चलागै। यहर ठगन की बहिनी से त पहिलै कहि गै रहे कि आजु खाना पीना तैयार राखा। ठगै आइकै देखैं कि दुआरे प खरहा बन्धा बा औ खाना पीना तैयार बा त कहिन कि ई तौ बड़े काम कै चीज है। बोलिन कि जीजा ई खरहा हमै दै द्या। त ठाकुर बोलिन नाही भाई। हम एकसरुवा मनई एकर बड़ा सहारा बाय।

दुइ हजार रुपया म खरीद कै लाय हई। ठग बोलिन कि हम देब दुइ हजार। अब दुई हजार देकै खरीदि लिहिन। लैकै चलिन गांव के गोइड़े पहुंचिन तौ कहिन कि जा घरे कहि दिह्या खाना-पीना तयार

रखैं। खरहा भागि कै कहूं लुकाय गै। घरे पहुंचे त खरहा नदारद।

लौटिन लट्ठ लिहे कि जीजा तूँ हमैं धोखा दिह्या। त पूछिन कि बाति तौ बतावा का भै। त बताइन। ठाकुर बोलिन कि देखा किहू पान वाद हवन वाली बाति अरे भाई ओका न घर देखाया न दुआर बेचारा बिना देखे कैसे पहुंचत?

ठगै कहिन कि हां ई बात तौ सही। पूछिन कि अच्छा जीजा अब बहिन क विदा करावै कब आई? त कहिन कि जब मन कहै।

वै पन्दह दिन बाद फिर आवै क दिन धैके चला गइन। जब ठाकुर देखिन कि ठगै आवत हइन तौ ठगन की बहिनी से कहिन कि हम तुहैं सोंटा सोंटा मारब तौ तू मरै क मक्कर कै लिह्यू फिर जब हम दूसर सोंटा छुवाउब त जी जाइउ। कहिस कि अच्छा।

अब जैसे दुवारे पै ठगै पहुंचिन ठाकुर भीतर ठगन की बहिनी का लागिन मारै। ऊ चिल्लाये जाय। ठगै भित्तर हलि आइन। भाइन का देखतै ऊ मरि गै। अब ऊ ठगै कहिन कि ठाकुर हमारि बहिन मारि डार्‌या। हमैं वापस करा, हम तौ विदा करावै आयन। ठाकुर कहिन कि ठीक बाति बा हमरे बाप दादा के जमाना से एक ठू सोंटा धरा बा। ऊ ऐसनै गाढ़े दिन काम आवथे। लाइकै सोंटा छुवाइन ऊ जी गै।

अब ठगै सोचिन कि ई तौ बड़े काम कै चीज। कहिन कि जीजा ई तौ हमै बेंचि द्‌या। वै कहिन कि नाहीं, बाप दादन कै निसानी होय। ठगवै कहिन कि हम पांच हजार रुपया देवै का तयार हई। ठाकुर पांच हजार लइके ऊ सोंटा बेंचि दिहेन। ठगवे फिर ठगि गे औ ठाकुर से हारी मानि लिहेन।

# डोम चला भीखि मांगे

एक रहिन डोम-डोमिन। बहुत गरीब। कुछ काम धाम डोम नाय करै। बहुत आलसी रहा त ओकर मेहरारू कहिस कि अब तौ खाये बिना मरि जाये क परी, कुछ काम धाम करा। तौ ऊ घर से निसरा तैसे एक ठू भिखमंगा मिला। तौ डोम पूछिस कि भइया कहां जात हया त ऊ कहिस कि भीखि मांगै तौ बोला कि हमहूं का लियाये चला। कहिस कि चला।

अब ऊ वही के साथे भीखि मांगै लाग। जब भिखमंगा बोलै कि धरम करम से है संसार। तौ बकारे साथे अगिली लाइन बोलै डोमवा कि दान देवइया तोर वेड़ा पार। औ जब भीखि डारै आवै केहू तौ झट्ट से आपनि झोरी बढ़ाइ देय। बेचारे भिखमंगवा का कुछ न मिलै। मुला ऊ बेचारा चुप रहा।

एक दरवाजा पै गइन तौ वहि घर कै मालकिन रोज चुटकी निसारति रहीं औ एकादसी पा पुनवासी के कौनौ भिखारी आइ जायं तौ ओका दै देय। वहि दिन रही पुनवासी। त जइसै अवाज परी तैसे वै महीना भरेक चुटकी एक थरिया पिसान लैकै निसरी तो डोमवा आपन झोरी फैलाय दिहिस। औ सोचिस कि यहं से तौ ढेर मिलत है, अब यही रोज आइकै मांगि लेवा करब। एकर भिखमंगवा ससुर कै साथ छोड़ि देब। बस लइकै घरे चला गय। अपनी डोमिन से कहिस कि झोली खाली कै दे फिर जाबै।

अब विहान भै फिर वही मोहारे प पहुंचा मुला ऊ भुलाइगै कि भिखमंगा काव कहत रहा। अब भित्तर झांकै लाग तौ ऊ मेहरारू बइठी पंखा झलति रहै औ ओकै देवर औ मंसेधू खाये उठा रहे। त ऊ ओका देखि कै बोला कि हे सुनति हयू, उहै खेलवा आज फिर खेलबू जौन कल्हियां खेले रहयू।

अब तौ ओकर देवर मंसेधू ओसे बिगड़ि कै पूछै लागिन कि कौन खेना खेले हयू एकरे साथे। त ऊ बोली कि हमतौ यनका जनबै नाय करित कि के होय। त ओकर देवर औ मसेधू जुटि कै डोमवा कै खूब थुनाई किहिन।

अब ऊ वहिरे लुकान खड़ा रहा। जब मौका पाइस तौ वहिरै के गड़बड़ा म से आगि लै कै ओकरे छप्पर म धै दिहिस औ दुसरे टोला म पहुंचा। उहां मोहारे पै एक दुलहिन आधा घुंघुट काढ़े पानी भरै क निसरी तौ ओसे बोला कि हे नथुनी वाली! कुछ हमै देबू कि वइसै करी जइसे एक ठू टोला वाली कै किहेन। अब तौ ऊ डेराय गै औ भित्तर का भागी, अपनी सासु के लगे कि वहे टोला म ई कुछ कै आय वाय। यतने म आगि लागै क वह टोला से हल्ला भै तौ सासु पतोह चिल्लाय परीं कि आगि लगावै वाला इहै खड़ा बा पकरि ल्या। अब तौ ऊ भाग जिउ परान लैकै गिरत परत तौ लाठी डण्डा ढीला फेंकि कै सब बहुत मारिस। पकरि त नाय पाइस। घरे आय हाँफत-हाँफत डोमिनिया से बोला कि हमसे कुछ धंधा न होये। देखा एक धंधा सुरू किहेन तौ हाथ गोड़ टूटिगे कौनिउ खानि जिउ बचा।

# पंडिताइन औ महात्मा जी

एक रहिन पंडित पंडिताइन। पंडित बड़े नेमी धरमी दान पुन्नि वाले औ पंडिताइन महा कंजूस। त आये एक महात्मा जी कि भाग्यवान! कल्याण होय महात्मा पियासा है जल पियाय दे। त ऊ बिगरि परी कि इहां के का फुरसत बा कि बैठे जल पियावै। मुस्टण्डा एस घूमत हइन जा दूसर दरवाजा देखा।

महात्मा जी चलि परिन। एतने म वोहर से पंडित आवत रहिन तौ देखिन कि एक महात्मा दुवारे से लौटा जात हइन। तौ वन्हैं बोलाइ लाइन औ बैठाइ के कहिन कि महात्मा जी के लिए भोजन पकावा औ पहिले वन्है पानी पियावा। त ऊ बिगड़ि गै कि बारह बरिस से अपने भाये क मुह नाय देखेन औ रोज-रोज एक ठू मुस्टण्डा, वनरू पकरि लावथ्या। त पंडित कहिन कि अच्छा पुन्नवासी कै तोहरे भइया काँ लियाय आइब। अब कौनो खानि खाना वाना बनवाइ कै खियाइन औ पंडित महात्मा जी से कहिन कि पुन्नवासी ले आइ जाया। तोहार नेवता होय। औ वहर सारे क बोलवाय पठइन। अब वै अपने भइया की खातिर किसिम किसिम कै बिंजन बनईं औ भाये का पाटा बिछाई दिहीं औ परसि दिहीं। महात्मा जी का एक कोने म कथरी बिछाइ कै पानी माठा औ बासी रोटी दै दिहीं। पंडित महात्मा जी का त बैठाय दिहिन पाटा पै औ सारे का कमरी पै।

महात्मा जी खूब छकि कै खाये लागिन। वहर सार सोचै कि ई तौ हमार बड़ी बेइज्जती भै एकै रसोई मा एक ठो मुस्टण्डा का तौ पूड़ी पकवान औ हमैं बासी रोटी, सरा माठा। वोहर पंडिताइन रसोई म से देखीं त लागीं थरिया परात बज़ाइ कै पंडित का बोलावै। मुला पंडित वोहर तकबै न करैं। महात्मा खाइ भइन तौ वन्है बिदा कइ दिहिन। औ एहर सार उठा तौ रिसि के मारे अपने घर कै राह लिहिस। अब पंडिताइन पंडित कै खबरि लिहीं कि जन्म पाइकै हमार भाय आय तौ ओकरे बासी रोटी माठा औ वहे मुस्टण्डे का पूरी पकवान। तौ पंडित कहिन कि अरे भाई तोहरे भाये का पेचिस परति रही त हमसे बताये रहिन तौ हम जानी कि तुहूं से बताये हइन तबै वन्है माठा रोटी दिहे रह्यू। पंडिताइन कहीं कि औ हम थरिया पराति बजावत थकि गयन सुन्या काहे नाय? तौ बोले कि अरे हम तौ समझेन कि अब महात्मा लोगै खाय बैठे तौ संख घड़ियाल बजाइ कै भोग लगाइ। तौ महात्मा जी भुलाय गै हइन, एही से तैं बजावत हये। एही मारे तोरी ओर नाय देखेन।

# भूत के चुरकी

एक ठू रहा गरीब किसान। तौ ओकरे खेतबारी कुछ नाय रही। तौ ओकर मेहरारू कहिस कि मेहनत करा। कहूं ऊसर परती खाली परी होय वही के जोति कै बोय दृया। तबौ कुछ न कुछ तौ होबै करी। अब ऊ चला तौ का भै कि एक मरघट के परती जमीन जोतै लाग। तौ वकरे हल मा भूत कै चुरकी बाझिगै। तौ भुतवा बोला कि भइया ई मरघट कै परती जिन जोता। तोहार जेतना खर्च होय गल्ला कै, वतना हम देब। तौ ऊ बोला कि बीस मन कुवांर मा औ बीस मन चैत म पहुंचावै क तैयार हृवा त न जोती। भूत बोला कि ठीक बा देबै।

अब ऊ दूनौ फसल देय लाग। तौ एक दिन दुइ तीन बरिस बीते पै एक ठू भूत कै नातेदार आय। तौ ऊ गल्ला लैके जात रहा तौ पूछिस कि कहां लै जात हृया? ऊ कुलि हालि बताइ दिहिस कि एक ठू किसान हर जोति कै हमार पूरी देंह फारि डारिस रहा तौ यही से हम्मै गल्ला देवै क उवादा करै क परा। नातेदार समझाइस कि देखा तूं ओका गल्ला न दृया। हम ओंका मारि डारब। ऊ कहिस कि अच्छा। अब ऊ किसान क मारै खातिर ओकरे घरे राति म चलि परा। ओहर किसान के लरिकन खातिर बासी खाब औ दूध धै जाय तौ बिलरिया आइ कै खाइ जाय। वहि दिन किसान डण्डा लिहे बैठा रहा कि जइसै आवै वोकां ठोंकि देब।

बस जइसै भूत केंवाड़ लुड़काइ कै खोलि कै भीतर हला, बस किसान भरपूर जोर से डण्डा मारि दिहिस। ओकरी खोपड़ी म लागि गै। ऊ चिल्लान कि अब न मारा। तुहैं जौनी चीज कै जरूरत होय बतावा पहुंचाउब। हम गल्ला पठवै वाले कै नातेदार होई। त बोला कि जा अपने नातेदार से कहि दिहृया कि अब हमैं गल्ला नाय चाही अब रोजाना दस सेर पिसान औ दस सेर चाउर पांच सेर दालि पठइ देवा करैं।

अब भूत कै नातेदार पहुंचा कि अरे भइया, दस सेर पिसान, दस सेर चाउर, पांच सेर दालि रोज पठवा नाहीं त हमहूं तुहूं दूनौ क मारि डारै। ऊ तौ बड़ा जबर बाय। अब भूत बोला कि ल्या तूं तौ अउर बनइ आया। गल्ला पठइ कै फुरसत पावत रहेन, अब चली चक्की चक्की पिसान बटोरी, कौड़ी-कौड़ी चाउर। मुला का करैं यतना त करही क परी।

# समधी औ सोंटा

एक ठू रहा किसान, ओकरे लगे दुइ ठू रहिन बर्दा। एक क नाव धरे रहा समधी एक कै सोंटा। एक दांय वही किसान कै समधी समधियानै आय। किसान खेतै म हर जोतै गै रहा। तौ हर छोरि के बर्धा लैकै लौटा रहिन तौ राहि म समधी मिलि गइन। तौ कहिस कि तूं चला घरे हम अबै बर्धन का पानी पियाइ कै आवत हई। वै चलि परिन। तबले जौने बरधा कै नाव सोंटा रहा ऊ भागि कै पियासि के मारे। अब सोचिस कि चली ई बरधा के बान्हि कै ओकां पकरै जाई।

घरे आवै लागिन तौ दुवारे के लगे समधी मिलि गइन तौ कहिन कि चला साथै दूनौ जने आइन। अब घरे आइके अपनी मेहरारू से बोला कि सुनति हयू ला समधी का बान्हि द्या हम सोंटा लैकै अबै आवत हई। वै तौ कहिन बरधन का औ समधी समुझिन कि हमें बान्हि कै हमैं खातिर सोंटा आनै जात बा मारै की खातिर। अब ऊ भागै लागिन। वहर किसान बरधा पकरै खातिर हाथे म पैना लैकै निसरा रहा तौ समधी का भागत देखिस तौ कहिस कि अरे समधी काहे भागत हया रुका तौ। मुला ऊ तौ ओके हाथे म पैना देखि कै और जोर से भाग। अब किसान हारि कै लौटि आय औ सोचै लाग कि बात का भै। अब ओकरी समझ म बात आइगै। तौ मेहरारू से बोला कि अच्छा नाव धरा बर्धन कै कि समधी हमार भागि गइन।

# मुरुख गांव वाले

एक गांव म एक साधु बाबा रहत रहैं। भिच्छा मांगि कै आपन गुजारा करैं।

तौ एक ठू बदमास मनई रहा ऊ कहै कि बाबा के उपदेस से गांव म धरम करम बहुत बाढ़ि गै बा। अब एकां गांव से निसारै क चाही। तौ ऊ गै औ गांव भर मा उड़ाय दिहिस कि ई जौन बाबा भीखि मांगै आवत हैं, ऊ लरिकन क पकरि कै लै जात हैं औ बेंचि लेत हैं। तौ यह बाबा के अब केहू भीखि न देय औ ऊ आवै तौ किवार बन्द कै लेय सब।

अब तौ बाबा जब भीख मांगै आवैं तौ सब भित्तर से केंवाड़ बन्द कै लेंय। अब बाबा भूखन मरै लागिन। तौ एक दिन आइकै दुवारेन से खड़ा होइकै कहै लागिन कि हमसे कौन गलती भै, जौन तोहरे सब हमैं देखतै केंवार बन्द कै लेथ्या। तौ एक जने केंवार खोलिकै बहिरे आइन औ कहिन कि तूं हमरे सब कै लरिकन चोराइ कै बेंचथ्या। तौ बाबा सुनिकै सन्न होइगै। कहिन कि अच्छा सब आपन आपन

लरिका गिनिल्या केकर लरिका हम चोरायन। कै लरिका कम इहन।

तौ सब आपन आपन लरिका गिनिन त सबै पूर रहिन। तौ सब लाग बाबा से माफी मांगै। बाबा कहिन कि अब हम ई गांव छोड़ि कै दुसरे गांव म जात हई यहें अब न रहब। सब बहुत मनाइस मुला बाबा चला गइन।

# के टकटौरै छान छपरिया

एक ठू रही सास पतोह। पतोहिया बड़ी चंचल रही त अपने यार का कहिस कि राति के बारह बजे कोठा पै आइ जाया औ छान्हि पै खुटखुटाइ दिह्या त हम आइ जाब। ऊ जल्दी आइ गै औ छान्हि खुटखुटाइ दिहिस। सासु अब ही जगतै रही। त ऊ बहू बोली

*के टकटोहै छान छपरिया के खुटकावै छानि।*
*सासु तो सोई जागति बाटी लोटि जाहु बिरथा मानि।।*

औ सास से कहं कि सासु जी, एकर अरथ बताइ द्‌या हमरी कहनी के। वहर त दोहा से सनेस दै दिहिस पार का ऊ चलागै। अब सासु बोली कि बहू अपनी कहनी का अर्थ सुन-

*ऐसा खेला बहुतै खेलेन जब ले रही जवानी।*
*अपने यार क राहि बतावै, हमसे बूझि कहानी।*

अब पतोह माफी मांगिस।

# परछाईं क साथ

एक ठू रहिन महतारी बेटवा। त बेटवा बोला कि माई ससुरारी जाब। त वनकै माई वन्है रोटी-वोटी वान्हिकै दै दिहीं। कहीं कि अच्छा जा तौ मुला राही म केहु क साथे न लिह्या, अकेले जाया।

त कहिन कि अच्छा। अब चलि परिन। त जइसै निसरिन तैसै घाम होइगै। त परछाई साथे चलै लागि। त कहिन कि हे भाई तूं लौटि जा। त ऊ न मानै साथै चला चलै। त कहिन कि अच्छा ल्या हमार गमछा लैल्या लौटि जा। कहिकै गमछा फैंकि दिहिन। तबौ नाय माना त फिर कुरता फैंकिन, फिर बन्डी फैंकिन तबौ साथे चला करै।

आखिर म जब धोतियौ फैंकि दिहिन तब ले साँझ होइगै त परछाई गायब होइगै। अब ऊ बोला

कि अरे ससुर हम जानत होइत कि धोतियै चाहत रह्या त पहिले उहै दै देइत। अब का करैं नंगै लुकात लुकात ससुरारी का पहुंचिन औ दबकि के एक ठू कोठरी म लुकाइ गइन। त वहे कोठरी म धरा रहा कोंहड़ा। त ओकरी दुलहिनी का ओकर माई कहिस कि जा बिटिया एक ठू कोहड़ा उठाय लाव तरकारी बनवै का।

त ऊ गै त अन्हियारे म टोवै लागि त वनके नाकी म अंगुरी हलि गै। त वहीं से बोली कि अरे माई कोहड़वा त सरिगै। यतने म ऊ बोला कि अरे चुप रह ई तौ मैं हयों। अब लै आइकै कुछ कपड़ा वपड़ा दे त निसरी।

त ऊ कपड़ा वपड़ा पहिरै का लाय दिहिस त ऊ निसरा। त ओकर सासु बनइस मूछी (पकौड़ी)। त पूछिन कि एकर काव नाव है। बहुत नीक बनी बा। त सासु कहिस कि भइया ई मूछी होय।

अब सबेरे विदा भइन त रटत कै चलिन मूछी, मूछी, मूछी। मुला गांव म पहुंचत पहुंचत भुलाइ गइन। अब महतारी से कहैं कि माई उहै बनव जौन अइया बनये रहीं। त माई बोली कि अब कैसे जानी कि तुहार अइया काव बनये रहीं। अब ऊ बड़ा परेसान रहा। यादै न आवै बस इहै कहै कि बड़ा नीक रहा। उहै बनवा। बस एतने म बहिनि हँसि दिहिस त मारे रिसि के ओकर नेकुरा (नाक) काटि लिहिस। अब महतारी बिगरि परी कि करे भुखमन्ते हमरी बिटिया कै मूछी यस नेकुरा रहा काटि लिहे। बस ऊ चिल्लाय परा कि मिलिगै मिलिगै इहै त बनावै क कहत रहे।

## टपका

एक बुढ़िया कै झोपड़िया टुटही फुटही रही। वहे गांव मा एक ठू बाघ रोज आवै औ रोज कौनौ जानवर नाय त लरिका जरूर लै कै भागि जाय। एक दिन वही बुढ़िया कै अंगना म आइ कै ठाढ़ होइगै। बुढ़िया उधर देखिन त बादर घेरे रहे। ऊ अपने बेटवा से बोली कि बच्चा ले जल्दी जल्दी खाइ पी ले आजु टपका आई। हमके त बघवा से ज्यादा यही टपका क डरि लागत है।

अब बघवा सुनि कै सोंचिस कि जरूर टपका हमहूं से बड़ा कौनौ जनावर होई त ऊ उहां से भागि कै सोचै लाग। बुढ़िया के मोहारे प रही एक ठू नीबि कै पेड़ त एक ठू कोंहारे कै गदहा हेरान रहा त ऊ वही पेड़वा प चढ़ि कै ओका देखत रहा। कोंहरा बघवा का उहां ठाढ़ देखिस त जानिस कि ई गदहवै है। बस उधर से ओकरे ऊपर कूदि परा। बघवा सोचिस कि इहै बा टपका औ ऊ जिउ लइकै भागै लाग जंगल की ओरी। यहर कोंहरा ओका पकरि वकरि घरै लावै को घुमावै ओकरे पीठि पै बैठा बैठा। ई जानिकै क ऊ गदहा होय। वहर बघवा भागै कि टपका होय। कोंहरा यतने म जानि गै कि ई गदहा नाय ई तौ बाघ होय त ओकर जान सूखि गै।

बस यतने मा एक ठू बैरि क पेड़ परा, बस कोंहरा ओकर डारि पकरि कै लटकि गै औ वही पेड़े म एक ठू खोढ़र रहा वही म बैठि गै। अब ओहर बघवा भागत जात रहा त एक ठू लोहखरी आवत रही त पूछिस अरे बाघ भाय काहें भागत हया। त ऊ कहिस कि अरे भागि चला टपका खदेरे बा। ऊ कहिस कि कहां बाय टपका, ऊ कहिस कि बैरि के पेड़े पै चढ़ि गै बा।

लोहखरिया कही कि चला देखी। बाघ बोला कि हम तौ नाय जाब। ऊ जाय क छुपि गै औ लामें खड़ा होइगै। यतने म लोहखरी पेड़े पै चढ़ि गई। अब कोंहरा का किहिस कि वनकै पूंछि भितरै से पकरि लिहिस औ लाग खींचै। लोहखरी अपुना क खींचै ऊ अपुना का। बस पूंछि उखरि गै। अब ऊ भागि पूंछि छोड़ि कै कहिस कि पूंछि उखरवा होय। यतने म एक ठू बानर मिला। पूछिस कि कहां भागत हया तोहरे सब। तौ बघवा बोला कि टपका खदेरे बा, लोहखरी बोली नाहीं हो पूंछि उखरवा होय। अब बनरा कहिस कि तोहरे दूनौं जने बुद्धू हवा। ऊ गै वह कै पूछि कोंहरा उखारि लिहिस जब तो वो डरि कै चिल्लात चिल्लात भागि गइन त कोंहरा पेड़ पर से उतरा। गांव म आवै लाग त देखिस कि गदहवा खेते म चरत बाय। बस ओकां पकरि कै लइकै घरे आय। वही दिन से टपका कै डरि के मारे बाघ गांव म आउब छोड़ि दिहिस। सब चैन से रहै लाग।

# बुद्धू कोइरी

एक ठू कोइरी रहा। बड़ा आलसी। ओकर मेहरारू रोज कहै कि और कुछ नाय त खेतियै कैल्या। ऊ गै ठाकुर से कहिस कि हम्मै दुइ बिगहा खेत दैद्या खेती करब। ठाकुर रुपया लैकै दै दिहिन। त खेत जोतिकै, जब तइयार होइगै त ठाकुर से पूछिन कि काव बोई?

ठाकुर कहिन कि जोन्हरी बोइ द्या। अब ऊ रटत कै चला जोन्हरी जोन्हरी औ घरे पहुंचत पहुंचत ठोकर लाग त भुलाइ गै। अब फिर गै पूछै त ठाकुर चिढ़िकै कहि दिहिन कि अंड़िया बोइ दे। अब ऊ गै घर मां जेतना सूत रहा ऊ और अड़ोस पड़ोस से सूत बेसहि कै लैकै खेत म बोय आय। अब ठाकुर सुनिन त रातौ रात कुल सूत बिनवाय लिहिन औ बेंचि लिहिन। अपने खेत म जौन बगलियै रहा ठाकुर मकई बोइ दिहिन। ओकै एक दाना छिटिक क कोइरिया के खेते म परिगै अब जब ऊ जामा त कोइरिया ओका रखावै खातिर खेते म झोपड़िया डारि कै रहै लाग।

त ओकरे खाली खेते म उगि आय कासि। अब राति कै ऊ कासि चरैक आय इन्दर महाराज क हाथी त कोइरा कबौ हाथी नाय देखे रहा त बिहान भै गांव भर मा सोर कै दिहिस कि सब आपन आपन भिटुहर (गोबर के कण्डा का ढेर) बान्हि ल्या राति कै केहू कै भिटुहर हमार खेत चरत रहा। सब हंसै लाग कि ई पगलाय गै बा। फिर अगली रात म हाथी के पांयन कै निसान बनिगै रहा काहें से कुछ पानी बूनी परिगै रही त फिर ऊ गांव म सबसे कहि आय कि आपन आपन चाकी बान्हि कै राखा तोहरे सबकै चाकी हमारे खेत चरि जात है। अब फिर सब खूब हंसिन। तितरी राति मा कोइरियवा हाथी क पूंछि पकरि लिहिस बस हाथी ऊपर उड़ै लाग त उहौ उड़ि गै। उहां जाइ कै का देखत है कि मोटिया कपड़ा बहुत सस्ता बिकात बाय रुपया क पांच गज। त ऊ देखिकै लौटि आय औ विहान भै कुलि कोइरिन का बटोरिस औ कहिस कि चला गजी बेसहिलावा खूब सस्ती सब राति कै बटुरे खेते म। हाथी क पूंछि पकरिकै पहिलै उह कोइरियवा लटका फिर ओकर गोड़ पकरि कै दूसर फिर तीसर ऐसै कुलि कोइरी लटकि गये। हाथी उड़ि चला। उड़त-उड़त ऊंचे पहुंचा त नीचे वाला कोइरी पूछिस कि ई तौ बतउबै नाय किह्या कि वहकै गज केतना बड़ा बा। ऊ कहिस कि अबही न पूछा। मुला ऊ जिदियाय गै कहिस कि नाहीं

अबहिनै बतावा। तू धोखा देकै सबका ले चलत हया बस बतावै खातिर दूनौ हाथ खोलिकै फैलाइस तबहिं पूछि छूटि गै सब भदर-भदर नीचे चुइ परा, हड्डी पसली टूटि गै।

# मसखरी

एक ठू रहा किसान त ऊ बड़ा मसखरा रहा। गांव की मेहरारुन से बहुत मसखरी करै। त एक दिन गांव के मेहरारुन आइकै ओकरी मेहरारू से कहि गयीं कि देखा अपने मरद का समुझाइ द्या, यस मजाक न कीन करैं।

त सांझ कै ऊ किसान से बोली कि तूं दुसरे से मसखरी काहे करथ्या? हमसं कीन करा। ऊ कहिस कि अच्छा। अब एक दिन आय ओकर सार। तौ मेहरारू से कहिस कि मोकां बरे मूंगि कै दालि क पानी बनाइ दे औ अपने भइया का पूड़ी पकवान। मुला जब खाये क जूनि भै त मूंगि कै पानी सारे के आगे धै दिहिस औ अपुना पकवान खाइगे।

सोवै क जूनि भै त सारे से बोला कि एह कोठरी म न सोया एहसन आवथै भूतिनि। तौ सार बोला कि हम आजु ले भूतिनि नाय देखे हई आजु देखे चाहिये औ वहि कोठरी म सोइगै।

किसान राति कै लाग जोर जोर से कँहरै। मेहरारू कहिसि कि का बाति है? त ऊ बोला हमें पेटे म बड़ा जोर दरद है लागत है कि बाई चढ़िगै बा। हमार हुक्का चढ़ाय लाव। ऊ बोली कि हम तौ कपड़ौ नाय ठीक से पहिरे हई हुक्का त वही कोठरिया म बाय जौने म भइया सोवत बा। त ऊ बोला कि भइया त सोवत बा जा हाली से उठाइ क लैकै भागि आव।

ऊ गै उहां भइया भूतिनि के डरि के मारे जागत रहे। जैसे ऊ हुक्का उठावै क निहुरी भाय पकरि लिहिस कि जीजा दौरि आवा भूतिनि क पकरि लिहेन अब ससुरी बचि कै कहां जाये।

अब तो बहिनि सरम के मारे मरी जाय। अब किसान पहुंचि कै बोला कि अरे पागल ई भूतिनि नाय ई तौ तोहार बहिनि आय। अब उहौ बहुत सरमिन्दा भै। अब ओकर मेहरारू बोली कि बाजि आये तोहरी मसखरी से। अब हमसे आज से मजाक जिनि किह्या जाइकै दुसरेन से कीन करा।

# होनी होइके रही

एक राजा ढिंढोरा पिटवाइन कि सारे जोतिसी राजा कै इकट्ठा होंय। सब आये तौ कहिस कि हमार मृत्यु कब होई जे बताइ देये वोहकां इनाम मिली न बताये प सब का जेहल।

केव न बताइ पाइस। सब जेहल म ठूंसि दीन गै। एक बहुत बड़े जोतिसी रहिन कासी कै। वै सुनि पाइन तौ बाद म पहुंचिन औ कहिन कि सबका छोड़ि दूया त हम बताइ देई। राजा सबका छोड़ि दिहिन त वै बोलिन कि आजु के एक महीना बाद दुपहर कै तुहैं सांप डसि लेई औ तोहार मृत्यु होइ जाये। अब पंडित का पहरा म रखा गै कि जौ बाति झूठ भै त वन्हैं फांसी होइ जाये। वहर राजा अपने दरबार म यतनी सफाई करावै क अज्ञा दै दिहिन कि एक ठू चींटी रेंगैं त उहौ देखाइ परै। औ अपुना वहे बेला पै वहीं साफ जगहा पै ठाढ़ होय गइन चारि ओर से तलवार लिहे वनकै सेना।

जब दुपहर होइगै त राजा हंसिन, कि बोलावा पंडित का। एतने म एक ठू नीबि क पाती उड़ि कै राजा के गोड़े पै गिरी औ तुरत सांप बनिकै डसि लिहिस राजा खतम होइ गइन।

सांप डसिकै जंगल की ओर चला। पंडित ओकरे पीछे चलिन त ऊ सांप भैंसा बनिकै कहयों जानवर का मारिस फिर आगे बढ़िकै धरमसाला बनिगै। दुपहरी म छंहाये वालन से धरमसाला भरिगै, बस भहराय परी। सब दबि कै मरिगे। अब वही धरमसाला म से एक सोलह साल कै लड़िकी बनि कै ऊ निसरी त पंडित फिर पिछुवाइ लिहिन।

वहि लड़की का दुइ सिपाही देखिन, पूछिन कि के हवा? बोली कि दुखियारी होई, खाये रहै क ठेकान चाही। अब दूनौं लड़ै लागिन कि हम लै जाब ऊ कहै हम लै जाब। दूनौ आपस मां तलवारि से काटि कै मरि गइन। अब पंडित जी से नाय रहा गै वै जाइकै गोड़े प गिरि परिन कि महाराज तूं के हवा। त बोली कि पंडित जी हम होनी होई। हमै न रात चैन न दिन। हम आपन काम करत रहित है।

पंडित पूछिन कि हमार मृत्यु कब होइ। त बोली कि आजु के एक महीना बाद जौने राजा का हम सांप बनिकै काटे रहेन वनकी रानी की सेज पर तुहैं वही राजा कै बेटवा मारी।

कहि कै ऊ अंतर्धान होइगै। अब पंडित जी वहि राज की उल्टी दिसा म रोज दस पन्द्रह कोस चलैं औ जहां जहां जायं उही के मुखिया से लिखाइ लेंय कि पंडित यहे पड़ाव डारिब। अब पंडित जात रहिन तौ एक ठू घोड़ा सामने परा त सोचिन कि ई घोड़ा मिलि जात तौ और तेज आगे बढ़ जाइत। औ वहे राजा से और दूर होई जाइत। बस इहै सोचि कै घोड़ा के लगे गइन औ पकरि लिहिन। घोड़ा की पीठि पै बैठि कै एड़ लगाइनि त ऊ बजाय आगे बढ़ै क पाछे का दौड़ा औ जेसे हवा चलै।

पंडित ओकरी तेजी से घबड़ाय के बेहोस होइ गइन। ऊ एक महीना वाली तिथि पूर होवै के दिने लाइके पंडित का रानी की सेज पै पटकि दिहिस। अब न रानी का पता है न पंडित का। सबेर भै रानी आजु सोइ कै नाय उठी। दासी आय जगावै त का देखत है कि पंडित औ रानी सोवत हये।

ऊ गै रानी की पतोहे से कुलि हाल कहिस औ ई बताइस कि रोज ऐसनै होत है। मुला रोज जल्दी उठि जात रही आजु सोवतै हई। चलि कै अपनी आंखी देखिल्या। पतोह देखिस तौ अपने आदमी से कहिस। ऊ गुस्सा म आइकै तलवारि लैकै पहुंचा। पहले त महतारी का लात मारिस, ऊ जागि गई त सोचिस कि सोवत मा बाभन नाय मारै का त पंडितौ का जगाइस औ उनकै चुरकी पकरि लिहिस। पंडित कहिन कि बेटा रानी साहब निर्दोष हई ए हमारि महतारी समान हईं। ई सब होनी कै फेर है औ कुलि किस्सा बताइ दिहिन। राजा कै कुंवरा बोला कि तोहरी बाति कै का सबूत है।

त पंडित आपन बही देखाइन जौने म जहां जहां गै रहिन वहां कै मुखिया कै अंगूठा या दस्तखत रहा कि आज इहां रहिन। एक दिन पहिले पंडित हजारन कोस दूर एक गांव म रहिन। देखिकै कुंवर समुझि कै बोला कि पंडितजी होनी कै असर टारै का खातिर औ आपन परतिज्ञा पूरी करै खातिर हम खाली तोहरी गरदन पै तलवार धैकै उठाय लेब बस खून चुहचुहाये बस।

एतना कहिकै गरदन पै तलवार छुवाय कै उठायै लागिन तब ले गरदन पै तलवार अपने आप खटाक से चलिगै पंडित क मूड़ अलग होइगै। होनी होइकै रही।

# राजा कै पुन्नि क जरि झुराय गै

एक बाभन रहिन एक बाभनि। बहुतै गरीब। बाभनि बोली कि बैठा रहथ्या जा राजा किहां से दुइ लड्डू मिले लै आवा तुहै खाली ई कहै के परी कि पुन्नि क जरि पताल म हरियर होथै।

बाभन गइन औ वैसे कहिन त दुइ लड्डू मिला, लै आइन। ऐसे रोज करै लागिन तौ राजा कै नौकर जरै लागिन कि हमरे सब त खटित है तब पाइत है औ ई ससुर खाली तनिका भै बोलि कै लड्डू लै जात है। सब राजा क सिखइन कि एनसे पूछा कि कौन पुन्नि कै जरि। राजा पूछिन त ऊ बोला कि बिहान बताउब। अब आइकै अपनी मेहरारू पै बिगड़ि परा कि खूब खायू लड्डुवा अब बतावा कि कौनी पुन्नि के जरि? राजा पूछिन हैं। त ऊ बोली कि जाय कै कहि दिह्या कि सब पुन्नि कै जरि पताल। ऊ बताइन तौ राजा चार लड्डू देवावै लागिन।

अब नौकरे और नारिन कहिन कि राजा साहब एनसे कहा कि आपका देखावै त राजा कहिन कि हमै देखावा। वै बोलिन कि बिहान देखाउब। फिर गइन मेहरारू पै बिगड़ि गइन कि और खा लेड्डुवा, अब कहां से देखाई। त ऊ बोली कि कहि दिह्या कि चला पताले त देखाई। ऊ ऐसै कहिस राजा चलि दिहिन साथे। त जैसे पताल म पहुंचिन त जौन झुरान जरि रही तौन देखाइ कै बोलिन कि ई तौ होंय पापिन कै औ जेतनी हरियर हई ऊ सब आप कै। राजा बहुत खुस भये औ बाभन का खूब दान दच्छिना दै के बिदा किहिन। नौकर और जरि गइन सिखइन कि राजा साहब एनकी बिटिया से बियाह करा।

त राजा बोलिन कि पंडित जी हम तुहरी बिटिया से बियाह करब। वै कहिन कि राजा साहब एस न करा। कहिन कि नाहीं हम तौ करब। बाभन अपनी घरवाली से पूछिस कि अब का होये। त ऊ बोली कि राजा से कह्या कि राजा सादी करै से पहिले चलि कै अपनी पुन्नि कै जरि फिर से देखि आवा।

बाभन ऐसै कहिन राजा कहिन कि चला। अब पहुंचिन तौ का देखथिन कि राजा कै जरि झुराइ

गै बा। त घबड़ाइ गइन कि ई कैसे भै। त बाभन बोला कि कहां तौ तू हम्मै दान देत रह्या कहां हमरी बिटिया से बियाह करै क सोचि लिह्या त यही से पाप होइगै। अब राजा बहुत चिंता म परिगे। जोतिसी बोलाइन पूछिन कि ई पाप कैसे छूटी? त वै बताइन कि पाप तौ बड़ा होइगै मुला उपाय है कि तूं बारह बरिस ले वहे बाभन के घरे चाकरी करा औ ओकरी बिटिया कै अपनी बिटिया मानि कै कन्यादान करा तौ पाप दूर होये। राजा ऐसनै किहिन तौ फिर वनकै जरि हरियर होइगै।

## गऊदान

एक ठू रहा बनिया। कंजूस मक्खीचूस। त ऊ अपनी घरवाली से बोला कि हम देखेन है बहुत मनई गऊदान करिन वैतरनी पार करै की खातिर। त लावा हमहूं दै देई।

ऊ बोली कि चला कै द्या। अब कहिन कि पहिले गइया हेरि लाई। आवा चला तुहूं चली चला। त वै बोली कि पहिले तूं देखि दाखि ल्या बेसहत कै चली चलब। अब वै चलि परिन तौ एक गांव म एक ठाकुर किहां गाय देखिन तौ बड़ी नीकि लागि। पूछिन कि ठाकुर साहेब ई गइया बेचबा। कहिन कि बेचि देब। केतना रुपया लेब्या? हम दुइ सौ लेब। अब बनिया एकदम से चिहुंकि उठा कि राम राम का अंधेर है एक गाई कै दुइसौ रुपया।

दुइसौ रुपया तौ बड़ी मेहनति से बटुरत हैं औ हमका तौ दान करै का। यही कौनौ अपुना क थोड़े चाही हां हम पांच रुपया दै सकित है। ठाकुर कहिन कि जा डांड़ी मारा, कै चुक्या तू गउदान।

अबै हम तुंहसे कही कि एक रुपया क दुइ सेर जीरा दै द्या त दै द्या। ऊ चलि परा फिर सोचिस कि अरे ई तौ सस्ता सौदा होय हम दुइ सेर जीरा दै देई ठाकुर हमै पांच रुपया म गइया दै देये। लौटि कै गइन कहिन कि हम रुपया के दुइ सेर जीरा देये क तैयार हई तूं पांच रुपया म गाय द्या। ठाकुर कहिन कि जा जा बड़ा आय हइन गइया खरीदै वाला। अब ऊ कहै कि तूं अपनी बात से हटत हया ठाकुर होइकै। ठाकुर कहिन कि हम बाति ऐसन कौनौ दिहेन नाहीं। अब ऊ लौटि आय औ मारे सोचि के बेराम होइगै तौ एक दिन ढेर हाल खराब भै तो ओकर मेहरारू अपने बेटवा से कहिस कि बच्चा गऊ दान करावै का एन्हैं गाय लाइ द्या। एनकै बड़ी इच्छा रही। अपने बेटवा से कहिस कि ठाकुर किहां गय बा। उँ वहां गै और पूछिस कि कतने म देब्या त कहिन कि दुइसौ मा। त ऊ बोला ढाई सौ म दे द्या तबौ लेब।

औ दुइसौ रुपया दैके गइया खरीदिस औ ठाकुर से कहिस कि एक ठू मनई हमरे साथे कै द्या गइया पहुंचावै का। त मनई कहिस कि हम पहुंचावै क पांच रुपया लेब ऊ कहिस कि लैल्या। अब गइया के हाथे म पूंछि पकरि के गउदान करावे लाग तौ ऊ पूछिस कि केतने क लाया। त बताइस कि दुइसौ कै गइया होय औ पांच रुपया मनई का मजूरी दिहेन। त बनिया उठि कै बइठि गै औ बेटवा का लाग गरियावै कि ससुर हम मरि मरि बटोरेन, कमायन तूं फूंकि डार्या। अपुना कमाब्या त कीमति पता लागी। बस यतना कहतै ओकर परान निसरिगै।

# कंजूस बनिया के न्यौता

एक ठू रहा बनिया, महाकंजूस। त एक दिन खजूर तोड़ै चढ़िगे। अब चढ़ै क त चढ़ि गइन मुला जब तरे ताकैं त खोपड़ी सनाका खाय गै। कैसे उतरी अब?

त कहिन कि अच्छा जौ नीके-नीके उतरि जाब तौ सौ बाभन खियाउब। जिउ पोढ़ कै कै उतरै लाग। थोरिकी दूर उतरिन त कहिन कि पचास बहुत होत है, पचीस खियाउब। और खाले आइन त कहिन कि पचीसौ ढेर बा। ग्यारह खियाउब। फिर कहिन कि ग्यारह के खियाए का फायदा, पांच बाभन खियाउब। यतने म जमीन पै पांव टिकिगै। कहिन कि पांच भुक्खड़ के खियाए का फायदा एक बाभन खियाय देब।

अब घरे आइन तौ मेहरारू से कहिन कि आज बाभन के नाव लेत जिउ बचिगै। एक ठू बाभन खियावै क बा। वै कहीं कौनौ बाति न, तोरी जान से बढ़िकै धन थोरे है। औ एक दिन डांड़ी मारि दिहूया। एक मनई कै खुराक निसरि आये। अब गइन एक ठू पुरनिया बाभन नेवति आइन। खूब बढ़िया पूरी खीर तरकारी बनी। अब पंडित खात चला गइन, खात चला गइन। इहां ले कि बनिया बनियाइन का कुछ न बचा।

कहिन कि बूढ जानि कै बोलायन तौन ई तौ सार महाभुक्खड़ निसरा। बस पंडित अंचवै उठिन त उठिन न पावैं। वहीं ढेर होइ गइन्न। अब बनिया बहुत घबड़ान। गै पंडिताइन के लगे कि पंडित उठतै ना हइन। पंडिताइन आय कै कहीं कि खाये म जहर दै दिहूया। भोजन जौन बचा बा दूया हम कुकुरे का डारब औ देखब। त खाब न रहा एकौ रत्ती। त पंडिताइन कहीं कि हम लहास न लै जाब। यहीं हमहूं आपन परान दै देब। औ तुहैं हत्या लागे दुइ ठो।

त बनिया-बनियाइन सलाह किहिन। पंडिताइन का समझाइन कि अब तौ पंडित गइन। अब तौ लौटिहैं न, तू काहें जिउ देब्यू। हम तुहैं जौन मांगा तौन देब। त वै पांच हजार रुपया मांगी। बनिउं का आपन करेजा काढ़ि कै देवै का परा। पंडिताइन रुपया औ पंडित कै लहास उठाय कै घरे आयीं।

पंडित घर म अउतै उठि बइठिन। बिहान भै बनिया वहर से निसरा त देखै पंडित बइठा रहिन। ओका देखिन त कहिन कि बच्चा जुग-जुग जीया। त बनिया वनकै चाल समुझि गै। कहिस कि जुग जुग तूं जीयत हया। हम तौ मरि गयन।

# दुइ गप्प, दुइ सच्च

एक ठाकुर के चारि बेटवा रहैं। ठाकुर रहिन पंचाइत कै पंच। त रोज वन्हैं पंचाइत कै फैसला करै का आरी बगलि के गांवन से बोलौवा आवै। त एक दिन चारौ बेटवा बोलिन कि बापू तुही रोज जाथ्या पंचाइत मा। अब तू घरे बइठा, हमरे सब जाब। ठाकुर कहिन कि अच्छा एकाध दांव हमरे साथे चला। सीखा समझा फिर अकेले जात जाया।

बिहान भे रही दीवाली। तौ दुसरे गांव से पंचाइत कै बोलउवा आय। तौ चारौ बेटवै ठाकुर के साथे चलि परिन। राही म ठाकुर के लागि चिलम कै तलब तौ एक गांव के बहिरे पेड़े के तरे बैठि गइन। कहिन कि जा गांव मा से आगि मांगि लावा।

त बड़का बेटवा गै। आगि मांगिस तौ घर म जौन मेहरारू रही ऊ बड़ी मजाकिया रही। त ऊ बोली कि आजु दीवारी होय कुछ खाइ पी ल्या तब आगि लैकै जा। बस थरिया म किसम-किसम कै पकवान धैकै लै आय। जइसे ऊ कौर तूरै चला वैसे पहुंचा पकरि लिहिस कि पहिले दुई गप्प दुइ सच्च सुनावा तब खाय देब। नाहीं त हमार चप्पल खा। अब ऊ बेचारा नाय सुनाय पाइस। चप्पल के मार खाइकै लौटा औ कहि दिहिस कि हम आगी नाय पायन।

ऐसे चारौ बैटवै आइन औ सब के साथे ऊ मेहरारू वइसै मजाक किहेस। सब चप्पल खाइकै चला गइन। सरम के मारे केव न बतावै। मुला छोटका बताइ दिहिस। अब ठाकुर कहिन कि तोहरे सब बइठा हम आगि लैकै आइत है। जब हम इसारा करब तौ आइ जाया।

ठाकुर पहुंचिन तौ वनहूं से वै कहीं कि ठाकुर आज दिवाली है। कुछ पुवा पकवान खाइ ला तब आगि देई तमाखू पीया। औ उहै परसी थारी लाइकै वनकै आगे धै दिहिन। जैसे कौर तूरै चलिन तइसे बोली कि ठाकुर दुइ गप्प दुइ सच्च सुनावा त खा, नाहीं तौ चप्पल खा।

ठाकुर कहिन कि अच्छा पहिले तू ई बतावा कि ई आगे वाला खेत केकर होय? कहीं वै कि हमार। ठाकुर पूछिन कि ऊ जे हर जोतत बाय के होय? कहीं कि हमार मंसेधू होय। तौ ठाकुर कहिन कि अरे राम-राम। यतनी लछिमी यस घर मा औ ऊ अपुना यस छिछोर। त ऊ बोलीं कि काव भै? ठाकुर कहिन कि अबहीं एक ठू मेहरारू से कहत रहिन कि हम आज तोहरे घरे राति कै आउब। सबका खवाय पियाय कै जल्दी सोवाय दिहूयू।

अब यतना सुनतै त ऊ हड़बड़ाय उठी औ बोली कि तूं बइठा रहा। हम अब्बै आवत हई। औ चैला लैकै खेते की ओर दौरी। तबले ठाकुर लरिकन का इसारा किहिन। चारौ आइ गइन सब खूब पुवा पकवान उड़ाइन। लरिकन का बहिरे पठइ दिहिन औ अपुना ठाकुर चिलम पीयै लागिन।

एतने म घर कै मालिक दुसरी राही कई घरे आइगै। तौ पूछिन कि घर सूनै परा बाय मलकिन कहां गयी ठाकुर? ठाकुर कहिन कि वै तौ एक ठू पगड़ी वाले के साथे गयीं। अब ऊ मनई पैना लैकै निसरा। तबले वै लौटि आय रहीं। अब दूनौ एक दूसरे क मारत पीटत गइन। मलकिन लागीं चिल्लाय-चिल्लाय रोवै।

यतने म परोसिन आइ कै पूछीं काव भै? काहें रोवति हई? त कहिन ठाकुर कि यनकै माई मरि गई। हम ही तौ सनेस लैकै आयन। अब उहौ रोवै लागि कारन कै कै। काहे से कि ऊ मलकिन कै बहिनि रही। अब ओकर रोउब सुनिकै और टोला परोस कै मेहरारू मरद एकट्ठा होइ गइन औ रोवना पिटना मचिगै। बहर वनके सब आपस म मारि मारि कै थकि गै रहें। तौ बहिरे रोउब पीटब सुनि कै बहिरे आइन। त पूछिन कि काव भै। तौ सब कहै लाग कि यही ठाकुर तौ बताइन कि तोहार माई मरि गयीं। अब ऊ ठाकुर के लगे आय कि ठाकुर ई का बाति होय। तौ ठाकुर कहिन कि तूं दुइ गप्प कहे रहयू। हम खाली एक ठू जियादा सुनाइ दिहेन और कुछ नाय। और अब कहा तौ सच्च सुनाइ देई।

तौ ऊ बोली हाथ जोरि कै कि जा महाराज गप्प पर तौ तूं आज दिवाली कै बरिस भरे के तेवहार के दिने मारपीट रोवना पीटना मचवाय दिह्या, सच्च सुनवौबा तौ पता नाय का होई? ठाकुर अपने लरिकन का लैकै घरे आइन। लरिकै बोलिन कि बाबू अब तुहीं पंचाइत करै जावा करा। हमरे सब खेती बारी देखब। हमरे सबके मान क पंचाइत नाय बाय।

# सती मेहरारू

एक ठू मरद मेहरारू रहिन। तौ मरदा पूछिस मेहरारू से कि तूं हमैं केतना चाहयू? त ऊ कहिस कि यतना कि जब तूं मरि जाब्या त हमहूं सती होइ जाब। ऊ सोचिस कि एकर परिच्छा लेये का चाही। त एक दिन सांस रोकि कै देंहि ऐंठि दिहिन। मेहरारू लागि रोवै।

टोला परोसी जुटि आइन। अब टिक्ठी बनि कै उठावै लागे सब त भीति के मोकवा म गोड़ एस डारि दिहे रहा कि निसरबै न करै। त सब कहिन कि कितौ भीति खोदी जाय, नाय गोड़ काटै क परी।

त मेहरारू बोली कि भीति खोदि देब्या त अब हमरे के बनवाये। अब तौ फुंकही क बाय। गोड़वै काटि द्या। त जब सुनिस त अपुनै गोड़ ढील कै दिहिस। सब कहेसि कि एक दांव और कोसिस कै लीन जाय। अबकी सब खींचिस त निकरि आय। अब बान्हि कै लै चलिन।

त नउवा आगि लावै भुलाइगै रहा। ऊ गै आगि आनै औ बाकी सब वतहंत हटि कै केव कुल्ला फराकत करै चलागै, केव बतियावै लाग। यतने म अन्हियार रहबै कीन। लटकि कै बन्धन तूरि कै निसरि परा और एक ठू बबुरे क डन्डा लैकै घरे लौटा।

वहर सब देखिस कि लहास गायब। त समझिन कि कौनौ नाकि घरियार नदिया म खींचि लैगै। चला फूंकै से छुट्टी मिलिगै। सब लौटा त का देखत हैं कि ऊ घर मा अपने मेहरारू कै झोंटा पकरे धुनकत रहै कि इहै सती होति हयू। हमारे गोड़ कटावै क तइयार होइगै रहयू।

त सब आइकै असली बाति जानि कै समुझाइ बुझाइ कै ठण्डा किहिस।

# पंडित के सात बिटिया

एक ठू पंडित रहिन एक पंडिताइन। एक दिन पंडित बोलिन कि आज त पंडिताइन पुवा खाये क मन है। वै बोली कि सात घान त यही सातौ खाइ जइहैं। पंडित कहिन कि जब सातौ सोय जायं तब बनवा। पंडिताइन पूवा बनवैं बइठीं। जैसे पहिला घान छानी तैसे जेठरी बिटिया उठिगै कि माई हमरे त भूखि लागि बा। वोका खियाय दिहीं कहीं जा सोइजा।

दूसरो घान निकारी त दूसरी उठी, पिसाब करै। वह का देय के परा। फिर तिसरे घान म तिसरी के कुल्ला (टट्टी) लागि गै। उठि गै निपटि कै आय ऊ खाइस। चौथा काढ़ी ।ा चौथी कै मूंड़ पिरात रहा उठिगै। ओका खियाई, मूड़ दबाई और सोवै क पठइ दिहीं। पंचई रोवै लागि कि हमैं छठयीं मारति बाय। दूनौ क बोलाई एक-एक घान वै खाइ लिहीं।

अब सतयीं जागि कै उठि आय कि माई ई आज कैसन हल्ला होत बा औ काव महकत बा। जौन बचा रहा कुल सतयीं खाइगै। पंडित जी बेचारू क मिलबै न कीन। अब सोचिन कि लावा इन्हन का जंगल म बैरि (बेर) खियाय लाई। लैकै गइन जात-जात जब काफी दूर निसरि गइन त एक ठू बेरि के पेड़े तरे सातौ का छोड़ि दिहिन कहिन कि तूरत, बीनत खात जा। हम वहीं करौंदा के पेड़े तरे हई। कहिके आपन कमरी करौंदा के कांटा म टांगि दिहेन, अउर घरे लौटि गइन।

अब बिटियन का बीनत खात सांझ होइगै। वै देखत हईं कि दादा त बैठा हइन। त बड़की बोली कि चला दादा जानौ सोय गइन उनके लगे चली और उहां आई त देखै का कि दादा क कमरी टंगी है। दादा नदारद। बोली दादा त चला गयन, चला हमहूं घरे चली। तौ जौने राहे गै रहीं वही राहीं भागि आईं। घरे आई त देखी पंडिताइन पूवा कै पहिल घान छानै खातिर डारे रहीं। फिर सातौ खाइ गयीं पंडित बेचारू क फिर नाय मिला।

# नेकी के बदला बदी

एक दिन जंगल म आगि लागि गै तौ सब जीव जंतु पंछी जरै लागिन। वहर से एक ऊँट वाला जात रहा तौ ऊ देखिस कि एक सांप आधा जरा है आधा बचा छटपटात बा। तौ वकरे दया आइगै उठाय कै ओका अपने झोरी म डारि लिहिस। ओकर आगि बुताइकै जइसै थोरी दूरिगै तैसे ऊ संपवा बोला कि हम तोहका कटबै। तौ ऊंटवा बोला कि भइया हम तौ तोहार परान बचायन औ तूं हमैं कटवा। त ऊ बोला

कि हां नेकी कै बदला सब बदी से चुकावत हैं। त ऊ कहिस कि ई कैसन बाति?

त सांप बोला कि हां हम झूठ कहत होई तौ केहू से पूंछिल्या। जौ हमार बाति सही होये तौ हम तुहैं काटि लेब। तौ एक ठू बूढ़ि कै गइया चरति रही तौ ऊंट वाला वकरे लगे गै कहिस कि गऊ माता हमार नियाव कै द्या। ई बतावा कि का नेकी कै बदला बदी होत है। त गऊ बोली कि हां बच्चा। हम जबले दूध देत रहेन, जिन्दगी भै दूध और बच्चा दैके अपने मालिक कै सेवा किहेन तबले त ऊ खूब सानी पानी खियाइस। मुला जब बुढ़ाय गयन तौ बैठाय कै काहें खियावै। जंगल म छोड़ि दिहिस। अब यहीं घामे, पानी म चरत खात हई। त सँपवा झूठ नाय कहत बाय।

अब संपवा बोला कि देखा हमारि बाति सही निसरी न। त ऊंट वाला बोला कि अच्छा औरे से पूछि लेई तौ बबुरे का पेड़ रहा। तौ ओसे ऊंटे वाला पूछिस। इहै बाति तौ उहौ कहिसि कि हां भइया संपवा ठीक कहत बाय। हमरे पेड़े के तरे आइकै मनई छांह लीन औ जाय लगे तौ हमार डारि काटि लेयें कि यह मां खुरपी, कुदारी कै बेंट निसरि आये, खटिया कै पाटी निसरि आये। अब आज देखा हमारि कुलि डारि कटि गै हई तौ भइया नेकी कै बदला बदी तौ होबै करत है।

ऊंट वाला फिरि चलि दिहिस तौ राह म गोरू कै चरवाह मिलिन तौ वनहूं से कहिस कि भइया तोहरे सब हमार नियाव कै द्या। कहिकै कुलि किस्सा बताइस। तौ चरवाहे कहिन कि कहां बाय सांप त ऊंट वाला बोला कि उहै झोरी म बइठा बाय तौ वै बोले कि उतारि लै आवा। हमरे सब नियाव कै देब। तौ ऊ उतारि कै लै आय जैसे मूड़ धरिस तैसै लट्ठ लै, डण्डा मारि डारिन कुल औ ओसे कहिन तू जा अपने घरे नेकी क बदला जब बदी होये तौ होइगै वदी। अब ऊंट वाला अपने घरे लौटि आय।

# सेर औ सवा सेर

एक रहै कोहार तौ ओकै गदहा बुढ़ाइ गै रहा। कुछ काम धाम नाय करै लायक रहिगै तौ वोको जंगल म छोड़ि दिहिस। अब ऊ जंगल म खाइ मोटाइ कै मस्त गदहा होइगै। एक दिन एक ठू सेर आय पूछिस कि तूं के हवा तौ गदहा पूछिस कि तू के हवा। ऊ बोला कि हम तौ सेर होई। गदहा बोला कि तू सेर हया तौ हम सवा सेर होई।

सेर कहिस कि तू आपन कमाल बतावा तौ गदहा कहिस कि तू आपन कमाल बतावा। सेर कहिस कि जब हम दहाड़ मारित है तौ जंगल कै सब जानवर कांपि जायिन। गदहा कहिस कि जब हम चिल्लाइ थै तौ मेहरारून कै गरभ गिरि जात है।

अब सेर डेराय गै औ भाग जिउ लैकै तौ एक ठू कौआ डारि पै बैठा रहा कहिस कि महाराज कहां भागा जात हया। कौआ बोला कि ऊ तौ धोबी कै गदहा होय। चाहे चला देखा अबै हम ओकरे टकियाइत है अपनी चोंच से। सेर कहिस कि अच्छा चला। अब गदहवा दूनौं क आवत देखिस तौ मरा यस टांगि चारौ पसारि कै लोटि गै औ आपन कांचि बहिरे निसारि दिहिस। अब कौआ पहिले वही प बैठि के चोंचि मारिस तबले गदहवा झट से आपन कांचि भितराइ लिहिस। कौवऊ वही के साथ चला गइन गदहा के पेटे मा। अब सेर यतना देखतै त लूकी लाग भाग औ वहे जंगले से भागि गै। अब गदहवा फिर मस्त चरै खाय लाग।

# हम तौ पूजी हर कुदारि

एक मेहरारू मरद रहिन। मेहरारू अपुना खूब पूड़ी पकवान बनइकै खाय और मरद कै भूसी क रोटी देय। त गांव वाले टोकिन और सिखइन मरदा कै कि बढ़ई किहां से चार ठू कठपुतली लाइके घरे मा गाड़ि दूया। त ऊ वैसे किहिस।

मरद के सूखी-सूखी खियाइ कै पठइ दिही औ अपुना बइठी पूड़ी पूवा छानै तौ एक पुतरी बोली, चोंट्टिन चोट्टिन का करत हये? दूसरि बोली- जौ रोज करैये उहै। तीसरि बोली- पूत भतार का नाय डेराति। चौथी बोली- डेराति त काहे करति।

अब ऊ घबड़ाय कै करहिया उतारि कै भागि कै खेते म पहुंची कहिस कि घरे म चुरैलि बतियाति हई। ऊ आय त पूछिस कि वै कान करति रहे है कैसन पूवा पकवान क समान फैलावा। त बोली कि हम डीह डिउहारिन कै पूजा करत रहेन। कहिस कि करा- त पूजै लागीं।

हम तौ पूजी डिउ डिउहारिन। सासु ससुर पिया नन्द जरूरिन। ऊ बोला ठीक बा आज तोर पूजा होइगा विहान हम करब। त तूं केकर पूजा करवा, त हम अपनं हर कुदारी कै करब। कहीं भला। पूड़ी पकवान वनावय कै पूजा करै बैठा। बोला-

"हम तौ पूजी हर कुदार, मारै सास ससुर सब सार।"

ऊ कहिस कि ई का हमरे नइहर वालन का सरापत हया। त बोला कि हम तौ खाली सरापत हई, परेत नाय काटत हई। अब ऊ लजाय गै और माफी मांगिस।

# चारि ठग

चार ठू ठग रहे। तौ वे पइसा कमाय घरे से निसरे। राही म एक ठू नदी परी। पैरि कै पार किहिन चारौ। अब किनारे निसरि कै चारौ अपुना चारौ क गिनै लागें‌ि त जे गिनै ते अपुना क छोड़ि देय, गिनबै न करै औ कहैं एक, दुइ, तीनि, हमार एक साथी बूड़िगै। ऐसै-ऐसै चारों जने गिनिन औ फिर साथी का हेरै खातिर नदी म कूदि परिन।

एक सेठ वहर से आवत रहिन। कहिन कि तोहरे सब काव हेरत हया? कहिन कि हमार एक साथी यही नदी म बूड़िगै बा। वही का हेरत हई। हम चारि जने घर से चला रहेन तीनै रहि गयन। सेठ देखिन कि चार तौ ई हइयै हैं। कहिन कि फिर गिना निसरि कै। फिर निसरि कै वइसै गिनिन। अपुना का

छोड़ि दिहिन त फिर तीनै रहिन गइन।

सेठ समझिन कि चारौ बूद्धू होय। बोले कि अच्छा लावा हम गिनि देई। बस चारिउ का एक पांति म खड़ा कै दिहिन औ अपनी छड़ी से पहिले क मारिन एक छड़ी कहिन कि बोला एक। ऊ बोला एक।

दुसरे का मारिन दुइ छड़ी कहिन कि बोला दुइ। ऊ बोला दुइ। ऐसे तिसरे का तीन अब चौथे का चारि छड़ी मारि कै चार बोलवाइन। अब तौ चारौ खुस होइ गइन। बोलिन कि हमार साथी मिलिगै। सेठ पूछिन कि कहां जाब्या तोहरे सब। वै बोलिन कि काम हेरै निसरा हई।

सेठ सोचिन कि चारौ बुद्धू नौकर हइन। कम पैसा दैकै काम कराइ लेब। कहिन कि चला हमरे साथे हम नौकरी देब। वे पूछिन कि काव तनखाह लेब्या। ठगवै कहिन कि कम बाय कहिन कि नाहीं कम नाय बा।

अब चारौ सलाह किहिन कि चला नौकरी कै लीन जाय। औ चारौ सेठ के नौकर होइ गइन। एक ठू का सेठ काम दिहिन कि गांव से घिउ खरीदि लाइ के बेचै खातिर दूया। दुसरके से कहिन कि तू गांव से लकड़ी बेसहि क लै आवा करा। तिसरके का छेरी भेड़ी चरावै क काम दिहिन औ चौथे से कहिन कि हमरी बूढ़ी महतारी कै सेवा करा। जौन कहैं तौन खियावा पियावा।

चारौं सोचिन कि जब सेठ पइसा बढ़ैहैं तनखाही मा। त चला एन्हैं ठगा जाय। अब महीना के आखिर मा जब सेठ हिसाब पूछै लागिन कि रोज जौन घिउ कै पइसा दिहे रहेन केतना घिउ बेसहि कै लाया। लावा जमा करा। तौ ऊ बोला कि हम बेसहि बेसहि मटका म लाइ के भरि दिहे रहेन। एक दिन देखै लागेन झांकि कै कि भरा कि नाय तौ गरमी से घिउ त गै रहा टेघरि औ वहमा एक ठू परछाही देखाइ परै। हम जब झांकी तब परछाहीं। बहुत डांटेन मुला ऊ भूत नाय भाग तौ हम डंडा से मारै लागेन त मटका फूटि गै, घिउ बहिगै। सेठ गुस्सा म परिकै ओका नौकरी से निसारि दिहिन।

अब दुसरके का बोलाइन कि एक गाड़ी कै लकड़ी लावै क कहे रहेन। पइसा दिहे रहेन, लकड़ी लावा जमा करा। तौ ऊ बोला कि सेठ जी हम लकड़ी भरि कै गाड़ी म लावत रहेन बस रहिया म गड़िया के आइगै जूड़ी बोखार। ऊ जाड़े से थरथर कांपै लागि। बस हम ओका तपावै खातिर चैला सुलगाइ दिहेन त पूरी गाड़ी लकड़ी समेत जरिगै अब हम काव करी। सेठ जी गुस्सा म आइ कै वहू का घर से निसारि दिहिन।

एतने म तिसरका दौरा दौरा आय कहिस कि मालिक जंगल मा एक ठू बहुत भुखान इनार (कुआं) बाय। हमरे लागि रही भूखि तौ हम बोलेन कि हम भुखान हई। त हम एक ठू बकरी डारि दिहेन। फिर जब जब हम कही कि हम भुखान हई तो उहौ बोलै कि हम भुखान हई। हम तौ बिना खाये भुखान रहेन औ ऊ ससुर कुलि भेंड़ी छेगरी खियाय दिहेन तौनेव पै अब ही भुखाय बाय। अब कुछ और इन्तजाम कै कै पुन्नि लूटिल्या।

एतना सुनतै सेठवा आपन माथा ठोंकि लिहिस औ वहू कै नौकरी से निसारि दिहिस। अब दौरा दौरा गै चौथे के लगे कि देखी ऊ कइसे हमरे माई क सेवा करत बा। त काव देखत है कि महतरी मरी परी बा औ ऊ डण्डा लिहे खड़ा बा। सेठ का देखते कहै लाग कि सेठ जी आज मछियै बूढ़ी माई का खाय डारी।

आज वै गुड़ खायें क मांगी। हम खियाइ दिहेन त मारि माछी वन्है घेरि लिहीं। हम बहुत कसि कसि डण्डा वनके मुंह पै बैठी माछिन क मारेन मुला वै फिर फिर आइकै बैठि जांय औ आखिर मा बूढ़ी माइ का खाइन लिही। अब सेठ वहू का नौकरी से निसारि दिहिन औ आपन माथ ठोंकि लिहिन।

अब वै चारौ पन्नि के बहिरे फिर मिलि गइन औ घिउ कै पइसा लकड़ी के पइसा छेगरी भेंड़ी कै पइसा बूढ़ी माई की खुराकी क पइसा कुलि मिलि जुलि कै बांटि लिहिन औ फिर दुसरे क ठगै चलि परिन।

# जाट पहुंचा ससुरारी

एक रहा जाट त ओकर बियाह छोटेन पै होइगै रहा, मुला गौना नाय भै रहा। एक दिन ओकर बूढ़ बाप बोला कि बच्चा जाइके आपनि बहुरिया विदा कराइ लाव तौ रोटी पानी कै ठेकान होइ जाय। जाट गै ससुरारी। पहुंचिन तौ बड़ी खातिर भै कि पहिली दांव दामाद आय बाय। अब चार, छः दिनवन कै खूब मौजि रही। फिर वै बोलिन कि हम तौ विदा करावै आय रहेन।

नौ सासु बोली कि बच्चा माघ म विदा कराइ लिहूया। ऊ लौटि आय। अब फिर माघ म पहुंचा तौ दुइ चार दिन तौ खाये पीये क ठीक मिला, फिर साग बजरा की रोटी मिली। फिर दुइ दिन बाद बिल्कुल खानै देव बन्द होइगै। अब ओकरे बड़ी भूखि लाग।

खाये क मांगिस तौ सासु ओकर झोरा बहिरै उठाय कै फैंकि दिहिस। ऊ उठा औ झोरा लैकै आइकै भीतर चौकी के तरे लुकाय कै बैठि गै।

सास ससुर समझिन कि ऊ झोरा लैकै चला गै। ससुर बोला कि हे रे आजु लुचुई, बखीर बनउती, बहुत दिन से नाय खायन। सासु बोली कि अच्छा। अब ऊ सुनत रहा कुलि। सासु खूब मेवा दूध डारि कै बखीर औ लुचुई पोइस। औ लेमारी म कुलि धै दिहिस। वहीम गुड़ौ धरा रहै।

अब अपुना दूनौ परानी बिटिया का लैकै चला गइन, खेते म काम करै। बहिरे से ताला लगाइ दिहिन। अब ये काव किहिन दमाद राम चौकी के तरे से निसरि कै कुल लुचुई बखीर औ गुड़ खाइ डारिन औ बटुली पोंछि पोंछि कै धै दिहिन लेमारी मा। औ वैसै बन्द कै कै आइकै चौकी के तरे सोइ गइन। दुइ दिन कै भुखान, तीन मनई क हिस्सा खाये रहिन औ आज पेट भरा तौ तीन दिन कै जागी नीनियौ आइगै। खूब सोइन दिन भर।

सांझ कै वै तीनों खेत पर से लौटिन तौ ससुर बोला कि देखा हम केतना हुसियार हई। कहिकै कवित्त पढ़िस-

*मैं बहुतै चतुर चलाक बड़ा हुसियार बहुत कड़के कै*
*लै खुरपी कुदरिया हाथ गयौ तड़के कै,*

जाटिनी बोली कि तुहीं नाय जनत्या कबित पढ़ै। हम हूं जानित है सुना हम तुहूं से चतुर चलाक बड़ी हुसियार हई-

*मैं बहुतै चतुर चलाक बड़ हुसियार बहुत कड़के की*
*लै धेरिया भतारे का साथ गयौं तड़के की।*

अब ऊ तखते के तरे से बोला कि हम तोहे सबसे ज्यादा बड़िया कवित्त जानित है। सुना-

*मैं बहुतै चतुर चलाक बड़ा हुसियार बहुत कड़कै कै*
*गुड़ से रगरि कै लुचुई बखीर, परा तड़कै कै।*

अब तौ जाट जाटिनि हैरान। ओका बहिरै निकारा गै आलमारी खोलकै देखै त सब साफ। जाट बोला कि एका बिटिया के साथ विदा करा। आजु तीन परानी कै हिस्सा खाबै रगरे बा। विहान हमार पूरा घरै रगरि देये त.काव होये। बस ओकर दुइ दिन विदा कै दिहिन। दै लैकै अपने घरे आइगे।

## तेलिन कै पूवा

एक ठू रहिन तेलिन। तौ एक दिन तेली बोला कि आज पूवा खाये क मन कहत बाय बनवत्यू न। तौ तेलिनिया पूवा पकाइस अब पूवा भै पांच। तौ तेली कहै कि तीन हम खाब, दुइ तूं खा। काहें से कि बनवै का हम कहेन।

तेलिन कहै कि कहे से काव होत है। हम तौ पीसेन, चालेन, सानेन, बेलेन, काढ़ेन, हम तीन खाब तूं दुइ खा। अब दूनौ अपनी-अपनी बाति पै अड़ा रहैं। त सांझ होइगै फिर राति होइगै मुला दूनौ आपन जिद नाय छोड़िन।

तब तेलिया बोला कि अच्छा चला दूनौ जने चुप होइ जात हइ। जे पहिले बोलि परे ऊ दुइ खाये। जे बाद म बोले ऊ तीन। बस दूनौ चुपाई मारिकै परि रहिन। पूरी राति बीति गै केव नाय बोला बिहान होइगै। फिर दिन चढ़ि आय। दुइ घरी तबौ केव नाय उठा न बोला। बहिरे तेली कै बरधा सानी पानी बिना बोकरै लाग तौ गांव वाले सुनिम कि का बाति है। आज ई दूनौ परानी जागिन काहें नाय।

गंहकी तेल आनै आइकै खड़ा रहैं। मुला केंवार भितरे से बन्द। अब सब लाग केंवाड़ी पीटैं। मुला ऊ दूनौ जुमुस नाम्य खाइन। बस सबं गांव वाले केंवार तोरि कै भित्तर आइन। देखिन कि दूनौ दुइ कोंन म चुपाई मारे परा हइन। सव बोलावै लागै मुला दूनौ सुपुट्ट।

त सब कहिन कि जानौ दूनौ ठंड से मरि गइन। चला फूंकि आवा जाय। टिकठी बान्ही गै दूनौ जनेक। लैकै सब चलिन। तबै वे नाय बोलिन।

अब चिता सजाइ कै तरे तेलिया का ऊपर से तेलिन का चिता प धैकै आगि लगाइ दिहिन सब। तौ पहिले आंचि तेलियै कै लाग। तौ ऊ तेलिन का धक्का दैकै बोला कि उठ मोर नानी, तहीं तीन खाइ लिहे। हम दुइये खाब। अब तेलिनियां उठि कै बोलि दिहिस। गांव वाले किस्सा सुनिकै दंग होइगै।

# बाभन अगिन मुखी

एक ठू नाऊ औ एक ठू पंडित कहूं तिलक चढ़ावै जात रहे।

नउवा के तमाखू कै तलब लागि। चारौ ओर ताकिस कहूं आगि नाय। लावै कैसे जाय? तिलकै के सर सामान लगे रहा औ पंडित महाराज सोवत रहे।

अचानक नउवा कै याद आय कि ऊ सुने रहा कि बाभन अगिन मुखी होये। ऊ कन्डा बीनि कै लाय। मीजि कै पंडित के मुंह मा ठूसि दिहिस। पंडित घबराय कै उठि बैठे कि ई का करत हये।

अरे महाराज। हम सुना रहा कि बाभन अगिन मुखी होयें। त तनी सुलगाय द्या हमका चिलम पीयैक है।

# चटोर पंडित

एक जन की इहो रही कथा त पंडित का न्योता मिला। घर कै मालकिन पंडिन का भोजन परसैं लागीं। तबले वनकै लरिका रोवै लाग तौ ओका चुप करावै चली गईं। पंडित देखिन कि कटोरा खाली बा खीर कै पता नाय। बादि म देइहैं कि नाय तौ खीर से कटोरा भरि लिहिन वहीं बगलै नोन बूका धरा रहा जानिन कि सक्कर होय वहू का एक मूठी डारि लिहिन। एतने म मलिकिन आइ गई त खाना डारि कै चली गयी पानी आनै तबले पंडित अंगुरी से खीर चीखिन त ऊ नोनही होइगै रहै त सोचिन कि अबही त बटुलिया मा दूसर हइये बा कौनौ जुगुति करै चाही।

त जइसे मलिकिन आई पंडित बोलिन कि मालकिन खीर तौ कुकुर जुठारि दिहिस जब तूं चली गई रहै। त वै बोलीं कि अच्छा पंडित पिछवारे के खतहा म एका उल्टि आवा त दूसर परसी। वै गइन उल्टै त गोड़ नाय संभरा अपुनौ गिरि गइन। त एक ठू मेहरारू आवति रही ओसे कहिन कि हमार हाथ पकरि कै निसारि द्या। त ऊ निसारै लागि तबले अपुनौ गिरि गै। अब देर देखी त मलिकिन कहीं कि पंडित जी खिसियाइ कै चला त नाय गइन का भै। देखे त गड़हा म एक ठू परोसिन के साथे गिरा रहैं। कहीं कि पंडित जी इका? त कहिनि कि हाथ पकरि कै निसारत रही त एहू गिरि परी अब तूं निसारा। वै निसारै लागीं तै वहऊ गिरि गईं।

यहर घर मा कुकुर हलि कै कुल भण्डार सफाचट कै दिहिस। घर कै मालिक आइन त देखैं कि कुकुर घरे भर मा टहरत हउ औ पंडित कै पता नाय न मालकिन कै। त आवाज आय पिछवारे से त

जाय देखैं त पंडित मलकिन औ परोसिन गड़हा मा। बेत लैकै डण्डा धुनै लागिन। जब पंडित चिरौरी किहिन बताइन तब छोड़िन। पंडित न्यौतौ से गइन औ चारि डण्डा ऊपर से पाइन।

# देख देहरी आनन्दी

एक ठू रहिन मर्द मेहरारू। त मेहरारू बड़ी खब्बू रही। अपुना का गोहूं पीसि कै रोटी पोवै औ घिउ खांड़ि म बोरि कै चौखट पै बैठि जाय औ कहै कि- देखु देहरी अनंदी, सासु नाय ननदी, तोर अज्ञा पावौं त ई रोटी खावौं।

यतना बोलै औ खाइ लेय। आदमी खातिर मोट मोट सूखी रोटी पोइ कै धै देय। ई त मोटाय कै कुन्दा होति चली गै औ आदमी झुराय कै कांटा। एक दिन गांव कै एक ठू भौजाई पूछिस कि काहें बबुआ। झुराय के कांटा होत जात हए।

त ऊ बोला कि का करी भौजी। घर मा तंगी बा। ऊ कहिस कि तंगी खाली तोहरी खातिर बाय का? औ वनसे ओकरे मेहरारू क कुलि हाल बताइस। अब मरदा बरधन का खेते प बान्हि कै चुप्पे से डेहरी के कोने म बैठि कै कुल देखत रहा। तब वइसै आजौ किहीं वै। बस कुदारि के बेंट लैकै निसग औ बोला-

*देखु कोठिला यार, ससुर मरै चहै सार*
*जौ तोर अग्या पावौं त कमर पै लट्ठ बजावौं। कहिकै दनादन पीटै लाग।*

अब ऊ हाय हाय करै लागीं। औ कहिस कि अब ऐसन ना करब। फिर कुछ दिन ले ठीक चला। अब करवा चौथ पड़ी। ऊ बोली पकवान बनायै क बाय, मेवा दूध कुलि लाय द्या। औ कुलि पूवा पकवान फैलाइ कै बोली- "पूजै पाजै सिद्ध होय, सब पूजन पै थुक थुक होय।" औ कुलि पै थुक थुकाइ दिहिस। ऊ पूछिस कि ई का? त बोली कि ऐसनै पूजि जाथै। अब ऊ बेचारा घिनाय गै। नाय खाइस। ऊ अकेले कुलि खाइस।

अब फिर आय तीजि। त ऊ बोला कि हम आज आपन हर जी का पूजब। कुल पूवा पकवान बनाइ द्या। त ऊ सोचिस कि आज तौ हमैं भूखै क बाय। ई कुल खायेक न मिली। चोराइ कै दूधे म कुछ मेवा मिठाई भरिकै लुकवाइ कै धै दिहीं। अब आजौ ऊ लुकाय कै वनकै कुल गुन देखत रहा। जब ऊ खायेक बोलाइस त हर लैकै आप औ हर के लगे कुलि पकवान धैकै बोला कि-

*पूजौ हर औ हर कै फार। ससुर मरै चहै मरै सार।*
*पूजौ पाजौ सिद्ध होइ। पहिले चोट दूध पै होइ।*

औ यतना कहिकै चूल्ही के आड़े से दूध उठाय लाय। ओका पीगै औ कुलि पकवान खाइगै। अब तौ ऊ लागि रोवै औ माफी मांगै कि अब यस न करब।

# हमका रामै से काम

पांच सगा भाई रहेन। पांचौ भीख मागत रहेन। जौन भीख मिलत रही उहै खाइ पी के जहां रात होइ जात रही उहीं सोइ जात रहेन। ओनके कौनो घर दुआर औ ठेकान नाहीं रहा।

एक रात की जब पांचौ भाई खाइ पी के पुआल म ओलरा रहेन तौ बड़कवा भाई कहेस कि आज तौ हमरे मन होत अहै कि बेर्रा कै रोटी औ चटनी पाइत तौ पेट भै खाइत। दुसरका भाई कहेस कि हमरे तौ मन होत अहै कि मिलत तौ मकरा कै रोटी हीक भै खाइत। तिसरका भाई कहेस कि हमरे तौ मन होत बा कि बजरी क खिचरी मिलत तौ हमार अहक बुतात। चौथा भाई कहेस कि हमतौ पाइत तौ जौकै बहुरी नोन मरचा के साथे खुब चबाइत। सबसे छोटकवा भाई कुछ न कहेस। ओकर नाव रहा पंचू। पांचौ भाई ओसी पूछै लागेन कि बतावा तोहरे का खाइ क मन बाटै। उ कहेस कि हम कुछ न बतांबै। चारिउ भाई जोर दैके पूछेन तौ उ कहेस कि भैया हम कुछ कहब तौ हमका सबकेउ मरब्या। सब भाई कहेन कि नाहीं तोहका केहू न मारे, बतावा तोहरे काउ खाइ क मन बा।

पंचू बहुत डेरात औ सकुचात कि बोला कि भैया हमरे तौ मन होत बा कि छप्पनौ परकार क विंजन बना होई। हम पांचौ भाई जेंवै बैठी औ एक सुन्नर मेहरारू अपनी गोदी म बेटवा लैके पंखा झलत बैठी रहै। राम देतेन तौ इहै चाहित है।

एतना सुनतै मान चारिउ भाई अलफ होइ गएन औ ओसी कहेन भाग सारे। रहै भुइं, चाटै बादर। तोर दिमाग एतना खराब अहै तो हमरे सवके साथे रहै लायक नाहीं अहा, भाग ज हियां से। ओका सब मारि के भगाइ दिहेन। पंचू निकरि परा। 'हमका रामै से काम, हमका रामै से काम' रटत कि चलि परा।

जौ कुछ दूरी उ गवा तौ एक राजा मिलेन। राजा पूछेन भैया कहां जाब्या : उ रटत रहि गवा- हमका रामै से काम, हमका रामै से काम। राजा बोलेन कि अच्छा भैया जौ राम मिलि जांय तौ तनी इहौ पूछि लिह्या कि हमरे सगरा मा पानी काहे नाहीं होत अहै।

कुछ दूर चले पर एक चोर मिला। चोर ओसी कहेस कि अच्छा भाय जौ राम मिलैं तो ओनसी पूछ्या कि हम जिनगी म बड़ा पाप किहे अहीं, हमार मुकुति कइसे होई। कुछ और आगे बढ़े पर एक नाग देवता मिलेन। ओनहीं कहेन कि भैया तनी राम से हमरौ सवाल किह्या कि हम जब केहू क प्रेमौ से मिला चाही थै तौ उ हमार बिसवास नाहीं करत। हम काउ करी कि हमरौ मुकुति होइ जाइ।

पंचू रटतै चला जात रहा, हमका रामै से काम, हमका रामै से काम। उ जातै रहा कि ओकरे आगे एक छाया आइ के खड़ी होइ गै औ कहेस कि बोला हम राम अही, मुला पंचू रटतै रहि गवा कि हमका रामै से काम, हमका रामै से काम। उ छाया आगे खड़ी रहिगै टरबै न करै तौ पंचू बोला अच्छा तू राम अह्या तौ बतावा कि राजा के सगरा म पानी काहे नाहीं होत अहै। छाया बोली, अरे ओह राजा के एक जवान बिटिया बीहै क परी अहै औ उ सगरा खोदावत अहै। पहिले बिटिया क बियाह करै तौ सगरा म पानी होए। पंचू फिर बोला, अच्छा बतावा उ चोरन क मुकुती कइसे होई। छाया बोली, चोर बड़ा पाप केहे बाटै। जेतना धन बटोरे होइ केहू सुपात्र क दान देइ तौ ओकै मुकुति होइ जाए। पंचू फिर बोला, अच्छा उ नाग देवता क मुकुति कइसे होई। छाया बोली, नाग देवता के पास मनि अहै उ मनि केहू सुपात्र

क दान कै देइ तौ ओकै मुकुति होइ जाई। एतना कहि कै छाया गायब होइ गई।

इ देखि कै पंचू रोवइ लाग औ चिल्लाइ लाग कि कुछ कहा कुछ कहइ न पावा। इहै रटत कि उ लौटि परा। रस्ता म सबसे पहिले ओका नाग मिला। उ पूछेस का भाय हमार बात नाहीं पूछ्या का। पंचू कहेस कि राम कहेन है कि तोहरे पास जौन मनि अहै ओका केहू क दान दे द्या तौ तोहार मुकुति होइ जाई। नाग बोला, भला तोहसे सुपात्र के मिले, हम तुहीं क आपन मनि देब। इ कहिके उ आपन मनि उगिलि दिहेस औ पंचू ओका लै लिहेस। फिर उ आगे 'कुछ कहा कुछ कहै न पावा' रटत चलि परा। रस्ता म चोर देखेस तौ पूछेस, हमार बात पूछ्या कि नाहीं। पंचू बोला, तोहार बात पूछै तो राम जी कहेन कि जौन धन दौलत लूटि के धरे होइं ओका केहू सुपात्र क दै देंइ तौ मुकुति मिलि जाई। चोर बोला, भला तोहसे बढ़िके सुपात्र के मिले। उहौ जौन धन धरे जोगए रहा, ओका दै दिहेस। फिर उ 'कुछ कहा कुछ कहै न पावा' रटत चलि परा। चलत चलत राजा के सगरा प पहुंचि गवा। ओकै बात सुनि के राजा क लाग कि हमै जान हमरिन बतिया नाहीं पूछि पाएस। राजा कहेन का भाई हमार बात पूछ्या, तौ उ बोला, हां राजा साहब हम तोहार बात तौ पूछि लीन मुला अपनै बात न कहि पाए, कुछ कहा कुछ कहै न पावा। राजा पूछेन, आखिर राम हमरे सगरा के पानी बरे काउ कहेन। उ बोला, राम कहेन कि राजा सयान बिटिया घरे बैठाइ के सगरा खोदावत अहैं। जब तक बिटिया क बियाह कइके बिदा न कइ देइहैं तब तक सगरा म पानी न होई। राजा कहेन, भला तोहसी अच्छा वर हमरी बिटिया क कहां मिली। हम तौ अपनी बिटिया क बियाह तोहरेन साथै करबै। राजा ओका अपने घरे टिकाइ के अपनी बिटिया क बियाह ओकरे साथे कइके अपना राजौपाट ओका सौंपि दिहेन। सगरा म पानी होइगा। राजा खुसी म नाचै लागेन।

पंचू राजा बनिगे तौ सदाबर्त बाटै लागेन। जौने भिखमंगा आवै ओका एक सीधा औ एक रुपिया देइ क बन्धान बनि गइ। एक दिन पंचू के चारिउ भाय मागत मागत राजा के हियां पहुंचि गएन। नियम के हिसाब से ओनहू क कुल चारि सीधा औ चारि रुपइया मिलै लाग। मुला ओ सब एक सीधा अउर लेइ बरे जिद करइ लागेन। वे कहत रहेन कि हमार एक भाई अउर अहै, उहू कै सन्ती सीधा चाही। बढ़त बढ़त बात पंचू राजा के पास पहुंची। राजा जौ दूरिन से देखेन तौ पहिचानि गएन कि इतौ हमरे भैया लोगै अहेन। राजा चुप्पे से अपने मनइन क सहेज दिहेन कि एनका चारिउ जने क बार कायदे से बनवाइ के बढ़िया कपड़ा पहिराइ के हमरे साथे खाइ बरे उठावा। सब क बड़ा अचरज भवा कि राजा अपने साथै भिखमंगन क खाइ बरे उठावत अहैं, मुला राजा कै बात केकर हिम्मत कि कुछ बोलै। ओह कइत राजा के भाइन कइ हालत डर के मारे खराब होत जात रहै। बार बनवाउब, नहवाउब, धोआउब, नवा नवा कपड़ा, राजा कहूं बलि तौ नाहीं देवइया अहै, मुला अब काउ करैं।

राजा जेवइं बइठे औ ओनके साथ चौका प उठेन ओनके चारिउ भाय। तरह तरह क बिंजन परोसा गवा जेका कभौ बेचारे न देखे रहै औ न तौ नावे जानत रहेन। रानी गोदी म बेटवा लइके पंखा झलै लाग। राजा के भाइन क हिम्मत न परति रहै थारी मं हाथ लगावइ कइ। राजा कहेन, बतावा हमका चीन्हत अहा। ओ का चीन्हैं भला। कहां तौ चित्थर गुद्दर लपेटे पंचू औ कहां सदाबर्त लुटावत राजा। बोलेन, राजा साहब हम तौ नाहीं चीन्ह पावत अही। राजा कहेन, हम उहै पंचुआ अही जेका सब केउ मारि के भगाइ दिहे रह्या। हमका तौ राम विना मांगे सब कुछ दै दिहेन, तोहार सब कइ का हालि अहै। बड़ा भाई बोला, भइया तोहका तौ सब कुछ मिलि गवा मुला हम सब तौ अबै ताई बेर्रा औ मकरा क रोटी, बजरी क खिचरी औ बहुरी बरे झंखतै अही। चारिउ भाइ रोवइ लागेन तौ राजा समझायेन, भइया, दुनिया म सारी चीज अहै मुल पावा थै उहै जे ओका पावइ बरे सब कुछ करइ क तयार रहै, अपनी धुन क पक्का होइ। एकरे साथ एक बात अउर अहै, उ ई कि दुसरे क काम पहिले करइ फिर आपन काम केउ नाहीं रोकि सकत। राजा अपने चारि भाइन क अपने साथे राखि लिहेन। सब क दिन फिरि गवा औ पंचू राजा कै नाव क गली गली म डंका बाजै लाग।

# माटी कै दिदी

एक गांव म एक फूहरि मेहरारू रहत रहेन। ओकरे फुहरपन से घर गांव सब उबियाइ ग रहेन। सब काम उलटा पुलटा फुहरपन से भरा। एक दिन ओकर मनसेधू कउनउ बात पर उबियाइ के कहेस, तोहरे पइसौ भरेक सहूर नाहीं अहै। एक ठु कउनउ माटिउ कइ दिदी होतिन तउ कुछतउ अकिल बतउतइ। इ बात मेहरारू के लागि गइ। ओकरे परोसे रहा एक कोंहार। उ कोंहार से कहि के एक माटी कै दिदी बनवाइ लिहेस औ कुल काम उहीं से पूछि के करइ लाग। माटी कि दिदी क घुंघुट कढ़ाइ के बइठाइ देइ औ उहीं के आगे पूंछि पूंछि काम करइ लागिन। माटी कै दिदी कुछ बोलइ तउ हइन न हां ओनकर घुंघुट जौ उड़इ तउ उही क अपने हिसाब से अरथ लगावइ लागिन।

एक दिन चाउर डावइ क भवा तौ वो माटी कि दिदी से पूछिन, दिर्दा केतना चाउर डारी। दिदी क घुंघुट हवा से तीन दांव उड़ा तौ वे अरथ लगाइ लिहिन कि दिदी कहति अहइं कि तीन बटुआ चाउर डावा। दुइ परानी म तीन बटुआ चाउर। मनसेधू देखेस तौ बिगड़ि गवा औ बोला, एतना चाउर काहे डारे, के खाये इ सब। फूहर बोली, का हम अपने मन से डारे हैं। दिदी से पूछि के डारे हैं। उहीं लागे मनसेधू ओनका मारि के घरे से निकारि दिहेस। फूहर आपन माटी क दिदी लइके घर से निकरि परी। रात होइगै तां फूहरि आपन माटी कै दिदी लइके पेड़े पर चढ़ि गइन। उहीं पेड़े के तरे रात म कुछ चोर आइके चोरी के माल क बटवारा करइ लागे। एत्ते म माटी क दिदी हाथे से छूटि क गिरि परी तौ फूहर चिल्लान, हमार दिदी, हमार दिदी। चोर लोगे सारा सामान छोड़ि के भाग खड़ा भयेन। फूहरि पेड़े से तरे उतरि कै अपनी दिदी क हेरइ लाग। उहीं ओका पूरा खजाना मिलि गवा। सब बटोरि के उ फूहर घरे लउटि आय। ओंह कइती ओकर मनसेधू जउ देखेस कि ओकर फूहर मेहरारू तौ बड़ा खजाना पाइ गइ तौ बड़ा प्रसन्न भवा।

मेहरारू मनसेधू फिर आपस म प्रेम के साथ रहइ लागेन। ओनकर दिन लउटा।

# सुघर मेहरारू

एक गांव म बाप औ ओनकै पांच बेटवा रहत रहेन। महतारी मरि गइ रही। बाप बेटवा सब भीख मांगत रहेन औ भीख म जौन अनाज पावत रहेन सब चबाइ के पानी पी लेत रहेन। घरे म कभौ चूल्हा न बरै, न कौनौ बरतन भाड़ा रहा न तौ रोटी बनवै क सहूर। सबसे बड़े भाई क बियाह होइ गवा रहा बाकी सब कुंआरै रहेन। बड़े भाई क बियाह तौ होइ गवा रहा मुला ओकै दुलहिन नाहीं आवति रही। आवइ तौ रहइ कहां, कइसे बनवइ खियावइ, न अनाज न पानी, न चूल्हा न चक्की, न बरतन न भाड़ा। घरौ जौन रहा टूट फूट। देवाल चेहरान, छत चुअत, केवार टुटहा। कहां दुलहिन आवइ, कहां रहइ, कइसे करइ बड़ी समस्या रही। एक दिन सब मिलि के सोचेन कि दुलहिन लिआई जाय तौ काम बनइ। बाप आनइ गवा तौ दुलहिन आवइ क तइयार न होइ। ओकर एक सरत रही। उ कहै कि हम तबै चलबै जौ हमार बात मौन बरे सब तइयार होइं। आखिर म ओकर बात सब मानइ क तइयार भयेन तव दुलहिन आवइ क राजी भइ। ओकै नाव रहा सोना।

दुलहिन आइ गइ औ अपने साथे घर गिरस्ती क ढेर सामान उ लिआइ। अउतइ मान पहिली बात तौ ऊ इ कहिस कि आजु से तोहका सब क जौनइ भीख मिलै एकौ दाना चवाया जिन सीधे घरे लइके आया औ डगर म जौने चीज मिलइ सब बटोरे आया चाहे लकड़ी होइ मुला फेंक्या जिन लेहे आया। बाप बेटवा दिन भइ भीख मांगत रहेन औ दुलहिन घरे क साफ सफाई करति रहै, घर गिरस्ती टीक करति रहइ। घरे म खाना बनइ लाग सब पेट भरि के खाइ लागेन, सब ठीक चलइ लाग। जे जौनै पावे, भीख म चाहइ डगरा म जौनै मिलइ सीधे सब घरेन लइ आवइं। एक दिन डगरा म एक मरा सांप मिला उहे उठाए आएन औ अंगना म धै दिहेन।

एक रानी नौलखा हार उतारि के अपने अंगना म धइ दिहिन औ नहाइ लागीं। अकास म एक चील्ह उड़ति रही। ओकै निगाह नौलखा हार पर परी तौ ऊ नौलखा हार लइके उड़ि गइ। अकास म नौलखा हार लइके उड़त उड़त जो ओकै निगाह मरे सांप पर परी तौ ऊ अंगना म नौलखा हार धइ के मरा सांप उठाइ के चलि दिहेस।

ओह कइत रानी क नौलखा हार गायब भये से खलबची मचि गई। रानी कहिन कि जब तक नौलखा हार हमार न मिलै हम दाना पानी न छुअब औ न तौ सेज छोड़ब। रानी गोड़ मूड़ तानि के परि रहिन। राजा बहुत समुझाएन, कहेन कि उहू से अच्छा हार बनवाइ देई। मुला रानी टस से मस न भइन। वे कहिन कि हम लेबइ तौ उहइ हार लेबइ नाहीं जीबइ न करब। राजा चारिउ कइत डुग्गी पिटवाइ देहेन कि जे हमरी रानी क नौलखा हार देई हम ओका आपन आधी राजि दै देबइ।

इ खबर जब सोना सुनेस तौ अपने ससुर से राजा के लगे सनेस पठयेस कि हम नौलखा हार पाए अही राजा आवै लै जाइं। राजा बहुत खुश भएन औ सोना के घरे हार लेइ बरे अपुनै गएन। सोना हार दै दिहेस तौ राजा ओका इनाम देइ लागेन। सोना इनाम लेइ से नाहीं कै दिहेस। राजा कहेन कि सोना आज तु हमार बहुत बड़ा संकट टारे अहा, त जौन चाहा मांगि ल्या, हम नाहीं न करब। जौ राजा बहुत

जिद केहेन तौ सोना कहेस कि ठीक अहै राजा साहब जौ आप हमका कुछ देवइ चाहा थीं तौ हमार एक बात मानैं। राजा तुरन्त तइयार होइ गएन। सोना बोली, चार दिन बाद देवारी अहै। हम चाही थै कि अबकी बार देवारी म दिया सिर्फ हमरे घरे म बरै अउर कतहुं नाहीं। राजा बात मानि लिहेन औ कुल डुग्गी पिटवाइ दिहेन कि अबकी देवारी के दिन सोना क छोड़ि के केहू के घर दिया न बारि जाई।

देवारी आइ गईं। सोना के घर बाहेर अजोरै अजोर बाकी सगरौ अंधेरै अंधेर। आधी रात कि लच्छिमी मइया सोना के घरे आइके केवार पीटैं लागीं। सोना क पता चलिगा कि आज लच्छिमी मइया हमरे घरे पधारी अहैं। इहीं बरे उ बरदानै मांगे रही। सोना दरवाजा खोलि के लच्छिमी क बैठाइस, सेवा सुश्रुषा किहेस, गोड़ मूड़ दबावै लाग एतनेन म लच्छिमी क पेट पिराइ लाग। वे बोलीं, सोना हमार तौ पेट पिरात अहै हम टट्टी बैठब। सोना चलाक रही उ जानत रही कि लच्छिमी कौने अस तस मेहरारू न होइं। ओनकै टट्टी बैठे क मतलब भवा सोना चानी हीरा मोती क भण्डार। सोना लच्छिमी मइया क घरे भरे म घुमाइ के टट्टी बैठाएस। ओकरे बादौ लच्छिमी क पेट न ठिकान तौ सोना भुईं म लोटि कि लच्छिमी से कहिन, मैया हमरी मंगिया, पेटवा, जंघिया पर कुल बैठि जा। लच्छिमी के बैठत बैठत अजोर होइ गवा औ वे छू मंतर होइ गएन। सबेरे सोना के ससुर, मनसेधू औ देवर देखेन कि घर भर म सगरौ सोना चानी हीरा मोती क अम्बार लाग अहै औ सोना के सरीर पर सोने क जेवर कसा अहे। सब खुसी म नाचै लागेन। सोना बोली, इ सब लच्छिमी मैया कि किरपा का फल आटै। सब कहै लागे, सोना लच्छिमी तौ हम सब नाहीं देखे। हां हम सब इ जानित है कि आज हमरे साथे तु न होतू तौ हम सब भीख मांग के कच्चै दाना चबात रहि जाइत औ खाना क आंखी से देखिउ न पाइत। हमार सबकै लच्छिमी तुही अहू। तोहार कहा न मानित तौ काहे मरा सांप घरे लै आइत औ काहे इ दिन देखै क मिलत। सोना पक्का महल बनवाइन, अपने देवरन क बियाह कइके ओनहू सबके रहइ क इंतजाम कै दिहिन। ज्ञानी लोगै सही कहे अहैं कि मेहरारू सुघर होइ तौ नरक सरग बनइ सका थै औ जौन चाहै तौन कै सकत है।

# सलाम गुड़िया

बहुत पुरान बात आय। एक दईं सावन के महिना मा इन्द्र देवता अस कोपेन, अस कोपेन कि पानी बरसव बन्द होइ क नांवइ न लेइ। जगहा-जगहा, गड़ही- गड़हा, तारा-इनारा, ताल-तलैया सब भरिगे। नदियन मा बहिया आइ गइ। सबते जियादा परेशानी मा फंसेन ऊ सब, जौन बिलिन मा रहत रहेन। मूस-ऊम तौ भागि भागि कइ मनइन के साथे बस्ती मा रहइ लागेन मुला बेचारे सांपन कइ बड़ी आफति भइ। न जाने केतने बहिगे। कतहूं रहइ का ठेकानउ नाइ रहिगा। तौ कइउ सांप मिलि के ई सलाह किहिन कि चलौ अपने राजा ते कहा जाय। वेई जउ चहिहैं तौ हमार सब कै परेशानिउ दूर होइ सकति है।

इहै सब सोचिके, झुंड बनाइ के सब नागराज बासुकि के दरबार मा पहुंचै का जुगुति लगाइन। बहेरेन से 'दोहाई महराज, महराज दोहाई' चेल्लात, फन पटकत जैसे कि फन पटकि पटकि सलाम करत होंइ, राजा के समुहे गयेन। राजा पूछेन, "कहौ का बात होइ गई, काहे दउरे आये हौ?" सांपन के झुंड मा से एक सांप आगे बढ़िके कहिस, "महराज हमार सब कइ रक्षा कीन जाइ। नाहित हमार वंशइ लोप होत जात है। तमाम बहिया मां पानी मां डूबि के मरिगे, तमाम पानी मां बहिगे। जौन जान बचावइ बदे बस्ती के नगीचे गे तौन मारे गे। महराज अब हमहूं सबका बचइ का कौनौ उम्मीद नाहीं देखात।"

नागराज खोपड़ी उठाइन, कहिन, "एकर जिम्मेदार के?" हालति कांपति एक सांप कहिस,"हुजूर नदी की बहिया से अस भवा है तौ हुजूर नदी जिम्मेदार.....।" आपन बात ऊ सांप पूरौ न कइ पाइस कि नागराज वासुकी जोर से फुफकारत भये कहिन, "जावो नदी का हियइन बोलाइ लावो।" दुइ सांप फटाफट दौरिन, नदी का संदेसा दिहिन, कहिन, "चलौ नागराज तुमका तुरन्तइ बोलाइन है।" नदियउ कांपि गइ। दूनउ हाथ जोरि कै दरबार मा हाजिर भइ। नागराज देखतइ गरजेन, "ओय नदी, तु एतना काहे बाढ़ी हौ कि बहुत सांप डूबि के बहुत मरि गे। तुम्हार ई काम सजा वाला अहै। हम तुमका सजा जरूर देब।"

नदी हाथ जोरि के कहेसि, "हुजूर, आप बड़कवा हयेन, राजा हयेन, सजउ देइ सकत हैं मुल हुजूर ई मा हमार कौनौ गलती नाहीं, कौनौ कसूर नाहीं। पीछे से जौन पानी कइ धारा आइ रही हे जौ ऊ रुकि जाय त बहिया अपने आपइ हम रोकि लेव।" नागराज फुफकारि के कहिन, "अच्छा! नदी का जाइ देव, पानी कइ जौन धारा अहै ऊ का बोलावो।" फिरि पानी केरि जौन धारा रही वह हालति कांपति पहुंची। पहुंचतै गिड़गिड़ाय के कहै लागि, "हुजूर हमार कवनउ कसूर नाहीं। कसूर सब बरखा रानी का है जौं ऊ बराबर बरसतै रहिहैं तौ हुजूर पानी केरि धारा का त आगे चलइ क परी।"

"अच्छा", नागराज गुर्राइ के कहिन, 'जाओ बरखा का पकरि लावो, बाकी रानी बरखा आये के बाद देखब।" साफ जनाइ परइ लाग कि उनके गुस्सा जौन है थोरा थोरा चढ़ै लाग। अबकी दस पनरा सांप एकट्ठइ दउरे। थोरी देर मा बरखा रानी क पकरि के लइ आये। बरखा रानी आईं तउ मुला रानी त रानी। अउतइ कहिन, "हमका काहे बुलवायेव।" नागराज कहिन, हमका पता लाग है कि हमरे बंश के बिनास बदे तुमहीं जिम्मेदार हौ। तुम आपन झड़ी लगावत हौ तौ पानी के धारा का आगे चलइ का परत है यही ते नदी मा बहिया आइ जात है, बहिया ते हमरे सरप बंश के नास क खतरा हुइ गवा है।"

बरखा रानी खिलखिलाइ के हंसिन, कहिन, "ई बेकूफी क बात आखिर तुमका को बताइस कि

हम जिम्मेदार हन। अरे ऊ बदरी, ऊ हवा, ऊ घटा, ऊ बिजुरी सब मिलिकै हमका बरसै प मजबूर कइ देत हैं तौ हम बरसित है, का हम अपने मन ते बरसित है।''

अबइ बरखा रानी अउर नागराज बासुकी मा ई तैश वाली बात चलतइ रही कि एतनेन मा एक बूढ़ सांप जौन मंत्री रहा, कहिस, ''महराज हुकुम पाई तौ एक बात हमहूं कही।'' राजा कहिन, ''कहौ, कहौ, बेहिचक कहौ।'' त ऊ बूढ़ सांप कहिस, हजूर, ऊ नदी, ऊ धारा, ई बरखा, ऊ बदरी, ऊ हवा, ऊ घटा, ऊ बिजुरी, ई सब क सब है तौ औरतै जात न। आपउ औरत जात के बोलाइ के बेकार क कहानी गढ़वावत हौ। ई मा से कौनौ कबौ आपनि गलती न मानी। आप तौ बस हुकुम कइ देउ कि ई धरती पर ते औरत जात का नाव निसान मिटाइ दीन जाय। न रही बांस न बजी बांसुरी।''

बात नागराज का जंची। फौरन नागन का हुकुम मिला, जाइ के धरती पर ते औरत जाति का बिनास करव चालू करौ। बस फिरि का रहै, जौनी ओर देखौ तउनी ओर किसिम किसिम के सांप दउरि परे। तब तक ई बात नाग रानिउ क पता चली। ऊ सोचिन ई त बड़ा अनरथ होइ वाला अहै। ऊ फौरन अपने पति नागराज बासुकी का समझाइन, ''ई का करत हौ? सब औरत जाति के मारे ते भला सांप के बंश का कइसे हिफाजत होई। चुहिया मरि जइहैं तौ तुम्हरे बंश का खाइ के लाले परि जइहैं।''

नागराज कहिन, ''त तुही बतावा की का मारा जाय का छोड़ा जाय?'' नागरानी कहिन, ''जब बहिया आवत है तौ सांपन के एकइ सहारा बचत है ऊ है बस्ती, जहां मनई रहत हैं, जौ हुआं के औरत जाति क बिनास हुइ जाई तौ ऊ जगह नागन के बदे बरसात के दिनन मा रहै के बदे होइ जाई। न हुआं ऊपर के पानी क खतरा न नीचे के।''

इहीं हिसाब से हुकुम मा बदलाव हुइगा। के भई अउर कोई का न काटो, सिरफ आदमियन की बस्ती मा जाइके मेहरुवन का काटौ। सब अपने राजा अउर रानी दूनउ का हुकुम पाइ चुके रहे। दउरि परे। येहर आदमिन का पता चला। अब का कीन जाय। लाठी लइ लइ दउरे, दस बीस सांप मरिबउ किहिन। मुला ऊ से का होत है। आदमी देखि के सांप छिपि जांय जब मौका मिलै तौ काटैं। आखिर पता लगावा गा कि ई काहे होइ रहा है तौ पता लागि कि नागराज बासुकी बहुत गुस्से मा हैं उनहीं ई हुकुम दिहे हैं कि मेहरुवन का नांव निसान मिटाइ दीन जाय।

आदमी त वेसेउ बहुत समझदार माना जात है। फौरन नागराज की अस्तुति विनती मा सब लागि गए तब जाइ के नागराज परगट भये। उन्ते कहा गवा कि हजूर आप ई हुकुम काहे देइ देहिन। नागराज कहिन कि ई मामिला मा हम कुछु सुनइ का तैयार नाहीं। आदमी लोग कहिन, ''हम ई थोरउ कहि रहेन हैं कि हजूर आपन हुकुम लौटाइ लेव। हमारि ई विनती है महराज अपने सांपन का लौटाइ लेंउ। हमहूं सब आपइ की प्रजा हैं। आप के खातिर मा हिंया पर मीठे दूध का इन्तजाम होइ जाई। आप हिंया छकि के दूध पियौ। मेहरुवन का मारइ वाला काम हम सब अपुने हाथन कइके अबहिनै आप का देखाइत है। राजा की मरजी के हिसाबै से सब काम होई।''

ओहर औरतन ते कहा गवा कि जेतनी जल्दी हुइ सकइ बड़ी बड़ी गुड़िया बनाइ के इकट्ठी करौ। जान त सबइ क पियार होत है औरतै गुड़िया बनाइ के, रंगि चोंगि के तयार किहिन। फिरि बस्ती मा जहां कतऊ ऊंच टीला देखान, उहीं ऊ गुड़िया पहुंचाय दी गईं। बस्ती मा जौन नवजवान रहे सब डंडा लेइके टीला पै चढ़िगे, फिरि उहै छितरायी गुड़िया पीटै लागे। गुड़िया पीटत जांय अउर 'सलाम गुड़िया, सलाम गुड़िया' चिल्लात जाइं। सब ओरी हल्ला सुनाइ परइ लाग। नागराज दूध पी के पहिलेन मस्त रहेन। ओनका इहै समझि परा कि सब जगह मारी गई मेहरुवै आंय जौन परी हैं।

नागराज सन्तुष्ट होइके अपने दलबल समेत अपने राज मा चले गे। तबइ से आजु लगे सावन के महिना मा नाग पंचमी के दिन सांपन का पूजा क, दूध पियावइ क, अउर गुड़िया बनाइ के ऊ का पीटै का काम होइ रहा है।

# धोबी के कूकुर न घरे कै न घाटे कै

हमैं थोर थोर सुधि आवा थै, एक दांय लरिकइयां मा हम नंगान रहेन। तौ हमार नानी हमैं चुपवावै के तांई एक ठू खिस्सा सुनाये रहीं। का जनी फुरै आय कि झूठै।

वै तपता के आरी बइठी रहैं, औ हमार मूड़ अपने जांघी पै धरे थपथपावत रहैं। औ खीसा सुनावत रहैं। एक ठू धोबी रहा, ऊ बहुत गरीब घर कै रहा। चाहै बरखा परै, चाहे झूरा औ पाला। एक्कै धोती मा जिंनगी काट दिहिस। दूबर पातर एतना कि, एकि एक पांजर दूरिन से गिन लियौ। मुल रहा बड़ा चीमर, कठकरेजी। जौनेन कामे मा लागि जाय, बिन पूर केहे मानै ना। जौन कपड़ा ढेर मइल कुचइल देखै, बिना फर्च केहे सांस न लियै।

गरीब रहा तौ का? इमानदान बहुत रहा, सीधौ बहुत रहा। लाठी लेहे दिन भै यहर से वहर टकटौरिया नाधे रहै। मुल केहू से लड़ाई झगरा, 'राम-राम' कभ्भौ नाहीं। एही कुल के मारा पवस्ति भरे मा बड़ा मान जान रहै। कहीं जौ पंचाइत संचाइत परै, तौ जरूर बोलावा जाय। काहे से कि बुद्धिया कै तेज रहै। दूध कै दूध औ पानी कै पानी अलग कै दियै। जे तनी अनियाव बतलाय तेका यह धोवै कि पूछौ ना।

मुल जहां नीक मनई मिलत हैं, बेकरके वहीं मिलत हैं। जे कानी गाई के नाईं कानिन राह पै चलिहैं। कुछ जने का ओसे परसनताप होइगा। जेकै फल इ भवा कि, एक दिन ऊ गवा गांव भरे कै लादी गदहा पै लादि के ताले पै धोवत रहा। एक ठू मसल कहा अहै "धोबी कै कूकुर न घर कै न घाटे कै"। एक पिल्ला उहौ पाले रहै। जेका खवाइस पाल पोस के बड़ा किहिस। ससुरा खाय खाय पिलंट भा रहै। गावां कै जरकुतहवै कुकुरा का कुछ अंड बंड खवाइ के पगलवाय दिहिन औ लुहकार दिहिन। उ सरवा पगलान कूकुर गा धोबिया का हबक लिहिस। धोबिया कुछ देर छटपटान, तौ राम-राम कहि कै ठांवै मरिगा। बदिया मा, वई सबही कुकुरा का पागल-पागल कहि के मार डारिन। औ जौन कपड़ा धोबिया लइ गा रहा धोवै का, सब जने उहै कपड़वा पहिन-पहिन मुंह लुकवाय के भाग लिहिन, तब से उनका दूसर कपड़ा नाहीं जुरा। वै सबही इ जानत हैं कि केहू उनका चीन्हत नाहीं। जबकी सबही उनका थुकत अहै। ऊ बात अलग अहै कि केहू मुंहां पै नाहीं थूकत। सब इ सोंचत हैं, कि हिकना के मुंहे के लागै।

हम तौ ई कहित है जे इनका चीन्हैं औ इनके मुंहे पै ना, थूकै। तेका पक्का मान लियौ, ऊ लरिका आटै नाथू कै।। एतना कहिके नानी हमसे पूंछी, धोबिया कै नाव जानत हौ, काव रहा? हम जानि तौ गैन मुल बतायन नाहीं कि उनकै नाम गांधी जी रहा।

# राजा के दुइ सींग

एक समय की बात रही। एक राजा रहे। जेकरे सर मा दुइनो तरफ बड़ी-बड़ी सींग रही। राजा का ई बात से बड़ी चिंता रहत रही। राजा जव बाल बनवावें बाल के साथे ऊ नाई कै सिर काट के रख लियैं।

एक दिन एक नाई गब्बर नाव कै आवा औ राजा के बाल बनाइस औ जब चलै लाग तब राजा कहिन, सुनो हम तोहार सर काटि के रखा चाही थै जेसे तू कतहूं हमार ई राज बताय न पावा। नाई बहुतै चलाक रहा, कहिस राजा ई कौनौ नई बात नाहीं अहै हमरे राज मा अइसन बहुत राजा अहैं जेकरे सिर मा दुइ-दुइ सींग अहैं। औ हम आज तक केहू से बतायेन नाहीं। राजा सोचै लागे जब हमरी तरह बहुत राजा पड़ा अहैं जेकरे सींग अहै तौ यहिमा हमार कवनो बुराई नाहीं अहै। राजा गब्बर नाई का ढेर सारी अशरफी दिये औ कहे ये बात तू कतहूं केहू से न कह्या तौ तुहका हमेसा हम मालामाल किहे रहब। नाई के सिर बचा, औ अन्दर अन्दर बहुत खुश भवा औ अपने घर वापस आय गवा।

धीरे-धीरे समय बीतत गा, गब्बर नाऊ कै मन मा इहै रहै कैसे कही की राजा के दुइ सींग बा ओकर विना केहू से कहे रहा नाहीं जाय। एक दिन एक जंगल मा जात रहा औ चलत-चलत थक गवा। एक आम के पेड़ के नीचे बइठ गा औ आरी वगल देखा केहू नाहीं देखान त कहा, राजा के दुइ सींग, एतना कहिके गब्बर नाऊ उहां से चल पड़ा औ अपने घर आवा। राजा के सींग के बात कहिके गब्बर नाई कै जी हलका होय गवा। ऊ आराम से रहै लगा।

राजा के लड़का पैदा भवा, औ दूर-दूर से बड़ा-बड़ा राजा बुलावा गये बहुत बड़ा उत्सव मनावा जा रहा। राजा नौकर का भेज के जंगल के पेड़ से लकड़ी मंगवायेन औ तबला सारंगी ढोल हारमोनियम बढ़ई बुलाय के बनवावा गा। राजा कै पूरा महल सजावा गा, खूब धूमधाम मची रही, सब खाये पीये औ खाय पी के बइठे। जब महफिल सजी तौ हारमोनियम कहत बा, राजा के दुइ सींग। तबला कहत बा, किटी-किटी के बताइस। सारंगी कहत बा, गब्बर नाऊ गब्बर नाऊ। हुंआ जेतना मनई रहे, दुसरो देश कै राजा आवा रहै सब बहुत चकित रहि गये, ई काव आय कहत बाय।

राजा आपन अपमान न सहि सके औ उठि के महल गये औ तलवार उठाये आपन सिर काटि के रखि दिये। सब अचरज से देखतै रहि गये।

# रानी केतकी कै कहानी

बहुत पहले कै बात अहै, एक राजा रहैं जेकरे तीन रानी रहीं। तीनौ रानी के लड़िका नाहीं होत रहे। बहुत दिन पै छोटी रानी के पेट मा बच्चा आवा औ राजा बहुत खुश भये। इ बात औरो रानी का न अच्छी लाग, सोचै लगीं, अगर छोटी रानी के लड़िका होय जाये तौ राजा हमका न मनिहैं। नौ महीना बीत गये। रानी के दुइ लड़िका भये, एक बिटिया औ एक बेटवा, दुइनौ बहुत सुन्दर रहे। बड़ी रानी लड़िकन का लै जाय के कोंहार के आवां मा डाल आई औ लाय के ईटा पाथर रख दिहीं औ राजा से बताय दिहीं कि रानी के ईटा पाथर भवा अहै। राजा का ई बातन से बहुत गुस्सा आई औ रानी का बाल बनवाय के कौवा हड़ावे भेज देहे। रानी दिन भै नगर मा कउवा हड़ावै, औ घर मा सब रानिन मौज करैं। कोहार जब आपन आवां देखै गवा कि देखी ईटा पक गवा कि नाहीं तौ देखिस वहिमा दुइ लड़िका पाइस। पाइ के बहुत खुश भवा ओकरे लड़िका बच्चा नाहीं रहे, लै जाय के वे पाल पोस के बड़ा कै दिहिस। कोहार अपने बिटिया का माटी कै खटोला बनाय दिहिस औ बेटवा का माटी कै घोड़ा। दुइनौ खूब खेलैं।

एक रानी नदी पे नहाय जात रही तौ बिटिया खटोला से कहत बाय कि माटी कै खटोलवा घरर-घरर गेहूं पीस औ लड़िका कहत अहै, रेशम कै लगाम उठ घोड़ा पानी पी। रानी सुनी औ बोलीं कि कही माटी कै खटोला कतहूं गोहूं पीसा थै औ लकड़ी कै घोड़ा कतहूं पानी पिया थै। तौ लड़िका कहत बाय कि कतहूं रानी के ईटा पाथर होथै।

ई बात रानी के मन मा लाग गै औ आय के पहुड़ि गई। राजा पूछे कि काव भवा, कहीं हमरे मूड़े मा दर्द बाय। राजा बहुत दवाई मंगवाये, जड़ी बूटी लाये रानी कै मूड़ नहीं ठीक भवा। राजा सोचे कवन जतन करी कि रानी कै मूड़ ठीक होय जाय। रानी कहीं जौन कोहार कै दुइनौ लड़िकै अहै अगर उनके कलेजा लाइके हमरे मूंड़े पे रखब्या तौ ठीक होये। राजा बहुत अचरज मा पड़े। कोहार के घर गये औ लड़िकन का उठाय के मार डाले औ रानी के मूड़े मा लाय के लगाय देहे। रानी ठीक होइ गयीं। राजा जहां लड़िकन का मारे रहें औ जहां खून गिरा, लड़की केतकी कै फूल होय के जामी औ लड़िका अमोला के पेड़।

एक दिन राजा कै सभा लागि रही। एक कउवा आवा एक फूल राजा कै पगड़ी मा गिराय दिहिस। पूरी सभा महक से भरि गई। सोचे काहे कै खूशबू आय जेसे पूरी सभा मा महक गै। राजा कहै जो ई फूल का लाय के हमका दे वहिका हम आपन आधा राजपाट दै देब। बहुत दूर-दूर से राजा आये, प्रजा आये केहू फूल नाहीं लाय पाये। जे जाय तोड़ै फूल झुराय जाय। रानी कहीं हम जाब फूल लावे, जब फूले के पास पहुंची, तौ अमोला कहत बाय, "बहिनी आवत बाटी मैया महतरिया हो ना, बहिनी डार-पात लैके अकसवा का जा।"

रानिउ नाहीं पाई फूल लौटि आई। तब राजा कहे लावा हम जाई। जब राजा गये तब फिर वही कहै- "बहिनी आवत बाटे बाप कसाई हो ना, वहिनी डाल पात लइके अकसवा का जा।" राजौ नाहीं पाये लौटि आये।

राजा बहुत अफसोस मा भये कि ई कौन फूल आय जौन केहू पाय नाहीं सकत। राजा कहै सबकै देख लीन जाओ कउवा हकनी का बुला लावा ओनही और बाकी अहैं। रानी का एतराज भवा, कहीं बडे-बड़े बहा जाय गदहिया कहे केतना पानी। जब केहू नाहीं लाय पाइस तौ नगर मा कउवा हड़ावै वाली फूल लाय पइहै। राजा फिरौ नाहीं माने नौकर से कौवा हकनी का बुलाये।

कौवा हकनी आई, बोली महराज हमरे लिए काव आदेस अहै। राजा कहे, बड़े-बड़े राजा महराजा नौकर-चाकर केतकी कै फूल नाहीं लाय पाये, तुहूं जाय के देखा कि तुहका फूल मिलिन जाय। कौवा हकनी कहीं राजा साहब केहू नाहीं लाय पाये तौ हम कैसे लाय पाइब। जातहीं आपके आज्ञा कै पालन जरूर करब। कौवा हकनी फूल लावे चल पड़ी। फिर अमोला कहत बाय- "बहिनी आवत बाटी कौवाहकनी महतरिया हो ना, बहिनी डाल पात लैकै आवा गोदिया मा ना।"

सारा डार-पात सब आयके उनके अचरे मा गिरि गा। लै जाय के राजा के आगे कुरै दिहीं फिर अपने नगर का चली गई। राजा पंडित बुलाये औ कहे कि महकै काव राज अहै हम जाना चाही थै कि केतकी कै फूल केहू नाहीं लाय पाइस। कौवाहकनी डार-पात सहित लाय दिहिस। पंडित बोले, राजा यहिका जड़ से काटा। राजा जब काटै तौ फिर केतकी बोली, "बपई धीरे-धीरे मारा कुल्हरिया हो ना, नाहीं कटि जइहै हमरी अंगुरिया हो ना।"

राजा एक बार सुने दुइ बार सुने, नाहीं माने काट के गिराय दिहे। काटे के बाद वहिमा एक बारह साल का सुन्दर बालक औ एक सुन्दर कन्या निकली। राजा का बहुत अचरज लगा। सब रानी आपस मा लड़े लागीं कि हम लड़िकन का लेब, वे कहैं हम लेब। पंडित आये औ कहे जेकरे दूध कै छीटा लड़िकन के ऊपर पड़े वही कै लड़िकन मिलिहैं। सब रानी बहुत कोशिश कीं कि दूध निकल जाय। जब कभों केहू के लड़िका नाहीं भा तौ दूध कहां से निकरै। कौवाहकनी फिर बुलाई गई। कौवाहकनी कही हम न जाब नहीं एकौ कौवा बइठ जाये तो राजा हमका डटिहैं। नौकर कहिस चला राजै बुलाये अहैं तौ कौवाहकनी आई। राजा कहे कौवाहकनी परदा के बाहर से दूध कै छीटा मारा अगर छीटा पड़ जाये तो लड़िका तुहका मिल जइहैं। कौवाहकनी डेरात-डेरात दूध कै छीटा मारी औ दुइनो लड़िका के मुंह मा जाय के परा। राजा बड़े अचरज से देखै लागे। तौ राजा का बात समझ मा आई। वै दुइनौ रानी का मार के गाड़ दिहे औ माठा छिछकार के कूकुर लुहकार दिहे। औ कौवाहकनी का रानी बनाय के दुइनो लड़िका लैके आपन राज चलावे लागे।

# के मनहूस अहै

एक राज मा एक कुरूप आदमी रहत रहा। सब वहिका मनहूस मानत रहैं। एक दिन राजा सोचै यह बात कै परीक्षा लीन जाय कि का सही मा ई मनहूस अहै जौन सब कहा थे कि सबेरे-सबेरे यहकै मुंह देखे से रोटी नाहीं मिलतै।

राजा वहिका बोलाये औ सम्मान से अपने बगल मा बइठाये। औ वहि दिन ओकर खूब खातिर करवाये। दुसरे दिन राजा उठे औ सबसे पहिले वह मनहूस के कमरा मा गये औ वोकर मुंह देखे। औ संयोग से राजा वहि दिन एतना काम मा उलझा रहे कि दुपहर तक खाना खाय कै छुट्टी नाहीं लाग, दुपहर बाद उनका फुरसत मिली तो खाना खाय बइठे। मुला जइसे पहिला कवर खाय चले पता लाग रानी सीढ़ी से गिर गयीं। राजा खाना छोड़ि कै रानी कै खबरि लिये दौड़े यही तरह रात होइगै। रात का जइसे फुरसत मिली त राजा सोचे कि लोगन ठीकै कहत रहे कि सुबह-सुबह यह मनहूस कै जे मुंह देखे वहिका खाय का नाहीं मिलत।

राजा तुरन्त हुकुम दिहे कि यहिका कल सुबह होते ही फांसी पे चढ़ाय दिया जाय। सिपाही पकड़ि के कारागार म लै गये, दुसरे दिन वहिका फांसी दीन जाय लाग। राजा खुद वहिसे पूछे कि तोहार कवनो आखिरी इच्छा होय तौ बतावा। मनहूस कुरूप भले रहन मुला बहुत चतुर रहन। वह बोलिस, महाराज हमार आखिरी इच्छा प्रजा का एक भेद बतावै का अहै। राजा कड़क के कहे, कइसन भेद कै बात। हम प्रजा का ई बतावा चाही थै कि इ सच अहै कि हमार मुंह देखे से लोगन का खाय का नाहीं मिलत, लेकिन हमहूं से मनहूस राजा अहै जेहके मुंह देखे से फांसी मिल जाथै। ई बात सुनके राजा की आंखै खुल गई। उ ई बात सोचे ही नाहीं रहे कि मनहूस पहले हमरै मुंह देखा रहै। राजा बहुत जल्दी से वहिका रिहा कै दिये औ कहे ई बात केहू से नाहीं बतावा जाय। यही बरे कहा अहै, हर काम बहुत सोच समझ कै करै का चाही।।

# राजा औ बिलार कै किस्सा

एक रहे राजा, उनके कटहर कै बगिया रही। कटहरे के बगिया से रोज एक कटहर चोरी होइ जाय। राजा का ई बात पता चली कि कटहर चोरी होत अहै तौ बहुत अचरज भवा कि कटहरवा के चोराय लै जात अहै।

एक दिन राजा सोचे आज हम रात मा चोर कै पता लगाई थे। रात भई राजा एक ठी पेड़ के नीचे बइठ के देखत रहे। एक बिलार आई औ कटहर जइसन तोड़े चली वइसन राजा वहिका पकड़ लिहें औ खूब गुस्साय कै पूछे, बिलार तू एतनी छोट से अहा कैसे कटहर उठाय के लै जा थू। बिलार बोलिस, राजा कटहर लै जाई थै ढनगनाय कै। राजा कहें, कैसे काटा थू। कहत है, कटर-कटर। राजा कहैं, कैसे बनावा थू - छनन मनन। राजा कहैं, कैसे खाथू - नामू-नामू। राजा कहैं, कहां सोवा थू - चूल्हा मा। काव ओढ़ा थू - तावा। राजा कहे देखा-देखा बिलरिया कै दावा।

# दिन की कथाएँ

## रविवार की कथा

रवि देउता परई भर मोती मां सारे संसार केर पालन पोषण करत रहैं औ परई भर मोती अपनी अम्मा अउर दुलहिन का देत राहैं। उइ मोतिन का सास पावैं, सास भून चबांय, बहू पावैं बहू भून चबांय। दोनों केर पेट न भरै। याक दिन बहुरिया कहेस कि अम्मा तुम धरती पर जाए के रवि द्योता से कहा कि हमका कस खाय का देत हैं जो पेटुइ नाइ भरत है। सास रवि महराज की सभा के दुआरे पहुंची। सब लोग रवि देउता ते बताएन कि तुम्हरी अम्मा आई हैं। मइल-मइल कपड़ा पहिरे हैं। रवी देउता बोले उनते कहेव कुम्हार के आवां मा बइठैं, हम होइं आइत है। रवि देउता पूछेन- 'अम्मा कइसे आई हो?' अम्मा अपन बात बताएन। रवि महराज बोले- 'मोती कहूं भूने चबाए जात हैं?' उनका भुनाव, खरचौ, चउका साफ करौ! ऊपर-ऊपर पोतो, नीचे लीपौ, खाना बनाव। रविवार केर बरत करौ, गइया औ कन्या का खवाय के खाओ। अम्मा लउटि गईं अउर जस रवि देउता बताएन रहै वइसै कीन्हेन। अव उनके तीर एत्ता धन होइगा कि कहूं उठावै धरै केर जगह ना राहै। बहुरिया फिर सास तो बोली- 'अम्मा जाओ पूछौ कि नाई दीन्हेन तो नाईं दीन्हेन, देत, देत अस दीन्हेन कि कहूं उठावै धरै केर ठौर नाईं है।'

सास फिर गईं। अब की उइ सोने की पालकी मा बैठ के गयीं औ सीधे राज सभा मा चली गयीं। रवि देउता फिर पूछेन- 'अम्मा कइसे आई हौ?' अम्मा फिर हाल बताएन। रवि देउता कहेन कि हम धन राखै खातिर थौरै दीन है। वहिते कुंआ खोदाव, बावली खोदाव, धरमसाला बनवाव, कुंवारिन केर बिहाव करौ, बरुअन केर जनेऊ करौ। धन ई खातिर होत है। अम्मा अपने घरै आई अउर जस रवि देउता बताएन वैसेहे करै लागीं। जस उमके दिन वहुरे वइसे सबके बहुरैं।

## सोमवार की कथा

एक घर मां विटिया, बहुरिया अउर अम्मा रहती राहैं। रोज एक साधू बाबा भीख खातिर आवैं, अउर बिटिया का आसीसैं- 'धरम बाढ़े', अउर बहुरिया से कहैं- 'दूधो नहाओ, पूतों फलो।' एक दिन बिटिया अपनी अम्मा से बतायेस। अम्मा साधू बावा से पूछेनि। साधू कहेन कि तुम्हरी बिटिया केर सुहाग खण्डित आए। उपाय पूछै पर साधू कहेन तुम्हरे गांव मां सोना धोबिन रहती हैं। तुम्हरी बिटिया उन केर सेवा टहल करै तौ उनके आसीरवाद से सब ठीक हो सकत है। अम्मा बिटिया का यू सब बताएन। बिटिया रोज सबेरे उठि के सोना धोविन के घर मा झाड़ू लगावै, टहल करै। धोबी धोविन कहैं कि को आय जो एत्ते सबेरे उठि के हमार अत्ती सेवा करि रहा है। एक दिन सोना धोबिन सबेरे जागि गै। जब बिटिया आई तो वहिका हाथ पकरि के पूछेसि तुम को आहिउ? तब बिटिया सब हाल बताएसि। धोबिन ओहिका आसीरवाद दीन्हेन अउर कहेन कि जब तुम्हार बिहाव होय तो हमका जाकर बोलाएव।

जब बिटिया केर बिहाव भा तब सोना धोबिन बोलाई गईं। धोबिन अपने बच्चन से कहेन कि अगर तुम्हरे पिता का कुछ होइ जाय तौ जब लग हम न लउटी तक तक कुछ न कीन्ह्यो। यू कहि के

ोना बिहाव मा चली गयीं। भंउरिन के बखत सोना धोबिन बिटिया का आपन सोहाग दीन्हेन। जैसेहे ोहाग दीन्हेन वैसेहे धोबी केर अनभल होइगा। अब घर के लोग जल्दी-जल्दी धोबी केर लहास लइ जाये ाग कि अगर सोना का पता लगि जाई तौ उइ उनके साथ सती होइ जइहैं। रस्ते मा उनका लौटत सोना मेलि गयीं। पूछै पर पता लाग कि धोबी तौ सोना के मनई आय। बस सोना पीपल के पेड़ के नीचे लहास खाय लीन्हेन, बिहाव के घर ते जो मिठाई मिली राहै वहिकै एक सौ आठ टुकड़ा कइके पीपल केर फेरी ीन्हेन। फिर कानी अंगुरिया चीर के पति की लहास पर छिरकेन तो उइ जी उठे। तब ते सोमवार केर व्रत रखिके पीपल केर फेरी दीन जात है। जइसे उनके दिन वहुरे वइसे सबके बहुरैं।

## ंगलवार की कथा

एक महतारी बेटा राहैं। महतारी हर मंगल का व्रत करै। ओहिके बेटवा केर नाम मंगलिया रहै। मंगल के दिन न वा घर लीपै न माटी कूटे। एक दिन वहिके घरै मंगल देव साधू महराज केर रूप धरि के आए औ बोले- 'हमका बड़ी भूख लागि है। हम खाना अपने हाथ बनाइत है। तुम चौका लगाय के आटा दइ दियो तो तुमका बड़ा पुन्य होई।' बूढ़ा बोलीं- 'हमार तो आज मंगल केर व्रत आय। तौ हम तो जमीन लीप नाई सकित है। हां, पानी छिड़क कै चौका लगाय सकित है। आप रसोई बनाय लियो।' मंगलदेव कहेन- 'हम तो गोबर ते लीपे चौके मा खाना बनइबै।' बूढ़ा कहेन- 'तब तो लाचारी है, यहिके अलावा जौन आप कहो तौन हम करि देई।' मंगलदेव कहेन- 'सोचि लेव हम जो कहब तुम करि लेइहौ?' बूढ़ा कहेन- 'हां, जरूर करि देब।' मंगलदेव बोले- 'अपने बेटवा मंगलिया का बोलाओ, वहिकी पीठी पर हम भोजन बनइबे।' बूढ़ा घबराय गयीं। मंगलदेव कहेन- 'अब का सोचि रही हौ?' बूढ़ा पुकारेन- 'मंगलिया! मंगलिया, मंगलिया तुरन्तै आयगा।' मंगलदेव महतारी से कहेन कि मंगलिया की पीठ पर कण्डा सुलगाय दो। महतारी मन मां मंगलदेव का प्रणाम करत भई बेटा की पीठ पर कण्डा सुलागय दीन्हेसि अउर कहेसि- 'महराज अब आप भोजन बनाय लियो। हम दूसर काम देखि लेई।' जब भोजन बनिगा तो साधू महराज बूढ़ा ते कहेन- 'अपने बेटा का बोलाओ परसाद लइ ले।' महतारी बोली- 'वहिकी पीठ पर तो आप भोजन बनाए हैं। अब आप परसाद लइ के अपने धाम पधारौ।' साधू बाबा तबौ बोले कि बेटा का बोलाओ। तब महतारी मंगलिया-मंगलिया पुकारै लागीं। एतने मां मंगलिया सामने आयके ठाढ़ होइगा। साधू महराज बोले- 'अम्मा तुम्हार मंगल केर बरत सफल होइगा। तुम्हान मन मन दया भाव है, तुम्हार कबहूं अनेठ नाइ होइ सकत है। वर मांगौ।' बूढ़ा कहेन- 'हमका याहै वर देव कि आज से अइस कड़ी परिच्छा कोउ की न लेव।' साधू महराज वरदान दइ के वापिस चले गे। महतारी बेटा सुख से रहै लाग।

## बुधवार की कथा

एक गांव मां एक बनिया रहत राहै। ओहि केर परिवार गरीब राहै। जौन कुछ कमाय के लावै तुरतै खर्च होइ जाय। बनिया बहुत परेसान होइ कै यहिका उपाय पूछेसि। पंडित बतायेन कि बुध केर बरत करौ। हीर चीजन केर दान देव, गणेशजी केर पूजा करौ। बनिया अइसै करै लाग, अउर धन कमावै परदेस चला गा। घर मां वहिकै दुलहिन रहिगै। बुधवार के दिन वहिके एक लरिका पैदा भा। बारह साल के बाद वह बनिया खूब धन कमाय के घर लउटै लाग तौ ओहि की बैलगाड़ी बालू मां फंसि गयी। बहुत कोसिस कीन गै मुल बैल टस से मस न भये। गांव के पंडित बोलाये गे। उइ बतायेन कि बुधवार का पैदा भवा बेटवा बैलगाड़िन मां हाथ लगाय दे तो गाड़ी चलि सकत है। गांव केर एक बूढ़ा बतायेन कि बुधवार का तो तुम्हरै लरिका पैदा भा है। वहिका बोलाय ल्यो। बनिया अपने घर गवा। देखिस एक सुन्दर बालक ठाढ़ है। तब वह बालक का अपने साथे लइ गवा, बालक जइसेहे गाड़ी मां हाथ लगायेस गाड़ी चलि गै।

बनिया घर पहुंचि के बहुत दान पुन्य कीन्हेस, बालक केर सब संस्कार करायेस, सब लोग सुख ते रहै लागि।

## वृहस्पतिवार की कथा

एक गांव मां एक बहुत धनी मनई राहै। वहि की घरवाली राहै बड़ी कंजूस। एक दिन वृहस्पति के दिन एक साधू आय के भिक्षा मांगे लागि। वा घरैतिन आंगन लीपत रहै। बोली महराज हमार हाथ खाली नाई है। साधू चले गे। दुसरे दिन आये तो बोली हम बच्चा खेलाय रही हन, हमका फुरसत नाई है। साधू बोले, 'अगर भगवान की किरपा से तुम्हरे तीर फुरसत होइ जाई तब भीख देहौ?' वा बोली- 'हां महाराज!' साधू बोले वृहस्पतिवार का सब कूड़ा करकट एकट्‌ठा कइ के भैंसन के थान पर लगाय देव, वृहस्पति का मूड़े से हनाव, घर के मनई दाढ़ी-बार बनवावैं, तेल लगावैं। खाना बनाय के चूल्हे के पाछै राखौ। संझा का देर मां दिया जराओ। तुम्हार धन कम होइ जाई, तुम्हरे तीर फुरसत होइ जाई।

अब वा घरैतिन अइसै करै लाग! एक महीना मां सारा धन बिलाय गा। वहि के घर खाये का न जुरै लाग। एक दिन वहै साधू बाबा आए। आवाज लगायेन हरिहर भिक्षा देव। वा दौरी-दौरी आई औ साधू के सामने जमीन मां लेटि गई। बोली- 'तुम तो अस बताय गयो कि हमरे खाये का नाई जुरि रहा है। अब भीख कैसे देई।' साधू बोले- 'जब तुम्हरे तीर सबै कुछ रहै तब तुम्हरे तीर फुरसत न राहै, अब फुरसत है तो भीख नाईं दै रही हो। अब तुम्हार का मरजी आय?' वा बोली- 'महराज अइस कइ दियो कि सब पहिले जइस होइ जाय।' साधू बोले- वृहस्पत का कबहूं सिर न धो, मनई हजामत न बनवावै, घर केर सफाई राखौ, संझा बेरिया दिया जराओ। पीली चीजन से बिसनू भगवान कै पूजा करौ। बहिनी भांजे का मान करौ। भूखे का दाना पानी दिया। तब घर मां धन धान बढ़िहै। अब वा अइसेहे करै लागी। थोरे दिन मां घर अन्न-धन-जन से भरिगा। सब लोग सुख से रहै लाग।

## शुक्रवार की कथा

एक कायस्थ और साहूकार के लरिकन मॉं बड़ी दोस्ती राहै। साहूकार के बेटवा का गौना नाईं भा राहै। संझा बेरिया जब दूनों अपने-अपने घर जाए लागैं तब कायस्थ का लरिका कहै- 'हम घर जइबे तो हमका पलंग बिछा मिली, खाना तैयार मिली, पान केर बीड़ा मिली, पत्नी स्वागत करिहै। हां, तुम जइहौ तो कोउ खाना परस देई, तुम खाय के चुप्पाई मारि के सोय जायो।' ई सुनि कै साहूकार के लरिका का मनौ अपन दुलहिन लावै का होइ गवा। वा ससुरार जाये का तैयार होये लाग। ओहिकी अम्मा कहेन- 'शुक्रास्त होइ गवा है, ऐसे मॉं बिटिया की बिदाई नाई होत है।' मुल वो न मानेस, अउ ससुरारि पहुंचि गा। ससुरारि वाले भी ओहिका समझायेन कि भइया शुकवा उदय होइ जांय तब लइ जायो। मुल वा लरिका कैसे हूं नाई मानत राहै। हारि के ससुरारि वाले बिटिया बिदा कइ दीन्हेन। रस्ते मॉं उनका शुक्रदेव मनई केर रूप धरि के मिले। कहेन या हमार दुलहिन आय। एहिका कहां लीन्हे जात हौ? लरिका कहेस- 'हमार इनसे बियाह भा है।' दूनों झगड़ै लाग। गांव मॉं पंचाइत बइठी राहै। दूनों लड़त-लड़त होइं पहुंचे। शुक्रदेव बोले- 'जब लग शुक्रोदय न होइ जाय तब तक कन्या केर गौना नाई होइ सकत। तब वा बियाह के बाद हमरी ही पत्नी मानी जात है।' पंचाइत के पंडित शुक्रदेव की तरफ से बोलै लाग- 'कहेन अब ही बिटिया का मइके पठै आव। जब सुकवा उदय होइ जांय तब गौना कराय लीन्ह्यो।

लरिका अपनी बहुरिया का वापिस मइके पहुंचाय आवा। गौना के बाद दुलहिन घर आयी। औ सब जने सुख से रहै लाग।

## शनिवार की कथा

लछमी जी की बहिनी का नाम दरिद्रा आय। दरिद्रा केर बियाह एक मुनि से कइ दीन गा। मुनि बड़े महात्मा राहैं। जब उनके घर संख बाजै, पूजा होय तो दरिद्रा रोवैं लागैं। महात्मा बिचारे बड़े दुखी होंय। एक दिन उइ दरिद्रा से पूछेनि कि हम का कौन करी जेहि से तुम सुखी हो। दरिद्रा कहेसि- 'पूजा, जप, तप से हमका बड़ी चिढ़ आय। सबका दुःखी देखि कै हमका बड़ा सुख होत है। ई सुनि के महात्मा जी ओहिका साथ लइ के गे अउर पीपल के पेड़ पर बैठाय दीन्हेन। महात्मा कहेन तुम हियन रहौ, हियन तुम्हार मन लग जाई। दरिद्रा पेड़ पर बइठी रोवैं लागीं। बड़ी बहिनी लछमी जी सुने तो बिसनू भगवान ते बोलीं- 'जनौ दरिद्रा का मुनि घर ते दीन्हेन है, तबै वा रोय रही है।' बिसनू जी बोले वा तो कुलच्छिनी आय, पूजा भजन मों बिघन डारत होई, यही मारे निकारी गै होई। कुलच्छिनी खातिर अकेलेपन से बढ़ि के कौनो दूसर सजा नाई होइ सकत है। पीपर पर सब देवतन केर बास होत है। जो कोउ सनीचर के दिन सूरज उगै ते पहले पीपर केर पूजा करत है वहिका कुलच्छिनी कबहूं नाई सताय सकती हैं। सनीचर के दिन संझा बेरिया पीपल के नीचे दिया जरावै से घर-धान, मान, लरिका बच्चन से जगर मगर करत रही।

# लड़िकिन के सराप

एक बाभन रहैं, ओकरे सात ठू कन्या रहैं। बाभन बहुत गरीब रहैं। वे जौन भिक्षा-भवन मांगि के लै आवत रहैं, ओका उनके सातौ लड़की सब खाय लेंय और बाभन-बांभनी का कुछ ना मिलै। ऐसेन रोज होय जाय औ बाभन दुइनो परानी उपवसहै सोय जात रहैं। एक दिन बाभन फिर भीखि मांगि कै ल्यायें तौ सोचेन कि आजु ऐका कौनौ लरिकन का न देबै, हम दुनौ परानी खाब। बाभन ई सोचि कै रात मां जब सब लरिकनी सोइ गयीं तो खीरपूरी बनवै कै नटारम केहे। मुला कराही बड़कई लड़िकिन धरे रहै, तौ ओका चुप्पे से जगाय लेहेन कि और लड़किन न जागि जांय। जब कराही चढ़ी तों पूरी बेलै वाला पीढ़ा छोटकई लड़की अपने पास लैके सोवति रहै, बाभन ओहू का चुप्पे से जगाय लिहेन। यही तरह से सब लड़किन एक-एक सामान लैके सोवति रहैं, बभनउ का सब लड़किन का जगावै का परा, सब लड़किन जागि के सब पूरी खीर बनाय खाय लिहीं। बाभन दुनौ परानी फिर रहिगे। बभनउ बड़े गुस्सा भयेन और सब लड़िकिन का राजा की फुलवारी मा छोड़ि आयेन। जब राजा को रखवारे आयेन तो उन सबका बगिया मां देखि कै डरि गयेन और गुस्सौ भयेन, जाय के सजा से तुरतै बतायन। राजा अज्ञा दै देहेन कि इन सातों को ऊपर गरम गरम तेल छोड़ि कै मारि डारा। यह पै धंई बाग कै माली तयार न भा। तब राजा कहेन कि माली सहित इन सातों बहिनिन का गरम तेल से मार डावा। भाई राजा के आज्ञा पूरी कीन गै। सातौ बहिन तथा माली छटपटाय-छटपटाय के जरि-मरि गे। लड़िकिन मरत कै बेरिया राजा का शराप दिहिन कि जैसे हम मरति अही वैसेन तोहाय सब प्रजा जरि-मरि जाय। हमहूं सातौ बहिन हर साल तोहरी राज मां नाना प्रकार के बीमारी लै कै आउब और तोहरे सगे सम्बन्धी और परजा का जराय जराय कै मारब। जैसेन हमरी देही मां फुटका परि गा है वैसेन सब की देही मां फुटका परे। जे हमाय पूजा करै ओकै हम सहायता करब। गुस्सा भये पै हम माली कै मनाये मानब। बगिया मा हमाय चौतरा बनवाय कै लाल लाल फूल लगवाय दिहा। नीमि कै पेड़े पर हमाय वास रहा करी। लपसी पूरी औ खीर से जे हमाय पूजा करै और माली कै सनमान करे ओका हम तकलीफ न देबै।

# देवरानी जेठानी

एक देवरानी जेठानी रहैं। देवरान बहुत गरीब रही औ जेठानि अमीर। देवरानि अपनी जेठानि कै सेवा-सांसति अउ चौका बरतन करति रहीं। जेठानि जौन चूनी-चोकर छूटन छांटन दै देति रहीं वही से देवरानियउ आपन तथा अपने मनई कै पेट जियावति रहीं। देवरानियउ के एकौ लरिकौ-परिकौ नाहीं रहैं। एही से देवरानियउ बहुत सोच मा रहति रहीं। रोज सबेरे आयके जेठानी कै चौका-बरतन, गोबर-पानी कै जाति रहीं। एक दिन संकठा महरानी कै बरत आवा। गांव कै सब मेहरारू ब्रत किहीं, देवरनियउ के मन मा आवा कि हमहूं ब्रत रही। उनके मनइयउ समझायें कि घर मा कौनौ फल-फरहार तौ नाहीं ना ब्रत जिन रहा। मुला वै ना मानीं। दिन भै बिना कुछ खाये पिये भूखी रहीं, संझा की टेम जेठानि के हिंया कै चूनी चोकर कै रोटी पोय डार्यी और दुइ रोटी सबेरे खाय की खातिर धइ दिहीं, बिस्तरौ ठेकाने से न रहै किसी तरह से कथरी-गुदरी लपेट के सोइ गयीं। रात मां एक बुढ़िया आई इनके केवांरा खटखटाइस औ कहिस कि हमरे बहुत भूख लागि अहै, देवरानि कहिस कि घर मा और तौ कछू अहै नाहीं जौन रोटी अपनी खातिर धरे अही जा खाइ लिया। बुढ़िया सब रोटी खाइ लिहिस। खाये के बाद कहिस कि हमरे तौ टट्टिउ लागि अहै। देवरानि कहिस की बूढ़ा अंगना मां टूटटी कइ लिया, हम सबेरे साफ कइ लेब हम उठ न पाउब बहुत जाड़ लागि अहै। बुढ़िया ओकरे घरे भर मां अंगना भीतरे कुलि टट्टी कई दिहिस अउ केवांरा खोलि कै चली गइ। सबेरे जब वे उठी त देखी कि बुढ़िया कै टट्टी सब सोना चांदी होइ गै अहै। वे बहुत खुश भईं और जानि गईं ये और केहू नाहीं संकठा माइन अहीं। वाही दिन से ओके दुःख छूट गा। जेठानी कै हिंया चौका बरतन करब छूट गा। संकठा माई ओका दूसरे दिन सपनाय देखाईं कि लाइ गुर औ चना एकै मां मिलाय कै सात सुहागिन मेहरारू का चबवावा तौ तोहरे लरिकौ पैदा होइ जाई। तब उ तुरन्तै सबेरे उठि कै सपन वाली बात किहिस औ ओकरे बेटवा भया। संकठा माई जैसे येकै कल्यान किहीं वैसेन सबकै करैं।

# सात सोहागिन

एक राजा रहैं औ उनकै रानी रहैं। राजा के एकौ लरिका न रहै। उमिरि बीति गै बुढ़ाई बेरा आयगे तौ राजा रानी बहुत चिन्तित भै। न कुछ खाय जाय न पी जाय। देहि पियर होइगै। एक रात रानी चिन्ता मा परी रहैं त उनका सपन देखान। सपने मां एक बुढ़िया आयी और कहिस कि तू हमाय 'पींड़ि' सात सोहागिन न्योति कै खवाइ देहे, तोहरे बेटवा होये। रानी का सुनतै चैत होइगा, वे तुरन्तै 'अवसान देवी' कै पीड़ि मान लिहीं कि जब हमरे सन्तान होये तो हे अवसान देवी तोहाय पीड़ि हम सात नाहीं चौदह सोहागिन का खवाइब। फिर का नौ महीना बाद राजा के बेटवा भा, बहुत उछाव-बधाव भा, लेकिन रानी अवसान देवी का पीड़ि न खवाईं। औ कहीं कि लड़िका कै बिआहे मा खवाइब। अब दुलहा बिअहै जाय लाग तौ अवसान देवी फिर बुढ़िया के भेस मा आईं, औ रानी से कहीं कि करे कतौं हमरिव गिनती बा। रानी बहुत परेशान रहीं तुरन्तै बुढ़िया का डाटि लिहीं कि बड़े-बड़े राजा दइउ कै तौ गिनित नाहीं ना तोहाय कौन बात। बुढ़िया रोआसी होइगै। बरात बिदा भै, जब रात मा भांवरि होय लागि तौ छ भंवरी बाद सतई मा दुलहा गिर गा। मरत की दुलहा कहिस कि हमाय लहास मिंयाना सहित फूले की बगिया मा धै दीन जाये, गाड़ा न जाय। उहै कीन गा। बगिया मा मिंयाना धरा रहे तौ दुलहा रोज रात महें बारह बजे उठि कै टहरै और फिर दिन होत मिंयाना पै परि जाय। जब उ लड़की आये जौने से बिआह होत रहा तौ ओसे बातचीत करै अउ पानी भरै त दौड़ के नहाइव लेय। अइसे होत बहुत दिन चला गा। एक दिन दुलहा कै सासु देखि लिहिस तौ दुलहा सब हाल बताइस औ कहिस कि हम यस न मिलब अवसान देवी जब बगिया मा सबेरे आवैं तौ बगिया सींचि के हरी-भरी केहे रहा, जब वे खुश होइ जइहैं त हमैं मांग लिहिउ। रानी औ रानी कै बिटिया ऐसेन किहीं। जब अवसान माई आईं तौ गोड़ पकड़ि लिही माई बिटियउ। आपन सब हाल बताईं तौ अवसान देवी दुलहा का जियाय दिहीं और कहीं कि हमाय पीड़ि जौन दुलहा कै माई मान के नाहीं खवाई उहै बदे ई सब भा। अब तुरन्त हमाय मानता कै डावा। रानी अवसान देवी कै पीड़ि सबेरहिन खवाय दिहीं औ सब कोइ सुख से रहै लागेन। जैसेन उनकै दिन बहुरेन वैसेन अवसान देवी सब कै दिन बहुरावैं।

# कालिका भवानी

कालिका भवानी एक दिन कउनेउ कारन से रिसहीं परि गईं। फिर काव देखा वे तुरन्तै एक हाथ मा खप्पर और एक मां तलवार लैकै चलि परीं। जेहिन रस्ता मा मिलि जाय वही कै मूड़ काटि लेंय, खून पीकै औ मूड़ कै माला बनाय कै पहिर लेंय। इहै गति जेहिन का पाय जांय वही कै करैं दुनिया मा हहान-खहान मचि गा। सब मारे डर के लुकान-लुकान फिरैं लागैं। शंकर जी का ईं देखि के बहुत तकलीफ भै। वे कालिका देवी कै जेठउत लागत रहैं। तुरन्तै आयकै कालिका देवी की रस्ता मा आंख मूंदि कै परिगे। कालिका जस दौड़त की आवति रहै, शंकर जी के ऊपर लात परिगा। जब नीचे देखी तौ शंकर जी। उनकै जीभि अफसोस मा निकरि आई, बहुत दुख भा। शंकर जी कहेन कि हमाय कहा मानौ त अब ई काम बन्द कइ देउ। शंकर जी कै कहतै उनकै गुस्सा हेराय गै औ वे तुरन्तै चली गईं।

# सास पतोह

एक सास पतवह रहैं। उनकै बेटवा बैपार करै बहुत दूर चला गा रहै बहुत दिन से खोजै खबर न लिहिस। पतोहियऊ सासु का डार्टीं कि जाय के कतहूं से पता लगावा। सासु बुढ़ापा रहै, बेचारी रोवत गावत एक जंगल का बहुत दूरि निकरि गै। जाति जाति जंगल मा एक घर मिला, बूढ़ा ओहि के पिछवारे जाय के रोवै लागीं। रोउब सुनि के वहि घरे कै मलकिन दौड़ी आईं और बूढ़ा कै हाल चाल पूंछि कै अपने घरे लियाय गै। बूढ़ा का समझाय बुझाय के बैठाइस। एतने मा मलिकिन कै एक बेटवा आयगा। मलिकिन कहिस कस बेटवा आजु तौ जल्दी आय गया। बेटवा कहिस हां माई हमका जल्दी अंचरे से हौंकि के उड़ाय दिहीं हम चला आये। मलिकिन कहीं कि जैसे हमरे बेटवा का जल्दी बिदा कै दिहीं वैसे उनके घर मा रुपया, पैसा भरा रहै दुःख न होय। दूसर बेटवा आवा त बताइस कि हमका एक चट्ठा मारि के बिदा किहिस रोवत चला आवत अही। मलिकिन कहीं कि उनकै हाथ टूटि जाय और रुपया पैसा से वै मुहताज ह्वै जांय। तीसरवा बेटवा आवा तौ कहिस हमैं ऊपर तौ थूंकि कै मुहे से फूकि कै बिदा किहिस। मलिकिन कहिस कि उनके मुंह मा कीरा परि जाये। चौथवा आवा त कहिस हमैं तौ बड़ी बेर मा बिदा किहिस, बात करत करत सोइ गै जब जागिस तौ गुस्सा मा फूंक दिहिस। मलिकिन कहिस कि ओनहू कै बेटवा बहुत दिन बाद मा बहुरै। पंचवा आवा त कहिस कि हमका तो बहुत खुशी मन धरम मनावत की बिदा किहिस। मलिकिन कहिस कि उनके घर मां सुख, धन-दौलत भरा रहै। बुढ़िया

ई सब बात बैठि सुनति रहै। ई मलिकिन और केहू नाहीं लक्ष्मी अहीं और बेटवै घरे कै दिया अहैं। जे दिया ठेकाने से नाहीं बुझउतै ऊ दलिद्दर होइ जाथै। जे देर मा बुतावा थै ओकै लड़िका बहुत देर मा परदेस से लौटा थै। बूढ़ा तुरन्तै आयीं अपने घर औ अपने घरे मा दिया-बाती सुरुज अथवतै लेस देय लागीं औ जल्दी खाय पीकै बुताय देंय लागीं। उनकै बेटावा तुरन्तै कुछ दिन मा बहुत रुपया पइसा लैके लौटा। लक्ष्मी जैसे इनकै दिन बहुराईं वैसे सबकै बहुरावैं।

# संतोषी माता

एक देवरान जेठान रहीं। जेठनियउ कै मनई बहुत दिन से परदेस गा रहै। न तो उ कबौ चिट्ठी-पत्री देय औ न कबौ अउबै करै। जेठनियउ बहुत चिन्ता मा रहीं। एक रात जब वै बहुत चिन्ता मा भईं तौ सन्तोसी-माई सपनाय देखाई कि तै हमाय पूजा करति रहे लेकिन अब भुलाय गये यही से तोर मनई नाहीं आवत अहै। जेठनियउ सुनतै खुश होइ गईं। सब पूजा कै सामगिरही जुहाय के शूक का सन्तोषी माई कै बरत ठानि लिहीं। नहाय धोय कै धूप दीप किहीं फिर उनकै किहानी कही-सुनी। चना की दाली कै परसाद बांटी दिन भै बरत रहीं। मुला जब वै परसाद बांटी तौ देवरनियउ अपने गदेलन का खट्टा चीज खवाइ दिहीं उनकै बरत भंग होइ गवा। राति मा जेठनियउ का फिर संतोषी माई सपनाय देखाई कि खट्टा खाये से तोर बरत भंग होइ गवा। जेठनियउ का बहुत दुःख भवा फिर जब शूक आवा तौ जेठनियउ बड़े विधि विधान से संतोषी माता कै पूजा किहीं औ कौनों गलती न होय पाई। यही तरह वे पांच शूक बरत रहीं और संतोषी माई कै पूजा किहीं। संतोषी माई पूजा से खुश होइ गईं औ पूजा पूर होतै ओकै मनई घरे आय पहुंचा। जेठान बहुत खुश भै। ई.देखि कै देवरनिउ संतोषी माई कै बरत रहै लाग। औ उहौ अपने मन कै लालसा संपूरन कइ लिहिस। यही तरह जैसे उनके दिन बहुरा वैसेन संतोषी माई सबकै दिन बहुरावैं।

# गरीब गुवालिनि

एक गरीब गुवालिन रहै, ओकरे नइहर न रहै, यही कारन से ओकै सास ननद ओका ताना मारा करैं कि तोहरे त केहू हइयइ नाहीं ना। गुवालिन बहुत दुखी रहै। एक दिन उ गरजबीबी कै व्रत रही औ उनसे मांगन मांगिस की हमका नइहर देउ। गरजबीबी परसन्न होइ गईं और एक लरिका गुवालिन का आनै आइगा। गरजबीबी की किरपा से गुवालिनि अपने मनईव का साथ लैकै गय। तीन दिन तक सब केहू खुशी खुशी रहेन, चौथे दिन मौसी से बिदा मांग कै चल परेन। चलत कि मौसी खूब रुपया पैसा धन दौलत दै के बिदा किहिस। रस्ता मां जौ दुइनौ जने आयन तौ लालच बाढ़ि गै औ फिर लौट गें। जब

फिर लौटि के गयेन त हुवां घर दुआर कुछ रहबै न करै। दुइनौ जने रोवे लागें। ई सुनि के गरजबीबी प्रगट हुइ गईं और उनका समझाय बुझाय के सबदिन का मइका दैकै चली गईं। गुवालिन अपने मइका मा आवै जाइ लागीं। ओकै ताना सुनब खतम होइगा। गरजबीबी कै पूजा ब्रत जेहिन रहैं वोहिन कै दुख ऐसेन दूर होय जाये।

## शंकर पारबती

एक राजा के सात बेटवा रहै मुल बिटिया एकै रहे। सातौ भाई बहिनी का बहुत प्रेम करत रहैं औ बहुत चाहत रहैं। जब बहिनी कै बिआह होइगा तो करवा चौथ पड़ी औ उ भूखी रहिगै। संझा होत होत बहिनी कै मुंह भूख-पियास से झुराय लाग। तौ एक भाई से न रहा गवा, उ ज़ायके एक पेड़े पै चढ़ि कै लुकाठा देखावै लाग, सब भाइन कहें कि चन्दा उई आवा जब पूजा करिकै अरघ दैके पानी पी लिहिस। कुछ देर मा बहिनी कै सासुर से नाऊ आवा और बताइस कि उतौ बिधवा होइगै ओकै मनई मरिगा। घर मा रोवना पिटना परिगा, ऊ तुरन्तै अपने ससुरे कै राह रोवत पीटत धै लिहिस। ओही रहता की गौरा पारवती औ शंकर भगवान जात रहैं। ओके रोउब सुनिकै पारबती कहीं कि महाराज तनी देखा तौ कौनउ दुखियारी बहुत रोवत बा। महादेव कहें कि इतौ मृत्त लोक आ, येका का करबू। तोहाय मेहरारू कै जात चली चला। पारबती कही नाहीं महराज येका हमैं बतावा। महादेव कहें कि एकै करवा कै बरत खंडित होइगा अहै ऐसे एकै मनसेधू मरिगा। अब ई सती होय जाति बा। पारबती कहीं इतौ महराज गजब भा, एकै दुख दूर करा, कौनो उपाय बतावा। शंकर भगवान कहेन कि जौ ई अपने मनसेधू कै माटी राखि लेय औ गौरा पारबती-गनेस देवता कै पूजा करै औ फिर जब करवा चौथ आवै तौ विधान से भूखी रहै तौ येके मनई जी उठी। उ लड़की सब बात सुनति रहै। ससुरे मा जायके जैसेन शंकर जी पारबती बतलान रहें वैसेन किहिस ओके मनई जी उठा। शंकर पारबती जैसेन यह लड़की कै दिन बहुरायेन ऐसेन सब कै बहुरावैं।

## गौरा पार्वती

गौरा पारबती औ महादेव रहैं। एक दिन महादेव बाबा सबेरहिन उठे औ पारबती से बिना बतायेन कतहूं चला गे। पारबती दुपहर भै लखीं जौ महादेव न लौटेन तौ अपनी देही से थोरि कै मैल निकारिकै एक पांच बरिस कै लरिका बनै कै दुआरे बैठाय दिहीं औ लरिका से कहि दिहीं कि केहू घर कै भीतरी आवै न पावै हम नहाय चलित अही। पारबती जी तौ हुंआ नहाय मां जुटि गईं औ हिंया शंकर जी आय परेन। जब वे घरे मां घुसै लागेन तौ उ लरिका रोकि लिहिस। शंकर जी भल-भल कहेन लेकिन भीतर न जाय

पार्येन, उनके रिस लागि गै औ तुरन्तै तिरसूल से ओकै मूंड़ काट डारेन। जब भीतरी गयें तो पारबती दंग होइ गयीं, औ लरिका मरा देखि कै रोवै लागीं। शंकर जी बहुत समझायन-बुझायन लेकिन न मानी रोवतिन रहि गईं। शंकर जी तुरन्तै ब्रह्मा जी का बोलायन औ कहेन कि यहिका जियाय दूया। शंकर जी कै बात ब्रह्मा कैसे काटि सकत रहैं, तुरन्तै जंगल की ओर दौड़िगे। जंगल मां उनका और कुछ न मिला एक हाथी कै बच्चा मिला, वही कै मूंड़ काटि लिहेन। ई देखतै त हाथी ब्रह्मा कै गोड़े पै गिरि परा औ कहिस कि महराज हमरे एकै लरिका रहा तू ई का केह्या। ब्रह्मा कहेन अबतौ जौन होय का रहा तौन होइगा, लेकिन ई मूंड़ जेकरे लागे वोकरे साथेन हांथिउ कै पूजा होवा करै। ब्रह्मा हाथी कै मूंड़ लायकै देही से जोड़ देहेन, लरिका जी गवा। लेकिन हाथी कै मूड़ देखि कै पारबती बहुत दुखी भईं। तब ब्रह्मा औ शंकर दुइनौ जने कहिन कि तू दुखी न होवा आज से इनकै नांव गनेश अहै औ सब देउतन से पहिले इनकै पूजा होये। बिना पहले इनकै पूजा केहे कौनौ काम केहू कै सिद्धि न होये औ न कौनौ जग्गि न होय पाये। जे इनकै पूजा करै ओका कौनो दुख तकलीफ न होये। तब से गनेश जी कै पूजा बहुरा चौथ से होय लागि।

## हनुमान जी की कथा

हनुमान जी राम कै औ सीता जी कै बड़ा भगत रहेन। इनकी महतारी कै नाव अंजनी रहा, औ वे भगीरथ कै बिटिया रहीं। बिधिना उनके भाग मां लिख देहे रहेन की कुंवारेन मां तुमका अकलंक लागे। जौ उनके बाप का यहि बात कै पता चलिस तौ वे अंजनी का रहै बरे समुन्दुरु मा महल बनवाय देहेन और उनका रोज पांच पांच फूलन से तौला जात रहा, ई देखै का कि कौनों कलंक लागि की नाहीं। एक दिन शंकर जी समुन्दुर मा दतुइन करैं गे औ खेंखार के एक दोना मा थूंकि देहेन। उ दोना बहत बहत हुंआ पहुंचा जहां अंजनी कुल्ला करति रहीं। भगवान कै मरजी उ उहै दोना कै थूक भूले मा कुल्ला कै लिहीं। बस उनका अब तौ कलंक लागि गा। जब सबेरे पांच फूले से तौली गईं तौ बहुत फूल चढ़िगे। कुल दुनिया मा हल्ला होइगा कि अंजनी का कलंक लागि गा। भगवान कै लिखी बात कैसे मेटि जाय। नौ महीना बादि राति मा हनुमान जी पैदा भे। वै पैदा होतै भूख भूख केहेन औ कहेन कि तनिक हमका दूध पियाय दूया। महतारी कै मया वै छाती उनके मुंह मा लगाय दिहीं। हनुमान जी एतना जोर से दूध खींचेन कि अंजनी कै पंसली-पंसली चूर होइगै। अंजनी कहीं कि हमका छोड़ि देव सबेरहिन एक लाल पियर फल निकरे वही का खाय लिह्यो। जब भोरहीं लाल लाल सिवता (सूर्य) निकरा तो वै ओका उछरि कै पकड़ि लेहेन। पकड़तै तीनिउ लोकन मा अंधेरा होइगा। संकर जी दौड़ि पड़ेन। भस्मासुर ते कहेन कि नाच देखाओ। भस्मासुर जैसेन नाचै का आपन हाथ मूंड़े पै धरिस वैसेन भसम होइगा। ई देखि कै हनुमान जी हंसि परेन औ सिवता मुंह से निकरि परेन, कुल उजेरु होइगा। फिर अंजना कै बिआह केसरी राजा से होइगा। ऐहि के मारे हनुमानजी का संकर सुअन केसरी नन्दन कहा थै। यई हनुमान जी बाद मा भगवान कै बड़ा भगत निकरि गै। सीता मैया कै खोजि यइ केहे रहेन, बाद मा लंका जारि कै रावन कै बध करावै मा भगवान कै सहायता केहेन। इनकै पूजा केहे से भगवानौ खुश होइ जाये। भूत परेत तौ इनके नाव लेहे सौ जोजन दूरि होइ जायँ।

# कंस देवकी

एक राजा रहेन। उनके बेटवा कै नाव कंस औ बिटिया कै देवकी रहै। कंस बहुत दुष्ट रहै, उ गउ बराह्मन, साधू सन्त सबका खलि गा रहै। अपने बापौ का मारि के जेहल मा बन्द कै दिहिस औ राजपाट लै लिहिस। कंस अपनी बहिनी कै बिआह बसुदेव के साथे कै रथ पै बैठाय पहुंचावै जात रहा। रस्ता मा अकासबानी भै कि तोहरी यही बहिनी के अंठवे गरभ से तोहाय मौत होये। कंस सुनतै बौराय गा औ तरवारि निकारि कै बहिनी का मारै दौड़ा। लेकिन बहिन बहनोय दुइनौ हाथ जोरिन कि मारा जिन जेतना लरिका होइहैं तुहैं लाय के दै देब उनका मारि डार्‌या। कंस मानि गा। तब से जब देवकी के लरिका होय बसुदेव कंस का दै देंय औ उ पटक कै मारि डारै। यही तरह सात गदेल कंस मारि डारिस अठवां गदेल जब होय का भा तौ देवकी बहुत दुखी भई रोवै लागीं। उनकै सखी जसोदा समझाई कि रोवा न तुंहका हम आपन गदेल दै देब हमाय कंस मारे औ हम तोहाय बचाय लेब। देवकी के जब गदेल होय कै टेम आई तौ कंस पहरा बैठाय दिहिस। राति की बारह बजे जेहल मा भगवान कृष्ण पैदा भे। पैदा होते बसुदेव देवकी कै हथकड़ी बेड़ी खुलि गै। भगवान आपन चक्र सुदरसन गदा सब कुछ लैके दुइनो जने का दरसन देहे औ कहेन कि हम तोहाय कष्ट मिटाय देब हमका लै चला जसोदा के लगे पहुंचाय द्‌या औ उनके बिटिया लै आवा कंस का दै दिया। आधी राति की पानी बरसत, अंधेरिया राति बसुदेव सूपे मा कै के भगवान का लैके चल परेन। रस्ता मा जमुना जी परीं, जैसेन बसुदेव नदी मा हिलेन वै बाढ़ि आईं, भगवान आपन गोड़ लटकाय दिहें तौ वे छूतै सुखाय गईं औ बसुदेव पार होइगे। जायके जशोदा की बगल चुप्पै भगवान का लोटाय देहेन औ बिटिया लैकै आय गयेन। कंस का मारै का दै देहेन। कंस बहुत गुस्सा होइकै जब ओके टांग पकरि कै पटकै का चला तौ उ हांथ से छूटि गै औ अकाश मा चली गै औ कहिस कि हमतौ विन्ध्याचल देवी अही वहीं जाति अहीं मुला तोहाय काल पैदा होइगा है। कन्हैया जी की जन्म-अष्टमी का जे उनके बरत रहा थै औ किहानी कहि के रात जागै थै वहू कै कष्ट देवकी की नाईं कटि जाथै। जे ई बरत आधा रहिकै छोड़ि दे थै वोहका बहुत पाप होथै।

# सात संपोला

एक सास पतवह रहीं। सासु पतोहू का रोज ताना मारैं कि तू तौ निरसंतानी कै बिटिया अहिउ तोहरे केहू नाहीं अहै तू कहां जाबू। पतवह रोज रोय के रहि जाय काहे कि ओकरे मायका ना रहै, महतारी बाप जे रहें वे मरिगा रहें। एक दिन ओके परोसिन बताइस कि तू नागपंचमी का नागदेवता के बरत रहा जब वे खुश होइ जइहैं तौ तुहैं मायका दै देहैं। फिर का नाग पंचमी अवतै उ पतवह नहाय धोय कै बरत रहिगै औ नागदेवता का जाउर लावा खियाइस और उनकै पूजा कै कै बरत रही। नागदेवता ओकरी पूजा से खुश होइगे औ ओकरे मन कै हाल जानि गे। सबेरहिन अपने बेटवा का ओकर लियाय लावै का पठै देहेन। नाग देवता कै बेटवा आवा औ कहिस कि हम तुंहका आनै का आवा अही। पतवह तौ जानिन गै कि वही बरत कै फल अहै। तुरन्तै सास से पूंछ के ऊ औ ओके मरद दुइनो जने तैयार होइगे। जब पतवह अपने मइके पहुंची तौ देखि के दंग रहिगै। सोने चांदी कै महल औ अनधन से घर भरा रहै। महतारी बाप सब सेवा करै का दमादै कै दौड़ि परेन। दुइनौ जने कै खूब सेवा होय लाग। बपउ औ केहू नाहीं वह नागदेवता रहें। जब वे बाहेर घूमै जाय लागै तो जौने मा उनकै बच्चे (संपोला) रहै ओका बताय देहिन कि इनका सबका खाय का दै दिहिउ औ संभार कै रहिउ। सात सपोला हौदा के तरे ढाका रहैं, जब वे ओका हटाय कै सफाई करै लार्गी तौ हौदा हाथे से छूटि गा और सातौ संपोलन कै पूंछ कटि गै। भा तौ बहुत अनरथ औ दुखौ भा लेकिन का करै। नागिन जौ आई तौ बहुत गुस्सा भै। तीनि दिन रहिके पतवह औ ओके मरद घरे जायका तैयार भे। नागिन बहुत सोना चांदी, रुपया पैसा दैके बिदा किहिस। जब पतवह सास के पास पहुंची तौ सास ई धन दौलत देखि कै दंग रहिगै औ ओका ताना देब छोड़ि दिहिस। पतवह के गये के बाद नागिन अपने संपोलन का देखि कै रोवै लाग औ ऊ ओका काटै पहुंचि गै। लेकिन उ देखिस कि ई मेहरारू तौ पहुड़त की संपोलन का धरम मनावौ थै, शान्त होइगै। सोवति की उ रोज कहा कहै कि "नाग बाढ़े नागिन बाढ़ै, नाग के सातौ संपोला बाढ़ै, भइया का भवनवा बाढ़ै, हमरौ सोहाग बाढ़ै, जा लक्ष्मी बास करा।" इ सुनि कै नागिन लौटि गै। नाग देवता कै पूजा केहे जैसे ओके दिन बहुरा वैसेन जे जे नाग देवता कै पूजा करे वहू कै दिन बहुरैं।

# चुरैल

एक राजा रहैं उनकी राजि मा एक चुरैल रहै। उ दिन मा तौ पानी मा रहै और राति में बाहिर निकरि कै मनई खाति रहै। यही तरह तमाम मनइन का ऊ खाय डारिस। राजा के एक कन्या रहै औ बहुत सन्दर रहै, चुरैल का वोहिका देखि के मन ललचाय गा। उ एक दिन आइ औ राति मा कन्या का उठाय लै गै। लेकिन खाय का मन न भवा। घर मा लै जाय के राखि दिहिस। एक दिन कन्या समुन्दुर मा नहाति रहै ओके मूड़े कै एक बार टूटि के बहत बहत एक राजकुमार का मिलिगा। उ बार एतना सुन्दर रहै कि राजकुमार मोहित होइगा औ कहिस की अब हम यही कन्या से शादी करब जे कै ई बार होये। राजकुमार घरे मां आयके मूड़ मूड़ कै के परिगा। खाना-पीना छोड़ि दिहिस। राजकुमार कै साथी वजीर जौ सुनित तौ आवा औ वहि लड़िकी कै तलाश करै लाग जेकर बार राजकुमार का मिला रहा। वजीर एक मनपवन नाव लैके वही मा राजकुमार का बैठाय कै खोजत खोजत वही चुरैल के दुआरे पहुंचिगा। एत्ते मा राजकुमारी नहाय के बरे घर से निकरी। राजकुमार का देखि कै लोभाय गै औ कहिस कि अबहीं जौ चुरैल होत तौ तुहैं खाय जात। खैर अब तौ आय गा अहा। वजीर राजकुमारी से शादी के बात चलाइस। कन्या बहुत खुश भै औ दुइनौ का माछी बनाय कै घर मा राखि लिहिस। सांझ की जौ चुरैल आई तौ मनखांय मनखांय किहिस। कन्या कहिस कि हिंया तौ केहू नांही अहै। चुरैल कहिस कि एकै चिन्ता न करौ हम केहू के मारे नांही मरि सकित। हमार परान कहां है को जानि सकत है। कन्या कहिस कि हमका बताय देओ तौ हमार फिकिर चली जाय। चुरैल कहिस कि हमरे अंगना के बीचे मा एक सन्दूक गाड़ी बा, वही के भीतर एक बिना धार कै फरुहा बा, जे हमरे मूड़ मा वही फरुहा से मारि कै खून निकारि दे तबै हम मरब। औ वही सन्दूक के बगल हमार धनौ-सम्पदा गाड़ी अहै। तू चिन्ता न करौ। जब चुरैल चली गै अपने शिकार की तलाश मा तौ राजकुमार औ वजीर निकरि कै चुपके कै फरुहा औ धन सम्पदा निकारि कै नाव पै लादि लेहेन। एत्ते मां जब चुरैल मनखांय मनखांय करत आई तौ वजीर और राजकुमार फरुहा से ओकरे मूड़े पै मारि कै खतम कै देहेन। जब उ मरि गै तौ सब धन दौलत औ राजकुमारी का लैके चला गे, बाद में दुइनौ के शादी होइगै औ सुख से रहै लागे।

# पंडित पंडिताइन

एक गांव मां एक पंडित औ पंडिताइन रहैं। पंडित बहुत गरीब रहैं। एक दिन पंडिताइन कही कि घर मां बैठे का करत हौ कौनौ काम धन्धा करै तबै काम चले। पंडित से न सुना गवा, एक कुल्हरा लैकें जंगल का निकरि परेन। जंगल मा जायके एक बबुर कै बिरवा काटै लागे। मुला वहि पेड़ पै तौ एक परेत रहत रहै। बुढ़नवा परेत तौ रहै औ बड़कवा बाहेर गा रहै। परेत पंडित से कहिस भाई पेड़ काहे का काटत हौ? पंडित कहेन फरुहा का बेंट बनउब। परेत कहिस फरुहा का करिहौ? पंडित कहेन खेत गोड़ कै धान बोउब। परेत कहिस वहि मा केत्ता धान होई? पंडित कहेन सौ मन। परेत कहिस सौ मन ध ाान हमसै लै लीन्ह्यो पेड़ न काटौ। पंडित कहेन ठीक अहै हमैं तौ धान चाही। पंडित कुल्हरी उठायेन चला गयन। सांझ की जब बड़कवा परेत आवा तौ ओका बुढ़नवा परेत बताइस कि ऐसेन ऐसेन हम सौ मन धान कबूल बैठे हन। बड़कवा कहिस अच्छा हम जात अही पंडित कै खबर लेइथै। राति की बारह बजे परेत पंडित के घरे गवा औ आवाज लगाइस। केवारा से झांकै लाग तौ परेत कै दाढ़ी केवारा के भीतरी चली गै। पंडित तुरन्तै दाढ़ी पकड़ि कै लटकि लागे औ खूब जोर से खींचेन। परेत बड़े जोर से चिल्लान। पंडित कहेन का करै आवा रह्या। परेत कहिस कि पूछै आवा रहे कि धान लेब्या कि चाउर। पंडित कहेन चाउर लेब के हमरे कुटावै जाई। परेत कहिस हमका छोड़ि द्या चाउर तुहुंका आजु जरूर मिल जाये। परेतउ संझा ताई सौ मन चाउर पहुंचाय द्रेहेन। पंडित पंडिताइन बहुत खुश भे। सेत मेत कै चाउर पउतें अपने मौसी मौसिया के सराध केहे औ बभनौ खवाये। जैसेन पंडित कै दिन बहुरा वैसेन सब कै बहुरैं।

# बहुला गाय

एक गुवालिनी रही। उ बहुला गाय कै बरत भूखी रही। औ वही दिन संजोग से दही-माठा बेंच के जंगल की रस्ता से होइके आवत रही। कोरा मा आपन गदेलौ लेहे रही। तौ का देखा थै कि एक गाय शेर के फन्दा मा फंसी अहै। शेर जैसेन जैसेन ओका खाय का निचकाथै उ बहुत जोर से चिल्लाथै। ई देखत ग्वालिन दंग रहिगै। शेर से कहिस कि हमार बच्चा खाय लिया लेकिन गाय छोड़ि दिया। बहुत बिनती केहे से शेर बच्चा औ गाय दुइनौ छोड़ि दिहिस। ग्वालिन गाय लैगै अपने घर मा सेइस-पालिस। कुछ दिन मा गाय एक बच्चा दिहिस। लेकिन दूधे की लालच से ग्वालिन बच्चा का दूध न पियावै औ दूध ा दुहि के बच्चा बांधि कै माखन बेचे चली जाय। गाय औ बछड़ा दुइनो छटपटाय, चिल्लाय। गाय का बहुत दुख भवा उ ग्वालिन का सराप दिहिस कि जैसेन हम अपने बच्चा का चिल्लाति अही वैसेन तुहूं

चिल्लाबू। कुछ दिन मा गाय के सराप से ग्वालिन कै बेटवा मरि गा। उ तौ झूरि होइगै। रोवत चिल्लात जिव निकारै लागि। ई देखि कै गाय सब हाल बताइस। ग्वालिन बहुत दुखी भै औ यस गल्ती न करै के तिरबाचा खाइस। गाय तुरन्तै ओकरे बेटवा का जियाय दिहिस। बहुला गाइ कै बरत जे रहाथै ओका बहुत पुन्नि होथै, औ सब मन के लालसा संपूरन होथे।

## राजा बलि

एक पंडित रहेन उनकै नांव राजा बलि रहा। वे जंगल में घनघोर तपस्या करत रहेन। वही जंगल मा सब ग्वाल-बालै गाय चरावै आवा करैं। जब गाय चराय कै लौटैं औ गाइन कै गिनती करैं तौ रोज एक गाय कम परि जावा करै। ग्वालन का बड़ी चिन्ता भै कि गाय कहां जाथै। सब ग्वालै खोजत खोजत उनही राजा बलि के पास पहुंचे जौन जंगल मा तपस्या करत रहैं। ग्वालै पहुंचे तौ पंडित पूजा कै कै शंख बजावत रहैं। ग्वालन कै मुखिया सोचिस कि इहै पंडित गाय रोज खाय जाथै। काहे कि 'जेकरे घरे हांड़ चिल्लाय सो कस न गैयन का खाय।' एत्ता कहिकै पंडित का जौन लठ्ठ मारिस कि पंडित कै गूद गूद बिथराय गा। मरति कि पंडित कहेन कि जेतना ग्वाल-वंश अहा जब तौ हमाय पूजा-अर्चा करब्या तब तौ ठीक अहे नाहीं तौ तोहरे कुल कै नाश होय जाये। ग्वालन कै वंश मा तबै से ई पूजा होवा करा थै। कातिक के अमावस का इनके पूजा सब ग्वालन कै घर मा होवा करा थै। जौनी साल इनकै पूजा न होय बड़ा अनरथ होय जावा करा थै। एक तरह से ई ग्वालन का नभन-दोख बेरावै का पराथै।

## गाजी मियां

गाजीमियां जब बारह बरिस के रहेन तौ एक जोगी आवा औ उनकी माई से कहिस कि तोहाय बेटवा लड़ाई पै जाये। महतारी का बड़ी चिन्ता भै। गाजी मसजिद मा सोवत रहे। महतारी अपने तेज से मियां का जगाय दिहिस। महतारी की छाती से दूध बहै लाग। महतारी बहुत समुझाईं लेकिन गाजी कहेन कि हम लड़ाई मा जरूर जाब। औ तू जाय के मामा कै लिल्ली घोड़ी लै आवा। महतारी डोला पै चढ़ि कै अपने मायके चलीं। जायके महतारी अपने भाइन से लिल्ली घोड़ी मांगिस लेकिन भाइन न देहें। महतारी लउटि आइस। गाजी खुदै पहुंचै औ मामा कै आसन आसमान मा पहिले लैगे फिर पताल मां धंसे देहें। मामा चिल्लान औ घोड़ी का सात समुन्दुर पार बतायके दै देहेन। गाजी घोड़ी लैके लड़ै गयेन औ जीत के लौटेन लेकिन बहराइच मां सूरजकुंड के पास मार डावा गे। एक दिन उजू करत कि उजू कै पानी कोढ़ी के ऊपर छिड़िक देहेन ओके कोढ़ नीकि होइगे। यही तरह एक अहीर अहीरिन का बच्चा देहेन। तबै से उनकै पूजा सब बड़े प्रेम से करै लागेन।

# भैरव बाबा

एक रही देवरान जेठान। दुइनौ भैरव जी कै अष्टमी भूखी रहीं। पूड़ी पकवान खूब बनै चोनै कै घरे से बाहर जौ पानी का गईं तौ दुइ कूकुर रसोइया मा हलि कै पूड़ी पकवान खाय लागेन। जैसेन दुइनौ जनी आईं तौ देखी दुइनौ कूकुर जुटा रहैं। देवरान तौ देखतै सन्न होइगै मुल कुछ बोलिस न कहिस अब तू सब खाय लिया। जौन सामान बचिउ गा रहै उहौ लायकै धै दिहिस। लेकिन जेठान बहत गुस्सा उ कुकुरे कै ऊपर डन्डा लैके जुट परी औ ओके करिहांव तोरि दिहिस। दुइनो कूकुर जब छूटै पायन तब भागेन। दुइनौ सलाह केहेन कि एकई तौ ठीकि रही लेकिन एकई बड़ी कर्कशा रही। जैसे हमाय करिहांव ई तोरिस वैसेन एकै सब गदेल मरि जइहैं। कूकुर भैरव जी कै सवारी अहेन। बात लागि गै जेठान कै सब गदेल मरिगें। जब उ रोवे लागि, तौ भैरव सपनाय देखायन कि फिरि से हमार पूजा करा औ कुकूर बोलाय के जेंवावा तौ गदेल तोहाय जी जांय। जेठान ऐसेन किहिस ओकै गदेल तौ जी गयेन। तबै से कूकुरनो के पूजा भैरव समझि कै होय लागि।

# तुलसी

एक राजा रहेन। उनके एक लड़की रही। ओके नांव रहा तुलसी। उ भगवान कै बहुत भगत रही। भगवान कै पूजा-अर्चा हरदम करति रही। ओकै मन रहा कि हमार बिआह होय तौ होय भगवान से। ओकरी तपस्या से भगवान प्रसन्न होइगे। औ ओका बरदान देहेन कि यह जनम मा तो नाहीं अगिले जनम मा हमाय तोहाय बिआह होये। पूरब जनम की कमाही से तुलसी कै बिआह यह जनम मा एक राक्षस से होइगा। राक्षस बहुत दुष्ट और दुराचारी रहैं भगवान का ओकै बध करब जरूरी होइगा। लेकिन तुलसी की तपस्या और पतिबरता होय के नाते ओका मार ना पावत रहें। भगवान का जब कौनौ उपाय न सूझ तौ एक दिन जब उ बाहर गवा रहै राक्षस के घर मां आयके वही के भेस धै के तुलसी कै धरम नष्ट कै देहेन। धरम के नष्ट होतै राक्षस मरिगा। तुलसी का जब पता भवा कि भगवान हमरे साथे छल कइ गयेन तो उ भगवान का सराप दै दिहिस कि तू जा पाथर होय जा। भगवान बहुत ओका समझायेन-बुझायेन और कहेन कि तुंहका हम बरदान देहे अही कि हमाय तोहाय साथ अगले जनम मा होये। कुछ दिन बाद तुलसी आपन देह छोड़ि दिहिन औ तुलसी कै बिरवा होयकै पैदा भईं। भगवानौ ओकरी सराप से पाथर भयें। भगवान ओका बरदान देहे रहेन कि तुलसी का बिरवा ओकै पात हमैं बहुत पियार रहे। जे

हमका तुलसी दल चढ़ाये, ओके मन कै सब कामना संपूरन होये औ उ बैकुण्ठ जाये। यही से सब कातिक के महीना मा भगवान औ तुलसी कै बिआह रचावा थै औ दुइनौ जने का पूजा करा थे। तुलसी की लकड़ी कै जे माला पहिराथे उ भगवान कै पूर भगत रहाथै भगवान वोसे बहुत खुश रहा थैं।

# सावित्री के बियाहु

एक राजा रहेन। उनके कौनौ सन्तान न रही। बहुत दिन तक भगवान कै पूजा-अर्चा केहेन तौ उनके एक कन्या पैदा भै। ओकै नाम 'सावित्री' रख देहेन। कन्या बड़ी होनहार सुन्दरि तथा गुण वाली रहै। जब उ बड़ी होयगै तौ राजा का ओकरे बिआहे कै चिन्ता भै। पंडित का बोलाय कै ओकरे भागि के बारे मां पूछेन। पंडित कहिस कि यहि कन्या का सोहाग एक बरिस लिखा अहै बाद मा ई बिधवा हो जाये। राजा का बहुत चिन्ता भै। पंडित कहेन कि चिन्ता कै कौनौ बात नाहीं न! अगर ई लड़िकी बरगद कै बिरवा कै पूजा आरती औ फेरी कै के बरगद के देवता जमराज का खुश कै लेय तौ येकै सोहाग बढ़ि जाय। कन्या ई सुनतै बहुत प्रेम से बरगद कै पूजा करै लाग। उ दिन भै वही बिरवा के तरे बैठी रहै और देवता कै पूजा अर्चा करा करै। पूजा करत-करत बरगद कै देवता खुश होइगे औ सावित्री का बरदान देहें कि तोहरे मन कै लालसा संपूरन होय औउ तोहरी बिपति मां हम तोहाय सहायता करबै।

सावित्री कै बिआह एक राजा कै लड़िका के साथ भवा। जेकर नाम सत्यवान रहा। सत्यवान कै उमर एकै साल रहै। उनके बाप के राजौ पाट सब राजा लोगै छोरि लेहे रहेन। सत्यवान कै महतारी बाप दुइनो आंखी कै सूर रहेन। जब सावित्री अपने ससुरे आई तौ रोज सास ससुर कै सेवा करै और बरगद कै फेरी लगाय कै पूजा करै। एक दिन सत्यवान जंगल मा लकड़ी काटै का गयेन। सावित्री का सब पता होइगै वही दिन उनके उमिर पूर होइगै रही। जैसेन पेड़े पै चढ़ेन मूंड़े मा चक्कर आवा और भुंइ मा गिर परेन मरि गयेन। सावित्री उनके साथे मा गै रही। उ पति कै लहास लै कै बैठ गै। जब जमराज आयेन औ सत्यवान कै जिउ लैके चलेन तौ सावित्री पिछुवाय लिहिस। जमराज कहेन कि हम तोहरी तपस्या से खुश अही, बरदान मांगौ। सावित्री बरदान मांगिस की हमाय सासु-ससुर आंख पाइ जांय, उनकै राज वापस मिलि जाय और उनके सौ लरिका होंय। जमराज ई बरदान दैके जब चलेन तौ सावित्री तबौ पीछा न छोड़िसि। फिर जमराज के कहे से बरदान मांगिस। अबकी उ अपने पतिन का मांगि लिहिस। जमराज का मजबूर होइकै देय का परा। जमराज कहेन कि जे हमाय पूजा करे औ बरगद कै फेरी लगाय कै पूजा करै ओका हम सब कुछ दै सकी थै।

# आंवला की पूजा

एक रहेन राजा औ उनकै रानी। उनके सात बेटवा औ सात पतवह रहीं। राजा रानी दूनौ जने रोज एक अंवरा भै सोना दान कइके अंवरा के बिरवा कै पूजा कैकै तबै खात-पियत रहेन। ई देखि कै पतोहन का बड़ी चिन्ता भै कि जो ये रोज एतना सोना दान करिहैं तब तौ खजाना खाली होइ जाई। सब पतोहै सलाह कै कै राजा रानी का दान करै से रोकि देहेन। रानी का दुःख त बहुत भा। लेकिन वै दुसरे दिन से आटा कै अंवरा बनाय कै दान करैं लागीं। पतोहन का जब यहू से इतराज भा तौ राजा रानी दूनौ जने घर से निकरि परेन औ गंगा जी के किनारे जायके रहै लागै। वहीं वे बरत रहैं औ उहैं बारू कै अंवरा दान देंय औ उहै खावा करैं। कुछ दिन मा अंवरा कै देवता भगवान बिष्नू खुश होइगे औ उनका बहुत धन दौलत देहेन। उनकै महलौ गंगै के किनारे बनवाय देहेन। राजा रानी आराम से रहे लागीं।

अब हुंवा घरे मां तौ बड़ी गड़बड़ हालत होइगै। पतोहे खाय बिना मरै लागीं। हिंया तक कि कुटौनी पिसौनी करैं लागीं। राजा का एक दिन एक नौकरानी कै जरूरत भै। राजा अपने मंत्री से कहेन। मन्त्री एक नौकरानी हेरि कै लै आवा। उ नौकरानी रानी कै रोज तेल-फुलेल लगाय के मालिस करै औ नउहावै। एक दिन उ तेल लगावति रही तौ ओके आंसु रानी के जंघा पै परि गै। रानी जब कारन पूंछी तौ बताइस कि ऐसेन हमार सासौ रहीं, उनहू कै पीठी मां तिल रहा है, इहै सोचि के आसु गिर गै। बातचीत होत चीन्हीं-चीन्हा भै। ई नौकरानी तौ रानी कै पतोहै ठहरी। रानी का पता होइगै कि हमका दान न करै देय के फल ये सब भोगति अहैं। रानी तुरन्तै अपनी सब पतोहन का बुलवाय पठईं औ सब केहू खुशी से रहै लागीं। अंवरा कै बिरवा कै जेहिन पूजा करे ओके देवता सब कुछ ऐसेन सबका दै सका थैं। एहि बरे अंवरा कै पूजा करब बहुत जरूरी अहै।

# गिद्ध शहजादी

एक बढ़ई का बेटा था, छोटी आयु में ही उसके पिता का देहांत हो चुका था। वह अपनी मां के साथ किसी तरह दिन काट रहा था। उसकी मां कुटौनी-पिसौनी करके जो जुटा पाती उसी से अपना व अपने बेटे का पेट पालती। धीरे-धीरे बेटा बड़ा हो रहा था और वह बढ़ई का काम पहले मोटा फिर महीन सीख गया और काम करने लगा। गांव में अच्छे काम का मेहनताना ठीक से नहीं मिलता था, इससे उनका गुजर-बसर बस काम चलाऊ ही हो रहा था।

एक दिन उसकी मां ने कहा बेटा यहां काम की कद्र नहीं है। तुम्हारे पिता भी शहर में जाकर माल बेचा करते थे, तब कुछ अच्छा भाव मिल जाता था।

बेटे ने कहा, मां मैं तो तुम्हारी वजह से कहीं नहीं जा रहा हूं। वैसे लगता तो मुझे भी है कि घर बैठे गुजारा नहीं होगा।

मां ने कहा जाओ बेटा मुझे याद रखना, बस ईश्वर सब पार करेगा। अभी तुम्हारा ब्याह भी होना है ऐसे में हम गरीबों को कौन अपनी लड़की देगा भूखी मरने के लिए। तभी मां-बेटे में सहमति बन गई और लड़का शहर जाने के लिए रजामंद हो गया।

एक दिन अपने कुछ हल्के खास औजार एक झोले में डाल कुछ कपड़े-लत्ते, एक छाता ले शुभ मुहूर्त्त पूछकर घर से परदेस को चल पड़ा। रास्ते में एक जगह कुछ भैंसें-बैलों के सींग पड़े थे। उन्हें देखकर उसके मन में एक विचार आया कि

उन सीगों से कुछ बनाया जाए और बैठकर सुस्ता भी ले। यह सोचकर वह एक सींग उठा लाया और उसे बसूले से साफ करने लगा। सफेद-सफेद निकलने पर उसके चावलों जैसे हू-ब-हू दाने बना लिए। चावल देखने पर बिल्कुल असली मालूम होते थे कोई अंतर मालूम नहीं होता था। उसने उन बनाए हुए चावलों के दानों की पुड़िया बनाई और जेब में डालकर आगे चल पड़ा।

अपने-आप में सोचते-विचारते चला जा रहा था कि रास्ते में एक और राही का साथ हो गया। जान-पहचान करने के बाद दोनों ने राम-राम जय राम जी किया और साथ-साथ चल पड़े। धूप चढ़ आई थी, दोनों थक गए थे, दूसरे ने कहा इस पेड़ के नीचे थोड़ी देर बैठेंगे फिर आगे चलेंगे।

बढ़ई के बेटे ने कहा, अच्छा है थोड़ा सुस्ता लेते हैं।

दोनों एक घने बरगद के पेड़ के नीचे चले गए। बरगद की छाया में बैठते ही बढ़ई के लड़के ने छाता खोलकर लगा लिया। दूसरे राहगीर ने मन ही मन कहा, 'बड़ा बुद्धू है इतनी धूप-गर्मी में तो छाता लगाया नहीं अब छाया में छाता लगा रहा है, महापागल आदमी है।' पर बोला कुछ नहीं अंदर ही अंदर कुढ़ता रहा।

फिर दोनों उठे, आगे जो सफर तय करना था इसलिए बढ़ई के लड़के ने छाता बंद किया तथा दूसरे राहगीर के साथ आगे बढ़ा। दोनों चलते रहे आगे जाकर एक नदी पड़ी। नदी में घुटने-घुटने तक पानी था। उसे पार करने के लिए पानी में पैर रखने से पहले बढ़ई के लड़के ने अपने थैले में से बढ़िया

साफ-सुथरे जूते निकाले और पहन लिए। नदी पार करने के बाद उसने जूते उतारे और पोंछकर कपड़े में लपेटकर पहले की तरह झोले में रख लिए।

दूसरा राहगीर मन ही मन फुसफुसाया, महा बेवकूफ है।

संयोग से दूसरा राहगीर भी बढ़ई जाति से ही था। उसने बढ़ई के लड़के को अपना परिचय देकर कहा, 'भाई मैं बढ़ई जाति से हूं।'

तभी बढ़ई के लड़के ने कहा, 'चाचा मैं भी बढ़ई जाति से हूं।'

राहगीर ने कहा तुम्हारे पास औजार देखकर मैंने यही अनुमान लगाया था, मेरा अनुमान सही निकला आप तो हमारी बिरादरी के हो। देखो जो यह गांव दिखाई पड़ रहा है उसी गांव में मेरा घर है तथा घर में केवल मेरी इकलौती लड़की है वह राह देख रही होगी। तुम आगे कहां जाओगे शाम हो गई है रात हमारे यहां ही काट लो।

वह बोला ठीक कहते हैं आपकी कृपा होगी। चाचा लगता है भगवान ने इसीलिए हमारी आपकी मुलाकात कराई जिससे मुझे रात का आसरा मिल जाए।

जब दोनों घर पहुंचे तो आगंतुक मेहमान का स्वागत हुआ। शरबत पिलाया गया, पान खिलाया गया यानि उससे जो बन पड़ा मेहमान का स्वागत किया।

राहगीर की लड़की बहुत तेज बुद्धि की व कलाकार भी थी। उसके घर में कुछ खास है नहीं क्या बनाए। ये हैं थोड़े से उड़द के दाने, अगर जोड़ मिल जाए तो बात बन जाए। उसने पिता को एक पुड़िया पकड़ा दी और कहा यह पुड़िया मेहमान को दिखाओ शायद जोड़ मिल जाए।

पिता ने वह पुड़िया मेहमान को पकड़ा दी और बोले इसका मेल मिले तो काम बने बिटिया ने कहा है।

बढ़ई के बेटे ने पुड़िया खोली तो उसमें से लोहे के उड़द निकले उसके मुंह से निकला अच्छा समझ गया चावल चाहिए और जेब में रखे सीगों के बनाए चावल उसमें डाल दिए और पुड़िया वापस लड़की को पहुंचा दी।

लड़की पुड़िया देखकर चिहुंकी, बहुत अच्छा कारीगर है, उसने असली उड़द और चावल पकाया।

लड़का खाए जा रहा था और प्रशंसा किए जा रहा था। बहुत स्वाद बना है मैं तो भूख से अधिक खा गया। बहुत-बहुत बढ़िया।

दोनों ने भोजन कर आचमन किया हाथ धोए और बिस्तर पर गए और सो गए।

सवेरे लड़के ने कहा, अच्छा अब आज्ञा दो मैं चलूं।

लड़की ने कहा, बापू आप आज और रोक लो इनको कुछ बात है फिर बताऊंगी।

दोनों घर में चले गए एकांत में लड़की ने कहा बापू दामाद ढूंढ़ने में परेशानी हो तो मुझे तो यह लड़का चतुर-सयाना लग रहा है। देखो कितने सम्मान से बोलता है बहुत बुद्धिमान चतुर सुजान है कहीं चला न जाए। पिता ने कहा मैं उसे रोककर देखता हूं तुमसे फिर बात करूंगा।

पिता बाहर आकर बढ़ई के लड़के से बोला बिना कमाए गुजारा भी तो नहीं है कमाने तो जाना ही है और तुम कई दिनों से यात्रा पर हो। एक दिन में क्या फर्क पड़ता है आज रुक जाओ कल चले जाना।

बढ़ई के लडके ने सोचा गैर होकर बिरादरी के नाते रोक रहे हैं और इन्होंने हमको इज्जत भी दी है तो हमें भी इनका कहना मानना चाहिए यह सोचकर लड़का रुक गया।

लड़की का पिता अंदर गया और लड़की से बोला ठहर गया है, पर कल चला जाएगा। मगर एक बात बता दूं कि यह लड़का महापागल है, इसके पास अक्ल नाम की कोई चीज नहीं है।

लड़की ने पूछा—कैसे।

पिता ने कहा—वैसे यह उसका अपना मामला है कुछ कहना नहीं। मैंने भी देखा पर उसे कुछ कहा नहीं।

क्या हुआ बापू बताओ न लड़की ने फिर पूछा।

पिता ने कहा—तो सुन इसकी मूर्खता। इसने बंद छाते को अपने हाथ में टांगे रखा और कड़ी धूप में भी छाता नहीं लगाया और जब हम बरगद के पेड़ के नीचे सुस्ताने बैठे तो इसने छाता लगा लिया और जब हम चले छाया से निकले धूप में आए तो इसने फिर अपना छाता बंद किया और हाथ में टांग लिया। चलो ये हुआ तो हुआ, आगे हमें नदी पार करनी पड़ी तो इसने झोले से बढ़िया चमचमाते जूते निकाले पहने फिर नदी पार की जूते भीग गए। फिर जूते उतार लिए नंगे पैर हो गया जूते सुखा-पोंछकर कपड़े में लपेट झोले में रख लिए। तभी मैंने समझा बड़ा मूर्ख आदमी है।

तभी लड़की बोली पिताजी ये दोनों काम इसने बुद्धिमानी के किए हैं। परदेस में जा रहे हैं उजले साफ कपड़े पहने हैं। पेड़ के नीचे जहां आप बैठे थे पेड़ पर परिन्दे-पंछी जरूर रहे होंगे। अगर कोई चिड़िया इनके ऊपर बीट कर दे तो हो गया काम। धूप सह लेने से कम नुकसान है। उससे ज्यादा पानी की बात भी चतुराई की है नदी में चरवाहे व शरारती बच्चे पता नहीं क्या-क्या फेंकते रहते हैं। ऊपर से नजर नहीं आता जूते भीग गए कोई बात नहीं पर लंगड़ा के तो नहीं चल रहे। बापू मैंने परख लिया है मैं आपको दिखाती हूं। वह पुड़िया ले आई देखो ये क्या है।

पिता बोला चावल है अनाड़ी भी बता देगा।

किसके चावल हैं लड़की बोली।

पिता ने कहा धान के हैं और काहे के हैं।

लड़की बोली खा गए न गच्चा। अरे बापू ! ये चावल सींग से बने हैं। बोलो क्या कोई साधारण मिस्त्री ऐसे चावल बना सकता है। उच्च कोटि का हुनरमंद है, अब बोलो।

बढ़ई बोला बेटी तुझे जो अच्छा लगे तेरी खुशी में ही मैं खुश हूं। फिर मैं बात आगे बढ़ाऊं—पिता ने कहा।

लड़की बोली आप अपना काम करो। मैं सब ठीक कर लूंगी।

बढ़ई बोला—बेटी तेरी जैसी इच्छा।

लड़की चाय-नाश्ता लेकर लड़के के पास पहुंची और बोली बापू से ख़ास बात हो रही थी और आप अकेले बैठे रहे। अच्छा बताइए आपका गांव कहां है ?

लड़का बोला, 'मेरा गांव मंडनपुरा है बहुत दूर नहीं है। यही कोई आठ कोस है यहां से।'

'घर में कौन-कौन है लड़की बोली ?'

'मां है, पिताजी का स्वर्गवास हो चुका है और मैं अभी कुंवारा हूं।'

मैंने तुमसे बिना पूछे पिताजी को बोला था कि लड़का कुंवारा है, अपनी बिरादरी का है, सब कुछ सोचकर मैंने इसे दिल दे दिया है, ठीक कहा न मैंने—लड़की बोली।

बिल्कुल गलत कहा तुमने, दिल कहीं ऐसे दिया जाता है। लड़का बोला, 'ख़ैर क्या बोले पिताजी।'

बहुत खुश तो नहीं हैं, पर लगता है मान जाएंगे। अब मैं तुम्हें विवाह के बंधन में अवश्य बांध लूंगी। देखो बापू के सामने ज्यादा तमाशा न करना, तुम्हें मेरी कसम है बाकी जो मैं कहूंगी वही करोगे। बापू मुझे बहुत प्यार करते हैं।

ठीक है जो मर्जी करो नहीं बोलूंगा, उसने सोचा कि मां भी विवाह के लिए परेशान थी, यही सोचकर चुप रहा।

सब ठीक हो गया पण्डित जी से मुहूर्त निकलवाकर तिथि जान ली और उनका विवाह हो गया। दो-चार दिन वहां रहा उसके बाद लड़का बोला अब मैं तो धन कमाने के लिए बाहर जाऊंगा। जिस काम के लिए निकला उसे पूरा करना जरूरी है।

लड़की ने कहा जाओ मुझे भूल न जाना अब मैं तुम्हारी ब्याहता हूं और कोई चिंता न करना मैं मांजी को अपने पास बुला लूंगी यहां खाने की कमी नहीं है आप जाएं अपना काम करें कमाई करके यहां आएं फिर मैं ससुराल चलूंगी।

ससुरजी से नमस्ते हुई। पत्नी से विदा ली और लड़का चल पड़ा अनजाने पथ पर या अनजानी डगर पर।

चलते-चलते कुछ दिनों बाद वह एक राजा के राज्य में पहुंचा! वहां पर एक दानव आया था। राजा ने अपनी सेना के साथ उसका मुकाबला किया। वह भागा राजा और सैनिकों ने उसका पीछा किया तो वह एक पेड़ पर चढ़ गया। राजा और सेना ने जब उस पेड़ को घेर लिया तो वह बहुत ऊंचे चढ़ गया। कई दिन घेरे रहे वह नहीं उतरा तो राजा ने कहा पेड़ कटवा दो। राज्य बढ़ई पेड़ काटने में डरते थे। कोई उस पेड़ को काटने को तैयार नहीं था।

तभी वह बढ़ई का लड़का उस राज्य में पहुंच गया। एक सिपाही ने उसे देखकर पूछा—कौन हो? कहां रहते हो?

वह बोला मैं बढ़ई हूं और यहां परदेसी हूं।

सिपाही उसे लेकर राजा साहब के पास आया और राजा से बोला, 'महाराज यह बढ़ई है और परदेस से आया है।'

राजा उसे लेकर पेड़ के पास आए और बोले, 'यह पेड़ काटना है कट जाने पर इस पेड़ को बेच लेना जो मिलेगा सब तुम्हारी मजदूरी होगी। ठेका हो गया वह पेड़ काटने लगा। राजा ने कहा राक्षस जाने न पाए, जिसके बगल से निकलेगा उसे न पकड़ पाने या भाग जाने पर सजा मिलेगी। पेड़ कट गया गिरने को ही था कि वह जिस ओर राजा साहब थे उन्हीं की बगल से निकला राजा साहब ने अपने घोड़े पर सवार होकर उसका पीछा किया। भागते-भागते वह राजा के राज्य से बाहर निकल गया पर राजा फिर भी पीछा करते रहे आखिर वह अपने अखाड़े में पहुंच गया और खड़े होकर अपने दाहिने हाथ को दाहिनी जांघ पर मारकर राजा को कुश्ती लड़ने के लिए ललकारने लगा। राजा ने तलवार घोड़े पर ही छोड़ दी और मैदान में उतर पड़े, दोनों में भिड़न्त हो गई। लेकिन राजा उसका मुकाबला बहुत देर तक नहीं कर सके और उसने राजा को गिरा दिया।

घोड़े ने जब यह सब देख लिया तो वह वापस राजमहल की ओर सरपट भाग चला और राजमहल में पहुंच गया। खाली घोड़े को आया देख राजमहल में खलबली मच गई। रानी खुद घोड़े के पास आई। घोड़ा बोला रानी बहुत बुरे दिन आ गए हैं। दानव ने राजा को हराकर लील लिया है अब वह इधर ही आ रहा है। आप ऐसे करें बहुत कीमती चीजों की पोटली और राजकुमार को लेकर मेरी पीठ पर बैठो मैं दम भर में भागूंगा नहीं तो मेरा तुम्हारा किसी का बचना मुश्किल है।

रानी इस पर कुछ हीरे-मोती जवाहरात लेकर बेटे को लेकर घोड़े पर बैठ गई। घोड़ा भाग चला शहर से निकल ही रहा था कि दानव आ रहा था उसने देख लिया और घोड़े के पीछे दौड़ा। घोड़ा भी तेज भागा आगे जाकर एक नदी पड़ी घोड़े ने नदी में छलांग लगा दी दानव भी कूद गया और उसने घोड़े की पूंछ पकड़ ली। घोड़ा बोला रानी राजा की तलवार मेरे कान से लटक रही है, तुम उससे मेरी पूंछ काट दो नहीं तो यह मुझे खींच लेगा। रानी ने तलवार का एक वार किया पूंछ कट गई। पर तलवार घोड़े के पुट्ठे में भी लगकर जख्म कर गई घोड़ा नदी के इस पर आ गया और गिर गया और बोला रानी साहब मेरे पुट्ठे

पर जो चोट लगी है वह घातक है मैं मर जाऊंगा। आप मुझे यहां नदी की रेत हटाकर उसी में धकेल देना ऊपर से रेत डालकर पाट देना। इस समय बस विदा। क्षमा करना इससे अधिक मैं कुछ करने में असमर्थ हूं, और घोड़े ने उसी नदी के तट पर प्राण त्याग दिए।

रानी रोती तो भी वहां उसका कौन था जो देखता। उसने घोड़े के कहे अनुसार अपना काम शुरू कर दिया। मखमली गद्दों और संगमरमरों के फर्श पर खेलने वाला राजकुमार रेत पर बैठा था। घोड़े को रानी ने दबा दिया, अब सोचने लगी कहां जाए, साथ में माल भी है उसकी चिंता हो रही थी।

नदी के तट से थोड़ी दूर चलने पर उसे एक गांव दिखाई दिया। गांव में दीपक की लौ दिखी, शाम बीत रही थी। रानी ने उसी ओर कदम बढ़ा दिए और गांव में पहुंच गई। गांव के कुएं पर पांच-सात औरतें खड़ी पानी भर रही थीं और आपस में हंसी-ठिठोली कर रही थीं। रानी ने उनसे कहा बहन रात काटनी है जाना दूर है कोई मुझे आज रात शरण दे दो।

औरतों ने कहा हम सब तो बहुएं हैं। मर्दों के हुकुम के बिना कुछ नहीं कर सकतीं, हां दादी चाहे तो मदद कर सकती हैं।

तब बुढ़िया जो अभी तक चुपचाप सब सुन रही थी पास आ गई और बोली मेरे साथ चलो मैं अकेली हूं। जब तक इच्छा हो मेरे साथ रहो।

रानी ने अपने सहारे को देखकर उसके पैर छू लिए और राजकुमार को उसकी गोद में देते हुए बोली, 'तुम्हारा घड़ा कौन-सा है मैं ले चलती हूं।'

बुढ़िया ने कहा नहीं मैं ले चलूंगी रानी नहीं मानी। समय-समय की बात है, बीसियों दासियों-नौकरानियों से घिरी रहने वाली रानी को ये दिन भी देखने को मिले। बुढ़िया ने कहा अपना हाल सुनाओ।

रानी ने कहा थकावट और भूख के मारे कुछ सूझ नहीं रहा विपदा की कहानी लम्बी है सब बताऊंगी।

बुढ़िया ने कहा ठीक है आओ कुछ पकाते हैं मैं भी शाम को कुछ न कुछ बना लेती हूं और दोनों भोजन व्यवस्था में लग गईं। बुढ़िया बच्चे के लिए पड़ोस से दूध मांग लाई। गांव के लोग दयालु होते हैं। पड़ोसी ने बिना पैसे के पर्याप्त दूध दे दिया। खा-पीकर रानी और बुढ़िया सोने लगी। तभी बुढ़िया ने रानी से कहा किसी बड़े घर की लगती हो।

रानी ने कहा एक शर्त है मांजी मानो तो अपना हाल कहूं।

बेटी क्या शर्त है बुढ़िया ने कहा।

रानी बोली इस राज को सिर्फ आप जानो और कोई न जान पाए। किसी को बताओगी नहीं अगर कोई जान गया तो मैं यहां एक क्षण भी नहीं रहूंगी उसी दम चल दूंगी बुढ़िया बोली ठीक है किसी को भी नहीं बताऊंगी। रानी ने संक्षेप में सब कुछ अपना हाल बुढ़िया को बताया कि हमारे राज्य पर दानव ने कब्जा कर लिया हम लोग भाग के वहां से जान बचाकर भाग आए हैं। इसलिए मायके भी नहीं गई। जब दिन फिरेंगे तो सब ठीक हो जाएगा।

बुढ़िया ने कहा यहां मायका ही समझो जब तक मन चाहे रहो। मुझे तो भगवान ने बेटी, नाती-पोता दोनों दे दिए। कोई नहीं जान पाएगा तुम दोनों कौन हो ? इस प्रकार रानी बुढ़िया के साथ रहने लगी। राजकुमार भी बड़ा होने लगा।

रानी ने एक सिलाई सेंटर खोल लिया। बच्चों और महिलाओं के कपड़े सीने लगी कुछ भले घर की लड़कियां सिलाई सीखने आने लगीं। आमदनी का एक जरिया बन गया। राजकुमार भी स्कूल में पढ़ने जाने लगा। बुढ़िया छोड़ आती ले आती। इस तरह दिन बीत रहे थे। राजकुमार ग्यारह वर्ष का हो गया।

एक दिन वह अपने पिताजी का नाम पूछने लगा। रानी ने टरकाया तो राजकुमार ने कहा, 'क्या

मैं बिना बाप का हूं जो भी हो मुझे सारा हाल बता दो जो भी होगा मैं सब सह लूंगा। अगर नहीं बताया तो प्राण त्याग दूंगा।

रानी ने कहा बेटा ये तो देख ही रहे हो कि कितना दुःख झेल रही हूं। तू मेरा एकमात्र सहारा है और एक आसरा है। राजपंडित ने तुम्हारी जन्मपत्री देखकर बताया था कि बचपन कष्ट में बीतेगा पर जवानी के साथ राजयोग है, चक्रवर्ती योग है मैं बताना नहीं चाहती थी पर तुम्हारी जिद्द है तो सुनो और रानी ने सारा हाल राजकुमार को एकांत में बता दिया और हिम्मत न हारने की शिक्षा दी, राजा के लाड़ले हार नहीं मानते मैदान मारते है, मां देखना मैं कुछ बनकर दिखाऊंगा तुम निश्चिंत रहो।

शाबाश बेटा तुमसे मुझे यही आशा है।

राजकुमार ने कहा मां मुझे कुछ रुपये दो तो मैं भी कुछ कमाऊं।

क्या करोगे बेटा ?

मैं पहले एक बैल लाऊंगा और गांव में जिसके पास एक ही बैल है उसके साथ मिलकर जिनके पास ज्यादा खेत है उनसे खेट बंटाई पर लेकर खेती करूंगा। गांव में कुछ लोग मुझे खेत देने को तैयार हैं।

मेरे पास छः रुपये हैं ले लो रानी बोली।

बहुत हैं इसी से काम चला लूंगा राजकुमार बोला और बैल किसका बिकाऊ है खोजने लगा। उसे पता लगा दूसरे गांव में एक बैल बिकाऊ है बहुत ही दुबला-पतला है खिलाने-पिलाने से ठीक हो जाएगा। वह एक और गांव के साथी को साथ लेकर बैल मालिक के पास गया उसने बताया बैल बहुत अच्छा चलता था पर कल से सुस्त है कुछ खा पी नहीं रहा। चाहे यहीं मर जाए पर छः रुपये से कम नहीं लूंगा। जो साथी साथ गया था उसने कहा भाई ठीक है हम छः रुपये दे देंगे मगर बैल हमारे घर पहुंचा दो।

बैल वाले ने कहा मैं पैसे लेकर रस्सी पकड़ा दूंगा उसके बाद मरे या जिए मैं नहीं जानता।

तभी राजकुमार ने कहा मैं चार रुपये से ज्यादा एक पाई नहीं दूंगा चलो जो भी लगाना था लगा दिया ऐसे बैल से तो बिन बैल भले और दोनों चल दिए।

बैल वाला बोला चलो चार रुपये निकालो।

राजकुमार ने चार रुपये उसकी हथेली पर रख दिए और परचा लिखवाया कि मैंने बैल बेच दिया है। उसके बाद राजकुमार ने उस बैल के चारों ओर घूमकर परिक्रमा किया और उसके कान में बोला मैं बहुत दुखी हूं मुझे तुम पर बड़ा भरोसा है। बैल ने कनखियों से राजकुमार की ओर देखा और उठकर खड़ा हो गया। उसके पहले मालिक ने रस्सी राजकुमार को पकड़ा दी थी।

राजकुमार घर की ओर चला बैल भी खुश होकर लगभग दौड़ता-सा चल रहा था। घर पहुंचकर रानी और बुढ़िया ने जल उबार के डाला। बैल की आरती उतारी गुड़ और एक रोटी खाने को दी और पुचकारा तो बैल खुश हो गया पगुराने लगा। अब वह बीमार नहीं स्वस्थ दिखाई दे रहा था जो मिल गया खाने लगा।

जो आदमी साथ गया था उसने कहा मैंने वायदा किया है यार रघू का खेत जोतकर बोहनी करेंगे। अच्छे आदमी हैं। जोताई नकद देंगे। राजकुमार ने कहा ठीक है मैं सवेरे कुछ खिलाकर इसे तैयार रखूंगा। तुम ले जाना जरा प्यार से काम लेना नहीं तो बिगड़ जाएगा। अच्छा ध्यान रखना।

ध्यान रखूंगा। इस तरह काफी दिन तक काम चलता रहा। एक दिन बैल ने राजकुमार से कहा कि मेरी आयु कल दोपहर एक बजे तक है। मैं खेत में मर जाऊंगा तो समझा दूं आपको क्या करना है। मेरे मरने पर हल जोतने वाले को बहुत गुस्सा आएगा और आपको खूब गालियां देगा पर आप कुछ मत बोलना सब सह लेना। बोल चुके तब कहना भाई अच्छा-खासा चलता-फिरता बैल मर गया। बड़ा दोष है मुझसे जो हो सकेगा मैं तुम्हारी मदद करूंगा परिवार देखूंगा आपको जो दोष लगेगा वो गांव के

पास बाग में रहकर बिता लेना कहीं भीख मांगने मत जाना बनाना खाना और प्रभु का नाम जपना और बोलो मैं और क्या कर सकता हूं तो वह मान जाएगा उसके बाद मेरी लाश खेत से हटाकर वहीं नदी किनारे रखवा देना कुछ छोटे पेड़ों की झाड़ी की ओट में एक गड्ढा खोदकर उसी में एक डंडा लेकर बैठ जाना। सवेरे मुझे खाने के लिए बहुत से गिद्ध पक्षी आएंगे पर मुझे छुएंगे नहीं बाद में एक बड़ा गिद्ध आएगा वह अपनी चोंच से मेरी पीठ को पकड़कर ऊपर उठा लेगा और थोड़ी दूर पर रख देगा तो सब गिद्ध मुझ पर टूट पड़ेंगे। लेकिन आप अपना डंडा लेकर झपट लेना और उस बड़े गिद्ध की धुनाई शुरू कर देना तब वह गिड़गिड़ाएगा मुझे मत मारो तुम्हें क्या चाहिए तो उससे वचन भरवा लेना। जब तीन बार वह बोले दूंगा...दूंगा...दूंगा...तब कहना मुझे गिद्ध शहजादी दे दो और उसके गुण भी बता दो। समझ गए आप मस्त रहो। मेरे मरने पर यह खुद ही आपको ढूंढेगा।

बैल ने जो कहा था वही हुआ एक बजे तक तो बैल खूब चला उसके बाद बैठ गया जोतने वाले ने उसकी खूब पिटाई की लेकिन वह न उठा आखिर मारते-मारते हैरान परेशान हरवाहे ने उसकी पूंछ पकड़कर उठाना चाहा तो उसने अपने पैर फैला दिए वह मर चुका था। अब हलवाहे के होश उड़ गए वह राजकुमार को गालियां देता कोसता हुआ ढूंढने लगा मैं तो पहले ही कह रहा था इतना कमजोर बैल क्या काम करेगा चार रुपल्ली में कहीं बैल मिलता है। मुझ पर दोष लगना था लग गया उसको क्या है। पता लगाने पर राजकुमार मिल गया उसको देखते ही और गालिया निकालने लगा। राजकुमार ने कहा क्या हुआ उसने कहा क्या नहीं हुआ बैल खेत में हल चलाते समय हल में जुता-जुताया ही मर गया खेत में उसी तरह पड़ा है। राजकुमार ने कहा भाई जो होना था हो गया तुम मेरे सहयोगी हो गांव तुम्हें छोड़ दे पर मैं नहीं छोड़ूंगा जितने दिन का दोष लगेगा उतने दिन यहां बाग में झोंपड़ी डाल लो उसी में रहो। आपका राशन-पानी मैं दूंगा। आपके पत्नी-बच्चों को भी मैं देखूंगा कोई तकलीफ नहीं होने पाएगी मुझसे जो कहो मैं करने को तैयार हूं। यह सुनकर वह कुछ नर्म पड़ा बोला पंचायत जो सजा देगी वह तो मुझे ही भोगना पड़ेगी। ऐसी आफत में आपकी जो मदद मिल जाए मेरे लिए बहुत है।

राजकुमार ने उसका इंतजाम कर अंधेरे में कुछ चमारों को लेकर गया और बोला इस बैल को खेत से हटाकर नदी के किनारे रख दो। चमारों ने बैल को खेत से हटाकर नदी किनारे रख दिया और चले गए। रात को ही ठीक जगह देखकर राजकुमार ने स्वयं गड्ढा खोदा और सवेरे-सवेरे ही एक मजबूत डंडा लेकर उसमें जा बैठा। थोड़ी देर में गिद्ध आने लगे। सब इधर-उधर आकर बैठ जाते सूरज की किरणें धीरे-धीरे फैल रही थीं कि पश्चिम की ओर से जोर-जोर से हवा की आवाज आई राजकुमार ने देखा वही बड़ा गिद्ध आ रहा था। आकर वह बैल के पास बैठ गया कुछ देर इधर-उधर देखता रहा। राजकुमार गड्ढे में और दुबक गया। फिर वह गिद्ध कूदकर बैल के पास गया और अपनी चोंच बैल की पीठ की रीढ़ की हड्डी में फंसाई और जोर लगा उसे उठा दो इंच दूर रख दिया उसके ऐसा करते ही दूसरे छोटे गिद्ध बैल की ओर लपके और उधर राजकुमार ने बड़े गिद्ध पर अपने डंडे से वार करना शुरू किया। यह देखकर बाकी गिद्ध उस ओर देखने लगे और डर गए बड़े गिद्ध ने कहा रुको मुझे मत मारो तुम्हें क्या चाहिए मेरा क्या कसूर है बेटा।

राजकुमार ने कहा जो मांगूगा दोगे।

गिद्ध ने कहा मेरे वश में हुआ तो अवश्य दूंगा, पर मुझ पर दया करो मारो मत।

राजकुमार ने हाथ रोक लिया बोला मुकरोगे तो नहीं तीन बार कहो। गिद्ध ने कहा दूंगा...दूंगा...दूंगा मांगो।

राजकुमार ने कहा मुझे गिद्ध शहजादी दो।

बहुत कठिन चीज मांगी है खैर अब तो देना ही पड़ेगा उसने अपने बड़े पंखों को जोर से झकझोरा

तो उसमें से दो अलगोजे गिरे बोला एक बात समझ लो ये तुम्हारे काम के हैं। सबका काम खुश होकर नहीं करेंगे कुछ भेद उनको समझा दिए। राजकुमार अलगोजे लेकर घर आ गया रात को जब खाना-पीना हो गया तो उसने आराम से बैठ एक अलगोजा बजाया।

थोड़ी देर में आकाश से कुछ लोग उतरते दिखे वह भिश्ती और सफाई वाले थे। उन्होंने आकर झाड़ू लगाना पानी छिड़कना शुरू कर दिया और थोड़े समय में ही जगह साफ-सुथरी बनाकर ठीक कर जैसे आए थे वैसे चले गए। फिर आए तम्बू कनात वाले उन्होंने तम्बू लगाया और चारों ओर कनात से घेरा और बैठने के लिए कुर्सियां लगा दीं काम पूरा करके वे भी जैसे आए थे चले गए। उसके बाद बाजे वाले अपना तबला-मृदंग, दंताल, मजीरा, हारमोनियम आदि अपने साज लेकर आए और अपने-अपने आसन पर बैठ गए।

फिर आईं आसमान से सुन्दर-सुन्दर परियां। परियों के आते ही वहां रंगारंग कार्यक्रम नाच-गाना शुरू हो गया। देवलोक का नाच गाना बाजा सब अलौकिक था। राजकुमार उसकी माता और बुढ़िया बहुत देर तक आनन्द लेते रहे, फिर राजकुमार ने दूसरा अलगोजा बजाया उसके बजते ही नाच-गाना बंद हो गया। परियां जैसे आई थीं वैसे चली गईं साज वाले चले गए। तम्बू कनात वाले भी आए और सब सामान गायब हो गए। राजकुमार आदि सब सोने चले गए इसी तरह लगभग रोज होने लगा।

एक दिन राजकुमार को कहीं जाना था उसने कहां माता जी मैं जा रहा हूं आप होशियार रहना। मेरे घर छोड़ने के बारे में किसी को मत बताना। इन अलगोजों को मत बजाना। समझाकर वह चला गया, इधर मां को उसकी चिंता में नींद नहीं आ रही थी। उनसे रहा नहीं गया। सोचा कौन पता चलेगा थोड़ी देर मनोरंजन करके सो जाऊंगी उन्होंने अलगोजा बजाया तो भिश्ती आए तम्बू-कनात वाले आए बाजे वाले आए और फिर परियां आईं और चारों ओर देखने लगीं। जब उनको राजकुमार नहीं दिखा तो एक परी ने रानी को कहा बुढ़िया ये हाथ में क्या है कहते हुए उनके हाथ से अलगोजे ले लिए और वापस उड़ चली। रानी हाथ मलती रह गई।

दूसरे दिन जब राजकुमार आया तो ये जानकर कि अलगोजा परियां ले गई बहुत बेहाल हुआ, उसने कहा मां मैं जा रहा हूं गिद्ध शहजादी लेने। लेकर ही लौटूंगा उसके बिना मैं जिन्दा नहीं रह सकता आप यहीं रहना कहीं मत जाना और बिना जवाब लिए वह वहां से चल पड़ा। चला जा रहा था उसे खुद नहीं पता था कहां जाना है जाते-जाते जंगल आ गया। जंगल में एक महुए का पेड़ था। नीचे साफ-सुथरी जगह देखकर वहीं लेट गया। रात बीतने पर उस पेड़ पर रहने वाला एक प्रेत बोला आदम बू-आदम बू। राजकुमार ने कहा मैं हूं मामाजी नमस्ते। प्रेत बोला कौन भांजे, मिले तो तुम अब मेरी भूख कैसे मिटे। राजकुमार ने कहा मामाजी भूखा तो मैं भी हूं पर सामान मिले तो भोजन बने, क्या चाहिए राजकुमार ने गिना दिया। देसी घी 10 सेर, आटा 60 सेर, सब्जी 50 सेर उसी अनुपात में नमक-मसाला चाहिए।

प्रेत ने कहा चिन्ता न करो मैं सब एक दुकान से उठा लाता हूं और एक धनी आदमी की रसोई से बर्तन आदि सब ला दूंगा। वह गुम हो गया और फटाफट सब सामान ला दिया खाना-पकाने में मदद भी करने लगा। भोजन तैयार हो गया। प्रेत पूड़ियां-कचौरियां आदि गरमा-गरम खाए जा रहा था। उसने कहा भांजे तुम भूखे रह जाओगे।

राजकुमार ने कहा मामा मुझे 4 पूड़ियां थोड़ी सब्जी 1 कचौड़ी बहुत है। आप छककर खाओ कहा रखेंगे बचा हुआ खाना।

प्रेत ने छककर खाया बर्तन वगैरह जैसे भी लाया था वैसे ही पहुंचा दिया और महुए के नीचे उछल-कूद करने लगा। उसने कहा भांजे मुझे तो ऐसा खाना पहली बार मिला है मैं बहुत प्रसन्न हूं अब तुम बोलो तुम्हारी क्या मदद करूं मुझसे कोई बात मत छिपाना न मुझसे डरना।

राजकुमार ने मतलब की सब बात अपने ढंग से उसको समझा दिया।

प्रेत ने कहा भांजे मैं इस बारे में मैं कुछ नहीं जानता पर मेरे बड़े भाई हैं वे मुझसे ज्यादा पुराने और अनुभवी हैं मेरा परचा ले लो और उनकी सेवा में चले जाओ दिन भर चलोगे तो रात तक पहुंच जाओगे। वो महुए के पेड़ पर रहते हैं। राजकुमार मामाजी नमस्ते बोल चल पड़ा। शाम ढलते ही जंगल के बीच में था और उसे महुए का विशाल वृक्ष नजर आ रहा था वहां पहुंचकर राजकुमार बैठा ही था कि जरा देर में वह प्रेत आदम-बू, आदम-बू करता हुआ आ गया राजकुमार ने कहा नमस्ते मामा जी !

तू कौन-सा भांजा है ?

मामा जी छोटे मामा ने यह परचा दिया है लो। चिट्ठी लेकर उसने देखा लिखा था भांजा सीधा है खाना बहुत अच्छा बनाता है। इसका कुछ काम है कर सको तो मदद कर देना।

प्रेत बोला कैसे खाना बनाते हो खिलाओ।

राजकुमार ने कहा जी भूखा तो मैं भी हूं सामान मिले तो बनाऊं।

उसने कहा क्या चाहिए।

राजकुमार ने बता दिया और उसने सब चीज का इंतजाम कर दिया उसने भी खाया और भांजे ने भी खाया। वह बहुत खुश हुआ बोला सचमुच ऐसा खाना कभी नहीं मिला। खुश रहो भांजे अब मेरे लिए काम बताओ राजकुमार ने सब बताया बोला मामा मुझे मेरी गिद्ध शहजादी चाहिए। सुनकर वह तो अपना सिर खुजाने लगा बोला इसके बारे में तो मैं कुछ नहीं जानता लेकिन मेरे बड़े भाई हैं जो थे तो प्रेत ही पर तपस्या करके संन्यासी हो गए है सिद्ध हैं वे जरूर आपका काम कर देंगे। पहचान के लिए उसने परचा दिया और बोला भांजे चीज मिल जाए तो मुझसे मिलकर जाना।

राजकुमार ने कहा अच्छा मामा और चल पड़ा अपने पथ पर। दिन चला रात चला दूसरे दिन वह जंगल के छोर पर बाबा की कुटिया पर पहुंच गया बाबा समाधि में थे। पता नहीं कब से समाधि लगाए थे। राजकुमार ने देखा कुटिया में जो मिला उसी से भूख-प्यास मिटाई वहीं सो गया। सवेरे पेड़ों की सिंचाई कुटिया की सफाई में लग गया कई दिनों बाद बाबा की आंखें खुलीं। बाबा की चेतन आवाज आई जैसे प्रचण्ड काल काली कराली खप्पर वाली काली के पूत भैरव सिद्धि दो सिद्धि दो सिद्धि दो ओइम्—की आवाज सुनकर राजकुमार ने जाकर दंड प्रमाण किया, कौन बच्चा और बाबा आंखें मूंद मुंह से कुछ बुदबुदा रहे थे। काली कराली खप्पर वाली काली के पूत भैरव और आखें खोल दीं। बाबा ने कहा उठो बच्चा बोलो मैंने तुम्हारे बारे में सब जान लिया है, बाबा भैरव की कृपा से तुम्हें तुम्हारा राज मिलेगा चिन्ता मत करो। धीरज धरो आश्रम में रहो तुम्हारा काम हो जाएगा।

आपने आशीर्वाद दे दिया मुझे सब मिल गया। राजकुमार ने कहा।

बाबा ने कहा भोजन बढ़िया बनाते हो।

राजकुमार ने कहा हां जी पर सामान।

साधु ने कहा हमारी कुटिया सिद्ध है आप जिस चीज की इच्छा करोगे। सब मिल जाएगी।

राजकुमार उतावली में बोला गिद्ध शहजादी भी महाराज।

संन्यासी बोले हां पर इसके लिए थोड़ी प्रतीक्षा करो। वह भी मिल जाएगी।

राजकुमार अपने काम में लग गया सचमुच जो लेन जाता वही चीज उसको पहले से रखी मिल जाती। लकड़ी भी चूल्हा भी सब तैयार उसने बहुत सफाई से रसोई बनाई। बाबा को भोजन बहुत पसंद आया खाते जाते और बखानते जाते।

कुछ दिन बीते बाबा बोले कल पूर्णमासी है ब्रह्मबेला में मेरे साथ उठ जाना मैं कुछ युक्ति बताऊंगा तुम उसे करना। सवेरे बाबा ने कहा बच्चा यहां से थोड़ी दूर पर एक सरोवर है उसमें कई तरह के कमल

खिले रहते हैं। उस सरोवर में पूर्णमासी को कुछ परियां नहाने आती हैं मैं तुम्हें तोता बना देता हूं तुम उनका कपड़ा लेकर मेरे आश्रम में आ जाना बाकी मैं समझ लूंगा समझे। समझ गया राजकुमार ने कहा। बाबा ने कहा एक बात का और ध्यान रखना भागते समय पीछे मुड़कर न देखना। बाबा ने राजकुमार को तोता बना दिया तोता उड़ चला। छुपते-छुपाते व्रह एक परी का कपड़ा लेकर वापस भागा उस परी ने उसे देख लिया और उसके पीछे दौड़ी बोली ले अपनी चीज ले मेरे कपड़े दे। तुझे कपड़ों से क्या लेना अपनी चीजें ले तोते ने सोचा हमको चीज ही चाहिए। कपड़े का क्या करूंगा और उसने पीछे देखा। देखते ही वह जलकर राख हो गया परी ने अपना कपड़ा ले लिया।

दोपहर हो गया चेला नहीं आया बाबा खोजने निकले देखते क्या हैं तोता राख बना हुआ पड़ा है। उन्होंने मंत्र पढ़कर फूंक मारी वह फिर राजकुमार हो गया बाबा ने कहा कि मैंने तुम्हें कहा था कि पीछे मुड़कर मत देखना नहीं मानने का नतीजा देखा।

राजकुमार ने कहा क्षमा करो गुरुदेव आज्ञा नहीं मानने पर बहुत शर्मिन्दा हूं और गिड़गिड़ाने पांव पकड़ने लगा। बाबा बोले ठीक अबकी पूर्णमासी सही लेकिन अबकी विफल होने पर फिर काम नहीं होगा। नहीं गुरुदेव आपके चरणों की सौगंध अबकी गलती नहीं होगी। समय बीता और पूर्णमासी आ गई बाबा ने फिर तोता बनाया बोले इस बार वह चौकन्नी होगी। सावधान पीछे मत देखना।

तोता उड़ चला छुपते-छुपाते वह एक परी का कपड़ा लेकर भागा संयोग से वह कपड़ा रानी परी का था, परियों ने देखा तो पत्तों से अपने शरीर को ढंकती हुई पीछे-पीछे शोर मचाती दौड़ी ले अपनी चीज देख ये है। पर उसने नहीं देखा और उड़कर बाबा की कुटिया में घुस गया। पीछे परियां भी चोर-चोर करती पहुंच गईं।

बोली बाबाजी आपकी कुटिया में मेरा चोर है उसे मेरे हवाले करो हम उसकी गत बनाएंगे, बाबा ने कहा बेटी बाबा की कुटिया में चोर नहीं है।

पारी बोली एक तोता हमारी रानी के कपड़े चुरा लाया है अब हम क्या करें कहां जाएं वे रोने लगीं।

बाबा ने कहा अच्छा देखता हूं बाबा कुटी में गये वापस आए बोले वो कह रहा है कि पहले उन्होंने मेरी चीज चुराई है बाद में मैंने चुराया है।

मैंने क्या चुराया है परियों की रानी ने कहा।

बाबा बोले गिद्ध शहजादी।

इसकी गिद्ध शहजादी इसको मिल जाएगी। तो बाबा ने कहा आपके कपड़े भी मिल जाएंगे। हम देख पहचान कर देंगे, वही राजकुमार होना चाहिए।

बाबा ने कहा ठीक है और अंदर जाकर फिर उसको राजकुमार बना दिया तो राजकुमार से रानी के कपड़े ले लिए और गिद्ध शहजादी दे दी। परियां चली गई।

महात्मा और राजकुमार बहुत हर्षोल्लास में थे बाबा ने कहा बेटा ये क्या करामात है मुझे भी दिखाओ राजकुमार ने कहा मैं सब आपको दिखाकर कल जाऊंगा। दिन बीता शाम हुई राजकुमार ने खाना तैयार किया और बाबा के साथ भोजन किया और दोनों कुटिया के सामने बैठकर अलगोजा बजाया तो पहले भिश्ती सफाई वाले आए सफाई कर पानी छिड़ककर चले गए फिर तम्बू कनात वाले आए तम्बू कनात लगाकर कुर्सियां लगा चले गए फिर बाजे वाले अपने साज लेकर आए अपने-अपने नियत स्थान पर बैठ गए तभी सुन्दर-सुन्दर देवलोक से अप्सराएं आईं और नाच-गाना आरंभ हो गया। काफी देर तक मनोरंजन होता रहा तब बाबा की इच्छा से राजकुमार ने दूसरा अलगोजा बजाया नाच बंद हो गया और क्रमशः जैसे सब आए थे चले गए बाबा ने कहा आनन्द आ गया पर एक बात कहूं यह चीज तुमसे ज्यादा मेरे काम की है आपका परिवार है गांव है शहर है पर हम संतों को तो हमेशा जंगल में निर्जन में रहना

पड़ता है इसलिए यह तुम मुझे दे दो। मेरा इससे मनोरंजन हो जाएगा।

राजकुमार ने कहा महाराज आपकी कृपा से तो मिली है। यह आपका ही प्रसाद है ले लीजिए, चेला होने के कारण भी मैं आपको ना नहीं कर सकता गुरुजी।

गुरुजी बोले मैं भी कुछ दूंगा ऐसे नहीं लूंगा राजकुमार ने कहा मैं आपका हुक्म नहीं टालूंगा बाबा ने कहा मेरे पास एक डंडा है उससे जो मरजी काम कराना वह अब तक मेरी आज्ञा मानता था अब तुम्हारा कहना करेगा।

राजकुमार ने कहा गुरुजी ठीक है और गिद्ध शहजादी बाबा को दे दी, उनसे डंडा ले लिया पांव छूकर बाबा से विदा ली और वापस चल पड़ा। काफी दूर पहुंचने पर एक पेड़ के नीचे बैठकर डंडे से बोला डंडा भाई आप मेरे कि बाबा के, डंडा बोला आपका। बाबा का नाम न लो उन्होंने मेरी क्या कद्र की दो मामूली बांसुरी के बदले मुझे दे दिया। मैं आपके साथ हूं आपका कहना मानूंगा आप आज्ञा दो अभी करूंगा। राजकुमार बोला मेरी गिद्ध शहजादी मुझे चाहिए उसी के लिए तो वर्षों से भटक रहा हूं।

तब डंडे ने कहा आप यहां बैठो या चलो मैं आपको ढूंढ लूंगा तथा आपकी चीज लेकर आता हूं। आपकी चीज लिए बिना नहीं लौटूंगा, चाहे बाबा की जान ही लेनी पड़े। डंडा चल पड़ा वापस बाबा की कुटिया की ओर।

बाबा कुटिया में पूजा-अर्चना कर कुछ भोजन का प्रबंध कर रहे थे कि, देखा डंडा चला आ रहा है। बाबा घबराये क्या बात है पर डंडा कुछ नहीं बोला और बाबा को पीटने लगा।

बाबा ने डंडे से कहा गलती बताओ और क्या चाहिए ?

डंडे ने कहा गिद्ध शहजादी दे दो नहीं तो मार डालूंगा।

बाबा ने गिद्ध शहजादी देकर कहा लो भाई जान छोड़ो।

डंडा सुस्ताने लगा बाबा ने अलगोजे उसी में बांध दिए और वह फिर राजकुमार के पास उड़ चला।

राजकुमार अभी उठकर चलने ही वाला था देखा कि डंडा चला आ रहा है तथा अलगोजे उसी में बंधे हैं, उन्हें देखकर राजकुमार खुश हो गया। उसने डंडे को शाबाशी दी और चूमा। फिर दोनों चीजों को झोले में रखकर आगे चल पड़ा। दूसरे दिन शाम को वह अपने दूसरे यानी मध्य वाले मामा के पास पहुंच गया।

मामा ने भांजे को देखा तो चिहुंककर खुश होकर बोला आपकी चीज मिल गई।

राजकुमार बोला, मामा आप न मिलते तो ये भी कहां मिलती।

प्रेत बोला मैं जानता था मेरा भांजा बात का धनी है वह जरूर आएगा। मैंने खाने का सारा सामान जुटा रखा है। ऐसा खाना तुम्हारे बिना कहीं नहीं मिलता और मुझे वह चीज दिखाओ जिसके लिए तुम घर-गांव छोड़कर घूम रहे हो।

ठीक है राजकुमार ने कहा भोजन के बाद दिखाऊंगा और राजकुमार ने खाना बनाया।

प्रेत ने खूब खाया और बहुत प्रशंसा की और बोला भांजे कभी-कभार भूल से ही सही आ जाना।

उसके बाद राजकुमार ने अलगोजा बजाया तो भिश्ती सफाई वाले आए तम्बू कनात वाले आए बाजे वाले आए नाचने-गाने वाली अप्सराएं आईं और नाच रंग शुरू हो गया। उन्हें देखकर प्रेत भी मस्त होकर हड्डियां बजा-बजाकर नाचने लगा। रात काफी बीत जाने पर नाच-गाना बद हो गया और दोनों सो गए।

सवेरा हुआ जब राजकुमार चलने लगा तो प्रेत बोला चीज तो अच्छी है पर भांजे ज्यादा काम की मेरी है। इसे मुझे दे दो।

राजकुमार बोला मामा जैसी आपकी इच्छा और राजकुमार ने गिद्ध शहजादी प्रेत को दे दी।

प्रेत खुश हो गया बोला भांजे मैं इसे ऐसे नहीं लूंगा। इसके बदले मैं तुम्हें एक चीज दूंगा जो तुम्हारे बहुत काम आएगी।

राजकुमार बोला ऐसी क्या चीज है मामा जो मेरे बहुत काम आएगी।

प्रेत बोला मेरे पास ऐसी खड़ाऊं हैं जिन्हें पहनकर उड़कर जहां जाना चाहो वहां जा सकते हो। तुम रख लो और प्रेत ने राजकुमार की मां के लिए साड़ी आदि दी और बोला मैं कितना अभागा हूं तुम तो मिल गए, मगर मैंने अपनी बहन को नहीं देखा।

राजकुमार बोला मामा आपसे कौन मिल सकता है जब तक आप न चाहो और मामाजी को नमस्ते करके आगे चल पड़ा। एक मील चला होगा कि झोले से डंडा निकाला बोला यार मेरी गिद्ध शहजादी तो प्रेत के पास है।

डंडा बोला, मैं अभी लाया वह उड़ चला। प्रेत महुए के पेड़ के नीचे धूप सेंक रहा था उसने आव देखा न ताव बस मारना शुरू कर दिया।

प्रेत बोला मुझे क्यों मार रहा है कारण बता। मेरी जान कैसे छोड़ेगा।

डंडा बोला गिद्ध शहजादी लेकर तुम्हें छोड़ दूंगा।

प्रेत ने जल्दी से गिद्ध शहजादी डंडे में बांध दी। डंडा उड़कर राजकुमार के पास आ गया।

राजकुमार ने डंडे को शाबाश कहा और बधाई दी और कहा काम हो गया। फिर डंडे को झोले में डाला और खड़ाऊं पहन उड़ चला और छोटे मामा के पेड़ के पास उतर गया।

प्रेत ने देखा पूछा भांजे काम हो गया।

हां मामा।

मामा बहुत खुश हुआ और ठुमककर उछल-उछलकर नाचने लगा।

भांजे ने यहां भी खाना बनाया अलगोजों का नाच दिखाया। मामाजी ने खूब मजे लिए। सवेरा होने को हुआ तो मामाजी बोले भांजे यह चीज तुमसे ज्यादा मेरे लिए उपयोगी है। अगर दे दो तो मेरी हर रात रंगीन हो जाए।

राजकुमार बोला मामा आपके लिए मना थोड़े ही है आप जैसे खुश वैसे मैं भी खुश।

प्रेत खुश हो गया बोला मैंने अपनी बहन नहीं देखी उनसे यहां का हाल बताना और मैं उनके लिए कुछ भेंट भी देता हूं। प्रेत ने कुछ गहने कुछ कपड़े राजकुमार की मां के लिए दिए। राजकुमार ने भी गिद्ध शहजादी उसको दे दी।

प्रेत ने कहा भांजे मैं तुम्हारी चीज ऐसे नहीं लूंगा। मेरे पास एक झोला है उसकी खासियत ये है कि वह जितनी जरूरत हो फैल सकता है, जो चीज इकट्ठा करना हो उसमें कुछ नहीं छोड़ता वो आप ले लो।

राजकुमार ने कहा ठीक है मामाजी और उसको गिद्ध शहजादी पकड़ा दी मामा से थैला ले लिया, नमस्ते की हाथ जोड़े और चल पड़ा। अभी एक मील भी नहीं गया होगा कि झोले में से डंडा निकाला बोला, 'डंडा भाई मेरा कि बाबा का।'

डंडा बल खा गया आप क्यों बाबा का नाम लेते हैं, अब मैं उनका नाम नहीं सुनना चाहता आप हुक्म करो।

हुक्म क्या, बस वही मुझे अपनी गिद्ध शहजादी चाहिए जिसके लिए मैंने दर-दर की खाक छानी है।

अच्छा मैं अभी लाता हूं डंडा बोला और उड़ चला प्रेत के पास।

प्रेत बैठे-बैठे उबासियां ले रहा था कि डंडे ने पहुंच उस पर वार करने शुरू कर दिए।

प्रेत बोला क्यों मारते हो मैंने क्या बिगाड़ा है किसी का।

डंडा बोला गिद्ध शहजादी दे दो नहीं तो जान से मार दूंगा।

प्रेत ने गिद्ध शहजादी डंडे में बांध दी। डंडा उड़कर राजकुमार के पास पहुंच गया। राजकुमार ने डंडे को शाबाशी दी और दोनों चीजें झोले में रखकर खड़ाऊं निकाल पहने और बोला मां के पास चलो। खड़ाऊं ने उसे बहुत जल्दी उसकी मां के पास झोंपड़ी में उतार दिया।

बुढ़िया मर चुकी थी रानी मां की आंखें कमजोर हो गई थी। एक कोने में बोरी बिछाए बैठी थी ये हाल देखकर राजकुमार की आंखें भर आईं। माता बिन आदर कौन करे—धरती बिन धीरज कौन धरे।

रानी मां-रानी मां मैं आ गया देखो क्या-क्या लाया हूं ?

कौन मेरा लाड़ला राजकुमार नहीं वह कहां हो सकता है ?

हां मां देखो मैं राजकुमार ही हूं।

मुझे दिख नहीं रहा जरा ठहर और देखने और उठने की कोशिश करने लगी तो उन्हें ऐसा महसूस हुआ जैसे उनकी देह में तेजी से रक्त संचार हो रहा है। थोड़ी देर में कुछ दिखने भी लगा। मां ने अपने लाल को छाती से लगा लिया बहुत बहुत दुःख झेला है तूने बेटा।

नहीं मां मेरे साथ तो तुम्हारा आशीर्वाद था। सब काम हो गया गिद्ध शहजादी के साथ ढेर सारा सामान और बहुत सारा अनुभव लेकर आया हं एक महात्मा ने कहा है मनोरथ पूरे होंगे राज भोगोगे।

मां खुशी में पागल हो रही थी और जवान की तरह चल-फिर रही थी। बोली बुढ़िया मर गई कितनी खुश होती ये देखकर।

हरवाहे को जो दोष लगा था वह भी पूरा हो चुका था और वह रानी मां का ध्यान भी अपने बूते भर रख रहा था। अब राजकुमार, रानी सब सुखी थे।

राजकुमार ने सोचा खड़ाऊं पर चढ़कर देवलोक की सैर की जाए। वह रात में खड़ाऊं पहनकर देवलोक इन्द्र के सभागार में पहुंच गया। उस समय इन्द्र की सभा में अप्सराएं नाच रही थीं। सब देवता लोग नाच देख रहे थे। राजकुमार भी एक तरफ खड़ा होकर नाच देखने लगा। इस प्रकार कई दिन बीत गए।

राजकुमार रोज जाता। एक दिन इन्द्र ने देखा कि एक अप्सरा नाचते-नाचते एक जगह रुक जाती है। जरा ठिठककर वह पुनः नाचने लग जाती है। इन्द्र ने उससे पूछा क्या बात है तुम नाचते-नाचते क्यों रुक जाती हो हमें बताओ। अप्सरा कुछ नहीं बोली।

देवराज इन्द्र को क्रोध आ गया उन्होंने कहा, तूने : मेरी आज्ञा नहीं मानी जा तू सांपिन हो जा। अप्सरा सांपिन बन गई।

नाच खत्म हो गया सब देवता अपने-अपने घर को चले। तभी एक देवता ने कहा कि अगर इसका कोई हित चाहने वाला है तो उसको चाहिए कि एक ही वार में इसको मार दे तो यह पुनः अप्सरा बन जाएगी। राजकुमार सुन रहा था।

राजकुमार ने डंडे से कहा क्यों भाई मेरा यह काम कर सकते हो। डंडे ने कहा मेरे एक वार से तो लोहा भी दो टुकड़े हो जाएगा। आप आज्ञा दें।

राजकुमार बोला वार करो यहां कोई नहीं है सब जा चुके हैं। डंडे ने उछलकर नागिन के फन से तीन अंगुल छोड़कर वार किया वह फिर अप्सरा बन गई। उसने राजकुमार की ओर देखा हाथ जोड़े और चली गई।

दूसरे दिन फिर देवराज इन्द्र की सभा में नाच हुआ। उस नाच में वह अप्सरा भी शामिल थी और नाचते-नाचते पहली वाली जगह पर आकर ठिठक गई। देवराज इन्द्र ने देखा मैंने इसको शाप दिया था। पर किसी ने इसे शाप मुक्त कर दिया। इस बार इन्द्र ने उसे फिर शाप दे दिया कि जा वन के एक बड़े तालाब में काई बन जा। वह अप्सरा तालाब की काई बन गई।

नाच खत्म हुआ देवता अपने-अपने घर को चले। पर दो-तीन लोग जाते-जाते कह रहे थे कि उसकी भी दवा है कि अगर कोई तालाब से सारी काई छान ले और उसमें जरा-भी काई न बचने पाए और उसे फूंक दे तो जल जाने पर फिर अप्सरा बन जायगी।

राजकुमार ने सुन लिया। उसने झोले में से वही थैला निकाला जो उसे बीच वाले प्रेत ने दिया था। राजकुमार थैले से बोला क्या तुम यह काम कर सकते हो।

थैला बोला बस आप मुझे तालाब के ऊपर उछालिए मैं एक बार मैं सब काई इकट्ठी कर लूंगा चाहे कितनी भी हो। राजकुमार ने तालाब पर जाकर झोले को फैलाया तो थैला फैलता गया। इतना फैला कि तालाब के चारों ओर के किनारों को ढंक लिया और फिर काई इकट्ठी करता हुआ सिकुड़ने लगा और सारी काई तालाब के किनारे इकट्ठी कर दी। राजकुमार ने उसके ऊपर कुछ घी डालकर आग लगा दी। जब सब काई जल गई तो उसमें से अप्सरा प्रगट हुई। हाथ जोड़कर वह अपने घर चली गई।

राजकुमार दूसरे दिन फिर नाच देखने गया तो वह भी नाच में शामिल थी और नाचते-नाचते फिर ठिठक गई। देवराज इन्द्र ने देखा तो बोले मैंने तुझको दो बार शाप दिया। दोनों बार तुझे किसी ने बचा लिया। कौन है वह जिसको तू चाहती है बोल। वह कुछ नहीं बोली और झिझकते-शरमाते धीरे-धीरे चलकर राजकुमार के पास खड़ी हो गई। देवराज ने क्रोध से कहा तू स्वर्ग लोक में रहने लायक नहीं है जा मृत्यु लोक में रह। फिर राजकुमार को बुला उसका सारा हाल जाना और बोले यह सब गिद्ध शहजादी के कारण हो रहा है। जाओ मौज करो और कुछ देवलोक के उपहार भी दिए।

अप्सरा बहुत खुश थी उसने बताया कि मैं तुम्हें पाने के लिए ही अलगोजे भी मांजी से छीन लाई थी। जहां गिद्ध शहजादी रहेगी वहीं मैं भी रहूंगी। चलो और दोनों वहां से अपने घर आ गए। दोनों ने रानी मां के चरण छू लिए। रानी मां ने दोनों को उठाकर छाती से लगा लिया जैसे उनका राजपाट फिर मिल गया।

रानी ने कहा मैं अप्सरा बहू पाकर बहुत खुश हूं। घर में मंगलगान होने लगा। शादी का भोज हुआ, बाजे बजवाए गए। विवाह हुआ, पूरे एक रात एक दिन उत्सव मनाया गया खूब धन खर्च किया गया। उसके बाद विचार हुआ कि शुभ मुहूर्त में अब अपने राज्य में चला जाए और सब परिवार वहां से चलने की तैयारी करने लगा।

दो पालकी में सास-बहू और छकड़ों में सारा सामान ले राजकुमार स्वयं नंगी तलवार ले सबसे आगे आगे चल रहा था। पता नहीं कहां दानव तथा उसके आदमियों से सामना हो जाए।

चलते-चलते नदी के किनारे पहुंचे। बहू ने कहा मांजी यहां अपनी कोई चीज है। रानी ने कहा, बहू यहां और तो कोई चीज नहीं है। हां हमारा घोड़ा यहां मर गया था उसको मैंने गाड़ दिया था, बहुत दिन हो गए अब उसकी हड्डियां भी नहीं होंगी।

अप्सरा बोली कहां गाड़ा है ?

रानी ने बताया यहां तो बहू ने वहां से मिट्टी हटानी शुरू कर दी तो राजकुमार ने इशारा किया। सभी लोग खोदने पर लग गए। खोदने पर घोड़ा मिल गया। ऐसा लग रहा था कि जैसे अभी बेहोश हुआ हो। अप्सरा ने अपनी बाईं उंगली में सुई चुभोकर एक बूंद खून घोड़े के पुट्ठे पर टपकाया और बोली सब लोग लगकर इसको गड्ढे से बाहर निकालो। अप्सरा ने फिर उसी उंगली से एक बूंद खून टपकाया और घोड़ा थोड़ी देर में ही उठकर खड़ा हो गया। रानी ने घोड़े की बलैया लीं।

घोड़ा राजकुमार को देखकर बोला इतने बड़े हो गए।

रानी ने अप्सरा की तरफ इशारा करके कहा यह हमारी बहू है। अब बोलो क्या करना चाहिए।

घोड़े ने कहा करना क्या है ? नदी में पानी थोड़ा है पार करके उस पार चलकर विचार करेंगे।

राजकुमार ने कहा डरो नहीं जो करना है बोलो।

सब इस पार आ गए सास-बहू को खड़ाऊं ने इस पार उतारा। घोड़ा सबको लेकर उस कटे हुए पेड़ के पास ले आया और बोला यहां से ही हारे थे और यहां से ही जीतेंगे।

राजकुमार डंडा निकालकर उससे बोला भाई तुम दानव को मारते हुए यहां लाओ।

बहू ने कहा उसके पेट पर मत मारना और सब जगह मारना।

उधर दानव के लोगों ने उसे खबर कर दी कि लगता है राजकुमार अपना राज्य वापस लेने के लिए आ रहा है। यह सुनकर दानव कच्छा-बनियान पहने ही जिस हाल में था राजकुमार की ओर भाग चला। मगर रास्ते में ही डंडे ने उसके कंधे पर चोट की पर वह रुका नहीं बोला, सबको खा लूंगा तब मरूंगा पहले नहीं मरूंगा। डंडा उसे पीटता रहा। वह दानव राजकुमार की तरफ भागता रहा। जब वह राजकुमार से सौ फुट दूर रह गया डंडे ने उसके पैरों पर वार किया और उसके पैर तोड़ दिए। वह गिर गया डंडा पेट छोड़कर सारे शरीर में प्रहार करता रहा। अंत में दानव ढेर हो गया। फिर अप्सरा तेल लेकर उसकी मालिश करने लगी तो पेट से एक नौजवान लड़का निकला। रानी ने कहा यह राजमहल का सिपाही है बहू ने उसको जीवित कर दिया। इसी तरह और भी कई निकले बाद में राजा भी निकले। बहू ने सबको जिन्दा कर दिया।

कहानी सुनने वालों मेरी बात सुनो यह सुनी सुनाई कहानी है मैंने काई अपनी आंख से न तो देखा है न सुना है कहते हैं कि दानव के पेट से मनुष्य तो मनुष्य भेड़-बकरियां तक जिन्दा निकलीं और बहू ने सबको जिन्दा कर दिया राज्य में दीपावली मनाई गई। राजा ने राजकुमार का राजतिलक कर दिया और रानी के साथ वन को चले गए। जैसे इनके बुरे दिन बीत गए भले दिन लौटे भगवान ऐसे सबके साथ करे।

**निवेदन :** कहते हैं कि जो लोग पूरी कहानी नहीं सुनते हैं उनका मामा खो जाता है पूरा आनन्द प्राप्त करने के लिए कहानी ध्यान से सुनें पूरी सुनें।

# राजा जादूगर

एक राजा थे, बहुत बड़ा राज्य था उनका और अपना राज्य वह इतना अच्छा चलाते थे कि प्रजा राजा पर अपना सब-कुछ न्योछावर करने को तत्पर रहती थी। राजा साहित्य और कला प्रेमी थे। उनकी नजर में कोई कला-प्रेमी आता तो उसे बुलाकर सम्मान देते और सम्मानित भी करते थे। राजा अजातशत्रु तलवार के भी धनी थे। उनका नाम दूर-दूर तक सरनाम था और दूर-दूर से कला और साहित्य के ज्ञाता वहां आया करते थे और ईनाम भी पाया करते थे। इसी तरह एक दिन एक आदमी फाटक पर आया और ड्योढ़ीवान से बोला राजा से मिलवा दो। दरबान ने पूछा क्या काम है ?

उसने कहा मैं कलाकार हूं अपना हुनर राजा साहब को दिखाकर खुश करूंगा और पुरस्कार पाऊंगा। तुम जाकर राजा साहब से कहो कि एक कलाकार आया है आपसे मिलना चाहता है। मुझे विश्वास है मुझे अवसर मिलेगा तो मैं तुझे भी खुश कर दूंगा।

यह सुनकर ड्योढ़ीवान ने सोचा मुझे भी कुछ मिलेगा, राजा से निवेदन किया। महाराज एक कलाकार आया है और राजदरबार में अपनी कला दिखाना चाहता है क्या आज्ञा है?

राजा ने कहा उसे आने दो।

दरबान चला आया और कलाकार से बोला—महाराज ने तुम्हें दरबार में बुलाया है, मेरे साथ चलो। दोनों चल पड़े चलते-चलते कलाकार राजा के वैभव की सराहना भी करता जाता है। क्या दीवारें, क्या दरवाजे हैं जिसमें मोती-मूंगा,

मणियां रत्न-जड़ित कलश अंधेरे को उजाले में बदल देता है। राजसम्पदा देखते हुए वे लोग राजदरबार में पहुंचे।

दरबार में एक स्वर्ण सिंहासन रत्नों से अलंकृत जगमगा रहा था। उस पर महाराज विराजमान थे। कलाकार ने आधा शरीर झुकाकर महाराज का अभिवादन किया।

राजा ने पूछा आप ही वो कलाकार हैं। आप कौन सी कला जानते हो।

कलाकार ने कहा महाराज मैं जादूगरी की कला जानता हूं और हुक्म करें कि मैं अपनी कला का प्रदर्शन कहां करूं।

सबके सामने इसी दरबार में, महाराज बोले अगर तुम्हारी कला से मैं प्रभावित न हुआ तो।

तो मेरा सिर कटवा देना और पसन्द आए तो इनाम तो मिलेगा ही। कलाकार बोला।

महाराज ने कहा अच्छा तो शर्त पर हस्ताक्षर करो।

कलाकार ने शर्त के पत्र पर हस्ताक्षर कर दिए। राजा बोले कब दिखाओगे अपनी कला।

कलाकार ने कहा जब आज्ञा होगी।

राजा बोले कल ठीक है।

जादूगर ने कहा जो आज्ञा कल सही।

राजा साहब ने ऐलान करवाया कि कचहरी में कल काम बंद रहेगा और सब समय से दरबार में

आकर दस बजे दिन में इसकी जादूगरी का खेल देखें। दरबार बर्खास्त हो गया।

दूसरे दिन समय से सब मंत्री, उपमंत्री सहित दरबारी और राजा साहब का परिवार, खास मित्रगण सब पहुंचे, एक खास जादूगर की कला देखने। जादूगर भी आकर बैठ गया। इंतजार में था कि राजा की आज्ञा हो और वह अपना खेल दिखाए। समय होने पर राजा साहब की आज्ञा हो गई और जादूगर-जादूगरनी अपना खेल दिखाने के लिए दरबार के खुले हिस्से को घेरकर अपनी ड्योढ़ी पीटने लगे।

जादूगर ने कहा प्रिये ! आज तो कुछ समझ में नहीं आता कौन-सा खेल दिखाएं। जादूगरनी ने कहा मैं बताऊं। जादूगर बोला हां बोल, जादूगरनी ने कहा कि ऐसा खेल दिखाओ कि राजा साहब और दरबारियों ने कभी देखा न हो और न सोचा हो और सब वाह-वाह करने लगें। हां तभी तो हमें मुंह मांगा इनाम मिलेगा और वह बोला ठहर देख यह क्या रंग में भंग पड़ गया ला मुझे मेरी तलवार दे। क्या हो गया जादूगरनी बोली।

जादूगर ने कहा ये देख आंगन में एक पतला धागा लटका हुआ है। उसने बताया यह धागा मुझे बुलाने के लिए इन्द्र ने भेजा है। मुझे जाना पड़ेगा देवताओं की ओर से लड़ने। लगता है देव दानवों में युद्ध हो रहा है। वहां दानव भी कमजोर नहीं। युद्ध देखो कब तक चलेगा। जिन्दा रहे तो भेंट होगी नहीं तो आप सब क्षमा करना मैं बार-बार क्षमा मांगता हूं। मुझे दानव घातिनी तलवार देकर हंसकर विदा करो।

जादूगरनी बोली अपने जौहर दिखाना पीठ मत दिखाना। जिस दिन जान लूंगी आप नहीं हैं मैं सती हो जाऊंगी। मेरी चिन्ता मत करना मेरे संरक्षक महाराज हैं।

राजा ने कहा हां जाओ यह हमारी मेहमान है तुम चिन्ता मत करना।

फिर उस जादूगर ने तलवार अपने दांतों में दबा ली और रस्सी पकड़ उस पर चढ़ने लगा। सब लोग देख रहे थे। देखते-देखते वह आंखों से ओझल हो गया। थोड़ी देर में वह रस्सी भी दिखनी बंद हो गई। कभी-कभी थोड़ी बहुत रणभेदी युद्ध के नगाड़ों की आवाजें सुनाई पड़ती थीं।

इतने में झन्नाटे की आवाज हुई लोगों ने देखा जो तलवार जादूगर लेकर चढ़ा था। वह तलवार नीचे आ गिरी। हाय राम ! जादूगरनी बोली यह तलवार इन्हीं की है। इसके बिना यह क्या लड़ेंगे। मुझे अपशकुन हो रहा है दाहिनी आंख फड़क रही है। मन चिंतित है। इतने में उस जादूगर की एक भुजा जिसमें ढाल पकड़े हुए था आकर गिरी। फिर कुछ देर बाद दूसरी भुजा आ गिरी। फिर उसके बाद धड़ भी आ गिरा यह देख जादूगरनी दहाड़ें मार-मारकर रोने लगी। सब उसे समझाने लगे। इतने में धनुष, बाणों से भरा तरकश और उसका सिर भी आ गिरा। बड़ा अचम्भा हो रहा था सबको सब लोग जादूगरनी को ढांढ़स बंधा रहे थे।

जादूगरनी ने कहा कि रोने से कुछ नहीं मिलना महाराज ! मैं आपके पांव पड़ती हूं। आप मेरी चिता तैयार करवा दें मैं पतिव्रता हूं उसी में जल जाऊंगी। मेरी सद्गति हो जाएगी बस यह काम करवा दीजिए।

राजा ने बहुत समझाया पर वह नहीं मानी। तब राजा ने उसकी चिता तैयार करवाई। जादूगरनी जब चिता पर बैठी तो चिता अपने आप जल उठी और वह उसी में सती हो गई। अब सब लोग उसे अंतिम श्रद्धांजलि देकर जाने की तैयारी कर रहे थे कि एक मंत्री ने कहा महाराज यह धागा फिर लटक रहा है। राजा ने देखा धागे के सहारे कोई बड़ी तेजी से नीचे उतर रहा है।

अरे ! यह तो वही जादूगर है और जादूगर नीचे उतर आया। धागा फिर गायब हो गया। उतरते ही उसने पुकारा सुनती हो आज मैंने घमासान युद्ध किया। मैंने देवताओं से कहा आप विश्राम करें मैं अकेला ही बहुत हूं। मैंने लड़ते-लड़ते लाशों के ढेर लगा दिए। दानव भाग खड़े हुए इन्द्र ने खुद मेरी पीठ ठोंकी है। तू बोलती क्यों नहीं। तू कहां है। मैं समझ गया तुझ पर राजा का दिल आ गया और तुझे राजमहल में बंदी बना कर रखा है। चिन्ता न कर मैं तुझे छुड़ाऊंगा तुझे साथ लिए बिना नहीं जाऊंगा

चाहे मुझे जो करना पड़े। महाराज मुझ गरीब कमजोर पर दया करो। आपका बहुत नाम सुना है आप बहुत दयालु हैं। आपके पास रानियों की कमी नहीं है। मुझे मेरी पत्नी दे दो, मैं ईनाम नहीं लूंगा।

राजा साहब ने कहा कि सुनो तुम तो मर गए थे। तुम्हारा सारा शरीर कट-कटकर नीचे आ गिरा था। जिसे देखकर वह सती हो गई। हम लोगों ने बहुत समझाया पर वह नहीं मानी। मैं अब उसको कहां से लाऊं।

जादूगर ने कहा महाराज वह बिना मेरे नहीं मरेगी। वह जिन्दा है और आपके राजमहल में कैद है। राजा ने कहा कहां कैद है पूरे राजमहल की तलाशी ले लो।

राजा और जादूगर राजमहल के आंगन में आकर खड़े हो गए। तभी जादूगर बोला तू किसी से न डर राजा से भी नहीं जहां भी है बोल महाराज कह रहे हैं तू सती हो गई सैकड़ों लोगों के सामने। तू बता कहां हैं।

तभी एक कमरे से पायल बजने की आवाज आई। सबके कान उसी तरफ लग गए जादूगरनी ने कहा अभी तसल्ली नहीं हुई तू कहां है फिर बता।

फिर पायल बजी साथ ही आवाज आई मैं यहां पूर्व वाले कमरे में बंद हूं।

जादूगर बोला महाराज यह पूर्व वाला कमरा खुलवाइए।

राजा ने आज्ञा दी और कमरे का ताला खुलवाया तो उसमें से जादूगरनी छम-छम करती निकली और जादूगर-जादूगरनी दोनों ने हाथ जोड़कर सबको नमस्ते किया और राजा से कहा महाराज आज का हमारा खेल कैसा रहा। राजा समेत सब ने कहा वाह-वाह कमाल कर दिया। सभा बर्खास्त हुई जादूगर ने महाराज से विदा मांगी।

तब राजा ने कहा आज आप आराम करो कल सोचेंगे विदा के बारे में और जादूगर-जादूगरनी आराम करने चले गए।

दूसरे दिन राजा साहब ने जादूगर को अपने गोपनीय कक्ष में अकेले बात करने के लिए बुलाया। राजा ने जादूगर से कहा भाई तुम बहुत अच्छे कलाकार हो। मैंने बहुत सारे जादूगरों के करतब देखने के बाद उन्हें पैसा और सम्मान देकर विदा कर दिया लेकिन तुम्हें मैं अपना गुरु बनाना चाहता हू, तुमसे यह विद्या सीखना चाहता हूं। बाद में यथोचित दक्षिणा दूंगा।

जादूगर बोला महाराज हम आपकी प्रजा हैं ना करने की हिम्मत हममें नहीं है। हां एक शर्त है उसे आपको मानना पड़ेगा नहीं तो मंत्र काम नहीं करेंगे।

राजा ने कहा बोलो।

जादूगर ने कहा एक तो जहां मंत्र सिखाऊंगा वहां पर कोई और नहीं होना चाहिए। दूसरे एक जादू अभी सिखाऊंगा तो दूसरा जादू बारह वर्ष बाद सिखाऊंगा।

राजा बोले स्वीकार है। आज हम दोनों जंगल में चलते हैं। वहां रात को आप मुझे विद्या सिखाना रात बारह बजे। राजा ने अपना घोड़ा और उस जादूगर को साथ लिया और घने जंगल की ओर चल पड़े। जंगल के काफी अंदर चलने के बाद एक मैदान दिखाई दिया। राजा बोले यह जगह ठीक है। राजा घोड़े को एक तरफ छोड़कर जादूगर के सामने बैठ गए।

जादूगर ने कहा महाराज कौन-सा जादू सीखना चाहते हैं।

राजा ने कहा परकाया प्रवेश का जादू सीखना चाहता हूं।

उसने कहा ठीक है। फिर उसने दस कंकड़ उठाए और बैठकर पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण की ओर एक-एक कंकड़ फूंक मारकर उछाले एक कंकड़ आसमान की ओर एक कंकड़ नीचे धरती की ओर फेंका फिर उसने राजा को ज्ञान दिया। परकाया प्रवेश के लिए पहले से खाली काया का होना जरूरी है। किसी

जीवित काया में प्रवेश करने की कोशिश करना अपनी काया से हाथ धोना हो सकता है और फिर राजा को गुर सिखाए मंत्र और प्रयोग विधि बताई। सब काम हो जाने पर ईनाम लिया विदा ली। राजा भी संतुष्ट हो घोड़े पर सवार हो वहां से चल पड़ा।

तीन बजने को थे रास्ते के बगल में एक बाग था राजा ने देखा उसके अंदर नाच-गाना हो रहा है। राजा रुक गया इधर-उधर देखा तो वहां घास में एक चूहा मरा पड़ा है। फिर क्या राजा ने सोचा चलो जादू आजमा लेते हैं। घोड़े से बोले तुम यहीं रहना मैं अभी राजा बनकर आऊंगा तब चलना। घोड़े ने सिर हिलाया ठीक है। राजा ने अपना चोला छोड़ा चूहे की काया में प्रवेश किया। जिधर से बगीचे में पानी जाता था। नाले के रास्ते जाकर नाच देखने लगा। जब राजा जादू सीख रहे थे तो उसे घोड़ा भी सुन सीख रहा था। राजा चूहा बन गए तो वह भी घोड़े का चोला छोड़ राजा के चोले में घुसकर राजा बन गया और सीधा राजमहल जा पहुंचा और वहां बोला कि मैं शिकार को गया था। वहां जंगल में घोड़ा मुझे छोड़ कहीं भाग गया। बहुत बेवफा निकला, ऐसी बात कर वह राजा बनकर राजा की तरह काम-काज करने लगा।

इधर राजा जब बाहर निकले देखा घोड़ा मरा पड़ा है राजा सारी बात समझ गए। चूहा बने राजा वहीं बाग में चक्कर काटने लगे इतने में उन्होंने देखा एक आम के वृक्ष के नीचे एक बहुत सुन्दर तोता मरा पड़ा है राजा ने सोचा चूहे से तोता भला और राजा चूहे का शरीर छोड़ तोता बन गए और बागों में फल खाकर भूख मिटाने लगे।

दिन चढ़ आया था। फिर शाम हुई तमाम तोते बसेरे के लिए जाने लगे थे ये भी एक झुण्ड में शामिल हो गए। सब तोते एक पेड़ पर जाकर बैठ गए। देर रात एक तोते ने अपने सरगना तोते से कहा कि एक नया तोता झुण्ड में आया है।

किसकी वजह से आया है तोते के सरगना ने कहा।

तोते ने कहा कि वह हममें से किसी को नहीं जानता अच्छा उसे बुलाओ। राजा तोता ने कहा जी मैं मुसीबत में हूं। अपने झुण्ड से बिछुड़ गया कृपा करके आप मुझे अपने झुण्ड में शामिल कर लें मैं आपसे वायदा करता हूं कि मैं आपका सबका हित भले करूं अनहित नहीं करूंगा। उसकी बातों से सरगना तोता बहुत प्रभावित हुआ और बोला बहुत बुद्धिमान लगते हो। राजा तोता उन्हीं तोतों के साथ रहने लगा।

एक दिन उसने देखा जमीन पर लाल मिर्च, फल पानी सब रखा है सब तोते दौड़ पड़े। तोता राजा ने रोका ठहरो कुछ गड़बड़ है। बाकी तोतों ने कहा गड़बड़ है तो न आ अपना ज्ञान अपने पास रख। सब तोते उसी ओर बढ़ चले तो राजा तोता भी इन्हीं में मिल गया और सब अपना मिला माल खाने लगे। तोते आपस में मस्ती भी कर रहे थे। सब पेट भरने में लगे थे उन्हें इस बात का कोई आभास ही नहीं था कि वे किस फंदे में फंसते जा रहे थे। उधर शिकारी ने जाल खींचना शुरू कर दिया और सब तोते जाल में फंस गए। तोता राजा तो जान-बूझकर फंसे ताकि उन्हें कोई दगाबाज न कहे।

सब तोते बढ़िया नस्ल के थे। बहेलिया बहुत खुश था। सबको एक जालीनुमा बड़े पिंजरे में ठूंसकर ले चला रास्ते में राजा ने कहा शिकारी भाई ! तो शिकारी अचकचा गया उसने पिंजरा जमीन पर रख दिया बोला क्या बात है। तोते ने कहा तकलीफ हो रही है। मैं तुम्हारे भले की बात कहता हूं तोते मर गए तो आपका नुकसान होगा। आपके कंधे पर एक और ऐसा ही पिंजरा है उसमें हमें रख लो हम भागेंगे नहीं।

शिकारी ने सोचा तोता कह तो ठीक रहा है।

राजा तोता बोला मेरी राय पर चलोगे तो मौज में रहोगे। ये तोते मेरे साथी हैं इनको ऐसे लोगों

के हाथ बेचना जहां ये अच्छी तरह रहें। वह दूसरे दिन कुछ तोतों को लेकर मेला-हाट में बेचने ले गया। राजा तोता बोला आप जाओ मैं फिर चलूंगा और बाजार में नहीं बिकूंगा जो मुझे खरीदेगा वह कुछ होगा, सबके बस में नहीं है मुझे खरीदना। राजा तोता जो कहता वही होता जो मांगते खाने को वही मिलता।

एक दिन राजा तोता बोले आज मुझे भी बेच आओ पर खरीददार जब पूछे कितने का है तो कहना यही बताएगा अपनी कीमत। शिकारी राजा तोते को एक बढ़िया सुनहरे पिंजरे में लटकाये वहां चल पड़ा जहां धनी व्यापारी रहते थे। कुछ लोगों ने पूछा भाई तोता अच्छी नस्ल का लगता है कितने का है तो बहेलिए ने कहा यह अपनी कीमत खुद ही बताएगा। उसने कहा ठीक है यही बता दे। तोते ने कहा लाख टका (एक लाख रुपए) अच्छा उसकी बोलती बंद हो गई। दूसरे ख़रीददार ने पूछा तो बोला लाख टका न कौड़ी कम न कौड़ी ज्यादा। इसी तरह महीनों निकल गए।

बहेलिया बोला कौन देगा इतनी रकम। क्या इतनी रकम थोड़ी होती है मैं तो गिन भी न पाऊंगा।

तोता बोला देख भाई सब्र का फल मीठा होता है जब तक तेरा अन्न खाना मेरे भाग्य में है मैं खाऊंगा। तुम कुछ नहीं कर सकते। मैं पांच टके में नहीं बिकूंगा। तो शिकारी भी बोला मैं भी डटा रहूंगा।

एक दिन शिकारी राजा तोते के पिंजरे को लिए बेचने के लिए घूम रहा था। तभी एक छोटे से सात-आठ साल के बच्चे ने बहेलिए से कहा यहां आओ। राजा तोता धीरे से बोला कहां ले चलता है चलो। वह बच्चा उसको अपने सुन्दर मकान में ले गया। वहां सेठजी मसनद के सहारे पीठ टेके बैठे थे कुछ मुनीम क्लर्क बड़े-बड़े रजिस्टरों के पन्ने पलट रहे थे बच्चा बोला पिताजी तोता बहुत अच्छा है सेठजी ने गरदन उस ओर मोड़ी देखा तो बच्चा बोला मैं ये तोता लूंगा।

सेठजी बहलिये से बोले भाई तोता कितने का है ?

बहेलिया बोला सेठ साहब ये तोता अपनी कीमत खुद बताएगा। सेठ साहब बोले भाई तोते बता अपनी कीमत।

तोते ने कहा लाख टका न कौड़ी कम न कौड़ी ज्यादा और एक शर्त है जो मानेगा वहीं खरीदेगा। तोता बोला आप अपना बिजनेस व्यापार करें उसके बाद घर में मैं सलाह दूंगा। उसमें अगर कुछ अटपटा लगे तो भी मेरी मानोगे नहीं मान सकोगे तो आजाद कर दो। वैसे एक बात पहले स्पष्ट कर दूं कि मेरी सलाह से आप सफल होंगे। चाहे उसमें समय और कभी-कभी आपको असमंजस लगे तोता चुप हो गया।

सेठ सुनकर बोला बेटा लाख टका का तोता शर्त ऐसी कि जब चाहे सब पैसा डूब जाए न-न हमें नहीं चाहिए। यह सुनकर बच्चा मुंह फाड़कर रोने लगा। घर के और लोग भी आ गए लाला क्यों रो रहा है। बच्चा बोला मैं बोलता तोता लूंगा इससे बात करूंगा। राजा तोता बोला मैं आपको पढ़ाऊंगा तो परीक्षा में अव्वल आओगे अब तो बच्चा और जोर से रोने लगा। बोला मैं इसी से पढूंगा इसी के साथ खेलूंगा। सेठ को सब कहने लगे ले लो बच्चे से बढ़कर तो पैसा नहीं आपको कौन-सी कमी है। सेठ घंटों सोचता रहा फिर बोला, ठीक है दे दे पिंजरा समेत। तोता राजा बोला सेठजी की जय छोटे लाला की जय सेठजी मेरी शर्त याद रखना सेठजी ने खजांची से एक लाख टका सौ-सौ करके बहेलिए को पकड़ाए। बहेलिए ने राजा तोते के पैर छुए, क्षमा मांगी मेरे यहां कोई तकलीफ हुई तो क्षमा करना। राजा तोता बोला जाओ जो गुजर गया वो बिसर गया मौज करो, कुछ दिन बीते एक दिन शाम को फुरसत में सेठजी ने पिंजरा मंगाया बोले भाई उस दिन तो खूब बोलते थे अब चुप हो।

तोता बोला सेठजी आप व्यापारी हैं आप बताएं आपके जमीन वगैरह भी है।

सेठजी बोले है तो सब बंटाई पर है उससे हमें कुछ मिलता भी नहीं है।

तोता बोला कितनी है ?

सेठजी बोले साठ बीघा है तो ऐसा करो जमीन बंटाईदारों से ले लो अब मैं खेती का व्यापार करूंगा

आप अपना व्यापार करें। मेरा अलग आपका अलग। आप अपनी मरजी से काम करें मैं अपनी मरजी से। सेठजी बोले ठीक है सब बंटाईदारों को जवाब हो गया। एक दिन बादल हुआ दूसरे दिन गरजकर वर्षा हुई। धरती खूब तर हो गई। तब तोते ने कहा अपने पिता से कह दो खेत जुतवा दें। सेठजी आ गए तोता बोला सेठजी वर्षा हुई है इसका लाभ उठाओ और खेतों की दो-तीन बार गहरी जुताई करवा दो।

सेठ बोले ठीक खेत जोत दिया गया उसमें पटेला फेरकर उसे छाप दिया गया, तोते को बताया गया। सब काम हो गया तोता बोला मुझे दिखाओ सेठजी पिंजरे में तोते को साथ लेकर गए। साथ गए आदमी ने मिट्टी हाथ में लेकर तोते को दिखाई। तोता बोला ठीक है। इसमें क्या बोया जाए ये सोचना है। अब सोच-विचारकर उसने सेठ से कहा मैं इस बार गन्ने की खेती करूंगा। आप सब खेत में गन्ना बो दो। सेठ बोले बस एक ही चीज। तोता बोला हां जी इसी में फायदा नुकसान जो होगा हो जाएगा।

खेतों में गन्ना बो दिया गया। सिंचाई, गुड़ाई, निराई सब राजा तोते की निगरानी में समय-समय पर होती रही। फसल अच्छी थी। अब तो सेठ भी महीने में एक-दो बार अपने दोस्तों-संबंधियों को लेकर जाते फसल दिखाते लहलहाती फसल देखकर उन्हें जो आनन्द मिलता वह उन्हें लाख रुपये कमाने पर भी नहीं मिलता था। मौसम ने साथ दिया और उम्दा फसल हुई सेठजी के गन्ने की खेती की चर्चा लोग करने लगे। बड़े-बड़े किसान खेत देखने आने लगे। सेठ से पूछते किसकी सलाह से खेत में पानी गोड़ाई खाद वगैरहा दे रहे हो सेठ कहते भाई पक जाने दो, कट जाने दो, तब बताएंगे। बारैं पूत, हरियर खेती से बहुत आस नहीं लगाना चाहिए। लोग कहते भाई फसल को सब ताल टाइम से मिल रहा है नहीं तो ऐसी फसलें डबरे में नहीं हैं, पर सेठजी क्या बोलें यह भी राजा तोता ने उन्हें बता दिया था।

माघ महीना लग गया एक दिन सेठ जी अपने कुछ संबंधियों के साथ खेत पर गए। सबने कहा सेठजी फसल तैयार है लोग गन्ने काट रहे हैं सेठ जी बोले हूं शाम को राजा तोते से बोले गन्ना खड़ा बेचना है। गुड़ बनाना है या खांड (बूरा चीनी) बनाना है। अगल-बगल के खेत कट रहे हैं। तुम भी सोचो फसल की चर्चा तो सरकार तक पहुंच गई। राजा तोता बोले सेठजी मैंने सुना है गन्ना अभी पका नहीं है। हमें कोई जल्दी नहीं, पकेगा तो काटेंगे। इस खेत में यही गन्ना रहेगा नया नहीं बोना है। हां अगर आपने देखा है तो ठीक है मैं देख आता हूं पर गन्ना पकेगा तभी कुछ करेंगे, आप चिंता न करो ईश्वर ने चाहा तो मैं आपसे कम मुनाफा नहीं कमाऊंगा।

दो-तीन दिन बाद सेठ की गाड़ी पर सेठ का लड़का पिंजरा लेकर बैठा वह राजा तोते का पक्का चेला था और गुरुजी कहता था। उससे शौक से पढ़ता था और अच्छे नम्बरों से पास होता था। राजा तोता जो कहते थे वही मानता। देखकर सेठ-सेठानी भी कहते एक लाख रुपये क्या लड़का भी हजारों में एक सद्गुणी बन रहा है

तोता जी उन्होंने खेत के चारों ओर घूमकर एक गन्ना तुड़वाकर उसकी पत्तियां ऊपर का हिस्सा पोर देखा देखकर लाला अभी गन्ना नहीं पका बिना पके नहीं कटेगा।

माघ बीत गया, फागुन मास, बंसत ऋतु लग गया गन्ना सूखने लगा। सेठ परेशान इतनी मेहनत पैसा लगा इतनी अच्छी फसल सब सूख रही है। सेठजी तोते से बोले सब बेकार हो रहा है। जाकर देखो तो राजा तोता ने कहा अच्छा जी कल परसों जाऊंगा। गन्ना पकते ही कटा लेंगे आप चिन्ता न करें सेठजी चुपकर गए बोले जो होना था हो गया फायदा नुकसान। दो-तीन दिन बाद तोता जी फिर गए खेत देखने। देखो कोई पत्ता हरा तो नहीं राजा तोता बोले हमें 15 मजदूर चाहिए। सवेरे-सवेरे मजदूरों को साथ लेकर खेत पर चलो माचिस साथ ले लो। सेठजी बोले क्या करोगे। राजा तोता बोले गन्ने में आग लगवाऊंगा। सेठ बोले गन्ना फुंकवाएगा। तोता राजा बोले आप चिंता न करो मेरा व्यापार ठीक चल रहा है। दूसरे

दिन जाकर साठ बीघा गन्ना था। सबमें आग चारों कोनों में और थोड़ी-थोड़ी दूर पर पंद्रह मजदूर गन्ना फूंक रहे थे मतलब ये था कि कोई गन्ना जलने से न बचे। सब जल जाए। अच्छी तरह तसल्ली से आग लगवाकर घर चले आए और शाम को तोता राजा ने सेठ से कहा हमें 200 पलरी (टोकरी) और 150 झौआ (बड़ा टोकरा) चाहिए और 4 बजे प्रातः 200 मजदूर अपने झौआ पलरी के साथ खेत पर मिलें उनके पास 100 बड़े-बड़े (झाडू) खरहरा भी हों इसके साथ 15 चौकीदार भी और जिनमें दो-चार बंदूक वाले भी हों वे खेत की रखवाली करें। क्योंकि जब तक खेत साफ नहीं हो जाएगा हम वहां से किसी को जाने नहीं देंगे। ये शर्त बता देना। बच्चे साथ लेकर औरतें आएं सब इंतजाम बताकर तोता बोला सेठ इससे कम में काम नहीं चलेगा। आप भी अपने लड़के और विश्वासी कर्मचारियों के साथ मेरे साथ रहना जब तक यह काम समाप्त नहीं हो जाता।

सेठजी ने कहा तुझे क्या लगता है तू सयाना है गन्ना जला दिया राख के लिए भी बीसों हजार खर्चा।

राजा तोता बोला सेठ अभी तो यही कहूंगा कि मेरा व्यापार ठीक चल रहा है कल की राम जाने। राम सब जानते हैं ये राख जमा कर लो खाद बन जाएगी। तोता बोला व्यापार चल रहा है गन्ना जल गया सारा दिन जला सारी रात जला। फिर ठंडा हो गया जो बोला था तोते ने, सेठ ने नाराज होते हुए भी सब करवा दिया। रात हुई पूर्णमासी का चंद्रमा दिन कर रहा था। तोते ने कहा सेठ चलो छत पर चलें बोलना नहीं देखना है आपको दिखाऊंगा। यह सबको दिखाई नहीं पड़ेगा।

सब परिवार छत पर चला गया आधी रात हो चुकी थी। सबने देखा आसमान में विमान आ-जा रहे हैं यानि घूम रहे हैं। बड़ा सुन्दर दृश्य है काफी देर तक सब देखते रहे। फिर से चार बजे खेत पर भी चलना है चलो तैयारी करो, सब लोग काम में लग गए, पूरी तैयारी के साथ सब पहले चौकीदारों की ड्यूटी लगा दी पूरी निगरानी न इधर कोई जाए न कोई उधर से कोई आए।

अब यह भी बतला दें कि वहां हुआ क्या। तोता बोला गन्ना फुंका तो जलने से महक खूब फैली। महक आकाश तक गई। उसकी सुगन्ध सूंघकर देवता लोग कहने लगे कि किसी ने बहुत बड़ा यज्ञ किया है। कुछ देवता बोले भई मेरे नाम की आहुति तो नहीं पड़ी देवराज इन्द्र बोले। इसमें किसी को निमंत्रण नहीं दिया है। यह भंडारा है चलो देखें मजा लें, ऐसे यज्ञ रोज नहीं होते। देवता कबूतर बने बिना किसी से पूछे उतरने लगे। झुंड के झुंड कबूतर देव आकर जले खेत में गुड़ खाने लगे और बीट की जगह मोतियों की बीट करने लगे। रात भर उन लोगों ने मौज किया सवेरे ब्रह्म बेला में चार बजे के पहले देव उड़ चले, वो चले गए तो ये पहुंच गए, लो भाई राख बटोरो काम शुरू करो। एक गरीब मज़दूर ने कहा सेठजी देखना ये क्या है ऐसी तो यहां बहुत हैं। सेठ ने चार छः दस बार हाथ में रखकर देखा आंखें चौंधिया गईं। मोती लेकिन ऊपर से बोले ठीक है बढ़ो झौवे में भरो बोलो मत, काम करो आप सेठ तोते के पास गए बोले खेत में राजा तोता चारों ओर सुरक्षा करो, कोई चुरा न ले जाए। ये अच्छा है कि इन लोगों को नहीं मालूम कि ये क्या है और दूसरी बात आप मेरा पिंजरा खोलकर मुझ आप अपने हाथों आजाद कर दीजिए शंका मत करें। मैं सुरक्षा देखूंगा और आपको छोड़कर कहीं नहीं जाऊंगा। सेठ बोले जाएगा कैसे लाला तेरा दोस्त जो ठहरा।

सेठ ने तोते को आजाद कर गनमैनों से कहा कोई भी तोते की ओर बढ़े उसे गोली मार दो। तीन दिन रात की कड़ी मेहनत से खेत साफ हो गया। सेठ के घर मोतियों का ढेर लग गया। श्रोताओं अथवा कहानी पढ़ने वाले श्रीमान ध्यान दें कि अभी तक मैं राजा तोता का हाल बताने में इस तरह लगा रहा कि घोड़ा राजा के बारे में कोई चर्चा ही नहीं कर सका। तो अब थोड़ा सा उनका भी हाल सुनिए। उन्होंने घर में पहुंचकर अपना सिक्का जमा लिया। लेकिन घोड़े के न आने से लोग उनसे पूछते राजा साहब

घोड़े का क्या हुआ। तो राजा रुआंसा होकर कहते बड़ा वफादार घोड़ा था बिछड़ गया। लगता है वह मर गया नहीं तो अब तक जरूर आ जाता। बोलता तो थोड़ा हिन-हिन करता, रानी को उस पर शक हो गया कि लगता है कहीं जादूगर ने ही तो राजा से ठगी नहीं की है और खुद राजा बनकर आ गया। रानी ने राजा की परीक्षा ली उसमें भी वह फेल हो गया। किसी गुप्त बात के बारे में बातचीत करती तो वह बगलें झांकने लगता।

रानी का शक पक्का हो गया यह राजा नहीं है पर कुछ कर भी नहीं सकती थी। एक दिन राजा ने कहा रानी तुम मुझसे कटी-कटी रहती हो। रानी बोली मैं झूठे से बात नहीं करती। वायदा करके न निभाए वो भी कोई राजा है आपने जो कहा था किया। याद भी है क्या कहा था।

नहीं तुम याद दिलाओ, तुम्हारे फायदे की बात होगी तो तुम्हें याद होगी। राजा घोड़ा बोला।

हां मुझे याद है उस दिन जब चांदनी रात में हम लोग जनाने बाग में घूम रहे थे तब आप बोले थे कि बाग के बीच में बहुत सी जमीनें हैं इसमें एक महल तुम्हारी पसन्द का बनवाएंगे, तुम्हारी याद में कोई शर्त लग जाए तो आप बोले अब हम तब तक नहीं मिलेंगे, नये महल में ही मिलेंगे उसके पहले मैं तुमसे कोई बात नहीं करूंगा ताकि तुम्हारी याद आती रहे। कल से काम शुरू कर देता हूं पर बीच में वो जादूगर आ गया और उसने पता नहीं क्या किया तुम अपना वायदा ही भूल गए। ऐस कभी हुआ नहीं कि आपने कहा हो और न किया हो।

घोड़ा राजा बोला हां भूल तो गया पर मैं राजा हूं कल से काम शुरू करा दूंगा और अब उसी रानी महल में बात होगी, ये भी जान लो रानी ने कहा कष्ट तो है पर सहन करना पड़ेगा। राजा बोले कोई चिंता नहीं ये दिन भी नहीं रहेंगे मैं रात-दिन काम कराकर महल जल्दी तैयार करवा दूंगा और ये लो अभी मंत्री को बुलवाता हूं। मंत्री बुलवाए गए और नए महल का नक्शा बनवाकर काम शुरू हो गया।

अब हम उधर राजा तोता का हाल बताते हैं जहां धूम मची हुई है घर में। आनन्द ही आनन्द सब ओर तोता राजा की बड़ाई हो रही है।

सेठजी बोले बोलो कोई व्यापार सूझ गया, तोता राजा बोले चलो बैठो बात करेंगे सेठ बोले ठीक है कुर्सी पड़ गई बैठ गए, राजा बोले जो हुआ है सेठ बड़े पुण्य से होता है, आप ऐसे भाग्यशाली हैं कि इस लोक में स्वर्ग भोगो मरने के बाद बैकुण्ठ धाम और क्या चाहिए। सेठजी बोले सचमुच बड़ भागी हूं पर एक ही बात कचोटती है कि आप पक्षी हैं नहीं तो मं अपना सारा कारोबार आपके जिम्मे करके राम नाम जपता।

राजा तोता बोला जो मैं कह रहा हूं करो तो मैं भी मनुष्य हो सकता हूं। इस गन्ना जलाओ यज्ञ का पुण्य बहुत लिखा है, आपके पास अकूत सम्पत्ति दो दिन में इकट्ठी हो गई है इसलिए इसका कुछ खर्च कर दो तो आपका नाम यश पुण्य यानि स्वर्ग निश्चित ही मिल जाए।

सेठजी बोले करो यज्ञ मैं तैयार हूं, राजा तोता बोले फिर दिन तिथि निश्चित करो सेठ बोले ठीक है पंडितों इष्ट मित्रों परिवार से सलाह करके सब निश्चित किया गया उसके निमंत्रण पत्र छपवाए गए। घोड़ा राजा को विशेष निमंत्रण भेजा गया।

हम आपकी रियाया हैं, आप हमारे अन्नदाता हैं ईश्वर की विशेष अनुकम्पा से आपके राज्य में यह यज्ञ हो रहा है आपका इसमें सपरिवार भाग लेना जरूरी है। हमारा आपसे अनुरोध और विश्वास है आप हमारे देवता राजा हैं अवश्य पधारें यज्ञ सम्पूर्ण करवाएं अन्यथा हम क्या हैं आपका दास सेठ लखपति।

इसी तरह सारे राजाओं, अमीरों सेठों छोटे-बड़े जो जैसे थे खूब निमंत्रण पत्र भेजे गए। बहुत दूर तक शामियाना ताना गया अनेक तंबू लगाए गए। यज्ञ प्रारंभ होते ही दो दिन के लिए घोड़ा राजा और उसका अमला भी आया, उन्हें विशेष तंबू में ठहराया गया। यज्ञ समाप्त हो गया सेठजी और सब लोग

बैठे थे। सेठजी ने हाथ जोड़ घोड़ा राजा से कहा महाराज कुछ कहना चाहता हूं आज्ञा हो तो कहूं।

घोड़ा राजा बोले कहो सेठ सब आनन्द रहे और राजा के हंसते ही सब ठहाका लगाकर हंस पड़े सेठजी को जो तोता राजा ने रटाया था बोलने लगे महाराज आपकी प्रजा यहां जानते हैं कि राज्य में एक जादूगर आया था और उसने ऐसा जादू दिखाया था कि आप उसे अपना गुरु मान उससे आप जादू सीखने चले गए। आज यहां आपके राज्य में दूर-दूर से बड़े-बड़े राजा कलाकार गवैये-नचैए आए हैं। महाराज हमने अपनी सारी दौलत लुटा दिया यज्ञ सफल बनाने में लेकिन अगर आप कोई करिश्मा दिखा दें तो आप कला प्रेमी राजा मशहूर हैं उसमें चार-चांद लग जाएं आपके नाम की चर्चा संसार में हो जाएगी सरकार। तोता वहीं पेड़ पर बैठा सब बड़े गौर से सुन रहा था और प्रोग्राम मुताबिक एक मरा बकरा वहीं फिकवा दिया था। घोड़ा राजा बोला अच्छा आप सबकी इच्छा है तो कुछ करना पड़ेगा और चारों ओर उन्होंने देखा एक बकरा मरा पड़ा है। राजा बोले ये बकरा कैसा है।

सेठ बोला सरकार यह यज्ञ में लाया गया था बीमार समझकर इसे छोड़ दिया गया दो-तीन घड़ी हुआ मर गया, पंडितों ने कहा कि इसे आज यहीं पड़ा रहने दो कल हटा देना कोई दोष नहीं है।

राजा बोला बहुत समय नहीं एक जादू दिखाता हूं मैं अपना राजा का शरीर छोड़कर बकरे के शरीर में प्रवेश कर जाऊंगा, बकरा चलने-फिरने लगेगा आधी घड़ी में बकरे के शरीर से निकलकर फिर अपने शरीर में प्रवेश कर जाऊंगा और यह जैसे पहले था वैसे ही हो जाएगा। राजा ने मंत्र जपा राजा बकरे के शरीर में प्रवेश कर गया, तोता राजा के शरीर में प्रवेश कर गया और बोला इस बकरे को पकड़ इसकी मुश्क कसो। इसका खेल खत्म हो गया। फिर राजा ने जो सब आए थे सबको अपनी कहानी सुनाई। सेठजी आप कहते थे मनुष्य सो मनुष्य हो गया पर अब मुझे अपना राज्य देखना है।

राजा ने बकरे का गला काटकर उसकी खाल उधेड़वाकर उसमें भूसा भरकर राजमहल के बड़े फाटक पर टंगवा दिया। ताकि जो देखे समझे कि विश्वासघात का क्या परिणाम होता है। रानी को सब मालूम हो गया रानी ने राजा की आरती उतारी पांव छुए। राज मंगलाचार हुआ राजा ने कहा तुमने रानी महल बनाने के लिए जनाने बाग को बरबाद कर दिया। राज्य का तमाम पैसा उसमें लगा दिया। रानी ने कहा महाराज अपनी इज्जत बचाने के लिए इसके अलावा और कोई तरीका नहीं सूझा। आप मिल गए पैसा मिल जाएगा, बिगड़ी बन जाएगी। इज्जत चली गई तो फिर नहीं मिलती रानी की चतुराई पर राजा भी न्यौछावर हो गए और उनका राजपाट लौटा जैसे जादूगर राजा के बुरे दिन गए भले दिन आए ऐसा ईश्वर सबके साथ करे।

# दोस्ती

एक राजा थे। राजा के एक लड़का था। राजा अपनी प्रजा के सुख और समृद्धि के लिए हमेशा सोचता रहता। कैसे प्रजा हमें आदर से देखती समझती रहेगी। इसी प्रयास में राजा रहता था। राजा प्रजा को पुत्रवत् प्रेम करता था। राजा धीर-वीर और राजनीति में भी निपुण था, प्रजा भी अपने राजा के लिए प्राण न्योछावर करने राज्य के हित में कोई बलिदान देने को आतुर रहती थी। राजा के मंत्री का नाम सुबोध था। वह भी चतुर मंत्री था। अपनी सलाह राजा साहब को निःसंकोच राज्य के हित में देता था। इस तरह राजा के राज्य की दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की हो रही थी। राजा प्रजा सभी खुशहाल थे राजा के एक ही बेटा था। सुंदर स्वस्थ और राजा प्रजा सभी का प्यारा।

उधर सुबोध के भी एक लड़का था। मंत्री पुत्र तथा राजपुत्र में खूब पटती थी। दोनों आपस में गहरे दोस्त थे दोनों साथ खेलते साथ खाते और दोस्ती धर्म निभाते यानी आपस में कोई बात नहीं छुपाते दिल खोलकर बतियाते।

राजकुमार का राज्य की नर्तकी के यहां आना-जाना था। एकाध बार तो वह अपने मंत्री पुत्र को भी साथ लेकर गया। पर मंत्री पुत्र को उसके यहां जाना अच्छा नहीं लगा, वह सोचने लगा क्या करे। कहीं कुछ कहने का प्रतिफल अच्छा न मिला तो मेरी दोस्ती मेरा मान-सम्मान छिन सकता है। यही सोचकर काफी दिन तक इस कड़वाहट को झेलता रहा। लेकिन एक दिन दोनों राज्य की फुलवारी में बैठे बातें कर रहे थे, तो उसके मुंह से एकाएक निकल गया युवराज !

राजा के लड़के ने कहा क्या बोलो रुक क्यों गए ? क्या कहना चाहते हो यार। मंत्री के पुत्र ने कहा मैं संकोच में हूं।

संकोच क्या निःसंकोच कहो मुझे तुमने आज युवराज कहा तो क्या तुम मंत्री नहीं हुए।

यही सोचकर मैंने सोचा कहूं राजकुमार। मंत्री पुत्र ने कहा कि मुझे क्षमा करें और मैं जो कह रहा हूं उस पर विचार करें आप हमारे युवराज हैं। राज्य के अकेले राजकुमार, हमारे मित्र हैं। यह सब कारण हैं जिससे मैं आपको अपनी सलाह दे रहा हूं। आपसे प्रजा खुश है, राजा खुश हैं मुझे आप जो प्यार दे रहे हैं उससे मैं गर्वित हूं युवराज जी सब ठीक है पर मेरी मानो आपका उस नर्तकी के घर जाना शोभनीय नहीं लगा। राजा होने पर तो ऐसी नर्तकियों को दरबार में बुलाकर मनोरंजन राजा को उचित जान पड़ता है, अब आप विचार करें।

युवराज ने कहा हां विचार करेंगे पर विचार क्या करना था उसने ये बात उस नर्तकी को बता दी कि मंत्री पुत्र को मेरा यहां आना रुचिकर नहीं लगता नर्तकी ने कहा अच्छा तो आप समझो पर वह मंत्री पुत्र से जलने लगी।

एक दिन युवराज मंत्री पुत्र के साथ आए तो दरवाजे तक पहुंचाने वह भी आई वापसी पर उसने मंत्री पुत्र को अपने पास बुलाया और अपने मुंह को उसके कान तक ले गई बोली कुछ नहीं चली गई। साथ आने पर युवराज ने पूछा क्या कह रही थी मंत्री पुत्र ने कहा कुछ नहीं वह तो कुछ बोली ही नहीं।

राजकुमार ने जब नर्तकी से पूछा तो उसने अपने ढंग से समझा दिया बोली उसका क्या कहना। कह रहा था ये राजे-महाराजे हैं इनकी क्या चाहे तो राज करा दें चाहे बेल के बिना दें। इसलिए इनसे हमेशा सावधान रहना चाहिए। मैंने कहा ठीक है पर राजकुमार हमारे बीच में इसका रहना ठीक नहीं है। मंत्री का लड़का पता नहीं कब राजा साहब से क्या बता दे क्या सलाह दे दे मुझे तो इससे डर लगने लगा है। इससे जान छुड़ाने की सोचो।

युवराज ने कहा ठीक है मैं इसे ठिकाने लगवा दूंगा तुम चिंता मत करो। राजकुमार इसी उधेड़बुन में घर आ गया। घर आकर उसने किसी से बात न की और जाकर अपने कमरे में पड़ गया काफी समय बीतने पर भी जब राजकुमार कमरे से नहीं निकले तो उनकी खोज शुरू हुई महारानी ने स्वयं जाकर उनसे कहा बेटा उठो कैसे अनमने से पड़े हो। क्या कष्ट है।

राजकुमार ने कहा तबियत ठीक नहीं है कुछ खाने कुछ करने की इच्छा नहीं है। मां ने कहा तो फिर राजवैद्य को बुला अपना उपचार कराओ।

बेटे ने कहा नहीं मां इसकी आवश्यकता नहीं है हां पिताजी से बात करा दो उनसे बात हो जाएगी तो सब ठीक हो जाएगा। मां ने दासी को राजा के पास भेज दिया कि राजकुमार अपने कमरे में है उसमें से निकल नहीं रहे। कुछ खा-पी भी नहीं रहे। आपसे वहीं मिलना चाहते हैं सुनकर राजा साहब सोच में पड़ गए। क्या हो गया पहले तो इसने कभी ऐसा नहीं किया।

खैर राजा साहब सभागार से राजमहल पहुंचे और सबसे पहले राजकुमार के कमरे में प्रवेश किया माथे पर हाथ फेरते हुए बोले क्या बात है बेटा राजकुमार ने चरण स्पर्श करते हुए मंत्री पुत्र के बारे में कुछ कहा। मंत्री पुत्र क्या वह तो तुम्हारा मित्र है। शालीन है समझदार है और आपके साथ रहता है आप दोनों की मित्रता से मैं प्रसन्न हूं। क्या बात है राजकुमार ने कहा पिताजी कुछ ऐसा हो गया कि मुझे उससे घृणा हो गई है इतनी कि मैं उसे देखना नहीं चाहता। बहुत सोच-विचार के बाद मैंने निश्चच किया कि जब तक वह जीवित रहेगा मैं अन्न-जल ग्रहण नहीं करूंगा। राजा यह सुनकर सन्न रह गया। एक बार तो राजा साहब कुछ देर के लिए गहरे सोच में डूब गए क्या करें। न्याय का भी प्रश्न था मंत्री का इकलौता निरपराध बेटा राजा के बेटे की दोस्ती का शिकार हो रहा था। अकेले बेटे की इच्छा पूर्ति के लिए मंत्री के बेटे की जान लेना राजा को नागवार गुजर रहा था। पर कर कुछ नहीं पा रहा था। राजा साहब बोले आप उठो खाओ-पियो आखिर आप आप भी इस राज्य के युवराज हैं। जो चाहोगे वही होगा, पर युवराज ने भी हठ ठान ली थी जब तक मंत्री पुत्र का कलेजा मुझे नहीं मिल जाता मुझे चैन नहीं मिलेगा।

परेशान राजा साहब ने मंत्री को बुला भेजा और मंत्री को साथ लेकर चुपचाप गुप्त मंत्रणा कक्ष में चले गए। मंत्री को संक्षेप में बताया कि मेरा पुत्र क्या चाहता है। मंत्री ने विनीत स्वर में कहा कि महाराज मैं तो राजसेवक हूं। इसमें मुझे बोलने का अधिकार ही नहीं है। आप जैसा चाहे करें राजा ने कहा मैंने सोच लिया है ठीक लगे तो वैसा ही करो। दोनों आपस में मित्र हैं अभी किसी बात से शत्रुता हो गई है कल को अगर किसी बात की उसे ग्लानि हुई और उसने कहा कि मैं मित्र के बिना नहीं रह सकता और मुझे मित्र से मिलाओ नहीं तो आत्महत्या कर लूंगा तब हम क्या करेंगे। इसलिए मैंने इसका विकल्प अपने पास रखने को सोचा है मेरा कहना है कि अपने बेटे को राज्य से बाहर भेज दो और हिरन या सुअर का दिल लाकर राजकुमार को तसल्ली करा दो। यह मुझे इस समय सबसे अच्छा उपाय लग रहा है।

मंत्री बोले जो आज्ञा महाराज। मंत्री ने सब काम अपने आदमियों से करवा दिया और राजा साहब ने राजकुमार को दिल दिखाकर तसल्ली करा दी और युवराज ने तत्काल नर्तकी के पास जाकर उसे

आश्वस्त कर दिया कि काम हो गया दोनों ही बहुत प्रसन्न थे। इधर मंत्री ने अपने बेटे को बुलाकर बैठाया और उसे बताया कि उसके मित्र ने क्या राजाज्ञा जारी करवाई है।

मंत्री बोला क्या बात हुई जवाब में मंत्री पुत्र ने बताया पिताजी राज्य के प्रति मेरा भी कुछ दायित्व है मैंने अपना फर्ज निभाया है दोस्ती का और मंत्री पुत्र का भी। मंत्री ने कहा कि बेटा जो तुमने किया वह ही करना चाहिए मैं तुमसे खुश हूं पर अब तुम्हारा यहां रहना ठीक नहीं है। मैं अब और कोई जोखिम नहीं उठाना चाहता। बेटे ने कहा पिताजी मैं भी अब यहां से जाना चाहता हूं।

मंत्री ने पुत्र के लिए एक घोड़ा और थैली में मुहरं देकर आशीर्वाद दिया और ईश्वर से हाथ जोड़कर विनती किया कि हे जगतपिता आप इस बालक पर कृपा करना। रात दस बजे ही अपने दो विश्वस्त आदमियों से कहा तुम इनके साथ जहां तक चाहे जाना और जब बोलें वापस तो लौट आना रास्ते में कुछ मत बोलना। जी अच्छा कहकर वह मंत्री पुत्र के पीछे दाएं-बाएं होकर चलने लगे। जब राज्य की सीमा थोड़ी दूर रह गई तो मंत्री पुत्र ने अपने घोड़े की लगाम खींची और बोला वापस और दोनों घुड़सवारों ने अपने घोड़े मोड़ लिए।

मंत्री पुत्र अकेला बढ़ता जा रहा था। राज्य के आखिरी सिरे में बहुत बड़ा जंगल था। उस जंगल के बीच में रास्ते पर वह सरपट घोड़ा दौड़ाए जा रहा है रात चांदनी थी। दोनों ओर पेड़ों के बीच से छनकर आती रोशनी राह दिखा रही थी। काफी दूर जाने पर मंत्री पुत्र को एक सरोवर मिला। पुरइन के पत्तों से ढंका और बहुत दूर तक फैला यह सरोवर जहां तक दृष्टि जाती जल ही जल और कमलों के कुम्हलाए फूल ही दिखाई पड़ते थे। किनारे भी अपेक्षा से अधिक सुन्दर दिख रहे थे। धवल दूधिया चांदनी से भरपूर सरोवर को मंत्री पुत्र ने जो निहारा तो अपलक निहारता ही रह गया (रात को कमल के फूल सिकुड़ जाते हैं)।

इतने में उसकी दृष्टि सरोवर के किनारे बैठी एक लड़की पर गई और उसे देखने की बड़ी इच्छा हुई। घोड़े को पेड़ से बांधकर बोला चुपचाप खड़े रहना और घोड़े के माथे व गर्दन पर हाथ फेरा। घोड़े ने सिर हिलाया जैसे कह रहा हो समझ गया। मंत्री पुत्र जिधर लड़की को बैठी देखा था। उसी ओर मंथर गति से धीरे-धीरे चल पड़ा। जैसे-जैसे निकट आता जाता लड़की का चेहरा साफ नजर आने लगता अब सब साफ दिखाई पड़ने लगा। युवती अपूर्व सुंदरी थी। इतनी कि उसकी कल्पना से कई गुना अधिक पर यह क्या उसकी जांघ पर सिर रखकर एक शेर प्रगाढ़ निद्रा में सो रहा है। उसने विचार किया कि इस लड़की के मुकाबले तो वह नर्तकी कुछ भी नहीं है मैं युवराज को इसे दिखा दूं तो वह इसे प्राप्त कर लेंगे और दोस्ती भी सुदृढ़ हो जाएगी।

जैसा होना होता है वैसा ही होता है बिना समय गंवाए मंत्री पुत्र उल्टे पांव लौट घोड़ा खोला और तेजी से राजमहल की ओर घोड़ा दौड़ा दिया। बहुत जोश में था समय का तो पता नहीं कितना लगा लेकिन मंत्री पुत्र युवराज के महल के सामने पहुंच गया और पहरेदार से बोला। जाकर युवराज से कह दो कि आपका मित्र आपसे मिलना चाहते है। उसने कहा जान ले लेंगे।

मंत्री पुत्र ने कहा कुछ न लेंगे इनाम देंगे तू चिन्ता न कर जा तो सही बहुत समझाने पर वह माना डरता-डरता अंदर गया।

युवराज को जगाया युवराज ने कहा इतनी रात गए क्या हो गया। उसने कहा जी आपका मित्र मंत्री पुत्र आया हुआ है।

कौन सुबोध मंत्री का लड़का।

पहरेदार ने कहा हां।

युवराज ने कहा तेरा दिमाग तो नहीं खराब हो गया तूने कहीं भूत तो नहीं देखा वह तो मर गया है।

पहरेदार ने कहा नहीं जी वह गेट पर है और भूत नहीं लग रहा।

युवराज ने कहा अच्छा बुलाओ पहरेदार ने जाकर सब हाल सुनाया मंत्री पुत्र ने कहा चलो कमरे में, जाकर देखा युवराज डरा हुआ था। मंत्री पुत्र ने कहा कि विश्वास करो मैं मरा नहीं हूं इस समय जितनी जल्दी हो सके मेरे साथ चलो रास्ते में बातें होंगी। क्योंकि रात बीत जाने पर तो मैं क्यों वापस आया हूं यह भी सिद्ध न कर पाऊंगा।

अंत में युवराज मान गया। कपड़े पहने तलवार खंजर खास हल्के हथियार साथ लिए और खुद जाकर घुड़साल से अपना घोड़ा लिया और मंत्री पुत्र के साथ हो लिया दोनों बड़ी तेजी से गंतव्य की ओर बढ़े चले जा रहे थे वहां पहुंचकर दोनों घोड़े पर से नीचे आए घोड़ों को पेड़ से बांधा और मंत्री पुत्र के साथ सधे पांव आगे गए लड़की को देखते ही युवराज उसकी सुन्दरता पर मुग्ध हो गया बोला यह लड़की यदि मुझे मिल जाए तो मैं तुम्हें क्षमा कर दूंगा। मंत्री पुत्र ने कहा हमने अपना काम कर दिया आप देख रहे हो यार शेर को कैसे दूर करें।

युवराज ने कहा ये काम तो तुम्हें ही बनाना पड़ेगा नहीं तो मैं तुम्हें यहीं ठिकाने लगाकर तब जाऊंगा। मंत्री पुत्र ने सोचा सही बात है हमारे प्राण तो दोनों ओर से संकट में हैं सोचकर बोला ठीक है आप अपने घोड़े पर तैयार रहिए मैं एक प्रयास करता हूं। रात का तीसरा प्रहर था शेर प्रगाढ़ निद्रा में लीन था। मंत्री पुत्र धीरे-धीरे लड़की के पास पहुंचा और बोला बहन जी प्रणाम।

लड़की ने घूमकर देखा और फुसफुसाकर बोली क्या है। देख नहीं रहे हो यह जग गया तो दोनों को खा जाएगा। मंत्री पुत्र ने कहा क्या करूं इस राज्य के युवराज ने आपको देख लिया है और बहुत खुश हैं और कुछ नहीं वह केवल आपके मुख से कुछ सुनना चाहते हैं अगर बहन यह काम न हुआ तो मुझे सजा मिलेगी। लड़की ने कहा तो कैसे करूं। यह जगा तो भी खैर नहीं अच्छा ऐसा करो तुम इधर आओ मैं इसका सिर तुम्हारी जांघ पर रख देती हूं। वापस आकर फिर ठीक कर लूंगी। तुमने मुझे बहन कहा है इसलिए ऐसा कर रही हूं। मंत्री पुत्र बगल में गया लड़की ने बड़ी सावधानी से सिर उठा उसकी जांघ पर रख दिया और राजकुमार की ओर चल पड़ी।

राजकुमार ने चाबुक पहले ही नीचे गिरा दिया था। बोला ये चाबुक जरा पकड़ाना जीन पर से सरक गया है लड़की ने जैसे ही चाबुक उठाकर पकड़ाना चाहा राजकुमार ने चाबुक नहीं उसकी कलाई पकड़ी और घोड़े पर खींचकर घोड़े को ऐड़ लगा दी। घोड़ा सरपट महल की ओर दौड़ चला।

मंत्री पुत्र सोच रहा था क्या है दोस्ती ? कौन है दोस्त ? किसका केवल स्वार्थ साधना काम है। आपके पास अधिकार है तो आप सब कुछ पा सकते हैं नहीं तो कोई किसी का नहीं है वह अपने सोच में मग्न था और जानता था जब तक शेर नहीं जागता तब तक वह इस संसार में है।

प्रभात के साढ़े चार बजे शेर ने आंखें खोलीं जंभाई ली अपनी गर्दन घुमाकर उसकी ओर देखा और मनुष्य की तरह बोला तुम कौन हो और जो यहां बैठी थी कहां गई डरो मत अभी मेरा कुछ खाने का समय नहीं हुआ इसलिए तुम अपना सारा हाल सुनाओ बिना किसी बात की चिन्ता किए मंत्री पुत्र ने अपनी सब व्यथा शेर को सुनाई आदि से अंत तक शेर ने मंत्री पुत्र की सारी कथा बड़े ध्यान से सुनी और बोला कि आप बहुत सीधे लगते हो क्योंकि अब भी तुम वार्तालाप में बार-बार युवराज को मेरा मित्र, मेरा दोस्त कहकर संबोधित कर रहे हो। क्या दोस्त शब्द का अर्थ जानते हो सुनो दोस्त का मतलब है जिएं तो साथ मरें तो साथ दुःख-सुख जो भी दिन आए दोनों मिलकर भोगें तुम्हारे दोस्त ने तो दोस्ती को कलंकित किया है दोस्ती कैसी होती है इसके लिए मैं आपको सच्चे दोस्त की कहानी सुनाता हूं। कहानी बिल्कुल आपकी जैसी है।

एक राजा थे राजा के एक लड़का था। राजा का मंत्री बहुत बुद्धिमान था राजा की अपने मंत्री के

साथ खूब जमती थी। मंत्री के भी एक लड़का था और राजा के लड़के की उम्र का था। मंत्री जाति का वैश्य था। हमजोली समझो या विधि का लेख दोनों में मित्रता हो गई मित्रता होते ही दोनों बराबर हो गए। साथ खेलना साथ खाना आपस में दुराव-छिपाव न रखना। एक मित्र में जो गुण चाहिए वह दोनों में था। इन दोनों की मित्रता का राजा मंत्री दोनों को पता था वे इनकी दोस्ती के बारे में चर्चा करते और प्रसन्न होते। एक दिन राजकुमार ने कहा यार शिकार पर जाने की इच्छा हो रही है। बहुत दिन हुए आखेट पर नहीं गए मंत्री पुत्र ने कहा तो अब चला जाए पर राजा से अनुमति तो लेनी होगी।

युवराज ने कहा ये काम तो तेरे पिताजी करें राय लेकर तिथि निश्चित कर लें। मंत्री पुत्र ने अपने पिता से कहा और उन्होंने महाराज से कहकर शिकार की सारी व्यवस्था करा दी नियत तिथि पर दोनों दोस्त और कुछ सिपाहियों आदि के साथ आखेट को चले और दूर जंगल में जहां मृग शेर आदि बहुतायत से रहते थे। अपना तम्बू गाड़ दिया, तीन-चार दिन तक शिकार में ऐसे बीते कि पता नहीं चला कब सुबह कब शाम हुई रोज सुबह निकलते शाम तक बस शिकार का जुनून रहता। एक दिन शिकार खेलते-खेलते एक जंगली सुअर से पाला पड़ गया। राजकुमार ने देखते ही उसके पीछे अपना घोड़ा लगा दिया। मंत्री पुत्र भी पीछे लग गया पर सुअर बहुत हृष्ट-पुष्ट था। वह इतना तेज भागा कि आगे जा राजकुमार की आंखों से ओझल हो गया राजकुमार इधर-उधर देख रहे थे। तब तक मंत्री पुत्र भी पहुंच गया राजकुमार ने कहा इस शिकार ने तो खूब छकाया सारी मेहनत बेकार गई शिकार भी हाथ नहीं आया और अपने आदमी भी बिछड़ गए। अब क्या करना चाहिए।

मंत्री पुत्र ने कहा आप बताओ क्या विचार है।

राजकुमार ने कहा यहां से चार कोस पर मेरी ससुराल है हम लोग सूर्यास्त के पहले वहां पहुंच सकते हैं। जंगल में कहां किसको ढूंढोगे वे सब थक हारकर घर लौट जाएंगे। तब तक हम लोग भी पहुंच जाएंगे।

मंत्री पुत्र ने कहा कि जिस हालत में हम हैं वहां जाना ठीक नहीं लगता। पर आपकी इच्छा है तो एक शर्त मेरी मानो।

राजकुमार ने कहा बोलो मंत्री ने कहा मैं वहां आपका नौकर यानी सईस बनकर चलूंगा। इस पर राजकुमार ने कहा भई ये तो नहीं होगा, तो फिर मैं नहीं जाऊंगा वहां जाने युवराज की हंसी कराने।

राजकुमार ने कहा अच्छा मान लिया पर एक शर्त मेरी भी है।

क्या मंत्री पुत्र ने पूछा।

युवराज बोले अगर कभी मुझे आपकी ससुराल जाना पड़ा तो मैं भी नौकर के रूप में ही तुम्हारे साथ जाऊंगा।

मंत्री पुत्र ने कहा अच्छा स्वीकार है पर ऐसा अवसर आएगा ही क्यों ?

मंत्री प्रभु ने कहा एक बात और मुझसे यह लिखकर ले लो कि आपके न रहने पर मैं भी नहीं रहूंगा। युवराज ने कहा ठीक है और एक पुर्जा लिखकर हस्ताक्षर कर मंत्री पुत्र को दे दिया कि मैं मित्र के न रहने पर प्राण त्याग दूंगा मंत्री पुत्र ने ऐसा ही लिखकर युवराज को दे दिया, दोनों ने पुर्जे अपने-अपने पास रख लिए।

दोनों मित्र अपने-अपने घोड़ों पर सवार चले जा रहे हैं। समय रहते ही वह उस शहर में पहुंच गए जहां राजकुमार की ससुराल थी। राजकुमार और मंत्री पुत्र की शादी तो हुई थी पर गौना दोनों का अभी नहीं हुआ था। दोनों सवार अपने-अपने घोड़ों से उतर आए पास में भटियारन का घर था। उसको बुलाकर मंत्री पुत्र ने तीन मुहरें दीं और अपने कपड़े और अपना घोड़ा देकर कहा ये संभालकर रखना घोड़े को तकलीफ न होने पावे और इस काम की किसी को कानों-कान खबर नहीं होनी चाहिए। भटियारन ने

कहा जी कोई नहीं जानेगा आपके सिवा। जब आप आओगे आप की अमानत आपको मिल जाएगी।

मंत्री पुत्र ने अपने लिए साधारण कुर्ता-पायजामा खरीदा और तैयार हो गया दोनों मित्र युवराज की सुसराल पहुंचने के पहले एक आदमी के द्वारा राजा को खत लिखकर भेजा कि मैं यहां तक आ गया हूं खबर मिलते ही राजा ने अपने मंत्रियों और साथियों को लेकर युवराज की अगवानी को चल पड़े। रनिवास में खबर हो गई राजा साहब ने अपने साथियों समेत अपने दामाद का यथोचित् आदर किया और सम्मान के साथ राजमहल ले आए। इस समाचार से सब तरफ प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। सब चर्चा करते कि शिकार खेलते-खेलते ससुराल पहुंच गए। राजा-रानी सभी प्रसन्न थे नौकर-चाकर खाना-पीना सब आवभगत में लग गए मंत्री पुत्र भी अपने घोड़े को राजा की घुड़साल में बांधकर घोड़े के खाने-पीने की व्यवस्था कर और जो सईस वहां पर थे उन्हीं के साथ एक चारपाई डालकर बैठ गया और उन्हीं लोगों से बतियाने लगा।

इधर राजमहल में गाना बजाना शुरू हो गया। दामाद जी जो आए थे उनके लिए चित्र सारी में सोने की व्यवस्था हो गई। इधर मंत्री पुत्र भी अपने घोड़े के पास एक साधारण खाट बिछा ली और लेट गया। महल और गुलगुल बिस्तरे पर सोने वाले मंत्री पुत्र को उस टूटी खाट पर नींद कहां आती वह बार-बार करवटें बदल रहा था। रात के बारह बज चुके थे कि रुन-झुन की मधुर आवाज कान में सुनाई पड़ी वह सचेत हो गया।

ध्यान से सुना तो समझ आया कि आवाज राजमहल की ओर आ रही है वह और ध्यान से मामले को समझने लगा इतने में देखता क्या है कि महल में एक औरत बढ़िया कपड़ों-गहनों से सजी-धजी निकली मंत्री पुत्र ने तुरंत उसकी जासूसी करने का फैसला ले लिया और आवश्यकता अनुसार दूरी में रहकर उसका पीछा करने लगा। वह औरत घर महल से निकलकर जिधर घोड़ों पशुओं के लिए (सरिया) या वाड़े बनाए गए थे। बीच गली से निकलकर बाजार वाली सड़क पर आ गई, मंत्री पुत्र अपने को गुप्त रखते हुए उसका पीछा कर रहा था।

बाजार की गली में जाकर एक बड़े मकान के सामने जाकर रुक गई और दरवाजे पर हल्की-सी चोट की कुछ देर की प्रतीक्षा के बाद वह दरवाजा खुला वह अंदर दाखिल हो गई और दरवाजा अंदर से बंद हो गया। ऐसा देख मंत्री पुत्र को मौका मिल गया अब मंत्री पुत्र उस दरवाजे के पास जाकर उससे अपने कान सटा लिए अन्दर बातें हो रही थीं और यह स्पष्ट सुन रहा था असल में यह घर एक धनी जौहरी हीरों के व्यापारी का था, वही बोल रहा था, कह रहा था हरामजादी इतनी देर हो गई यह कोई समय है आने का।

राजकुमारी ने कहा सुनो तो आज आखिरी बार मिलने चली आई हूं। जिसके साथ मेरी शादी हुई है वह राजकुमार कल अचानक आ गया मैं उसे सोता छोड़कर आ गई हूं आपसे मैं कितना प्रेम करती हूं इसी से समझ लो मैं तो अंदर से दुखी हूं रो रही हूं। तुम्हीं बोलो क्या करें।

जौहरी ने कहा देख मुहब्बत एक से होती है अनेक से नहीं। कहावत है एक म्यान में दो तलवारें नहीं समातीं, समझ ले।

वह बोली समझ गई। मैं अभी जाकर उसका वध कर आती हूं। अपना प्यार पक्का।

यह सुनते ही मंत्री पुत्र वहां से जल्दी से चल दिया। उसने सोचा मैं जल्दी जाकर वहां कोई हंगामा खड़ा कर दूं जिससे राजकुमार मरने से बच जाए यह सोच उसने शार्टकट नजदीक वाले रास्ते से तेजीसे चला जिससे वह राजकुमारी के वहां पहुंचने से पहले ही पहुंच जाए। अंजानी राह पर तेज चलते वह अचानक एक अंधे कुएं में गिर गया। कुएं में पानी तो नहीं था पर गहराई इतनी थी कि वह उसमें से निकल नहीं सकता था। वह उसी में छटपटाता रहा पर निकल नहीं सका।

इधर राजकुमारी ने आकर सोते हुए अपने पति को उस दुराचारिणी ने उन्हीं की तलवार से ऐसा वार किया कि एक वार में सिर धड़ से अलग हो गया। यह सब कर वह बड़ी तेजी से फिर लौटी और जौहरी से जाकर बोली मैंने उसका काम तमाम कर दिया। यह सुनकर जौहरी अवाक् रह गया। कुछ देर तो वह बोला ही नहीं फिर कुछ सोचकर छुरा लाया और उससे बोला कि दुष्टा जब तू अपने पति की नहीं हुई तो तुझ पर कौन विश्वास करेगा और उसके सिर के बाल छील दिए और धक्का देकर कोठी के बाहर कर दिया अब वह क्या करती।

वह रोती बिलखती फिर राजमहल आई और जोर-जोर से रोने लगी हाय ये कौन है मेरे पति को मारकर मेरे बाल काटकर भागा जा रहा है यह हाल जान पहरेदार सिपाही सब दौड़ पड़े राजा को खबर लगी वह अपार शोक सागर में डूब गए। खोज शुरू हो गई महल के चारों ओर नाकेबंदी कर दी गई। बाद में पता चला कि राजकुमार का सईस भी गुम है अब उसकी खोज शुरू हुई तो राजकुमारी ने भी कहा कि मारने वाला उस जैसा ही था राजा ने उस पर इनाम रख दिया और उसी की खोज होने लगी।

इधर मंत्री पुत्र कुएं में रहा सवेरे पशु चराने वाले चरवाहे उधर से निकले तो उसने आवाज लगाई भाई मैं कुएं में गिर गया हूं जरा देखना तो एक चरवाहे ने झांककर देखा और अपने साथियों को बताया कि इसमें तो एक आदमी गिरा है तो चरवाहों ने रस्सी लटका कर उसे कुएं से बाहर निकाला। मंत्री पुत्र ने उन्हें मोहर देकर कहा आपने बड़ी कृपा की धन्यवाद दिया और बोला जैसे इतनी कृपा की एक कृपा और करो कि एक कागज पर लिखकर दे दो कि आप लोगों ने मुझे कुएं से निकाला है चरवाहे बोले ठीक है मंत्री पुत्र ने नाम बताया। नाम लिख इतने समय इतने बजे हम लोगों ने इन्हें निकाला है और कई चरवाहों से हस्ताक्षर करवा लिए। उसने कागज जेब में डाला और चल पड़ा थोड़ी दूर ही गया था कि सिपाही मिल गए। थोड़ी पूछताछ के बाद उसे गिरफ्तार कर लिया और लाकर राजा के सामने पेश किया।

राजा ने कहा कि इस केस में क्या जानना है इसको सजाए मौत दी जाती है। मंत्री पुत्र ने बहुत हाथ जोड़े गिड़गिड़ाया पर राजा ने एक न सुनी उसे जल्लाद के हवाले कर दिया। जल्लाद मंत्री पुत्र को लेकर जा रहा था और मंत्री पुत्र कहता जा रहा था मुझे मरने का दुःख नहीं है पर राजा इतना अन्यायी है इस बात का दुःख है। पर राजा इस मामले के पहले न्याय के लिए धर्म पर चलने के लिए प्रसिद्ध था लोगों का कहना था कि राजा के द्वारा अन्याय हो ही नहीं सकता।

खैर जब जल्लाद ने उसको फांसी के तख्ते पर खड़ा किया और उसके गले में फंदा डालने लगे तो फंदा कभी छोटा पड़ जाता कभी बड़ा यह देख जल्लाद ने कहा महाराज को कहना पड़ेगा ये आज अनहोनी हो रही है और वह राजा की सभा में अपनी बात कहने को चल पड़ा।

सभा में पहुंचकर जल्लाद ने कहा महाराज क्षमा करें उसको फांसी नहीं लग रही है और वह कह रहा है कि मेरी बात न सुन राजा घोर अन्याय कर रहा है इसलिए महाराज उसकी बात सुन ली जाए तो ठीक रहेगा। महाराज ने आज्ञा दी अच्छा उसे पेश किया जाए।

राजाज्ञा का पालन हुआ और मंत्री पुत्र को राजा साहब के सामने लाया गया और मंत्री पुत्र ने आदि से अंत तक जो बीता था सब बयान किया उसने राजा को बताया कि हम दोनों मित्र हैं और आपस में एक लिखित पत्र द्वारा यह निश्चित किया है कि जिएंगे तो दोनों साथ मरेंगे तो दोनों साथ। उसने अपनी जेब से निकालकर एक पुर्जा राजा साहब की ओर बढ़ाया। जिस पुर्जे पर युवराज के हस्ताक्षर थे और उसने कहा पता कर लिया जाए ऐसा ही एक पुर्जा मेरे मित्र राजकुमार की जेब मे भी है। राजा ने लाश की तलाशी लेने को कहा तो युवराज की जेब से भी वैसा ही एक पत्र मिला जिस पर मंत्री पुत्र के हस्ताक्षर थे।

राजा ने जांच किया तो जौहरी ने सही बयान दिया और राजकुमारी के कटे बाल बरामद हो गए। चरवाहों ने भी माना कि हमने इसे कुएं से निकाला है अब तो पासा ही पलट गया राजा ने अपनी लड़की को जिन्दा गड्ढा खोदकर गड़वा दिया। मंत्री पुत्र को आरोप मुक्त कर दिया और राजकुमार के शव का क्या किया जाए सोचने लगे कि इनका यहीं दाह-संस्कार कर दिया जाए या इनके माता-पिता के पास भेज दिया जाए।

मगर मंत्री पुत्र ने कहा महाराज हमारी समझ में इस पुर्जे के मुताबिक मेरे मित्र को आप मुझे सौंपिए मैं भी अब इस संसार में नहीं रहूंगा पर थोड़ा सोचूंगा हो सकता है एक-दो दिन लगे आप हमारी इतनी मदद करिए कि युवराज के शव को एक पेटी में राजवैद्य से दवा लगवा ऐसा पैक करवा दें जिससे वह जल्दी खराब न हो उसके बाद जो होगा मैं करूंगा। महाराज मेरी जो समझ में आ रहा सीधा-सपाट आपको निवेदन कर दिया कोई छल-झूठ की बात नहीं की।

महाराज ने मंत्री पुत्र की सभी बातें मान लीं और सब कराकर वह पेटी मंत्री पुत्र को देते हुए रा पड़ें। कुपुत्री की करतूत के कारण यह संबंध बड़ी कटुता के साथ समाप्त हो गया।

मंत्री पुत्र ने शव पेटिका को राजकुमार के घोड़े पर लादा महाराज को प्रणाम किया और भटियारी के यहां जा पहुंचा और अपना घोड़ा, सामान लिया और सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिए। मंत्री पुत्र ने सोचा इनकी ससुराल और पत्नी का हाल तो हमने देख लिया अब हमें अपनी ससुराल और धर्मपत्नी के बारे में मरने से पहले जान लेना चाहिए। उसके बाद दोस्ती निभाऊंगा। मंत्री पुत्र ने भटियारिन का बिल चुका घोड़ा ले लिया।

हे ईश्वर ! हमें धर्म पालन में सहायता करना और अपने घोड़े पर सवार हो युवराज के घोड़ की रास को अपने घोड़े से बांधा और साथ-साथ अपनी ससुराल की ओर चल पड़ा। तीसरे पहर वह अपनी ससुराल पहुंच गया। युवराज के घोड़े को पहले की तरह जो घोड़े संभालते थे उन्हें देकर दो मुहरे दी और समझाया। घोड़े को ठीक से खिलाना-पिलाना और इस बारे में किसी से चर्चा न करना अपना घोड़ा और युवराज की शव पेटिका लेकर चल दिया। अपनी ससुराल से कुछ दूरी पर एक घने बरगद के पेड़ को देखकर वह रुक गया। दूर तक देखा कोई दिखाई नहीं पड़ा उचित अवसर जान मंत्री पुत्र घोड़े को एक डाल के नीचे ले गया और पेड़ पर चढ़कर पेटिका ऊपर खींचकर एक मोटी डाल पर अच्छी तरह जमाकर पेड़ से नीचे उतर आया तथा अपने घोड़े पर बैठ अपनी ससुराल की ओर चल दिया। चलने स पहले उसने ससुराल समाचार भिजवा दिया।

समाचार सुनते ही उनके ससुर-साले कई लोग उसके स्वागत के लिए आ गए। सभी बहुत प्रसन्न थे खबर घर में आई तो घर में मंगलगान होने लगे। सब बहुत खुश थे सेठ की लड़की तो फूली नहीं समा रही थी विना किसी पूर्व सूचना के सजन जो घर आ गए थे।

उस समय का प्रचलन था खाते-पीते घरों में एक कमरा चित्रसारी नाम से होता था जिसमे खास अवसर जैसे विवाह होने के बाद बेटे-बहू या ऐसे ही खास लोगों को विश्राम दिया जाता था। मंत्री पुत्र को भी उसी चित्रसारी में सोने के लिए भेज दिया गया। मंत्री पुत्र सोच रहा था यह स्वर्गीय सुख भी देख लिया जाए आगे क्या होगा पता नहीं। आंखों में नींद का नाम नहीं था इतनी देर में कानों में कुछ आवाज सुनाई दी लगा कोई आ रहा है।

मंत्री पुत्र आंखें मूंद ऐसा लेट गया जैसे सो रहा है पर बीच-बीच में कनखियों से देख भी लेता था अब उसने देखा कि एक लड़की सुन्दर श्रृंगार किए और हाथ में नंगी तलवार लिए मंथर गति से आ रही है। मंत्री पुत्र ने मन में कहा कि लगता है कि यह कोई मौका नहीं देना चाहती। खैर, मैंने तो मरना ही है जैसे ईश्वर की इच्छा और राम-राम जपता रहा।

लड़की आई और तलवार को बीच में रखकर लेट गई। थोड़ी देर में कुछ सोचकर उठी वैसे ही एक सियारनी बड़े जोर से रोने लगी। वह फिर लेट गई। थोड़ी बाद फिर उठी तो फिर वह सियारनी हू-हू करके भयानक आवाज में फिर रोने लगी। वह फिर लेट गई थोड़ी देर बाद फिर उठी तो फिर सियारनी फेंकरी इस बार उसने वह तलवार उठा ली और लेकर चल पड़ी।

मंत्री पुत्र तो जग ही रहा था वह भी उसके पीछे छिपता-छिपाता चल पड़ा। उसने देखा वह कस्बे से बाहर खेतों में आ गई जहां सियारिनी बैठी है।

लड़की ने सियारिनी से कहा, अरे ! दुष्टा तुझको क्या हो गया है। कितने अरमान हैं मेरे आज वो आए हैं पर जब उनकी सेवा के लिए उठती हूं तो तू विघ्न डालती है। क्या कारण है बता नहीं तो अभी तुझे मारकर सारे विघ्न दूर कर दूंगी।

सियारिन ने कहा बेटी तू तो सती है। धर्म का मर्म जानती है इसीलिए मैंने चेताया है जिससे तेरा धर्म बचे। तू सुनना चाहती है तो सुन। यह तेरा पति केवल एक दिन का मेहमान है कल यह आप सबसे विदा लेकर अपने मित्र जिसकी लाश एक बक्से में बंद बरगद के पेड़ पर रखी है के साथ आत्मदाह कर लेगा, यह निश्चित है। क्योंकि मैं इस कस्बे की देवी हूं हमें (डिउहारिन) कहते हैं। मेरा काम कस्बे के लोगों को हर दुःख संताप से बचाना है। इसीलिए मैंने सियारिन बनकर तुम्हें चेताया है। बेटी, एक बार मिलने से हमेशा के लिए बिछड़ना इसी कष्ट से बचने के लिए मैंने तुझे चेताया है अब आगे तेरी इच्छा।

सेठ की लड़की ने कहा कि किसी तरह यह जिन्दा नहीं रह सकते। मुझे मेरी मां ग्राम देवी का दर्शन हुआ है उसका कुछ फल नहीं मिलेगा। ऐसा कहकर उसने देवी के चरण पकड़ लिए और बोली जब तक कोई उपाय नहीं बताओगी मां तब तक मैं तुम्हारे चरण नहीं छोड़ने वाली।

देवी अपने असली रूप में आ गई थीं उनका सुन्दर स्वरूप और गौर वर्ण और माथे का तेज देख सेठ की लड़की बहुत प्रसन्न हुई। देवी बोली उपाय तो है जो तू कर सके।

सेठ की कन्या बोली माता बताएं। जैसा आप कहेंगी मैं अवश्य करूंगी। मुझे अपने पति के प्राण जो बचाने हैं।

देवी ने कहा बेटी कल पूर्णमासी है। इस तिथि को रात बारह बजे समुद्र में बहुत जोर का ज्वार-भाटा आएगा। उसी का फेन चाहिए। उसमें अमृत होता है उसको शरीर से लगाने से मृतक जी उठता है। अब उसको लाने का तरीका सुन। नई साड़ी पहनकर जाना कटोरा भी कांसे का ही चाहिए। एक नया रुमाल कटोरे को ढंकने के लिए चाहिए।

सब लेकर रात पौने बारह बजे समुन्द्र के किनारे पहुंचना और किनारे से पांच सौ फीट पहले ही सारे वस्त्र किसी पेड़ पर रखकर अपने शरीर पर कोई धागा भी न होना चाहिए। केवल कटोरा व रुमाल लेकर जाए और ज्वार आने पर ध्यान रखना ठीक बारह बजे खूब ऊंची-ऊंची लहरें रुक-रुककर तीन बार उठेंगी। तीनों बार उसका फेन कटोरे में भर लेना। फिर समुद्र शांत हो जाएगा। अमृत तुरंत कपड़े से ढंककर वापस होना पीछे नहीं देखना और कटोरे को पेड़ पर टांगकर ही अपने वस्त्र पहनना और घर आकर भी कटोरे को जमीन पर मत रखना। बस बेटी ब्रह्म बेला होने वाला है अब मैं चलती हूं नहीं तो कोई हमें देख लेगा।

सेठ की लड़की ने बार-बार धरती पर सिर रखकर आशीर्वाद मांगा। यह देखकर मंत्री पुत्र वहां से चला आया और आकर बिस्तर पर लेट गया। थोड़ी देर में वह आई तलवार बीच में रखकर लेट गई।

सेठ की लड़की का नाम श्री देवी था। घर में सब उसके आदेश का पालन करते थे। सेठ कहते थे मेरी बेटी देवी है सब इसका कहना मानो।

सवेरा होते ही लड़की ने अपने दोनों भाइयों को कहा तुम्हारी ड्यूटी है, दोनों अपने जीजा के साथ रहना जो चाहिए पूर्ति करना तथा उन्हें बिल्कुल भी अकेले मत छोड़ना। फिर अपनी भाभियों से बोली, भाभी हम कल पूरी रात सोये नहीं हैं। आज ऐसे करना कि रात आठ बजे तक सब खा-पीकर सोने चले जाएं।

भाभियों ने कहा ठीक है दीदी जैसा आप चाहेंगी वैसा ही होगा। पर हम सब तो रो रहे हैं कि जब आप चली जाएंगी तो हम कैसे रहेंगे।

श्रीदेवी ने मैं कहां जा रही हूं। मैं तो आप लोगों के दिल के करीब रहूंगी और भाभियों को समझा दिया।

सब अपने-अपने काम में लग गए भाभियों ने अपना काम समय से निपटा दिया और आठ बजे तक सब खा-पीकर अपने-अपने ठिकाने पर चले गए। मंत्री पुत्र तो सब जानता ही था। श्री देवी के आने तक नकली निद्रा में लीन था। यह देख श्रीदेवी को संतोष हुआ कि स्थान देवी के आशीर्वाद के कारण कहीं कोई वाधा नहीं आ रही और पुनः देवीजी का ध्यान किया आशीर्वाद मांगा और नई साड़ी पहनकर कटोरा कपड़ा लिया और जिस रास्ते से निकलने का पहले से सोचा था, उसी रास्ते से निकल पड़ी।

मंत्री पुत्र भी उससे उचित दूरी बनाकर उसके पीछे-पीछे चल रहा था। जिससे उसे महसूस न हो कि कोई साथ है। यद्यपि वह जानता था कि पति-पत्नी दोनों मिलकर एक शरीर बनते हैं।

श्री देवी बहुत तेजी से चल रही थी और ठीक समय पर वह वहां पहुंच गई जहां से उसे बिना वस्त्र के जाना था। वह एक पेड़ के पास रुक गई और अपने कपड़े उतारे और वृक्ष की डाल पर रखकर ध्यान से देखा शरीर पर कोई छोटा धागा भी नहीं था। कांसे का कटोरा और कटोरे को ढंकने के लिए नए कपड़े का टुकड़ा लिया और समुद्र की ओर चल पड़ी।

निर्भय होकर समुद्र में चार-पांच फीट अंदर जाकर खड़ी हो लहरों के आने की प्रतीक्षा करने लगी। छोटी-बड़ी लहरें तो अब भी आ रही थीं। थोड़ी देर में उसने देखा समुद्र में ज्वार-भाटा की बड़ी लहरें आती दिखाई दीं। श्रीदेवी सतर्क हो गई। कटोरे को दाएं हाथ में जोर से पकड़ा और लहरों के वहां पहुंचने की प्रतीक्षा करने लगी। बहुत शोर करती हुई लहरें आईं और श्रीदेवी को भिगोती हुई वापस हो गईं। श्री देवी ने कटोरे में देखा तो उसमें झाग आ गया था। आश्वस्त होकर पुनः लहरों की प्रतीक्षा करने लगी। लहरें काफी दूर जाने के बाद फिर लौटीं और श्री देवी के कटोरे में कुछ झाग फिर आ गया। तीसरी बार लहरों के आने पर कटोरा लगभग भर गया।

श्रीदेवी उस समय बहुत खुशी से प्रसन्न हो रही थी। झटपट उसने कपड़े से कटोरे का मुंह बंद किया और वापस चल पड़ी। पीछे से कुछ आवाजें आ रही थीं। ये कौन तुम्हारे पीछे चल रहा है पीछे मुड़कर तो देख। पर श्रीदेवी ने कोई ध्यान नहीं दिया और आकर कटोरे को पेड़ पर टांगा और अपनी साड़ी पहनी और वापस चल पड़ी। अब वह आवाज आनी बंद हो गई थी।

मंत्री पुत्र भी बहुत तेजी से घर की ओर भाग चला ताकि इसके पहुंचने से पहले पहुंच जाए।

श्रीदेवी आराम से चल रही थी अब उसे उतावली नहीं थी। वह सीधे उसी बरगद के पेड़ के पास गई जिस पर युवराज की लाश रखी थी। उसी में एक डाल देखकर उसी में वह कटोरा टांग दिया और घर आकर लेट गई और तुरंत निद्रा मग्न हो गई।

सवेरा होने पर सब लोग अपने काम में लग गए। समय पाकर मंत्री पुत्र ने सेठजी से कहा, बाबूजी ! अब आप हमें घर जाने की आज्ञा दीजिए। घर छोड़े काफी दिन हो गए। वहां सब लोग चिंतित होंगे। यहां सब से अच्छी तरह भेंट हो गई अब घर जाकर यहां का हाल बताऊंगा।

सेठ ने कहा बेटा मैं घर में सलाह करके सबकी राय लेता हूं। घर में खबर फैली कि दामाद जी जाना चाहते हैं। तो श्रीदेवी ने अपने छोटे भाई से कहा भइया जाके अपने जीजा को यहां लिवा लाओ कहना मैंने बुलाया है।

लड़का जाकर अपने जीजा को लिवा लाया श्री देवी ने कहा क्या बात है जाने को बड़े उतावले हैं। मैं भी आपके साथ चलूंगी।

मंत्री पुत्र ने कहा कि मैं तो घर में बिना बताए कहीं और गया था परिस्थितिवश यहां आ गया। इस तरह मेरे साथ तुम्हारा जाना क्या ठीक रहेगा। फिर मुझे एक जगह और होकर जाना है। हां घर जाकर तुम्हें लिवा लाने की बात करूंगा पर अब मेरा जाना जरूरी है।

श्रीदेवी ने कहा कि अभी तो हमारी आप की बात भी नहीं हुई आप मुझसे दूर-दूर अनमने से रहते हो। यह रहस्य मेरी समझ में नहीं आता।

मंत्री पुत्र ने कहा तुम बहुत चतुर और संयमी हो सच तो यह है कि मैंने तुमसे बड़ी आशा लगा रखी है। इसलिए समय आ गया है अब मैं अपनी धर्मपत्नी से कुछ भी नहीं छुपाऊंगा और अगर जीवित रहा तो हमेशा हम दोनों एक जान होकर रहेंगे। हमारा जीवन आदर्श और छल-कपट रहित होगा यह कहकर मंत्री पुत्र ने युवराज के साथ मित्रता से लेकर यहां पहुंचने तक की सारी घटना निश्छल भाव से बताई और कहा कि अब हमें अपने मित्र के साथ आत्मदाह कर लेना है। यही विधि का विधान लगता है। आगे क्या होना है यह विधाता ही जाने पर यह निश्चित है कि राजकुमार के बिना मैं इस घर पर नहीं रहूंगा। यह कहकर उसने जेब से वह पुर्जा निकालकर श्रीदेवी के हाथ पर रख दिया।

श्रीदेवी ने उसे पढ़ा और बोली तो इसका मतलब है हम तीनों ही का मरण निश्चित है। मित्र के विना आप और आपके बिना मैं जीवित नहीं रहूंगी। अच्छा ये बताओ इसका कोई हल नहीं है।

मंत्री पुत्र बोला इसका एक ही हल है कि राजकुमार जीवित हो जाए। पर यह असंभव है उनका तो सिर ही धड़ से अलग कर दिया है उनकी दुष्ट पत्नी ने।

श्रीदेवी उनकी दुष्ट पत्नी का नाम ही न लो क्योंकि वह दुराचारिणी है उसने दो कुल को कलंकित किया और मैं आपको विश्वास दिलाती हूं कि आप मेरे जीते जी दुःखी नहीं होंगे। उसने लपककर मंत्री पुत्र का दाहिना हाथ अपने हाथ में ले लिया और बोली आप विश्वास करिए आपके मित्र युवराज जीवित हो जाएंगे। आपकी दोस्ती पूरे जीवन चलेगी।

मंत्री पुत्र तो सब जानता था फिर भी भोले पन से बोला क्या कहनी हो सच। अगर ऐसा हो गया तो सचमुच तुम लक्ष्मी हो देवी हो अब कृपा करके शीघ्र बताओ यह कैसे संभव है।

श्रीदेवी ने कहा मैं पिताजी को बुलाकर सब बता देती हूं आप चार भले आदमियों के साथ जाकर अपने मित्र को लिवा लाओ। मंत्री पुत्र बहुत ही खुश हुआ उसकी आंखों से खुशी के आंसू बह रहे थे। सेठजी और उनके परिवार के सब लोग कस्बे के बाहर आ गए और उस पड़ के नीचे पहुंच गए। जिस पेड़ पर युवराज की लाश का बक्सा डाल पर रखा हुआ था।

पेड़ पर चढ़कर शव वाली पेटी नीचे लाए। पेटी खोली नीचे बिस्तर बिछाया उस पर युवराज को लिटाया। सिर को यथा-स्थान चिपका दिया। कटोरा उतारकर पेटी के ऊपर रख दिया और अपने साले से बोला भई अब सारा काम मेरा है। आप लोग यहां से 500 फिट दूर जा खड़े रहें।

मंत्री पुत्र ने कटोरे पर से कपड़ा हटाया ऊपर का फेन लेकर गले तथा पूरे शरीर में लगा दिया। यही विधि श्रीदेवी ने बतलाई थी ये करके पूरब की तरफ मुंह करके हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। समुद्र भी वहां से पूरब में ही था।

कुछ देर बाद मृत शरीर की रंगत बदलने लगी और वह बहुत तेजी से ठीक होने लगा। उन्होंने

आंखें खोलीं देखा मित्र सामने खड़ा है। बोला बहुत दर्द हो रहा है।

मंत्री पुत्र ने कहा धीरज धरो अभी जल्दी ही सब ठीक हो जाएगा और सचमुच ही वह बहुत जल्द स्वस्थ हो गया तथा बोला हम इस समय कहां हैं।

मंत्री पुत्र ने कहा आप इस समय मेरी ससुराल में हैं और संक्षेप में सारा वृतांत सुना दिया तथा बोला अब आपको मेरी ससुराल चलना है। युवराज ने कहा मैं चलूंगा तो नौकर बनकर ही चलूंगा।

इतने में कुछ दूर से बहुत जोर की आवाज आई जिन्दाबाद राजकुमार जिन्दाबाद और बहुत सारे लोग हाथों में फूलों के हार लिए स्वागत को चले आ रहे थे। असल में उनको पता चल गया था युवराज पुनर्जीवित हो गए। मंत्री पुत्र ने कहा देखो आप अपने कपड़े पहनो। ऐसा न करो मित्र यह सब जान गए हैं। इतने में श्रीदेवी उनके पिता आदि सब आकर माला पहनाकर राजकुमार का स्वागत करने लगे। जो सुनता अपना काम छोड़कर देखने चला आता कि कैसे श्रीदेवी के प्रयास से दस दिन पहले की मरी लाश जी गई।

राजकुमार को सेठजी बड़ी धूमधाम से अपने घर लाए और चारों ओर खुशी का सैलाब उमड़ रहा था। बाल, वृद्ध, जवान सभी ईश्वर की महिमा का गुणगान कर रहे थे और कह रहे थे। उसकी माया जिसको जब चाहे मारे और जिसको जब चाहे जिन्दा कर दे। इस तरह दोनों मित्रों की सेठजी के यहा भावभगत होने लगी।

सेठजी ने भी पूजा-अर्चना कथा आदि का आयोजन कर भगवान का अभार व्यक्त किया। बहुत बड़ा कष्ट था प्रभु जी आपने कृपा करके उबार लिया नहीं तो दो परिवार पूरे के पूरे नष्ट हो जाते।

श्रीदेवी ने कहा स्वयं देवी माता ने दर्शन देकर मेरा उद्धार किया। कई जन्मों का फल मिला है मुझे। प्रभु से विनती है कि मुझ पर उनकी यह कृपा सदैव बनी रहे। इस तरह सेठजी के यहां दोनों मित्र खुश होकर आमोद-प्रमोद से रह रहे थे। कब दिन कब रात बीत रहे थे पता न चलता। एक दिन राजकुमार ने कहा चलो एक-दो दिन शिकार खेल आएं मंत्री पुत्र ने कहा ठीक है सलाह करते हैं।

श्री देवी से बात की तो उसने कहा जाओ तीन दिशा में जाओ पर पश्चिम में मत जाना'

युवराज ने पूछा क्यों ?

श्रीदेवी ने कहा पश्चिम में एक मायावी शेरनी रहती है उधर जाओगे तो बहुत कष्ट पाओगे इसलिए उस ओर मत जाना।

युवराज ने कहा ठीक है हम उधर नहीं जाएंगे। अब तो आज्ञा है श्री देवी ने कहा जैसी आपकी इच्छा और दूसरे दिन दोनों मित्र आखेट के लिए जंगल की ओर चले गए। पर शिकार खेलते-खेलते पश्चिम की ओर ही बढ़ रहे थे।

मंत्री पुत्र ने चेताया कि हम पश्चिम में जा रहे हैं। युवराज ने कहा तो क्या हुआ। मंत्री पुत्र ने कहा उसने मना किया था न।

युवराज ने कहा यार मैं देख रहा हूं तू आजकल भाभी की बात को किसी देवी की कही बात की तरह मान रहा है। चलो थोड़ा और आगे जाकर वापस हो लेंगे।

मंत्री पुत्र ने कहा कि हम दोनों को जीवित रखने वाली तो वही है नहीं तो इस समय हम दोनो कहीं स्वर्गलोक में होते। उसकी सफलताओं ने उसे देवी जैसी बना दिया है।

युवराज ने कहा यह तो सत्य है और शिकार की टोह में आगे बढ़ते गए जंगल घट रहा था। कंकरीला मैदान चालू हो गया था और बीच-बीच में कहीं नीम-बबूल आदि के पेड़ थे। मैदान के बीच में महुए का एक बड़ा पेड़ अकेला खड़ा था। उस पेड़ के आसपास कुछ मनुष्यों की हड्डियां बिखरी पड़ी थीं यह देख दोनों मित्र उधर बढ़ चले। पास जाकर देखा उस महुए के पेड़ से सटा एक फ्रेम रखा हुआ

है और उस फ्रेम के शीशे पर एक बहुत सुन्दर औरत की फोटो आती और मिट जाती। फिर आती दो मिनट रहती फिर मिट जाती। इस तरह हर पांच मिनट के अंतर पर फोटो जाती रहती। उस फ्रेम के नीचे उसका नाम लिखा था। माया रानी।

युवराज उस तस्वीर को देखते ही उस पर मोहित हो गया बोला मैं तो इस लड़की से विवाह करूंगा नहीं तो प्राण दे दूंगा। यह कहकर वहीं फ्रेम के सामने बैठ गया और बोला मित्र आप जा सकते हैं। मैं तो इसे लेकर ही आऊंगा नहीं तो यहीं प्राण त्याग दूंगा।

विवश मंत्री पुत्र ने कहा ठीक है मैं मायावती को पाने में अपना पूरा जोर लगाऊंगा। हे मित्र ! मैं अब भी इस बात पर कायम हूं कि सुख-दुःख में दोनों साथ हैं ये कहकर उसने राजकुमार के घोड़े को खोल दिया। बोला तुम यहीं आसपास रहना और अपने मालिक का ध्यान रखना तुमको ज्यादा कष्ट नहीं होगा। तुम्हारे लिए चारा-पानी यहां पर्याप्त है। घोड़े ने सिर हिलाया जैसे समझ गया हो।

मंत्री पुत्र अपने घोड़े पर चढ़ वहां से चल दिया पश्चिम की ओर। आगे बढ़ते हुए मन ही मन अपने इष्ट देव बजरंग बली से विनती कर रहा था काजि किए बड़े देवन के तुम वीर महाप्रभु देखि विचारों। कौन सो संकट मोर गरीब का जो तुमसे नहीं जात है टारो। महाराज कृपा करो परोपकार का काम है आपकी कृपा हो गई तो कार्य सिद्ध हो जाएगा। इस प्रकार अपने इष्ट देव के सामने सहायता मांगता गिड़गिड़ाता अनजानी डगर पर चला जा रहा था कि मंत्री पुत्र को बाग मं पेड़ों का झुरमुट दिखाई पड़ा। वह घोड़े को रोककर उस ओर ध्यान से देखने लगा। देखने से लगा बहुत सुन्दर आमों का बाग है। उस पर बहुत सारे पंक्षी कलरव कर रहे थे। मंत्री पुत्र ने अपना घोड़ा उसी ओर बढ़ा दिया।

वहां पहुंचकर देखा कि वहां पर एक बहुत बड़ा बाग है। आम, अमरूद, शरीफा आदि के अनेक प्रकार के पेड़ हैं। बाग के काफी अंदर एक सुन्दर कुटिया बनी है कुटिया के सामने यज्ञशाला है। केले और अनेक प्रकार के फूलों के पेड़ हैं जिनमें ऋतु अनुसार फल-फूल लग रहे हैं। मंद-मंद हवा और भीनी-भीनी सुगंध आ रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे मंत्री पुत्र देवलोक में कल्पतरु वृक्ष के नीचे खड़ा है। कल्पतरु की बात जेहन में आते ही मंत्री पुत्र ने मन ही मन सोचा लगता है अब काम बनने में संदेह नहीं।

अंदर झांका तो देखा कुटिया में एक वयोवृद्ध संन्यासी सिंहासन पर बैठे ध्यानमग्न हैं। कुटिया के बाहर एक कुंआ है जिस पर रस्सी और बाल्टी-लोटा साफ-सुथरा रखा है। मंत्री पुत्र ने पानी खींचा कुल्ला किया मुंह धोया पानी पिया घोड़े को पानी पिलाया। जल क्या था अमृत था उसके पीते ही भूख-प्यास चली गई। घोड़े को छोड़ दिया उसने देखा आश्रम में शेर, हिरन, बकरी, खरगोश आदि अनेक जीव बिना किसी बैर या डर के रह रहे थे।

घोड़ा अपनी उदर पूर्ति में लग गया बिना आश्रम को कोई नुकसान पहुंचाए। मंत्री पुत्र ने महात्मा जी के चरण कुछ अंतर से ही छुए कि उनका ध्यान न टूट जाए और कुछ पके फल केले आदि खाए और कुटिया में ही विश्राम करने का निश्चय कर लिया।

कुटिया से थोड़ी दूर पर एक सुन्दर सरोवर है जिसका जल कमल के पत्तों से ढंका हुआ है। कमल पुष्पों पर भंवरे मंडरा रहे हैं। हंस, सारस आदि अनेक प्रकार के पक्षी जल-क्रीड़ा व कलरव कर रहे हैं। इतना आनन्ददायक स्थान मंत्री पुत्र ने कभी नहीं देखा था। उसने मन ही मन कहा तप बल शम्भु करहि संहारा, तपबल शेष धरहिं महि मारा। तप से सब सुलभ है। यहीं सब सोचते और संत महिमा का गुणगान मन ही मन करते थका हारा तो था ही नींद की गोद में चले गए।

ठीक चार बजे नींद खुली मंत्री पुत्र तुरंत उठे समाधिस्थ महात्मा के चरणों में लेटकर साष्टांग प्रणाम किया। मुनीश्वर के मुखार विन्द से ध्यान देने पर कभी-कभी ॐ शब्द सुनाई पड़ जाता था पता नहीं कब से

समाधि लगाए थे महात्मा जी। मंत्री पुत्र ने तुरंत कुटिया की सफाई पर ध्यान दिया। कुछ जगह से सूखी पत्तियां हटाईं। कुछ पौधों को दूसरी खाली जगह पर रोपा। कुछ को पानी दिया गौशाला साफ कर उसमें पानी भरा ताकि पशु-पक्षी साफ जल पीना चाहें पिएं। यह सब करके स्वयं स्नान किया संध्या वंदना की। यह स्थान की महिमा थी जो भगवान का गुणगान मंत्री पुत्र को करा रही थी। शांति इतनी कि मंत्री पुत्र सब कुछ भूल कुटिया को संवारने में लग गए।

कुछ दिन बीते एक दिन प्रातः ब्रह्म बेला में मंत्री पुत्र ने महात्मा जी को साष्टांग प्रणाम किया। महात्मा जी ने भी आंखें खोल दीं ॐ हरि ॐ नारायण का उच्च स्वर ऐसा गूंजा कि उस कुटिया में एक तेज प्रकाश पुंज भर गया चारों ओर से आवाज आने लगी। ऐसा लगा पेड़-पौधे तक कह रहे हैं। हरि ॐ तत्सत हरि ॐ तत्सत उस प्रकाश से मंत्री पुत्र की आंखें चुंधिया गईं कुछ दिखाई नहीं पड़ रहा था। बस मुंह से अपने आप निकल रहा था हरि ॐ तत्सत। आधी घड़ी तक जाप होने पर महात्मा जी शांत हुए। इसके साथ ही वहां का वातावरण शांत हो गया और दर्शनार्थी पहुंचने लगे जिसमें पशु-पक्षी हिंसक जीव भी थे। इनमें लगभग आश्रम के आसपास रहने वाले थे।

महात्मा जी की दृष्टि मंत्री पुत्र पर पड़ी जो जमीन पर लेटा प्रणाम की मुद्रा में था। महात्मा जी बोले बच्चा तुम्हें पहली बार आश्रम में देख रहा हूं। कब से यहां रह रहे हो बोलो यहां मन लगा। अपना सब हाल मुझे बताओ तुम्हारी मेहनत से कुटिया बहुत सुन्दर लग रही है मैं बहुत प्रसन्न हूं। बोलो अगर मेरे करने से तुम्हारा कोई कार्य सिद्ध होता हो तो अवश्य करूंगा।

यह सुनकर मंत्री पुत्र हाथ जोड़कर खड़ा हो गया बोला महाराज आप सिद्ध हैं आप सब जानते हैं और सांसारिक पार लौकिक ऐसा कोई कार्य नहीं जो आप न कर सकें। आपकी इच्छा के विरुद्ध न कोई यहां आ सकता है न ठहर सकता है। यहां पहुंचते ही मुझे ऐसा लगा जैसे सब कुछ मिल गया और कहीं जाने की मेरी इच्छा समाप्त हो गई। प्रभु मैं मित्रता निभा रहा हूं मित्र का दुःख दूर करने के लिए अपनी जान हथेली पर रखकर निकला हूं। बाकी सब आप ध्यान लगाकर जान लें और मुझ पर और युवराज पर कृपा करें। महाराज आपके सिवा और कोई मेरी मदद नहीं कर सकता हमारा भरोसा केवल आप पर है।

महात्मा ने कहा अच्छा पुत्र तुम समिधा वगैरह का प्रबंध करो यज्ञ हवन का काम आज और कल चलेगा। यज्ञ हो जाने पर परसों सवेरे इन सब पर बात होगी। मैंने सब जान लिया है गुरु कृपा से तुम्हारा काम कठिन तो है पर असाध्य नहीं। अंत में सब ठीक हो जाएगा विश्वास रखो।

जी महाराज कहकर मंत्री पुत्र अपने काम में लग गया। महाराज को जो सामान चाहिए था, जिन महात्माओं को बुलाना था मंत्री पुत्र ने अपने और घोड़े की मदद से सब काम निपटा दिया और दूसरे दिन शाम तक सब यज्ञ आदि संपन्न हो गया। तीसरे दिन संध्या वंदन जलपान के बाद महात्मा ने बुलाया।

महात्मा जी बोले मैं देख रहा हूं कि सात समुद्र के उस पार एक योजन आगे एक बहुत बड़ा नगर है। उस नगर के राजा के महल में मायावती अपनी मां, भाभी तथा कुछ महिलाओं के साथ बैठी बातें कर रही है। वहां पहुंचना सुगम नहीं है। पर मैं तुम्हें वहां पहुंचाने के लिए मेरे पास कुछ करामाती चीजें हैं वो मैं आपको दे रहा हूं। उसमें पहला यह एक जोड़ी खड़ाऊं हैं यह सिद्ध हैं इस पर खड़े होकर जहां जाना चाहो बोलना यह आपको पहुंचा देंगे। दूसरा यह डंडा है इसमें यह गुण है इसका एक सिरा लाल है और दूसरा हरा है। लाल वाला सिरा जिसके सिर पर रखकर जो बोलोगे वही हो जाएगा। महात्मा खड़ाऊं और डंडे से बोले कि अब तुम दोनों इस मंत्री पुत्र का आदेश मानना। मंत्री पुत्र से उन्होंने कहा देखो दोनों के सामने यह मत कहना कि काम हो गया। यह कहोगे तो यह मेरे पस आ जाएंगे तुम इन्हें रोक

नहीं सकोगे। अब जाओ बजरंग बली का नाम जपना वह वानर रूप में तुम्हारी सहायता करेंगे।

मंत्री पुत्र ने महात्मा के चरण स्पर्श किए। हाथ जोड़कर आशीर्वाद मांगा। फिर खड़ाऊं पर चढ़कर बोला समुद्र पार राजा की नगरी चलो। खड़ाऊं तुरंत वायु वेग से उड़ चला। चार-पांच घड़ी में वह सुन्दर नगर की राजधानी के एक सूने मैदान में उतर गया।

मंत्री पुत्र सोचने लगा किस तरह यह पता लगाया जाए माया रानी कहां रहती है। कहां उसका आना-जाना है। यह सोचकर वह एक हलवाई की दुकान पर गया। वहां कुछ मिठाई लेकर खाने लगा और बातें भी करने लगा। वहां बैठे और लोगों से बोला शहर बहुत घना बसा है। पर इधर काफी जगह खाली है व सजावट तथा सफाई है।

एक ने कहा लगता है बाहर से आए हो यहां राजमहल है। यह सामने जो दीवार है वह राजा का जनाना बाग है। उसमें एक बुढ़िया मालिन अकेली रहती है। उसका बेटा परदेस चला गया है अभी तक नहीं लौटा है।

मंत्री पुत्र ने पूछा कितने दिन हो गए।

तब दुकानदार बोला पूरा तो याद नहीं है पर दसियों वर्ष हो गए।

मंत्री पुत्र ने जो जानकारी वहां लेनी थी ले ली और बाजार गया। बुढ़िया के लिए कुछ सामान तथा घर की जरूरत के लिए कुछ सामान खरीदा और सब सामान लेकर जनाने बाग की तरफ चल पड़ा। वहां आकर उसने डंडे से बोला मुझे अदृश्य कर दो और एक ओर खड़ा हो गया।

तभी एक तीस-चालीस वर्ष उम्र का एक जोड़ा घूमता हुआ उधर से निकला। आदमी मंत्री पुत्र से जा टकराया। मंत्री पुत्र दूर सरक गया।

उसकी पत्नी ने कहा क्या हुआ।

उसने कहा कुछ नहीं बस ऐसा लगा जैसे किसी से भिड़ गया हूं।

पत्नी बोली चिंता या वहम मत करना कभी-कभी ऐसा झूठा अहसास हो जाता है।

मंत्री पुत्र को विश्वास हो गया कि मुझे कोई नहीं देख रहा है अब वह बाग के दरवाजे पर आकर खड़ा हो गया कि कोई आए तो दरवाजा खुले और बात बने। शाम होने वाली थी दो औरतें आईं एक ने ताला खोला अन्दर चल गई। दूसरी अन्दर जाने के लिए धीरे-धीरे कदम बढ़ा रही थी कि मंत्री पुत्र झट से अन्दर होकर एक तरफ खड़ा हो गया।

अन्दर से सांकल लगा वह दोनों फुलवारी में घूमने लगीं।

मंत्री पुत्र भी एक कोने में खड़े होकर उस बाग की सुन्दरता पर मुग्ध होने लगा। मध्य बाग में तरण ताल था। उस ताल के बीच में कमल गट्टा, कमल पुष्प खिल रहे थे। उन पर भंवरे मंडरा रहे थे। किनारे पर ताड़, पाम और अनेक प्रकार के पुष्पों, फलों के वृक्ष लगे थे। कोयल, हंस, चकोर, सारस आदि अनेक पानी और वृक्षों पर रहने वाले पक्षी कलरव कर रहे थे। मोर नाच रहे थे। सरोवर के किनारे एक बहुत बड़ा सुन्दर भव्य मंदिर बना हुआ था। उसमें जाकर उन औरतों ने सांझवती की दर्शन किया कुछ बातें करती हुई वापस लौट चलीं। बाहर निकलकर उन्होंने ताला लगा दिया। इतना काम हो जाने पर मंत्री पुत्र को संतोष हुआ।

बड़े प्रेम से हरि ॐ श्री महात्मा जी महाराज आपकी कृपा से दास का कार्य सिद्ध हो रहा है आपकी दया बनी रहे। आपका ही आसरा है। यह सोचकर मंत्री पुत्र ने डंडे का हरा वाला हिस्सा सिर पर लगाया तो वह पूर्ववत पहले जैसा हो गया।

सामान उठाया और मालिन की कोठरी की ओर चल पड़ा। जाकर देखा एक पचास-साठ वर्ष की औरत बहुत मामूली कपड़ों में बैठी कुछ चावल बीन रही थी। मंत्री पुत्र ने जाकर पुकारा मां।

बुढ़िया काम छोड़कर दौड़ी और बोली कौन है ?

मां मैं हूं हरिश्चन्द्र और बुढ़िया के पैर छू लिए।

बुढ़िया ने हरिश्चन्द्र समझ मंत्री पुत्र को छाती से लगा लिया और रोने लगी।

हरिश्चन्द्र ने मां के आंसू पोंछे और कहा अब क्यों रोती हो अब मैं आ गया सब दुःख दूर हो जाएंगे। अब जरा मुस्कराकर दिखाओ। मुझे पता है मां तुमने कितने कष्ट सहे हैं। लेकिन अब सब दुःख बीत गए मां अब तुम्हें छोड़कर कहीं नहीं जाऊंगा।

बुढ़िया बोली बेटा कब से भूखे हो मैं कुछ खाना-पीना लाती हूं कुछ खाओ तो शांति मिले। मैं यहां अकेली रहती हूं।

हरिश्चन्द्र ने कहा मां चिन्ता न करो सब सामान लाया हूं बाकी पैसे हैं जिस चीज की जरूरत होगी बाजार से आ जाएगा। ये लो पैसे अपने पास रखो।

बुढ़िया गद्‌गद्‌ हो गई और बोली भैया मैंने क्या करने हैं पैसे मेरा तो हीरा लाल मिल गया मैं रनिवास तक सबको बताऊंगी मेरा बेटा आ गया।

मंत्री पुत्र ने उसके मुंह पर हाथ रख दिया। ना मां यह किसी को नहीं बताना है पता नहीं यह राजा लोग क्या समझें। अभी किसी को कुछ मालूम नहीं होना चाहिए।

बुढ़िया बोली ठीक है। सब सामान लेकर बुढ़िया ने खाना बनाया दोनों भोजन करके सो गए।

सवेरे बुढ़िया ने उठकर बाग से सुन्दर-सुन्दर फूल चुन-चुनकर तोड़े और उनसे हार बनाने बैठ गई। मंत्री पुत्र भी बगल बैठ गया। मां ये हार किसके लिए हैं।

बुढ़िया ने कहा ये खास हार बेला, मोतिया, जूही के फूलों का हार बिटिया माया रानी के लिए है। एक पहनेगी एक जूड़े में बांधेगी। दो हार उसके हैं बाकी तो ऐसे छोटे-बड़े कुछ हार जाते हैं पर उनकी कोई बात नहीं। पर माया रानी के हार बढ़िया जाते हैं परंतु फिर भी माया रानी टोक देती है। तुरंत कमी बताती है सबके सामने। इसलिए उसका विशेष ध्यान रखना पड़ता है।

हरिशचन्द्र ने कहा वहां पर मेरी कोई चर्चा मत करना।

बुढ़िया बोली मैं कोई इतनी मूर्ख थोड़े हूं। जब तूने मना कर दिया तो भी मुंह खोलूं। बुढ़िया हार दे आई मंत्री पूत्र ने खूब आराम किया। दूसरे दिन बुढ़िया फूल तोड़ने गई तो हरिश्चन्द भी फूल चुनने में मां की मदद करने लगा घर में आकर बोला मां आज मैं माया रानी के लिए हार बनाऊंगा। तू दूसरे हार बना ले।

बुढ़िया बोली बेटा वो बहुत गुस्सैल है।

हरिश्चन्द्र बोला तू चिन्ता न कर मैं भी कम कलाकार नहीं हूं हां यदि वह पूछे कि हार किसने बनाया है तो ये कहना मेरे पास मेरे भतीजे की दुल्हन आई हुई है। उसने बनाया है।

बुढ़िया बोली अगर माया रानी ने कहा अपने भतीजे की दुल्हन को दिखाओ। तो मैं क्या करूंगी।

मंत्री ने कहा तुम कह देना ठीक है। जैसे कह रहा हूं वैसे करना सब ठीक रहेगा। बुढ़िया बोली तू मुझे छोड़कर चला तो नहीं जाएगा।

नहीं मां तुम्हें अकेली छोड़कर नहीं जाऊंगा। अगर कुछ दिन को जाना भी पड़ा तो तेरी सेवा में तेरी बहू को छोड़कर चला जाऊंगा। ये वादा रहा।

यह सुनकर बुढ़िया का दिल बल्लियों उछलने लगा। वह बोली बेटा बहू मिल जाए तो मेरी सब साध पूरी हो जाएगी।

हरिश्चन्द्र ने कहा बुरे दिन गए अब सब ठीक हो जाएगा। जैसा कहता हूं करती चलो। मंत्री पुत्र फूलों के हार गूंथने लगा। फूलों के रंग और साइज का पूरा ध्यान दे रहा था। बीच-बीच में मोती-पन्ना

छुपा-छुपाकर करीने से जड़ रहा था। बुढ़िया से बोला ध्यान रखना ये हार केवल माया रानी के हाथ में देना और किसी के हाथ न लगे।

अच्छा बुढ़िया चली गई। माया रानी ने देखते ही बुला लिया। मालिन माई हार लाओ। मालिन ने हार थमा दिया। माया रानी ने निहारा हार में गांठ लगाकर जहां सुमेरु वाला फूल लगा था उस फूल में कीमती हीरे की कनी चमक रही थी। माया रानी आश्चर्य से उस हार को देखने लगी। कुछ मोती और पन्ने भी टंके थे हार में। माया रानी सोच में पड़ गई ये हार बुढ़िया ने नहीं बनाए किसने बनाकर दिए।

खैर वह अपने कमरे की तरफ चल पड़ी और बोली मालिन माई इधर आना। मालिन समझ गई कि अब खैर नहीं पर माया रानी ने अकेले में बुलाया है। इससे कुछ राहत मिली। बुढ़िया सहमी-सी माया रानी जहां थी वहां गई। माया रानी बोली ये हार किसने बनाये हैं मुझे सच-सच बताओ नहीं तो तुम्हारी खैर नहीं।

मालिन हाथ जोड़कर खड़ी हो गई और बोली बिटिया क्षमा करें मैं झूठ नहीं बोलूंगी चाहे जान चली जाए। यह हार मैंने नहीं बनाए, परसों हमारे घर हमारे एक भतीजे की दुल्हन आई है। उसने कहा हार मैं बनाऊंगी। नये जमाने का हार आपको ईनाम मिलेगा। मैंने बहुत समझाया पर वह जिद्द कर बैठी। अब तो जो सजा होगी मैं भोगूंगी। बिटिया माफ कर दो आगे से ऐसा नहीं होगा। मैं उसको जल्दी ही घर से भेज दूंगी।

माया रानी ने कहा मैं कुछ कह थोड़े ही रही हूं मालिन माई। तुम डरो नहीं बस इतना करना कल जब आना तो उसको साथ लाना ठीक है।

बुढ़िया बोली कहूंगी मगर वह बहुत जिद्दी है।

माया रानी ने कहा मैं उससे मिलना चाहती हूं और यह चर्चा किसी से मत करना। मैं उसके लिए कुछ देती पर इसलिए नहीं दे रही हूं कि कल तो वह आएगी ही।

मालिन के पैर भारी हो रहे थे चला नहीं जा रहा था। पता नहीं क्या हो ? बेटा क्या आया आफत लेकर आया कल किसको लेकर आऊंगी। पर वह कहता है सब ठीक हो जाएगा तो ठीक कर लेगा। सोचती-विचारती बुढ़िया रुआंसी सी अपनी कोठरी में पहुंच गई।

हरिश्चन्द्र ने कहा मां क्या हुआ घबराई हुई क्यों है। बुढ़िया बोली जिसका डर था वही हुआ। उसने कहा है कि कल बहू को साथ लेकर आना मैं उसको उपहार दूंगी। अब बता कहां से लाऊं बहू।

मंत्री पुत्र ने कहा तुम चिन्ता न करो कल बहू के साथ चलना। मैंने इतने दिन भाड़ नहीं झोंकी है। बड़े-बड़े साधु-संतों का साथ किया है बहुत कुछ सीखा है। मां तुम चिन्ता न करो कल तुम्हारे साथ तुम्हारी बहू जाएगी। बुढ़िया बोली ठीक तू जाने तेरा काम जाने और अपने काम में लग गई।

दूसरे दिन सवेरे दोनों ने मिलकर फूल चुने और हरिशचन्द्र ने हार गूंथा नहाया-धोया और जलपान किया। बुढ़िया चलने के लिए तैयार हो गई तो हरिश्चन्द्र ने एक ओर जान्तर डंडे का हरा सिरा सर पर रखा और बोला बना दे मुझे सुंदरी। थोड़ी देर में वह एक इक्कीस वर्ष की सुंदरी में बदल गई और आकर बोली चलो मांजी बहू तैयार है। मालिन ने बहू की ओर देखा तो देखती रह गई। सुन्दर रूप उसी के अनुरूप साड़ी-ब्लाउज जेवर जितने पहने थे सब मैच करते हुए।

बुढ़िया बोली सचमुच बेटा तू तो जादू जानता है। चलो चलें।

दोनों राजमहल की ओर चल पड़े। राजमहल के अंदर घुसते ही जैसे ही माया रानी की नजर उन पर पड़ी उसने उनको अपने पास बुला लिया। पहली नजर में वह मालिन बहू से प्रभावित होकर बुढ़िया से बोली तुम जाओ। मैं अपना हार इनसे ले लूंगी और बहू से बोली आओ गुइयां हम तो आपका हार देखकर ही समझ गई थीं कि आप कलाकार हैं। कहां से सीखा।

मंत्री पुत्र ने कहा कि हम लोग माली हैं फूल बेचना हार बनाना हमारा पुश्तैनी पेशा है। मेरे मायके में मेरी भाभी बहुत अच्छा हार बनाती हैं। उनसे ही सीखा है। माया रानी ने कहा अब दो-चार दिन यहां रहना। मुझे अपनी सहेली समझो दोनों खूब बातें करेंगे।

बहू ने कहा ठीक है मांजी से बोल देना। माया रानी ने कहा वो सब ठीक है। अब दोनों सहेली बन गईं। बहू ने माया रानी के बाल वगैरह ठीक करके बढ़िया श्रृंगार कर दिया। पीछे जूड़े में एक छोटा हार लटका दिया। माया रानी ने दर्पण में देखा तो लजा-सी गई। बोली सहेली तुम तो हर काम में दक्ष हो। यह सब होते-होते शाम के बाद रात हो गई।

माया रानी ने कहा कहां सोया जाए सहेली ने कहा जहां मरजी पर मैं हमेशा खुले में सोई हूं। कमरे में सोने से एकाध दिन तो नींद आने में ही दिक्कत होगी फिर ठीक हो जाएगा। माया रानी ने कहा कोई बात नहीं हम खुले में सोयेंगे। जिससे तुम्हें परेशानी न हो कमरे के बाहर बिस्तर लगाने का हुक्म दासी को मायारानी ने दे दिया। भोजन आदि हो जाने पर दोनों सहेली एक ही बिस्तर पर लेटने चली गई। आपस में बातें हो रही हैं जो खत्म ही नहीं होती। रात के बारह बजे का घंटा बजा तो सहेली ने कहा रानी सो जाओ आप लोग बड़े आदमी हैं तकलीफ होगी।

माया रानी ने कहा मिथ्या कह रही हो। बड़ी तो आप हैं। बहू ने कहा मैं ठीक कह रही हूं। माया रानी ने कहा मेरे विचार से तो तुम बड़ी हो। बहू को विचार आया उसने खड़ाऊं को पलंग के नीचे रखा और हंसते हुए बोली चलो नाप लेती हूं। कद में भी आप मुझसे बड़ी हैं चाहे थोड़ा ही सही चलो नापते हैं। मायारानी खड़ी हो गई। बहू ने खड़ाऊं धीरे से सरकाकर उस पर चढ़ गई। माया रानी को कमर से कसकर पकड़ लिया और बोली सात समुद्र पार चलो।

खड़ाऊं ने एक पल भी नहीं लगाया और दोनों को ले उड़ चला। माया रानी समझ गई धोखा हुआ पर कर क्या सकती थी। खड़ाऊं समुद्र पार आकर उतर गया। मंत्री पुत्र अपने असली रूप में आ गया और काफी बात संक्षेप में माया रानी को बता दिया। फिर बोला मैं थोड़ा आराम कर लूं फिर आगे की सोचूंगा। अब अपने को कोई डर नहीं और वहीं रेत पर लेट गया। थका तो था ही उसे बहुत जल्दी नींद आ गई।

इधर माया रानी को अवसर मिल गया। वह खड़ी हुई खड़ाऊं से बोली जहां से आए थे वहां वापस चलो। खड़ाऊं वापस राजमहल पहुंच गया। माया रानी पुनः अपने बिस्तर पर सो गई। इधर सवेरा होने को हुआ तो मंत्री पुत्र की नींद खुली तो भौंचक्का रह गया। माया रानी और खड़ाऊं दोनों वहां नहीं थे। सोच में पड़ गया अब क्या करें। सूरज निकल आया था समुद्र के किनारे गरमी बढ़ रही थी। इतने में मंत्री पुत्र की निगाह एक बड़े कछुए की ओर गई जो समुद्र के किनारे थोड़े पानी में पड़ा बड़ी कातर दृष्टि से एक ओर देख रहा था।

मंत्री पुत्र को उसकी व्याकुलता कुछ समझ आई वह उसके पास गया बोला बहुत व्याकुल लग रहे हो। कछुआ बोला क्या करें मेरा बच्चा ठंडी रेत में वहां तक चला गया। अब छटपटा रहा है। धूप चढ़ रही है। रेत गरम हो रही है निश्चय ही वह यहां तक नहीं पहुंच पाएगा। रास्ते में ही जलकर मर जाएगा। मैं जाऊं तो मेरा भी जिन्दा रहना संभव नहीं। ऐसे मैं क्या करूं मंत्री पुत्र समझ गया तुरंत दौड़कर गया कछुए के बच्चे को लाकर बड़े कछुए के पास छोड़ दिया। बच्चे को फिर जीवन मिल गया।

धन्यवाद ! कछुए ने मंत्री पुत्र का आभार प्रकट किया तथा बोला। मेरे लायक कोई सेवा हो तो बताओ। मंत्री पुत्र ने कहा मुझे यह समुद्र पार करना है। पर युक्ति नहीं सूझ रही है। कछुए ने कहा कि आपका वजन बहुत अधिक है अगर दो-चार किलो होता तो मैं कुछ कर सकता था।

मंत्री पुत्र ने कहा कि वजन कम मैं कर लूंगा। आप देखिए उन्हें इस समय महावीर बजरंग बली

खूब याद आ रहे थे। बोले महाराज आओ एक बार समुद्र पार कराओ। डंडे का लाल सिरा सिर पर रखकर बोले बन जाऊं बंदर का बच्चा।

थोड़ी देर में वह छोटा-सा बंदर का बच्चा बन गया। कछुए ने कहा ठीक है अब तुम मेरी पीठ पर बैठो काम हो जाएगा। कछुए की पीठ पर मंत्री पुत्र बैठ गया। कछुए ने तैरना शुरू कर दिया। ये तो पता नहीं कितना समय लगा पर कछुए ने अपने कहे अनुसार समुद्र पार पहुंचा दिया। एक-दूसरे के सहयोग से कैसे दोनों का काम बन गया। तभी तो कहते हैं एक और एक ग्यारह होते हैं।

मंत्री पुत्र ने कछुए को धन्यवाद कहा नमस्ते हुई और दोनों अपने मार्ग पर चल पड़े। कछुआ समुद्र में मंत्री पुत्र राजमहल की ओर। अब मंत्री पुत्र डंडे की बदौलत एक बड़ा बंदर बन गया था और रास्ते में फल-फूल खाता चला जा रहा था। जाते-जाते वह उस शहर में पहुंच गया जहां राजमहल था। दिन में तो इधर-उधर घूमता रहा पर रात को वह राजमहल पर चक्कर काटने लगा। सुन्दर चांदनी रात दिन जैसा उजाला कर रही थी। ऐसे में उसने देखा जिस पलंग पर वह माया रानी के साथ सोया था उसी जगह उसी पलंग पर माया रानी प्रगाढ़ निद्रा में लीन है।

इधर-उधर देखकर वह बंदर नीचे आया डंडे का लाल सिरा छुआकर बोला बन जा बंदरिया। माया रानी बंदरिया बन गई। सवेरा होने पर सबने देखा बिस्तर पर बंदरिया लेटी है। बस यह खबर आग की तरह सारे महल में पहुंच गई कि माया रानी बंदरिया बन गई है। घर में शोक छा गया। राजा-रानी सब दुःखी हो गए। अब इससे शादी कौन करेगा। इतनी खूबसूरत थी किसी की नजर लग गई। राजवैद्य आए दवा शुरू हुई। पण्डित आए जंत्र- मंत्र पूजा-पाठ, ओझाई जो हो सकता था होने लगा। पर लाभ नहीं हो रहा था।

इधर हरिश्चन्द्र मालिन के पास रहकर सब हाल ले रहा था एक दिन सवेरे डंडे की मदद से पंडित बन गया और राजमहल के दरवाजे पर जाकर दरबान से बोला महाराज से जाकर कहो कि पंडितजी आए हैं बड़े विश्वास के साथ कह रहे हैं कि मैं मंत्र द्वारा सारे दोष पाप क्षमा करा दूंगा और माया रानी को पहले वाले रूप में ला दूंगा। तुम जाकर महाराज से कहो दर्शन दें, संतरी ने जाकर महाराज से निवेदन किया। महाराज पंडित जी आपसे मिलना चाहते हैं। कहते हैं कि अपनी तीर्थ यात्रा छोड़ बिटिया का कल्याण करने महाराज का सोया भाग्य जगाने आया हूं।

महाराज ने कहा उनको शीघ्र यहां लिवा लाओ। पंडित जी आए महाराज को नमस्कार किया और बोले महाराज आपसे अकेले में बात करना चाहता हूं।

महाराज ने कहा अच्छा और सभा समाप्त कर दी। राजा के साथ में चले मंत्री पुत्र ने कहा कि यह बिल्कुल ठीक हो जाएगी। लेकिन इनकी शादी जो पिछले जन्म में भी इनका पति था उसी से होगी। वो मैं बताऊंगा और वह कोई मामूली नहीं बहुत बड़े राज्य का युवराज है। मायारानी उसे जानते ही प्रसन्न हो जाएंगी।

इसके बाद कुछ जड़ी-बूटियां मेरे पास हैं कुछ मैं बताता हूं वो मंगवा दीजिए। जिस कमरे में माया रानी रहती सोती हैं। उसमें लेजाकर उन्हें उस कमरे में बंद कर दीजिए। सामान आने पर मैं उस कमरे में जाऊंगा। आप लोग दूर रहें अगर कोई कहना नहीं मानेगा तो वह भी बंदरिया हो सकता है। फिर मैं ठीक नहीं कर पाऊंगा। राजा साहब ने सारी बात मान लीं। सामान आ गया तो सब लेकर पंडित जी कमरे में चले गए। एक कोने में थोड़ा हवन किया और जाकर माया रानी के सिर पर डंडे का हरा सिरा लगाया बोला हो जाओ पहले जैसी।

माया रानी ने कहा ये क्या ?

मंत्री पुत्र ने कहा मेरी होने वाली भाभी। मेरी बात सुनो पहले ध्यान लगाकर मेरे दोस्त का हाल

देखो वह जीता है या नहीं। माया रानी ने कहा अभी तो जीता है पर मुझे वहां जल्दी पहुंचना है मेरे माता-पिता को बुलाओ।

मंत्री पुत्र ने दरवाजा खोल दिया और बोला महाराज आप और रानी साहिबा आकर जांच लें मैं बाहर आता हूं। महाराज बिटिया को देखकर खुशी से रुआंसे हो गए। माया रानी ने कहा पिताजी समय बहुत कम है। मुझे जहां मेरी तस्वीर रखी है वहां यथा शीघ्र पहुंचना है नहीं तो मेरा पति आपका होने वाला दामाद हाथ से निकल जाएगा। आप अपना इंतजाम जितना जल्दी हो सके कर सब परिवार को साथ में लेकर आना।

महाराज ने कहा जो उचित हो करो तुम ठीक हो गईं हमारी बड़ी इज्ज़त बच गई अब तुम लोग जाओ सवारी का प्रबंध कर देता हूं। माया रानी ने कहा पिताजी आप अपनी सवारी से आना हम लोग अपनी सवारी से जल्दी पहुंचेंगे।

चिन्ता न करो जो हो गया वो हो गया अब सब अच्छा ही होगा। कहकर एक लकड़ी का तख्ता मंगाकर दोनों उसके छोर पर एक एक खड़ाऊं बंधवा दिया और दोनों माया रानी व मंत्री पुत्र दोनों उसी खड़ाऊं पर चढ़ गए और बोले युवराज के पास चलो। खड़ाऊं उड़ चला सब देखते रह गए जादू का खेल।

राजा साहब भी तुरंत लाव-लश्कर विवाह का सारा सामान दहेज का सामान तैयार कर वहां चलने का इंतजाम करने लगे।

उधर माया रानी ने देखा कि प्रेमी धूल-मिट्टी में लदा है शरीर सूख गया है। फिर भी कभी-कभी मुंह से माया रानी जैसा शब्द धीरे-धीरे निकल रहा है। फ्रेम हटा दिया गया माया रानी उस तस्वीर की जगह बैठ गई और धीरे-धीरे युवराज के शरीर पर हाथ फेरने लगी। जब वह माया रानी कहता तो यह बोलती हां मैं बोल तो रही हूं। देखो आंखें खोलो मैं आ गई हूं। दुःख दूर हो गए। जरा हिम्मत करो तो मेरे हाथ से संतरे का जूस पियो, पानी पियो, जैसे-जैसे माया रानी के बोल उनके कान में पड़ते उनमें रक्त संचार बढ़ जाता।

कुछ देर में युवराज माया रानी साफ-साफ कहने लगे। सभी खुश हो रहे थे। दो घड़ी में ही युवराज ने अपने दोनों नेत्र खोल दिए। माया रानी ने कहा बहुत भूखे हो थोड़ा संतरे का रस पियो। माया रानी ने गिलास मुंह से लगा दिया। एकाध घूंट पी गए। इधर महाराज के आदमी भी पहुंचना शुरू हो गए। झाड़ू-बुहार सफाई वाले, तम्बू वाले सब बुला लिए गए। सब काम तेजी से हो रहा था।

इतने में मंत्री पुत्र ने अपने घोड़े के हिनहिनाने की आवाज सुनी। देखा तो उनका घोड़ा पास खड़ा था मंत्री पुत्र ने कहा तुम्हें कैसे पता चला हम लोग यहां आ गए घोड़ा अपना मुंह ऊपर-नीचे कर मानो समझा रहा था कि मैं यहां आता-जाता रहता था मंत्री ने कहा युवराज के घोड़े को भी बुलाओ। वो भी यहीं-कहीं होगा। यह सुनकर वह जोर से हिनहिनाने लगा और साथी को ढूंढने लगा। कुछ देर बाद दूर से युवराज के घोड़े के हिनहिनाने की आवाज आई कह रहा था मैं आ रहा हूं। थोड़ी देर में वह भी आ गया।

युवराज भी काफी स्वस्थ हो गए। जंगल में मंगल हो रहा था। बिना बसंत के पेड़ फल-फूल रहे थे क्योंकि वहीं माया रानी के विवाह का प्रोग्राम बन रहा था। तब तक समाचार मिलने पर सेठजी दल-बल से आ गए और बोले महाराज शादी यहां नहीं होगी। मेरे विचार से युवराज के पिता को सूचित कर दिया जाए। माया रानी की शादी हमारे घर पर होगी। हमारे लिए जैसे श्रीदेवी वैसे माया रानी। महाराज मेरी यही इच्छा है आगे आप हमारे राजा हैं।

राजा साहब ने कहा ठीक है जैसे आपकी इच्छा। अपने मंत्री से बोले वहां राज-काज चलता रहेगा। कम से कम पंद्रह बीस दिन लगेंगे। मंत्री ने कहा महाराज सब इंतजाम हो जाएगा। इस समय हमारा

कोई शत्रु नहीं है। सबको निमंत्रण भेजिए। बिटिया का विवाह सेठ के यहां ही होना लिखा है। शीघ्र युवराज के राज्य में यह शुभ समाचार भेजिए तुरंत सब काम कराओ।

सेठ ने अपने दामाद से कहा इतना बड़ा काम कैसे कर लिया। मंत्री पुत्र ने हाथ जोड़कर महात्मा को प्रणाम किया और बोला महात्मा जी की कृपा से और खड़ाऊं और डंडे के सहयोग से यह सारा कार्य संपूर्ण हुआ। खड़ाऊं ने जैसे अपना नाम सुना दोनों ऊपर उछले मंत्री पुत्र, युवराज माया रानी के चारों ओर घूमकर प्रदक्षिणा की और चल पड़े। डंडा भी उछला मंत्री पुत्र के सामने जाकर नमस्ते किया और सबकी प्रदक्षिणा करके महात्मा जी के पास लौट गया। सब देखते रहे मंत्री पुत्र ने बताया महात्मा जी ने कहा था कि इनके सामने जब कहोगे कि इनके सहयोग से सब काम संपूर्ण हो गया तो ये मेरे पास आ जाएंगे।

अब सब सेठ के घर चलने की तैयारी में लग गए। माया रानी उनकी माताजी मालिन और अन्य खास महिलाओं के लिए पालकी का इंतजाम हुआ। बाकी सब लोग भी सेठ जी के घर की ओर चल पड़े। मंत्री पुत्र और युवराज अपने-अपने घोड़े पर थे। वह सब सेठ के घर की ओर चल पड़े।

नगर के द्वार पर भारी भीड़ थी सारे परिजन सारे नगर वासी सब नगर के द्वार पर इन सबके आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। जैसे ही आसमान में धूल उड़ती दिखी लोगों ने कहा लगता है आ गए। अनुमान सत्य था कुछ सवार पहुंचे और घुड़सवार पहुंचे। फिर माया रानी की पालकी भी पहुंची। नाच-गाने होने लगे। पटाखे छूटने लगे। श्री देवी तुरंत जाकर माया रानी से मिली और बोली पालकी वाले सब पालकी लेकर घर चलो। बाकी सब पालकी भी यहीं आ जाएं।

उधर दोनों घुड़सवार युवराज के गृह नगर में पहुंच गए तो क्या देखते हैं कि सारा राज्य बेहाल हो रहा है और लोग अपना काम बेमन से कर रहे हैं। किसी के चेहरे पर रौनक नहीं है। एक घुड़सवार ने एक अधेड़ व्यक्ति से पूछा कि महाराज कीर्ति सिंह का राज्य यही है। इस राज्य के लोग इतने दुखी क्यों हैं?

उस आदमी ने जवाब दिया आप कहां से आए हैं। यह राज्य महाराज कीर्ति सिंह का ही है। हमारा राजा बहुत धार्मिक है, न्यायप्रिय है पता नहीं क्या ईश्वर को पसन्द नहीं आया कि वर्षों हो गए हमारे महाराज के इकलौते पुत्र अपने मित्र मंत्री पुत्र के साथ आखेट को गए थे और आज तक नहीं आए। उसके बाद पता चला कि युवराज की हत्या कर दी गई। मंत्री पुत्र ने आत्महत्या कर ली। यह समाचार मिलने से यह दशा यहां के राजा और प्रजा की हो गई है।

घुड़सवार ने कहा आप अशुभ और असत्य बोल रहे हैं। अगर यह बात है तो आप कृपा करके जितना शीघ्र हो मुझे राजा के पास लेकर चलो मैं युवराज और मंत्री पुत्र का समाचार लेकर आया हूं वे सकुशल हैं सानन्द हैं। यह बात जितनी शीघ्र हो सके महाराज को मालूम होनी चाहिए।

यह बात सुनकर तो वह बहुत प्रसन्न हुआ और जो भी मिलता उसको रोककर कहता। भैया सुना ये युवराज की खबर लेकर आए हैं। उन्हीं के पास से महाराज के पास दोनों दूत राजमहल की ओर जा रहे हैं। जो यह समाचार सुनता वह भी उधर हो लेता।

घुड़सवारों ने राजमहल के सामने जाकर घोड़ा खड़ा किया और अपनी जेब से अपना परिचय-पत्र निकाला और द्वारपाल से बोला भाई अंदर जाकर महाराज को मेरा परिचय देना और जैसी आज्ञा हो करना। द्वारपाल को पता लग चुका था कि ये लोग युवराज का समाचार लेकर आए हैं। वह बहुत तेज चाल से राज्य की सभागार की तरफ चला और सभागार में जहां महाराज बैठे थे उन्हें प्रणाम किया। जब तक मंत्री उसके हाथ से परिचय-पत्र लेकर देख चुके थे बोले महाराज बहुत हर्ष की बात है हमारे दोनों बच्चे सकुशल हैं उन्हीं का समाचार है।

महाराज द्वारपाल से बोले जाओ उनके घोड़ों और उनके रहने का प्रबंध कर दो। हम सभा की आज सारी कार्यवाही स्थगित करते हैं। युवराज का समाचार आया है आप सब सभी जान लें राज्य में खुशियां मनाई जाएं। यह सब राजाज्ञा हो रही थी।

महाराज को आनन्दातिरेक में राजा की रीति का ध्यान ही नहीं रहा। महाराज दूत को छाती से लगाने लगे। महाराज समेत सब सभा इस समय आनन्द के सागर में डुबकी लगा रहे थे। कि दूत ने कहा महाराज निवेदन है कि हमारे महाराज की कन्या माया रानी जिसको पाने के लिए सैकड़ों राजकुमारों ने अपने जीवन गंवा दिए के साथ आपके सुपुत्र युवराज के विवाह का प्रस्ताव महाराज की ओर से लाया हूं। शेष आपकी पहली बहू का समाचार तो आपको ज्ञात ही है। इससे आप जितना शीघ्र वहां पहुंचेंगे उतनी जल्दी यह शुभ कार्य संपन्न होगा।

ठीक है महाराज ने कहा और पत्रिका लेकर मंत्री को देते हुए बोले इस पत्र को आप ऊंची आवाज में सभी के बीच में पढ़ो ताकि सब लोग जान लें महल के अंदर रनिवास तक खबर पहुंचा दी गई। जैसे सूखते धान को पानी मिल जाए और उसमें हरियाली आने लग जाए। सभी के चेहरों पर गई हुई रौनक लौट आई। महल में मंगलवाद्य बजने लगे। मंगलगान होने लगे। महिलाएं, युवा, बच्चे खुशी में नाचने लगे। उधर महाराज की आज्ञा हो गई। बारात की तैयारी होने लगी। घर में गौरी, गणेश आदि देवताओं का पूजन राजा-रानी ने व्रत रखकर किया और शुभ मुहूर्त में बारात ने कूच किया।

दो दिन की मंजिल तय करके बारात सेठजी के नगर के पास पहुंच गई। अगवानी द्वार चार आदि सब रीति अनुसार करके बारात को जनवास दे दिया गया। दूल्हा बने युवराज के क्या कहने। इस दूल्हे राजा की छवि के सामने कोई क्या टिकता। महाराज भी खुले हाथ से दान-पुण्य कर रहे थे। माया रानी भी अपना प्रभाव दिखा रही थी। वहां जो भी व्यंजन बन रहे थे। उन सबमें अनूठा स्वाद था।

विवाह हो गया तीसरे दिन विदाई हुई। माया रानी के पिता ने अपने समधी से हाथ जोड़कर कहा कि आप ही इसके पिता हैं इकलौती बेटी होने के कारण ही यह लाड़-प्यार में पली है। इसके कहने पर ही वह फ्रेम हमने वहां रखवाया था। इसका कहना था कि आपको मेरे लिए वर नहीं ढूंढना पड़ेगा। मेरा वर मुझे लिवा जाने स्वयं आएगा और वैसा ही हुआ। इन दोनों का संबंध पुराना है आप धन्य है हमें आपके समधी होने का सौभाग्य मिला। हम भी धन्य हुए इस तरह बार-बार मिलकर दोनों समधी विदा हुए।

फिर सेठजी मंत्री से मिलें उनकी लड़की श्रीदेवी भी विदा हो रही थी। बुढ़िया मालिन इस समय श्रीदेवी की सासू के रूप में उसके साथ थी। उन्हें वापस राजा जी के साथ नहीं जाने दिया गया। माया रानी और श्रीदेवी दोनों उसे पूरा सम्मान दे रही थीं। महाराज ने माया रानी को भरपूर दहेज दिया।

रथ, घोड़े, हाथी, दास-दासियां घर का सामन सभी कुछ था। युवराज के पिताजी उसे सुरक्षित ले जाने की व्यवस्था स्वयं देख रहे थे। सेठजी अपनी पुत्री की विदाई से बहुत दुखी थे उनका सारा परिवार रो-रोकर हलकान था सभी बहुत विह्वल थे। सेठजी भी अपनी सामर्थ्य से ज्यादा दहेज दे रहे थे। ऐसे में राजगुरु ने परामर्श दिया कि जितना जल्दी हो सके विदा करा लो नहीं तो यहां आंसुओं का वेग रुकने वाला नहीं।

सेठजी ने कहा ठीक है गुरुजी क्या करें हमारे घर में अंधेरा हो जाएगा। मैं बेटों से ज्यादा इसकी बात मानता था। खैर विदाई हो गई महाराज और मंत्री दोनों बराबर अपने बेटे-बहू को निहार रहे थे।

घर आने पर जो लोक रीति होती चली आई है। दोनों घरों में हुई। थोड़े दिन बाद युवराज को राजतिलक कर दिया गया और मंत्री पुत्र को ही उनका मंत्री बना दिया गया। दोनों मित्र मिलकर राज्य चलाने लगे।

शेर ने कहा यह है मैत्री। ऐसा दोस्त होना चाहिए तुम्हारे दोस्त ने जो किया है उसका फल वह भोगेगा। आप जाइए मैं आपको नहीं मारूंगा। मैंने आपको क्षमा किया। मैं भी पिछले जन्म का राजकुमार हूं। जो पाप किया था वही भोग रहा हूं। आने वाली पूर्णमासी को मैं प्राण त्यागूंगा। वह लड़की तो प्राण त्याग चुकी होगी। वह युवराज के काम आने वाली नहीं। अभी एक जन्म फिर हम पति-पत्नी होंगे। आगे की राम जाने अब आप जानें अब आप जा सकते हैं। राम-राम कहकर शेर चुप हो गया। मंत्री पुत्र ने शेर को महाराज कहकर प्रणाम किया और घोड़ा ले वहां से चला गया। कहानी कहने और सुनने वालों पर भगवान की कृपा रहे। जैसे युवराज और मंत्री पुत्र को तमाम कष्ट उठाने के बाद राज ताज और सुख मिला। वैसे ही सबको मिले।

# नक्षत्र बली

एक राजा थे उनके सात बेटे थे। राजा बड़े प्रतापी सज्जन और सुघड़ थे। अपनी प्रजा को अपने पुत्र की तरह प्यार करते थे। राजा के राज्य में धन-अन्न यानी सुख-समृद्धि सब थी। प्रजा प्रसन्न हो अपने महाराज और देश की उन्नति के लिए तन-मन से खूब परिश्रम करती थी। इस राज्य में अन्याय अनाचार भ्रष्टाचार नहीं था। न्याय का साम्राज्य था सबके दिन बढ़िया बीत रहे थे। महाराज के सात बेटे थे एक दिन उनके मन में विचार आया कि अगर कहीं ईश्वर ने एक पिता को सात बेटियां दी होतीं तो मैं अपने सातों बेटों को वहीं ब्याह देता। कितना अच्छा लगता सात बहनें एक जगह। सातों भाई एक साथ यह बात मन में आने पर महाराज ने अपने नाई, पंडित और एक विश्वासी बुद्धिमान को बुलाकर आज्ञा दी कि आप लोग अभी या जितनी जल्दी हो सके तैयार होकर मेरी इच्छा पूरी करने का प्रयास करें।

जब आपको पता लगे कि फलां जगह कोई राजा या मेरे योग्य व्यक्ति के सात बेटियां हैं तो मुझे सूचित करना। फिर आगे का कार्य हो जाएगा।

उन्होंने कहा जो आज्ञा महाराज और राजोचित अभिवादन कर वहां से चले गए। राजा का हुक्म आम लोग लड़की के लिए वर ढूंढते हैं पर ये वर के लिए दुल्हन ढूंढ रहे थे। गांव-गांव शहर-शहर पता लगाते। वह तीनों जने एक पगडंडी पर चल रहे थे। दोनों ओर खेत थे उन्होंने देखा कि बहुत बड़ा बरगद का पेड़ है। उसके नीचे तीन-चार लोग बैठे आपस में बतिया रहे हैं।

पंडित जी ने कहा अच्छी छाया है चलो हम भी वहीं बैठकर सुस्ता लेते हैं और तीनों जने वहां चले गए। जहां पहले से बैठे थे वे लोग आपस में बातें कर रहे थे। एक कह रहा था कि राजा लोग भी सनकी होते हैं बोलो ये भी कोई शर्त है। यह सुन पंडित जी से न रहा गया। बोले क्षमा करें कृपया ये बताएं क्या शर्त है।

वे बोले भाई राजकाज है क्या बताएं। पंडितजी ने कहा कि बात यह है कि हम लोग भी राजा की आज्ञा से घूम रहे हैं तो उन्होंने कहा कि बताता हूं। इसमें छुपाने के लिए कुछ नहीं है हमारे महाराज के सात राजकुमारियां हैं। वो चाहते हैं कि अगर योग्य घर मिले, जिस एक ही राजा के सात राजकुमार हों तो वहीं एक ही घर में पुत्रियों की शादी कर दें। पंडितजी बोले अब ये मान लो कि यह विवाह की बात विधाता जन्म के साथ ही तय कर देते हैं। देखो कैसे बात बनी सब प्रसन्न हो गए। उधर के लोग पंडितजी का मुंह देखने लगे। पंडित जी बोले दोनों की समस्या का समाधान हो गया। हमारे महाराज के सात बेटे हैं उनके हुक्म से हम यही ढूंढ रहे हैं कि किसी राजा के सात पुत्रियां हों। धन्य हो बरगद देवता यहां तो मेरा और आप दोनों का काम बन गया। अपना पता-ठिकाना हमको दीजिए और हमारा पता लीजिए और अपने महाराज से कहिए वे शुभ मुहूर्त में हमारे यहां पधारें महाराज का स्वागत है। पूरा विश्वास है ये संबंध अवश्य हो जाएगा। दोनों ओर से काम हो जाने की खुशी में आपस में हाथ मिलाए। नमस्कार हुआ और खुशी-खुशी अपने-अपने राजा को ये शुभ समाचार देने के लिए चले गए।

कुछ दिन बाद एक दिन लड़की पक्ष के राजा ने अपने मंत्री पुरोहित आदि के साथ आकर विचार

कराया। पंडित ने बताया शादी बढ़िया बन रही है। और दोनों ओर से संबंध मान लिया गया। विवाह की तिथि भी तय हो गई। दोनों ओर विवाह की तैयारी होने लगी। निमंत्रण पत्र अपने-अपने छपने लगे। दुल्हा और दुल्हनों कि पसन्द के विवाह में पहनने वाले कपड़े तैयार होने लगे। ऐसे समय बीता और बरात जाने का दिन आ गया। घराती-बराती सब तैयार हो गए। तब सबसे छोटे राजकुमार जिसका नाम नक्षत्र बली था ने कहा कि मैं ब्याहने नहीं जाऊंगा। तो उसके पिता ने कहा बेटा क्या विवाह नहीं करोगे।

नक्षत्र बली ने कहा पिताजी आपकी आज्ञा नहीं टालूंगा। पर मेरा वहां जाना नहीं होगा। आप मेरी कटार और पटका ले जाना उसी से फेरे हो जाएंगे। कुछ बात है जिद्द न करें। समय आने पर बारात विदा होने लगी। नक्षत्र बली ने कहा पिताजी लम्बी यात्रा है एक बात का ध्यान रखना रास्ते में जब पड़ाव डालना तो खुले में डालना छाया में पड़ाव न डालना। इसका पूरा ध्यान रहे।

बारात चली गई बड़े ही सुचारू ढंग से सब कार्य सम्पन्न हो गया। बहुत सारा दहेज मिला। बहुएं विदा हो गईं। सातों बहुओं के साथ बारात की वापसी हो गई। पहला पड़ाव भी आराम से निकल गया। दूसरे दिन शाम होने पर पड़ाव की जगह देखने लगे एक बड़े पीपल के पेड़ के नीचे देखा तो वहां कुछ सफाई हुई थी एक ओर आग भी जली थी। ऐसे लग रहा था जैसे वहां किसी ने पड़ाव डाला था और अभी गया है।

महाराज ने कहा बस ये जगह ठीक है यहीं डेरा डालो। रात ही काटनी है कट जाएगी। मंत्री ने कहा महाराज क्षमा करें नक्षत्र बली ने बोला था कि छाया में न ठहरना।

महाराज बोले कहने दो उसके कहने से चले तो कोई काम न हो। तम्बू लग गए। बहुएं उसमें चली गईं। सब इंतजाम हो गया। खा-पीकर सब विश्राम करने लगे। रात को दूल्हों के मामाजी उठे तो देखा चारों ओर घुप्प अंधेरा है वे हाथ से टटोलते हुए चले तो सिर खटाक लोहे की दीवार से लग। उनका सिर चकरा गया। उन्होंने बगल वाले को उठाया और दीवार पकड़कर चारों ओर घूम आए पर कहीं खिड़की दरवाजा नहीं मिला। इतनें में आवाजें सुनकर और लोग भी जग गए सब घबरा गए। अपने-अपने इष्टदेव को सुमिरने लगे। कुछ लोग हनुमान चालीसा पढ़ने लगे।

महाराज कहने लगे कि मैंने जान-बूझकर कोई गलती नहीं कि फिर भी अनजाने से अगर मुझसे किसी का कोई अपराध हुआ है तो क्षमा करें और बताएं वह कैसे प्रसन्न होंगे। वह मेरे बंधन खोल दे मैं इस समय अपने को बहुत निरुपाय पा रहा हूं। मुझको इससे छूटने का उपाय बताएं। तब ऊपर से आवाज आई महाराज जो मैं मांगूंगा दोगे। महाराज ने कहा अवश्य दूंगा। मांगो क्या मांगते हो?

फिर ऊपर से आवाज आई महाराज तीन बार बोलो दूंगा...दूंगा...दूंगा : राजा घबराए थे बोले दूंगा...दूंगा...दूंगा। ऊपर से दैत्य बोला मुझे नक्षत्र बली चाहिए।

महाराज ने कहा मगर वह तो मेरे साथ नहीं है। उसने कहा है मुझे पता है। मगर तुम बोलो उसको मैंने तुम्हें दिया।

राजा बोले मैंने नक्षत्र बली को दिया बस इतना कहना था कि आवरण हट गया। अरे दिन चढ़ आया सब जल्दी-जल्दी चलने की तैयारी करने लगे और वहां से चल पड़े।

केवल दो मील ही आ पाए थे कि देखा नक्षत्र बली अपने सफेद घोड़े पर सवार चला आ रहा है। राजा ने कहा क्यों बेटा नक्षत्र कैसे आए हो?

नक्षत्र बली ने कहा कहना नहीं माने। अब हम तो जा रहे हैं जीवित रहे तो फिर मिलेंगे आप लोग जाओ।

नक्षत्र बली उस पीपल के पेड़ के नीचे खड़े होकर बोले मैं नक्षत्र बली बोल रहा हूं। आज्ञा दो क्या करूं। दैत्य बोला यहां सात समुद्र पार एक दैत्य राजकुमारी है उसके लिए कितने वीरों ने अपनी जान

गंवाई है उसी को लाने के लिए आपको याद किया है पता जितना मैं जानता हूं बताया। नक्षत्र बली ने पता समझ लिया।

वहां से चल पड़े इधर बारात वापस आ गई। औरों को तो ठीक था पर छोटी राजकुमारी सब जानकर बहुत दुखी हुई उसने कहा हे त्रिपुरारी जब तुमने मुझे नक्षत्र बली जैसा पति दिया तो ये विरह की ज्वाला में क्यूं डाल दिया मेरा उनका तो जन्म-जन्म का साथ है प्रभु मिलना तो है पर यह परीक्षा है इसका निवारण करें। मैं भवानी की शरण में हूं जब तक आएंगे नहीं तप करूंगी जप करूंगी ताकि वे मुझे भूलें नहीं।

उधर नक्षत्र बली अपना घोड़ा दौड़ाए समुद्र की ओर चला जा रहा है। बहुत दूर जाने पर एक इलाका आया जहां पर कई वर्ष से वर्षा नहीं हुई। बिना पानी के पेड़ फसल सब सूख गए थे। लोग अन्न-जल के बिना मर रहे थे। नक्षत्र बली ने देखा एक जगह खेत में कई लोग इकट्ठे हैं। नक्षत्र बली घोड़े से उतरे उनके पास गए बोले भाई क्या कर रहे हो। उसमें से एक ने कहा जी चूहे का बिल खोद रहे हैं। सूखा पड़ा है इन चूहों ने अपने बिल में थोड़ा बहुत जरूर अन्न इकट्ठा किया होगा। राजकुमार ने कुछ रुपये उन लोगों को दिए लो आपस में बांट लो पर बिल मत खोदना। उन्होंने कहा नहीं खोदेंगे इसमें क्या निकलना था। आप दयालु हैं बड़े आदमी हैं आपको बहुत-बहुत धन्यवाद !

राजकुमार आगे चले तो देखा तमाम चूहे स्वागत में राह रोके खड़े हैं। नक्षत्र बली ने कहा जाने दो चूहों के अगुआ ने कहा आपने हमारी जान बचाई है अगर कभी हमारे लायक कोई सेवा हो तो मुझे जहां रहो वहां से जोर-जोर से पुकारना हे मूषक मित्रों ! आपसे काम है जल्दी मिलो। बस हम लोग पहुंच जाएंगे हमें छोटा समझ भूल न जाना। नक्षत्र बली ने कहा आप हमारे मित्र हुए मैं कभी आप लोगों को नहीं भूलूंगा। हम फिर मिलेंगे धन्यवाद ! कहकर राजकुमार आगे बढ़ चले। नक्षत्र बली चले जा रहे हैं। आगे और अधिक सूखा पड़ा है राजकुमार ने देखा एक जगह लोग इकट्ठे हैं तो घोड़े से उतर वहां गए। पूछने पर उन लोगों ने बताया कि हम लोग अन्न-जल के बिना बेहाल हैं ये बिल चीटियों के हैं। इन्होंने अपने लिए कुछ अन्न गेहूं सरसों के दाने जरूर रखे होंगे। उन्हें ही हम खोदकर निकालेंगे। राजकुमार ने कहा भई ये लो कुछ धन आपस में बांट लेना पर शर्त यह है कि चीटियों को तंग न करना। उन लोगों ने अभार माना। धन्यवाद दिया आप दयालु हैं बड़े आदमी हैं। हमें इसमें क्या मिलना था।

नक्षत्र बली आगे बढ़ चले देखा तो रास्ते में चींटियों ने राह रोक रखी है नक्षत्र बली ने कहा भाई जाने दो अगुवा चींटे ने कहा हम आपका आभार व्यक्त कर रहे हैं आपने मेरी जान बचाई है अगर आपको कहीं मेरी सहायता की आवश्यकता जान पड़े तो जोर से आवाज लगाना चींटे मित्रों मदद करो। जल्दी आओ तो वहीं फौरन आ जाएंगे और आपकी पूरी मदद करेंगे। नक्षत्र बली ने कहा धन्यवाद आप सब मेरे मित्र हैं हम परस्पर मित्र हैं दुःख में हम अवश्य आपको याद करेंगे। नमस्कार और आगे बढ़ चले। आगे रास्ता जंगल से जा रहा था नक्षत्र बली ने देखा कि एक पुरुष कंधे पर लाठी रखे आराम से चले जा रहा है राजकुमार ने आगे बढ़कर घोड़ा रोका। अरे भाई आप कौन हैं जो जंगल में घूम रहे हैं अपना नाम बताओ। उसने कहा मेरा नाम लट्ठमार है।

क्या मतलब, मतलब यह है कि मैं जिस चीज पर प्रहार करूंगा वह चाहे लोहा हो चाहे लकड़ी दो टूक हो जाएगा। अब आप अपना परिचय दें। नक्षत्र बली ने कहा भई मैं दैत्य राजकुमारी को पाने के लिए जा रहा हूं अच्छा आप नक्षत्र बली हैं मैं भी आपके साथ चलूं। नक्षत्र बली ने कहा एक से दो भले और आगे बढ़े तो एक जने और दिखे थके से लग रहे थे। उनसे चला नहीं जा रहा था।

राजकुमार ने कहा लट्ठमार जरा इनसे मिलो। लट्ठमार ने पूछा भाई अपना परिचय दो।

उसने कहा मेरा नाम कम खुराक है यानि मुझे एक बार में जितना परोस दिया जाता है उसी से मेरा भोजन हो जाता है। चाहे थोड़ा हो या ज्यादा। लट्ठमार ने उसे एक छोटे से पत्ते पर कुछ खाने को

दिया। वह जरा सा ही खाकर तरोताजा हो गया। लट्ठमार ने सब हाल बताया कम खुराक ने कहा मैं भी चलूं।

तभी नक्षत्र बली ने कहा एक से दो भले दो से तीन भले और वह आगे को चल दिए। थोड़ी दूर जाने पर देखा एक आदमी बहुत धीरे-धीरे चल रहा है। नक्षत्र बली ने कहा कम खुराक जरा देखना कौन है?

कम खुराक ने उस आदमी को संबोधित करके कहा भाई ठहरो कैसे जंगल में अकेले घूम रहे हो।

उस आदमी ने कहा भैया मेरा नाम कम देखा है।

क्या मतलब कम खुराक ने पूछा।

कम देखा बोला मतलब यह है कि मुझे नजदीक का कम दिखता है और जितना अधिक दूर हो बढ़िया दिखता है और अपना पूरा परिचय दिया। फिर कम देखा ने कहा मुझे भी अपने साथ ले चलो।

नक्षत्र बली ने कहा दो से तीन भले और तीन से चार भले और चारों जने आगे बढ़ने लगे। उन्होंने देखा एक आदमी बहुत तेज चाल से आगे बढ़े जा रहा है। नक्षत्र बली बोला मैं उसको रोकता हूं और कम देखा आप उससे बात करें।

नक्षत्र बली ने घोड़ा आगे बढ़ाया और आवाज दी। भाई रुको सुनो।

आवाज सुनकर वह राहगीर रुक गया और बोला क्या बात है।

तब कम देखा ने कहा भाई इस जंगल में आपसे भेंट हुई हम खुश हैं। आप अपना परिचय दें।

उसने कहा आप लोग कई हैं पहले आप अपना परिचय दें।

कम देखा ने कहा प्रश्न पहले मैंने किया है आप पहले अपना परिचय दें।

उसने कहा मेरा नाम कम चलू है।

क्या मतलब ?

मतलब यह है कि मुझे एक कोस जाने में एक दिन और सौ कोस जाने में पंद्रह मिनट लगेंगे।

अब आप अपना परिचय दें कम देखा ने सारी बात बताई।

उसने कहा ठीक है कहो तो मैं भी साथ चलूं।

नक्षत्र बली ने कहा ठीक है चार से पांच भले।

अब राजकुमार नक्षत्र बली, कम खुराक, लट्ठमार, कम चालू, कम देखा पांचों जने आगे बढ़े तो देखते हैं। एक आदमी धनुष बाण चढ़ाए एक पेड़ के नीचे खड़ा है।

राजकुमार ने कहा कम चलू से जरा देखना यह कौन हैं इनसे मिलो। कम चलू ने जाकर जोहार की भाई साहब राम-राम, ये बाण किसलिए चढ़ाए हो जरा अपना परिचय देना।

उसने धनुष से बाण उतारा हल्का मुस्कराया और बोला, राम-राम करके पूछा आप सब लोग इस जंगल में कैसे घूम रहे हैं।

कम चलू ने अपना तथा सबका परिचय दिया और बोला अब हमें भी अपना परिचय दें।

उसने कहा मेरा नाम तीरंदाज है। मेरा निशाना दूर का पक्का है नजदीक का उतना ठीक नहीं बैठता। तीरंदाज भी बोला अगर आपकी इच्छा हो तो मैं भी आपके साथ चलूं।

नक्षत्र बली ने कहा चलो भाई अब हम घोड़े समेत सात हो गए। सात शुभ होता है। सातों वहां से समुद्र की ओर चल पड़े। समुद्र के किनारे बैठकर विचार होने लगा अब क्या किया जाए। सिंधु को कैसे पार किया जाए। अवश्य ही राम की याद आई होगी। क्योंकि ऐसी कठिनाई कभी उनके सामने भी आई थी।

तभी नक्षत्र बली को याद आया चूहों को याद किया जाए तथा उनको बुलाया जाए। सब जोर-जोर से पुकारने लगे। हे मूषक मित्रों ! जल्दी आओ हमारी सहायता करो।

देखते ही देखते ही चारों ओर से चूहे दौड़े चले आ रहे हैं झुंड के झुंड।

उनके अगुवा ने कहा राजकुमार काम बताओ।

नक्षत्र बली ने कहा समुद्र पार जाना है कैसे जाएं।

चूहों के अगुवा ने कहा हम समुद्र के नीचे इतनी बढ़िया सुरंग बना देंगे कि आप घोड़े समेत निकल जाएंगे मगर सुरंग बनाने में एक सप्ताह लगेगा।

काम आरंभ हो गया पता नहीं कितने चूहों ने काम किया और कैसे किया। पर तीन दिन के विलंब यानी दस दिन में उन्होंने सुरंग तैयार करके कहा कि आप जाएं।

नक्षत्र बली ने मूषकों को कोटि-कोटि धन्यवाद कहा और आगे को प्रस्थान किया। समुद्र पार करने के बाद देखा कि जगह-जगह हड्डियों के कंकाल के ढेर दिखे। आगे चलने पर देखा एक चौकोर चबूतरे पर एक बड़ा-सा नगाड़ा है तथा उसके बगल में दो चोब रखी हैं। चबूतरे पर लिखा है कि दैत्य राजकुमारी से विवाह के इच्छुक लोग ही इस नगाड़े को बजाएं।

नक्षत्र बली आगे बढ़े उन्होंने दोनों चोब (दो लकड़ी के डंडे) उठा लिए और लगे नगाड़ा बजाने।

किड़ किड़ धिन्ना-धिन्ना किड़ किड़ धिन्न धिन्न की आवाज जिसने सुनी उसी के कान खड़े हो गए। सब दैत्यराज को सूचना देने दौड़ पड़े। दैत्यराज ने अपने मंत्री को आदेश दिया कि उन्हें आदर साहित यहां लाया जाए।

मंत्री अपने साथ दो-तीन साथियों को लेकर वहां गए और पूछा किसने नगाड़े पर थाप मारी।

राजकुमार ने कहा मैंने।

मंत्री ने कहा चलो दैत्यराज के पास।

राजकुमार अपने घोड़े पर सवार हो गए बाकी जो राजकुमार के साथ थे। वह भी सब दैत्यराज की सभागार में पहुंचे।

दैत्यराज ने कहा आप सोच लीजिए हमारी कुछ शर्तें हैं। उन्हें पूरी करना होगा अगर शर्तें पूरी न कर पाए तो यहां से कोई जिन्दा नहीं बचेगा। दैत्यराज ने कहा मेरी नजर में इस अभियान में आप सातों शामिल हैं। सातों जने मिलकर शर्त पूरी कर सकते हैं पर शर्त पूरी न कर सकने की अवस्था में सातों को एक साथ सजा मिलेगी।

स्वीकार है सातों ने कहा उन सातों में घोड़ा भी शामिल था।

दैत्यराज ने आदेश दिया कि इनको आदरपूर्वक ठहरा दो पूरी व्यवस्था कर दो आज यह हमारे मेहमान हैं। शर्तें कल बताएंगे जो आज्ञा कहकर मंत्री ने अतिथि गृह में पहुंचाकर सारी व्यवस्था करवा दी।

दूसरे दिन दोपहर के भोजन के बाद पहली शर्त सुनाई गई। शर्त यह थी सवा सेर सरसों खेत में बो देंगे। लोहिया पटेला खेत में फेर देंगे उसमें से सरसों के दाने बीनने हैं सवेरे तोलेंगे अगर चार दाने भी कम निकले तो किसी को नहीं छोड़ेंगे। सभी को मार देंगे।

सरसों बोई गई अब सब बैठे विचारने लगे कि अब क्या किया जाए। तीरंदाज बोला कि चीटियां की बात हो रही थी। चीटियां सरसों को सूंघ लेती हैं। उन्हें बुलाओ।

नक्षत्र बली ने कहा निशाना तुम्हारा सटीक लगता है और सातों मिलकर पुकारने लगे। चीटा मित्रों ! जल्दी आओ हमारी सहायता करो।

उन्होंने देखा चारों ओर से बड़े-बड़े चींटे और छोटी-छोटी चींटियां चली आ रही हैं।

एक बड़े चींटे ने कहा राजकुमार सेवा बताओ।

नक्षत्र बली ने शर्त बताई।

चींटे ने कहा एक चादर बिछा दो हम लोग सवेरे चार बजे के पहले काम करके चले जाएंगे।

चादर बिछाकर सब निश्चिंत होकर सो गए। सवेरे जब सरसों तौली गई तो सरसों पूरी थी।

अब दूसरी शर्त उन्हें बताई गई जिस लोहिया पटेला से खेत लेवल किया था उसी से भोजन बनाना है। शर्त है लकड़ी की कुल्हाड़ी से उस लोहे के पटेला के एक ही वार में दो टुकड़े कर दिए जाएं और लकड़ी की कुल्हाड़ी हम देंगे।

राजकुमार ने कहा मंगाओ लकड़ी की कुल्हाड़ी और लोहे का पटेला।

लकड़ी की कुल्हाड़ी और लोहे का पटेला आ गया।

राजकुमार ने लट्ठमार को इशारा किया। लट्ठमार ने वो लकड़ी की कुल्हाड़ी को उठाकर जो प्रहार किया पटेला दो टुकड़े हो गया। सब ओर खुशी की लहर दौड़ गई।

तीसरी शर्त यह थी एक मन चावल दस सेर दाल से खिचड़ी बनेगी और आप लोगों ने खानी है। खाना बचा तो सबके सिर काट दिए जाएंगे। खिचड़ी बनी और बुलावा आ गया।

कम खुराक ने कहा सारी खिचड़ी एक बर्तन में रख दी जाए हम लोग खा लेंगे। ऐसा ही किया गया।

कम खुराक ने कहा जो जितना खा सके खा ले बाद में कुछ नहीं मिलेगा। पांचों ने भोजन किया। बाद में कम खुराक पालथी मारकर बैठा और बोला पानी नहीं चाहिए बाद में पिऊंगा और सारी खिचड़ी खा ली कुछ भी नहीं बचा। यह शर्त भी पूरी हो गई।

दैत्यराज ने कहा सारी शर्तें पूरी हो गईं। अब चौथी शर्त यह है कि विवाह होगा विवाह में हमारे यहां मेंहदी लगती है। आपको मेंहदी लानी होगी अगर सवेरे चार बजे के पहले मेंहदी न आई तो सबका वध करा दिया जाएगा।

राजकुमार कम देखा से बोला देखो यहां मेंहदी का पेड़ कहां है।

कम देखू ने देखा और बोला पेड़ तो है पर बहुत दूर है।

कम चलू बोला मुझे दिशा बताओ वह पेड़ किधर है।

कम देखू बोला पच्चीस योजन पर है।

कम चलू चल पड़ा इतने में रात के ढाई बज गए।

राजकुमार ने कहा कम देखू से कहो देखो भाई रात के ढाई बज गए और कम चलू अभी तक नहीं आया।

कम देखू ने देखा और बोला वह पहुंच तो गया है। पर इस समय वहीं मेंहदी के पेड़ के पास दीवार से लगकर सो रहा है। मेंहदी उसके हाथ में है।

राजकुमार ने कहा अब क्या करें।

तीरंदाज ने कहा तू मुझे दिशा बता मैं अभी जगाता हूं।

कम देखू ने दिशा बताई, तभी तीरंदाज ने बिना फर का एक तीर धनुष पर चढ़ाया और कम देखा के बताए निशान पर छोड़ दिया। कम देखा का तीर कम चलू की पीठ में लगा और वह जग गया और बड़ी तेजी से चला आ रहा है कम देखा ने कहा। उसके आने के बाद साढ़े तीन बजे मेंहदी रनिवास में पहुंचा दी गई। महिलाएं गीत गाने लगीं। सब शर्तें पूरी हो गईं।

नक्षत्र बली ने दैत्य राज को सारी बात बताई।

दैत्यराज ने कहा मेरी बेटी ने मुझे बताया था कि मेरी शादी नक्षत्र बली से होगी और कोई ये शर्तें पूरी नहीं कर पाएगा। उस दैत्य को तो मैंने भगाया था। उसकी जान नहीं ली थी। शादी धूमधाम से हुई बहुत सारा दहेज दैत्यराज ने दिया तथा आशीर्वाद दिया कि आप लोग सुख से रहें।

दैत्यराज ने नक्षत्र बली के साथियों से कहा आप सब लोग यहां रहें। आप सबको यहां सम्मान

मिलेगा।

लेकिन उन्होंने कहा कि अब हम लोग राजकुमार के साथ ही रहेंगे। दैत्यराज के परिवार ने भारी मन से उन्हें विदा किया।

वह सब उसी पीपल के पेड़ के नीचे पहुंचे और नक्षत्र बली उस दैत्य से बोला यह रही दैत्य राजकुमारी।

दैत्य राजकुमार को देखकर खुश हो गया और बोला मैं तो आपका गुलाम हूं राजकुमार। यह दैत्य राजकुमारी तो आपकी ही है। मैंने तो आप दोनों को मिलाया है। दैत्य से विदा लेकर नक्षत्र बली अपने घर पहुंचा।

नक्षत्र बली को देखकर वहां उत्सव होने लगा। छोटी राजकुमारी जो वियोग में सूखकर कांटा हो गई थी। उसने खुद दैत्य राजकुमारी को डोली से उतारा उसकी आरती उतारी।

महाराज ने कहा अब हमें राज्य नहीं करना आप सातों भाई समझ लें। बड़े भाई ने कहा योग्यता के आधार पर हम नक्षत्र बली को राजा मानेंगे और मैं अपने हाथ से तिलक करूंगा मुकुट पहनाऊंगा। सबकी सहमति से नक्षत्र बली का राजतिलक हो गया।

महाराज-महारानी वन जाना चाहते थे पर उनके पुत्रों-बहुओं ने उनके पैर पकड़ लिए और रोक लिया कि अभी हमें मत छोड़िएगा और राज्य चलाना सिखाइए।

कहानी के पात्रों के जिस तरह भगवान ने सारे कार्य सिद्ध किए उसी तरह कहानी कहने और सुनने वालों के भी सब कार्य सिद्ध हों।

# मित्र द्रोहे नमोस्तुते

महराज भोज की धर्मपत्नी रानी का देहान्त बहुत थोड़ी आयु में हो गया। महराज भोज पर तो जैसे वज्रपात हो गया। मेरी सलाहकार सुख दुख में साथ निभाने का दम भरने वाली रानी मुझे और अपने एकमात्र प्रिय पुत्र को छोड़कर दिवंगत हो गईं। हा! मैं कुछ न कर सका। राजा हताश निराश इसी चिंता में व्याकुल रहने लगे। मंत्रियों बुद्धिमानों में चर्चा होने लगी। ऐसा कब तक चलेगा? राजा से बात करें, उन्हें समझाएं पर कौन, कौन किसकी हिम्मत है। महराज से पूछे इस हालत में। हाँ पं. कालीदास की बात सुनते हैं। उनका बहुत आदर करते हैं। बुद्धिजीवियों और मंत्रियों ने पं. कालीदास से मिल कर महराज को प्रेरित करने को कहा कि वह राजकाज देखें और प्रजा के प्रति राजा का जो दायित्व है, उसका निर्वाह करें। पं. कालीदास ने राज्य के हित की यह बात मान ली और महराज भोज से मिलने को तैयार हो गए। वह राजा भोज से मिलने राजमहल में गए, द्वारपाल ने विनती की। अन्नदाता, कालीदास जी आपका दर्शन चाहते हैं। द्वार पर प्रतिक्षारत हैं, क्या आज्ञा है। महराज भोज ने एक उसांस लिया तो अब पं. जी को भी महल में प्रवेश की आज्ञा चाहिए। जाओ और उन्हें सादर बोलो भोज उनकी प्रतिक्षा कर रहा है। पं. जी आए प्रणाम आशीष हुआ। पं. जी बोले, राजन! मैं आपके सचिवों और बुद्धिजीवियों द्वारा नगर की प्रजा की ओर से आपके दर्शनों के लिए आया हूँ। आपके राज्य सभा में न बैठने से प्रजा न्याय विहीन है, आपके दर्शन न पाने से दुखी है। महराज मैं आपकी पीड़ा को भलीभाँति समझ रहा हूँ। मेरी राय में आपको पुनर्विवाह कर लेना चाहिए। हमारी नजर में कुछ ऐसे माता पिता है, जो अपनी सुयोग्य कन्या आपको देने को तैयार हैं। बस आप का इशारा चाहिए। भोज ने कहा पं. जी मेरे पुत्र का क्या होगा, जिसके लिए मैंने रानी को बचन दिया है। पं. जी ने कहा, वह मुझ पर छोड़िए, हम भावी रानी से संतुष्ट होंगे तभी आप से विनती करेंगे। अच्छा पं. जी मुझे आपकी बुद्धिमत्ता पर पूरा भरोसा है।

कालीदास आदि विद्वानों सभासदों ने मिल एक भानुमति नाम की लड़की से सम्बन्ध पक्का करा दिया। भानुमति ने कहा कि युवराज मेरा पुत्र है, मुझसे पुत्र होगा तो भी ये मेरा ज्येष्ठ पुत्र है। वैसे इस अकेली संतान से ही संतुष्ट रहूँगी। विवाह हो गया, राजा और प्रजा ने मिल कर राज्य भर में उत्सव मनाया। राजपरिवार में पुनः आनन्द उल्लास दिखने लगा। समय बीतने लगा, पर राजा भोज जस के तस। वह अब भी राजकाज से विरक्त रहते और राज्य सभा में नहीं आते और पहले की तरह ही वे रनिवास अन्तःपुर में ही रहते। फिर बैठक हुई, विचार हुआ, सबकी निगाहें पंडित जी की ओर ही थीं। पंडित जी के सिवा किसी की हिम्मत नहीं है, केवल आप ही से आशा है। आप महराज से मंत्रणा करिए और महराज को अपने कर्तव्य का बोध कराइए। आपके प्रयास से धारा नगरी को जो अनाथ लग रही है, अवश्य ही सनाथ हो जाएगी। पंडित जी ने कहा, ठीक है मैं महराज से मिलूंगा, बाद में आप सबको सूचित करूंगा कितना सफल रहा हूँ। कालीदास जी राजमहल गए उन्होंने सेवक से संदेश भिजवाया, मैं महराज से विचार विनिमय कक्ष में राज्य के बारे में बात करना चाहता हूँ। सेवक के निवेदन पर महराज ने कहा उन्हें यहीं ले आओ, एकांत हो जाएगा। पंडित जी आए, अभिवादन के पश्चात पंडित जी ने बड़ी नम्रता अधीरता

से विनती की। राजन्! इस समय जैसा चल रहा है, अगर ऐसा ही चलता रहा तो राज्य के अन्दर और राज्य के बाहर गलत संदेश जायगा इसलिए आप को अब अपना राजकाज पहले जैसा चलाने की नितान्त आवश्यकता है। भोज ने कहा, पंडित जी मैं क्या करूँ? यह सच है कि मैं भानुमति पर आसक्त हूँ पर दूसरी एक बात और है। वो क्या है? मैं अपने वचन से बंध गया हूँ। मैं आपका पूर्ववत बहुत सम्मान करता हूँ पर मुझे मेरे वाक्य से निकलने का रास्ता नहीं मिल रहा है। हुआ ये कि एक दिन विनोद विनोद में मेरे मुंह से निकला ये शब्द कि भानुमती मैं तुम्हें बिना देखे एक क्षण भी नहीं रहना चाहता, बस यह एक वचन ही मेरी प्रतिज्ञा बन गया। अब आप समझ गए न। इसका कोई समाधान मिल जाए तो बात बन जाए। कुछ देर दोनों मौन रहे, विचार के बाद पंडित कालीदास ने कहा, राजन् समाधान तो है पर महराज आपकी स्वीकृति मिले तो। भोज ने कहा, बोलो पंडित जी। कालीदास नरे कहा कि हम महरानी जी की एक प्रतिमा बनवाएंगे और उसे राज्य सचिवों की एक कमेटी पास करेगी जिसका अध्यक्ष मैं रहूंगा। यह कमेटी उस प्रतिमा को पास करेगी। पास होने पर ही उस पर सही होने की मुहर लगेगी। उपरांत वह आपके आसन के सामने लग जाएगी। इस तरह राजकाज भी चलेगा और आपकी प्रतिज्ञा भी अक्षुण्ण रहेगी। राजा ने विचार किया और कुछ समय उपरांत स्वीकृति दे दी। कालीदास जी बोले, धन्य हो महराज।

इसके विज्ञापन निकाले गए, देश विदेश में प्रचारित किया गया कि प्रतिमा पास होने पर कलाकार को पारिश्रमिक देकर संतुष्ट किया जाएगा। दूर-दूर के चुने हुए कलाकार आने लगे। अपना हुनर और कहाँ कहाँ पुरस्कृत हो चुके हैं, बताने लगे। अन्त में एक उच्च कोटि के कलाकार का चयन हो गया। शर्त रही प्रतिमा का चयन होने पर ही पारितोषिक मिलेगा क्योंकि महराज भोज स्वयं कला पारखी हैं इसलिए निश्चित ही धन सम्मान से कलाकार को संतुष्ट करेंगे। रानी का चित्र या जो कुछ भी वह चाहता था, पंडित जी ने वह करवा दिया। वह समय देकर चला गया कि इतने दिन बाद प्रतिमा के साथ महराज के दर्शन करूंगा।

वह चला गया। वादे के अनुसार वह प्रतिमा ले कर आया। वाह! जिसने देखा उसी ने कलाकार की प्रतिभा को सराहा। आज राज्यसभा में विशेष जन सैलाब था। कमेटी के सदस्य सभी प्रतिमा की प्रतीक्षा कर रहे थे। राजा भी प्रशंसकों में सम्मिलित थे पर ये क्या, जब पंडित जी की पारी आई तो उन्होंने कहा त्रुटि है। महराज ने कहा क्या त्रुटि है? पर कलाकार ने कहा मैं प्रतिमा बनाकर पंडित जी को संतुष्ट करूंगा और वह चला गया। दूसरी बार फिर वह प्रतिमा बनाकर लाया और सबके बाद पं. कालीदास ने त्रुटि कह कर लौटा दिया। कलाकार नेकहा मैं तीसरी बार प्रयास करता हूँ, कह कर वापस चला गया। कुछ दिन बाद यह निश्चय कर फिर आया और अपनी प्रतिभा भानुमति की प्रतिमा समिति के सन्मुख रखा पर मन में यह सोच रहा था कि इस बार पंडित जी ने, त्रुटि है, कहा तो मैं कह दूँगा बस जी मेरी बस मैं नहीं बना पाऊँगा। इसलिए वह सतर्क देख रहा था। पंडित जी क्या कहते हैं और जैसे ही कालीदास ने त्रुटि है, कहा वह विफर गया और अपने हाथ में लिए हाथ झटकते हुए बोला, महराज मैंने अपना पूरा ज्ञान लगा दिया है, मुझे क्षमा करें। पंडित जी का दायाँ हाथ उठा, अरे सुन नहीं महराज मैं नहीं कर पाऊँगा। तू सुन तो सही, त्रुटि दूर हो गई, अपना पारिश्रमिक ले महाराज से। तू सफल है, सन वह प्रसन्न हो गया। उसकी आंखों में सफलता के आँसू थे। जोर से बोला, राज पंडित की जय, महराज भोज की कीर्ति अमर रहे। कालीदास ने कहा राजन इसको धन दीजिए, अब इस प्रतिमा में कोई त्रुटि नहीं है। राजा ने कहा कि क्या कमी थी जो आपने देखी और किसी ने नहीं। कालीदास ने कहा, राजन महरानी भानुमती की बांई जंघा पर काला तिल है, वह प्रतिमा में नहीं था। जब इसने झल्लाकर हाथ झटका तो ब्रश से एक बूंद काले रंग का ठीक जगह पर पड़ गया और मैंने उसे त्रुटिहीन

कह दिया।

राजा विचार करते रनिवास में गए और रानी भानुमती से कहा कि तुम पं. कालीदास को कब से जानती हो। रानी ने कहा जब से मैं आई हूँ तब से यहाँ आने पर ही मैंने पिता समान पंडित जी का नाम सुना है। क्या बात है? राजा ने कुछ नहीं कहा, पर भोज के मन में शक के बीज अंकुरित हो चुके थे। उन्होंने पंडित जी को ठिकाने लगाने को जल्लादों को बुलाया और आदेश दिया कि कालीदास का चुपचाप वध करके उनकी आँखें मुझे दिखाओ पर यह बात खुल गई। जब और पंडितों ने जाना तो उन्होंने कहा कि अगर कालीदास को कुछ हो गया तो समझो हम भी नहीं बचेंगे। इसलिए पंडित जी को बचाना आवश्यक है। ऐसा कहके उन्होंने वधिकों को समझाया कि राजा कालीदास को बहुत मानते हैं, यदि वह तुमसे कहेंगे कालीदास को लाओ तो कहा से लाओगे। इसलिए ऐसा करो पंडित जी को हमें दे दो हम धन भी देंगे और वचन भी कि आज के बाद पंडित जी को न कोई देखेगा न कोई जानेगा। वह लोग पंडितों की बात मान गए।

**बुरे कर्म बुरे फल :** युवराज शिकार खेलने या घूमने-फिरने के लिए अपने साथी मित्रों के साथ निकला पर संयोग देखिए कि वह आगे जाकर अपने साथियों से अलग हो गया। राजकुमार को मतिभ्रम हो गया। वह ऐसे ही आगे बढ़ता गया, जाते-जाते वह अपनी राज्य की सीमा पर पहुँच गया। राज्य की सीमा को एक नदी बाँटती थी, नदी के इस पार धारा नगरी और दूसरी ओर दूसरे राजा का शासन था। नदी में पानी थोड़ा था, राजकुमार वह नदी पार कर गया। नदी के उस पार जंगल था और शाम भी हो गई थी। धीरें-धीरें रात हो गई। राजकुमार को समझ नहीं आ रहा था, क्या करे। इतने में एक ओर शेर की दहाड़ सुनाई दी। शेर इसी ओर आ रहा था। राजकुमार सोच में पड़ गया, फिर कुछ सोच कर वह समीप में एक पेड़ पर चढ़ गया। इतने में शेर भी आकर उसी पेड़ के नीचे बैठ गया। रात का पहला पहर बीतते एक रीछ भी आया। कुछ देर तक तो उसने इधर-उधर देखा, फिर जिस पेड़ पर राजकुमार बैठा था, उसी पर चढ़ने लगा। राजकुमार को काटो तो खून नहीं, पर क्या करता? रीछ राजकुमार के पास आकर बोला, ओ मित्र डरो नहीं। तुम तो हमारे मित्र हुए, मैं आपको कोई हानि नहीं पहुँचाऊँगा। तुम निश्चिन्त रहो, रात काफी बीत चुकी है, हमें सोना चाहिए। देखो ये मोटी डाल है, इस पर हम दोनों पारी-पारी से सोयेंगे, ठीक। राजकुमार बोले, ठीक। रीछ ने कहा तो आप सो जाओ, मैं जागूँगा और आपको गिरने नहीं दूँगा। राजकुमार उस डाल पर लेट गया, शंकित था नींद नहीं आई। दो घड़ी बीतने पर रीछ ने कहा, अब मेरी पारी है, आप उठो। राजकुमार उठ गया और उसकी जगह रीछ लेट गया, उसे जल्दी नींद आ गई। इधर शेर ने कहा, मनुष्य। युवराज बोले, जी। शेर ने कहा, एक बता बताऊँ। रीछ रात को शिकार नहीं करता और मैं दिन में छुप कर रहता हूँ। इसलिए यह समझ लो कि सूरज निकलने पर यह तुम्हारा शिकार करेगा और मेरी सलाह मानो इस समय यह नींद में है, मामूली धक्के से ही नीचे आ जाएगा और आपकी जान बच जाएगी।

राजकुमार को शेर की सलाह ठीक लगी। उसने अपना दाँया हाथ हटाया, बाँयें हाथ से जरा-सा धक्का दिया और रीछ धड़ाम से नीचे आ गिरा। पर यह क्या? उसको कोई चोट नहीं लगी और वह कुछ देर तक बालों से मिट्टी झाड़ कर फिर पेड़ पर चढ़ गया और राजकुमार से बोला, डरो नहीं। आपको मित्र कहा है इसलिए मित्र मित्र से कपट नहीं करते। सबेरा हो गया, शेर उठा और चला गया। रीछ बोला मित्र उतरो। राजकुमार और रीछ दोनों नीचे आ गए। रीछ ने कहा, मित्र चलो मैं तुम्हें तुम्हारे राज्य तक पहुँचा देता हूँ। दोनों नदी के इस पार आ गए, राजकुमार ने मित्र का आभार व्यक्त किया। रीछ ने कहा, मित्र जो कुछ हुआ भूल जाओ। मेरे मन में आपके प्रति स्नेह ही है, परन्तु एक बात समझ लेना कि जो कर्म हम करते हैं उसका फल हमें मिलता है। रीछ वापस चला गया। इधर राजकुमार को सब

कुछ विस्मृत हो गया। केवल चार अक्षर ही बोलने लगा। वह अपनी औरतों के सामने हथेली की चार अँगुलियां नचाता और स, से, मी, रा, ससेमीरा कहता।

इधर राजमहल में युवराज की खोज शुरू हुई, कुछ दिन नहीं मिलने पर राज्य भर में डुग्गी पिटवाई गई कि जो राजकुमार को लेकर आएगा, पुरस्कृत किया जाएगा। इधर कुछ गाँव वालों ने देखा तो कुछ ने पहचाना कि लगता है ये जो पागल है, यही युवराज है और वह लोग उनको लेकर महराज के पास लाए। यहां सब लोग बहुत दुखी थे। रानी भानुमति दुख के कारण ठीक से भोजन नहीं कर रहीं थीं। कहतीं, मेरा बेटा पता नहीं कहा किस हाल में है? भोज के दुख की कौन कहे, राजकाज सब बन्द। अब राजकुमार के आने से कुछ शांति मिली पर दूसरा कष्ट अब उनका दुख नहीं देखा जाता। इतना अज्ञान है कि न खाने की इच्छा, न सोने की। केवल ससेमीरा का गान करता है। महराज ने राजबैद्य से उपचार कराया। पण्डितों से महामृत्युंजय का जप कराया पर कोई लाभ नहीं हुआ। हार कर महराज ने राज्य के पण्डितों को बुलाया और उनसे बोले, पंडित जी राज्य ने आपको सम्मान दिया, पैसा, आदर दिया, इसलिए राज्य पर विपत्ति न आए अगर आए तो विद्वान उसका निदान बताएं। इस समय राजा पर भी विपत्ति आई है, राजवंश ही खतरे में है। ऐसे में आप अपने दायित्व का निर्वाह करें, नहीं तो आप जानते हैं जो हाल पं. कालीदास का हुआ है, आप सबका भी वही हाल होगा। पण्डितों ने कहा, महराज थोड़ा समय दें, हो सकता है आपका पुण्य उदय हो जाय और युवराज ठीक हो जांय। हमारे प्राण और कीर्ति भी बचे अन्यथा विनष्ट हो जायगा। पंडित लोग विचार कर पं. कालीदास की शरण में गए, बोले- पंडित जी आपको तो हमने बचा लिया, आज आप हमें बचाइए। पंडित जी ने सब सुना, गुना और बोले, सब ठीक हो जाएगा। मुझे वहां चलना पड़ेगा, कैसे चलूँ, यह विचार का विषय है। आप महराज से कहो, एक ब्राह्मण परिवार में नई बहू आई है उसका कहना है राजकुमार ठीक हो जायेंगे पर मुझे वहां जाना पड़ेगा। पर मैं तो परदे में रहती हूँ, अगर परदे का प्रबन्ध यहां से लेकर राजमहल तक हो जाय तो मैं अपने राजा के कल्याण के लिए चलूँगी। पंडितों ने महराज को सारी बात बताई, राजा बहुत प्रसन्न हुए। बोले, जैसे वह चाहेगी वैसा ही होगा, उसे मेरी ओर से पूरा सम्मान, आदर मिलेगा, वह राज्य की बहू है। जहां पंडित जी हुये थे, वहां तक कनातें लगाकर परकोटा बनाया गया। राज्य के कहार पालकी भेजी गयी, उस पर बैठ कर पंडित जी आए। इधर एक कमरे में कुछ सामग्री पंडित जी द्वारा लिखाई गई थी। धूप दीप नैवेद्य वह रखवाया गया था। पंडित जी कमरे में गए, गणेश वन्दना सरस्वती वन्दन पूजन किए और बोले दरवाजे के दाहिनी ओर राजा की चौकी रख दी जाए, बांई ओर युवराज बैठें। जो मैं बोलूंगी बड़े ध्यान से सुनेंगे, नहीं सुनने पर उसका फल नहीं मिलेगा। पूर्ण शांति से राजा और युवराज यथास्थान बैठे। पंडित जी बोले-

(1) *संसार सागरे घोरे, वाचा सार महीपते।*
*वाचा विचलिते येन, तेन शक्ति हारितः।।*

राजकुमार अब से, मीरा कहने लगे।

(2) *सेत बन्द समुद्रस्य, गंगा सागर संगमः।*
*ब्रह्म हत्या मुच्यते काशी, मित्र द्रोहे नमोस्तुते।।*

युवराज अब मीरा मीरा कहने लगे।

(3) *मित्र द्रोहे कृतघनस्य, ये नराः विश्वासघातकाः।*
*ते नराः नर्के यान्ति, यावत चन्द्र दिवाकराः।।*

राजकुमार अब केवल रा मात्र कहने लगे।

(4) *राजन राज पुत्रस्य, यदि कल्याण वांक्षसि।*
*दै दानम च दाताभ्यां, देवतानां ब्राह्मणं गुरुम्।।*

राजकुमार चुप हो गए। महराज ने कहा पुत्र अब कैसे हो? जी पिता जी, ठीक हूं और राजकुमार ने घर से निकलने से लेकर आज तक की सारी बीती आदि से अन्त तक सुना दी। अब महराज ने प्रश्न किया पुत्री :

प्रश्न- *गृहे वसति कौमारी अढव्यं नैव गच्छसि।*
*ऋक्षः व्याघ्र मनुष्यानां वच्यते जानामि सुन्दरी।*

उत्तर- *गुरु विप्र प्रसादानां जिह्वां अग्रे सरस्वती।*
*तेन तांपि जानेषु भानुमती तिलं यथा।।*

अरे महराज तत्काल उठे बहू नहीं राज पं. श्रेष्ठ और अपना हीरा जटित मुकुट उतारा, पंडित जी के चरणों में रख दिया और कहा, मैं पापी हूं आपके रहते राज्य का भार नहीं उठा पाऊंगा। कृपया राज्य संभालिए। पंडित जी हड़बड़ाए, राजन क्या हो गया? राजा ने कहा, पंडित जी मैं तो आप से क्षमा मांगने योग्य भी नहीं रहा। पंडित जी मुस्कुराए, राजन ये जो कुछ हुआ है वह होना ही था और जो होना होता है, वह होता ही है। इसी को होनी कहते हैं। आप पूर्ववत अपनी प्रजा पालिए, मैं बस यही चाहता हूं कि जो स्नेह मुझे आप से मिलता था, मिलता रहे। मैं ब्राह्मण हूं मुझे सदैव संतुष्ट रहना चाहिए और मैं संतुष्ट हूं। धारा नगरी के लिए मंगल कामना शुभ कामना। राज्य प्रजापालक राजन आशीर्वाद।

# सोना परी रूप परी

बहुत दिनन के बात भै, यक राजकुमार अपने महल से घोड़ा प सवार होइके सिकार का निकरा। वहिकै घोड़ी खुब सरपट चली औ उ जंगल मा जाय के पहुंचा। सिकार खेलत-खेलत जब संझा होइगै तब राजकुमार के घोड़ी पियासी होइगै, राजकुमार बगल की नदी म घोड़ी का पानी पियावै लाग। पानी पियावत बेरिया राजकुमार चौंकि परा। उ देखिस कि पानी मसे यक सोनापरी औ यक रूपा परी आपन सोनहुले अउ रूपहुले बार फैलाये नहात रहीं। यह देखि के राजकुमार ठग जस ठाढ़ होइगे। सोचै लागि ई परी कतनी सुन्दरि है। इनके साथे हमार बियाह होइ जातै तौ कतना नीक रहा। अब वै यक-यक बार तूरि लिहिन अउ अपने महल का चलि दिहिन, महल मा पहुंचि के यक अंधेरी कोठरी मा मुंहभरवा गिरि परें। भोजन की बेरिया ढुंढ़ना परा। नौकर चाकर ढूढै लाग। यक नौकरानी देखिस कि राजकुमार अंधेरी कोठरी मॉ औधे परे है वह राजमहल मा जाय के रानी से सब बात बताइस। रानी पूछिन का बात है? काहे मन मलीन किहे पहुड़े हैं? जो कोउ तुमका कुछ कहिस होय, वहिकै मूड़ कटाय लेई। राजकुमार उठि के बैठि गयें अउ पगिया से यक रूपे कइ यक सोने कइ बार देखाइन अउ कहिन कि ई बार वाली परिन के साथ बियाह करब नहीं तो बनबास लइ लियब। रानी कहिन ई कउनउ बात है? यही खातिर अतना हठ किहे परे हौ? राजकुमार कहिन हमका तौ सोनापरी औ रूपापरी मिलै का चाही। रानी कहिन तुमका वहै परी मिले।

रानी कहि तउ दिहिन, मुला उनके मन मा बड़ी चिन्ता व्यापि गै। रानी पूरे राज मा डुग्गी पिटुवाय दिहिन, चारिउ आरिया सिपाही दौराय दिहिन ओ कहवाय दिहिन कि राज मा जतनी कुंवारी बिटेवा होयँ सब राजमहल मा हाजिर होयँ आपन-आपन मूड़ उघारई। दुसरे दिन राजा के राजमहल मा राज भर की बिटेवा आपन-आपन मूड़ अघारि के निकसी। राजकुमार झरोखा मा बइठ के देखत रहै। आखिर मा राजकुमार हिरासे होइके उठि परे। जतनी बिटेवा आई रहैं उनमा सोन रूप बार वाली कौनउ न रहै।

ब राजा रानी बहुतै दुखी भये। अतने मा राजा अचरज से देखिन कि बगैचा मा फउहारा के लगे केवल फूल के पास दुइ सोने के बारन वाली बेटिवा बैठी हैं। अब रानी खुसी के मारे हल्ला मचावै लागी। दौरो दौरौ रूपा परी सोनापरी मिलि गई। राजकुमार मारे खुसी के बेहोस होइ के गिरि परे राजा आय के देखिन तौ राजकुमार के मुंह पर पानी छिरका गवा और राजकुमार जब होस मा आये तौ राजा कहिन ई तौ परी अहीं, राजकुमारी न अहीं। इहमा हमार सबकै कौनउ बस नहीं। राजकुमार कहिन कुछौ होय, हम तौ इनहिन से बियाह करब, नहीं तौ बन का चले जाब। राजा बहुत मानइन, नौकर चाकर बहुत मनौआ किहिन, रानी हाथ जोरि के बिनती किहिन कि ई परी से बियाह न करौ नहीं तो बाद मा पछितइहौ, परी मनइन के लगे नहीं रहती मुला राजकुमार टस्स से मस्स न भये। मरता का न करता। बियाहे क तयारी होय लाग, मंडप सजावा गवा, नौबत बाजै लाग।

जब केवल के फूल मा बइठी सोनापरी औ रूपापरी का लेवावै खातिर नौकर चाकर चले अउ जइसन उनके हाथ लगाइन तइसन दूनौ के आंखिन से मोती झरै लाव अउ उन मोतिन से यक बिरवा ठाढ़ होइ

गवा। बाढ़त उ बिरवा आकास मा लागि गा। सोनापरी रूपापरी बही पर बैठी रहै। राजमहल के सब जने हाथ जोरि के मनावै लाग। उतरौ सोनापरी नीचे उतरौ। लगन कइ बेरिया आयगै। मुला मोती के बिरवा न झुके औ दूनौ परी उपर से बौलै लागीं हम राजा के घर मा कइसे रहबै, हमार तउ घर आकास मा है। अब घर भर परिन क बलावै लागि औ परी उपरै उपर उड़त चली गई। अतने मा बड़े जोर से बादर गरजा, मोती कइ बिरवा फाटि गा, मोती जमीन पर बिथरि गई अउ सोनापरी रूपापरी धरती मा समाय गईं।

# सीत बसन्त

यक राजा रहय, यक रानी रहय। उनके दुइ लरिका रहय। एकु केर नाम रहय सीत और दुसरे क्यार बसन्त। राजा-रानी दून्हौ बहुत दयावान औ प्रजा क्यार ख्याल राखत रहय। प्रजौ उनकेर बहुत मान-सम्मान करत रहय।

एकु बार केरि बात हय। रानी महल के झरोखे पर बइठी रहय औ महल के बगीचे केरि सोभा निरखती रहयं। तबहिं उनकेर नजर सामने पेड़ पर पड़ी, जहिमा एकु चिरैय्या केर जोड़ा रहत रहय। वही घोंसला मा अण्डौ धरैं रहयं। चिरैय्या उइ अण्डन का सेवत रहय। अब तो रानी रोज वहि घोंसला का दृ्याखैं। एकु दिन जइसहैं चिरैय्या घोंसला ते उड़ी, एकु गुलेल से पत्थर मारि के कउनौ चिरैय्या का घायल कइ दीन्हेसि। चिरैय्या तुरतै जमीन पर गिरी, औ वहिके प्रान पखेरू उड़िगे। रानी यहु देखि कै बहुतै दुखी होइ गय।

दुसरे दिन रानी अनमने मन ते झरोखे पर बइठी रहंय तो देखती का हयं कि चिरवा के साथै एकु दूसर चिरैय्या वहि घोंसला मा बैठि हय। थोरी देर बादि वह चिरैय्या उइ अण्डन का पेड़ ते नीचे गिरा दीन्हेसि, जेहि ते अण्डा फूटि के नष्ट होइगे। अब तो रानी के दुःख का पारावार न रहा। उइ बहुतै उदास होइ गइं औ स्वाचै लागीं कि अगर कतहूं हम मरि गयेन तौ हमरे लरिकन क्यार यहै हालु होई। यही चिंता मा ब्याकुल रानी रृवावत-रृवावत पूरा दिन गुजार दीन्हेनि।

सांझ बेला जब राजा रनिवास मा पहुचे तौ रानी का रोवत देखि के परेसान होइगे औ रानी ते कारन पूछै लागि। रानी पहिले तौ कुछौ न बोलीं, मुलु जब राजा भल-भल पूछेनि तौ रानी कहैं लागीं कि राजन्! एकु दिन जव हम मरि जइबै तव तुम तौ नई रानी लै अइहौ औ नयी रानी हमरे सीत-बसन्त का मारि डारी।

राजा कहेनि - रानी केरि बात। तुमका कुछौ न होई। अव तुम सव फिकिर छृ्वाड़ौ। पसु-पच्छिन औ मनई क्यार जीवन अलग तरा का होत हय। मुलु रानी केरि चिंता दूरि न भय। कहा जात हय कि चिन्ता चिता होति हय, सो रानी चिन्तै-चिन्तै एकु दिन मरि गईं।

राजा रानी केरि मौत ते बहुतै दुखी भय। उइ राजकाज ते विरक्त होइगे। राजा केरि हालत देखि के सब दुखी होइगे। धीरे-धीरे राजा अपने राजकाज में लागिगे। समय बीतै लाग। समय के साथे अब सब राजा पर दबाव बनावै लाग कि राजा दूसर बियाह कइ लें पहिले तौ राजा न माने, मुलु जब रानी माँ जिद्द ठानि लीन्हेन तौ फिर राजा केर एकु न चली औ राजा का दूसर बियाह करके पड़ा। थोरे समय तक तौ नयी रानी राजा क देखावै क बरे सीत-बसन्त केर बहुत ख्याल रखती रहयं औ जब राजा निसाखातिर होइगे तौ फिरि उइ उनके प्रति सौतेला ब्योहार करै लागीं। अब उइ मौका ढूँढै लागीं कि कउनिउ तरा सीत-बसन्त ते मुक्ती मिलै। औ फिरि उनका एकु दिन मौका मिलिगा।

भा का, नयी रानी अपनै कमरा का बइठी सिंगारु करती रहयं। बाहर बगीचा मा सीत-बसन्त गेंद ख्यालत रहयं। अचानकै गेंद उछला औ कमरा मा घुसिगा औ दरपन मा लाग जाय। जहिते दरपन टूटि

गा औ वहि दरपन क्यार एकु टुकड़ा रानी के माथे मा लागिगा जहि ते उनके माथे ते खून निकसै लाग। रानी यहि बात ते बहुतै गुस्सा भइ। सीत-बसन्त नयी माँ ते भल-भल कहेनि कि नयी माँ! हमका माफ करौ। हम जान बूझि के अइस नाहीं कीन्ह हय। मगर रानी टस से मस न भईं। औ मुँह घुमा के पहुड़ि गईं। खाना पीना सब छाड़ि दीन्हेनि।

राजा नयी रानी केर यहु रूप देखेन तौ बड़े परेसान भे औ लाग रानी का मनावै। मुलु रानी कउनी तरा न मानी। अंत मा राजा नयी रानी का वचन दीन्हेन कि जउनु तुम कहियो वहै करब तब रानी कहेनि कि सीत-बसन्त आजु हमका मारेन हय औ अब जो तुम सीत-बसन्त का देस निकाला न देहौ तो हमार मरा मुँह द्याखौ। राजा नयी रानी ते बड़ी चिरौरी विनती कीन्हेन कि सीत-बसन्त अबै लरिका हंय, नादान हयं उनकेर गलती का माफ कइ देव। मगर रानी क्यार जिउ न पसीजा तो न पसीजा। आखिर मा राजा अपने सेवकन का आदेस दीन्हेन कि जाओ सीत-बसन्त का जंगल मा छोड़ि आव। सेवक का तो राजा केर आदेस सुनि के बड़ा ताज्जुब भा। मगर कइ का सकत रहयं, राजा केर आदस ठहरा। अन्त मा सेवक सीत-बसन्त का सिकार के बहाने जंगल लैगे औ निर्जन बन मा छाड़ि के लौटि आये।

जाड़े केर दिन रहयं। जल्दीह अंधेर होइगा। दून्हो भाई बहुतै घबराय, ठण्ड ते उइ काँपै लाग मगर कइ का सकत रहयं। अन्त मा उइ संकट केर सामना करके बरे हिम्मत कीन्हेन। दून्हो भाई मिलि के जंगल ते लकड़ी बटोरेनि, मगर जलावै के बरे आगि कहाँ ते लावैं। सीत बसन्त तक कहेनि कि भाई बसन्त! तुम हियैं रुकौ, हम जाइत हय कतो ते आग केर इंतजाम कइके लै आई।

एतना कहिके सीत आग केरि खोज मा चला गे। चलत-चलत राति बीति आइ, सुबेरे केरि उजेरिया जान पड़े लाग। थका हारा सीत जैसेह एकु गाँव मा पहुँचा, एकु सजा-धजा हाथी आवा औ सीत के गले मा हारु पहिराय दीन्हेस। हाथी के साथे राजसी कपड़ा पहिने चारि मनई रहयं, उइ सीत का वही हाथी मा बइठाय कै राजभवन लइगे। हुवा पण्डितन सीत क्यार राज्याभिषेक कइके राजा घोषित कइ दीन्हेन।

सीत का तौ यहु सब सपन अस जागत रहा। माजरा कुछ समझि मा न आवत रहय। मालुम करै पै सीत का जउनु मालुम भा कि सुनि के सीत कै पैरन के नीचे ते जमीन खिसकि गै। मनई सीत का बताएनि कि यहु राजि सापित हय, यहि ते हिंया रोजु एकु राजा चुना जात हय। दिन भर सब ठीक-ठाक रहत हय, मुलु राति मा पता नहीं का होत हय कि राजा सुबेरे मरा मिलत हय। जान जाय के डेरु ते कोउ राजा नाहीं बना चहत हय, यहि लिए राजहाथी जहिका चुनि लेति हय, वहै राजा घोषित होइ जात हय।

ई सब बातैं जानि के सीत का बहुतै डेरु लाग। कउनिउ तरा दिन बीता औ रात केर बखत आयगा। मारे डेरु के सीत का नींद न आई। करीब आधी रात भै होइ कि सीत का द्यखात हइ कि रानी केरी नाक के दाये नथुना ते एकु धागा हस निकसा औ देखतै-द्याखत वहु भयंकर नाग क्यार रूप धरि लिहिस औ सीत का डसै के बरे झपटा। सीत झट ते म्यान ते तलवार खैंचि के नाग के दुइ टुकड़ा कइ दीन्हेन।

सबेरे गाँव के मनई उदास मन ते अरथी तइयार कइके कमरा के बाहर बइठ रहयं, काहे ते उइ तौ स्वाचत रहैं कि अबहिने सीत का मरघट लइ जाय क परी। वइसी हाथिउ सजा-धजा ठाढ़ रहय, कि नवा राजा ख्वाजै जाय क हय। मगर जब मंत्री राजा ढूँढ़ै के बरे महावत का हाथी लइ जाय के कहेन तो हाथी टस से मस न भा। सब बड़े असमंजस मा कि आजु यहि हाथी का होइगा हय? लेकिन यहि ते जादा तौ अचरजु उनका तब भा, जब उइ पंचै यहु देखिनि सीत कमरा ते आंखी मलत-मलत बाहेर निकसे। रानी साथै रहयं। जि मनई अरथी लाइके आय रहयं, उइ राजा का जियत देखि के दौरि के उनके पावन मा जाय गिरे, औ माफी माँगै लाग। सीत कहेनि, यहिमा माफी माँगै केरि कउनिउ बात नहिन, तुम पंचन क्यार कउनौ दोसु नहिन। सीत सब गाँव वालेन क मरा सांपु देखाइनि, मुलु या बात न बतायेनि

कि यहु साँप रानी के नाक ते निकरा हय। सब गाँव वाले औ मंत्री रानी औ सीत का कुसलपूर्वक देखि कै बहुतै खुस भे। हाथी उनका अपनी पीठि पर लादि के पूरे गाँव मा घूमा। वहि के बाद सब जने सीत का अपन राजा घोषित कीन्हेन। अब सीत राजकाज द्याखै लाग।

अइसी जब सीत बहुत दूयार तक न लउटे तौ बसन्त का बड़ी चिन्ता भै। जब दूसर दिन बीत चला तबौहुनौ सीत न आवा तौ बसन्त अपने भाई का हेरै निकसा। कउनी तरा जंगल ते बाहेर आवा औ चलत चलत एकु नगर मा पहुंचा। भूख-पियास ते बसन्त क्यार बहुत बुरा हाल रहय। वही नगर मा एकु बनिया रहत रहय। बसन्त हुवैं नौकर होइगे। वहिके कउनौ लरिका बच्चा न रहय, यहि बरे वहु बनिया बसन्त का अपन धरमपुत्र मानै लाग रहय। अब बेसहारा बसन्त बनिया के हिंया रहय लाग।

बसन्त बड़ा मेहनती रहय, यहि ते बनिया क्यार ब्योपार खूब बढ़ा। कहा जात हय कि भगवान जब देत हय तौ छप्पर फाड़ि के दूयात हैं। अब भगवान केरि किरपा बनिया पर खूब बरसी, अइसी ब्योपार मा बढ़ोत्तरी भै, वइसी उनके कइयौ साल बादि लरिका भा। अब जब बनिया के अपन लरिका होइगा तौ वहु यहु स्वाचै लाग कि कउनिउ तरा बसन्त यहि घर का छाड़ि के अन्ते चला जाय। यहि लिए अब वहु बसन्त का तरा-बेतरा ते परेसान करै लाग औ अन्त मा आजिज आइ के बसन्त बनिया केर घरु छाड़ि के भागिगा।

जब बसन्त का कउनौ काम न मिला तौ वहु गाना गाय गाय भीख मांगै लाग। एकु दिन वहि के मधुर गाना केरि आवाज राजकुमारी के काने मा परी तौ वह वहि आवाज पर मोहित होइ गइ। राजकुमारी प्रण कीन्हेस कि हम यही मधुर गायक ते सादी करब। राजा सुनेन तौ उइ राजकुमारी क हर तरा ते मनावै केर कोसिस कीन्हेन कि अरे वहु गायक एकु भिखारी हय औ तुम्हरे लायक नहीं है, मुलु राजकुमारी न मानी औ अन्न-जल त्यागि दीन्हेसि। तब राजा अपनी पुत्री के प्राणन क बचावै की खातिर बसन्त ते राजकुमारी क्यार बियाह कइ दीन्हेन। बसन्त राजमहल मा रहय लाग। रहत-रहत जब कई बरस बीति गै तौ रानी ते बोला कि अब हमका वापस जाय क हय, तुमहू तइयार होइ जाब। रानी बसन्त के साथै चलि परी। बसन्त रानी ते कहेन कि तुम कोहुक यहु न बतायो कि हम लोग राजघराने से हय, तबहि दुनिया का सही तरा ते समझ सकती हौ।

चलत-चलत बसंन्त वही नगर मा फिरि ते पहुँचा, जहाँ वहु बनिया के हिंया नौकरी करत रहय। बसन्त बनिया की दुकान पहुँचा। जब बनिया यहु देखिसि कि बसन्त तौ बड़ी सुन्दर मेहरिया औ बहुत सारा धन लइके आवा हय, तब वो बसन्त केरि बड़ी आवभगत कीन्हेस औ अपने किये केरि माफी मांगेसि। बसन्त का छल कपट तौ आवत न रहय। यहि ते वहु बनिया केरी बातन मा आयगा। मुलु बनिया बड़ा घाघ रहय, वहु तौ बिस्वासघाती रहय। यहि लिये जब पूरा घर सोयगा तौ वहु बसन्त का सोवतै मा बोरा मा भरि के नदी मा बहाय आवा। वहि के मन मा एकु यहौ बात आई कि बसन्त केरि मेहरिया का राजा के महल मा लइ जाय तौ एतनी सुन्दर स्त्री का राजा अपन रानी बना लेई तौ फिर बनिया का राजा बहुत सारा धन देई।

जब बनिया राजा के महल पहुँचा तौ रानी रूवावै लागीं औ राजा ते निवेदन कीन्हेस कि महाराज! हम केहू की ब्याहता आहिन। हमरे साथै न्याय करौ, नाहीं तौ हम अपन प्राण दइ दूयाब औ फिर अपने हाथ ते अंगूठी निकारि के राजा का दीन्हेस। राजा बने सीत जैसेह वहि अंगूठी क देखेन तौ उनका बसन्त केरि यादि होइ आई। सीत वहि ते पूछेनि कि या अंगूठी तुमका कइसे मिली? रानी कहेनि कि या अंगूठी हमरे पति केर निसानी हय। सीत रानी केर बात सुनि के बोले कि तुम रोवा ना, जब तक तुम्हार आदमी तुमका नहीं मिलि जात हय, तुम निस्चिन्त होइके राजमहल मा रहौ। हम तुमरे

आदमी का ढूंढ़ै केर प्रयास करित हय।

अब सीत क्यार मन भाई ते मिलै क बरे तड़पै लाग। उइ ढिंढोरा पिटवायेन कि जो कउनौ मनई सीत-बसन्त केर किस्सा सुनाई वहि का ढेर सारा इनाम मिली। यहु ढिंढोरा गली गली गांव गांव पीटा जाय लाग।

इधंर वहु बोरा जेहिमा भरि के बनिया बसन्त का नदी मा बहायेसि रहय, वहु बहत-बहत घाट पर जाय लाग। हुवां धोबी कपड़ा ध्वावति रहयं। बोरा देखि धोबेवन का बड़ा अचरजु भा। पहिले तौ उइ डरे, मगर फिरि हिम्मत कइ के वहिका बोरा ते बाहेर निकारेन, औ वहिका उपचार करवायेन। एकु बूढ़ा ध ोबी बसन्त का अपन बेटवा बनाय के अपने घर मा राखि लीन्हेसि। अब बसन्त वहि धोबी के घरै रहि के धोबी क्यार कामु करै लागि।

सीत जउनु ढिंढोरा पिटवायेन रहय वहिके आवाज बसन्तौ के कान मा परी तौ बसन्त वहि बूढ़े धोबी ते बोला कि बापू हम तुमका सीत-बसन्त क्यार किस्सा वताइत हय, तुम जायके राजा क सुनावौ। तुमका राजा ते ढेर एक पइसा मिली, वहि ते तुम्हार हमार सब दलिद्दर दूरि होइ जाई।

बूढ़ा धोबी, जइस बसन्त बताइस रहय, राज दरबार मा जा के राजा ते बोला कि हे राजन! हम सीत बसन्त क्यार किस्सा सुनाय के बरे राजा ते आज्ञा चाहित हय। सीत केरि आज्ञा पाय के बूढ़ा ध ोबी किस्सा कहै लाग। धोबी बतायेसि कि कइसे भाईन क्यार जन्म भा, बचपन बीता, कइसे रानी माँ केरि मौत होइगै, राजा क्यार दूसर विहाव भा, औ फिरि कइसे दून्हो भाइन का राजा जंगल मा छोड़वाय दीन्हेन। फिरि कइसे बड़ा भाई छोटे भाई का जंगल मा छाड़ि के आगि की खोज मा गा औ लौटि के न आवा।

पूरी सभा यहि किस्सा का ध्यान से सुनि रही रहय। धोबी आगे क्यार किस्सा बताएसि कि अब बड़ा भाई न लउटा तौ फिर हतास निरस छोट भाय भटकत-भटकत कौनी बिधि ते बनिया के लगे पहुंचा। फिरि बनिया के छल-कपट केरि बात, वहि के बियाह केरि बात सब कुछ धोबी बतायेसि। फिरि यहौ बतायेसि कि बनिया कउनी तरा बिस्वासघात कइके वहि मा नदी मा डारि आवा।

जब सीत का यहु मालुम भा कि बनिया छोटे भाई का नदी मा बहाय दीन्हेसि हय तौ वहु स्वाचै लाग कि अब तौ हमरे भाई क्यार देहान्त होइगा होई। सीत रूवावै लाग। पूरी सभा छोटे भाई के साथ कीन्ह गै अत्याचार केरि बात सुनि कै रूवावै लागि। सीत धोबी ते पूछेनि कि तुमका यहि किस्सा के बारे मा कइसे पता हय। तब धोबी बोला- महराज! अपराध क्षमा करौ। यहु किस्सा हमका वहु मनई बतायेसि हय, जेहिका बनिया बोरा मा बन्द कइके नदी मा बहा दीन्हेस रहय। भगवान की दया ते वहु बोरा बहत-बहत धोबी घाट पर जाय लाग, जब हम लोग वहि बोरा क खोलेन तौ वहिमा ते एकु लरिका निकरा। राजा केर ढिंढोरा सुनिकै वहै लरिका हमते कहेसि रहय कि तुम राजा का यहु किस्सा बतायेव जाय तौ तुमका राजा ईनाम देहैं। वहु हमका एतनै किस्सा सुनायेसि रहय, यहि लिये हमका आगे केरि बात पता नहिन। कि बड़े भाई क्यार का भा, छोटे भाई केरि पत्नी कउनी दसा का प्राप्त भय।

सीत बोला- कि आगे का किस्सा हमका पता हय। तुम हमका हुवां लइ चलौ, जहां वहु लरिका हय, जो तुमका यहि किस्सा का सुनायेसि हय। धोबी राजा क लइके बसन्त के नियरे पहुंचा। सीत बसन्त का देखि के भइया-भइया कहि के गले लगा लीन्हेन . बसन्तौ अपने बड़े भाइ का देखि के भाई ते चपक लाग। दून्हो भाई एक अरसा बाद एकु-दुसरे ते मिले रहयं। दून्हौ भाइन के मिलन क देखि के हुंवा मौजूद सारे मनईन की आँखिन मा खुसी के आंसू भरि आय।

सीत बसन्त राजी-खुसी महल मा लउटे। सीत बसन्त का बताएनि कि वहि का नदी मा बहाय के बाद धन के लालच मा तुम्हरी पत्नी का राजमहल मा पहुँचाय गा रहय। वही के लगे तुम्हार अंगूठी

देखि के तुम्हार खोज करवावा हय। बसन्त अपनी रानी ते मिले। सीत धोबी का बहुत सारा इनाम दीन्हेन औ मंत्री का आदेस दीन्हेन कि बनिया का पकरि के लाव औ गड्ढा खोदि के वही मा गाड़ि देव। मुलु बसन्त कहेनि कि भइया, बनिया का माफ कइ देव। काहे ते वही बनिया के बदौलत हमारि रानी तुम तक पहुंची, जेहि के पास ते हमारि अंगूठी तुमका मिली औ फिरि भगवान की किरपा ते हमार तुम्हार मिलन भा। सीत-बसन्त केरि बात मानि लीन्हेन। दून्हो भाई अपनी-अपनी रानी के साथे सुखपूर्वक रहय लाग औ बहुत दिन तक राज्य केर भोग कीन्हेन। *प्रस्तुति* : रश्मिशील

# अवधी भाषा साहित्य के जीवन्त आयाम

डॉ. हरिप्रसाद दूबे

राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास मे अवधी भाषा का महत्वपूर्ण स्थान है। सांस्कृतिक, साहित्यिक सामाजिक और भाषिक वैशिष्ट्य के कारण अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी में उच्च उपादेयता है। अवध तथा उसके आस-पास के क्षेत्र की बोली के रूप में प्रसिद्ध अवधी प्रमुख रूप से अन्य नामों पूर्वी तथा कौसली से भी विख्यात है। हिन्दी की सभी बोलियों की अपेक्षा अवधी बोली का क्षेत्र व्यापक है। अवधी बोली बोलने वालों की संख्या तीन करोड़ से अधिक है। यह भाषा भोजपुरी से मिलती है। सूरीनाम, फिजी, मारीशस देशों में अवधी का विशिष्ट पक्ष है। प्राकृत और अपभ्रंश काल में इसका उच्चारण अंउध हो गया। अवध से ही अवधी भाषा का नाम करण हुआ कौशल प्रदेश में मध्य भारतीय आर्य भाषा काल में जो भाषा बोली जाती थी। उसी के द्वारा अवधी भाषा उद्भूत हुई। हिंदी के मूर्धन्य विद्वान आचार्य रामचन्द्र शुक्ल अवधी की उत्पत्ति नागर अपभ्रंश भाषा से मानते थे।

अवधी-लोक भाषा का काव्य साहित्य लोक चिंतन से ओतप्रोत है। जार्ज ग्रियर्सन ने अवधी अथवा पूर्वी हिंदी की उत्पत्ति अर्धमागधी से मानने पर बल दिया। अवधी का जन्म डॉ. भोलानाथ तिवारी कोसली से मानते हैं। ब्रजभाषा कवि जगन्नाथदास रत्नाकर ने शौरसेनी से अवधी का विकास माना था। अवधी भाषा के प्राचीन साक्ष्य प्रथम शताब्दी से प्राप्त होते है। कीर्तिलता, राउलबेल प्राकृत पैगलम में अवधी शब्दो का स्वरूप मिलता है। भाषाविद जार्ज ग्रियर्सन ने अपनी पुस्तक भारत का भाषा सर्वेक्षण में अवधी को पूर्वी बोली कहा है। अवधी का विविध रूप प्राप्त होता है।

द्विवेदी युग से बीसवीं शताब्दीं का अवधी लेखांकन आरम्भ किया गया। 'सरगौ नरक ठेकाना नाहिं' जैसी अवधी रचनाओं में उस समय की अशिक्षा पाखण्ड़ सामाजिक विद्रूपता का जीवंत चित्रण है। मनोहर लाल मिश्र, जगदम्बा प्रसाद हितैषी और हरिपाल सिंह, देवी प्रसाद पूर्ण, ब्रजेश आदि अवधी कवियों ने अंग्रेजी के खिलाफ अपनी लेखनी चलाई। पंडित बलभद्र प्रसाद दीक्षित पढ़ीस आदि की अवधी कविताओं का संग्रह प्रकाशित हुआ। सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला ने चकल्लस की भूमिका में लिखा-देहाती भाषा होते हुए भी जहाँ तक काव्य का सम्बन्ध है चकल्लस अनेक उच्च गुणों से भूषित है। उसके चरित्र सफल और सार्थक है। स्वाभाविकता पद पर परिणति पर पूरी संगति है। रमई काका, अम्बिका प्रसाद त्रिपाठी मतवाला, प्रोफेसर अभिराज राजेन्द्र मिश्र, आद्या प्रसाद उन्मत, मधुर, वंशीधर शुक्ल आचार्य विश्वनाथ पाठक, सत्य नारायण द्विवेदी श्रीश की रचनाएं श्रेष्ठ हैं।

पं. चन्द्र भूषण त्रिवेदी रमई काका अवधी के उत्कृष्ट कवियों में से रहे। फुहार, भिनसार, बौछार और गुलछर्रा जैसे काव्य संग्रह उनकी अनुपम सम्पदा है। आकाशवाणी लखनऊ से बहरेबाबा प्रहसन अवधी का प्राणतत्व था। रमईकाका इसमें बहरेबाबा का पात्र जीते थे। कवि मृगेश की कृति पारिजात महाकाव्य कलेवर में है।

अवधी रचनाधर्मिता की सबसे बड़ी बिड़म्बना यह है कि अवधी कविताओं के प्रकाशन के कम अवसर हैं। पत्र-पत्रिकाओं में अवधी रचनाएँ कम ही प्रकाशित हो रही हैं। सर्वमंगला पं. विश्वनाथ पाठक की अनूठी कृति है। घर कै कथा अप्रकाशित महाकाव्य है। कवि त्रिलोचन ने मुक्त छन्द में अवधी भाषा में बरवै प्रकाशित हुए। चतुर्भुज शर्मा का अप्रकाशित काव्य संग्रह किसान कै अरदास है। डॉ. श्याम सुन्दर मधुप मिश्र के अलावा विकल गोंडवी, जुमई खां आजाद आदि उल्लेखनीय हैं। वर्तमान समय में प्रबुद्ध शील जागरूक चेतना अब इसके विकास और प्रचार व प्रसार के लिये अपनी महत्वपूर्ण सर्जनात्मक शक्ति का परिचय दे रही है। इनमें साकेती प्रमुख है।

कंचनलता, जोधइया, बिरवा, अमोला, अवधी, अवधज्योति जैसी पत्रिकाओं में अवधी रचनाएं आ रही है। अवधज्योति विगत पंद्रह वर्षों से सतत प्रकाशित होने वाली एकमात्र अवधी त्रैमासिक पत्रिका है। कंचनलता, रैनबसेरा में भी अवधी प्रकाशित होती है। अवधी लोक भाषा देश विदेश मे प्रतिष्ठित है। हृदयग्राही और मार्मिक दृष्टि अवधी भाषा में प्राप्त होती है। मूर्धन्य विद्वान प्रोफेसर राजेन्द्र मिश्र अवधी की सुन्दर रचनाएं करते हैं अनेक पत्र पत्रिकाओं में मिलती है। अवधी भाषा शैली श्रेष्ठ है।

डॉ. विद्या विन्दु सिंह ने अवधी लोक संस्कृति और गीत-पर्व पर व्यापक कार्य किया है हरिश्चन्द्र पाण्डेय सरल दूधनाथ शर्मा, डॉ. श्रीपाल सिंह क्षेम न अवधी रचनाएं लिखी हैं। स्वतंत्र और स्वशिल्पित मात्रिक छन्दों के अलावा पर्याप्त दोहे अवधी में रचित हैं। नर्मदेश्वर उपाध्याय, केशवचन्द्र वर्मा और कैलाश गौतम ने आकाशवाणी से पंचायत घर के कार्यक्रमों में अवधी भाषा का संवर्द्धन किया। रूपनारायण त्रिपाठी की लोक भाषा अवधी रही। पं. द्वारिका प्रसाद मिश्र का साहित्य अपने लोकपक्ष के लिए प्रसिद्ध है। लोक सुभाषित, लोक कथा लोकगाथा, और लोकगीत इस साहित्य में है। अवधी की मिठास यहॉं की बोली बानी में भरी है।

अवधी भाषा का शिल्प अन्य भाषाओं की तुलना में उत्तरोत्तर उत्कृष्ट रचा जा रहा है। अवधी लोक मानस का विराट बिम्ब यहॉं की लोक चेतना और परम्परा में है। काव्य के अतिरिक्त गद्य में अवधी लेखन कम हो रहा है। अवधी की कृति रामचरितमानस विश्व पटल पर अवधी साहित्य को स्थापित करने में समर्थ है। अवधी के विकास में डॉ. पाण्ड्रेय रामेन्द्र डॉ. चक्रपाणि पाण्डेय, डॉ. सुशील सिद्धार्थ, रामबहादुर मिश्र, डॉ. हरि प्रसाद दुबे आदि की सर्जना से अवधी वाङ्मय संवर्द्धित हो रहा है। अवध विश्वविद्यालय, लखनऊ विश्वविद्यालय आदि उच्च शिक्षा केन्द्रों में अवधी साहित्य पर अनुसंधान कार्य किये गये हैं। किसी संकीर्णता से दूर होकर हिन्दी के साथ अवधी को लेकर चलना पड़ेगा। अवधी साहित्य पर लखनऊ विश्वविद्यालय में कम से कम एक सौ शोध कार्य पूर्ण हुए हैं। सतनामी और सॉईदाता सम्प्रदाय अवधी के हैं। सत्यवती कथा मैसानत, विराट पर्व आदि अवधी कृतियाँ है। अवधी भाषा को विश्वव्यापी बनाने में त्याग, समर्पण निष्ठा, समता और निरन्तरता की आवश्यकता है।

अवधी लोक भाषा में जन जीवन और संस्कृति के इतिहास के चित्र मुखरित होते हैं। जीवन के सुख दुख इन लोकगीतों के बीज होते हैं। जीवन के समग्र पक्षों का स्वाभाविक और मार्मिक चित्रण इसमें मिलते हैं।

प्राचीन काल से अवध की पावन भूमि धर्म, भाषा-साहित्य और कला की दृष्टि से बन्दनीय रही है। अवध की लोक संस्कृति अवधी में रची-पगी है। लोक भाषा के रूप में प्रतिष्ठित अवधी में सर्जना करने वाले भारती पुत्रों ने अपनी अनन्य सारस्वत साधना द्वारा समृद्ध किया है। लोक साहित्य और लोककण्ठ में मानव जीवन के मनन-चिन्तन, हास-परिहास का विराट स्वरूप समाहित है। अवधी भाषा-साहित्य और संस्कृति के ऐतिहासिक संदर्भ मानवीय और शाश्वत मूल्यों से अनुप्राणित हैं। लोक मानस की अनुभूति का काव्य लोकरस के अजस्र प्रवाह को अनादि और प्रागैतिहासिक पक्षों से सम्पृक्त करते है। पौराणिक, धार्मिक और ऐतिहासिक लोक गीतों में अवधी संस्कारों की दृष्टि समाविष्ट है।

सामाजिक पारिवारिक और पर्वों से जुड़े गीत, भजन, कीर्तन, लखनी, लोरी के अतिरिक्त फागुआ, गारी, होरी, दिवारी, सावन तथा विकास गीतों में अवधी भाषा का प्राण तत्व बसा है।

प्रेम, भक्ति और वात्सल्य की महक अवधी गीतों में मिलती है। प्रेम से अभिभूत प्रेमिका अपने प्रेमी के लिए नेवारी के फूल की शयया सजाती है। इलायची और लौंग का बीड़ा लगाती है। झांझर गेड़आ में गंगाजल ले आती है। काग शगुन बताने का कार्य करते हुए पॉहुन के आगमन की जानकारी देते हैं। काग को दूध भात का दोना दिया जाता है। राम के जन्म लेते ही स्थान स्थान पर आनन्द बधवा बजने लगता है। सोहर गाये जाने लगते हैं। तालतलैया, डीह डिडहार की भूमि पर भगवान का दर्शन होता है। बनों में मुरैला नयना भिराम लगते हैं। सावन में लवंगकी डाल पर झूले पड़ते हैं। राधा पेंगें मारती है। निर्धन धन मांगता है। बैलों की जोड़ी खेतों में सुन्दर लगती है। गोरी की महावर को चैत मास निहारता है। वह गैल में छैल को छेड़ती है। फागुन में बाबा देवर लगते है। अवधी भाषा में यही लोक कण्ठ समाहित है अवधी कजरी में यही दृष्टि दिखाई पड़ती है-

*रिम झिम बरसै मेघ बदरिया कारी रे हारी।*
*रिम झिम बरसै पनिया, चली न आओ जनियाँ रे हारी।।*

सावन मास में नदी पर चमेली पर मंडराते भ्रमर द्वारा भाई को सन्देश देती हुई ले जाने के लिए हिडोला गीत में बहन कहती है-

*नदिया के ईरे-तीरे फुलली चमेलरी*
*तेहिं पै भँवर मडराय*
*भंवरा के हथवा मैं भेजल्यू सनेसवा*
*मोर बीरन मोंहि लै जाय।*
*हिडोलवा? मोर बीरन मोहि लै जाय।*

मादक और मधुर सावन महीनों में वृक्ष लता और पौधे हरीतिमा से प्रफुल्लित हो जाता है। रक्षाबन्धन का पर्व इसी मौसम में पड़ता है। भाई-बहन का सहज स्नेह अवधी लोक गीत उदात्त मनोभावनाओं को झंकृत करता है।

*गलिया क गलिया फिरइ मनिहरवा,*
*के लइहैं मोतिया का हार- हिण्डोलवा।*
*मोतिया क हार लइहैं भैया हो भइया*
*जेकर बहिनी दुलारी-हिण्डोलवा*
*पाछे लागी ठनकईं बहिनी रानी*
*एक लर हमहूँ का देहू-हिण्डोलवा*
*एक लर टुटिहैं सहस मोती गिरि हैं*
*कुलि लर बहिनी तुँ लेउ-हिण्डोलवा*

जब बहन ससुराल में हो और सावन का महीना हों। इसका कारण वह माता पिता भाई को कठोर बताती है। परन्तु सहसा भाई आता है। तब वह माता को गंगा, पिता को यमुना, भाई को चाँद सूर्य बताती है-

*ससुरे में सावन होय,*
*कौने निरमोहिया कि धिरिया*

*कौने बरन तोरी मैया, कौने बरन तोरे बाप?*
*कौने बरन तोरे भैया, जिन सुधि न लीन्हों तुम्हार?*
*कांकर-यसि मोरि भैया, पथरा-यस मोरे बाप*
*लोहे-बजर पस भैया, जिन सुधि लीन्हीं न हमारि।*
*आइ गये डोलिया कहरवा, आइ गये बीरन हमार।*
*गंगा-यसि मोरि मैया, जमुना-यस मोर बाप*
*चाँद-सूरज यस भैया, जिन सुधि लई है हमारि*

इस प्रकार एक सावन अवधी लोकगीत है जिसमें पुत्री अपने भाई और पिता को देखकर पुलकित हो उठती है-

*ठाढ़ी झरोखवा मैं चितवउँ, नैंहरे से केउ नाहीं आइ।*
*ओहिरे मयरिया कैसन बपई रे*
*जिन मोरी सुधियो न लीन*
*आहिरे बहिनिया कैसन बीरन*
*ससुरे में सावन होइ।*
*अगिले के घोड़वा वबैयां मोरा*
*जेकरि बिटिया दुलारी*
*पिछवों के बिरना हमार।*
*भलारे मयरिया-भल बपई रे*
*अब मोरी सुधिया जे लीन*
*कॅवरी ले आवईं बखैया मोरा*
*चुनरी ले आवईं बिरन मोरा*
*जेकरि बहिनी दुलारि।*

एक अवधी गीत में बहन अपने भाई से कहती है-

*एक दैयों अउता भैया हमरेउ के देसवों रे ना।*
*भइया हमरिउ खबरिया लइ जातेउ रे ना।*
*तोहरे के देसवों बहिनी ढ़ाक-ढ़ंकुलियों रे ना।*
*बहिनी रहिया में बाघबघिनिया रे ना।*
*हथवों में लेत्या भइया ढाल तरूवरिया रे ना।*
*भइया काउ करतै बाघघिनिया रे ना।*

अपने भाई पर बहन कितना गर्व करती है। स्नेह के शाश्वत संबंध पर बहन गद्गद् हो जाती है। इसका निरूपण इस लोकगीत में है-

*माई तलवा कुँहकइ मोर*
*माई जेठरा भइअवा जिनि पठये सावन नीअर।*
*माई बभना क पूत जिनि पठये सावन नीअर।*
*माई पोथिया बाँचन लगिहैं सावन नीअर।*
*माई लहुरा भइयवा पठये सावन नीअर।*
*माई रोइ गाइ विदवा काइहैं सावन नीअर।।*

अवधी भाषा में अनेक गीत भाई बहन के स्नेह में हैं ऐसा ही यह लोक गीत है-

*बिरना कासे कुसे कै पटवा अंग*
*छिलीया छीली जाय, बलैया लेउँ बीरन।*
*विरना पैयाँ तोरे लागों बिरन भैया*
*पटवा कै झलुवा डरावो. बलैया लेउँ बीरन।*
*एसौं कै पटवा महँग भये बहिनी*
*अगवाँ डरैवै पंच डोर, बलैया लेउँ बीरन*
*हमतउ जाबै सजन घर भैया झुलिहैं धनिया तुम्हार*
*बलैया लेउँ बीरन*
*धनिया भेजवै नैहर का बहिनी*
*तुहुँका आनन हम जाब, बलैया लेउँ बीरन।*

विवाह नारी जीवन की एक ऐसी घटना रहती है जिसमें बाह्य और अन्तर्मन परिवर्तित हो जाता है। एक अवधी गीत है -

*बाबा-बाबा गोहरावौं बाबा नहीं जागै।*
*देत सुधर एक सेन्दुर भइउँ पराई।*
*भैया-भैया गोहरावौं भैया नाहीं बोलैं।*
*देत सुधर एक सेन्दुर भइउँ पराई।।*

अवधी भाषा के लोक गीतों में संस्कारों का चित्रण जीवन्त ढंग से किया गया है। मानव जीवन के आरंभ से लेकर अन्त के मुख्य संस्कारों पर अवधी संस्कार गीत हैं। इनका लोक जीवन से गहरा संबंध है।

लोक गीत भारतीय संस्कृति के संवाहक है। लोक जीवन इनका अभिन्न अंग है। अनपढ़ लोगों की अनपढ़ भाषा सहज लालित्य के कारण हृदय में सहजता से उतरती जाती है। लय से लय का तादात्म्य लोककण्ठ लोक दृष्टि है। कवि वह बात कहता है, जिसकों सभी अनुभव करते हैं। किंतु जिसको सब लोग कह नहीं सकते। लोक साहित्य समाज की चेतना में सांस लेता है। उससे फिर जीवन ग्रहण करता है। एक कंठ से दूसरे कंठ तक पहुँचकर लोक गीत कालजयी हो जाते हैं। ग्राम्य जीवन में इनकी अनूभूति आनन्द सृष्टि करती है। इनमें शब्द विन्यास की सरलता, प्रकृति का तादात्म्य अनूठी राग और मानव हृदय के छलरहित निष्कपट स्वरूप के दर्शन मिलते हैं।

लोक गीत जनमानस के सुख दुख हृदय हर्ष विषाद आकर्षण विकर्षण आदि के ताने बाने से बुन जाता है। लोकगीतों में संस्कृति का सच्चा स्वाभाविक और वास्तविक शब्द में प्रतिबिम्बित होता है। लोक गीतों में लोक जन के पारिवारिक और सामाजिक के मर्मस्पर्शी चित्रण हैं : लोकगीतों में जहाँ सोने की थाली, स्वर्ण का जलपात्र चन्दन और चाँदी का पलंग रेशम की डोरी रेशम की साड़ी के साथ उत्कृष्ट भोज्य पदार्थों का वर्णन किया गया है वहीं जन सामान्य के दुख दारिद्रय और छलकपट का हृदयस्पर्शी चित्रण है। गाँव की गलियों, बाग-बगीचों खेतों खलिहानों, तालाबों आँगन दालानों के असंख्य चित्र लोकगीतों में समाहित हैं। सास, बहू, ननद, भाभी, पति-पत्नी, देवर भाभी, जेठ जिठानी जैसे रिश्तोंके मधुर और कटु अनुभव लोकगीतों में समाविष्ट हैं। संयुक्त परिवार का आदर्श, हिरन-हिरनी के माध्यम से प्रेम सतीत्व और वियोग के दुर्लभ वर्णन है। पशु-पक्षी वृक्ष लता और प्रकृति के अनेक रंग लोकगीतों में हैं। कूप, मंदिर मठिया सब वर्णित है।

ऋतुगीत लोकगीतों के प्राणतत्व है। ग्रीष्म, वर्षा शीत, बसंत आदि लोकगीतों में प्रकृति के उपादान

रहते हैं ग्राम्य संस्कृति और संस्कार प्रकृति के बिना शून्य है। कृषि प्रधान देश में वर्षा कृषि का मूल आधार है। खेती से ग्राम्य जीवन के सारे क्रिया कलाप तुड़े हैं। पुरवैया के साथ भूरे-काले मेघों का उपड़घुमड़ कर आना, बिजली का कौंधना, कभी मूसलाधार, कभी रिमझिम जलवर्षा तन-मन को तृप्त करती है। वर्षा के चार महीने में जलवर्षा तन-मन को तृप्त करती है। वर्षा के चार महीने में सावन की छटा होती है। हृदय रस से लोकगीत भीग जाते हैं। वर्षागीत सावनगीत, हिडॉला कजली-गीत इसमें मुख्य हैं। मॉं गौरा प्रसन्न चित्त होकर झूला झूलती हैं। उनकी सखियॉं गीत गाकर भाव विभोर करती हैं।

*शिवशंकर चले कैलाश, बुंदिया पड़ने लगीं।*
*गौरा ने पीसी हरी हरी मेंहदी*
*शंकर ने पीसी भॉंग बुँदिया पड़ने लगी।*
*शॅंकर के चढ़ गयी भॉंग बुँदिया पड़नें लगी।*

अवध क्षेत्र में इन वर्षा गीतों को हिडोला गीत नाम से जाना जाता है। सावन में झूला झूलने के लिए नीम की डाल पर बड़ा झूला डालने की परम्परा है। यहॉं ग्राम्य बालाऍं और ग्राम्य बधुऍं बारी बारी झूला झूलती है। इसी समय सभी एक साथ वर्षा गीत गाती हैं। राधाकृष्ण का आलम्बन बनाकर लोक गीतों का सृजन किया गया है।

*झूला पड़ा कदम की डारी, झूलें कृष्ण मुरारी ना।*
*कौन काठ का बना हिंडोला*
*का की लागी डोरी ना।*
*चनन काठ का बना हिंडोला।*
*रेशम लागी डोरी ना।*
*के हो झूले के हो झुलावे*
*के हो देवे तारी ना।*
*राधा झूलै कृष्ण झुलावें।*
*सखिया देवे तारी ना।*

सावन में मेंहदी से श्रृंगार करना नारी भावना की अभिव्यक्ति है-

*पिया मेंहदी लिआय दा मोती झील से*
*जाय के साइकिल से ना*
*जाके मेंहदी लिआवा।*
*छोटी ननदी से पिसवावा।*
*अपने हाथ से लगावा कॉंटा-कील से।*

बादल कैसे किस ओर से आ जाते हैं, यह इस गीत में है-

*कहॅवा से आवै रामा कारी हो बदरिया,*
*कहॅवा से आवै ॲंधियरिया ना*
*पुरबै से आवै रामा कारी हो बदरिया,*
*पछिमै से आवै ॲंधियरिया ना।*

अवधीगीत में परदेश जाते पति द्वारा पत्नी के निश्छल व्यंग्य की दृष्टि है-

*गोरी-गोरी बँहियाँ सबुज रंग चुनरी*
*पिया छोड़ि चलेनि हो परदेसवाँ,*
*बताए जाए गुनवा औ गुनवाँ।*
*फागुन मास घना हमरा फगुनवा*
*हमइ तजि गइउ हो नइहरवाँ*
*सावन मास घना तोहरी कजरिया*
*तोहइ तजि चलेउँ हो परदेसवा।*

भादौं की रात बीतने की चिंता पत्नी को है, वह कहती है-

*कैसे बितिहैं भदौंवा की रात घटा घेरे कारी*
*बरसत घन घहरात गगन बिच,*
*चपला चमकैं न्यारी।*
*मैं अति डरति भवन के भीतर,*
*प्रियतम बिन बुन्द कटारी, घटा घेरे कारी।*

बारहमासा का लोकगीत लोक साहित्य का केन्द्र बिन्दु है-

*कौन हरै मोरी पीरा संजन बिन*
*मास असाढ़ बदरा घन गरजै सावन धरत न धीरा सजन बिन।*
*भादों मास में बिजुरी चमकै चौदसि भरि आए नीरासजन बिन*

अपने पति को रोकती पत्नी इस गीत में कहती है:

*साँपवा छोड़ेला संप कॅचुली हो रामा*
*गंगा छोड़ेलीं करार*
*पियावा छोड़ले घर आपन हो*
*घरे रहु ननदी के भाय।*

वर्षा हो रही है। पति अपनी पत्नी को पास बुलाता है। पत्नी बताती है-

*बूंदन भीजे हमरी सारी, कैसे आउँ बलमा*
*एक तो मेह झमाझम बरसे*
*दूजे पवन झकोरे*
*आउँ तो भीजे सुघर चुनरिया*
*नाहीं त छूटे सनेह।*

अपनी बहू को सास समझाती हुई कह रही है।

*नाहीं डर बहुअरि भीजे क चुनरिया*
*डर हौ छूटे क सनेह होइयहैं बहुअरि*
*सनेह से चुनरी चुनरी से नहीं सनेह।*

अवधी में प्रचलित देवी गीत इस प्रकार है-

*साठी के चाउर मइया कैसे चढउउँ*
*चिड़ियों ने डारे हैं जुठारं जय-जय बोलो*

*अम्बे शीतला माई जय जय बोलों।*
*धन्य शीतला माई जय-जय बोलो।*

कौशल्या एक साधारण नारी की भाँति राम सीता का स्मरण करती हैं-

*राम के भीगे मुकुटवा लखन सिर पटुका हो राम।*
*मोरी सीता के भीगै सेनुरवा लवटि घर आवौ हो राम।।*

बहन एक सावन गीत में अपने भाई के यहाँ बरसने की प्रार्थना करती है। जिससे भाई को सावन में तो बहन को लिवाने का ध्यान आ जाए-

*बदरिया रानी बरसो बिरन के देस*
*कौना के बिरन लुवानन आए, कौना घुड़ल असवार*
*बिजुरी के बिरन लुवावन आए, बादल घुड़ल असवार*

कभी कभी तो बदरी बैरिन हो जाती है। नायिका कहती है लाए न कोई सनेश। बदरिया बैरिन हो सबके पिया भीगे घर आंगन। मोर पिया भीगे परदेश पत्नी कजली खेलने मायके जाना चाहती है। पति द्वारा रोकने पर वह कहती है-

*कजरी खेलन नइहर जाब, सुन ला मोर बलमू*
*लेला लेला आपन गेहना, नाहीं मानव तोहर कहना।*
*कहीं क हउवा तू नवाब।*

सावन आने पर बेटी ससुराल में मायके न जाने के लिए दुःखी है।

*अम्मा मेरे बाबा को भेजों रे कि सावन आया*
*बेटी तेरा बाबा तो बूढ़ा है रे कि सावन आया।*

बेटी बार-बार छत पर चढ़कर देखती है भाई की राह को बहू चिड़िया को दूध भात खिलाकर मायके संदेश दिलवाती है-

*झिनवा बहारत टूट गै बढ़निया रे ना*
*बहिनी सासू गरियावैं दीख भइया रे ना।*
*खाउन चिरई मोरे दुधवा औ भतवा*
*जाइ नइहरवा माँ बोलेउ ना।।*

वर्षा आ जाने पर पत्नी प्रतीक्षा करती हुई कहती हैं:

*आई गइल बरसात रे/ पिया अजहूँ न अइलें।*

मानव भावनाओं की अभिव्यक्ति के माध्यम लोकगीत हमारी परंपरा, आस्था, संस्कारों की थाती है। लोक गीतों की हृदयस्पर्शी अनुभूति अन्यत्र दूर्लभ है। वर्षा गीत इस प्रकार भी है-

*चार महीना का बरखा पड़त है*
*रिमझिम बरसे फहरिया*
*सजन माहे झुला झुलावौं चारों मास*
*हिड़ोलना पड़ा बगियन माँ सजन हम झूलैं सजनिया*
*बदरिया बरसै झमाझम।*

अवधी लोकभाषा में अयोध्या और राम का चित्रण भी है। समय-समय पर लोकसाहित्य रचा गया है। अवधी लोक साहित्य में राम का व्यापक चित्रण है। अयोध्या का आदर्श पुरी के रूप में वर्णन मिलता है-

*जब हम जैबे नगर अजुध्या, करिबे अयुध्या क राजि*
*दसरथ ऐसे ससुर हम पउवे लक्षिमन देवर हमार।*
*राम सरीखे वर हम पउबे करिबे अयुध्या क राजि।*

नारी में सन्तान प्राप्ति की लालसा अत्यन्त प्रबल होती है-

*मचियई बैठी कौसिल्या रानी ठाढ़े राजा दशरथ,*
*राजा तुम्हरी दरबि कौने काम अकेले सन्तति बिना।*
*हँकरों नगर का मलिया हँकरि बुलावौं,*
*मलिया बन बन ढूँढों संजीवनि।।*

अवध क्षेत्र में पुत्र-जन्म के अवसर पर मंगल गीत गाया जाता है-

*अवध मा बाजे हो बधइया, गोकुल मा बाजे बधइया।*
*ऊँच नगर पुर पाटन आले बाँसे छाजन,*
*राम लिहिन अवतार सकल जग जानैं।*

बहू अपनी ननद और सास को नेग देना चाहती है-

*जब सिय राम जन्म लिन्हें, राम जनम लिन्हें,*
*सासु न हो मोरी सासुल, तु रानी सासुल रे।*
*सासुल भुईंया परे नन्दलाल त झपटि उठाओं और हिरदय लगावौ रे*
*ननदी न हो मोरी ननदुल तो रानी ननदुल।*
*ननदी झझकि के टठिया बजावों बहुत कुछ पइहौं।*
*भौजी न हो मोरी भौजी, न तु मोरी भौजिल रे।*
*भौजी तुम्हरी बकसिया क कगनवा हम लैबै।*

भौजी अपनी ननद से कहती है कि आपन यह तो कुछ नहीं माँगा-

*माँग्यों तो मँगही न जान्यों ननदी चार खूट की अयुध्या।*
*त एक खुट मंगलिउ जनम भरि खातिउ भइयन संग रहतिउ*

छठी गीत में लोक समाज में यह अवधी गीत गाया जाता है-

*पूछत छठिया श्याम सुन्दर ब्रज राजकुँवर की बहुविधि पूजा बनाई।*

जब बच्चा बड़ा होता है। जनेऊ के लिए पण्डितों को बुलाया जात है-

*सोने के खड़ाऊँ राजा दशरथ ठाढ़ै पण्डि - पुकारें हों*
*अरे अरे पण्डित वशिष्ठ जी मोरीं अरज ओनाव।*
*आठ बरिस के रमइया उन्हें देतेउ जनेउवा*

बालक जब जनेउ के लिए कहता है इसका चित्रण इसमें है-

*राजा दशरथ अगँना मूँजि कौसिलया रानी भल चीरें*
*लपकि झपकि चीरें दुनौं हाथे चीरें*
*रामचन्द्र, बरूआ भुइयाँ लेटि जाये, जनेउवा के कारण।*

नहछू नेहावन के अवसर पर यह गीत गाया जाता है-

*घर घर फिरत नउनियाँ तो सब सरिख आयों हो,*
*आज राम केर नहछू बुलउआ हम दीन्ह है हो।*

जनक की फुलवारी देखने के लिए राम लक्ष्मण के साथ जाते हैं।

*राजा जनक केरि बारी फुलवरिया,*
*सीता रखावें फुलवारी*
*राम लखन दोउ भँवरा उडावइ,*
*फुलवा जै चुनई हमार।*
*जाउ जाउ सखियाँ रे बात पूछि आवउ,*
*बात पूछेउ अरथाय।*
*केकर अहैं ऐई राजुकुँवर दोउ फुलुवा जे चुनई हमार।*
*केकर अहैं नतिया रे पुभवा कँहवा लिहै अवतार।*

बनरा गीत की स्वरूप अवधी क्षेत्र में इस प्रकार है-

*अवध पति का बनरा बड़ा पियारा*
*सातौ सखि मिलि के आरित उतारैं।*
*भरि भरि कंचन थार,*
*जाई बरतिया जनकपुर पहुँची लाये मोतिन के हार*

बारात के सौन्दर्य की चर्चा इस गीत में है-

*साजो हाथी रे साजों*
*घोड़ा रे साजो घोड़े क लगाम*
*राम का घोड़वा ऐसन साजों*
*सोने रूप लसली लगाम*
*सारे बरतियों का ऐसा न सूझें*
*कहाँ है जनक क दुआरि।*

कन्या की इच्छा रहती है कि अवध के राम की भाँति ही उसे वर मिले-

*अरे अरे बाबा अवधपुर जायउ राजा दशरथ के दुआर*
*राजा दशरथ के चारि पुत्र है उनहि के तिलक चढ़ाउ*
*छोटइ देखि जिनि भूलेउ मोरे बाबा सबरे बिरन मा है बीर।*
*तीन लोक उनेक हिरदय बसत है खेलत सरजू के तीर*

कन्या अपने पिता के घर की मर्यादा बचाती आती है-

*ऊँची ऊँची बखरी उठायउ मोरे बाबा चौमुख राखेउ मोहार*
*राजा दशरथ पुत्र बिहअन अइहैं कन्त से निहुरि न जाय*

माता बच्चे का वियोग नहीं सह पाती है

*राम तो मोर करेजवा लखन मोरी पुतरिवा हो राम*
*अरे रामा सीतारानी हाथ केर चुरियाँ*
*मैं कैसे बन भाखऊँ हो राम।*

बच्चों के बिना अवध में घर सूना हो जाता है। आस पास के बच्चों को एकत्र करके अपने यहाँ खेलने का आग्रह माता करती है-

*घर घर फिरहि कउसिला त लरिका बटोरहि हो राम।*
*लरिकौ छन एक रचहु छमारि राम बिसरवहु हो राम।*

अवध क्षेत्र की नारी में दया, क्षमा और करूणा का असीम रूप भरा है-

*राजा बमनवाँ ढूढ़े भाहि पावैं राम जी के जन्में।*
*कौन सराप देहु सराप मोरी लागे*
*बाभन भिखिया माँगन थकि जाव पेट न भरि हैं*
*महिले बोले कौसिल्या रानी सुनो राजा दशरथ*
*राजा बामन दुखित जिनि किन्हौ मोरे राम जी के जनमत।*

पुत्र जन्म पर स्त्री अपने सास ससुर का स्मरण करती है लवकुश के जन्म अवसर का मार्मिक दृश्य प्रस्तुत है-

*भोर भये यह फाटत होरिल जनम लीना*
*बाजई लागे लानन्द बधाई उठन लागे सोहर*
*जो पूत होतेउ अजुध्या में दशरथ घर*
*राजा दशरथ पटना लुटउते कौशिल्या रानी अभरन*
*अब बेटा भयउ अनन्द वन गरूई विपति माहे।*

नाई के द्वारा स्त्री रोचना सास ससुर और देवर को देने के लिए भेजती है। परंतु पति परित्यक्ता होने के कारण स्वाभिमानिनी है और पति को देने से मना करती हैं-

*भइया महर महर करै माथ रोचन कहाँ पायउ।*
*हमरी भउजी सीता वसहि अनन बन।*
*भइया उनके भये नन्दलाल रोचन उहाँ पायहुँ।*
*अरे अरे लक्षिमन भइया तू बड़छल किहेउ हमें न जनायऊ।*
*भइया वहि तपसिनियाँ के नऊआ हमहु कछु देईत।*

राम कथा का स्रोत अवधी गीतों में समाविष्ट है-

*राम चले हैं मधुवन तो सीता खड़ी रोवें।*
*राम बारह बरसि की अवधिया अवधि कैसे बितिहैं।*
*सभवा से उठे हैं लक्षिमण देवरा झपा८ महल आये।*
*भउजी कौन संकट तोर जियरा तो आधी रात रोवे।*

अयोध्या के राम मंदिरों में झूला पड़ा है राम की पूजा होती है।

*गढ़े है हिण्डोला अवधपुरी मॉं झूलै लक्षिमन राम*
*आरति करति कौसिल्या माई*
*कंचन थार वारि घिऊ बाती जुगल अंगन की तेल बलैया*

गुरु वशिष्ट से सीता को लौटाने के लिए इस गीत में प्रार्थना है-

*माघ के तिथि राम जग्गि रोपेन*
*रामा बिन सिता सूनी सितै लइ आवौ*

सीता गुरू का स्वागत और पूजा करती हुई आदर देती है-

*पतवा के दोनवॉं बनाइन गंगा जल पानी*
*सीता धोवें लागी गुरू जी के चरन और मथवा जल चढावैं।*

राम के सौन्दर्य का चित्रण इस अवधी गीत में वर्णित है-

*राम नयन रतनारे कजर भल सोहे*
*दीन्ही रचि रचि फुआ सुभद्रा तउ पतरी अंगुरियन*
*राम के गोड़वा घुघुँरूवा बहुत नीक लागै हो*
*नान्हे गोड़वन चलत बकैंया देखत राजा दशरथ*

अवध के सामाजिक जीवन में मांगलिक अवसरों पर चंदन व सोने की चौकी व केसर से आंगन लीपना गज मोती से चौक पूरना, सोने-चाँदी के दीपक सजाना संभावनाएं स्वाभाविक हैं। अवधी लोक साहित्य में सांस्कृतिक जीवन का चित्रण भरा है। अवधी भाषा साहित्य में राम समाहित हैं।

अवधी लोक साहित्य में तिलक, पराती, संझवाती, जागटोन सिल पोहनी उबटन, तेलहल्दी, माडौ स्थापन, भातखवायी कलस धराई, लावा भुनाई, बारात अगवानी, द्वार पूजा नहछू व्याह पॉव पूजनी, कन्यादान, कुँवर केलउ, भाँवर, सिंदूरदान, ज्यौनार, गारी कोहबर, बिदाई, मौर सिरावन, गौना गौना के अवधी गीत हैं। वर पक्ष के गीतों में देवीगीत फलदान तिलक विवाह बनरा तेल हल्दी, सिलपोहनी, भात नहछू नहावन, मौरे, वस्त्र आभूषण, बारात-विदा, घोड़ी कुँआ पूजन, परिछन बारात वापसी सगुन धान कुटाई नकटौरा, कोहबर कंकन. छूटना गीतों की परम्पराएं हैं।

भारतीय संस्कृति में जन्म देने वाली माँ को विशेष सम्मान दिया जाता है। आसन्न प्रसवा पुत्रवधू रात में देखे गये स्वप्न को अपनी सास से बताती है-

*सोवत रहल्यूँ अटरिया सपन एक देख्यों हो,*
*सासू सपना करौ विचार सपन सुभदायक हो*
*बैठि मै देखल्यू गैया, ठाढ़ बभना देख्यों हो*
*देख्यों कुअँना पै दुबिया हरेरि और आमवाँ बउर ले हो।*

सास स्वप्न की फलश्रुति का आख्यान करती है-

*गउवा तो होँय धन लक्ष्मी, बभन परमेसर हो*
*बउहरि! दुबिया तौ होई अहिबात*
*बड़रवा बालक होय रे*

इसके आगे का चित्रण लोकगीत में इस प्रकार है-

*सुरजा उवत पौ फाटत होरिला जनम लीन्हें हो?*
*रामा? बाजै लागे अंनद बधाव उठन लागे सोहर हो*

जन्म संस्कार के लोकगीतों में पुत्र जन्म के बाद सोहर गाया जाता है। इससे पूर्व सरिया गीत गाने की परंपरा है-

*सोहर ते पहिले सरिय गावौ/पीर धना के सिहराये वेदना*
*पीर धना के सिहराये। बगिया से निबुआ तोड़ कै लायौं*
*खटि-खटि इमली मँगायौ/*
*धना कै मन को भाये बेदना पीर धना के सिहराये।*

बधाई गीत जन्म संस्कारों में प्रमुख हैं-

*बधैया बाजै ऑगने में/ ललन मोर झूलै पालने में।*
*जसुदा कै नन्दलाल भये हैं। बाबा नन्द के भाग जागे हैं*
*नौबत बाजै बाजने में। ललन मोरा झूलै पालने में बधैया बाजै ऑगने में।*

अवधी भाषा साहित्य में सोहर का अनुपम स्थान है। यह फैजाबाद, बाराबंकी, लखनऊ सुल्तानपुर में गाया जाता है-

*राजा हम कोउ बुलावै न जइबै।*
*सासू जौ अइहैं चरुवा चढ़इहैं,*
*उइ नेग चार मँगि हैं, हम देबै न करिबे।*
*रिसाय चली जइहैं मनावै न जइबै*
*ननदी जो अइहैं सतियॉ धरइहैं*
*उइ नेग चार मंगिहैं, हम देबै न करिबै*
*रिसाय चली जइहैं मनावै न जइबै*
*देवर जो अइहैं बंसी बजइहैं*
*उइ नेग चार मँगिहैं हम देवै न करिबे*
*रिसाय चले जइहैं मनावै न जइवै।*

पुत्रवधू जब गर्भावस्था में होती है तब यह सोहर गीत गाया जाता है

*पहिला महिनवा जबहि से लागा*
*घूमइ मोर कपार मोरे राजा।*
*तीसरा महीनवा जबहि से लागा,*
*गोड़वा मोर घहराइ मोरे राजा।*
*नववॉ महीनवॉ जबहि से लागा,*
*थर थर कॉपे परान मोरे राजा।*

जन्म के बाद बधावा गीत की परंपरा रही है-

*जसोदा के भये नंदलाल, बधावा लाई मालिनियॉ।*

पुत्र जन्म में प्रसन्नता का ठिकाना नही रहा जाता है-

*हो मोरी सखिया/राजा के जन्मे हैं राम*
*करिय न्योछावर। केहू लावै बाजू कै बन्दा*
*केहू कजरावर। केहू नावै दखिनवा के चीर करै न्यौछावर*
*चैतहि के तिथि नवमी त नौबत बाजै हो मोरी सखिया*

*बाजै राजा दशरथ दुअरवाँ, कौशल्या रानी के मंदिर*
*मिलहु न सखिया सहेलरि, आवा चलि मिलि जुलि*

अवधी भाषा की जीवन्तता विलक्षण लगती है-

*ननदी जे आइ छठिया, धरन को*
*अँखिया रचन को नेगा माँगन को*

बहु अपनी ननद से सन्तान के जन्म पर कहती है-

*रूपैया लैल्या ननदी लाल के भए पे*
*यह रूपैया मेरे ससुर की कमाई*
*अठन्नी लैल्या ननदी लाल के भए पे*
*यह अठन्नी मेरे जेठ की कमाई*
*चवन्नी लैल्या ननदी लाल के भए पे*
*यह चवन्नी मेरे बलम की कमाई*
*लुआठ लैल्या ननदी लाल के भए पे*

हिरनी की व्यथा को लक्ष्य करके गाया जाने वाला गीत अवधी लोक चिंतन में श्रेष्ठ है-

*छापक पेड़ छिउलिया पतवन गहवर हो रामा*
*तेहितर ठाढ़ि हिरिनियाँ त मन अति अनमन*
*चरत चरत हिरना हिरनी से पूँछइ हो*
*कि तोर चरहा झुराना कि पानी बिना मुरूझिउ*
*जाउ जाउ हिरनी घर अपने खलिरिया नहि देबइ*
*खलरी क खझड़ी मिढ़उवै कि राम मोर खेलिहँइ*
*जब जब बाजै खझढ़िया सबद सुनि अनकइ*

अपने पति से पत्नी कहती है-

*क बोलाय लावो*
*हमरे बुलाये हमारी बहिनी न अइहैं*
*गरूही गठरिया कबहूँ बांधेव न होइहों।*

अपनी ननद से भाभी कहती है ननद भाभी को हास परिहास तथा पारस्परिक संबंध अवधी लोक जीवन में बड़ी विचित्रता के साथ देखा जा सकता है कहीं तो एक दूसरे में चोली दामन का साथ रहता है और कहीं छत्तीस का आंकड़ा रहता है एक गीत में-

*हमरे तो भये नन्दलाल मदन गोपाल*
*सुबह घर आ जा ननदिया।*

*रून झुन का बाजा न लाना ननदिया*
*हमरे तो करधन रिवाज*
*सुबह घर आ जा ननदिया।*
*एक्का या मोटर न आना ननदिया*
*हमरे तो पैदल रिवाज।*
*खद्दर के कपड़े ना लाना ननदिया*
*हमरे तो रेशम रिवाज।*

अन्नप्राशन गीत की परंपरा अवधी क्षेत्र व्यापक है। हनुमान गढ़ी या देवी के स्थान पर अन्नप्राशन के अवसर पर यह गीत गाया जाता है-

*बाउ बहै पुरवइया पुरवइया हमरी बैरिन हो मोरे ससुर*
*बारे ललन के लफरिया त मथवा झकोरें*
*चुपरहु बहुअरि चुप रहु बैरी न सुनपावै*
*बहुअरि आवै देहु धरिया सुघरिया*
*मैं लफरी मुड़ैबी*
*के न मोरे जइहैं कासी त केरे बनारस।*

सास अपनी बहू से प्रश्न करती है-

*हँसि पूँछे तो आई हँसि पूँछै*
*बहुअरि कौन कौनु फंल खाइब*
*ललन बड़ा सुन्दर होरिल बड़ा सुन्दर रे*
*सासु एक तो खायेब मैं*
*लउंग गुजरतिया।*

अवधी गीतों में लोक मानस का चिन्तन मुखरित है। मानवीय मूल्यों और पारिवारिक परिवेश की दृष्टि इस अर्थ में भी विशिष्ट है कि परस्पर प्रेम नेह एवं वात्सल्य की नूतन उद्भावना इसमें है। अवधी लोक मानस अपनी जिजीविष के लिए प्रसिद्ध है। अवध में मंगल गीतों की असीम सीमा है। अवधी लोक भाषा की प्रयोग हर अवसर परीक्षा वरीक्षा में होता है। जन्म संस्कार की गोद भराई की परंपरा अवध क्षेत्र में चौक कही जाती है इसमें सरिया और साध गाये जाने की परंपरा है।

*एक साध पिया हमका, अरिजो विधि पुरवै,*
*अरिजो विधि पुरवे रे।*
*राजा हमरे नैहर लगे ज़ातिउ, पियरी लई अउतिउ रे।*
*तुम्हारा तौ नैहर दूरि बसे, कोसवन को चले रे*
*रानी  घर ही मा, अरे रानी*
*घर ही मा हरदी बटाओं पियरी रंग ·रिउ रे।*

बच्चों के जन्म के पहले तीसरे या पाँचवे वर्ष में मुण्डन संस्कार किया जाता है। इसमें बुआ, नाई द्वारा काटे गये बालों को आँटे की लोई में समेटती है और अपना नेग लेती है-

*झगरै नउवा मुड़न की बेरिया*
*नाज भरी डरिया न छुइहौं हाथे से*

*न लैहों एको पउवा*
*झगरै नउवा मुड़न की बेरिया।*

कनछेदन संस्कार बाल्यावस्था का संस्कार है। बालक व बालिकाओं दोनों के लिए किया जाता है। परंतु इस समय कन्याओं के लिए ही होता है।

*को मोरे जॉघा बैठारइ तउछेदन करावइ,*
*को मोरे खरचइ दाम लालन कर छैदनु*
*बाबा उनके जॉघा बैठारई तउ छेदन करावई*
*को मोरे सुजिया गढ़ावई तउ मोतिया पुहावई*
*धरइ सोनरवा के हाथ छनवा करवाई*
*बाबा उनके सुजिया गढ़ावई तो मोतिया पुहावई*
*आजी रानी टकवा उतारई सोनरवा का देवई।*

उपनयन संस्कार माड़ौ-मड़ौना गाने की लोक परंपरा है-

*जेहि बन सिंकिया न डोले*
*बधवन ठनकै तेहि बन गइले कवन*
*राज के बा*
*तोरहि परास दंड*
*आजु हमरे नाती क जनेइया*
*इहै कुल चाही*
*हथवा के काटि हैं परास दंड*
*कॉरवी क पिढ़इया*
*गोड़वा के चाही खरउवाँ*
*मूड़े के मिरिग छाला*
*कातां है कौनी रानी·झीन सूत*
*अरे.रान नान्ह सूत*
*आरे पूरा है कवन रामा जनेउकवन बरूआ पहिरे।*

जनेऊ संस्कार ब्राह्मणों का प्रमुख संस्कार अवधी में माना जाता है।

*आवौ सखी सब मंगल गावौ, आई जनेऊ के बेला।*
*कासी चारौं बेद पढ़न को, बरूआ चला अकेला*
*आई जनेऊ कै बेला।*

विवाह गीतों में बन्ना, बन्नी, भॉवर, द्वारचार, सुहाग, गारी बिदाई आदि प्रमुख है। वरीक्षा और तिलक में बन्ना गाया जाता है।

*बन्ने के नैना जादू बान, मैं वारी जाऊॅ*
*सीस सोहे रेशम के पगिया*
*मोर पॅखा के फहरान मैं वारी जाऊॅ*
*कान बन्ने के कुण्डल सोहे,*
*मोतियन कै चमकान मैं वारी जाऊॅ*
*स्याम बदन पे पियरा जामा,*

*मुनि मन हरत लुभान मैं वारी जाऊँ।*
*संग सोहै राजा कै बेटी,*
*रूकमिनी बाम बखान मैं वारी जाऊँ।*

तिलक गीत की परम्परा अवधी भाषा साहित्य में उत्कृष्ट है-

*चढ़ावै समधी नात लगावै,*
*दुलहै के भागि जगी रे जगी।*
*लाये सोनवा के थारी रूपै मोहरा हजारी,*
*रूपयन ढेर लगी रे लगी।*

कन्या के घर बारात आने पर द्वाराचार में गणेश पूजन नारियाँ करती हैं-

*द्वारे पे आई बरात सखी री।*
*सब मिली गावो द्वाराचार री।*
*मंगल चौक पुरावो सखी री।*
*कंचन कलश धरावो सखी री।*
*चौमुखा दियना जरावो सखी री।*
*चौमुखा दियना जरावो सखी री।*
*दुलहा की आरती उतारो सखी री।*

सुहाग गीत में कन्या का मंगलमय जीवन वर्णित है-

*सोहाय रहा बन्नी मंगिया मा तोहरे सिन्दुरवा।*
*सुहाग भरा बन्नी मा तोहरे सिन्दुरवा।।*

भाँवर गीत लोक भाषा में मनोहारी, हृदयस्पर्शी बन जाता है-

*भाँवर कै शुभ बेला होय आई,*
*सातों भँवरि ते बियाह हो।*
*एक फेरा घूमई दूसरा फेरा घूमई*
*अबहि तो गोरी हमार हो*

बन्नी गीत कन्या के निबाह में प्रमुख स्थान रखता है-

*खन-खन बाजै बन्नी तोरा कँगना,*
*सीस का झूमर तेरे बाबा ने मंगाया।*
*बाबा ने मंगाया, तेरी दादी ने पहनाया,*
*बन्नी तेरी लड़ियों पे रीझ गये सजना।*

इसी मे मेंहदी गीत गाया जाता है। अवधी गीत इस प्रकार है-

*हमरी बन्नी के गोरे गोरे हाथ मेंहदी खूब रचै।*
*बन्नी के बाबा ने मेंहदी मंगाई,*
*दादी रानी रचावैं दोनों हाथ मेंहदी खूब रचै।*

कन्या पक्ष में वरपक्ष की गारी गायी जाती है जिसे मांगलिक माना जाता है- जनकपुरी के नर नारी

श्रीहरि को गावैं-

*गारी जी सियाराम से बनी*
*बड़भागी राजा दशरथ जी,*
*जिनके पुत्र तुम चारी सियाराम से बनी*

विदाई के समय का दृश्य कारूणिक बन जाता है-

*भिरते बैठि गोहरावै मैया,*
*अंचरा म पोछैं ऑसू।*
*मोरी बेटी आजु चली है परदेसवॉ,*
*कोखियां भई मोरि सूनि।*

इसी समय नीम का पेड़ का न काटने की प्रार्थना इसमें हैं-

*बाबा निमिया कै पेड़ जिनि काटेउ*
*निमिया चिरइयया के बसेर*
*बलैया लेउ बीरन कै*
*बाबा सगरी चिरइयया उड़ि जइहैं*
*रहि जइहैं निमिया अकेल बलैया लेउ बीरन कै*
*बाबा सबहीं बिटइयया जइहैं सासुल*
*रहि जइहैं माई अकेल बलैया लेउ बीरन कै*
*बाबा बिटियन के केउ जिन दुःखदेहु*
*बिटिया चिरइयया केरि नाई बलैया लेउ बीरन का*

अपने पति के परदेस जाने पर पत्नी इस गीत मे माध्यम से कहती है-

*इ रेलिया बरैन पिया को लेहे जाइ रे*
*जौने टिकटवा से पिया मोरे जइहैं*
*बरसे पनीयवा टिकट गलि जाई रे*
*जानै सहर पिया मोरे जइहैं*
*बरसै पनीयवा सहर बहि जाइ रे*

अवधी लोक साहित्य में अयोध्या, प्रभु राम के प्रति एक जीवन्त स्पन्दन मिलता है-

*रामैं राम रटै मोरी जिभिया।*
*गोड़वा कहै हम तीरथ करबै*
*हथवा कहै हम देबै दान*
*अखियाँ कहै हम दरसन करबै।*

# सक्रिय अवधी सेवी संस्थायें

डॉ. राम बहादुर मिश्र

अवधी का प्रचार-प्रसार उन्नयन और संवर्द्धन व्यक्तिगत प्रयासों से ही हो रहा है। शासन प्रशासन का योगदान नगण्य है। कुछ व्यक्ति अपने संसाधनों के बल पर अवधी के स्वरूप को सुरक्षित रखने के प्रयास में लगे हैं। कुछ विद्वान विश्वविद्यालयों में अध्ययन अध्यापन और शोध कार्यो द्वारा इसे समृद्ध कर रहे हैं तो कुछ लोग अवधी की संस्थायें और समितियां गठित कर अपनी सामर्थ्य भर तन-मन से जुटे हैं। लखनऊ वि.वि. हिन्दी विभाग के पूर्व आचार्य प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित, डॉ सुशील सिद्धार्थ, प्रयाग में डॉ. महेश प्रताप नारायण अवस्थी, सुलतानपुर में जगदीश पीयूष, आद्या प्रसाद सिंह प्रदीप, फैजाबाद में पं. राजबहादुर द्विवेदी, लखीमपुर में पं. सत्यधर शुक्ल, सीतापुर में डा. श्याम सुन्दर मिश्र मधुप आदि कुछ ऐसे ही नाम हैं। इनके अतिरिक्त भी तमाम अवधी प्रेमी अवधी के लिए कुछ भी करने को तत्पर हैं। यहाँ पर कुछ प्रमुख अवधी संस्थाओं की गतिविधियों का विहंगावलोकन करने का प्रयास किया गया हैं।

1. **अवधी अकादमी** (गौरीगंज, सुलतानपुर उ.प्र.)

स्थापना वर्ष–1976, संस्थापक–जगदीश पीयूष

पीयूष जी ने 1976 में अवधी अकादमी की स्थापना करके अवधी पर एक बहुत बड़ा सम्मेलन सूफी संत मलिक मुहम्मद जायसी की मजार पर अमेठी में आयोजित किया। इस आयोजन में वरिष्ठ साहित्यकार श्री लल्लन प्रसाद व्यास, कथाकार मार्कण्डेय, डा. जगदीश गुप्त, शैलेश मटियानी, रवीन्द्र कालिया, डॉ. ममता कालिया, सत्यप्रकाश मिश्र, डा. भगवती प्रसाद सिंह, डा, रमाशंकर तिवारी जैसे शताधिक लेखकों तथा अवधी प्रेमियों ने प्रतिभाग किया।

इस आयोजन ने अवधी के अध्ययन और अनुसंधान की आधार शिला रखी। आयोजन द्वारा अवधी नाम से एक स्मारिका प्रकाशित की गयी, जिसमें अवधी के स्वरूप और उपलब्धियों पर विस्तारपूर्वक चर्चा की गयी। बाद में स्मारिका की सामग्री अवधी साहित्य : सर्वेक्षण और समीक्षा में बदल गयी जिसे लखनऊ विश्वविद्यालय व अवध विश्वविद्यालय ने एक शोध सहायक ग्रन्थ के रूप में मान्यता दी।

संस्था द्वारा दूसरा आयोजन बहराइच में अवधी मेला लगाकर किया गया। इस आयोजन में अवधी के मूर्धन्य कवियों पं. वंशीधर शुक्ल, गुरूप्रसाद सिंह मृगेश, विश्वनाथ सिंह विकल गोण्डवी, पारस भ्रमर, आद्याप्रसाद उन्मत्त, डॉ. श्याम सुन्दर मिश्र मधुप, पं. रूपनारायण त्रिपाठी, जुमई खाँ आजाद, विकल साकेती आदि का मंच पर एक साथ अभिनन्दन किया गया।

अवधी अकादमी के बैनर तले एक आयोजन अमेठी में किया गया जिसमें राजर्षि रणंजय सिंह सहित अनेक विद्वानों का सम्मान किया गया।

अवधी अध्ययन को और अधिक गतिशील बनाने के उद्देश्य से पीयूष जी ने लोकायतन नामक

पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया। इसके दो अंक प्रकाशित हुए किन्तु इन दो अंकों की प्रशंसा पं. बनारसीदास चतुर्वेदी तथा डॉ. महेन्द्र भानावत सहित अनेक विद्वानों ने की।

अवधी अकादमी के तत्वावधान में 1995 में एक बहुत बड़ा आयोजन किया गया। सुलतानपुर के रामनरेश त्रिपाठी सभागार में जायसी पंचशती नाम से आयोजित इस आयोजन में शताधिक अवधी विद्वानों समीक्षकों, शोध अध्येताओं ने भाग लिया। प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित, डा. महेश अवस्थी, पं, राजबहादुर द्विवेदी, डॉ. श्याम सुन्दर मिश्र मधुप, पं. सत्यधर शुक्ल, आद्या प्रसाद सिंह प्रदीप, डॉ रहमत उल्लाह, आद्याप्रसाद उन्मत्त, डॉ, सुरेश, विनोद चंद्र पाण्डेय विनोद, श्री जियाराम शुक्ल विकल साकेती, राम अकबाल त्रिपाठी अंजान आदि अवधी प्रेमियों का सम्मान अभिनन्दन किया गया।

अवधी अकादमी के नियामक पीयूष जी ने महसूस किया अवधी रचनाकारों तथा साहित्यकारो को एक रचनात्मक मंच देने के उद्देश्य से अनियतकालीन पत्रिका बोली बानी, का सम्पादन और प्रकाशन प्रारम्भ किया। पत्रिका के अब तक आठ महत्वपूर्ण अंक प्रकाशित हुए जिसका पहला अंक समकालीन वरिष्ठ अवधी कवि पं. आद्याप्रसाद मिश्र पर केन्द्रित रहा। बोली-बानी का दूसरा अंक अवधी के उदीयमान सर्जक कवि असविन्द द्विवेदी पर था क्योकि उसी समय द्विवेदी जी की असामयिक मृत्यु हो चुकी थी। असविन्द जी अवधी के बहुत प्रखर और लोकप्रिय कवि थे।

तीसरा अंक जौनपुर के अवधी कवियों को समर्पित था बोली बानी 4 में फैजाबाद और प्रतापगढ़ के कवियों की रचनाएं प्रमुख रूप से छपी। बोली-बानी 5 में अवधी के मूर्धन्य कवि पं. बंशीधर शुक्ल, गुरूप्रसाद सिंह मृगेश पढ़ीस जी, रमई काका प्रकाशित हुए। बोली-बानी के अंकों में लगभग 150 अवधी रचनाकारों की रचनायें प्रकाशित हुई।

बोली-बानी का छठां अंक अवधी गद्य पर आधारित था इसमें मूल अवधी पाठ में लोक कथाओं का संग्रह है। इतनी कथाओं का यह उल्लेखनीय संग्रह था। इससे भाषा के प्राचीन स्वरूप की भी और इस क्षेत्र की सामाजिक संरचना के संदर्भ में विशेष जानकारी मिलेगी। बोली-बानी का आठवां अंक अवधी श्रमगीतों का संग्रह है। जिसका निर्देशन और विशेष सम्पादन आचार्य सूर्यप्रसाद दीक्षित ने किया। बोली-बानी के सभी अंक शोध के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण हैं।

वस्तुतः अवधी अकादमी ऐसी संस्था है जो अवधी के परिप्रेक्ष्य में वह सब कार्य कर रही है जिसकी साहित्यिक जरूरत है। अवधी ग्रन्थावली की परिकल्पना अवधी अकादमी की सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

## 2. दिव्या समिति, सुलतानपुर-1982

संस्थापक, अध्यक्ष—**स्व. धनंजय सिंह,** 365 बढ़ैयावीर, सिविल लाइन्स, सुलतानपुर

विगत 23 वर्षों से अवधी विशेष रूप से उसके लोक साहित्य का संवर्धक करने के उद्देश्य से गठित संस्था दिव्या समिति आज पूरे अवध क्षेत्र में अपने वार्षिक आयोजन आल्हा महोत्सव के लिए विख्यात है। अक्टूबर में आयोजित होने वाले इस महोत्सव में उत्तर भारत के ख्याति प्राप्त अल्हैत आते हैं। तथा यह आयोजन दो दिनों तक चलता है। आल्हा के साथ ही अवधी लोक गायन तथा लोकनृत्य की विविध विधाओं को मंच प्रदान करने के उद्देश्य से कजरी, निरवही, बिरहा, फाग, चनैनी, सोहर, जातीय गीत तथा लोकनृत्य के कलाकारों का प्रदर्शन कराया जाता है। यद्यपि यह संस्था विशेष रूप से अवधी लोक गायन के लिए ही अधिक जानी जाती है किन्तु यथा अवसर अवधी की विचार गोष्ठियां, कवि सम्मेलन आदि का भी आयोजन किया जाता है। संस्था के संस्थापक स्व. धनंजय सिंह की असामयिक मृत्यु के चलते दो एक वर्षों के लिए बाधा आयी किन्तु स्व. सिंह के सुयोग्य पुत्र बाबू संजय

सिंह एडवोकेट पुनः नयी ऊर्जा के साथ सक्रिय हुए हैं।

### 3. अवधी साहित्य संस्थान अयोध्या 1983

**संस्थापक—पं. राजबहादुर द्विवेदी,** मोहिनी भवन, कंधारी बाजार, फैजाबाद

एक राजनेता, पूर्व विधायक तथा व्यवसाय से अधिवक्ता किन्तु अवधी संस्कारों में रचे-बसे पं. राजबहादुर द्विवेदी का अवधी विषयक योगदान उल्लेखनीय और अनुकरणीय है। अवधी उत्तर प्रदेश की लोक भाषा है उसका विश्व प्रसिद्ध काव्य साहित्य है। अवधी की धरती अपने सांस्कृतिक-अवदानों एवं मूल्यादर्शों की महत्ता के लिए प्रतिष्ठित है। अवध और अवधी की इसी महनीयता के संरक्षण और संवर्द्धन तथा इसके साहित्य को प्रकाश में लाने के उद्देश्य से भगवान राम की नगरी अयोध्या में पं. राजबहादुर द्विवेदी ने अपने सीमित संसाधनों तथा कुछ साथियों की स्थापना की। स्थापना काल में ही संस्थान ने कुछ संकल्प लिये जो इस प्रकार हैं-

1. अवधी भाषा साहित्य एवं कला का अध्ययन, मनन, अनुशीलन, विकास एवं संवर्द्धन।
2. राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास एवं उसकी श्रीवृद्धि में अवधी भाषा साहित्य के माध्यम से रचनात्मक योगदान प्रदान करना।
3. अवधी के अप्रकाशित साहित्य को प्रकाशित करना।
4. साहित्य एवं संस्कृति से सम्बंधित पाण्डुलिपियों का संग्रह करना।
5. अवधी भाषा एंव लोक साहित्य का संग्रह, संकलन और संपादन करना।
6. अवधी रचनाकारों का सम्मान करना।
7. अवधी साहित्य का शोध एवं अनुसंधान करने वाले विद्वानों का सम्मान करना।
8. विविध संगोष्ठियों, व्याख्यानों के आयोजनों एवं कार्यक्रमों के माध्यम से अवधी भाषा साहित्य कला एवं संस्कृति पर विचार-विमर्श करना तथा उदीयमान रचनाकारों को प्रोत्साहित करना।
9. नाटकों, चलचित्रों एवं कवि-सम्मेलनों के माध्यम से अवधी साहित्य संस्कृति एवं कला को प्रकाशित, प्रसारित एवं संवर्धित करना।
10. संस्थान की मुख पत्रिका अवधी को प्रकाशित करना।
11. एक प्रशस्त पुस्तकालय एवं वाचनालय की स्थापना करना।
12. साहित्य एवं संस्कृति के सेवियों के आतिथ्य हेतु एक भवन की स्थापना करना।
13. संस्थान के लिए स्थायी भवन की व्यवस्था करना।
14. अवधी साहित्यकारों की चित्रावली तैयार करना।

अपने उपरोक्त संकल्पों को स्थापित करने की उद्देश्य से कटिबद्ध संस्थान ने आशातीत सफलता अर्जित की। जैसा कि संस्थान के उद्घाटन अवसर पर हिन्दी के ख्यातिलब्ध साहित्यकार सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय ने नरेन्द्रालय प्रेक्षागृह फैजाबाद में कहा था- अवधी-साहित्य संस्थान भारतीय साहित्य में अवध और अवधी को पुनः प्रतिष्ठित करें। स्व. अज्ञेय के इस महावाक्य को अपना लक्ष्य मानकर संस्थान की साहित्यिक यात्रा प्रारम्भ हुई और दो दशकों में संस्थान द्वारा अवधी आंदोलन की रूपरेखा तय हो गयी। संस्थान ने विचार गोष्ठियों, कवि-सम्मेलनों और प्रकाशनों तथा आयोजनों के द्वारा विविध सारस्वत अनुष्ठान तो सम्पन्न ही किये उसने सारे अवधी प्रेमियों को एक मंच प्रदान किया तथा अवधी के लिए समर्पित साधनों का मान-सम्मान अभिनंदन तथा उत्साहवर्धन किया।

संस्थान के द्वारा अवधी के अनेकानेक पक्षों पर विमर्श-विचार गोष्ठियां, संकलन, संपादन और प्रकाशन का कार्य किया। संस्था की वर्षिकी अवधी के लगभग 20 अंकों में अवधी-साहित्य की पड़ताल

की गयी। संस्थान के चार महत्वपूर्ण प्रकाशन अवधी के इतिहास ग्रन्थ बन गए-

1. अवध अवधी : विविध आयाम (पं. राजबहादुर द्विवेदी अभिनन्दन ग्रंथ)
2. अवधी कविता के हीरक हस्ताक्षर।
3. अवधी-स्वरूप और सामर्थ्य।
4. समकालीन अवधी कविता।

साहित्य प्रकाशन के अतिरिक्त संस्था ने वरिष्ठ साहित्यकार जनकवि पं. वंशीधर शुक्ल, पढ़ीस जी, डॉ. त्रिभुवन नाथ शर्मा मधु तथा पं. सत्यधर शुक्ल के साहित्य प्रकाशन में उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा आर्थिक सहयोग प्रदान कराने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है।

संस्थान के आयोजन के सन्दर्भ में एक उल्लेखनीय बात यह रही कि अवधी रचनाकारों और साहित्यकारों को एक मंच पर लाने का प्रयास किया गया। फैजाबाद और अयोध्या तो संस्थान की कर्मस्थली है ही इसके अतिरिक्त गोण्ड़ा, सुलतानपुर, प्रयाग, रायबरेली, बाराबंकी, लखनउ ,सीतापुर, लखीमपुर तथा चित्रकूट में सम्पन्न हुए अधिवेशनों में शताधिक अवधी प्रेमी सम्मिलित हुए। संस्थान ने सन् 1987 के अपने वार्षिक समारोह में पॉच महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित किए जो इस प्रकार हैं-

1. घाघरा का नाम सरयू किया जाय।
2. महाकवि जायसी का भव्य स्मरक बनवाया जाय।
3. कोइरीपुर का नाम पं. रामनरेश त्रिपाठी के नाम पर किया जाय।
4. अयोध्या फैजाबाद में आकाशवाणी केन्द्र की स्थापना की जाय जिसका प्रसारण अवधी में हो।
5. तुलसीपीठ की स्थापना की जाय।

प्रसन्नता की बात है उपरोक्त सभी प्रस्ताव साकार हो गए हैं। अयोध्या में अवधी शोध संस्थान के स्थान पर अयोध्या संस्थान व तुलसी पीठ की स्थापना हो गयी है जो संस्कृति विभाग उ.प्र. द्वारा संचालित है। संस्थान के प्रयास से लखनउ विश्वविद्यालय व अवध विश्वविद्यालय में अवधी भाषा पाठ्यक्रम में समाहित है।

4. **अवधी अध्ययन केन्द्र,** पुरनिया, अलीगंज विस्तार, लखनउ-24

स्थापना वर्ष 1988, संस्थापक—डॉ. **सुशील सिद्धार्थ**

युवा समीक्षक डॉ. सुशील सिद्धार्थ के नेतृत्व में अवध की केन्द्रस्थली लखनऊ में 1988 में अवधी अध्ययन केन्द्र की स्थापना की गयी। यह संयोग था कि संस्था में प्रो. कैलाश देवी सिंह हिन्दी विभाग लखनऊ विश्वविद्यालय की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय से शोध और अध्ययन से जुड़े अवधी प्रेमी इकट्ठे हुए और सबसे पहले यह कार्य किया गया कि संस्था के माध्यम से बिरवा नामक त्रैमासिकी का प्रकाशन प्रारम्भ किया गया। बिरवा के 10 अंक प्रकाशित हुए तथा इसने अवधी आंदोलन को एक नयी दिशा दी। संस्था से सम्बद्ध अवधी प्रेमियों डॉ. कैलाश देवी सिंह, डॉ. सुशील सिद्धार्थ डॉ. रामबहादुर मिश्र डॉ, शैलेन्द नाथ मिश्र, डॉ जयबीर सिंह, डॉ. ऋषि कुमार मिश्र, रामकृष्ण संतोष डॉ. राघव बिहारी सिंह, रामेश्वर प्रसाद द्विवेदी प्रलयकंर आनन्द प्रकाश अवस्थी अनिल मिश्र आदि युवा साहित्यकारों ने अपने-अपने क्षेत्रों में अवधी की अलख जगायी तथा अवधी रचनाकारों को संगठित कर अवधी के लिए सामूहिकता के साथ संघर्ष करने को प्रेरित किया।

## 5. अवध भारती समिति, कैलाश प्रेस भवन हैदरगढ़, बाराबंकी

### संस्थापक- डॉ. राम बहादुर मिश्र

डॉ. सुशील सिद्धार्थ तथा अवधी अध्ययन केन्द्र की प्रेरणा स्वरूप हैदरगढ़ में 1990 में अवध भारती समिति की स्थापना हुई। अपने जुझारू साहित्य प्रेमियों डॉ. राघव बिहारी सिंह, रामेश्वर प्रसाद द्विवेदी प्रलयंकर वेद प्रकाश सिंह प्रकाश, भगवती प्रसाद अवस्थी लोप, श्यामनारायण अग्रवाल विटप, डॉ. शिवाकन्त शुक्ल, आनन्द प्रकाश अवस्थी, ओम प्रकाश जयन्त, जगीश सिंह नीरद कृपाशंकर त्रिपाठी प्रशान्त आदि कवियों/ साहित्यकारों के सहयोग से डॉ. राम बहादुर मिश्र ने अवध भारती समिति नामक संस्था का गठन किया संस्था द्वारा अवधी त्रैमासिकी का प्रकाशन प्रारम्भ किया गया जो 1994 में भारत सरकार के समाचार पत्रों के पंजीयन कार्यालय से पत्रिका का नाम अवध ज्योति के रूप में परिवर्तित होकर पंजीकृत हो गया तब से यह त्रैमासिकी अबाध गति से प्रकाशित हो रही है। पत्रिका ने अपने प्रकाशन के दस वर्ष पूरे कर लिये हैं और पत्रिका के 40 अंक प्रकाशित हुए।

अवधी भाषा-साहित्य संस्कृति के अध्ययन-अनुशीलन, विकास संवर्द्धन एवं प्रकाशन करने के उद्देश्य से ग्रामीण अंचल में स्थापित अवध भारती के प्रमुख उद्देश्य थे-

1. राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में अवधी भाषा के माध्यम से योगदान करना।
2. अवधी भाषा साहित्य-संस्कृति के अलक्षित, उपेक्षित तथा अप्रकाशित साहित्य, लोक साहित्य, लोकगीतकारों तथा कवियों को प्रकाशित करना।
3. अवधी लोक साहित्य का संग्रह, संकलन, सम्पादन और प्रकाशन करना।
4. अवधी साहित्यकारों का सम्मान करना।
5. लोक साहित्य की विविध विधाओं को समृद्ध एवं जीवन्त बनाये रखने के उद्देश्य से लोकोत्सव जैसे आयोजन करके लोक कलाकारों को मंच प्रदान करना।
6. अवधी भाषा साहित्य के विविध पक्षों पर विमर्श हेतु संगोष्ठियों तथा कार्यक्रमों का आयोजन करना।
7. अवधी भाषा-साहित्य का शोध तथा अध्ययन करने वाले विद्वानों का सम्मान करना।
8. संस्था की त्रैमासिकी अवध-ज्योति का प्रकाशन करना।

अपने लक्ष्यों और उद्देश्यों के प्रति सतत् प्रयासरत संस्था ने 18 वर्षों में अवधी साहित्यकारों को संगठित तो किया ही अनेक रचनाकारों की कृतियों का प्रकाशन कराया। अवधी लोक साहित्य की विविध विधाओं को मंच के माध्यम से जन सामान्य के समक्ष प्रस्तुत किया। संस्था द्वारा अपने विविध आयोजनों के माध्यम से पं. राजबहादुर द्विवेदी, डॉ. श्याम सुन्दर मिश्र मधुप, डॉ. त्रिभुवन नाथ शर्मा मधु, हरिश्चन्द्र पाण्डेय सरल, धनंजय सिंह, असविन्द द्विवेदी, डॉ, गौरीशंकर पाण्डेय अरविन्द डॉ. कैलाश देवी सिंह, डॉ. महेश अवस्थी, आनन्द प्रकाश अवस्थी डॉ. पाण्डेय रामेन्द्र सुरेन्द्रनाथ अवस्थी सदस्य विधान परिषद, उ. प्र. शासन प्रो. हरिशंकर मिश्र लखनऊ विश्वविद्यालय श्री जगदीश पीयूष सम्पादक बोली-बानी, डॉ. सुशील सिद्धार्थ, समीक्षक/स्तम्भकार लखनऊ, डॉ विनय [illegible], डॉ. अशोक अज्ञानी बछरावाँ रायबरेली आदि अवधी विद्वानों तथा अवधी प्रेमियों का सम्मान और अभिनन्दन किया। संस्था द्वारा प्रकाशित साहित्य भी अवधी की श्रीवृद्धि में सहायक है जो इस प्रकार है-

1. जोंधइया -अवधी त्रैमासिकी के 16 अंक

2. अवधी -ज्योति - अवधी त्रैमासिक के 40 अंक

3. अवध लोकोक्तियाँ-डॉ, राम बहादुर मिश्र

4. नखत-1 अवधी काव्य संकलन सं. डा. गौरीशंकर पाण्ड़ेय, डॉ. राम बहादुर मिश्र

5. अवधी लोकधारा डॉ. राम बहादुर मिश्र

6. काव्य कानन- डॉ. राघव बिहारी सिंह

7. विचार सम्पदा अवधी के बैचारिक निबन्ध डॉ. राघव बिहारी सिंह

8. कुछ अनुभूतियाँ कुछ विचार - डॉ. राम बहादुर मिश्र

9. सृष्टि खण्ड काव्य-श्याम नारायण अग्रवाल विटप

10. टपका पानी - ओम प्रकाश जयन्त

11. बालकथा गीत - ओम प्रकाश जयन्त

12. नखत-2 — सम्पादक डॉ. राम बहादुर मिश्र

13. लागे मसवा अषाढ़ - डॉ. राम बहादुर मिश्र

6. **अवधी मंच कादीपुर,** ग्रा. रानेपुर पो. पलिया गोलपुर, सुलतानपुर

संस्थापक - **आद्याप्रसाद सिंह प्रदीप**

अवधी संस्कृति में रचे बसे वरिष्ठ अवधी कवि और साहित्यकार, लोक साहित्यकार तथा अनेक अवधी खण्ड काव्यों और महाकाव्यों के रचयिता श्रीयुत आद्याप्रसाद सिंह प्रदीप की अवधी संवाओं के लिए उन्हें कई बार सम्मानित किया जा चुका है। पूर्वी अवधी के रचनाकारों को विशेष रूप से प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से उन्होनें अवधी मंच की स्थापना की तथा संस्था की अवधी पत्रिका आखत के दो अंकों का सम्पादन किया। श्री प्रदीप स्वयं में एक संस्था हैं। उन्होंने दर्जनों अवधी कवियों, गद्यकारों को प्रोत्साहित-पल्लवित किया है।

7. **विश्व अवधी संस्थान,** विक्रमपुर हड़हा, सुलतानपुर, उ.प्र.

संस्थापक — **डॉ. जय सिंह व्यथित**; स्थापना वर्ष—2003

सुलतानपुर जनपद अवधी आंदोलन की दृष्टि से अग्रणी रहा है। यही कारण है आज सक्रिय तमाम संस्थाओं में सुलतानपुर में ही अधिक संस्थायें कार्यरत हैं। अवधी लोक साहित्य के मर्मज्ञ आचार्य पं. राम नरेश त्रिपाठी वर्तमान में साहित्य जगत के पुरोधा आचार्य त्रिलोचन शास्त्री अमोला अवधी काव्य प्रणेता चार बार अवधी सेवाओं के लिए उ.प्र. हिन्दी संस्थान से सम्मानित श्रीयुत आद्याप्रसाद सिंह प्रदीप सुदूरांचल गुजरात में अवधी की अलख जगाने वाले डॉ. जय सिंह व्यथित सम्पादक रैन बसेरा एवं पूर्ण कुलपति गुजरात हिन्दी विद्यापीठ अहमदाबाद इसी उर्वर भूमि के सपूत हैं जिन्होनें अवधी की सेवा के लिए तन-मन-धन सब कुछ समर्पित किया।

डॉ. व्यथित जी ने अवधी को विश्व स्तर पर प्रचारित-प्रसारित करने के उद्देश्य से विश्व अवधी संस्थान की स्थापना की। संस्था का प्रथम अधिवेशन प्रथम विराट अवधी मेला, के रूप में 26 व 27अप्रैल 2003 को सुलतानपुर के पं. राम नरेश त्रिपाठी सभागार में आयोजित किया गया। इस अधिवेशन में विचार गोष्ठी कवि सम्मेलन, अवधी रचनाकारों का सारस्वत सम्मान किया गया। अधिवेशन में अवधी की विशिष्ट सेवाओं के लिए पं. राजबहादुर द्विवेदी, प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित, डॉ. महेश प्रताप नारायण

अवस्थी, डॉ राम बहादुर मिश्र, डॉ. कामता कमलेश आदि को अवधी रत्न की उपाधि से सम्मानित किया गया। अधिवेशन में दो महत्वपूर्ण विचार गोष्ठियां भी आयोजित की गयी जिनका विषय था-

*अवधी कइ मानक रूप काउ अउ काहे तथा अवधी काल्हि, आजु अउर बिहान।*

8. **सरिता साहित्य संस्थान,** ग्रा. सहिनवां, पत्रालय गोसै सिंहपुर, सुलतानपुर-228131

**संस्थापक - कृष्णमणि चतुर्वेदी मैत्रेय**

युवा अवधी सर्जक, लोक साहित्यकार तथा अवधी गद्य के सिद्धहस्त साहित्यकार पं. कृष्णमणि चतुर्वेदी मैत्रेय ने सरिता साहित्य संस्थान के माध्यम से अवधी साहित्य और संस्कृति के प्रचार-प्रसार तथा उन्नयन में उल्लेखनीय योगदान किया है। वे संस्था के माध्यम से अवधी साहित्यकारों का सम्मान भी करते हैं। उनका निर्मोही बाप नामक अवधी उपन्यास बहुत चर्चित रहा। उन्हें उनके अवधी उपन्यास अमंगलहारी के लिए उ.प्र. हिन्दी संस्थान ने जायसी पुरस्कार से सम्मानित किया है।

9. **अवधी परिषद, हैदरगढ़**

**संस्थापक—पं. सुरेन्द्रनाथ अवस्थी पुत्तू भैया**

स्थापना वर्ष 2005 ग्राम्यांचल सेवा समिति-ग्राम्यांचल महाविद्यालय, हैदरगढ़, बाराबंकी

अवधी संस्कृति के प्रतिमान, प्रखर और मुखर राजनेता पं. सुरेन्द्र नाथ अवस्थी, सदस्य विधान परिषद उ.प्र. वैसे तो एक सफल राजनेता हैं किन्तु अवधी के प्रति उनका सहज लगाव है। उनकी अवधीप्रियता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि वे जब भी अपने विधानसभा क्षेत्र की जन सभाओं को सम्बोधित करते हैं तो उनका व्याख्यान पूरी तरह अवधी में होता है। वे हैदरगढ़ की अवधी संस्था अवधी भारती समिति के संरक्षक हैं। तमाम राजनेता अपने चुनावी परिदृश्य को मजबूती देने के उद्देश्य से विभिन्न विकास कार्यों पर पैसा लगाते हैं। अवस्थी जी अपनी भाषा और संस्कृति को संरक्षित करने के उद्देश्य से प्रयासरत हैं। उन्होनें अवधी महोत्सव में प्रतिवर्ष अवधी-सम्मेलन के लिए डेढ़ लाख रूपया देने की घोषण की। यह आयोजन प्रतिवर्ष अक्टूबर में ग्राम्यांचल परिसर में आयोजित किया जायेगा। अवधी परिषद की परियोजनायें इस प्रकार हैं-

1. प्रतिवर्ष 5 अवधी शोध छात्रों को अर्थिक सहायता।
2. प्राथमिक स्तर, माध्यमिक स्तर तथा विश्वविद्यालय स्तर पर अवधी में वाद-विवाद तथा अवधी निबन्ध की प्रतियोगिता आयोजित करना।
3. प्रतिवर्ष एक अवधी शोध प्रबंध प्रकाशित करना।
4. परिषद के वार्षिक अधिवेशन में अवधी विषयक विचार गोष्ठी कवि सम्मेलन तथा अवधी लोक साहित्य की विधाओं का गायन।
6. अवधी नाटक का मंचन।
7. अवधी में वृत्त चित्र और फिल्म का निर्माण।
8. अवधी भाषा साहित्य और संस्कृति तथा लोक साहित्य विषयक अवधी पुस्तकालय की स्थापना।
9. एक शोध केन्द्र की स्थापना।

**इन उपरोक्त संस्थाओं के अतिरिक्त कुछ अन्य संस्थायें अवधी पर केन्द्रित वार्षिक आयोजन करती हैं। कुछ संस्थायें नियमित रूप से तो कुछ अनियमित रूप से अवधी पर केन्द्रित कुछ न कुछ आयोजन करती रहती है यथा-**

1. **पं. वंशीधर शुक्ल स्मारक समिति :** मन्यौरा लखीमपुर खीरी जन कवि पं. वंशीधर शुक्ल के जन्म

दिवस बसंत पंचमी को एक वृहद आयोजन किया जाता है, जिसमें प्रतिवर्ष अवधी के साहित्यकार और कवि का सम्मान किया जाता है।

2. **तुलसी पीठ** : रोटी गोदाम सीतापुर अवधी के वयोवृद्ध साहित्यकार डॉ. श्याम सुन्दर मिश्र मधुप के संयोजन में तुलसी पीठ की स्थापना की गयी है। यह संस्था भी अवधी प्रमियों को एक मंच प्रदान करके साहित्यकार सम्मेलन आयोजित करती है।

3. **चन्द्रमणि स्मृति शोध संस्थान** : लोक कवि और आध्यात्मिक चिन्तक पं. चन्द्रमणि पाण्डेय के नाम पर बनी संस्था एक वार्षिक आयोजन करती है। जिसमें अवधी साहित्य के किसी एक पक्ष पर विद्वान इकट्ठे होकर विमर्श करते हैं। इसके संयोजक डॉ. पाण्डेय रामेन्द्र हैं।

4. **लोक कला मंच** लोकसदन नरौली हैदरगढ़, बाराबंकी-227301 : अवधी लोकगीतों और लोक कलाकारों को मंच देने के उद्देश्य से गठित यह संस्था वर्ष में यथा समय विविध कार्यक्रमों का आयोजन करती  है। सितम्बर में आल्हा गायन, नवम्बर में बिरहा गायन तथा मार्च में फाग गायन के विशेष आयोजनों के अतिरिक्त संस्कार गीतों, श्रमगीतों तथा ऋतु गीतों के साथ ही जातीय लोकनृत्यों का भी आयोजन होता है।

□□□